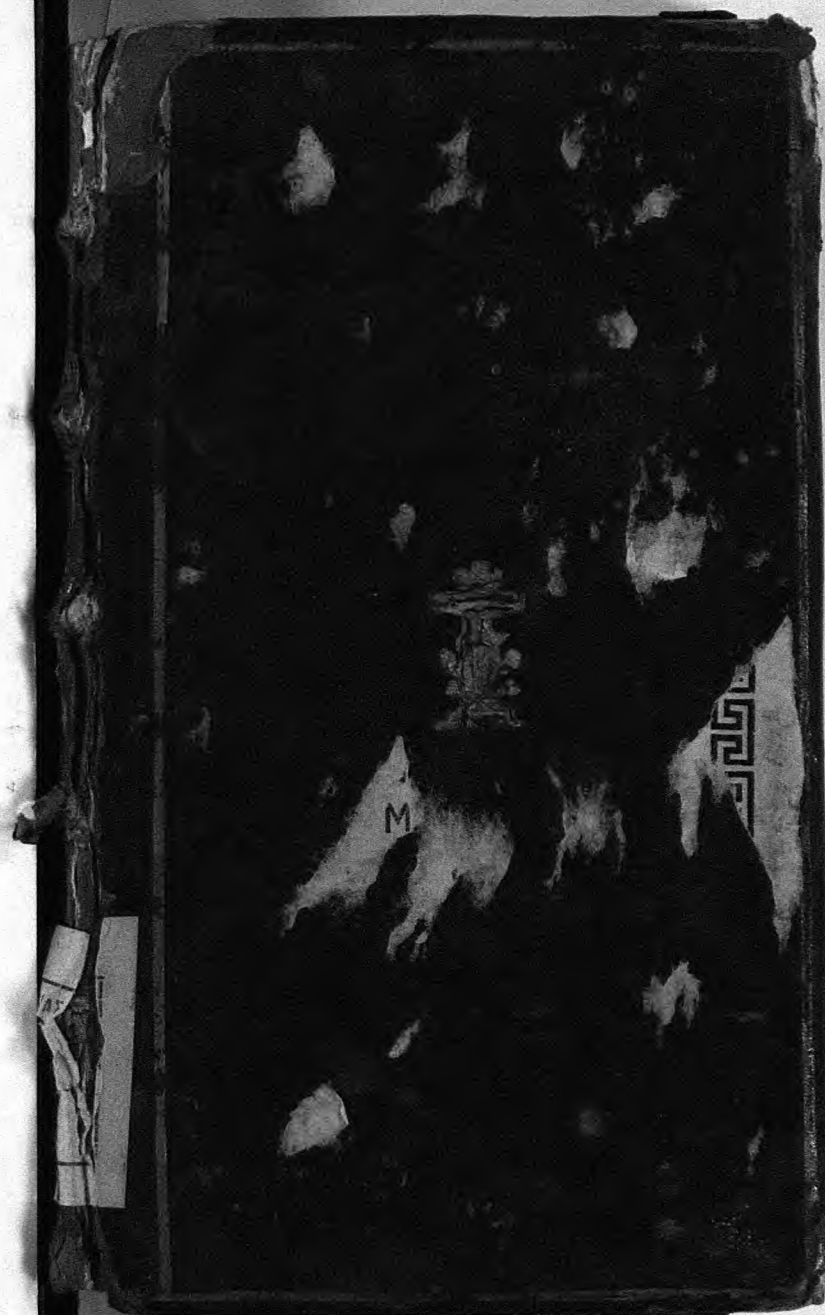




Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

ΔΗΜΟΣΙΑ ΒΙΒΛΙΟΤΗΚΗ
ΒΕΡΟΙΑΣ

+200

Αριθ. είσο.

ΔΩΡΕΑ

Ανν. Γεωργιάδης

1953

GRVFR-00216 2197

Handwritten text, likely a title or address, in a cursive script. The text is faint and difficult to decipher, but appears to be written in a single line across the top of the page.

Εν τῇ ἐκκλησίᾳ
τῆς

Αρ. 722

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας

Πρ. Νο. 1



Βιβλ. 29/3/27

[Signature]

Γεωδολογική Σχολή
Τομ. 27/3/27



Η ΚΑΙΝΗ
ΔΙΑΘΗΚΗ.

NOVUM
TESTAMENTUM.



PATAVII,
MDCCLXII.

SUPERIORUM PERMISSU.

Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βεροίας
1762
No. Εισ. 792



Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας



Π Ι Ν Α Ξ Π Ε Ρ Ι Ε Χ Ω Ν

Τ Α Ξ Ε Κ Τ Η Ξ

Παλαιᾶς διαθήκης παραληφθείσας εἰς τὴν και-
νὴν μαρτυρίαν, ἀλλ' ἢ τὰς αὐτὰς
λέξεις, μόνον δὲ τὴν αὐτὴν
διάνοιαν ἔχούσας.

G E N E S.

1.	1.	Πίστις νοῦμεν κατηρτίσθαι τὸς αἰῶνας . <i>Heb. 11. 3.</i>
1.	1.	Οὐρανοὶ ἦσαν ἑκπαλαι . 1. <i>Pet. 3. 5.</i>
1.	27.	Ἀδάμ πρῶτος ἐπλάσθη . 1. <i>Tim. 2.</i> <i>13.</i>
1.	22.	Οὐ γὰρ ἐστὶν ἀνὴρ ἐκ γυναικός . 1. <i>Cor.</i> <i>11. 8.</i>
3.	4.	Ὁ ὄφις ἔθαν ὀχνητῆται ἐν τῇ παταγίᾳ αὐτῇ . 2. <i>Cor. 11. 3.</i>
3.	6.	Ἀδάμ ἐκ ἡπατῆθι . 1. <i>Tim. 2. 14.</i>
4.	4.	Πίστις πλείονα θυσίαν Ἀβελ ὡς Καὶν προσέφερε τῷ Θεῷ . <i>Heb. 11. 4.</i>
4.	8.	Ἀπὸ τοῦ αἵματος Ἀβελ τοῦ δικαίου . <i>Matth.</i> <i>23. 35.</i>
4.	8.	Οὐ καθώς Καὶν ἐκ τοῦ πονηροῦ ὡς . 1. <i>Joan.</i> <i>3. 12.</i>
4.	8.	Οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι τῇ ὁδῷ τοῦ Καὶν ἐπορεύ- θησαν . <i>Jude 11.</i>

Α 3

5. 24.

3. 14. Πίσει Εὐὼχ μετετέθη. *Heb. 11. 5.*
 6. 3. Ὅτε ἀπαξ ἐξεδέχετο ἡ Ἰσὺς μακροθυμία. *1. Petr. 3. 20.*
 6. 13. Πίσει χρηματισθεὶς Νῶε. *Heb. 11. 7.*
 7. 4. Ὡς περ ἡσῶν ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πρὸ τῆ κατακλιτικῆς. *Matth. 24. 38.*
 7. 23. Ὁ γδοὺν Νῶε δικαιοσύνης κερύκα. *1. Petr. 2. 5.*
 9. 6. Πᾶντες οἱ λαβόντες μακάριον, ἐν μαχαίρᾳ ἀποκύνται. *Matth. 26. 52. Act. 13. 10.*
 12. 4. Πίσει καλοῦντος Ἀβραάμ. *Heb. 11. 8.*
 14. 18. Οὗτος γδ ὁ Μελχισεδέκ. *Heb. 7. 1.*
 12. 15. Ἀβραάμ δύο υἱοὺς ἔχον, ἵνα ὅτι παλδίσκος. *Gal. 4. 22.*
 17. 11. Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ Διδάσκῆλῳ πεποιητῆς. *Act. 7. 8, Rom. 4. 11.*
 18. 10. Πίσει καὶ αὐτῇ Σάρρᾳ. *Heb. 11. 11.*
 18. 12. Ὡς Σάρρᾳ ἐπήκουσε τῷ Ἀβραάμ. *1. Petr. 3. 6.*
 19. 25. Καὶ πόλεις Σοδόμων καὶ Γομόρρας. *2. Petr. 2. 6.*
 20. 25. Ὡς Σόδομα καὶ Γομόρρα. *Jude 7.*
 19. 26. Μνημονεύετε τῆς γυναίκος Λώτ. *Luc. 17. 32.*
 19. 26. Ὁμοίως καὶ ὡς ἐλθόντο ἐν ταῖς ἡμέραις Λώτ ἡσθίων, ἐπινον, ἡγοράζον. *Luc. 17. 28.*
 21. 2. Ἀβραάμ υἱὸν ἔχον ὅτι ἐλδοθέρας. *Gal. 4. 22.*
 21. 10. Πίσει προσενήνοχεν Ἀβραάμ. *Heb. 11. 17.*
 21. 10. Ἀβραάμ ἀνέγκας τὸ υἱὸν αὐτοῦ Ἰσὺν τὸ θυσιάζειον. *Jacob. 2. 21.*
 21. 16. Καθὼς ἐλάλησε πρὸς τὰς πατέρας ἡμῶν. *Luc. 1. 55.*
 25. 22. Γεβέκκα ἔξ ἐνὸς κοίτων ἔχουσα Ἰσαάκ. *Rom. 9. 10.*
 25. 33. Μὴ τις πόρνος ἢ βέβηλος, ὡς Ἡσαΐ, ὅς ἀπὸ βρώτειος μίας ἀπέδωκε τὰ πρωτότοκα. *Heb. 12. 16.*
 27. 28. Πίσει παθεὶ μελλόντων ἀνολόγησεν. *Heb. 11. 30.*
 48. 25. Πίσει Ἰακώβ ἀποδείχσκον. *Heb. 11. 21.*
 49. 10. Ὁ γ ἐγράφε Μωσῆς ἐν τῷ νόμῳ. *Joan. 1. 46.*
 50. 24. Πίσει Ἰωσήφ τελευτῶν. *Heb. 11. 22.*

Ε Χ Ο Δ.

2. 2. Πίσει Μωσῆς γλῶσσας. *Heb.* 11. 23.
 2. 11. Πίσει Μωσῆς μέγας γλῶσσος. *Hebr.* 11.
 24.
 2. 11. Μωσῆς ἰδὼν τινὰ ἀδικήμονα. *Αἴθ.* 7.
 24.
 3. 2. Καὶ πληρωθέντων ἐπ' αὐτὸν τεσσαράκοντα. *Αἴθ.*
 7. 30.
 12. 11. Πίσει πεποίηκε τὸ πάχος. *Hebr.* 11.
 28.
 14. 22. Εἰς τὸν Μωσῶν ἐβαπτίσαντο. *1. Cor.*
 10. 2.
 14. 22. Πίσει διέβησαν τὸ ἐρυθρὸν θάλασσαν. *Hebr.* 11. 29.
 16. 15. Οἱ πατέρες ὑμῶν ἔφαγον τὸ μῆννα. *Joan.*
 6. 49.
 16. 15. Ἀρτον οὐκ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν. *Joan.* 6. 31.
 16. 15. Πλῆτες τὸ αὐτὸ βρώμα πνευματικόν. *1. Cor.* 10. 3.
 17. 6. Ἐπινον γὰρ οὐκ πνευματικῆς ἀκολουθείας πέ-
 τρας. *1. Cor.* 10. 4.
 19. 6. Ἐθνος ἅγιον, λαὸς ὃς πεποίησιν. *1. Pet.* 2. 9.
 19. 13. Καὶ θείον θίγει τὸ ὄρος. *Hebr.* 12. 20.
 19. 16. Οὐ γὰρ προσελλύθατε. *Hebr.* 12. 18.
 23. 8. Δαληθείας γὰρ πάσης ἐκτολῆς. *Hebr.* 9.
 19.
 26. 36. Σκλῆν κατεκδύσθη ἡ πρώτη. *Hebr.*
 9. 2.
 32. 6. Μηδὲ ἐδωλοάτραι γίνεσθε. *1. Cor.* 10. 7.

L E V I T.

12. 3. Ἐν σαββάτῳ πεπνυμένοι ἐσθίετε. *Joan.* 7. 22.
 12. 3. Ὅτε ἐπλήσθησαν ἡμέραι ὀκτώ. *Luc.* 2.
 21.
 12. 4. Ὅτε ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τῆς καθαρῆς.
Luc. 2. 22.
 12. 6. Καὶ τῆς ἡμέρας θυσιᾶν κατὰ τὸ εἰρημένον ἐν
 τῷ νόμῳ. *Luc.* 2. 24.
 14. 4. Προσένευκε τὸ δῶρον ὃ προτέταξε Μωσῆς.
Matt. 8. 4. *Matth.* 1. 44.
 16. 14. Εἰ γὰρ τὸ αἷμα τῶν κατὰ τὸν νόμον καὶ τῶν τράγων. *Hebr.* 9.
 13.

- 8
 16. 17. Καὶ παῦ τὸ πληθος τῷ λαῷ ὡς προσεύχο-
 μενον ἔξω. *Luc. 1. 16,*
 19. 15. Μὲ ἐν προσωποληψίαις. *Jas. 2. 1.*
 19. 17. Ἐὰν ἁμαρτήσῃ εἰς σὲ ὁ ἀδελφός σου.
Matth. 18. 16. Luc. 27. 3.
 20. 10. Ἐν δὲ τῇ νόμῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετείλα-
 το τὰς τοιαύτας λιθοβολῆσθαι. *Joan.*
8. 5.

N U M E R.

8. 16. Παῦ ἄρσεν διανοϊγον μήτραν. *Luc. 2.*
23.
 9. 18. Οἱ Πατέρες ἡμῶν πάντες ὑπὸ τῷ νεφέλῳ.
1. Cor. 10. 1.
 11. 7. Ἀρτον ἐκ τῷ ἡρώδῃ ἔδωκεν αὐτοῖς φαγεῖν.
Joan. 6. 31.
 12. 7. Ὡς ὁ Μωσῆς ἐν ὄλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ.
Hebr. 3. 2.
 14. 37. Ὡς τὰ κῶλα ἔπεσεν ἐν τῇ ἐρήμῳ. *Hebr.*
3. 17.
 14. 36. Μὴδὲ γογγύζετε, καθὼς καὶ τινες αὐτῶν.
1. Cor. 10. 10.
 15. 1. Τῇ ἀντιλογίᾳ τῷ Κορὲ ἀπέλοντο. *Jude*
11.
 19. 3. Ὡς γὰρ εἰσφέρεται ζωὴν τὸ αἷμα. *Hebr.*
13. 11.
 20. 10. Ἐπὶ τὸν γὰρ ἐκ πρῶτατικῆς ἀκολουθήσῃ
 πέτρας. *Cor. 10. 4.*
 21. 5. Μὴδὲ ἐκπειράζωμεν τὸν Χριστόν. *1. Cor.*
10. 9.
 21. 9. Καθὼς Μωσῆς ὑψώσε τὸ ὄφιν ἐν τῇ ἐρή-
 μῳ. *Joan. 3. 14.*
 22. 23. Ὡς τοῦτο ἄφαινον ἐν ἀνθρώπῳ φανῇ φθεγ-
 ξόμενον. *2. Pet. 2. 16.*
 22. 39. Τῇ πλάνῃ τῷ βαλαάμ μισθὸν ὕψιχόθησαν.
2. Pet. 2. 15. Jude 11.
 24. 14. Διδαχὴν Βαλαάμ, ὃς ἐδίδασκε τὸν Βαλαάκ.
Apos. 2. 14.
 25. 6. Μὴδὲ πορνεύομεν, καθὼς τινες αὐτῶν
 ἐπόρνυσαν. *1. Cor. 10. 8.*
 26. 64. Κατεσφάθησαν ἐν τῇ ἐρήμῳ. *1. Cor.*
10. 5.
 28. 9. Σάββατον οἱ ἱερεῖς ἐν ταῖς ἱερῇ τὸ σάββα-
 τον βεβηλώσιν. *Matth. 12. 5.*

ΜΑΡΤΥΡΙΟΝ.

DEUTER.

1. 16. 17. Μὴ ἐν προσωποληψίαις ἔχετε . *Jacob.* 2.
1. 9.
10. 17. Οὐ γὰρ ἐστὶ προσωποληψία παρὰ Θεῷ ,
Rom. 2. 11. *Act.* 10. 34. *Col.* 3. 25.
Eph. 6. 9.
17. 6. Αἰσθήσας τὸν νόμον . *Hebr.* 10. 28.
18. 1. Οὐκ οἶδατε ὅτι οἱ τὰ ἱερὰ ἐργαζέμενοι ,
ὡς καὶ ἱερῶ ἐσθίσουσιν ; *1. Cor.* 9. 13.
24. 1. Ὅς ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα . *Matth.* 5.
31. 19. 9. *Mar.* 10. 4.

J O S U E.

2. 1. Ὁμοίως δὲ ὡς Ρ'αάβ ἡ πόρνη . *Jacob.* 2.
25.
6. 10. Πίσει τὰ τείχη Ἰεριχὼ ἔπεσε . *Hebr.* 11.
30.
6. 22. Πίσει Ρ'αάβ ἡ πόρνη . *Hebr.* 11. 31.

SAMUEL I.

21. 6. Οὐκ ἀγνοῦτε τί ἐποίησε Δαβὶδ , ὅτε
ἐπείνασε . *Matth.* 12. 3. *Mar.* 2. 25.
Luc. 6. 3.

SAMUEL II.

7. 14. Ἐγὼ ἔσομαι αὐτῷ εἰς πατέρα . *1.* 5.

REGUM I.

2. 10. Ἐξὸν εἰπεῖν καὶ παρ' ἡσυχίας πρὸς ὑμᾶς περὶ
τὴν πατριάρχην Δαβὶδ . *Act.* 2. 19. 13. 36.
10. 1. Βασιλείαν νότα . *Matth.* 12. 42. *Luc.* 11.
31.
17. 1. Ἐχλείσθη ὁ ἕρπης ὅταν ἔτη τεύει . *Luc.*
4. 25.
17. 1. Ἡλίας ἄνθρωπος ὡς ἑμοιοπαθὴς ἡμῖν .
Jacob. 5. 17.

R E G U M II.

4. 29. Μηδένα κατὰ τὴν ὁδὸν ἀπάσῃσθε . Luc.
10. 4.
5. 13. Πολλοὶ λεπροὶ ἦσαν . Luc. 4. 27.

P A R A L. I.

22. 10. Δαβὶδ ῥτῆσαν . Αἱ. 7. 46.
23. 13. Καὶ ἔχ' ἐαυτῷ πρὸς λαμβάνει τὴν τιμὴν, ἀλλ'
ὁ καλὸς ἄνθρωπος . Hebr. 5. 4.

J O B.

1. 21. Οὐδὲν εἰσάγωγικόν εἰς τὸν κόσμον . I.
Tim. 6. 7.
5. 17. Μακάριος ἄνθρωπος ὃς ὑπομένει πειρασμόν .
Jac. 1. 12.
34. 19. Οὐκ ἐστὶ προσωπολήπτης ὁ Θεός . Αἱ. 10.
34.

P S A L M.

2. 7. Υἱὸς μὲν εἶ σύ . Hebr. 1. 5. Ὁ 5. 5.
5. 10. Τάφος ἀνεφυγμένος ὁ λάρυγξ αὐτοῦ . Rom.
3. 13.
8. 5. Τί ἐστὶν ἀνθρώπος, ὅς . Hebr. 2. 6.
10. 7. Ὡς τὸ σῶμα ἀρᾶς καὶ πικρίας γέμεται . Rom.
3. 14.
14. 1. 2. 3. Οὐκ ἐστὶ δίκαιος . Rom. 3. 10. 11.
12.
18. 3. Εἴ γὰρ ἔσομαι πεποιδώς ἐπ' αὐτῷ . Hebr.
2. 13.
38. 50. Εὐχομολογησάμην σοι ὅτι ἐξήγει . Rom.
15. 9.
19. 5. Εἰς πᾶσαν τὴν γῆν ἐξῆλθεν ὁ φθόγγος αὐ-
τοῦ . Rom. 10. 18.
22. 23. Ἀπαγγεῖλόν τὸ ὄνομα σου . Hebr. 2.
12.
36. 2. Οὐκ ἐστὶ φόβος Θεῷ ἀπέναντι τοῦ ὀφθαλ-
μοῦ . Rom. 3. 18.
40. 7. Θυσίαν ὅτι προσφορὰν ἔκ' ἡθέλησας . Hebr.
10. 5.
41. 10. Ὁ μὲν υἱὸς τῷ ἀνθρώπῳ ὑπάγει . Matth.
26. 24. Marc. 14. 21. Luc. 22. 22.

44. 23. Ενεκά σθ θανάτῳ μέθα ὅλῳ τῇ ἡμέρᾳ. *Rom.* 8. 36.
45. 7. Οὗ θρόνος σθ, ὁ Θεός, εἰς τὴν αἰῶνα τῇ αἰῶ-
νος. *Heb.* 1. 8.
51. 6. Οὗτος ἂν δικαιοῦσθ. *Rom.* 3. 4.
62. 13. Ὁς ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.
Rom. 2. 6.
69. 10. Οἱ ἀνεδισμοὶ τῶν ἀνεδιζόντων σε, ἐπέτε-
σον ἐπ' ἐμέ. *Rom.* 15. 3.
69. 23. 24. Ἡ τράπεζα αὐτοῦ εἰς πτυχίδα. *Rom.* 11. 9.
78. 13. Διὰ τὴν θαλάσσης διήλθον. 1. *Cor.* 10. 1.
14. Πάντες ὑπὸ τῇ νεφέλῃ ὤσθη. 1. *Cor.* 10. 1.
15. Ἀκολουθήσας πέτρῃς. 1. *Cor.* 10. 4.
89. 21. Εὐρον Δαβὶδ. *Αἴ.* 13. 22.
94. 11. Κύριος γινώσκει τὰς διαλογισμὸς τῶν σθ-
φῶν. 1. *Cor.* 3. 20.
95. 7. 8. 9. 10. 11. Σήμερον, εἰς τὴν φωνῆς αὐτοῦ ἀκρόση-
τε. *Heb.* 3. 7. 8. 9. 10. 11. 1. *Cor.* 4. 7.
97. 7. Προσκυνησάτωσαν αὐτῷ πάντες ἄγγελοι Θεοῦ.
Heb. 1. 6.
102. 26. 27. Σὺ κατ' ἀρχαίς, Κύριε, τῇ γλῶσσει ἐθεμε-
λιώσας. *Heb.* 1. 10.
104. 4. Οὗ ποιῶν τὰς ἀγγέλους αὐτοῦ πνύμενα.
Heb. 1. 7.
106. 9. Διὰ τὴν θαλάσσης. 1. *Cor.* 10. 1.
14. Ἐπεθύμηται. 1. *Cor.* 10. 6.
25. Ἐγογγυσάμ. 1. *Cor.* 10. 10.
26. Κατεσπαράσσον ἐν τῇ ἐρήμῳ. 1. *Cor.* 10. 5.
28. Ἐπόρνοισάν. 1. *Cor.* 10. 8.
110. 1. Κάθι ὅτι δεξιῶν με. *Heb.* 1. 13.
4. Σὺ ἱερός εἰς τὴν αἰῶνα. *Heb.* 5. 6. 7. 1. *Cor.* 17.
4. Ὡμοσε κύριος. *Heb.* 7. 21.
116. 11. Πᾶς ἄνθρωπος ψεύσας. *Rom.* 3. 4.
117. 1. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον πάντα τὰ ἔθνη. *Rom.*
15. 11.
118. 6. Κύριος ἐμοὶ βοηθός. *Heb.* 13. 6.
118. 22. Ἐν Σιών λίθον προσκόμματος. *Rom.* 9. 33.
132. 5. Δαβὶδ ἠτήτατο δοῦν σκηνώσας τῷ Θεῷ
Ἰακώβ. *Αἴ.* 7. 46.
140. 4. Ἰὸς ἀπιδὼν ὑπὸ τὰ χεῖλη αὐτοῦ. *Rom.*
3. 13.
144. 3. Τέστις ἄνθρωπος, ὅτι. *Heb.* 2. 6.

P R O V E R B.

3. 11. 12. Υἱέ μου, μὴ ὀλιγάροι παιδείας Κορεύ. *Hebr. 12. 5.*
 11. 31. Εἰ ὁ δίκαιος μάλις σώζεται. 1. *Pet. 4. 18.*
 17. 27. Ἐσὺ πᾶς ἀνθρώπος ταχύς εἰς τὸ ἀκούσαι, βραδύς εἰς τὸ λαλῆσαι. *Jas. 1. 19.*
 20. 9. Ἐὰν εἰπωμεν ὅτι ἐμφορτὴν ἔκ ἔχομεν. 1. *Joan. 1. 8.*
 24. 23. Μὴ ἐν προσωποληψίαις. *Jas. 2. 1.*
 25. 6. Μὴ κατακληθῇς εἰς τὴν πρωτοκλισίαν. *Luc. 14. 8.*

E S A I.

1. 9. Ως Σόδομα ἂν ἐχρηθήμεν. *Rom. 9. 29.*
 5. 21. Φρόνιμοι παρ' ἑαυτοῖς. *Rom. 12. 16.*
 8. 14. Ἰδοὺ οὗτος κἀταί εἰς πᾶσιν ὁ ἀνάστασις. *Luc. 2. 34.*
 14. 15. Λίθον προσκόμματος. *Rom. 9. 33.*
 18. Ἰδὲ ἐγὼ ὁ τὰ ταιδία ἅμοι ἔδωκεν ὁ Θεός. *Hebr. 2. 13.*
 30. 22. Ἐὰν ἡ ὁ ἀριθμὸς, ὦς. *Rom. 9. 27.*
 33. 10. Εὐθέως μὲν τὴν θλίψιν τῶν ἡμερῶν ἐκρίναν ὁ ἥλιος σκοπισθήσεται. *Matth. 24. 29.*
Matth. 13. 24.
 27. 11. Ἀφέλομαι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν. *Rom. 11. 27.*
 28. 16. Λίθον προσκόμματος. *Rom. 9. 33.* Πᾶς ὁ πισθύνων ἐπ' αὐτῷ, ὦς. *Rom. 10. 11.*
 29. 10. Πνεῦμα κατανύξεως, ὁφθαλμοὺς ᾗ μὴ βλέπειν. *Rom. 11. 8.*
 41. 2. Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ τὸ παιδὸς αὐτοῦ. *Luc. 1. 34.*
 45. 9. Μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα. *Rom. 9. 20.*
 23. Ἐμοὶ κάμψαι πᾶν γόνυ, ὦς. *Rom. 14. 11.*
Philipp. 2. 10.
 52. 5. Ὅνομα ᾗ Θεῷ βλασφημεῖται. *Rom. 2. 24.*
 52. 7. Ως ὠρεῖοι οἱ πόδες. *Rom. 10. 15.*
 53. 1. Τίς ἐπίσδυτε τὴν ἀκοῇ ἡμῶν. *Rom. 10. 16.*
 54. 1. Μακάριαι αἱ σείραι. *Luc. 23. 29.*
 58. 7. Ἐπάνασα γὰρ, ὁ ἔδωκατε μοι φαγεῖν. *Matth. 25. 35.*
 59. 7. 8. Ὅξαις οἱ πόδες. *Rom. 3. 15. 16. 17.*
 39. 10. Ἦξι ἐκ Σιών ὁ ῥυόμενος. *Rom. 11. 26.*
 63. 2. Περιβεβλημένος ἱμάτιον βεβαμμένον αἵματι. *Αποκ. 19. 13.*
 65. 1. Εὐρέθην ποῖς ἐμὲ μὴ ζητοῦσιν. *Rom. 10. 20.*

2. Ὅλων

ΜΑΡΤΥΡΙΩΝ.

13 1

3. Οὐλὼ τὴν ἡμέραν ὀξεπέτασα τὰς χεῖράς μου.
Rom. 10. 21.

J E R E M.

2. 21. Ἀνθρώπος πρὸς ᾧ οἰκοδεσπότης. Matt. 21.
33. Μαν. 12. 1. Luc. 20. 9.
18. 6. Ἡ ἔκκ' ἔχει ὀξυσίαν ὁ περαμῶς. Rom. 9. 21.
31. 31. 32. 33. 34. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, ὅς. Heb. 8.
8. 9. 10. 11. 11. ὅς. 10. 16. 17.

E Z E C H.

12. 21. Ποῦ ἐστὶν ἐπαγγελία τῆ παρησίας αὐτοῦ. 2.
Petr. 3. 4.
18. 7. Ἐπείνεσα, καὶ ἐδώκατέ μοι φαγεῖν. Matth.
25. 35.
20. 11. Ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος. Rom. 10. 5.
36. 23. Ὄνομα τῷ Θεῷ βλασφημεῖται. Rom. 2. 24.
39. 2. Καὶ ὅταν τελεθῇ τὰ χίλια ἔτη. Apoc.
20. 7.

D A N I E L.

7. 10. Καὶ χιλιάδες χιλιάδων. Apoc. 5. 11.
11. 7. Καὶ ὁ ἄγγελος ὃν εἶδον ἐστῶτα ἐπὶ τῇ θαλάσῃ. Apoc. 10. 5.

O S E E.

1. 10. Τὸν οὐ λαὸν μου, λαὸν μου. Rom. 9. 25. 26.
13. 14. Ἰνα ἡ θ' ὁ θανάτου καταργήσῃ τὸ. ὅς.
Heb. 2. 14.
14. 2. Καρπὸν χειλέων. Heb. 13. 15.

I O E L.

2. 32. Ὅς ἂν ἐπικαλέσῃται τὸ ὄνομα Κυρίου. Rom. 10. 13.
3. 15. Ὅς ἡλίου σκοπισθήσεται. Matt. 24. 29.
Μαν. 13. 24.

AMOS.

A M O S.

5. 15. Ἀποφυγῆτες τὸ πονηρὸν, *Ec. Rom. 12. 9.*

M I C H.

2. 10. Οὐκ ἔχρωμα ὧδε μέγαλα πόλιν. *Heb. 13. 14.*
 4. 7. Βασιλεύει ἐπὶ τὸ οἶκον Ἰακώβ. *Luc. 1. 33.*

H A B A K U K.

2. 3. 4. Ἐπ' ὅσον μικρὸν, *Ec. Heb. 10. 37. 38.*
 4. Δίκαιος ἐν πίστεως ζήσεται. *Rom. 1. 17.*
Heb. 10. 38.

A G G Ā I.

2. 6. Ἐπ' ἅπαξ ἐγὼ σείω, *Ec. Heb. 12. 26.*

M A L A C H:

1. 2. 3. Ἰακώβ ἠγάπησα. *Rom. 9. 13.*



ΤΟ ΚΑΤΑ ΜΑΤΘΑΙΟΝ
ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κεφ. α. ι.

1



ΙΒΛΟΣ Χριστός Ιησὺ Χριστὸς,
υἱὸν Δαβὶδ, υἱὸν Ἀβραάμ.

2 Ἀβραάμ ἐγέννησε τὸν Ἰσαάκ.
Ἰσαάκ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰακώβ.
Ἰακώβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ῥούθ, ὃς
τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ.

3 Ῥούθ δὲ ἐγέννησε τὸν Φαρὲν,
ὃς τὸν Ζαρὰ ὅτι τὸν Φάρων. Φάρων
δὲ ἐγέννησε τὸν Ἑσώμ. Ἑσώμ
δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀράμ.

4 Ἀράμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀμινάδαβ. Ἀμινάδαβ δὲ ἐγέν-
νησε τὸν Ναασών. Ναασών δὲ ἐγέννησε τὸν Σαλμών.

5 Σαλμών δὲ ἐγέννησε τὸν Βοὺζ ὅτι τὸν Ραχάβ. Βοὺζ
δὲ ἐγέννησε τὸν Ὡβὲδ ὅτι τὸν Ρούθ. Ὡβὲδ δὲ ἐγέννησε
τὸν Ιωάκīm.

6 Ιωάκīm δὲ ἐγέννησε τὸν Δαβὶδ τὸν Βασιλέα. Δαβὶδ
δὲ βασιλεύσας ἐγέννησε τὸν Σολομῶνα ὅτι τὸν Οὐρίμ.

7 Σολομῶν δὲ ἐγέννησε τὸν Ροβοάμ. Ροβοάμ δὲ ἐγέν-
νησε τὸν Ἀβιά. Ἀβιά δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀσά.

8 Ἀσά δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωσαφάτ. Ἰωσαφάτ δὲ ἐγέν-
νησε τὸν Ιωράμ. Ιωράμ δὲ ἐγέννησε τὸν Οὐζιάν.

9 Οὐζιάν δὲ ἐγέννησε τὸν Ιωάθαμ. Ιωάθαμ δὲ ἐγέν-
νησε τὸν Ἀχαζ. Ἀχαζ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐζεκιάν.

10 Ἐζεκιάν δὲ ἐγέννησε τὸν Μανασσῆ, Μανασσῆ δὲ ἐ-
γέννησε τὸν Ἀμάν. Ἀμάν δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωσίαν.

11 Ἰωσίας δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰεχονίαν, ὃς τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ ἔσπεν τὸν μετοικεσίαν Βαβυλῶνος.

12 Μετὰ δὲ τὸν μετοικεσίαν Βαβυλῶνος, Ἰεχονίας
ἐγέννησε τὸν Σαλτιήλ. Σαλτιήλ δὲ ἐγέννησε τὸν Ζα-
ρὰββὰν.

- 13 Ζοροβάβελ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀβιούδ, Ἀβιούδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλιακίμ, Ἐλιακίμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀζούρ.
- 14 Ἀζούρ δὲ ἐγέννησε τὸν Σαδούκ, Σαδούκ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἀχέμ, Ἀχέμ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλιδ.
- 15 Ἐλιδ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἐλεάζαρ, Ἐλεάζαρ δὲ ἐγέννησε τὸν Ματθάν, Ματθάν δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰακώβ.
- 16 Ἰακώβ δὲ ἐγέννησε τὸν Ἰωσήφ, τὸν ἄνδρα Μαρίας, ὃς ἦν ἐγεννηθὴς Ἰησοῦς, ὁ λεγόμενος Χριστός.
- 17 Πᾶσαι γὰρ γενεαὶ ἀπὸ Ἀβραάμ ἕως Δαβὶδ γενεαὶ δεκατέσσαρες, ἀπὸ Δαβὶδ ἕως τῆς μεττοικασίας Βαβυλωνίως, γενεαὶ δεκατέσσαρες, ἀπὸ τῆς μεττοικασίας Βαβυλωνίως ἕως τοῦ Χριστοῦ, γενεαὶ δεκατέσσαρες.
- 18 Τῇ δὲ Ἰησοῦ Χριστοῦ γέννησις ὕτως ἔω· Μητὴρ θείης γὰρ τῆς μητρὸς αὐτοῦ Μαρίας, τῷ Ἰωσήφ, πρὶν συνελθεῖν αὐτοὺς, ὄρεθαι ἐν γαστρὶ ἔχουσα ὡς πνύματα τοῦ ἁγίου.
- 19 Ἰωσήφ δὲ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, δίκαιος ὢν, καὶ μὴ θέλων αὐτὴν παραδυναμίτσειν, ἐβλήθη λαθραὶ ἀπολῦσαι αὐτήν.
- 20 Ταῦτα δὲ αὐτῷ συμβαλόντες, ἰδὲ ἄγγελοι Κυρίου κατ' ὄναρ ἐφάνη αὐτῷ, λέγον· Ἰωσήφ υἱὸς Δαβὶδ, μὴ φοβήθης παραλαβεῖν Μαρίαν τὴν γυναῖκα σου, τὸ γὰρ ἐν αὐτῇ γεννηθὲν ὡς πνύματος ἐστὶν ἁγίου.
- 21 Τέξεται δὲ υἱόν, καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἸΗΣΟΥΝ, αὐτὸς γὰρ σώσει τὸ λαόν αὐτοῦ ἀπὸ πάντων ἀμαρτιῶν αὐτῶν.
- 22 (Ταῦτο δὲ ὅλον γέγονεν, ἵνα πληρωθῇ τὸ ρηθὲν ἀπὸ τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ προφήτου, λέγοντος·)
- 23 Ἰδὲ ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ ἔξει, καὶ τέξεται υἱόν, καὶ καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ ΕΜΜΑΝΟΥΗΛ, ὃ ἐστὶν μεθερμηνεύον, μεθ' ἡμῶν ὁ Θεός.)
- 24 Διεγερθεὶς δὲ ὁ Ἰωσήφ ἀπὸ τοῦ ὕπνου, ἐποίησεν ὡς προσέταξεν αὐτῷ ὁ ἄγγελος Κυρίου, καὶ παρέλαβε τὴν γυναῖκα αὐτοῦ.
- 25 Καὶ ἔκ ἐκείνου ἔγεννησεν αὐτῷ υἱόν, ὃς ἦν ὁ πρῶτος τοῦ ἁγίου, καὶ ἰκαλίσσετο τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἸΗΣΟΥΝ.

Κεφ. β'. 2.

- 1 ΤΟΥΤΟ δὲ Ἰησοῦ γεννηθέντος ἐν Βηθλεὲμ τῷ Ἰουδαίῳ, ἐν ἡμέραις Ἡρώδου τοῦ βασιλέως, ἵνα μάχοι ἀπὸ ἀνιτολῶν παρεγένοντο εἰς Ἱερουσόλυμα, λέγοντες·
- 2 Ἴδὲ ἐστὶν ὁ τεχθεὶς βασιλεὺς τῷ Ἰουδαίῳ; εἰδομένων γὰρ αὐτῶν ὅτι ἦν ἐν τῇ ἀνατολῇ, καὶ ἤλθομεν προσκυνῆσαι αὐτόν.
- 3 Ἀκούσας δὲ Ἡρώδης ὁ βασιλεὺς ἐταράχθη, καὶ πάντα Ἱερουσόλυμα μετ' αὐτοῦ.

4 Καὶ συναγαγὼν πάντας τῆς ἀρχιερέας ἔγραμμωσεν
τὸ λαόν, ἐτυνθάνετο παρ' αὐτῶν πᾶσι ὁ Χριστὸς γεννητῆς.

5 Οἱ δὲ ἔβον αὐτῷ, Ἐν Βηθλεὲμ τῇ Γ'ιδδακας· ὅτι
ὁ γ'εγραπται διὰ τοῦ προφῆτου·

6 Καὶ σὺ Βηθλεὲμ, γῆ Γ'ιδδα, ἡδυνῶς ἐλαχίστη ἐν
ταῖς ἡγεμονίαις Γ'ιδδα· σὺ σὺ γὰρ ἐξελήσεται ἡγε-
μενος, ὅστις ποιμανεῖ τὸ λαόν μου τὸν Γ'ισραήλ.

7 Τότε Ἡρώδης λαθρὰ καλέσας τῆς μάγας, ἐκεί-
βυσε παρ' αὐτῶν τὸν χρόνον τοῦ φαινομένου ἀστερος.

8 Καὶ πύμψας αὐτὰς εἰς Βηθλεὲμ, αἶπε· Πορεύε-
ται, ἀκρωτῶς μετὰσκατε πρὸς τὸ παιδίον· ἐπὶ δὲ ἡ-
ρητῆς, ἀπεγγεῖλάτε μοι, ὅπως καὶ γὰρ εἰδὼν προτιμω-
σῶ αὐτό.

9 Οἱ δὲ ἀκήρυκτες τοῦ βασιλείου, ἐπορεύθησαν. Καὶ
ἰδὼν, ὅτι ἦσαν ἐν τῇ ἀνατολῇ, προῆγεν αὐτῆς,
ἕως εἰδὼν ἐστὶν ἐπαῖον ἢ ὡς τὸ παιδίον.

10 Ἰδόντες δὲ τὸ ἄστρον, ἐχάρησαν χαρὰν μεγάλην
σφόδρα.

11 Καὶ εἰσθόντες εἰς τὸ οἶκόν αὐτῶν εὗρον τὸ παιδίον μετ'
Μαρίας τῆς μητρός αὐτοῦ· ἔπεισαν τοὺς κύντας αὐ-
τῶν καὶ ἀνοίξαντες τῆς θύρας αὐτῶν, προσκύνησαν
αὐτῷ δῶρα, χρυσόν, ἔμβαστον, ἔσμιρνάν.

12 Καὶ χρηματισθέντες κατ' ὄναρ μὴ ἀνακάμψαι
πρὸς Ἡρώδην, εἰ ἄλλως ὁδὸ ἀνεχώρησαν εἰς τὴν χώραν
αὐτῶν.

13 Ἀναχωρησάντων δὲ αὐτῶν, ἰδὼν, ἄγγελος Κυρίου
φαίνεται κατ' ὄναρ τῷ Ἰωσήφ, λέγων· Ἐγέρθῃς πα-
ράλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ, ἔφυγε εἰς Αἴ-
γυπτον· ἔστι δὲ ὅτι εἰς ἐκεῖ ἂν ἴπαι σοι, μέλλει γὰρ Ἡ-
ρώδης ζητῶν τὸ παιδίον, ἵνα ἀπολέται αὐτό.

14 Οἱ δὲ ἐγέρθῃς παρέλαβε τὸ παιδίον ἔπειτα τὴν μητέρα
αὐτοῦ καὶ ἐκώλυσε εἰς Αἴγυπτον.

15 Καὶ ὡς ὅτι εἰς τὸ τέλος Ἡρώδης· ἵνα πληρωθῇ
τὸ ῥῆθὲν τοῦ Κυρίου διὰ τοῦ προφῆτου, λέγοντος·
Ἐξ Αἰγύπτου ἐκλήσεται τὸ υἱόν μου.

16 Τότε Ἡρώδης ἰδὼν ὅτι ἐνεπαύθη ὑπὸ τοῦ μή-
γαν, ἐθυμώθη λίαν· ἔπεμψε ἀπὸ πάντων τῆς
παίδας τῆς ἐν Βηθλεὲμ, καὶ ἐν πάσι ταῖς ἐρίαις αὐτῶν,
ἀπὸ διετίας ἔως κατωτέρω, καὶ τὸν χρόνον ὃν ἐκείνοι
παρὰ τῷ μῶν.

17 Τότε ἐπληρώθη τὸ ῥῆθὲν ὑπὸ Ἰερემίου τοῦ προφῆ-
του, λέγοντος·

18 Ὡς ἐν Ῥ'αμὰ ἠκώσθη, θρήνος ἔκλαυθμός τε καὶ
ῥῥυμός πολλός, Ῥ'αχὴλ κλάμψαι τὰ τέκνα αὐτῆς· ἔκ
ἡθέλε παρακληθῆναι, ὅτι ἦν εἰς.

19 Τελουτήσματος δὲ τοῦ Ἡρώδης, ἰδὼν, ἄγγελος Κυ-
ρίου κατ' ὄναρ φαίνεται τῷ Ἰωσήφ ἐν Αἰγύπτῳ,

20 Λέγων· Ἐγέρθῃς παράλαβε τὸ παιδίον καὶ τὴν μη-
τέρα αὐτοῦ, καὶ πορεύεσθε εἰς τὴν Γ'ισραήλ· τεθνήκωσι γὰρ οἱ
ζητῶντες τὸ παιδίον.

21 Οἱ δὲ ἐγέρθῃς παρέλαβε τὸ παιδίον ἔπειτα τὴν μη-
τέρα

τέρᾳ αὐτῇ, καὶ ἦλθεν εἰς γλῶ' Ἰσραὴλ.

22 Ἀκούσας δὲ ὅτι Ἀρχέλαος βασιλεὺς ἔστι τῆς Γαλιλαίας ἀπὸ Ἡρώδου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ἐφοβήθη ὅτι αὐτὸν θέλει ἀποκτείνῃ· καὶ ἔφυγε εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

23 Καὶ ἐλθὼν κατέκησεν εἰς πόλιν λεγομένην Ναζαρέτ· ὅπου παρεβόη τὸ ῥηθὲν διὰ τοῦ προφήτου, ὅτι Ναζαρέτης κληθήσεται.

Κεφ. γ'. 3.

1 Εἰς ταῖς ἡμέρας ἐκείναις ἐπαγγέλλεται Ἰωάννης ὁ βαπτιστής, κηρύσσων ἐν τῇ ἐρήμῳ τὰς Ἰουδαίας,

2 καὶ λέγων· Μετανοεῖτε· ἤγγικεν γὰρ ἡ βασιλεία τοῦ οὐρανοῦ.

3 Οὗτος γὰρ ἐστὶν ὁ ῥηθεὶς διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου, λέγοντος· Φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἐτοιμάσατε τὴν ὁδὸν Κυρίου, ὡς ὅτι ποιῇτε τὰς τρίβους αὐτοῦ.

4 Αὐτὸς δὲ ὁ Ἰωάννης εἶχε τὸ ἐνδυμασίον αὐτοῦ ἀπὸ τριζῶν καουκῆ, καὶ ζωνίῳ δερματίνῳ περὶ τὸ σπῆν αὐτοῦ· καὶ ἡ τροφή αὐτοῦ ἦν ἀκρίδες καὶ μέλι ἄγριον.

5 Τότε ἤκουσαν οἱ Ἰεροσόλυμοι, καὶ πᾶσα ἡ Ἰουδαία, καὶ πᾶσα ἡ περιχώρος τῆς Ἰορδάνου·

6 καὶ ἐβαπτίζοντο ἐν τῇ Ἰορδάνῳ ὑπὸ αὐτοῦ, ἔχοντες λογισμοὺς τὰς ἀμαρτίας αὐτῶν.

7 Ἰδὼν δὲ πολλοὶ τῶν Φαρισαίων καὶ Σαδδουκαίων ἐρχομένων ὑπὸ τὸν βαπτισμὸν αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Τινὲς μακαριοὶ ἐχιδνῶν, τίς ὑποδείξει ὑμῖν φυγῆν ἀπὸ τῆς μελλούσης ἰσχύος;

8 Πειράσατε ἐν καρπῷ ἀξίῳ τῆς μετανόιας.

9 Καὶ μὴ δοξεῖτε λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Πατέρα ἔχουμι καὶ Ἀβραάμ· λέγει γὰρ ὑμῖν, ὅτι δύναται ὁ Θεὸς ἐκ τῶν λίθων τέκναι τέκνα τοῦ Ἀβραάμ.

10 Ἡ δὲ ἀξία πρὸς τὴν εἰσόδον τῶν δένδρων κητεῖται· πλὴν ἐν δένδρῳ μὴ ποιῇ καρπὸν καλόν, ἐκκόπεται, καὶ εἰς πυρὶν βάλλεται.

11 Εὔρω μὲν βαπτίζω ὑμᾶς ἐν ὕδατι εἰς μετανόiam· ὁ δὲ ὁπίτω με ἐρχομένης, ἰσχυρότερός με ἐστίν, ὃς κ' εἰμι ἰσχυρὸς τὴν ὑποδήματα βασάν· οὗτος ὑμᾶς βαπτίσει ἐν πνεύματι ἁγίῳ καὶ πυρὶ.

12 Οὐ τὸ πνεῦμα ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἡ φωνὴ αὐτοῦ, καὶ συνάξις τῆς στίβου αὐτοῦ, καὶ τὸ ἄχυσον κατακαύσει περὶ Ἰερουσαλήμ, τὸ δὲ ἄχυσον κατακαύσει περὶ Ἰερουσαλήμ.

13 Τότε ἐπαγγέλλεται ὁ Ἰησοῦς ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ὑπὸ τὸν Ἰορδάνην πρὸς τὸν Ἰωάννην, ἵνα βαπτισθῇ ὑπὸ αὐτοῦ.

14 Ὁ δὲ Ἰωάννης διεκάλειεν αὐτόν, λέγων· Εὔρω χρεῖον ἔχω ὑποστῆναι βαπτισθῆναι, καὶ σὺ ἔρχῃ πρὸς με;

15 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς αὐτόν· Αἴφες εἰπὲ· ἢ τίς γὰρ πρόβλεπον ἐστὶν ἡμῖν πληρῶσαι πᾶσαν δικαιοσύνην; Τότε ἀφίησιν αὐτόν.

16 Καὶ βαπτισθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἀνέβη εὐθὺς ἀπὸ τοῦ ὕδατος. καὶ ἰδὼν ἀνέωχθῆσαν αὐτῷ οἱ ἠρώδης, ὁ μὲν δὲ τὸ πνεῦμα, καὶ Θεὸς καταβαίνειν ὡσεὶ παῦσα γλῶσση, ὁ ἑρπαινοὺν ἐπ' αὐτὸν.

17 Καὶ ἰδὼν, φωνὴ ἐκ τοῦ ἠρώδου, λέγουσα. Οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ αὐδοκῆται.

Κεφ. δ'. 4.

1 Τότε ὁ Ἰησοῦς ἀνέχθη εἰς τὸ ἱερὸν ὑπὸ τῆς πνεύματος, πειρασθῆναι ὑπὸ τοῦ διαβόλου.

2 Καὶ ηὐτότε αἱ ἡμέραι τεσσαράκοντα, καὶ νυκτεῖς τεσσαράκοντα, ὅσον ἐπέσπευτε.

3 Καὶ προσελθὼν αὐτῷ ὁ πειράζων, εἶπεν. Εἰ υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, εἰπέ ἵνα οἱ λίθοι ᾗτις αὐτοὶ γίνονται.

4 Οὗ δὲ ἀπεκρίθεις, εἶπε. Γέγραπται. Οὐκ ἐστὶν αὐτῷ μόνῳ ζητεῖται ἀνθρώπου, ἀλλ' ὑπὲρ πάντιν ῥήματι σκεπομένης, διὰ τὸ σώματος Θεοῦ.

5 Τότε παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ διάβολος εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν, ὁ ἵστησιν αὐτὸν ὑπὲρ τὸ πτερυγιὸν τοῦ ἱεροῦ.

6 Καὶ λέγει αὐτῷ. Εἰ υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, βάλε σεαυτὸν ἑκταῦ. γέγραπται γάρ. Ὅτι πῦρ ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντέλλεται ποῦ σε, ὁ ὑπὲρ χειρῶν ἀναστήσει σε, μηκέτι προσκρούσῃς πρὸς λίθον τοῦ ποδοῦ σου.

7 Εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς. πάλιν γέγραπται. Οὐκ ἐκπειράσεις Κύριον τὸν Θεόν σου.

8 Πάλιν παραλαμβάνει αὐτὸν ὁ διάβολος εἰς ὄρος ὀψιπλὲν λίαν, ὁ δακνύσιν αὐτὸν πάσαις τὰς βασιλείας τοῦ κόσμου, ὁ δὲ δοξάζει αὐτὸν.

9 Καὶ λέγει αὐτῷ. Ταῦτα πάντα σοὶ δώσω, ἐὰν τίς σου προσκυνήσῃ μοι.

10 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς. Ὅτι παρὲς σατανᾷ, γέγραπται γάρ. Κύριον τὸν Θεόν σου προσκυνήσεις, ὁ αὐτὸς μόνος λατρεύσεις.

11 Τότε ἀφίησιν αὐτὸν ὁ διάβολος. καὶ ἰδὼν, ἄγγελοι προσήλθον, καὶ διεκόνουν αὐτόν.

12 Ἀκούσας δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι Ἰωάννης παρεδόθη, ἀνεχώρησεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

13 Καὶ καπυλαίων τὴν Ναζαρέτ, ἐλθὼν κατέκησεν εἰς Καπερναχὴν τὴν παραθαλάσσιον ἐν ὁρίσις Ζαβουλὼν καὶ Νεφθαλὴμ.

14 Ἵνα πληρωθῇ τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφήτου, λέγοντος.

15 Ἦ Ζαβουλὼν ὁ γῆ Νεφθαλὴμ, ὁδὸν θαλάσσης, πέραν τοῦ Ἰορδάνου, Γαλιλαία τῷ ἔθνει.

16 Οὗ λαὸς ὁ καθήμενος ἐν σκοτίᾳ, εἶδε φῶς μέγα, καὶ τοῖς καθημένοις ἐν σκιά θανάτου, φῶς ἀνέτειλεν αὐτοῖς.

17 Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς κηρύσσειν, καὶ λέγειν. Μετανοεῖτε. ἤγγικε γὰρ ἡ βασιλεία τοῦ κυρίου.

18 Περιπατῶν δὲ ὁ Ἰησοῦς παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλι-

Γαλιλαίας, εἶδε δύο ἀδελφούς, Σίμωνα ἢ λιγέριον Πέτρον, ἔτι Ἀνδρέαν ἢ ἀδελφὸν αὐτοῦ, βάλλοντας ἀμφιβάλλοντες ἐν τῷ θαλάσσῃ· (ἦσαν γὰρ ἀλιεῖς.)

19 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Δεῦτε ὀπίσω μου, ἔτι ποιήσω ὑμᾶς ἀλιεῖς ἀνθρώπων.

20 Οἱ δὲ ἀφέντες τὰ δίκτυα, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

21 Καὶ προβάς ὁκέθεν, εἶδεν ἄλλους δύο ἀδελφούς, Ἰάκωβον ἢ Ζεβεδαίου, ἔτι Ἰωάννην ἢ ἀδελφὸν αὐτοῦ ὅτι τὸ πληῖον αὐτῶν Ζεβεδαίου ἢ Πατρὸς αὐτῶν, καταρτίζοντας τὰ δίκτυα αὐτῶν· ἔτι ὁκάλεσεν αὐτούς.

22 Οἱ δὲ ἀφέντες ἀφέντες τὸ πλοῖον ἔτι ἢ Πατέρα αὐτῶν, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

23 Καὶ παρῆλθον ὅλῳ τῷ Γαλιλαίῳ ὁ Ἰησοῦς, διδάσκων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν, ἔτι κηρύσσων τὸ Εὐαγγέλιον ἢ Βασιλείας, ἔτι θεραπεύων πᾶσαν νόσον ἔτι πᾶσαν κολοκίαν ἐν τῷ λαῷ.

24 Καὶ ἀπῆλθεν ἡ ἀκοὴ αὐτοῦ εἰς ὅλῳ τῷ Συρίῳ· ἔτι προσέειπεν αὐτῷ πάντες τὰς κηλὲς ἔχοντας, περικείμενους νότοις ἔτι βασαντοῖς στυγερομένοις, ἔτι δαιμονιζομένοις, ἔτι τελευτωμένοις, ἔτι παραλυτικοῖς· ἔτι ἐθεράπευσεν αὐτούς.

25 Καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοὶ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας, ἔτι Δεκαπόλεως, ἔτι Ἱεροσολύμων, ἔτι Ἰνδαίας, ἔτι πέριξ ἢ Ἱερδάρῃ.

Κεφ. ε'. 3.

1 Ἰδοὺν δὲ τὰς ὄχλους, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος· ἔτι καθίσαντος αὐτοῦ, προσῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

2 Καὶ ἀποτίνας τὸ σῶμα αὐτοῦ, ἐδίδασκεν αὐτούς λέγων·

3 Μακάριοι οἱ πτωχοὶ τῷ πνεύματι· ὅτι αὐτοῖς ἐστι ἡ βασιλεία τοῦ Οὐρανοῦ.

4 Μακάριοι οἱ πενθεῖντες· ὅτι αὐτοὶ παρακληθήσονται.

5 Μακάριοι οἱ πραεῖς· ὅτι αὐτοὶ κληρονομήσουσιν τὴν γῆν.

6 Μακάριοι οἱ πεινῶντες, ἔτι διψῶντες τῷ δικαιοσύνῃ· ὅτι αὐτοὶ χορτασθήσονται.

7 Μακάριοι οἱ ἐλεήμονες· ὅτι αὐτοὶ ἐλεηθήσονται.

8 Μακάριοι οἱ καθαροὶ τῇ καρδίᾳ· ὅτι αὐτοὶ τὸν Θεὸν ὄψονται.

9 Μακάριοι οἱ ἐπιεικεῖς· ὅτι αὐτοὶ ἴσονται τὸν Θεὸν κληθήσονται.

10 Μακάριοι οἱ διειρημένοι ἔνεκν δικαιοσύνης· ὅτι αὐτοῖς ἐστι ἡ βασιλεία τοῦ Οὐρανοῦ.

11 Μακάριοι ἔστε, ὅτι ὁ ὀνειδίσει ὑμᾶς, ἔτι διώξει, ἔτι ἐπώσει πᾶν πονηρὸν ῥῆμα κατ' ὑμᾶς, ψεύδομενοι, ἔνεκν ἐμῶν.

12 Χαίrete ἔτι ἀγανακτήσθε· ὅτι ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐν τοῖς Οὐρανοῖς· ὅτι γὰρ ἐδίωξαν τὸν Προφήτην, τὸν πρὸ ὑμῶν.

13 Ὑμῖν ἐστὶ τὸ ἄλλαι τῇ γῆς· εἰάν δὲ τὸ ἄλλαι μω-
νηθῇ, ἐν τῇ ἀλισθήσεται· εἰς ἣδὲν ἰσχύει ἔτι, εἰ
μὴ βληθῆναι ἔξω, & καταπατεῖσθαι ὑπὸ τοῦ ἀνδρῶ-
ν.

14 Ὑμῖν ἐστὶ τὸ φῶς τῷ κόσμῳ· ὃ δοῦναι πόλιν
κρίβηται ἑπάνω ὅρκου κειμένη.

15 Οὐδὲ καί σοι λυχνόν, & τιθέσσις αὐτὸν ὑπὸ τῷ
μόδιον, ἀλλ' ὑπὲρ τῶν λυχνίων, & λάμπει πᾶσι τοῖς
ἐν τῇ οἰκίᾳ.

16 Οὗτο λαμπρύνει τὸ φῶς ὑμῶν ἐμπροσθεν τοῦ ἀν-
θρώπου, ὅπως ἴδωσιν ὑμῶν τὰ καλὰ ἔργα, & δοξάσω-
σι τὸν Πατέρα ὑμῶν, τὸν ἐν τοῖς Οὐρανοῖς.

17 Μὲ τομίσθητε, ὅτι ἤλθον καταλῦσαι τὸν νόμον,
& τὰς Προφῆτας· ἢ ἤλθον καταλῦσαι, ἀλλὰ πλη-
ρῶσαι.

18 Ἀμὲν, ὅς λέγει ὑμῖν, ἕως ἂν παρέλθῃ ὁ Οὐρανὸς
& ἡ γῆ, ἵστα ἔν, ἡ μία κεραία ἢ μὴ παρέλθῃ ἀπὸ
τοῦ νόμου, ἕως ἂν πάντα γένηται.

19 Ὅς ἐστὶν ἐν λυχνίᾳ μίαν τῶν ἐντολῶν τῶν ἐν-
λαχίστων, & διδάξῃ ὅτι τῆς ἀνθρώπου, ἐλαχίστος
κληθήσεται ἐν τῇ Βασιλείᾳ τοῦ ἡμετέρου· ὅς δ' αὖ ποιή-
σῃ καὶ διδάξῃ, ὅτος μέγας κληθήσεται ἐν τῇ Βασιλείᾳ
τοῦ ἡμετέρου.

20 Λέγω ὑμῖν, ὅτι εἰάν μὴ παραιτούσῃ ἡ δικαιο-
σύνη ὑμῶν παρὸν τῷ Γραμματεῖον & Φαρισαίῳ, οὐ
μὴ εἰσελθῆτε εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Οὐρανῶν.

21 Ἡκώσατε ὅτι ἡρρ' ἐστὶ τοῖς ἀρχαίοις Οὐ φονεύσεις·
ὅς δ' αὖ φονεύσῃ, ἐνοχος ἔσται τῇ κρίσει.

22 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὃ ὀργίζουσις τῷ
ἀδελφῷ αὐτοῦ κατ', ἐνοχος ἔσται τῇ κρίσει· ὅς δ' αὖ
εἴπῃ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ῥακά, ἐνοχος ἔσται τῇ συνε-
δρίῳ· ὅς δ' αὖ εἴπῃ μωρέ, ἐνοχος ἔσται εἰς τὴν γέιν-
ναν τῷ πυρός.

23 Ἐάν ἔν προσφέρῃ τὸ δῶρόν σου ἐπὶ τὸ θυσιαστή-
ριον, κακῶς μνησθῇς, ὅτι ὁ ἀδελφός σου ἔχει πικατέσῃ.

24 Ἀφες ὁκῆ τὸ δῶρόν σου ἐμπροσθεν τοῦ θυσιαστηρίου,
& ἵταρε, πρῶτον ἀφαιλέσθαι τὸ ἀδελφῷ σου, & τότε
ἐλθὼν προσφέρει τὸ δῶρόν σου.

25 Ἰσθὶ δυνάων τῷ ἀντιδίκῳ σου τυχῶν, ἕως ὅτε εἶ
ἐν τῇ μετ' αὐτοῦ· μήποτε σε πωρῶδῃ ὁ ἀντίδικος τῷ
κρίτῃ, & ὁ κρίτης σε πωρῶδῃ τῷ ὑποκριτῇ, & εἰς φυ-
λακὴν βληθῇς.

26 Ἀμὲν, λέγω σοι, ἢ μὴ θέλῃς ὁκῆθαι, ἕως ἂν
ἀποδῷς τὸ ὄχλατον κοδοῦντῳ.

27 Ἡκώσατε ὅτι ἡρρ' ἐστὶ τοῖς ἀρχαίοις. Οὐ μοιχεύ-
σεις.

28 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὃ βλέπων γυναῖκα
πρὸς τὸ ἐπιθυμῆσαι αὐτῆς, ἔδη ἐμοίχουσιν αὐτῇ ἐν
τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ.

29 Εἰ δ' ὁ ὀφθαλμός σου ὁ δεξιὸς σκανδαλίζει σε,
ἐξελ

ἔργα αὐτῶ, & βάλε ἀπὸ σὺ. συμφέροι γάρ σοι, ἵνα ἀποληται ἐν τῷ μελὶν σου, & μὴ ὅλον τὸ σῶμα σου βληθῇ εἰς γέενναν.

30 Καὶ εἰ ἡ δεξιὰ σου χεὶρ σκλιδάλιζει σε, ἱκκοῦν οὐτάω, & βάλε ἀπὸ σὺ. συμφέροι γάρ σοι, ἵνα ἀποληται ἐν τῷ μελὶν σου, & μὴ ὅλον τὸ σῶμα σου βληθῇ εἰς γέενναν.

31 Ἐρρέθη ὅτι ὅς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτῆς, ὅταν αὐτὴ ἀποσάσῃ.

32 Ἐγὼ ὅμως λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτῆς, παρεκτός λόγου πορνείας, ποιεῖ αὐτὴν μοιχεύσασθαι· καὶ ὅς ἂν ἀπολυμένῳ γαμήσῃ, μοιχεύεται.

33 Πάλιν ἠκούσατε ὅτι ἐρρέθη τοῖς ἀρχαίοις· Οὐκ ὑπερβήσθε, ἀποδάσκει ὁ Κύριος τὰς ὁρκάς σου.

34 Ἐγὼ ὅμως λέγω ὑμῖν, μὴ ὁμοσαι ὅλως· μήτε ἐν τῷ ὅρκῳ, ὅτι θρόνος ἐστὶ τῷ Θεῷ.

35 Μήτε ἐν τῇ γῇ, ὅτι ὑποπόδιόν ἐστι τῷ ποδῷ αὐτοῦ· μήτε εἰς ἱεροσόλυμα, ὅτι πόλις ἐστὶ τῷ μεγάλῳ βασιλεὺς.

36 Μήτε ἐν τῇ κεφαλῇ σου ἐμῶσῃ, ὅτι ὁ δυνασθεὶς μίσην τρεῖς καὶ ἑκατὸν ἢ μέλαινα ποιῆσαι.

37 Ἐγὼ ὅμως λέγω ὑμῖν, Ναὶ, ναὶ, Οὐ, ὤ· τὸ δὲ πλεονόν τῶν τούτων, ὅτι τὸ πονηρὸν ἐστίν.

38 Ἡκούσατε ὅτι ἐρρέθη· Ὁφθαλμὸν ἀντὶ ὀφθαλμοῦ, & οὐδὲν ἀντὶ οὐδόντος.

39 Ἐγὼ δὲ λέγω ὑμῖν, μὴ ἀντιζηῖν τῷ πονηρῷ· ἀλλ' ὅστις σε βλαπτῇ ἐπὶ τῷ δεξιῷ σου σιαγόνῃ, σφίψον οὐκὶ ἐν τῷ ἄλλῳ.

40 Καὶ τῷ θέλοντί σοι κριθῆναι, & τῷ χιτῶνά σου λαβεῖν, ἄφες αὐτῷ & τὸ ἱμάτιον.

41 Καὶ ὅστις σε ἀγγαρεύσει μίλιον ἓν, ὑπάγε μετ' αὐτοῦ δύο.

42 Τῷ αἰτῶντί σοι δίδου, & τῷ θέλοντά ἀπὸ σοῦ θανάσκειν, μὴ ἀποσφραγίσῃς.

43 Ἡκούσατε ὅτι ἐρρέθη· Ἀγαπήσεις τὸ πλησίον σου, &μισήσεις τὸ ἐχθρὸν σου.

44 Ἐγὼ ὅμως λέγω ὑμῖν, ἀγαπᾶτε τὸς ἐχθροὺς ὑμῶν, ἀλογεῖτε τὸς καταραζόμενους ὑμῶν, καλῶς ποιεῖτε τοῖς μισήσαντας ὑμῶν, & προσέχουσιν ὑμᾶς ὡς τῷ ἐκηρεμίζοντι ὑμῶν, & διονύοντι ὑμᾶς.

45 Ὅπως γένησθε ὡς ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὅτι ἐν Οὐρανοῖς, ὅτι τὸ ἡλίου αὐτῷ ἀματέλλει ἐπὶ πονηρὸν & ἀγαθόν, & βροχὴ ἐπὶ δικαίον & ἀδίκον.

46 Ἐὰν γὰρ ἀγαπήσῃτε τοὺς ἀγαπῶντας ὑμᾶς, τί μισθὸν ἔχετε; ὅχι & οἱ τελῶναι τὸ αὐτὸ ποιοῦσι.

47 Καὶ ἐὰν ἀσπασθῇτε τοὺς ἀδελφούς ὑμῶν μόνον, τί πλεονόν ποιεῖτε; ὅχι & οἱ τελῶναι ἔτσι ποιοῦσιν;

48 Ἐσσεσθε δὲ ὡς ὑμεῖς τέλει, ὡς ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ ἐν τοῖς Οὐρανοῖς τέλειός ἐστι.

Κεφ. 5. 6.

1 **Π**οσέχετε τὴν ἐλεημοσύνην ἡμῶν μὴ ποιῆν ἐμπροσθεν τῶν ἀνθρώπων, πρὸς τὸ δεξιῶσαι αὐτοὺς· εἰ δὲ μήγε, μισθὸν ἢ ἐχετε παρὰ τοῦ Πατρὸς ὑμῶν, τῷ ἐν τοῖς Οὐρανοῖς.

2 Ὅταν ἢ ποιῆς ἐλεημοσύνην, μὴ σαλπίσῃς ἐμπροσθέν σου, ὥσπερ οἱ ὑποκριταὶ ποιοῦν ἐν ταῖς συναγωγαῖς, ἵνα ἐν ταῖς ῥύμαις, ὅπως δεξασθῶσιν ὑπὸ ἀνθρώπων· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀπέχου τῷ μισθὸν αὐτῶν.

3 Σὺ δὲ ποιῶντος ἐλεημοσύνην, μὴ γνωστῷ ἢ ἀρετῇ σου τί ποιῇ ἢ δεξιῶσαι.

4 Ὅπως ἢ σε ἢ ἐλεημοσύνη ἐν τῷ κρυπτῷ· ἔο Πατὴρ σε ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ, αὐτὸς ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.

5 Καὶ ὅταν προσεύχη, ἢ ἐστὶ ὥσπερ οἱ ὑποκριταὶ· ἵτι φιλοῦσιν ἐν ταῖς συναγωγαῖς, ἵνα ἐν ταῖς γυνάμει τῶν πλατύνων ἐξώτεις προσεύχονται, ὅπως ἀπὸ πάντων ἀνθρώπων· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἵτι ἀπέχου τῷ μισθὸν αὐτῶν.

6 Σὺ δὲ ὅταν προσεύχη, εἰσελθε εἰς τὸ ταμιεῖόν σου, ἔκλειπας τὴν θύραν σου, πρόσθυσαι τῷ Πατρί σου, τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ· ἔο Πατὴρ σε ὁ βλέπων ἐν τῷ κρυπτῷ, ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.

7 Προσυχόμενοι δὲ μὴ βαττολογήσητε, ὥσπερ οἱ ἔθνη· δοκῶσι γὰρ ὅτι ἐν τῇ πελολογίᾳ αὐτῶν εἰσακοσθήσονται.

8 Μὴ εὖ ὁμοιωθῆτε αὐτοῖς· εἴδε γὰρ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὅτι ἡεῖδρ ἐχετε, πρὸ τοῦ ὅπως αἰτήσασιν αὐτόν.

9 Οὕτως ἢν προσύχεσθε ὑμεῖς· ΠΑΤΕΡ ἡμῶν ὁ ἐν πῖς Οὐρανοῖς· ἀγιασθήτω τὸ ὄνομά σου.

10 Ἐλθέτω ἡ Βασιλεία σου· γνησθήτω τὸ θέλημά σου, ὡς ἐν Οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῇ γῆς.

11 Τὸν ἄρτον ἡμῶν τῷ ἐπιδοσὶ δὲς ἡμῖν σήμερον.

12 Καὶ ἄφες ἡμῖν τὰ ὀφειλήματα ἡμῶν, ὡς ἔο ἡμῖς ἀφίμεν τοῖς ὀφειλέταις ἡμῶν.

13 Καὶ μὴ εἰσενέγκῃς ἡμῶς εἰς πειρασμόν, ἀλλὰ ῥύσαι ἡμῶς ἀπὸ τοῦ πονηροῦ· ὅτι σὺ εἶσιν ἡ Βασιλεία, καὶ ἡ δύναμις, ἔο ἡ δόξα εἰς τὰς αἰώτας. Ἀμήν.

14 Ἐάν γὰρ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, ἀφήσει ἔο ὑμῖν ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ Οὐράνιος.

15 Ἐάν δὲ μὴ ἀφῆτε τοῖς ἀνθρώποις τὰ παραπτώματα αὐτῶν, ἔδο ὁ Πατὴρ ὑμῶν ἀφήσει τὰ παραπτώματα ὑμῶν.

16 Ὅταν δὲ νησούητε, μὴ γίνεσθε, ὥσπερ οἱ ὑποκριταὶ, σκυθρωποὶ· ἀφαιρίζου γὰρ τὰ πρόσωπα αὐτῶν, ὅπως φανῶσι πῖς ἀνθρώποις νησούντες· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἀπέχου τῷ μισθὸν αὐτῶν.

17 Σὺ δὲ νησούων, ἀλειψαί σε τὴν κεφαλὴν, ἔο τὸ πρῶτον σου τίψαι·

18 Οὕτως μὲν φάμεν τοῖς ἀνθρώποις νησούν, ἀλλὰ τῷ Πατρὶ σὺ τῷ ἐν τῷ κρυπτῷ· ὁ δὲ Πατὴρ σὺ ὁ βλάπτων ἐν τῷ κρυπτῷ, ἀποδώσει σοι ἐν τῷ φανερῷ.

19 Μὴ θηταιρίζετε ὑμῖν θηταιρίζων ἐπὶ τῇ γῆς, ὅπως οὐκ ἐβρώσις ἀφάμιξις, ὅτε κλέπτει διορύσσων· ὁ δὲ κλέπτει.

20 Θηταιρίζετε ὅτι ὑμῖν θηταιρίζων ἐν ἡραν, ὅπως οὐκ οὐκ ἐβρώσις ἀφάμιξις, ὅτε κλέπτει ἢ διορύσσων, ἢ δὲ κλέπτει.

21 Ὅτι γὰρ ἐστὶν ὁ θηταιρίζων ἡμῶν, ἐκεῖ ἐστὶν ὁ κλέπτων ὑμῶν.

22 Ὁ δὲ λυχνος τῷ σώματός ἐστιν ὁ ὀφθαλμός· ἐάν ᾖ ὁ ὀφθαλμός σου ἀπλῆς ἢ, ὅλον τὸ σῶμα σου φωτεινὸν ἔσται.

23 Ἐάν δὲ ὁ ὀφθαλμός σου πονηρὸς ᾖ, ὅλον τὸ σῶμα σου σκοτεινὸν ἔσται· ἐάν τὸ φῶς τὸ ἐν σοὶ, σκότος ἐστί, τὸ σκότος πόσον;

24 Οὐδὲς δύναται δυοὶ κυρίως δεῦναι· ἢ γὰρ ἐν ἀγαπῇ, ὁ δὲ ἕτερον ἀγαπήσει· ἢ ἐν ὀργῇ ἀντιτίθεται, ὁ δὲ ἕτερον καταφρονήσει· ἢ δύνασθε Θεῷ δεῦναι ὁ κακῶς.

25 Διὰ τούτου λέγω ὑμῖν, μὴ μεριμνᾶτε τῇ ψυχῇ ὑμῶν, τί φάγητε, ὅτι τί πίητε· μηδὲ τῷ σώματι ὑμῶν, τί ἐνδύσθητε. καὶ ἡ ψυχὴ πλεονὲς ἐστὶ τῷ τριφῶντι, ὁ δὲ τὸ σῶμα τῷ σκεύει;

26 Ἐμβλέψατε εἰς τὰ πετεινὰ τῷ Οὐρανῷ, ὅτι ἡ σπορὰ ῥυτίν, ἢ δὲ θειρίζουσιν, ἢ δὲ συνάγουσιν εἰς ἀποθήκας, ὁ δὲ Πατὴρ ὑμῶν ὁ Οὐράνιος τρέφει αὐτά· οὐκ ὑμεῖς πολλὰ διαφέρετε αὐτῷ;

27 Τίς ὅτι ἡ ὑμῶν μεριμνῶν δύναται προσθεῖναι ἐπὶ τῷ ἡλικίᾳ αὐτῇ πηχυν εἶναι;

28 Καὶ περὶ ἐνδύματος τί μεριμνᾶτε; καταμύθετε τὰ κρίνα τῷ ἀγρῷ πῶς αὐξάνει· ἡ κοπία, ἢ δὲ νῆθει.

29 Λέγω ὅτι ὑμῖν, ὅτι ἢ δὲ Σολομῶν ἐν πάσῃ τῇ δόξῃ αὐτῷ περιεβάλετο ὡς ἐν τούτων.

30 Εἰ δὲ τῷ χόρτον τῷ ἀγροῦ, σήμερον ὄντα, ὁ αὐριοὶ εἰς κλίβανον βαλλόμενον, ὁ Θεὸς οὕτως ἀμφιένυσσιν, ἢ πολλὰ μᾶλλον ἡμῶν, ὀλιγόπιστοι;

31 Μὴ οὖν μεριμνήσητε, λέγοντες· Τί φάγωμεν, ἢ τί πίωμεν, ἢ τί περιβαλλόμεθα;

32 Πάντα γὰρ ταῦτα τὰ ἐξ ὧν ὑπάρχει· οὗτοι γὰρ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ Οὐράνιος ὅτι χρᾶτε ταῦτα ἀπ' αὐτοῦ.

33 Ζητεῖτε ὅτι πρῶτον τῷ Βασιλείᾳ τῷ Θεῷ, καὶ τῷ δικαιοσύνῃ αὐτῷ, ὁ δὲ ταῦτα πάντα προσεθήσεται ὑμῖν.

34 Μὴ ὅτι μεριμνήσητε εἰς τὸν αὐριο· ἢ γὰρ αὐριοὶ μεριμνήσιν τὰ ἐξ αὐτῶν, ἀρκετὸν τῇ ἡμέρῃ ἡ κακία αὐτῶν.

Κεφ. Ζ. 7.

1 ΜΗ κείνεται, ἵνα μὴ κριθῇτε.

2 Ἐν ᾧ γὰρ κρίματι κείνεται, κριθήσασθε· ὅς ἐστι μετρίᾳ μετρεῖτε, ἀντιμετρηθήσεται ὑμῖν.

3 Τί δὲ βλέπετε τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελφοῦ σου, τὸν δὲ ἐν τῷ σφῷ ὀφθαλμῷ δοκὸν οὐ κατανοεῖς;

4 Ἡ τοῖς ἑαῖς τῷ ἀδελφῷ σου. Ἀφες ἐκβάλλω τὸ κάρφος ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου. Ἐἶδὼς ἡ δοκὸς ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου;

5 Τί ποιεῖς, ἐκβαλε πρῶτον τὴν δοκὸν ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου, ἔτι τότε βλέψεις ἐκβάλλειν τὸ κάρφος ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ τοῦ ἀδελφοῦ σου.

6 Μὴ ὥστε τὸ ἄγιον τοῖς κυσὶ, μηδὲ βάλῃτε τὸς μαργαρίτας ὑμῶν ἐμπροσθεν τῶν χοίρων· μήποτε καταπατήσωσιν αὐτάς ἐν τοῖς ποσίν αὐτῶν, ἔσφαγντες τὴν ἑξοσιν ὑμᾶς.

7 Αἰτῆτε, ἔσδοθήσεται ὑμῖν· Ζητᾶτε, ἔσδρασεῖ· κρείτε, ἔανοιγῇται ὑμῖν.

8 Πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶ λαμβάνει, ὁ δὲ ζητῶ εὐρίσκει, ἔ τῷ κρείοντι ἀνοιγῇται.

9 Ἡ τίς ἐστὶν ἡ ψυχὴ ἀνθρώπου, ὃν ἐὰν αἰτήσῃ ὁ υἱὸς ἀνθρώπου, μὴ λίσσον ὑποδώσῃ αὐτήν;

10 Καὶ ἐὰν ἰχθύον αἰτήσῃ, μὴ ὄφιν ὑποδώσῃ αὐτῇ;

11 Εἰ μὴ ὑμεῖς, πονηροὶ ὄντες, οἴδατε δόματα ἀγαθὰ δίδοναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν, πόσω μᾶλλον ὁ πατὴρ ὑμῶν, ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς, δώσει ἀγαθὰ τοῖς αἰτῶσιν αὐτόν;

12 Πάντα μὲν ὅσα ἂν θέλητε ἵνα ποιῶσιν ὑμεῖς οἱ ἄνθρωποι, ἢ τῷ ἔμοιγε ποιεῖτε αὐτοῖς. ἅτος γὰρ ἐστὶν ὁ νόμος, ἔ οἱ προφῆται.

13 Εἰσελθετε διὰ τῆς στενῆς πόλης· ὅτι πλατεῖα ἡ πόλις, ἔ εὐρύχωρος ἡ ὁδὸς ἡ ἀπάγνουσιν εἰς τὴν ἀπωλείαν. ἔ πολλοὶ εἰσὶν οἱ ἐκτεροχόμενοι δι' αὐτῆς.

14 Ὅτι στενὴ ἡ πόλις, ἔ τεθλιμένη ἡ ὁδὸς ἡ ἀπάγουσα εἰς τὴν ζωὴν, ἔ ὀλίγοι εἰσὶν οἱ εὐρίσκοντες αὐτήν.

15 Προσέχετε δὲ ἀπὸ τοῦ ψεύδοπροφητῶν, οἵ τινες ἔρχονται πρὸς ὑμᾶς ἐν ἐνδύμασι προβάτων, ἔσώζειν δὲ εἰσι λύκοι ἀσπαγες.

16 Ἀπὸ τοῦ καρπῶν αὐτῶν ὑπαγνώσεσθε αὐτούς· μή τι συλλέγησιν ἀπὸ ἀκανθῶν σαφυλῆν, ἢ ἀπὸ τριβύλλης σῦκα;

17 Οὕτω πᾶν δένδρον ἀγαθὸν καρπὸς καλὸς ποιεῖ· τῷ δὲ σαπρὸν δένδρον καρπὸς πονηρὸς ποιεῖ.

18 Οὐ δύναται δένδρον σαπρὸν καρπὸς καλὸς ποιεῖν.

19 Πᾶν δένδρον μὴ ποιῶν καρπὸν καλόν, ἐκκόπτεται, ἔ εἰς πυρὶ βιάζεται.

20 Ἀραγε ἀπὸ τοῦ καρπῶν αὐτῶν ὑπαγνώσεσθε αὐτούς.

21 Οὗ τὰς ὁ λέγων μοι, Κύριε Κύριε, ἀπελθίστηται εἰς τὴν βασιλείαν τῶν ἁγίων· ἀλλ' ὁ ποιεῖν τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου τῷ ὧν ἁγίοις.

22 Πολλοὶ ἐρῶσί μοι· ὦ σκάνη τῇ ἡμέρᾳ· Κύριε, ἢ τί σὺ ἐνόματι προσφθεύσας, ἔτι σὺ ἐνόματι θαυμάσια ἔχεις ποιεῖν, ἔτι σὺ ἐνόματι δυναμεις πολλὰς ἐποίησας;

23 Καὶ τότε ὁ μαρτυρῶν αὐτῶν, ὅτι ἠδέεσθε ἐγνωσάμενοι· ἀποχωρεῖτε ἀπ' ἐμὲ οἱ ἐργαζόμενοι τῶν ἀνομιῶν.

24 Πᾶς ἦν ὅστις οἰκίαν μου τῆς λόγους τῆς, ἔτι αὐτῶν, ἐμοιῶσται αὐτὸν ἀνδρὶ φρονίμῳ, ὅστις ψυχοδόμος τῆς οἰκίας αὐτῶν ἐπὶ τὴν πέτρην.

25 Καὶ κατέβη ἡ βροχὴ, ἔρχοντο οἱ ποταμοὶ, ἔτι αὐτῶν οἱ ἀνέμοι, ἔτι προέπεσον τῇ οἰκίᾳ σκάνη, ἔτι ἔπεσε· τεθεμελίωτο γὰρ ἐπὶ τὴν πέτρην.

26 Καὶ τὰς ὁ ἀκούσας μου τῆς λόγους τῆς, ἔτι μὴ πεινῶν αὐτῶν, ἐμοιῶσται ἀνδρὶ μαρῷ, ὅστις ψυχοδόμος τῆς οἰκίας αὐτῶν ἐπὶ τὴν ἄμυνον.

27 Καὶ κατέβη ἡ βροχὴ, ἔρχοντο οἱ ποταμοὶ, ἔτι αὐτῶν οἱ ἀνέμοι, ἔτι προσέκοψαν τῇ οἰκίᾳ σκάνη, ἔτι ἔπεσε· ἔτι ἡ πτώσις αὐτῶν μεγάλη.

28 Καὶ ἐλθὼν ὅτε συνετέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τῆς λόγους τῆς, ἔτι ἐκπληρώσαντο οἱ ὄχλοι ἐπὶ τῇ διδασκῇ αὐτῇ.

29 Ἦν γὰρ διδάσκων αὐτῶν αἰς ἑξήκοντα ἔχων, ἔτι οἱ χαρμαῖς.

Κεφ. γ. 8.

1 Καταβάντι δὲ αὐτῷ ἀπὸ τῆς ἑρῆς, ἀκούσθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί.

2 Καὶ ἰδὼς λαὸς ἐλθὼν προσκύνας αὐτῷ, λέγων· Κύριε, ἐν θείᾳ, δύναται με καθαρῶσαι.

3 Καὶ σκάνη τὴν χεῖρα, ἔτι αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Θέλω, καθαρῶσαι. Καὶ ἑλθὼν ἐκαθάρσεν αὐτὸν ὁ λαὸς.

4 Καὶ λέγων αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅρα μαδενὶ ἡμέρᾳ, ἀλλὰ ἡμέρᾳ, σφαιρὸν ἀκούει τῷ ἱερῷ, ἔτι προσέειπε τὸ δῶρον ὁ προσέταξε Μωσῆς, εἰς μαρτυρίαν αὐτῶν.

5 Εἰσελθόντι δὲ τῷ Ἰησοῦ εἰς Καπερναεὺν, προσῆλθεν αὐτῷ ἐκατόνταρχος παρακαλῶν αὐτόν.

6 Καὶ λέγων· Κύριε, ὁ πᾶς μου βέβαρται ἐν τῇ οἰκίᾳ παραλυτικῶν, θανάτῳ βασταζόμενος.

7 Καὶ λέγων αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ γὰρ ἐλθὼν θεραπεύσω αὐτόν.

8 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἐκατόνταρχος, ἔφη· Κύριε, ἐμὲ εἰμὶ ἰσχυρὸς ἵνα με ὑπὸ τὴν σέβην ἀσπάζομαι. ἀλλὰ μόνον εἰπὲ λόγος, ἔτι ἰαθήσεται ὁ πᾶς μου.

9 Καὶ γὰρ ἐγὼ ἄνθρωπος εἰμι παρὰ ἑξήκοντα, ἔχω ὡς ἑκατὸν στρατιώτας· ἔτι λέγων τῷ, παραβῆντι, ἔτι προσκύνας· ἔτι ἄλλος, ἔρχη, ἔτι ἔρχεται· ἔτι τῷ δούλῳ μου, ποιῶν τὸ τοῦτο, ἔτι ποιῶν.

το Ἀκούσαι δὲ ὁ Ἰησοῦς, ἐθαύμασε, ἔειπε τοῖς ἀποστόλοις· Ἀμην λέγω ὑμῖν, οὐδέ ἐν τῇ Ἰσραὴλ τυγανώσω πίστεϊ ὑμῶν.

11 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ ἀπὸ αἱρετικῶν ἔσονται ἐξ ὑμῶν, ἔσονται ἀποκλεισθέντες μὲν Ἀβραὰμ ἔσονται Ἰσαὰκ ἔσονται ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ τῇ ὑμετέρᾳ.

12 Οἱ δὲ υἱοὶ τῆς βασιλείας σαβλαθήσονται ἐν τῷ σκότειν τῷ ἑσπερινῷ· ὅσα ἔσται ὁ κλαυθμὸς ἔσονται ὁ ὄρυγμός τῶν ἐξόντων.

13 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς τῷ ἑκατοντάρχῳ· ὦταυε, ἔσται ἐπίστυπος, ῥημάθηται σοι. Καὶ ἰάσατο ὁ πῦξ αὐτοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ὁσένη.

14 Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν εἰκὴν Πέτρος, εἶδε τὸν πενθερὸν αὐτοῦ βεβλημένον ἐν πυρέσσῳ.

15 Καὶ ἥψατο τῆς χειρὸς αὐτοῦ, ἔσθηκεν αὐτῷ ὁ πυρετός. ἔσθηκεν, ἔσθηκεν αὐτοῦ.

16 Ὁ ψῆς δὲ ῥυομένης προσήνεγκαν αὐτῷ δαιμονιζόμενος πολλὸς. ἔσθηκεν τὰ πνεύματα ἀκαθάρτα, ἔσθηκεν αὐτοῦ κακῶς ἔχοντες ἐξουσίαν.

17 Ὅπως πληροῦν τὸ ῥηθὲν διὰ Ἡσαΐου τῷ προφῆτῃ, λέγοντος· Αὐτοῖς τῆς ἀσθενείας ἡμῶν ἔλαβε, ἔσθηκεν ἡ νόσος ἐβάστασεν.

18 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς πολλὰς ὄχλους παρὶ αὐτῶν, ὅπως λύσειν αὐτοὺς εἰς τὸ πέραν.

19 Καὶ προσελθὼν εἰς γρηναρίους, εἶπεν αὐτοῖς· Διδάσκαλε, ὁ κληθήσῃ σοι ὅτι ἐκὼν ἀπέρχῃ.

20 Καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Αἱ ἀλυπτερές φωναί ἔσονται, ἔσονται πενήτῃ τῇ ὑμετέρᾳ κατακλιώσῃ· ὁ δὲ υἱὸς τῆς ἀνδρείας ἡ ἐκὼν τὴν κεφαλὴν κλίνῃ.

21 Ἐτῆροι δὲ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, ἐπίστρεψόν μοι πρῶτον ἀπελθεῖν, ἔσθηκεν τὸν πατέρα μου.

22 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀκολουθεῖ μοι, ἔσθηκεν τὸν νεκρὸν θάψαι τῆς ἐαυτοῦ νεκρός.

23 Καὶ ἐμβαίνει αὐτῷ εἰς τὸ πλοῖον, ἠκολούθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ.

24 Καὶ ἰδὼν, σέσωκός μέγας ἐγένετο ἐν τῇ θαλάσσῃ, αἶψα τὸ πλοῖον καλυπτεσθαι ὑπὸ τῷ κυματὶ· αὐτὸς δὲ ὀκνῶν.

25 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἤγειραν αὐτὸν, λέγοντες· Κύριε, σῶσον ἡμᾶς, ἀπολλόμεθα.

26 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τί θεοὶ ἐστέ, ἐλγόντες; Τότε ἐγερθεὶς ἐπετίμησε τοῖς ἀνέμοις ἔσθηκεν τῇ θαλάσσῃ· ἔσθηκεν γαλήνη μεγάλη.

27 Οἱ δὲ ἄνθρωποι ἐθαύμασαν, λέγοντες· Ποταπὸς ἐστί ὁ υἱός, ὅτι ἔσονται οἱ ἀνέμοι, ἔσθηκεν ἡ θαλάσση ὑπακούσῃ αὐτῷ.

28 Καὶ ἐλθόντι αὐτῷ εἰς τὸ πέραν εἰς τὴν χώραν τῆς Γεργουσιῶν, ὑπᾶντησαν αὐτῷ δύο δαιμονιζόμενοι, οἱ τῶν μνησίων ἑσθῆρας, χαλεποὶ λίαν, ὥστε μὴ εἶσθαι τινὰ παρελθεῖν διὰ τῆς ὁδοῦ ἐκείνης.

29 Καὶ ἰδὼ ἐκρήξεν, λέγοντες, Τί ἡμεῖς ἔσθι·
 Ἰησοῦ οὐκ ἔστι Θεὸς; ἤλθες ὡς πρό κειρὸν βατάνισσαι
 ἡμᾶς;

30 Ἦν δὲ μακρὰν ἀπ' αὐτῶ ἀγέλη χοίρων πολλῶν
 βοσκομένη·

31 Οἱ δὲ δαίμονες παρεκάλεν αὐτόν, λέγοντες· Εἰ
 ἐκβάλλεις ἡμᾶς, ἐπίτρεψον ἡμῖν ἀπελθεῖν εἰς τὴν ἀ-
 γέλην τῶν χοίρων·

32 Καὶ εἰπὼν αὐτοῖς· Ὑπάγετε. Οἱ δὲ θεληθόντες
 ἀπῆλθον εἰς τὴν ἀγέλην τῶν χοίρων· Καὶ ἰδὼ, ὥρμη-
 σεν πάντα ἡ ἀγέλη τῶν χοίρων καὶ ἤκρηξεν εἰς τὴν θα-
 λασσαν, ἔκπεδοντο ἐν τοῖς ὕδασι·

33 Οἱ δὲ βόσκοντες ἔφυγον· ἔκπεδοντες εἰς τὴν
 πόλιν, ἀπῆγγαλλον πάντα, ἃ τὰ τῶν δαίμονιζομένων·

34 Καὶ ἰδὼ, πάντα ἡ πόλις ἐξεῆλθεν εἰς συνάντησιν
 τῷ Ἰησοῦ· ἔκιδόντες αὐτόν, παρεκάλεσαν ὥπως μετα-
 βῇ ἀπὸ τῶν ὄρειων αὐτῶν·

Κεφ. 9. 9.

1 **Κ**ΑΙ ἔμβαλεῖς εἰς τὸ πλοῖον, διεπέρασε· ἔκλθες
 εἰς τὴν ἰδίαν πόλιν·

2 Καὶ ἰδὼ, προσέφερον αὐτῷ πῶδον αὐτῶν ἐπὶ κλί-
 νης βεβλημένον· ἔκιδὼν δ' Ἰησοῦς τὴν πίσιν αὐτῶν,
 εἶπε τῷ πῶδονικῷ· Θάρσει τέκνον, ἀφέωνταί σοι αἱ
 ἁμαρτίαι σου·

3 Καὶ ἰδὼ, τυχὸν τῶν γραμματέων ἦτον ἐν ἐκποτῶν·
 Οὐ τῶν βλασφημῶν·

4 Καὶ ἰδὼν δ' Ἰησοῦς τὰς ἐνθυμήσεις αὐτῶν, εἶπεν·
 Ἦνα τί ὑμεῖς ἐνθυμεῖσθε πονηρὰ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;

5 Τί γὰρ ἐστὶν ἀκοπήτερον, εἰπεῖν· Ἀφέωνταί σοι αἱ
 ἁμαρτίαι, ἢ εἰπεῖν· Ἐγείρω, ἔκπερσάτε;

6 Ἦνα δὲ εἰδῆτε ὅτι θεοὶ οὐκ ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου
 ἐπὶ τῇ γῆς ἀφιεῖν ἁμαρτίας· (τότε λέγει τῷ πῶδον-
 ικῷ,) Ἐγείρω σε ἀπὸ τῆς κλίνης, ἔκσταγε εἰς
 τὸν οἶκόν σου·

7 Καὶ ἐγείρω, ἀπῆλθεν εἰς τὸν οἶκόν αὐτοῦ·

8 Ἰδόντες δὲ οἱ ὄχλοι ἐθαύμαζον, ἔκδοξαζον τὸν
 Θεόν, τὸν ἐόντα θεοὶ οὐκ ἔχοντα τοῖς ἀνθρώποις·

9 Καὶ παρῆλθεν ὁ Ἰησοῦς ἐκείθεν, εἶδεν ἄνθρωπον
 κατ' ἡμέραν ἐπὶ τῷ τελευνίῳ, Ματθαῖον λεγόμενον· ἔκ-
 λέγει αὐτῷ· Ἀκολουθε μοι· Καὶ ἀνέσται, ἔκκολου-
 θῶσιν αὐτῷ·

10 Καὶ ἐγένετο αὐτῷ ἀντικείμενον ἐν τῇ οἰκίᾳ, ἔκδὼν,
 πολλοὶ τελευνῶντες ἔκκαρτοί· ἐλθόντες, συνανέκειντο
 τῷ Ἰησοῦ ἔκ τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·

11 Καὶ ἰδόντες οἱ Φαρισαῖοι, εἶπον τοῖς μαθηταῖς
 αὐτοῦ· Διὰ τί μετὰ τῶν τελευνῶν ἔκκαρτων ἐστίν·
 ὁ διδάσκων καθαῖς ὡς;

12 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἀκούσας, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ κατὰ
 ἔκχασιν οἱ ἰσχυρόντες ἰατροῦ, ἀλλ' οἱ κακῶς ἐχόντες·

13 Περιφρονέτε δὲ μηδετέ τί ἐσὶν· Ἐλεος θέλω, ἔ-
κ' θυσίαν· ἢ γὰρ ἔλθοι καλέσαι δικαίους, ἀλλ' ἀμφο-
τέρω ἐς μετανοίαν.

14 Τότε προσερχοῦνται αὐτῷ οἱ μαθηταὶ Ἰωάννης, λέ-
γοντες· Διὰ τί ἡμεῖς καὶ οἱ φαρισαῖοι νηστεύομεν πολλά,
εἰ δὲ μαθαταὶ σου ἢ νηστεύουσιν;

15 Καὶ ἔειπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ δύναται οἱ υἱοὶ τοῦ
νυμφῶνος πένθειν, ἐφ' ὅσον μετ' αὐτῷ ἐστὶν ὁ νυμ-
φος; ἔλθουσιν δὲ ἡμέραι ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ' αὐτοῦ ὁ
νυμφῶν, ἔ τότε νηστεύουσιν.

16 Οὐδεὶς δὲ ἐπιβάλλει ἐπίβλημα ῥάκως ἀγράφε ἐπὶ
ἱματίῳ παλαιῷ· ἀλλ' ὅτε τὸ πλῆρωμα αὐτοῦ αὐτὸ τοῦ ἱμα-
τιοῦ, ἔ καὶ τὸν ὅλκον γίνεται.

17 Οὐδὲ βάλλουσιν οἶνον ἐν αἰνῇ παλαιᾷ· καὶ
εἰ δὲ μή, ῥήγνυσται οἱ ἀσκοί, ἔ ὁ οἶνος ἐκχέεται, ἔ
οἱ ἀσκοὶ ἀπολύνται, ἀλλὰ βάλλουσιν οἶνον νέον ἐν ἀσ-
κῇ καινῇ, ἔ ἀμφοτέρω συντηροῦνται.

18 Ταῦτα αὐτῷ λαλῶντες αὐτοῖς, ἰδὼν, ἄρχων ἐλθὼν
προσεκύνει αὐτῷ, λέγων· Οὔ π' ἢ θυγάτηρ μου εἶσι, ἐτι-
λάττησεν· ἀλλὰ ἐλθὼν, ἐτίθει τὴν χεῖρα σου ἐπ' αὐ-
τήν, ἔ ἔχεται.

19 Καὶ ἐγγραφῆς ὁ Ἰησοῦς ἠκολούθησεν αὐτῷ, ἔ οἱ μα-
θηταὶ αὐτοῦ.

20 (Καὶ ἰδὼν, γυνὴ ἡμετέρ' ὄψα δώδεκα ἔτη, προσ-
θῆσα ὅτιςθιεν, ἡψατο τοῦ κοκαπέδου τοῦ ἱματιοῦ αὐτοῦ.)

21 Ἐλεγε γὰρ ἐν ἑαυτῇ· Ἐὰν μόνον ἄψωμαι τοῦ ἱματιοῦ
αὐτοῦ, σωθήσομαι.

22 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἐπιστραφείς, ἔ ἰδὼν αὐτήν, ἔπε-
σάμεν θύγατρί· ἢ πῶς σου σέσωκέ σε. Καὶ ἐσώθη
ἡ γυνὴ ἀπὸ τοῦ ὄντος ἐκείνου.)

23 Καὶ ἐλθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ ἀρχοντοῦ,
ἔ ἰδὼν τὰς αἰλητάς, ἔ τὸν ὄχλον θορυβώμενον,

24 Λέγει αὐτοῖς· Ἀναχωρεῖτε· ἢ γὰρ ἀπέθανε τὸ κο-
ράσιον, ἀλλὰ καθύδα. Καὶ κατεχέλευν αὐτόν.

25 Ὅτε δὲ ἐξεβλήθη ὁ ὄχλος, ἐσελθὼν ἐκράτησε τοῦ
χεῖρος αὐτοῦ, ἔ ἤγερε τὸ κοράσιον.

26 Κατέβηθεν ἡ φωνὴ αὕτη εἰς ὅλον τοῦ γῆν ἐκείνην.

27 Καὶ παρῶντι ἐκείνῃ τῷ Ἰησοῦ, ἠκολούθησαν αὐ-
τῷ δύο τυφλοὶ, κράζοντες, ἔ λέγοντες· Ἐλέησον ἡμᾶς
οἱ ἐκ Δαβὶδ.

28 Ἐλθόντι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, προσήλθον αὐτῷ οἱ
τυφλοὶ, ἔ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πιστεύετε ὅτι δύναμαι
τοῦτο ποιῆσαι; Λέγουσιν αὐτῷ· Ναί Κύριε.

29 Τότε ἡψατο τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν, λέγων· Κατὰ
τὴν πίσιν ὑμῶν γινώσκω ὑμῖν.

30 Καὶ ἀνεψήχθησαν αὐτῷ οἱ ὀφθαλμοί· καὶ ἐμβρι-
μήσαντι αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Ὁράτε, μηδεὶς γινώ-
σκειτω.

31 Οἱ δὲ ἐξελθόντες διεφήμισαν αὐτὸν ἐν ὅλῃ τῇ γῇ
ἐκείνῃ.

32 Αὐτῷ δὲ προσερχομένῳ, ἰδὼν, προσήγγικεν αὐτῷ
αὐτῶν.

30 οἰθροῦν καὶ φόν δαίμονιζόντων.

33 Καὶ ὁπαλίσθητος τῷ δαίμονι, ἐλάλητι ὁ κυφὸς
 ἔνθα μακρὰν οἱ ὄχλοι, λέγοντες· Ὅτι μδέποτε ἐφάνη
 ἔτις ἐν τῷ Ἰσραὴλ.

34 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι ἔλεγον· Ἐν τῷ ἄρχεται τῷ δαίμονι
 ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια.

35 Καὶ παρῆλθον οἱ Ἰησοῦς τὰς πόλεις πάσας ἔτι
 κώμας, διδόντων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῷ, ἡ καρύ-
 σον τὸ εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας, ἡ θεραπεύων, πᾶσιν
 νόσον ἔτι πᾶσαν μαλακίαν ἐν τῷ λαῷ.

36 Ἰδὼν δὲ τὰς ὄχλους, ἰσχυροχρίσθη παρὰ αὐτῶν
 ὅτι ἤσαν ὀκνηροὶ καὶ ἐρριμμένοι ὡς ἐπὶ πρῶτα μὴ
 ἔχοντα ποιμένα.

37 Τότε λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτῶν· Οἱ μὲν θεραπεύ-
 οὶς πολλοί, οἱ δὲ ἔργαται ὀλίγοι.

38 Διέθηκεν ἡν τῷ κυρίῳ τῷ θεράτῳ, ἔπος ἐκβαλ-
 λόντας εἰς τὸν θεράτῳ αὐτοῦ.

Κεφ. ι. 10.

1 **Κ**Αὶ προσκαλίσάμενος τὸς δώδεκα μαθητὰς αὐ-
 τῷ, ἰδοὺς αὐτοὺς ἤξατον πνευμάτων ἀκα-
 θάρτων, ὥστε ἐκβάλλειν αὐτὰ, ἡ θεραπεύειν πᾶσαν νό-
 σον ἡ πᾶσαν μαλακίαν.

2 Τῶν δὲ δώδεκα ἀπεσθλὼν τὰ ὀνόματά ἐστι ταῦτα
 πρῶτος, Σίμων ὁ λεγόμενος Πέτρος, ἡ Ἀνδρίας ὁ
 ἀδελφὸς αὐτοῦ· Ἰάκωβος ὁ τῷ Ζιβεδαῖν, ἡ Ἰωάννης
 ἀδελφὸς αὐτοῦ.

3 Φίλιππος, ἡ Βαρθελομαῖος - Θαμᾶς, ἡ Ματθαῖος
 ὁ τελῶνης· Ἰακώβος ὁ τῷ Ἀλφαῖν, ἡ Λεββαῖος ὁ
 ἀδελφὸς Θαδδαῖος.

4 Σίμων ὁ Κληματίτης, ἡ Ἰούδας ὁ Ἰσκαριώτης, ὁ
 πρῶτος αὐτοῦ.

5 Τῷ τῶν δώδεκα ἀπέστειλεν ὁ Ἰησοῦς, πρὸς
 αὐτοὺς, λέγων· Εἰς ὁδὸν ἰθὺν μὴ ἀπέλθετε,
 εἰς πόλιν Σαμαρείαν μὴ εἰσέλθετε.

6 Πορεύεσθε δὲ μᾶλλον πρὸς τὰ τρέβατα τὰ ἀπο-
 λῶντα οἴκῳ Ἰσραὴλ.

7 Πορεύεσθε δὲ καρύσατε, λέγοντες· Ὅτι ἔγγι-
 σεν ἡ βασιλεία τοῦ ἡρώων.

8 Ἀσθενέοντας θεραπεύετε, λεπρῶς καθαρῶν
 νεκρῶς ἐγχετε, δαιμόνια ἐκβάλλετε· δωρεὰν ἐλάβετε,
 δωρεὰν δότε.

9 Μὴ κτήσασθαι χρυσόν, μηδὲ ἄργυρον, μηδὲ χα-
 κίν εἰς τὰς ζῶνας ὑμῶν.

10 Μὴ πάαν εἰς ὁδὸν, μηδὲ δύο χιτῶνας, μηδὲ ἑσ-
 θήμυνα, μηδὲ ῥάβδον· ἀξιὸς γὰρ ὁ ἐργατῆς τῆς τροφῆς
 αὐτοῦ εἶναι.

11 Εἰς ἣν δὲ ἂν πόλιν ἡ κώμην εἰσέλθετε, ἡξετά-
 στε τίς ἐν αὐτῇ ἀξίος ἐστίν· καὶ ἐκεῖ μείνετε ὡς ἡξε-
 στατε.

12 Εἰσερχόμενοι δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, ἀπαύσατε αὐτὸν.

13 Καὶ εἰάν μιν ἢ ἡ οἰκία ἠξία, ἐλθῆτω ἡ κίρη ὑμῶν ἐπ' αὐτὸν· εἰάν δὲ μὴ ἢ ἀξία, ἡ κίρη ὑμῶν πρὸς ὑμᾶς ὑπετραφῆται.

14 Καὶ ὅς εἰάν μὴ δέξηται ὑμᾶς, μηδὲ ἀκούῃ τῆς λόγου ὑμῶν, ὑπερχόμενοι τῆς οἰκίας ἢ τῆς πόλεως ἐκείνης, ἐκτινάξατε τὸν κονιορτὸν τῆς ποδῶν ὑμῶν.

15 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἀνεκτοτεροὶ ἔσονται γὰρ Σοδόμων ἔτι τοιοῦτον ἢ ἡμεῖς κρίσεως, ὅ τῃ πόλει ἐκείνῃ.

16 Ἰδοὺ, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς ὡς πρόβατα ἐν μέσῳ λύκων· γίνεσθε ὡν φρονίμοι ὡς οἱ ὄφεις, ἔτι ἀκραιότεροι ὡς αἱ περὶ τὴν γῆν.

17 Προσέχετε δὲ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων· παραδώσκει γὰρ ὑμᾶς εἰς συνάγωγαν, ἔτι ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτῶν μαρτυρώσουσι ὑμᾶς.

18 Καὶ ἐπὶ ἡγούμενους δὲ ἔτι βασιλεῖς ἀρστήτεσθαι θύκειν ὑμῶν, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς ἔτι ταῖς ἐθνεσίν.

19 Ὅταν δὲ παραδιδῶσιν ὑμᾶς, μὴ μεριμνήσητε πῶς ἢ τί ἀπαλλάξετε· δοθήσεται γὰρ ὑμῖν ἐν ὅκυν τῇ ἡμέρᾳ τί ἀπαλλάξετε.

20 Οὐ γὰρ ὑμῶν ἐστὶ οἱ ἀπαλλάττειν, ἀλλὰ τὸ πνεῦμα τῆς πατρὸς ὑμῶν, τὸ ἀπαλλάττει ἐν ὑμῖν.

21 Παραδώσει δὲ ἀδελφεὸς ἀδελφὸν εἰς θάνατον, ἔτι πατὴρ τέκνον· ἔτι ἀγαπήσονται τέκνα ἐπὶ γονεῖς, ἔτι ἀγαπήσονται αὐτούς.

22 Καὶ ἔσονται μισήμενοι ὑπὸ πάντων διὰ τὸ ὄνομα μου· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, ἕως σωθήσεται.

23 Ὅταν δὲ διέκωσιν ὑμᾶς ὡς τῇ πόλει ταύτῃ, φύγετε εἰς τὴν ἄλλαν· ἀμὲν γὰρ λέγω ὑμῖν, ἢ μὴ τελίεσθε τὰς πόλεις τῆς Ἰσραὴλ ἕως ἂν ἔλθῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.

24 Οὐκ ἔστι μαθητὴς ὑπὲρ τὸν διδάσκαλον, ἀλλὰ ὅσοι ἂν ὑπὲρ τὸν κύριον αὐτοῦ.

25 Ἀρκέτον πῶς μαθητὴς, ἵνα γένηται ὡς ὁ διδάσκαλος αὐτοῦ, ἔτι ὅσοι ὡς κύριος αὐτοῦ· εἰ τὸν οἰκοδεσπότῃ Βεελζεβὺλ ἐκάλεσάν, πόσῳ μᾶλλον τοὺς οἰκιακὰς αὐτοῦ.

26 Μὴ ἢν φοβηθῆτε αὐτούς· ἀλλὰ εἰς τὸν φόβον αὐτοῦ, ὅς ἐστι κρυπτός, ὁ ὅς ἐστι γνωστός.

27 Ὅς λέγω ὑμῖν ἐν τῇ σκοτίᾳ, ἀπαύσατε ἐν τῇ φωτί· ἔτι εἰς τὸ ὅς ἀκούετε, κηρύττετε ἐπὶ τῇ δαμιάτῃ.

28 Καὶ μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ τῶν ἀποκτείνοντων τὸ σῶμα, τὴν δὲ ψυχὴν μὴ δύνασθαι ἀποκτείνει· φοβηθῆτε δὲ μᾶλλον τὸν δυνάμενον καὶ τὴν ψυχὴν καὶ τὸ σῶμα ἀποκτείνει ἐν γένει.

29 Οὐχὶ δύο ἐκδοῖα ἀνταρῶν πολεῖται, ἔτι εἰ δὲ αὐτῶν ἢ πεσῇ ἐπὶ τὴν γῆν, ἀλλὰ τῷ πατρὶ ὑμῶν;

30 Ὅτι μὴ δὲ ἔτι τὰς κεφαλὰς πάντα ἡρεῖται μεμνημένη ὑμῶν.

- 31 Μὴ ἂν φοβηθῆτε, πολλῶν τραδίων διψφερετε ὑμεῖς·
 32 Πᾶς ἂν ὅστις ὁμολογήσῃ ἐν ἐμοὶ ἔμπροσθεν τῶν
 ἀνθρώπων, ὁμολογήσω καὶ ἐν αὐτῷ ἔμπροσθεν τοῦ πα-
 τρός μου τοῦ ἐν οὐρανοῖς.
 33 Ὅστις δ' ἂν ἀρνήσῃται με ἔμπροσθεν τῶν ἀνθρώ-
 πων, ἀρνήσομαι αὐτὸν καὶ ἐν ἔμπροσθεν τοῦ πατρός μου τοῦ
 ἐν οὐρανοῖς.
 34 Μὴ νομίζετε ὅτι ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην ἐπὶ τὴν γῆν·
 οὐκ ἦλθον βαλεῖν εἰρήνην, ἀλλὰ μάχην.
 35 Ἦλθον γὰρ διχάσαι ἄνθρωπον μετὰ τοῦ πατρός αὐ-
 τοῦ, ἔσθυσά τε κατὰ τοῦ μητρός αὐτοῦ, καὶ τὴν μητέρα κατὰ
 τοῦ πατρὸς αὐτοῦ.
 36 Καὶ ἐχθροὶ τοῦ ἀνθρώπου, οἱ οἰκιακοὶ αὐτοῦ.
 37 Ὁ φιλῶν πατέρα ἢ μητέρα ὑπὲρ ἐμὲ, οὐκ ἔστι μου
 ἀξίος· καὶ ὁ φιλῶν υἱὸν ἢ θυγατέρα ὑπὲρ ἐμὲ, οὐκ ἔστι
 μου ἀξίος.
 38 Καὶ ὅς τις λαμβάνει τὸν σάκκον αὐτοῦ, ἔσθυσά τε
 ὅπισθε μου, οὐκ ἔστι μου ἀξίος.
 39 Ὁ ὄντων τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ἀπολέσει αὐτήν, ἔσθυσά τε
 αὐτοῦ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν ἑνὶ ἡμέρᾳ ὄντος αὐτοῦ.
 40 Ὁ δεχόμενος ὑμᾶς, ἐμὲ δέχεται, ἔσθυσά τε
 ὁ δεχόμενος, δέχεται τὸν ἀποστόλόν μου.
 41 Ὁ δεχόμενος προφήτην ἐν ὀνόματι προφήτη, μι-
 σθὸν προφήτου λήψεται· ὁ δεχόμενος δίκαιον ἐν ὀνό-
 ματι δικαίου, μισθὸν δικαίου λήψεται.
 42 Καὶ ὅς τις ἐὰν ποτίσῃ ἓνα τῶν μικρῶν τούτων ποτήριον
 ψυχρῆς ὕδατος, ἐν ὀνόματι μαθητοῦ, ἀμήν λέγω ὑμῖν, οὐ
 μὴ ἀπολέσῃ τὸν μισθὸν αὐτοῦ.

Κεφ. ια. ιβ.

- 1 **Κ**ΑΙ ἔγινετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς διατάσσων τοῖς
 δώδεκα μαθηταῖς αὐτοῦ, μετέβη ὀπίσθεν, καὶ
 διδάσκειν ἔκρυπτεν ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ.
 2 Ὁ δὲ Ἰωάννης ἀκίστα ἐν τῷ δισματικῷ τὰ ἔργα
 τοῦ Χριστοῦ, καμψας δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ.
 3 Εἰπὺν αὐτοῦ· Σὺ καὶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἕτερον προδο-
 κῶμεν;
 4 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Παρόθεν ἐστε
 ἀταργεῖλαι Ἰωάννη ὃ ἀκούετε ἔσθυσά τε βλέπετε.
 5 Τυφλοὶ ἀναβλέψουσιν, ἔκκαλοι παρπατῶσιν, λεπροὶ
 καθαρίζονται, ἔκκαφοι ἀκούουσιν, νεκροὶ ἐγείρονται, ἔκ
 πτωχοὶ ἀναγγελλίζονται.
 6 Καὶ μακάριός ἐστιν ὅς τις ἐὰν μὴ σκανδαλισθῇ ἐν
 ἐμοί.
 7 Τούτων δὲ περιδομένων, ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς λέγειν τοῖς
 ὄχλοις πρὸς Ἰωάννην· Τί θέλθετε εἰς τὴν ἔρημον δια-
 σσέναι; κάλαμον ὑπὸ ἀνέμῳ σαλευόμενον;
 8 Ἀλλὰ τί θέλθετε ἰδεῖν; ἄνθρωπον ἐν μαλακοῖς
 ἱματίοις ἡμφισμένον; ἰδὲ, οἱ τὰ μαλακὰ φοροῦντες ἐν
 τοῖς οἴκοις τῶν βασιλέων εἰσιν.

9 Ἀλλὰ,

9 Ἀλλὰ, τί θέλετε εἶδέν; προσήλθω; καὶ λέγω ὑμῖν, ἔσθε αὐτὸι προφῆται.

10 Οὕτως γὰρ εἰσὶν ἐν ὑμῖν γεγραπτά· Ἰδοὺ, ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγέλόν μου πρότερός σου, ἵνα κατασκευάσῃ τὴν ὁδόν σου ἐμπροσθέν σου.

11 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἔκ ἐγὼ ἔρχεται ὁ ἡγιασμένος Ἰωάννης· ὁ δὲ μικρότερος ἐστὶν τῇ βασιλείᾳ τῶν ὁρατῶν, μέγας αὐτῷ ἐστίν.

12 Ἀπὸ δὲ τῶν ἡμερῶν Ἰωάννη τοῦ Βαπτιστῆ ἕως ἄρτι ἡ βασιλεία τῶν ὁρατῶν βιάζεται, ἔσται ἄρταυτων αὐτῶν.

13 Πάντες γὰρ οἱ προφῆται, ἔκ τούτου, ἕως Ἰωάννη προσήλθουσιν.

14 Καὶ εἰ θέλετε δέξασθαι, αὐτὸς ἐστὶν Ἡλίας ὁ μέλλων ἔρχεσθαι.

15 Οἱ ἔχοντες ὦτα ἀκούει, ἀκούει.

16 Τίνες δὲ ὁμοιωσάτω τὴν ἡμετέραν ταύτην; ὁμοίᾳ ἐστὶ παιδικαίς ἐν ἀγοραῖς καθήμεναι, προσφωνοῦσι τοῖς ἑταίροις αὐτῶν.

17 Καὶ λέγουσιν· Ὁμολόγησεν ὑμῖν, ἔκ ἐκ ἀρχῆς ἡσάσθε· ἐξήλυνήσαμεν ὑμῶν, ἔκ ἐκ ἐκώψασθε.

18 Ἡλθε γὰρ Ἰωάννης μήτε ἐσθίου, μήτε πίνων· ἔκ λέγουσι· Δαιμόνιον ἔχει.

19 Ἡλθεν δὲ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐσθίων ἔκ πίνων· ἔκ λέγουσιν· Ἰδοὺ ἄνθρωπος φάγος καὶ οἴνοποτος, τελωνῶν φίλος ἔκ ἁμαρτωλῶν· ἔκ ἐδικαιώθη ἡ σοφία ἀπὸ τῶν τεκνῶν αὐτοῦ.

20 Τότε ἤρξατο ὁμοειπεῖν ταῖς πόλεις, ὅτι αὐτὸς ἐγίνετο αἰ πλῆσαι δυνάμεις αὐτοῦ, ὅτι ἔμετενόησαν.

21 Οὐαὶ σοὶ Χοραζίν, καὶ σοὶ Βηθσαιδαί, ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ ἔκ Σιδῶνι ἐγένετο αἰ δυνάμεις αἰ ἡγομέναι ἐν ὑμῖν, πάλαι ἦν ἐσθίειν ἔκ σπένδω μετενοήσω.

22 Πλὴν λέγω ὑμῖν· Τύρῳ ἔκ Σιδῶνι ἀνικτότερον ἔσται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ ὑμεῖς.

23 Καὶ σὺ Καπερναὺμ, ἡ ἰσοῦ τοῦ ἁγίου ὕδατος, ἕως οὗ καταβιβασθῇ· ὅτι εἰ ἐν Σοδόμοις ἐγένετο αἰ δυνάμεις αἰ ἡγομέναι ἐν σοί, ἔμεναι ἦν μέχρι τῆς ἡμέρας.

24 Πλὴν λέγω ὑμῖν ὅτι γὰρ Σοδόμων ἀνικτότερον ἔσται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ σοί.

25 Εἰς οὐρανὸν τῷ καιρῷ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἐξομολογῶμαι σοί, πατερ, κύριε τοῦ ἁγίου καὶ τῆς γλῆς, ὅτι ἀπέκρυψας ταῦτα ἀπὸ σοφῶν καὶ συνετῶν, καὶ ἀπεκαλύψας αὐτὰ ἡπαιστοῖς.

26 Ναὶ ὁ πατήρ, ὅτι ὅπως ἐγένετο αὐτοκρία ἐμπροσθέν σου.

27 Πάντα μοι παροδόθη ὑπὸ τοῦ πατρὸς μου· ἔκ ἐξουσίας ἐπιγινώσκει τὸν υἱόν, καὶ μὴ ὁ πατήρ· ὁ δὲ τὸν πατέρα οὐκ ἐπιγινώσκει, καὶ μὴ ὁ υἱός, ἔκ εἰ εἰς ἀνθέστηται ὁ υἱός ἀποκαλύψαι.

28 Δοῦτε πρὸς με πάντες οἱ κοπιῶντες ἔκ πεφοβημένοι, καὶ γὰρ ἀναπαύσω ὑμᾶς.

29 Ἀκούτε τὴν ῥοὴν μου ἐφ' ὑμᾶς, & μακάριτοι ἓστε ἔμεν, ὅτι πρὸς ἡμᾶς, & ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ· & ὁρῶ-
σιντε ἀνάπαυσιν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν.

30 Οὐκ ἔστι ῥοὴ μου κραυγῆς, & τὸ φορτίον μου ἰλα-
ρῶν ἔστιν.

Κεφ. ιβ'. 12.

2 **Ε**Ν ὁκταῶν τῷ καιρῷ ἐπορεύθη ὁ Ἰησοῦς τοῖς
σαββάτοι διὰ τῶν πόλεων· οἱ δὲ μακάριοι
αὐτοῦ ἐπείνασαν, & ἤρξαντο τίλλειν σταχθεὶς, & ἐσ-
θίειν.

3 Οἱ δὲ φαρισαῖοι ἰδόντες, ἔποιον αὐτῷ· Ἰδὲ, οἱ
μακάριοι σὺ ποιῶσιν ὃ ἢκ' ἔχεις ποιεῖν ἐν σαββάτῳ.

3 Οὐκ ἀνέγνωτε τί ἐποίησεν
Δαβὶδ, ὅτε ἐπείνασεν αὐτόν, & οἱ μετ' αὐτοῦ;

4 Πῶς ἐσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τῷ Οὐν, & τὰς ἄρτας
τῆς προθέσεως ἐφαγὼν, ἢς ἢκ' ἔξεν ἔν. αὐτῷ φαγεῖν,
καὶ τοῖς μετ' αὐτοῦ, καὶ μὴ τοῖς ἱερεῦσι μένει;

5 ἢ ἢκ' ἀνέγνωτε ἐν τῷ νόμῳ, ὅτι πῶς σάββατον
ἐκ ἱερῆς ἐν τῷ ἱερῷ τὸ σαββάτον βεβλήκασι, & αἰτί-
ται αὐτοῖς;

6 Λέγου δὲ ὑμῖν ἔτι τῷ ἱερῷ μᾶλλον ἐστὶν ὧδε.

7 Εἰ δὲ ἐγνώκατε τί ἐστὶν· Ἐλίσσθαι, & ε' θυ-
σίαν, ἢκ' αὐ κατεδικάσατε τὰς ἀναιτίους.

8 Κύριος γὰρ ἐστὶ & τὸ σαββάτον ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.

9 Καὶ μεταβάς ἐκκεῖθεν, ἦλθεν εἰς τὴν συναγωγὴν
αὐτοῦ.

10 Καὶ ἰδὼν, ἄνθρωπος ἦν τῇ χεῖρι ἔχων κερὶν. &
ἐπαρώτασάν αὐτόν, λέγοντας· Εἰ ἔχεις τοῖς σαββάσι
θεομακάριον, ἵνα καταργήσωσιν αὐτόν.

11 Οὐδὲ εἶπεν αὐτοῖς· τίς ἐσμι ἢ ὡς αὐτῷ ἀνδραγαθός,
ὅς ἔξω πρόβατον ἔν, & ἐὰν ἐμπέσῃ τὸ τοῦτο τοῖς σάββα-
τον εἰς βοθρὸν, ἢκ' κρατῶμαι αὐτόν & ἐγερῶ;

12 Πόσω ἢν ἀφ' ἑαυτοῦ ἀνδραγαθὸς πρόβατον; ὥστε ἔχεις
τοῖς σάββασι καλῶς ποιεῖν.

13 Τότε λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· Ἐκτινον τὴν χεῖρά σου,
& ῥέτινε· & ἀποκατεστάθη ὑγιής, ὡς ἡ ἄλλη.

14 Οἱ δὲ ἀρισταῖοι συμβῆλιν· ἔλαβεν κατ' αὐτῷ
ἤλθοντες, ὅπως αὐτὸν ἀπολέσωσιν.

15 Οὐδὲ Ἰησοῦς γινώσκειν ἀνιχώρουν ἐκεῖθιν. & ἡ κοίτη
δοῦλον αὐτοῦ ὅχλοι πολλοί, & ἐδιδράκον αὐτὸς πάντας.

16 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτοῖς, ἵνα μὴ φθμερὸν αὐτὸν
ποιήσωσιν.

17 Ὅπως πληρωθῇ τὸ ρηθὲν διὰ Ἡσαΐου τοῦ προφη-
τῆ, λέγοντος·

18 Ἰδὼν, ὁ παῖς μου, ὃν ἔρέτισα· ὁ ἀγαπητός μου,
εἰς ἃν ἀδράχησεν ἡ ψυχὴ μου· θύσω τὸ πνεῦμα μου
ἐν αὐτῷ, & κρίνῃ τοῖς ἔθνεσιν ἀπαγγέλει.

19 Οὐκ ἔριση, οὐδὲ κραυγῶσιν, οὐδὲ ἀκούσῃ τις ἐν
ταῖς πλατείαις τῇ φωνῇ αὐτοῦ.

- 10 Καὶ ἄλλοι συντετριμμένοι ἢ κατεσθῆναι, ἔλθον τα-
φῶν ἢ σβῆσαι· ἐπεὶ ἂν ἐκβάλῃ εἰς νύκτος τὴν κρίσιν·
- 11 Καὶ ἐν τῷ ὄνματι αὐτοῦ ἔσθι, ἰληψῆσι·
- 12 Τότε προσωλέχθη αὐτῷ δαιμονιζόμενος, τυφλὸς
ἔκφοτος· ἔθεραπεύσεν αὐτόν, ὥστε ἔκφυλόν
ἔκφοτον ἔκφυλόν ἔβλεπεν·
- 13 Καὶ ἔλεγαν πάντες οἱ ὄχλοι, ἔλεγον· Μήτις
οὗτος ἐστὶν ὁ υἱὸς Δαβὶδ;
- 14 Οἱ δὲ ἰσχυροὶ ἀκρόατες, εἶπον· Οὕτως ἢ ἐκ-
βαλλοὶ τὰ δαιμόνια, εἰ μὴ ἐν τῷ Βεελζεβὺλ ἄρχοντι τῷ
δαμονίῳ·
- 15 Εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς τὰς ἐκθυμώσεις αὐτῶν, εἶπεν
αὐτοῖς· Πᾶσα βασιλεία μερισθεῖσα κατ' ἐαυτῆς, ἐρη-
ματά· ἔκφυλόν πόλις ἢ οἰκία μερισθεῖσα κατ' ἐαυ-
τῆς, ἢ σαθρήσεται·
- 16 Καὶ εἰ ὁ στανάς τὸν σατανᾶν ἐκβάλῃ, ἐφ' ἑαυ-
τὸν ἰμερίσθῃ· πῶς ἔν σαθρήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ;
- 17 Καὶ εἰ ἐγὼ ἐν Βεελζεβὺλ ἐκβάλω τὰ δαιμόνια,
οἱ υἱοὶ τοῦ ὄντος τίτι ἐκβάλωσι; διὰ τῆτο αὐτοὶ ὁ-
μῶς ἰσχυροὶ κριταί·
- 18 Εἰ δὲ ἐγὼ ἐν πνεύματι Θεοῦ ἐκβάλλω τὰ δαιμό-
νια, ἄρα ἐφθασεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ·
- 19 Ἡ δὲ πῶς δύναται τις εἰσελθεῖν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ
ἰσχυροῦ, ἔκφυλόν αὐτῷ ἀφαιρεσθαι, εἰ μὴ πρῶτον
δάσῃ τὸν ἰσχυρὸν, ἔκφυλόν τὴν οἰκίαν αὐτοῦ ἀφαιρεσθαι;
- 20 Ὁ μὴ ὢν μετ' ἐμοῦ, κατ' ἐμὸν ἐστὶ· ἔκφυλόν μὴ συν-
εργῶν μετ' ἐμοῦ, σκορπίσει·
- 21 Διὰ τῆτο λέγω ὑμῖν· Πᾶσα ἁμαρτία ἔκφυλόν
ἀφεθήσεται τῷ ἀνθρώπῳ· ἡ δὲ ἡ πνεύματος
βλασφημία ἢ ἀφεθήσεται τῷ ἀνθρώπῳ·
- 22 Καὶ ὅς ἂν εἴπῃ λόγον κατ' ἡμῶν πνεύματος, ἢ
ἀφειθήσεται αὐτοῦ· ὅς δ' ἂν εἴπῃ κατ' ἡμῶν πνεύματος, ἢ
ἀφειθήσεται αὐτοῦ ὅτι ἐν τῇτι τῷ αἵματι, ὅτι
ἐν τῷ μέλλοντι·
- 23 Ἡ δὲ ποιήσῃ τὸ δένδρον καλόν, ἔκφυλόν καρπὸν αὐτοῦ
καλόν· ἡ ποιήσῃ τὸ δένδρον σαπρὸν, ἔκφυλόν καρπὸν
αὐτοῦ σαπρὸν· ὅτι κατὰ τὸ δένδρον γινώσκεται·
- 24 Γεννήματα ἐχιδνῶν, πῶς δύνασθαι ἀγαθὰ λαλεῖν,
κακοὶ ὅντες; ὅτι κατὰ τὸ πνεύματος τοῦ κακοῦ τὸ
σῆμα λαλεῖ·
- 25 Ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος ἐκ τοῦ ἀγαθοῦ θησαυροῦ τῆς
καρδίας ἐκβάλλει τὰ ἀγαθὰ· ὁ πονηρὸς ἄνθρωπος ἐκ
τοῦ πονηροῦ θησαυροῦ ἐκβάλλει πονηρά·
- 26 Λέγω δὲ ὑμῖν ἔτι τῶν ῥήματων αὐτοῦ, ὃ ἐὰν λαλή-
σῃ οἱ ἄνθρωποι, ἀποδώσῃ παρ' αὐτοῦ λόγον ἐν
ἡμέρᾳ κρίσεως·
- 27 Ἐκ τῶν λόγων σε δικαιώσῃ, ἔκφυλόν τῶν λό-
γων σε καταδικάσῃ·
- 28 Τότε ἀπεκρίθησαν τινες τῶν γραμματέων ἔκφυλόν
φαισεῖν, λέγοντες· Διδάσκεις, διότι ἀπὸ σε σε
μὲν ἰδοῖς·

39 Οὐ γὰρ ἀποκρίθαις εἶπεν αὐτοῖς· τίτλη ποταμὸν καὶ
μοιχαλὶς σημεῖον ἐπιζητῇ· ὁ σημεῖον οὐ δοθήσεται
αὐτῇ, ἀλλ' ἡ μὲν τὸ σημεῖον ἰδεῖν ἔπαισεν.

40 Ω^ς περ γὰρ ἦν Ἰωάννης ἐν τῇ κοιλίᾳ τῇ μητρὶ τρεῖς
ἡμέρας & τρεῖς νύκτας, ὅταν ἔται ὁ υἱὸς τῇ ἀνδρὶ πατρὶ
ἐν τῇ κοιλίᾳ τῇ μητρὶ τρεῖς ἡμέρας & τρεῖς νύκτας.

41 Ἄνδρες Νινυβίται, ἡνέκευ ποταμοῦ ἐν τῇ κρίσει μετὰ
 τῇ γῆραὶ ταύτῃ, ἔ κατακρινῶσιν αὐτήν. ὅτι μετενόη-
 σάντες τὸ κήρυγμα Ἰωάν. ἔ ἰδόν, πληροὺ Ἰωάν. αὐτοῦ.

42 Βασιλεὺς νῦν ἐγερθήσεται ἐν τῇ κτίσει μετὰ τὴν ἡμέραν ταύτην. Ἐκατακρινεῖ αὐτὴν ὅτι ᾔδειν ἐκ τῆς πύλας τῆς γῆς ἀκούσαι τὴν σοφίαν Σολομῶντος. Ἐίδου, πλεῖος Σολομῶντος ὁδε.

43 ὅταν ὁ τὰ ἀκαθάρτων πνεῦμα ἐξέλθῃ ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, δίερχεται δι' ἀνυδρῶν τόπων, ζητῶν ἀνάπυσιν, ἐν ᾧ δύσκει.

44 Τότε λέγει· Ἐπιτρέψτω ἡμῖν τὸν οἶκόν μας, ὅπως
ἔξελθομεν· καὶ ἐλθόντες, ἀράσμεν χοιράζοντα, πεσάρ-
ματόν, ὃ κεκοσμημένον·

45 Τότε πορεύεται, ἡ καθ' ἑαυτὴν δύναμις μετ' ἐωταυτῶν
ἐν τῷ ἑτέρῳ πνεύματι πονηρητέρῳ ἑωτῇ, ἡ ἐν πλεονεύοντι
κατακαίει ἐκείν. ἡ γίνεται τῷ ἑχθρῷ ἡ ἀντιρροπὴ ἐκείνου.
ἡ κέρροντα τῶν πρώτων. Οὕτως εἶπαι ἡ τῇ ἡμῶν τὰύτη
τῇ πονήρῳ.

46 Ἐπὶ τῷ αὐτῷ λαλῶντας πῶς ἄλλοις, ἰδοὺ, ἡ μήτηρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐστήκεισαν ἔξω, ζητοῦντες αὐτῷ λαλῆσαι.

47 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτοῦ· Ἰδὼν, ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελ-
φοί σου ἔξω ἐστήκασι, ζητοῦντές σοι λαλῆσαι.

48 Οὐ ἀποκρυψάς, ἐπεὶ τῷ ἐπὶ ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ. Τίς ἐστὶν ὁ κρύπτων αὐτὸν, ὃς τίνες εἰσὶν οἱ ἀποκρυφθέντες αὐτῷ;

49 Καὶ ἐκτείναν τὴν χεῖρα αὐτῶν ἐπὶ τῆς μεσσητιαῖς αὐτῶν,
εἰπὲν· Ἰδὲ ἡ μήτηρ μου, ὅ οἱ ἀδελφοί μου·

30 Οὕτως γὰρ ἀν ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου, ἢ
ἐκ κηρύσσει, αὐτὸς μου ἀδελφὸς, ἢ ἀδελφὴ, ἢ μητέρα
ἐστί.

К.Ф. 12. 13.

ἘΝ τῇ ἡμέρῃ ἐκείνῃ ἔρχονται οἱ Ἰσραῆλ ἐπὶ τὴν ῥήσιν· ἐκείνητο πρὸς θάλασσαν.

2 καὶ συνήχθησαν πρὸς αὐτὸν ὄχλοι πολλοί, ὥστε ἀνε-
 ῖν ὡς τὸ πλοῖον ἐμβάπτα καὶ θῆσθαι. Ἐπεὶ δὲ ὁ ὄχλος
 ἐπὶ τῷ ὕδατι ἐκείνῳ.

3 Καὶ ἐλάλησεν αὐτῇς πολλὰ ἐν παραβολαῖς λέγων·
 Ἰδοὺ, ἔτι ἔλθω εἰς σπείρειν τὸ σπείρειν·

Καὶ ἐν τῇ ἀγορᾷ αὐτῇ, ἃ μὲν ἔπειτα παρὰ τὸ ὄδον.
 ἔλαβεν τὰ πενήντα, ἔκαστον δὲ ὀφείλοντο αὐτόν.

5 Ἀλλὰ ὁ ἐπιστὶν ἐπὶ τὰ πτερύδη, ὅτιν δὲ ἔχῃ
τοὺς πόδας. ὁ δὲ θῶς περὶ τῆς, διὰ τὸ μὴ ἔχειν
τοὺς πόδας.

ΕΠΙΧΕΙΡΗΣΙΑΚΟ ΠΡΟΓΡΑΜΜΑ

6 Ἡ γὰρ ἡ ἀπειλὰ αὐτοῦ ἐκωρυτίσθη· ὁ δὲ διὰ τὸ μὴ ἔχειν ῥίζαν, ὤξυνεν.

7 Ἄλλω δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὰς ἀκαΐδας, ὁ ἀνέβησθαι ἀκαΐδας, ὁ ἀπέτριξάν αὐτά.

8 Ἄλλω δὲ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν τὴν καλὴν, ὁ ἐδίδεν καρπὸν, ὁ μὲν ἑκατὸν, ὁ δὲ ὤξυνεν, ὁ δὲ τριακοντα.

9 Ὁ δὲ ἔχων ὕδα ἀκύνει, ἀκύνει.

10 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταί, ἔπυν αὐτῷ. Διὰ τί οὐ παροξυνεῖς λαλῶν αὐτοῖς.

11 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ὑμεῖς δέδοται γινώσκει τὰ μυστήρια τῆς βασιλείας τοῦ θέντος, ἐκείνοις δὲ οὐ δέδοται.

12 Ὅστις γὰρ ἔχει, δοθήσεται αὐτῷ, ὁ περιοριζήσεται· ὅστις δὲ οὐκ ἔχει, ὁ δὲ ἔχει, ἀρθήσεται ἀπ' αὐτοῦ.

13 Διὰ τοῦτο οὐ παροξυνεῖς αὐτοῖς λαλῶν, ὅτι βλέποντες οὐ βλέπουσι, ὁ ἀκούων οὐκ ἀκούουσιν, οὐδὲ συνιέντι.

14 Καὶ ἀναπληροῦται ἐπ' αὐτοῖς ἡ προφητεία Ἡσαΐου, ἡ λέγουσα· Ἀκοὴν ἀκούσετε, ὁ οὐκ ἠκούσθη· ὁ βλέπων, ὁ οὐκ ἵδεν.

15 Ἐταχύνθη γὰρ ἡ καρδία τῆς λαοῦ τούτης, ὁ τοῖς ὁπτιοῖς βαρέως ἤκουσεν, ὁ τοῖς ὁφθαλμοῖς αὐτῶν ἐκάρμυσεν, μήποτε ἴδωσι τοῖς ὁφθαλμοῖς, ὁ τοῖς ὁπτιοῖς ἀκούσῃ, ὁ τῇ καρδίᾳ συνῶσι, ὁ ἐπιστρέψῃ, ὁ ἴασθαι αὐτούς.

16 Ὑμῶν δὲ μακάριοι οἱ ὁφθαλμοί, ὅτι βλέπουσι· ὁ δὲ τὰ ὕδα ὕδων, ὁ οὐκ ἀκύνει.

17 Ἄλλω γὰρ λέγω ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ προφῆται ὁ δίκαιοι ἐπεθυμῶσαν ἰδεῖν ὁ βλέπει, ὁ οὐκ αἶσιν· ὁ ἀκούσας ὁ ἀκούετε, ὁ οὐκ ἤκουσεν.

18 Ὑμῶν οὐκ ἀκούετε τὴν παροξυνεῖν τοῦ σπείροντος·

19 Πάντως ἀκούοντες τὴν λέγον τὴν βασιλείαν, ὁ μὴ συνιέντος, ἔρχεται ὁ ποιητὴς, ὁ ἀρπάζει τὸ σπείρον ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ· οὗτός ἐστιν ὁ παρὰ τὴν ὁδὸν σπείρων.

20 Ὁ δὲ ἐπὶ τὰ πετρώδη σπείρων, οὗτός ἐστιν ὁ τὴν λέγον ἀκούων, ὁ οὐδὲς μὲν καρπὸς καρβάνων αὐτῶν.

21 Οὐκ ἔχει δὲ ῥίζαν ἐν ἑαυτῷ, ἀλλὰ πρόσκαιρός ἐστι· γενομένης δὲ θλίψεως ἢ διωγμοῦ διὰ τὴν λόγον, οὗτος ἐκλήθη.

22 Ὁ δὲ εἰς τὰς ἀκαΐδας σπείρων, οὗτός ἐστιν ὁ τὴν λέγον ἀκούων· ὁ ἡ μέριμνα τοῦ αἵματος τῆς γῆς, ὁ ἡ ἀπάτη τὴν πλοῦτη συμπνίγει τὴν λόγον, ὁ ἀκαρπὸς γίνεται.

23 Ὁ δὲ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν καλὴν σπείρων, οὗτός ἐστιν ὁ τὴν λέγον ἀκούων καὶ συνιέν· ὁ δὲ καρποφορῶν καὶ ποιῶν, ὁ μὲν ἑκατὸν, ὁ δὲ ὤξυνεν, ὁ δὲ τριακοντα.

24 Ἄλλω παραβολὴν παρέθηκεν αὐτοῖς λέγων· Ὁ μετῴθη ἡ βασιλεία τοῦ οὐρανοῦ ἀνθρώπῳ σπείροντι καλῶς.

στεινὰ ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτῷ.

25 Ἐν δὲ τῷ καθύδαυ τῆς ἀνθρώπου, ἦλθεν αὐτῷ ὁ ἐχθρὸς καὶ ἔσπειρε ζιζάνια ἀπὸ μέσου τῆ σίτου, ὃ ἐπέλθεν.

26 Ὅτε δὲ ἐβλάστησεν ὁ χόρτος, ὃ καρπὸν ἐποίησε, τότε ἐφάνη ὃ τὰ ζιζάνια.

27 Προσπελθόντες ὅ οἱ δούλοι τῷ οἰκονομῶντι, αὐτοῦ αὐτῷ· Κυρεῖ, καὶ καλὴν σπέρμα ἑσπείρει ἐν τῷ σῷ ἀγρῷ; ποθεν ἔν ἔχει τὰ ζιζάνια;

28 Ὁ δὲ ὁ κύριος ἀνθρώπου τοῦτο ἀπεκρίσεν· Οἱ δὲ δούλοι αὐτοῦ αὐτῷ· Θέλεις ἢ ἀπελθόντες συλλέξωμεν αὐτά;

29 Ὁ δὲ εἶπεν· Οὐ· μήποτε συλλέγοντες τὰ ζιζάνια, ἐκρίζωσθε αὐτὰς αὐτῆς τῆ σίτου.

30 Ἀφετε, συναρπάξεσθαι ἀμφότερα μέχρι τῆ θιριμῆς. ὃ ἐν τῷ καιρῷ τῷ θερισμῷ ἐρῶ τοὺς θεριστάς· Συλλέξατε πρώτον τὰ ζιζάνια, ὃ θέσπετε αὐτὰ εἰς δεσμός, πρὸς τὸ κατὰκαῦσαι αὐτά. τῷ δὲ σίτον συναρπάγετε εἰς τὸ ἀποθήκεν αὐτῷ.

31 Ἄλλω πάλιν παρεθήκεν αὐτοῖς, λέγων· Ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῷ ἡρώδῃ κοίτῃ σιναπῆς, ὃν λαβὼν ἄνθρωπος ἑσπείρεν ἐν τῷ ἀγρῷ αὐτοῦ.

32 Ὁ μικρότερον μὲν ἐστὶ πάντων τῶν σπερμάτων, ὃ τῷ ὁ σπέρμα, μέλλον τῷ λαχάνων ἐστὶ· ὃ γίνεται δένδρον, ὥστε ἐλθεῖν τὰ πετεινὰ τῷ ἡρώδῃ, ὃ κατασπλῶν ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ.

33 Ἄλλω πάλιν ἐλάλησεν αὐτοῖς· Ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τῷ ἡρώδῃ ζιμῇ, ἢ λαβὼν σπέρμα σπείρειν εἰς κλάδον σάτα τριὰ, ὃν οὐ ἐξυμώθη ὅλοι.

34 Τοῦτο πάντα ἐλάλησεν ὁ κύριος ἐν παραβολαῖς τοῖς δούλοις, ὃ χωρὶς παραβολῆς οὐκ ἐλάλει αὐτοῖς.

35 Ὅπως πληροῖται τὸ μυστήριον τοῦ προφήτου, λέγοντος· Ἀπορῶν ἐν παραβολαῖς τὸ σέμειον· ἐρῶμαι κενυμένον ἀπὸ κατὰβολῆς κόσμου.

36 Τότε αὐτοῖς τῆς ὥρας, ἦλθεν εἰς τὸ οἰκίδιον ὁ κύριος· ὃ προσέειπεν αὐτοῖς οἱ παρθεναὶ αὐτοῦ, λέγοντες· Φράσον ἡμῖν τὴν παραβολὴν τῆς ζιζανίας τῷ ἀγρῷ.

37 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ὁ σπείρων τὸ καλὸν σπέρμα, ἐστὶν ὁ υἱὸς τῷ ἀνθρώπου.

38 Ὁ δὲ ὁ ἄρσος, ἐστὶν ὁ κόσμος. τὸ δὲ καλὸν σπέρμα, ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ βασιλέως. τὸ δὲ ζιζάνιον, ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ πορνῆ.

39 Ὁ δὲ ὁ ἐχθρὸς ὁ σπείρων αὐτά, ἐστὶν ὁ διάβολος· ὃ ὁ θεριστής, συντέλεια τῷ αἰῶνος ἐστὶν· οἱ δὲ θερισταί, ἀγγέλων ἐστὶν.

40 Ὁ σπέρμα ὃν συλλέγεται τὰ ζιζάνια, ὃ πρὸς κατὰκαῦσαι αὐτά, ἐστὶν ἐν τῇ συντέλει αἰῶνος τῆς.

41 Ἀπὸ τῆς δὲ ὥρας τῷ ἀνθρώπῳ τῆς ἀγγελίας αὐτοῦ, ὃ συλλέγεται ἐκ τῆ βασιλείας τοῦ πάντων τὰ σκάνδαλα, ὃ τῆς ποιεῖν τῷ ἀνομίῳ.

42 Καὶ βαλὼσιν αὐτὴς εἰς τὴν κάμινον τὴν πυρὸς· ἐκῆ
ἔσται ὁ κλαυθμὸς ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

43 Τότε οἱ δίκαιοι ἐκλαμψουσὶν ὡς ὁ ἥλιος ἐν τῇ βα-
σιλείᾳ τοῦ πατρὸς αὐτῶν·

44 Πάλιν ὁμοίᾳ ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν ἑρραίων θαλασῶν
κεκυρμένῃ ἐν τῷ ὄρει, ὃν ὁ ὤρεθ' ἀνδρὸς ἐκρυψε, ὃ
ἀπὸ τοῦ ὄρους αὐτοῦ ὑψηλὸν, ὃ πάντα ὅσα ἔχει, πάλιν
ὃ ἀγοράζει τὸ ἀγρὸν ἐκώκεν.

45 Πάλιν ὁμοίᾳ ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν ἑρραίων ἀνδρῶν
ἐμπόρου, ζυγῶν καλῶς μαργαρίτας.

46 Ὅς ὁ ὤρεθ' ἔνα πολύτιμον μαργαρίτῳ ἀπελθὼν
τίπρακε πάντα ὅσα εἶχε, ὃ ἤγχερασεν αὐτόν.

47 Πάλιν ὁμοίᾳ ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν ἑρραίων σαγῆν
βλαθείᾳ εἰς τὴν θαλάσσαν, καὶ ἐκ πάντος γένους συνα-
γαγόν.

48 Ἦν, ὅτε ἐπληρώθη, ἀναβιβάζοντες ἐπὶ τὴν ἀγκυ-
λὸν, ὃ καθίσταντες, συτέλεθον τὰ καλά ἐς ὄψιν
τῆς σαρπὸς ἔξω ἔβαλον.

49 Οὗτος ἔσται ὁ τῆς συντελείας τῆς αἰῶνος· ὁξελεύσει-
ται οἱ ἄγγελοι, ὃ ἀφελῶσι τὰς ποικίλεις ἐν μέσῳ τῶν
δικαίων.

50 Καὶ βαλὼσιν αὐτὴς εἰς τὴν κάμινον τὴν πυρὸς· ἐκῆ
ἔσται ὁ κλαυθμὸς ὁ βρυγμὸς τῶν ὀδόντων.

51 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Συνήκατε πάντα ταῦτα;
Λέγουσιν αὐτοῖς· Ναί Κύριε.

52 Ὁ ὃ εἶπεν αὐτοῖς· Διὰ τὴν πᾶν γρημματοῦς μα-
ργαρίτας εἰς τὴν βασιλείαν τῶν ἑρραίων, ὁμοίως ἐστὶν ὁ
ἀνδρῶν οἰκοδεσπότης, ὃς ἐκβάλλει ἐκ τῆς θαλάσσης αὐτοῦ
κρινὰ ὃ παλαιά.

53 Καὶ ἐγένετο, ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τὰς παραβολὰς
ταύτας, μετῆρεν ἐκείθεν.

54 Καὶ ἐλθὼν εἰς τὴν πατρίδα αὐτοῦ ἐδίδασκεν αὐτὴς
ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτοῦ· ὡς ἐκπληττίζοντο αὐτὴς,
ὃ λέγει· Ὅθεν τότῳ ἡ σοφία αὐτῆς, ὃ αἱ δυνάμεις;

55 Οὐχ ὡς ἐστὶν ὁ τῆς τέκνης υἱός; ὃ χί ἡ μέτρα
αὐτοῦ λέγεται Μωϋσῆς, ὃ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ Ἰακώβος,
ὃ Ἰωσὴς, ὃ Σίμων, ὃ Ἰάκωβος;

56 Καὶ αἱ ἀδελφαὶ αὐτοῦ ὃ χί πᾶσαι πρὸς αὐτοῦ εἰσι;
ποθεν ἂν τότῳ ταῦτα πάντα;

57 Καὶ ἐκκαρδαλίζοντο ἐν αὐτῷ· Ὁ ὃ Ἰησοῦς εἶπεν
αὐτοῖς· Οὐκ ἐστὶ προφήτης ἄτιμος, εἰ μὴ ἐν τῇ πατρί-
δι αὐτοῦ, ὃ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτοῦ.

58 Καὶ ἡ ἐποίησεν ἐκεῖ δυνάμεις πολλὰς, διὰ τὴν
ἀπειρίαν αὐτοῦ.

Κεφ. ιδ'. 14.

1 **Ε**Ν ἐκείνῳ τῷ καιρῷ ἤκουσεν Ἡρώδης ὁ τετραρχὸς
τὴν ἀκρὴν Ἰησοῦ.

2 Καὶ ἔπεμψε πῶς πᾶσιν αὐτοῦ· Οὗτος ἐστὶ Ἰωάννης ὁ
Βαπτιστῆς· αὐτὸς ἠγέρθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν, ὃ δεῖ τὴν
αἰῶνα ζῆναι.

καὶ δυνάμεις ἐνεργῶσιν ἐν αὐτῷ.

3 Οὐ γὰρ Ἡρώδης κρατήσας τὸν Ἰωάννην, ἔδωκεν αὐτὸν, ἔπειτα ἐν φυλακῇ, διὰ Ἡρωδιάδα τῆς γυναῖκος Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ.

4 Ἐλέγε γὰρ αὐτῷ ὁ Ἰωάννης· Οὐκ ἐξεσί σοι ἔχειν αὐτήν.

5 Καὶ θέλων αὐτὸν ἀποκτεῖναι, ἐφοβήθη τὸν ὄχλον, ὅπως προφήτῳ αὐτὸν εἶχον.

6 Γενετίων ὁ ἀγομένων τῇ Ἡρώδῃ, ἀρχίστατος ἦ θυγαῖτης τῇ Ἡρωδιάδος ἐν τῷ μετῷ· καὶ ἤρπτε τῷ Ἡρώδῃ.

7 Οὐθεν μετ' ὅρκου ὁμολόγησεν αὐτῇ ὅτι αὐτὴ ἦν ἡ ἀληθινή.

8 Ἡ δὲ ὁμοιωθεῖσα ὑπὸ τῇ μητρὶ αὐτῇ, Δός μοι, φησὶν, ὥστε ἐπὶ πίνακι τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

9 Καὶ ἐλυτῆθη ὁ βασιλεὺς· διὰ δὲ τὰς ἐρμῆς καὶ τὰς πονηρὰς ἐργασίας, ἐκέλευσε δοθῆναι.

10 Καὶ πέμψας ἀπεκεφάλισε τὸν Ἰωάννην ἐν τῇ φυλακῇ.

11 Καὶ ἠτέλλθη ὁ κεφαλὴ αὐτοῦ ἐπὶ τῖνακι, ἔπειτα ἐδόθη τῇ κορασίῳ· ἔπειτα ἤνεγκε τῇ μητρὶ αὐτοῦ.

12 Καὶ προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἦραν τὸ σῶμα, ἔθαψαν αὐτό· ἔπειτα ἐλθόντες ἀπηγγέλλαν τῷ Ἰησοῦ.

13 Καὶ ἀκούσας ὁ Ἰησοῦς, ἀνεχώρησεν ἐκεῖθεν ἐν πλοίῳ εἰς ἐρημὸν τόπον κατ' ἰδίαν. Καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι, ἐκολούθησαν αὐτῷ περὶ τὴν πόλιν.

14 Καὶ ἐξελθὼν ὁ Ἰησοῦς, εἶδε πολὺν ὄχλον· ἔπειτα ἐλεησάμενος αὐτοὺς, ἔειπεν·

15 Οὐκ ἔστιν ὁμοιωθεῖσα ὑμῖν, προσήλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέγοντες· Ἐρημὸς ἐστὶν ὁ τόπος, καὶ ἡ ὥρα ἤδη παρελθόν· ἀπόλυσον τοὺς ὄχλους, ἵνα ἀπαιθύνοντες εἰς τὰς κώμας, ἀγοράσωσιν ἑαυτοῖς βρώματα.

16 Οὐ δὲ ἰσχύσας εἰπεῖν αὐτοῖς· Οὐ χρὴ ἔχειν ἀποκτεῖν· ὅτε αὐτοῖς ὑμεῖς φαγεῖν.

17 Οἱ δὲ λέγουσιν αὐτῷ· Οὐκ ἔχομεν ὥδε εἰ μὴ πέντε ἄρτους καὶ δύο ἰχθύας.

18 Οὐ δὲ εἶπε· Φερίτε μοι αὐτὰς ὧδε.

19 Καὶ κελύψας τοὺς ὄχλους ἀνακλιθῆναι ἐπὶ τοῦ χοῦτος, ἔλαβον τοὺς πέντε ἄρτους καὶ τοὺς δύο ἰχθύας, ἀνελέψας εἰς τὸν οὐρανόν, εὐλόγησεν· καὶ κλάσας, ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς τοὺς ἄρτους, οἱ δὲ μαθηταὶ τοῖς ὄχλοις.

20 Καὶ ἔφαγον πάντες, καὶ ἐχορτάσθησαν· καὶ ἦσαν τὰ περισσεύον τῶν κλασμάτων ὡσεὶ κοφίνος πλήρης.

21 Οἱ δὲ ἐσθλόντες ἦσαν ἄνδρες ὡσεὶ πεντακισχίλιοι, καὶ οἱ γυναῖκες καὶ παῖδες.

22 Καὶ ὡθέντος ἡ ἀγάπης ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἐμβῆναι εἰς τὸ πλοῖον, καὶ προαγεῖν αὐτὸν εἰς τὸ πέραν, ὥστε ὁ ἀπολύσῃ τοὺς ὄχλους.

23 Καὶ

23 Καὶ ἀπολύσας τοὺς ὄχλους, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος κατ' ἰδίαν προσηύχασθαι. Ὁ ψῆφος ᾧ χειρομένης, μέτος ἦν ὁκτεῖ.

24 Τὸ δὲ πλοῖον ἦδ' ἄρα μέσον τῆ θαλάσσης ἦν, βατανοζόμενον ὑπὸ τῶν κυμάτων. ἦν γὰρ ἐκνήπιος ὁ αἰέμος.

25 Τετάρτῃ δὲ φυλακῇ τῆ νυκτὸς ἀπελθε πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς περὶ τῶν ἐπὶ τῆ θαλάσσης.

26 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν οἱ μαθηταὶ ἐπὶ τὴν θαλάσσαν περπατοῦντα, ἐταράχθησαν, λέγοντες. Ὅτι φαντασμά ἐστίν. ὁ ἀπὸ τοῦ φθοῦ ἐκράζει.

27 Εὐθέως δὲ ἐκαλήσεν αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς, λέγων. Θασεῖτε. ἐγὼ εἰμι. μὴ φοβεῖσθε.

28 Ἀποκριθεὶς δὲ αὐτῷ ὁ Πέτρος, εἶπε. Κύριε, εἰ σύ εἶ, κέλεύεις με πρὸς σε ελθεῖν ἐπὶ τὰ ὕδατα.

29 Ὁ δὲ εἶπεν. Ἐλθέ. Καὶ καταβάς ἀπὸ τοῦ πλοίου ὁ Πέτρος, περπατήσεν ἐπὶ τὰ ὕδατα, ἐλθεῖν πρὸς τὸν Ἰησοῦν.

30 Βλέπων δὲ τὸν ἄνεμον ἰσχυρόν, ἐφοβήθη. ὁ ἀρ-
ξήμενος κατακοντίζεσθαι, ἐκράζε, λέγων. Κύριε, σῶ-
σον με.

31 Εὐθέως δὲ ὁ Ἰησοῦς ὀκτείνας τὴν χεῖρα, ἐπελάδου-
το αὐτόν, ὁ λέγει αὐτῷ. Ὁλιγόπιστε, εἰς τί ἐδίστασαι;

32 Καὶ ἐμβάντων αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον, ὀκτώσεν. ὁ αἰέμος.

33 Οἱ δὲ ἐν τῷ πλοίῳ, ἐλθόντες προσεκύνησαν αὐτῷ, λέγοντες. Ἀληθῶς Θεὸς υἱὸς εἶ.

34 Καὶ διησπεράσαντες, ἦλθον εἰς τὴν γῆν Γεννησαρέτ.

35 Καὶ ἐπιγόντες αὐτὸν οἱ ἄνδρες τοῦ τόπου ὅκτι, ἀπετείλουν αὐτὸν ὅλῳ τὴν περὶ τὸν ὄχλον, ὁ προσήνεγκαν αὐτῷ πάντα τὰς κακὰς ἐχοντας.

36 Καὶ παρεκάλειν αὐτὸν ἵνα μόνον ἀψανται τὸ κρῖνον ἀπὸ τοῦ ἱματίου αὐτοῦ. ὅσοι ἤψαντο, διεσώθησαν.

Κεφ. 16

1 **Τ**ότε προσέρχονται τῷ Ἰησοῦ οἱ ἀπὸ Γερουσαλὴμ γραμματεῖς ὁ φαρισαῖοι, λέγοντες.

2 Διατί οἱ μαθηταὶ σου ὀρχαίνονται τὴν παράδοσιν τοῦ πρεσβυτέρου, ἢ γὰρ νύπτονται τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ ἄρτον ἐσθίωσιν.

3 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς. Διατί ὁ υἱὸς ὀρχαίνετε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ, διὰ τὴν παράδοσιν υἱῶν;

4 Ὁ γὰρ Θεὸς ἐνετείλατο, λέγων. Τίμα τὸν πατέρα σου, ὁ κακολογῶν πατέρα, ἢ μητέρα, θανάτῳ τελευτάτω.

5 Ὑμεῖς δὲ λέγετε. Ὅς ἂν εἴπῃ τῷ πατρί ἢ τῇ μητρί. Δῶρον ὃ ἐστὶν ἐμὸν ὡφελήθη. ὁ δὲ μὴ πικρῇ τὸν πατέρα αὐτοῦ, ἢ τὴν μητέρα αὐτοῦ.

6 Καὶ ἠκουάσατε τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ διὰ τὴν παράδοσιν υἱῶν.

7 Ὑποκρίται καλῶς προσφῆτατε περὶ ἑμῶν Ἡσαΐας λέγων·

8 Ἐγγίζετε μοι ὃ λαὸς ἥτις τῷ σώματι αὐτῶν, ὡς τοῖς χεῖλεσι με πημῶν· ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόρρω ἀπέχει ἀπὸ ἐμοῦ.

9 Μάτην δὲ σέβονται με, διδάσκοντες διδασκαλίας· καταλματὰ ἀνθρώπων.

10 Καὶ προσκαλεσάμενος τὸν ὄχλον, εἶπεν αὐτοῖς· Ἀκούετε ὃ συνίστα.

11 Οὐ τὸ εἰσερχόμενον εἰς τὸ σῶμα κοινοῦ τῷ ἄνθρωπῳ· ἀλλὰ τὸ ἐκπορεύμενον ἐκ τοῦ σώματος, τὸ ἐκ τοῦ κοινοῦ τῷ ἄνθρωπῳ.

12 Τότε προσελθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, εἶπον αὐτῷ· Οἶδας, ὅτι οἱ Φαρισαῖοι ἀκύνευσται τῷ λόγῳ, ἐσκαδὴν θαλίαν θησάν;

13 Οὐ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε· Πᾶσι φυτεῖν, ἃ ἢκ ἐφύονται· ὁ πατήρ μου ὁ ἡράμιος, ἐκείνουθήσεται.

14 Ἀφετε αὐτῶν· ἐδουλοῖ εἰς τυφλὴν τυφλῶν· τυφλὸς δὲ τυφλὸν εἰς ὁδὸν, ἀμφοτέροι ἐν βέθυνι πησύνονται.

15 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐτῷ· Φράσον ἡμῖν τὸ ἐκβαλὼν τούτων.

16 Οὐ δὲ ἰσχυρῶς ἀπεν· Ἀκούειν ὃ ἑμῶν ἀτύνητοί ἐστε.

17 Οὕτω νοεῖτε, ὅτι πᾶν τὸ ἐκπορεύμενον εἰς τὸ σῶμα, εἰς τὴν κοιλίαν χειρῶν, ὡς εἰς ἀφιδρώα ἐκβάλλεται.

18 Τὰ δὲ ἐκπορεύμενα ἐκ τοῦ σώματος, ἐκ τῆς καρδίας ὑψέρχεται, κακὰ τε κοινοῖ τῷ ἄνθρωπῳ.

19 Ἐκ γὰρ τῆς καρδίας ὑψέρχονται διφλογισμοί, πόνησι, φόνοι, μοιχεύαι, πόρναι, κλοπαί, ψευδομαρτυρίαι, βλασφημίαι.

20 Ταῦτά ἐστι τὰ κοινοῦ τῷ ἄνθρωπῳ· τὸ δὲ ἀνίπτοις χερσὶ φανεῖν, ἢ κοινοῖ τῷ ἄνθρωπῳ.

21 Καὶ θελόντων ἐκείθεν ὁ Ἰησοῦς, ἀνεχώρησεν εἰς τὰ μέρη Τύρου καὶ Σιδῶνος.

22 Καὶ ἰδὼν, γυνὴ Κεφαθαία ἀπὸ τῆς οἰκίας, ἐκείθεν θελούσα, ἐκράυγασεν, αὐτῷ λέγουσα· Ἐλέησόν με Κύριε, διὲ Δαβὶδ, ἡ θυγάτηρ μου κακῶς δαμνιζέται.

23 Οὐ δὲ ἢ ἀπεκρίθη αὐτῇ λέγων· Καὶ προσελθόντας οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἤρωτον αὐτῇ, λέγοντες· Ἀπόλυται αὐτὴν, ὅτι κρῖναι ἰπιδεν ἡμῶν.

24 Οὐ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐκ ἀπετάλλω εἰ μὴ ἐν τὰ πρόβατα τὰ ἀπολωλῆτα οἰκῆ Ἰσραὴλ.

25 Ἡ δὲ ἐλθούσα προσεκύνη αὐτῷ, λέγουσα· Κύριε, βοήθειαι.

26 Οὐ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐκ ἐστὶ καλὸν λαβεῖν τὸ ἄρτον τῆς τέκνου, ὡς βαλεῖν τοῖς κυναρίοις.

27 Ἡ δὲ εἶπε· Ναὶ Κύριε· ὡς γὰρ τὰ κυνάρια τὰ θύματα ἀπὸ τῆς θύρας τῆς πίπτοντων ἀπὸ τοῦ τραπέζης τῆς κυρίας αὐτοῦ.

28 Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῇ· Ὡς γύναι, μεγάλη σε ἡ πίστις· ᾤκηθῃτω σοι ὡς θέλεις· καὶ ἰάθη ἡ ἄσθ.

ἰαθεῖν ἢ θυγάτηρ αὐτῆς ἀπὸ τῆς ὕρας ἰκάνης.

29 Καὶ μεταβάς ἐκείθεν ὁ Ἰησὺς, ἦλθε πρὸς τὴν θάλασσαν τὴν Γαλιλαίας· ἔτι αὖτις αὐτὸν οὐκ ἔκρινεν ἄνθρωπος.

30 Καὶ προσῆλθον αὐτῷ ὄχλοι πολλοί, ἔχοντες μετ' ἐαυτῶν χυλὴς, τυφλὰς, κωφὰς, κυλῆς, ἔτι καὶ πολλὰς· ἔρριψαν αὐτὸς πόδας τῆς πόδας τῶν ἰσχυρῶν· ἔτι καὶ ἐκράδαυσε αὐτούς.

31 Ὡς γὰρ τῆς ὄχλης θαυμάσαι, βλέποντας κωφὰς λαλῶντας, κυλῆς ὄντας, χυλὴς περιπατοῦντας, ἔτι καὶ τυφλὰς βλέποντας, ἔτι ἐδόξαζον τὸν Θεὸν Ἰσραὴλ.

32 Ὁ δὲ Ἰησὺς προσκαλεσάμενος τῆς μαθητῶν αὐτοῦ, εἶπε· Σπαραγχιζομεθα τὴν τὸν ὄχλον, ὅτι ἤδη ἡμέρας τρεῖς προσμένουσιν μοι, καὶ οὐκ ἔχουσιν τί φαγεῖν· ἔτι ἀπολύσαι αὐτὴν γῆρας ἢ θάνατον, μήποτε ἐκλυθῶσιν ἐν τῇ ὁδῷ.

33 Καὶ λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Πέδον ἡμῖν ἐν ἐρημίᾳ ἄρτοι τούτοις, ὥς ἵνα χορτάσθωσιν ὄχλον τούτον;

34 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησὺς· Πέντε ἄρτους ἔχετε· οἱ δὲ ἀπὸν· Ἐπτά, ἔτι ἑλίσσον ἰχθυῖδας.

35 Καὶ ἐκέλευσε πῖς ὄχλοις ἀνακλισθῆναι ἐπὶ τῇ γῇ.

36 Καὶ λαβὼν τῶν ἑπτὰ ἄρτων ἔτι τῶν ἰχθυῶν, ἔκλεισε, ἔτι ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· οἱ δὲ μαθηταὶ τῷ ὄχλῳ.

37 Καὶ ἔφαγον πάντες, ἔτι χορτάσθησαν· ἔτι ἔμενον τὰ περικλυτὰ τῶν κλαυμάτων, ἔτι ἀπολείποντες πληθύνους.

38 Οἱ δὲ ἰσχυροὶ ἦσαν τετρακισχίλιοι ἄνδρες, καὶ οἱ γυναῖκες ἔτι παῖδες.

39 Καὶ ἀπελίσσας τῆς ὄχλης, ἐβόησεν τὸ πλοῖον, ἔτι ἦλθεν εἰς τὰ ὄρη Μαγδαλά.

Κεφ. 15. 16.

1 ΚΑΙ προσελθόντες οἱ Φαρισαῖοι ἔτι σαδδουκαῖοι, πειράζοντες ἐπαρώτησαν αὐτὸν σημεῖον ἐκ τῆς ἡμέρας ὑποδαῖσαι αὐτοῖς.

2 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐδὲν ὑποδαῖσαι ὑμῖν λέγω, ἔτι εὐδοκίαν· πυρρᾶσαι γὰρ ὁ ἥρως.

3 Καὶ πρὸς τὴν ἡμέραν χειμῶν· πυρρᾶσαι γὰρ συνάγον οἱ ἥρως· ὑποδαῖσαι, τὸ μὲν προσάγειν τῇ ἡμέρᾳ γινώσκετε ὑποδαῖσαι, τὰ δὲ σημεῖα τῶν καιρῶν οὐ δύνασθε.

4 Γενεὰ πενηντὴ καὶ ροιχολὴ σημεῖον ἐπιζητεῖ· καὶ σημεῖον οὐ δοθήσεται αὐτῇ, εἰ μὴ τὸ σημεῖον Ἰωνᾶ τοῦ προφήτου· καὶ καταλιπὼν αὐτοὺς, ἀπῆλθε.

5 Καὶ

ἀποστόλῃ καὶ ἀποστόλῃ ἀποστόλῃ καὶ ἀποστόλῃ

5 Καὶ ἔλθοντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ εἰς τὸ πέραρ ἔπι-
λθοντο ἀρτης λαβεῖν.

6 Ὁ δ' Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ὁρᾶτε ἃ προσέχετε
ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν φαρισαίων ἃ σαδδουκαίων.

7 Οἱ δ' διαλογίζοντο ἐν ἑαυτοῖς, λέγοντες· Ὅτι ἀρ-
της ἢ ἐλάβουμι.

8 Γινῶς δ' ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς, Τί διαλογίζεσθε ἐν
ἑαυτοῖς, ὀλιγόπιστοι, ὅτι ἀρτης ἢ ἐλάβετε;

9 Οὐκ οὐκ, ἡδὲ μαμαρίζετε τὰς πεντε ἀρτης τῶν
παρακαυχιλίων, ἃ πόσας κεφίνας ἐλάβετε.

10 Οὐδὲ τῆς ἐπτά αὐτῶν τῶν τετρακαυχιλίων, ἃ πό-
σας σπυρίδας ἐλάβετε;

11 Πῶς οὐ νοεῖτε, ὅτι οὐ πλεον ἄρτων εἶσι οὗτοι ὅμοι,
προσέχειν ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν φαρισαίων καὶ σαδδου-
καίων;

12 Τότε συνῆκον, ὅτι ἢ εἶπε προσέχειν ἀπὸ τῆς
ζύμης τῶν αὐτῶν, ἀλλ' ἀπὸ τῆς διδαχῆς τῶν φαρισαίων ἃ
σαδδουκαίων.

13 Ἐλθὼν δ' ὁ Ἰησοῦς εἰς τὰ μέρη Καισαρείας
καὶ Φιλίππου, ἤρξατο ταῦτα μαθεύειν αὐτοῦ, λέγων·
Γίνα με λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι εἶναι, εἰσὶν οὖν οὗτοι οἱ
ἄνθρωποι;

14 Οἱ δ' εἶπον· Οἱ μὲν, Ἰωάννην τὸν βαπτιστῆν·
ἄλλοι δὲ, Ἡλὶν· ἕτεροι δὲ, Ἰερεμίδην, ὃς ἐστὶν τῶν
προφητῶν.

15 Λέγου αὐτοῖς· Ὑμεῖς δὲ τίνα με λέγετε εἶναι;

16 Ἀποκριθεὶς δὲ Σίμων Πέτρος, εἶπε· Σὺ εἶ ὁ
Χριστὸς, ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος.

17 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῷ· Μακάριος
εἶ Σίμων βαρ Ἰωνᾶ, ὅτι σὰρξ ἃ σῶμα ἢ ἀπεκάλυψε
σοι, ἀλλ' ὁ πατήρ μου ὁ ἐν τοῖς κρυφοῖς.

18 Καὶ γὰρ δὲ σοι λέγω, ὅτι σὺ εἶ Πέτρος, ἃ ἐπὶ
ταύτῃ τῇ πέτρᾳ οἰκοδομήσω μου τὴν ἐκκλησίαν· ἃ πύλαι
ἐδὲ ἢ κατεχύσουσιν αὐτήν.

19 Καὶ δώσω σοι τὰς κλεῖς τῆς βασιλείας τῶν οὐρανῶν.
ἃ ὅ ἐὰν δήσῃς ἐπὶ τῇ γῆς, ἔσται δεδεμένον ἐν τοῖς
οὐρανοῖς· ἃ ὅ ἐὰν λύσῃς ἐπὶ τῇ γῆς, ἔσται λελυμένον
ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

20 Τότε διετείλατο τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἵνα μηδεὶς
εἰπῶσιν, ὅτι αὐτὸς ἐστὶν Ἰησοῦς ὁ Χριστός.

21 Ἀπὸ τότε ἤρξατο ὁ Ἰησοῦς δεικνύειν τοῖς μαθηταῖς
αὐτοῦ, ὅτι δεῖ αὐτὸν ἀπελθεῖν εἰς Ἱερουσόλυσαν, ἃ πολλὰ
παθεῖν ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων ἃ ἀρχιερέων, καὶ γραμ-
ματείων, καὶ ἀποκταθῆναι, ἃ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγεί-
νηναι.

22 Καὶ προηβαλόμενος αὐτῷ ὁ Πέτρος, ἤρξατο ὑποτι-
μᾶν αὐτὸν, λέγων· Ὑψίστος σοι Κύριε· ὃ μὴ ἔσται σοι
τούτο.

23 Ὁ δ' ἐραφίς, εἶπε τῷ Πέτρῳ· Ὑπάγε ἑπίσω μου
σατανα, σκάνδαλον μου εἶ, ὅτι ὃ φρενὴς τὰ τοῦ Θεοῦ, ἀλ-
λὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων.

14 Τότε ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ· Εἰ τις θέλει ὑπὸς μου ἔλθαι, ἀποαρτεσάτω ἑαυτὸν, ἔκράτω τὸ σταυρὸν αὐτοῦ, ἔκκολουθίτω μοι.

15 Ὃς δ' ἂν θέλῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ σῶσαι, ἀπολέσει αὐτήν· ὃς δ' ἂν ἀπολέσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν ἐμοί, σώσει αὐτήν.

16 Τί γὰρ ὠφελεῖται ἄνθρωπος, εἰς τὸ κέσθαι ἔχον κεφάλαιον, ἃ ψυχὴν αὐτοῦ ζημιώσῃ; ἢ τί δώσει ἄνθρωπος ἀνταλλάξαι τὴν ψυχὴν αὐτοῦ;

17 Μένει γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐρχεσθαι ἐν τῇ δοξῇ τῆς πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῆς ἀγγέλων αὐτοῦ· ἔτι τότε ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὴν πράξιν αὐτοῦ.

18 Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἐπὶ πῖνες τῆς γῆς ὥστε ἐσθιέται, οἱ πῖνες ἢ μὴ γινώσκονται θανάτου, εἰς τὸν αἶνα ἰδοὺς τὸν ἀνθρώπου ἐρχομένου ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ.

Κεφ. ιζ'. 17.

1 **Κ**ΑΙ μεθ' ἡμέρας ἑξ ὡς λαμβάνει ὁ Ἰησοῦς τὸν Πέτρον, καὶ Ἰάκωβον, καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ· ἔναφ' ἑρμ' αὐτοὺς εἰς ὄρος ὑψηλὸν κατ' ἰδίαν.

2 Καὶ μετεμορφάθη ἔμπροσθεν αὐτῶν, ἔλαμψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος, τὰ δὲ ἱμάτια αὐτοῦ ὡς τὸ φῶς.

3 Καὶ ἰδὼν, ὠφθαλμοὶ αὐτοῖς Μωσῆς ἔλαμψε, μετ' αὐτῶν σοδομητῆς.

4 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπε τῷ Ἰησοῦ· Κύριε, καλὸν ἐστὶν ἡμῶς ὡς ἐκεῖ εἶναι· εἰ θέλεις, ποιήσωμεν ὡς τρεῖς σκηνάς, σοὶ μίαν, ἔμοις μίαν, ἔμοις μίαν.

5 Ἐπὶ αὐτῶν λαλήσας, ἰδὼν νεφέλη φαιανὴ ἐπέσκησεν αὐτοὺς· καὶ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης, λέγουσα· Οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ὃν ὁ πατήρ ἐδόξεκα· αὐτὸν ἀκούετε.

6 Καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταί, ἐκίσαν ὑπὸ πρὸς αὐτῶν, ἔφοβήθησαν σφόδρα.

7 Καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς, ἥψατο αὐτῶν, ἔειπεν· Ἐγέρθητε, ἔκ μη φοβεῖσθε.

8 Ἐπάρσαντες δὲ τὰς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, κέλευσεν αὐτοὺς, εἰ μὴ τὸν Ἰησοῦν μόνον.

9 Καὶ καταβαινόντων αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους, συνέτελλετο αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Μὴ ἐνὶ οὐρανῷ τοῦ ὄρατος, ἰδοὺ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν νεκρῶν ἀναστῇ.

10 Καὶ ἐπηρώτησάν αὐτὸν οἱ μαθηταί αὐτοῦ, λέγοντες· Τί ἂν οἱ γραμματεῖς λέγῃσιν, ὅτι Ἡλίας καὶ ἔλθειν πρῶτον;

11 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἡλίας μὲν ἔρχεται πρῶτον, ἔκ καταστήσει πάντα.

12 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι Ἡλίας ἤδη ἔλθει· ἔκ μὴ ἐπίγνωσάν αὐτόν· ἀλλ' ἐποίησάν ἐναντίῳ, ὅσα ἐθέλησαν.

ἔπειτα ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου μέλλει πάχει, ὡς αὐτῶν.
 13 Τότε συνήκαμ εἰς μαθηταί, ὅτι καὶ Ἰωάννης τὸ
 Βαπτισμὸν ἔπειν αὐτοῖς.

14 Καὶ ἐλθόντων αὐτῶν πρὸς τὸν ὄχλον, προσῆλθεν
 αὐτῷ ἄνθρωπος, γονυπετῶν αὐτῷ.

15 Καὶ λεγὼν, Κύριε, ἐλέησον με τὸν υἱόν, ὅτι
 σιληνιάζεται, ὃ κακῶς πάχει. πολλάκις ὃ εἶπται ἐν
 τῷ πυρὶ, ὃ πολλάκις ἐν τῷ ὕδατι.

16 Καὶ προσήγγικα αὐτῷ τοῖς μαθηταῖς σὺν, ὃ ἔκ
 ἡδυνήθησάν αὐτὸν θανατεῦσαι.

17 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, ἔειπεν· ὦ υἱὲν ὅστις, ὃ
 διεσπασμένη, ὡς πότε ἵσταμαι μεθ' ὑμῶν; ὡς πότε
 ἀνεξομαί ὑμῶν; φέρετε μοι αὐτὸν ὧδε.

18 Καὶ ἐπιτιμᾶσιν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, ὃ ὑπελάθην ἀπ'
 αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον· ὃ ἐθραύσθη ὁ παῖς ἀπὸ τῆς ὤ-
 ρης σκάνης.

19 Τότε προσελθόντες εἰς μαθηταί τῷ Ἰησοῦ κατ'
 ἰδίῳ, ἔειπεν· Διὰ τί ἡμῖς οὐκ ἡδυνήθημεν σκάνην
 αὐτοῦ;

20 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔειπεν αὐτοῖς· Διὰ τὴν ἄπιστίαν ὑ-
 μῶν; ἀλλὰ ὃ λέγω ὑμῖν, ἐὰν ἔχητε πίσιν ὡς κοκκὸν
 σιναπίτης, ἔρειτε ἐν ὅρῳ τῆς γῆς. Μετέβηθι ἐντεῦθεν
 σκάνη, ὃ μεταβήσεται· ὃ οὐδὲν ἀδυνατήσει ὑμῖν.

21 Τὸ δὲ τὸ γένος οὐκ ὑπεραίεται, εἰ μὴ ὃν προσ-
 ὀχῇ ὃ νεύσῃ.

22 Ἀναστροφόμενον δὲ αὐτῶν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, ἔειπεν
 αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μέλλει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου πρὸς δι-
 δασθῆαι ἐν χεῖρας ἀνθρώπων.

23 Καὶ ἀποκτενεῖσιν αὐτὸν, ὃ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἐγερ-
 θήσεται. Καὶ ἐλυπήθησαν σφόδρα.

24 Ἐλθόντων δὲ αὐτῶν εἰς Καπερναῦν, προσῆλθον εἰς
 τὸ δίδραχμα λαμβάνοντες τῷ Πέτρῳ, ὃ ἔειπεν· Ὁ δι-
 δακταλὸς ὑμῶν ἢ τελεῖ τῷ δίδραχμῳ;

25 Λέγει· Ναί. Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἰκίδιον,
 προέφθασεν αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς, λεγὼν· Τί σοι δοκεῖ, Σί-
 μων; οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς ἀπὸ τίνων λαμβάνουσιν τὴν
 ἢ κῆνσον; ἀπὸ τῶν υἱῶν αὐτῶν, ἢ ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων;

26 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Ἀπὸ τῶν ἀλλοτρίων. Ἐφ'
 αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἄραγε ἐλωθῆροί εἰσιν οἱ υἱοί.

27 Ἵνα δὲ μὴ σκληραλώσωμεν αὐτοῖς, περὶ τοῦ εἰς
 τὸ θάλασσαν, βάλε ἄγκιστρον, ὃ τὸ ἀναβάτον πρῶτον
 ἔχοντ ἄρα. ὃ ἀνείλας τὸ ἵματι αὐτοῦ, ὥρμησεν ταπῆ-
 ρα. σκάνην λαβὼν, ὅς αὐτοῖς ἐντὶ ἡμῶν ὃ σὺ.

Κεφ. 18.

1 **Ε**Ν σκάνῃ τῇ ὥρῃ προσῆλθον οἱ μαθηταί τῷ
 Ἰησοῦ, λέγοντες· Τίς ἄρα μείζων ἐστὶν ὃν τῇ
 βασιλείᾳ τῶν ἡερῶν;

2 Καὶ προκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς παιδίον, ἔθηκεν αὐ-
 τῷ ὃν μετὰ αὐτῶν.

3 Καὶ

3 Καὶ ἔπεν. Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, καὶ μὴ σπαράτε, ὅτι γενεσθε ὡς τὰ παιδίκα, ὃ μὴ ὑπελάθετε ἐπὶ τὴν βασιλείαν τῆς οὐρανῶν.

4 Οὗτοι δὲ ἄν ταπεινώσῃ τοὺς ἄλλους ὡς τὰ παιδίκα τῶν υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου, ὅς ἐστιν ὁ μὲν ἐν τῇ βασιλείᾳ τῆς οὐρανῶν.

5 Καὶ ὅς ἐάν δεξιᾷ παιδίον τοιοῦτον ἔσται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐγὼ ἐδέχεται.

6 Οὗτος δὲ ἄν σκάνδαλίσῃ ἕνα τῶν μικρῶν τούτων, τῶν πιστευόντων ἐς ἐμέ, συμφέρει αὐτῷ, ὡς κρημνοσθῇ μύλος ὄνικος ἐπὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, ὅς καταποτισθῇ ἐν πυρὶ πελάγῃ τῆς θαλάσσης.

7 Οὐκ ἐστὶν τῷ κόσμῳ ἀπὸ τῆς σκάνδαλων, αἰσχρὰ γὰρ εἰσὶν εἰσελθεῖν τὰ σκάνδαλα· πλὴν ὑπὲρ τοῦ ἀνθρώπου σκαι-
ον, δι' ὃ τὸ σκάνδαλον ἔρχεται.

8 Εἰ δὲ ἡ χεὶρ σου, ἢ ὁ πῦς σου σκάνδαλίζῃ σε, ἐκ-
κόψου αὐτά, ὅς ῥαυλὲς ἀπὸ σου· καλὸν σοι εἶναι ἀπολαθῆναι ἢ τὴν ῥαυλὴν ἢ τὸν πῦρ, ὅς ὁλοῦται ἡ χεὶρ σου ἢ ὁ πῦς σου, ὅς ὁλοῦται ἡ ψυχή σου.

9 Καὶ ἐὰν ὁφθαλμός σου σκάνδαλίζῃ σε, ἐξίλε αὐτόν, ὅς ῥαυλὲς ἀπὸ σου· καλὸν σοι εἶναι μόνον ὁφθαλμόν σου εἶναι ἀπολαθῆναι, ἢ τὸν ὁφθαλμόν σου ὅς ὁλοῦται ὁ ὁφθαλμός σου, ὅς ὁλοῦται ἡ ψυχή σου.

10 Οὕτως, μὴ καταφρονήσῃτε ἐν ὅς τῶν μικρῶν τούτων λέγω ὑμῖν, ὅτι εἰ ἀγγέλους αὐτῶν ἐν ἡρώεσσι διαπλάτῃ βαλεῖται τὸ πρόσωπον τοῦ πατρὸς μου, ὅς ἐν ἡρώεσσι.

11 Ἦλθε γὰρ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου σῶσαι τὸ ἀπολαθῆναι.

12 Τί ὑμῖν ἐκεῖ; ἐάν γένῃται τινὶ ἀνθρώπῳ ἑκατὸν προβάτα, ὅς ἄπολεσεν ἓξ αὐτῶν, ὅς ἄφῃς τὰ ἑνενήκοντα ἑπτὰ, ἐπὶ τὰ ἑξὶ περὶβάλλῃς, ζῆται τὸ πλανή-
μενον;

13 Καὶ ἐάν γένῃται ἀπολεῖν αὐτό, ἄμην λέγω ὑμῖν, ὅτι χαίρει ἐπ' αὐτῷ μάλλον, ἢ ἐπὶ τοῖς ἑνενήκοντα ἑπτὰ, οὗτοι μὴ πεπλυνμένοι.

14 Οὕτως, ἢ ἐπὶ θέλημα ἔμπροσθεν τοῦ πατρὸς ὑμῶν, τὸ ἐν ἡρώεσσι, ὅς ἀπολαθῇ ὡς τῶν μικρῶν τούτων.

15 Εἰάν δὲ ἁμαρτήσῃ εἰς σὲ ὁ ἀδελφεός σου, ὕπαγε, ὅς ἐλέγξῃς αὐτόν μεταξὺ σου ὅς αὐτὸς μόνος· εἰάν σε ἀκούσῃ, ἐκέρχῃς τὸν ἀδελφόν σου.

16 Εἰάν δὲ μὴ ἀκούσῃ, παράλαβε μετὰ σοῦ ἓτι ἕνα ἢ δύο· ὅς ἐπὶ τῷ ὀνόματι τοῦ πατρὸς τοῦ κυρίου σου καὶ τοῦ υἱοῦ σου καὶ τοῦ ἁγίου πνεύματος.

17 Εἰάν δὲ μὴ ἀκούσῃ αὐτῶν ἐπὶ τῇ ἐκκλησίᾳ, εἰάν δὲ ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας μὴ ἀκούσῃ, ἔσω σοι ὡς περὶ ὁ ἐθνομάρτυς, ὅς ὁ τελωτής.

18 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅσα ἐάν δήσῃτε ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται δεδωμένα ἐν τῷ οὐρανῷ· ὅσα ἐάν λύσῃτε ἐπὶ τῆς γῆς, ἔσται λελυμένα ἐν τῷ οὐρανῷ.

19 Πάλιν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐάν δύο ὑμεῖς συμφωνήτω-
σιν ἐπὶ τῆς γῆς περὶ πάντες τὰς ἐν οὐρανῷ
ταί,

ται, ῥησεται αὐτοῖς παρὰ τῶ πατρὸς. μὴ τοῦ ὅν δρα-
τοῖς.

20 Οὐ γὰρ εἰσι δύο ἢ τρεῖς συνηγμένοι εἰς τὸ ἐμὲν ὄνο-
μα, ἐκὼ εἶμι ὃν μέσω αὐτῶν.

21 Τότε προσελθὼν αὐτῷ ὁ Πέτρος, εἶπε. Κύριε,
περάσεις ἀμαρτήσιν ἡμῶν ὡς ἐμὲ ὁ ἀδελφός μου, ἔ ἀφῆδω αὐ-
τῷ; ἕως ἑπτάκις;

22 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς. Οὐ λέγω σοι, ἕως ἑπτάκις,
ἀλλ' ἕως ἑβδομηκοντάκις ἑπτά.

23 Διὰ τὸ τοῦ ἀμωμῆσαι ἡ βασιλεία τῆς ἡραγῶν ἡνδρώ-
τη βασιλεῖ, ὅς ἡθέλητε συγχαῖν λόγον μετὰ τῆς δούλης
αὐτῆς.

24 Ἀρξάμενη ἡ αὐτῇ συναίρειν, προσλήχθη αὐτῇ εἰς
ὀφειλῆς μυρία τάλαντων.

25 Μὴ ἔχοντας ἡ αὐτῇ ἀποδοῦναι, ἐκέλευσεν αὐτὴν
ὁ κύριος αὐτῇ παραδῆναι, ἔ τὴν γυναῖκα αὐτῆς, ἔ τὰ
τέκνα, ἔ πάντα ὅσα εἶχε, ἔ ἀποδοθῆναι.

26 Πεσὼν ἦν ὁ δῆλος προσκύνει αὐτῷ, λέγων·
Κύριε, μακροθύμησον ἐπ' ἐμοί, ἔ πάντα σοι ἀπα-
ύσω.

27 Σπλαγχνισθεὶς ἡ ὁ κύριος τοῦ δούλου ἐκείνου, ἀ-
πέλυεν αὐτόν, ἔ τὸ δάνειον ἀφῆκεν αὐτῷ.

28 Ἐξελθὼν ἡ ὁ δούλος ἐκεῖνος, εὗρεν ἕνα τῶν συν-
δούλων αὐτοῦ, ὅς ἀφῆκεν αὐτῷ ἑκατὸν δηνάρια. ἔ
κρατήσας αὐτόν ἐπείγε, λέγων· Ἀπόδος μοι, ὅ, τι
ὀφείλεις.

29 Πεσὼν οὖν ὁ σύνδουλος αὐτοῦ εἰς τοὺς πόδας αὐτοῦ,
παρεκάλει αὐτόν, λέγων· Μακροθύμησον ἐπ' ἐμοί, ἔ
πάντα ἀποδώσω σοι.

30 Ὁ δ' οὐκ ἠθέλη· ἀλλ' ἀπελθὼν, ἔβαλεν αὐτόν
εἰς φυλακὴν, ἕως οὗ ἀποδῶ τὰ ὀφειλόμενα.

31 Ἰδόντες ἡ οἱ σύνδουλοι αὐτοῦ τὰ ῥησόμενα, ἐλυπή-
θησαν σφόδρα. ἔ ἐλθόντες διεσάφησαν τῷ κυρίῳ αὐ-
τοῦ πάντα τὰ ῥησόμενα.

32 Τότε προσκαλετάμενος αὐτόν ὁ κύριος αὐτῶν, λέγει
αὐτῷ· Δούλε ποιήρῃ, πᾶσαν τὴν ὀφειλὴν ἐκείνῳ ἀφῆ-
κα σοι, ἔτει παρεκάλεσας με.

33 Οὐκ εἶδὲ καὶ σε ἐλεῆσαι τὸν σύνδουλόν σου, ὡς ἡ
ἐγὼ σε ἠλέησα.

34 Καὶ ὀργισθεὶς ὁ κύριος αὐτῶν παρέδωκεν αὐτόν τοῖς
φασανισαῖς, ἕως οὗ ἀποδῶ πᾶν τὸ ὀφειλόμενον αὐτῷ.

35 Οὕτω ἔ πατήρ μου ὁ ἐπαράνιος ποιήσει ὑμῖν, ἐὰν
μὴ ἀφῆτε ἕκαστος τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ ἀπὸ τῆς καρδίας
ὑμῶν τὰ ὀφειλόμενα αὐτῷ.

Κεφ. 19. 19.

1 **Κ** Αὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεσεν ὁ Ἰησοῦς τοὺς λόγους
τούτους, μετῆρεν ἀπὸ τῆ Γαλιλαίας, ἔ ἦλθεν
εἰς τὰ ὄρια τῆ Ἰουδαίας, πέραν τοῦ Ἰορδάνου.

2 Καὶ

2 Καὶ ἠκολούθησαν αὐτῷ ὄχλοι πολλοί· ἔδιδόσαν αὐτῷ σκῆν.

3 Καὶ προσῆλθον αὐτῷ οἱ φαρισαῖοι, τειράζοντες αὐτόν, ἔλεγοντες αὐτῷ· Εἰ ἐξέστι ἀνθρώπῳ, ἀπολύσαι τὴν γυναῖκα αὐτοῦ καὶ παρὰ αὐτήν;

4 Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ ἀρέσχετε, γὰρ ὁ ποιήσας αὐτὴν ἀρχῆς, ἵνα ᾧ ἄνθρωπος ἐποίησεν αὐτήν;

5 Καὶ εἶπεν· ἕνεκεν τούτου καταλείψει ὁ ἄνθρωπος τὴν πατέρα καὶ τὴν μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται τῇ γυναικὶ αὐτοῦ· καὶ ἑσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν.

6 Ὡς τε ἡ ἐκείνη ἐστὶ δύο, ἀλλὰ σὰρξ μία· ὃ ἔστι ὁ Θεὸς συνίζουσιν, ἄνθρωπος μὴ χωρίζεται.

7 Λέγουσιν αὐτῷ· Τί ἔν Μωσῆς ἐνετάλατο δεῖναι βιβλίον ἀποσπῆσαι, ἔκτελέσαι αὐτήν;

8 Λέγει αὐτοῖς· Ὅτι Μωσῆς πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν αὐτῶν ἐπέτρεψεν ὑμῖν ἀπολύσαι τὰς γυναῖκας, ὅτι ἡ ἀρχὴς δὲ ἡ γεγενεὶς ἦτο.

9 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι ὅς ἂν ἀπολύσῃ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ μὴ ἐπὶ πορνείᾳ, ἔραται ἄλλῳ, μοιχᾶται· ὁ ἀπολυθεὶς γαμήσας, μοιχᾶται.

10 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Εἰ ἦτως ἐστὶν ὁ νόμος τῷ ἀνθρώπῳ καὶ τῇ γυναικὶ, τί συμφέρει γαμήσαι;

11 Οὗ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ πάντες χωρεῖσι τὸν λόγον τούτον, ἀλλ' οἷς δεδοται.

12 Εἰσὶ γὰρ οὐνῆχοι, οἱ τινες ἐκ κοιλίας μητρὸς ἐγενήθησαν ὑποχρεῖται· καὶ εἰσιν οὐνῆχοι, οἱ τινες ἀνυπόχρεοι ὑπὸ τῷ ἀνθρώπῳ· καὶ εἰσιν οὐνῆχοι, οἱ τινες ἀνυπόχρεοι ὑπὸ τῷ βασιλεῖ τῶν ἑβραίων· ὁ δὲ ἀνυπόχρεος χωρεῖν, χωρεῖτω.

13 Τότε προσῆνεχθη αὐτῷ παιδίον, ἵνα τὰς χεῖρας ἐπιθῇ αὐτοῖς, ἔραται προσδύξεται· οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπετίμησαν αὐτοῖς.

14 Οὗ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἄφετε τὰ παιδία, ἔραται καὶ αὐτὰ ἐλθεῖν πρὸς με· τῷ γὰρ τοιούτων ἐστὶν ὁ βασιλεὺς τῶν ἑβραίων.

15 Καὶ ὑπαθίς αὐτοῖς χεῖρας, ἐπορεύθη ὁ κύριος.

16 Καὶ ἰδὼν, εἷς προσελθὼν, εἶπεν αὐτῷ· Διδάσκαλε ἀγαθὲ, τί ἀγαθόν ποιήσω, ἵνα ἔχω ζωὴν αἰώνιον;

17 Οὗ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Τί με λέγεις ἀγαθόν; ἀγαθὸς ὁ Θεός· ἐγὼ δὲ θέλω εἰσαλεῖσθαι εἰς ζωὴν, τηρήσον τὰς ἐντολάς.

18 Λέγει αὐτῷ· Ποίας; Οὗ δὲ Ἰησοῦς εἶπε· Τὸ, Οὐ φονεύσεις· Οὐ μοιχεύσεις· Οὐ κλέψεις· Οὐ ψεύδεσθαι.

19 Τίμα τὸν πατέρα σου, ἔραται τὴν μητέρα· καὶ· Ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτὸν.

20 Λέγει αὐτῷ ὁ νεκρὸς· Πάντα ταῦτα ἐφύλαξάν-
 μου ὡς ἐλάττωός μου· τί ἐπὶ ὕδατι;

21 Ἐφ' αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ θελήσῃς τέλειος εἶναι, ὑ-
 πάγω, πώλησον σὴν τὰ ὑπάρχοντα, & δός τω-
 χύρις· & ἕξεις θησαυρὸν ὡς ἡρμῶν· & δεῦρο, ἀκολου-
 θή μοι.

22 Ἀκύντος δὲ ὁ νεκρὸς τὸν λόγον, ἀπέλθε λε-
 γόμενος· ἦν γὰρ ἔχων πτῆματα πολλά.

23 Ο' δὲ Ἰησοῦς εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Ἀμὴν
 λέγω ὑμῖν, ὅτι δυσκόλως πλεῖστες εἰσελεύσονται εἰς τὴν
 βασιλείαν τῆς Θεοῦ ἡρμῶν.

24 Πάλιν δὲ λέγω ὑμῖν, ἑκοστάτῃ ἐστὶ κάμηλον
 διὰ τρυπήματος ἐφ' ἧδος διελθεῖν, ἢ πλῆσιον εἰς τὴν
 βασιλείαν τῆς Θεοῦ εἰσελθεῖν.

25 Ἀκούσαντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ διεπλήρωσαν
 σφόδρα, λέγοντες· Τίς ἄρα δύναται σωθῆναι;

26 Ἐμβλέψας δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Παρὰ ἀν-
 θρώποις τὸ αὐτὸ ἀδύνατόν ἐστι, παρὰ δὲ Θεῷ πάντα δύ-
 νата ἐστὶ.

27 Τότε ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος εἶπεν αὐτῷ· Ἰδὼν
 ἡμεῖς ὑφ' ἡμεῶν πάντα, & ἀκολουθήσασμέν σοι· τί ἄρα
 ἐστὶ ἡμῖν;

28 Ο' δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν,
 ὅτι ὅμαιν οἱ ἀκολουθήσαντές μοι, ἐν τῇ καλιγῶνσίᾳ
 ὅταν καθίσῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ θρόνον δόξης αὐ-
 τοῦ, καθίσουσιν & ὑμεῖς ἐπὶ δώδεκα θρόνους, κρινέντες
 τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραὴλ.

29 Καὶ πᾶς ὃς ἀφῆκεν οἰκίαν, ἢ ἀδελφούς, ἢ ἀ-
 δελφούς, ἢ πατέρα, ἢ μητέρα, ἢ γυναῖκα, ἢ τέκνον,
 ἢ ἀγῆς ἐνεκεν τῆς ἐλπίδος μου, ἑκατονταπλασίονα
 λάβεται, & ζωὴν αἰώνιον κληρονομήσει.

30 Πολλοὶ δὲ ἐσονται πρῶτοι, ἔχατοι· & ἔχατοι·
 πρῶτοι.

Κεφ. κ'. 20.

1 **Ο** Μοίρα γὰρ ἐστὶν ἡ βασιλεία τῶν ἡρμῶν ἀνθρώ-
 πῳ οἰκοδομήσῃ, ὅστις θέλῃ ληθεῖν ἑαυτὸν πρῶτον
 σθώσασθαι ἐργάτας εἰς τὴν ἀμπελῶνα αὐτοῦ.

2 Συμφωνήσαντες δὲ μετὰ τῶν ἐργατῶν ὡς ἐπὶ τὴν
 ἡμέραν, ἀπέστειλεν αὐτοῖς εἰς τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ.

3 Καὶ θέλθων πρὸς τὴν τρίτην ὥραν, εἶδεν ἄλλους
 ἐστῶτας ἐν τῇ ἀγορῇ ἀργῆς.

4 Καί τινες εἶπεν· Ὑπάγετε & ὑμεῖς εἰς τὸν ἀμπε-
 λῶνα· & ὁ ἐπὶ τῇ δίκαιον, δώσω ὑμῖν.

5 Οἱ δὲ ἀπελθόντες· Πάλιν θέλθων πρὸς ἑκτὴν &
 ἐνάτῃ ὥρᾳ, ἐποίησεν ὁσαύτως.

6 Πρὸς δὲ τὴν ἑνδεκάτῃ ὥρᾳ θέλθων, εὗρεν ἄλ-
 λους ἐστῶτας ἀργῆς, & λέγει αὐτοῖς· Τί ὥδε ἐσθκατε
 ὡλῶν τῇ ἡμέρᾳ ἀργοί;

7 Λέγουσιν αὐτῷ· Ὅτι κἀκεῖ ἡμᾶς ἐμμεθύσατο· Λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε ἔνθα ἐστὶ τὸ ἀμπελῶν· ἔστι δὲ δικαίον, ληψέσθε.

8 Ὁ ψίλλος δὲ ῥησμεύων λέγει ὁ κύριος τῷ ἀμπελῶνι τῷ ἐπιτρόπῳ αὐτοῦ· Καλεστον τὰς ἐργάτας, ἔτι πόδες ἀπὸ τοῦ τὸν μισθόν, ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς ἑκάτης, ἕως τῆς πρώτης.

9 Καὶ ἐλθόντες οἱ πρῶτοι τὴν ἐνδεκάτην ὥραν, ἔλαβον ἀνά δηνάριον.

10 Ἐλθόντες δὲ οἱ πρῶτοι, ἐνόμισαν ὅτι πλείονα λήψονται· ἔλαβον ἔτι αὐτοὶ ἀνά δηνάριον.

11 Παρόντες δὲ ἐγγύζουσιν κατὰ τὴν οἰκοδεσπότῃ.

12 Λέγοντες· Ὅτι ἡμεῖς οἱ ἔχατομ μίσην ὥρην ἐποίησάν, ἔτι ἡμῖν αὐτὸς ἐποίησας, τοῖς βασιύσας τὸ ἄριστον τῇ ἡμέρᾳ ἔτι τὸν κέρμανα.

13 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν ἐνὶ αὐτῷ· Ἐταῖρε, ἔκ ἀδικῶ σε, ἔκ δὲ δικαιοῦν συνεφωνήτας μοι;

14 Ἄρτι τὸ σὸν, ἔτι ὑπάγε· θέλω δὲ τῷ ἑκάτῃ, ἔτι αὐτῷ ὡς καὶ σοι.

15 Ἡ δὲ ἐξῆς μοι ποιῆσαι ὃ θέλω ἐν τοῖς ἐμοῖς; ἢ ὃ ὁφθαλμοὶ σε πονηρὸν εἶναι, ὅτι ἐγὼ ἀγαθὸς εἰμι;

16 Οὕτως εἰσονται οἱ ἔχατομ, πρῶτοι, ἔτι οἱ πρῶτοι, ἔχατομ· πολλοὶ γὰρ ἐστὶ κλητοὶ, ἐλάχιστοι δὲ ἐκλεκτοί.

17 Καὶ ἀναβαίνων ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἱεροσόλυμα, παρέλαβε τὰς δώδεκα μεθ' ἑαυτοῦ κατ' ἰδίαν ἐν τῇ ὁδῷ, ἔτι ἡμῖν αὐτοῖς.

18 Ἰδὼν ἀνταρρίωντα εἰς Ἱεροσόλυμα· ἔτι ὁ υἱὸς τῆς ἀνθρώπου πᾶσι δεικνύεται τοῖς ἀρχιερεῦσι ἔτι γραμματέεσι, ἔτι κατακρινέσθαι αὐτὸν θανάτῳ.

19 Καὶ πᾶσι δεικνύει αὐτὸν τοῖς ἱερεῦσι εἰς τὸ ἐμπαῖξαι ἔτι μεθιγῶσαι ἔτι σκωρῶσαι· ἔτι τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται.

20 Τότε προσελθὼν αὐτῷ ἡ μήτηρ τῆς υἱῶν Ζεβεδαίου, μετ' ἑαυτῶν υἱῶν αὐτῆς, προσκυνήσας, ἔτι αἰτήσας παρ' αὐτοῦ.

21 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· Τί θέλεις; Λέγει αὐτῇ· Εἴπε ἵνα καθίσωσιν ἡμεῖς οἱ δύο υἱοὶ μου, εἰς ἐκ δεξιῶν σε, ἔτι εἰς ἄριστεύων, ἐν τῇ βασιλείᾳ σου.

22 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· Οὐκ οἶδατε τί αἰτέσθε· δύνασθε πίνειν τὸ ποτήριον, ὃ ἐγὼ μέλω πίνειν, ἔτι τὸ βάπτισμα, ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθῆναι; Λέγουσιν αὐτῷ· Δυνάμεθα.

23 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Τὸ μὲν ποτήριόν μου πίνειτε, ἔτι τὸ βάπτισμα, ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθῆσθε· τὸ δὲ καθίσαι ἐκ δεξιῶν μου ἔτι ἀριστεύων μου, ἢ ἐστὶν ἐμὲν δοῦναι, ἀλλ' οὐκ ἐστὶν ἡτοίμαται ὑπὸ τοῦ πατρὸς μου.

24 Καὶ ἀκούσαντες οἱ δέκα, ἠγανάκτησαν πρὸς τὴν θυγατέρα αὐτῶν.

25 Ο' δὲ Ἰησὺς προσκαλεσάμενος αὐτὸς εἶπεν· Οἱ ὄν-
τε, ὅτι οἱ ἄρχοντες τῆς ἐθνῶν κατακυριεύουσιν αὐτῶν,
καὶ οἱ μεγάλοι κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν.

26 Οὐχ ὕτως δὲ ἔσται ἐν ὑμῖν· ἀλλ' ὅς ἐστιν θελὼν
ἐν ὑμῖν μέγας θησέσθαι, ἔσται ὑμῶν διάκονος.

27 Καὶ ὅς ἐστιν θελὼν ἐν ὑμῖν εἶναι πρῶτος, ἔσται ὑ-
μῶν δούλος.

28 Ὡς περὶ υἱὸς πατρὸς ἀνθρώπου καὶ θλῶν, ἀποκρουθή-
σεται, ἀλλὰ ἀποκρουσάμενος, καὶ θανάτου ψυχῆς αὐτοῦ λυτרון
ἀπὸ πολλῶν.

29 Καὶ ὁπότε ἀποθνήσκουσιν αὐτῶν ἀπὸ Ἰερουσαλὴμ, ἡκολούθη-
σεν αὐτοῖς ὄχλος πολὺς.

30 Καὶ ἰδὼν, δύο τυφλοὶ καθήμενοι παρὰ τῆς ὁδοῦ,
ἀκροάσασθαι ὅτι Ἰησὺς παρῆκε, ἐκραζόντων, λέγοντες·
Εἰλήσῃς ἡμᾶς Κύριε, υἱὸς Δαβὶδ.

31 Ο' δὲ ὄχλος ἐπετίμησεν αὐτοῖς ἵνα σιωπήσωσιν·
οἱ δὲ μᾶλλον ἐκραζόντων, λέγοντες· Εἰλήσῃς ἡμᾶς Κύριε,
υἱὸς Δαβὶδ.

32 Καὶ εἰς τὸ Ἰησὺς ἐφώνησεν αὐτοῖς, καὶ εἶπε· Τί
θέλεται ποιῆσω ὑμῖν;

33 Λέγουσιν αὐτῷ· Κύριε, ἵνα ἀνοιχθῶσιν ἡμῶν οἱ
ὀφθαλμοί.

34 Σπλαγχνισθεὶς δὲ ὁ Ἰησὺς ἥψατο τῶν ὀφθαλ-
μῶν, αὐτῶν· καὶ αὐθὺς ἀνέβλεψαν αὐτῷ οἱ ὀφθαλμοί,
καὶ ἡκολούθησαν αὐτῷ.

Κεφ. κα'. 21.

1 ΚΑὶ ὅτε ἤγγισεν εἰς Ἱεροσόλημον, καὶ θλῶν εἰς
Βηθφαγὴν πρὸς τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τότε ὁ
Ἰησὺς ἀπέστειλε δύο μαθητάς,

2 Λέγωντας αὐτοῖς· Πορεύθητε εἰς τὴν κώμην, καὶ ἀπὸ
ἐκείνῃ ὑμῶν· καὶ αὐθὺς ἀβρῆσατε ὄνον δεδεμένον, καὶ
πῶλον μετ' αὐτῆς· λύσαντες ἀγαγετέ μοι.

3 Καὶ εἰάν τις ὑμῶν εἴπῃ τι, εἰπότε, ὅτι ὁ Κύριος αὐ-
τῷ χρειάζεται· καὶ αὐθὺς ὁ ἀποστείλει αὐτὸς.

4 Τῷτο ὅσον γέγονεν, ἵνα πληρωθῇ τὸ ρηθὲν διὰ
τῶν προφητῶν, λέγοντος·

5 Εἰπάτε τῇ θυγατρὶ Σιών· Ἰδὲ, ὁ βασιλεὺς σου
ἐρχεται σοι πρῶτος, καὶ ὑποβεβηκὼς ἐπὶ τὸν ὄνον, καὶ πῶλον
υἱὸν ὑποβιβύει.

6 Πορεύσασθε δὲ οἱ μαθηταί, καὶ ποιήσαντες καθὼς
προτέταξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησὺς,

7 Ἡγάγοντες τὸ ὄνον καὶ τὸν πῶλον, καὶ ἐπέθηκαν ἐπάνω
αὐτῶν τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ ἐπικάθισαν ἐπάνω
αὐτῶν.

8 Ο' δὲ πλείους ὄχλος ἑστρωσάντων ἐαυτῶν τὰ ἱμάτια ἐν
τῇ ὁδῷ· ἄλλοι δὲ ἐκοπῶν κλάδους ἀπὸ τῶν δένδρων, καὶ
ἐστρώνον ἐν τῇ ὁδῷ.

9 Οἱ δὲ ὄχλοι οἱ προάγοντες· καὶ οἱ ἀκολουθῶντες
ἐκραζόντων, λέγοντες· Ὡσαννὰ τῷ υἱῷ Δαβὶδ· Ὡλογοῦ-
μέντοι.

μένος δ' ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου· Ὡσαύτως ἐν τοῖς υἱοῖς·

10 Καὶ ἐπελθόντες αὐτῷ εἰς Ἱεροσόλυμα, εἰσέσθω παῖσα ἢ πόλις, λέγουσα· Τίς ἐσὶν οὗτοι;

11 Οἱ δὲ ὄχλοι ἐλεγον· Οὗτοι ἐσὶν Ἰησοῦς ὁ προφήτης, ὁ ἀπὸ Ναζαρέτ τῆ Γαλιλαίας·

12 Καὶ ἐπελθὼν ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ ἱερόν τῷ Θεῷ, καὶ ἔβλεπε πάντα τῆς πωλῆντας ἑαγοράζοντας ἐν τῷ ἱερῷ, ἑ τὰς τραπεζὰς τῶν κολλυβιστῶν κατέστρεψε, καὶ τὰς καθέδρας τῶν πωλοῦντων τὰς σέβας·

13 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Γέγραπται· Ὁ οἶκος μου, οἱ παῖδες προσδύχῃς κληθήσεται· ὁμοίως δὲ αὐτὸν ἐποίησατε σπήλαιον λησῶν·

14 Καὶ προσελθὼν αὐτῷ τραπεζοὶ ἑ χαλεοὶ ἐν τῷ ἱερῷ· ἑ ἐθεράπευεν αὐτούς·

15 Ἰδόντες ἢ οἱ ἀρχιερεῖς ἑ οἱ γραμματεῖς τὰ θαυμάσια ἃ ἐποίησε, ἑ τὴν πικρὰν κολύμπαν ἐν τῷ ἱερῷ, ἑ λέγοντας, Ὡσαύτως τῷ οἴκῳ Δαβὶδ, ἡ γλῶσση πλησάν·

16 Καὶ εἶπον αὐτῷ· Ἀκούεις τί οἱτοὶ λέγουσι; Ὁ δὲ Ἰησοῦς λέγει αὐτοῖς· Ναί· ἀλλ' οὐκ ἀνέχονται, ὅτι πῶς οὐκ εὐνοεῖται τῇ γῇ ἑ θαλαζεύοντες κατατίθω αἰών·

17 Καὶ καταλιπὼν αὐτοὺς ἔβη τὴ πόλιν εἰς Βηθάνιαν· ἑ ἐκλήσθη ἐκεῖ·

18 Πρωίως ἢ ἐκταράγων εἰς τὴ πόλιν, ἐκείνομεν·

19 Καὶ ἰδὼν συκῆν μίαν ἐπὶ τῇ ὁδῷ, ἡλθεν ἐπ' αὐτήν, ἑ ὠδὸν εὗρεν ἐν αὐτῇ εἰ μὴ φύλλα μέγας· ἑ λέγει αὐτῇ· Μηκέτι ἐκ σὺ καρπὸς γένηται εἰς τὸν αἰῶνα· Καὶ ἐθεράπευεν αὐτὴν ἡ συκῆ·

20 Καὶ ἰδόντες οἱ μαθηταί, ἐθαύμαζον, λέγοντες· Πῶς ἐθεράπευεν αὐτὴν ἡ συκῆ;

21 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, εἰν ἔχετε πίστιν, ἑ μὴ δισταθεῖτε, ἡ μόνον τὸ τῆς συκῆς ποιήσετε, ἀλλὰ καὶ τὸ ὅρα τῷ τῷ εἶπτε· Ἀρθεῖ, ἑ βλήθῃ εἰς τὴν θαλάσσαν, ἡ ῥηθήσεται·

22 Καὶ πάντα ὅσα ἂν αἰτήσητε ἐν τῇ προσδύχῃ ἡ πιστεύοντες λήψετε·

23 Καὶ ἔλθοντι αὐτῷ εἰς τὸ ἱερόν προσελθόν αὐτῷ διδάσκοντι οἱ ἀρχιερεῖς ἑ οἱ πρεσβύτεροι τῷ λαῷ, λέγοντες· Ἐν τοῖς ὑμῶν ταῦτα ποιεῖς; ἑ τίς σοι ἐδωκε τὴν ἐξουσίαν ταῦτα;

24 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἐρωτήσατε ὑμᾶς κατὰ λόγον ἐκ· ὃν εἰν εἶπτε μοι, κατὰ ὑμῖν ἐρῶ ἐν ποῖα ὑμῶν ταῦτα ποίω·

25 Τὸ βάπτισμα Ἰωάννου πόθεν ἦν; ἡ ἕρην, ἡ ἡ ἀνθρώπων; Οἱ ἡ διλογίζοντο παρ' ἑαυτοῖς, λέγοντες· Ἐάν εἰπωμεν, ἡ ἕρην, ἐρῶ ὑμῖν· Διὰ τί ὃν ἐκ δόξης τῶσατε αὐτῷ;

26 Εὰν δὲ ἀπομην, Ἐξ ἀνθρώπων, φοβήμεθα τὸν ἔχλον· πάντες γὰρ ἔχουσι τὸν Ἰωάννην ὡς προφήτην.

27 Καὶ ἀπεκρίθentes τῷ Ἰησοῦ, εἶπον. Οὐκ οἰδόμεν. Ἐφ' αὐτοῖς ἔαυτός. Οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν τοῖς Ἰουδαίοις ταῦτα ποιεῖν.

28 Τί δὲ ὑμῖν δοκεῖ; Ἀνθρώπος ἔχει τέκνον δύο, ἑπτοετηθῶν τῷ πρώτῳ, ἔπει· Τέκνον, ὑπάγε, σήμερον ἀργάζεσθαι ἐν τῷ ἀμπελῶνι μου.

29 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Οὐ θέλω· ὑπερὶν δὲ μεταμεληθεὶς, ἀπῆλθε.

30 Καὶ προσελθὼν τῷ δευτέρῳ, ἔπειν αἰσάντως· Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· Ἐγὼ κύριε· ἔκ ἡ ἀπῆλθε.

31 Τίς ἐκ τῶν δύο ἐποίησε τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς; Λέγουσιν αὐτῷ. Οἱ πρώτος· Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οἱ τελῶνται ἔα πόρνοι προκ-
ρυπτῇ ὑμᾶς ἐκ τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ.

32 Ἡλθε γὰρ πρὸς ὑμᾶς Ἰωάννης ἐν ὁδῷ δικαιοσύνης, ἔκ ἡ ἐπιστάτα αὐτῷ· οἱ δὲ τελῶνται ἔα πόρνοι ἐκίσχυσάν αὐτῷ· ὑμεῖς δὲ ἰδόντες ἡ μεταμελήθητε ὑπερὶν, καὶ πιστεύσατε αὐτῷ.

33 Ἄλλω παρὰβολὴν ἀκούσατε. Ἀνθρώπος τις ἦν οἰκοδομῶν, ὅστις ἐφύτρωσεν ἀμπελῶνα, ἑ φραγμὸν αὐτῷ ἐτίθει, ἑ ἔρυξεν ἐν αὐτῷ λίθων, ἑ ἠποδόμασε πύργον· ἑ ἔξεδото αὐτὸν γεωργοῖς, ἑ ἀπέδῃ-
μασεν.

34 Οὔτε δὲ ἤγγισεν ὁ καιρὸς τῷ καρπῷ, ἀπέστειλε τὴν δούλην αὐτῷ πρὸς τὴν γεωργίαν, λαβεῖν τὴν καρπὸς αὐτῇ.

35 Καὶ λαβόντες οἱ γεωργοὶ τὴν δούλην αὐτῷ, ὃν μὲν ἐτίμων, ὃν δὲ ἀπέκτειναν, ὃν δὲ ἐλιθοβολήσαν.

36 Πάλιν ἀπέστειλεν ἄλλαν δούλην πλείονας τῶν πρώτων· ἑ ἐποίησαν αὐτοῖς αἰσάντως.

37 Ἐτίθει δὲ ἀπέστειλε πρὸς αὐτὴς τὸν υἱὸν αὐτῷ, λέγων· Ἐντραπήσουται τὸν υἱὸν μου.

38 Οἱ δὲ γεωργοί, ἰδόντες τὸν υἱόν, εἶπον ἐν ἑαυτοῖς. Οὗτος ἐστὶν ὁ κληρονόμος, δευτε, ἀποκτενέμεθα αὐτόν, ἑ κατὰχομεν τὴν κληρονομίαν αὐτῷ.

39 Καὶ λαβόντες αὐτόν· ἔξεδωκεν ἑξω τοῦ ἀμπελῶνος, ἑ ἀπέκτειναν.

40 Οὔτε δὲ ἔλθῃ ὁ κύριος τοῦ ἀμπελῶνος, τί ποιή-
σαι τοῖς γεωργοῖς οὕτοις;

41 Λέγουσιν αὐτῷ· Κακῶς κακῶς ἀπολέσει αὐτὴς. Καὶ τὸν ἀμπελῶνα ἐκδοσεται ἄλλοις γεωργοῖς· οἱ-
τινες ἀποδώσουσιν αὐτῷ τὴν καρπὸς ἐν τοῖς καιροῖς αὐτοῦ.

42 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐδέποτε κινῶνται ἐν ταῖς γενεαῖς. Λέθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομῶ-
ντες, ἡτοι ἐκλήθη ἐκ κεφαλῇ γενίας· παρὰ Κυ-
ρίῳ ἰσχύεται αὐτῇ, ἑ ἐστὶ θάνατος ἐν σφαλαμοῖς ὑμῶν;

43 Διὰ τῆτο λέγω ὑμῖν, ὅτι ἀρθῇσεται ἀφ' ὑμῶν ὁ

ἐνταῦθα τὸ θεῶν, & δοθήσεται ἕκαστῳ κατὰ τὴν ἀνάγκην αὐτοῦ.

44 Καὶ ὁ περὶ τὸν λίθον ἦτον, συνθλασθήσεται· ἐφ' ᾧ δ' ἂν πέσῃ, λικμήσῃ αὐτόν.

45 Καὶ ἀκησάντες οἱ ἀρχιερεῖς & οἱ φαρισαῖοι τὰς πρὸς βολὰς αὐτοῦ, ἐγνωστὸν ὅτι πρὸς αὐτῷ λέγει.

46 Καὶ ζητούντες αὐτὸν κρατῆσαι, ἐφοβήθησαν τὰς ὄχλους, ἐτιμῶν ὡς προφῆτῳ αὐτὸν εἶχον.

Κεφ. κβ'. 22.

1 **Κ**ΑΙ' ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, πάλιν εἶπεν αὐτοῖς ἐν πρὸς βολαῖς, λέγων.

2 Ὁμοιωθὲν ἡ βασιλεῖα τῆς ἡμετέρας ἀνθρώποι βασιλείᾳ, ὅς τις ἐποίησεν γάμον πρὸς υἱὸν αὐτοῦ.

3 Καὶ ἀπέστειλε τοὺς δούλους αὐτοῦ καλέσαι τοὺς κεκλημένους εἰς τοὺς γάμους· & οὐκ ἤθελον εἰσελθεῖν.

4 Πάλιν ἀπέστειλεν ἄλλους δούλους, λέγων· Εἰπάτε τοῖς κεκλημένοις· Ἰδοὺ, τὸ ἀριστόν μου ἡτοίμασα, εἰ ταῦτοί μου ἐστὶν τιτιὰ τιθυμένα, & πάντα εἰσιμα· δεῦτε εἰς τοὺς γάμους.

5 Οἱ δὲ ἀμελείστοι, ἀπελθόντες, ὁ μὲν εἰς τὸν ἴδιον ἀγρὸν, ὁ δὲ εἰς τὴν ἐμπορίαν αὐτοῦ.

6 Οἱ δὲ λοιποὶ, κρατήσαντες τοὺς δούλους αὐτοῦ, ὡς βρισκόντες & ἀπέκτανόν.

7 Ἀκήσας δὲ ὁ βασιλεὺς ἐνεργίσθη· & πέμψας τὰ στρατεύματα αὐτοῦ, ἀπέκτετε τὰς φαῖνας ὁσάμινες, & τὴν πόλιν αὐτῶν ἐσέτρεψε.

8 Τότε λέγει τοῖς δούλοις αὐτοῦ· Ὁ μὲν γάμος ἐτοιμὸς ἐστίν, οἱ δὲ κεκλημένοι κἄν ἤσαν ἀξιοί.

9 Περύεσθε ἐπὶ τὰς διεξόδους τῆς οἰκίας, & ὅσους ἂν εὕρητε, καλέσατε εἰς τὸν γάμον.

10 Καὶ ὤχλησάντες οἱ ἄλλοι ἐκῆνοι εἰς τὰς οἰκίας, συνήγαγον πάντας ὅσους εὗρον, ποιηρὰς τε & ἀσραθὰς· & ἐπληρώθη ὁ γάμος ἀνακειμένων.

11 Εἰσελθὼν δὲ ὁ βασιλεὺς θεάσασθαι τὴν ἀνακειμένην, εἶδεν ὅκει ἄνθρωπον ὡς ἐνδεδυμένον ἐνδυμασίαν γάμου.

12 Καὶ λέγει αὐτῷ· Εἰ ταῦτε, πῶς εἰσῆλθες ὧς μὴ ἔχων ἐνδυμασίαν γάμου; Ὁ δὲ ἐφίμασθη.

13 Τότε εἶπεν ὁ βασιλεὺς τοῖς ἀσραθαῖς· Ὁσῶντες αὐτῷ πόδας & χεῖρας, ἀράτε αὐτόν, & ἀσβάλετε εἰς τὸ σκοτόρ τὸ ἑξωτερικόν· ὅκει ἔτσι ὁ κλυδῶν & ὁ βρυγμὸς τῆς οἰκίας.

14 Πολλοὶ γὰρ εἰσι κλητοί, ὀλίγοι δὲ ὀκλειστοί.

15 Τότε πορεύσιντες οἱ φαρισαῖοι, συμβῆλινον ἔλαβον ὅπως αὐτὸν παγιδώσωσιν ἐν λόγῳ.

16 Καὶ ἀποστέλλουσιν αὐτῷ τὴν μαθητὰς αὐτῶν μὲν τῷ Ἡρῳδιδῶνι, λέγοντες· Διδάσκαλε, οἶδαμεν ὅτι κληθὴς εἶ, & τὴν ὁδὸν τὴν τοῦ θεοῦ ἐν ἀληθείᾳ διδάσκεις,

Ἐν μέλει σοι περὶ υἱοῦ. ἢ γὰρ βλέπεις εἰς πρόσωπον ἀνθρώπων.

17 Εἶπέ ἡν ὑμῖν, τί σοι δοκεῖ; ἔξεται δύναι πῆσιν Καίσαρι, ἢ ἢ;

18 Τὸς ὅς ἰατῆς ἦ ποτηρίαν αὐτῷ, ἔπει. Τί με πειράζετε ὑποκριταί;

19 Ἐπιδείξατέ μοι τὸ νόμισμα ἢ κήσιν. Οἱ δὲ προσέειπον αὐτῷ δυνάριον.

20 Καὶ λέγει αὐτοῖς. Τίτος ἢ εἰκὼν αὐτῆς ἔστιν ὑμῶν;

21 Λέγουσιν αὐτῷ. Καίσαρος. Τότε λέγει αὐτοῖς. Ἀπόδοτε ὅν τὰ Καίσαρος, Καίσαρι, ἔ τὰ δὲ Θεῷ, τῷ Θεῷ.

22 Καὶ ἀκούσαντες ἐθαύμασαν. Ἐ ἀφέντες αὐτὸν ἀπῆλθον.

23 Ἐν ὁκνήτῃ τῇ ἡμέρᾳ προσῆλθεν αὐτῷ σαδδουκαῖοι, οἱ λέγοντες μὴ εἶναι ἀνάγκη, ἔ ἐπαρώτησαν αὐτόν.

24 Λέγοντες. Διδάσκαλε, Μωσῆς εἶπεν. Ἐάν τις ἀποθάνῃ μὴ ἔχων τέκνον, ὑπογράμψουσιν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἢ γυναῖκα αὐτοῦ, ἔ ἀναστήσει σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.

25 Ἦσκι δὲ παρ' ἡμῶν ἐπὶ τῷ ἀδελφῷ. Ἐ ὁ πρῶτος, γαμήσας ἐτίλειψεν. Ἐ μὴ ἔχων σπέρμα, ἀφῆκε ἢ γυναῖκα αὐτοῦ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.

26 Οἱ μάλιστα ἔ ὁ δεύτερος, ἔ ὁ τρίτος, ἔως τῷ ἑπτῷ.

27 Ὑστερον δὲ πάντων ἀπέθανε ἔ ἡ γυνή.

28 Ἐν τῇ ἡν ἀναστάσει, τίτος τῷ ἐπὶ τῷ εἶναι γυνή; πάντες γὰρ ἔχον αὐτῇ.

29 Ἀπεκρίθεις δὲ ὁ ἰατῆς, εἶπεν αὐτοῖς. Πλανῶσθε, μὴ εἰδότες τὰς γραφάς, μαδὲ τὴν δύναμιν τοῦ Θεοῦ.

30 Ἐν γὰρ τῇ ἀναστάσει ὅτε γαμῶσιν, ὅτε ὁγκυμίζονται, ἀλλ' ὡς ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ ἐν ἡρανοῖς εἰσι.

31 Περὶ δὲ τῇ ἀναστάσει τῷ τεκρῶν ἢκ ἀνέγνωσε τὸ ἰσχυρὸν ὑμῖν ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, λεγόντος.

32 Ἐγὼ εἰμι ὁ Θεός Αβραάμ, ἔ ὁ Θεός Ἰσαὰκ, ἔ ὁ Θεός Ἰακώβ. ἢκ εἶναι ὁ Θεός, Θεός τεκρῶν, ἀλλὰ ζώντων.

33 Καὶ ἀκούσαντες οἱ ὄχλοι, ὤξεπλήροοντο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ.

34 Οἱ δὲ φαρισαῖοι, ἀκούσαντες ὅτι ἐφίμωσαν τὴν σαδδουκαίαν, συζητήσαν ἐπὶ τῷ αὐτῷ.

35 Καὶ ἐπαρώτησεν εἰς ὅσον αὐτῷ νομικὸς, πειράζων αὐτόν, ἔ λεγόν.

36 Διδάσκαλε, ποία ἐντολὴ μεγάλη ἐν τῷ νόμῳ;

37 Οἱ δὲ ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ. Ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ἐν ὅλῃ τῇ καρδίᾳ σου, ἔ ἐν ὅλῃ τῇ ψυχῇ σου, ἔ ἐν ὅλῃ τῇ διανοίᾳ σου.

38 Αὕτη ἐστὶ πρώτη ἔ μεγάλη ἐντολή.

39 Δεύτερον ἡ ὁμοία αὐτῆ· Ἀγαπήσαίς τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτὸν·

40 Ἐν ταύταις ταῖς δυσὶν ἐντολαῖς ὅλος ὁ νόμος ἔστι προφῆται κρέμνεται·

41 Συγκυμμένων ἡ τῆς Φαρισαίων, ἐπηρώτησεν αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς·

42 Λέγων· Τί ὑμῖν δοκεῖ περὶ τῆς Χρυσῆς; τίς υἱὸς ἐστὶ; λέγουσιν αὐτῷ, ἡ Δαβὶδ·

43 Λέγει αὐτοῖς· Πῶς ἂν Δαβὶδ ἐν πνεύματι Κύριον αὐτὸν καλεῖ; λέγουσιν·

44 Εἴπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθου ἐκ δεξιῶν μου, ἕως ἃν θῶ τὴν ἐχθρὸν σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου·

45 Εἰ ἂν Δαβὶδ καλεῖ αὐτὸν Κύριον, πῶς υἱὸς αὐτοῦ ἐστὶ;

46 Καὶ ἡδεῖς ἐδόνατο αὐτῷ ἀποκριθῆναι λόγον· οὐδέ τις ἐτόλμησεν τις ἀπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἐπαρωτησάαι αὐτὸν ἕκτι;

Κεφ. κγ'. 23.

1 **Τ**ότε ὁ Ἰησοῦς ἐλάλησε τοῖς ὄχλοις ἔτι τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ·

2 Λέγων· Ἐπὶ τῇ Μωσέως καθέδρᾳ ἐκάθισαν οἱ γραμματεῖς ἔτι Φαρισαῖοι·

3 Πάντα ἃν ὅσα ἂν εἰπῶσιν ὑμεῖς τηρεῖν, τηρεῖτε ἔτι ποιεῖτε· κατὰ δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν μὴ ποιεῖτε· λέγουσιν γὰρ, ἔτι ποιῶσι·

4 Δεσμόςιν γὰρ φορτίᾳ βαρεὰ ἔτι δυσβάστακτα, ἔτι ἀσπιδέουσιν ἐπὶ τὰς ὤμους τῶν ἀνθρώπων· τῷ δὲ δακτύλῳ αὐτῶν ἡ θάλασσα κινῆσθαι αὐτά·

5 Πάντα δὲ τὰ ἔργα αὐτῶν ποιῶσι πρὸς τὸ διαθῆναι πρὸς ἀνθρώποις· πλατύνουσι τὰ φυλακτήρια αὐτῶν, ἔτι μεγαλύνουσι τὰ κράσπεδα τῶν ἱματίων αὐτῶν·

6 φιλοῦσιν τε ἡ πρωτοκλισίαν ἐν τοῖς δείπνοις, ἔτι τὰς πρωτοκαθεδρίας ἐν ταῖς συναγωγαῖς,

7 καὶ τὰς ἀσπασμούς ἐν ταῖς αγοραῖς, ἔτι καλεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, ῥαββί, ῥαββί·

8 Ὑμεῖς δὲ μὴ κληθῆτε ῥαββί· εἰς γὰρ ἓστιν ὑμῶν ὁ καθηγητής, ὁ Χρυσός· πάντες δὲ ὑμεῖς, ἀδελφοί ἐστε·

9 καὶ πατέρα μὴ καλέσητε ὑμῶν ἐπὶ τῇ γῆς· εἰς γὰρ ἓστιν ὁ πατὴρ ὑμῶν, ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς·

10 Μηδὲ κληθῆτε καθηγηταί· εἰς γὰρ ὑμῶν ἓστιν ὁ καθηγητής ὁ Χρυσός·

11 Ὁ δὲ μείζων ὑμῶν, ἔσται ὑμῶν διάκονος·

12 Ὅστις δὲ ὑψώσει ἑαυτὸν, ταπεινωθήσεται· ἔτι ὁ ὀπίσθιος ταπεινώσει ἑαυτὸν, ὑψωθήσεται·

13 Οὐαὶ ἡ ὑμῖν γραμματεῖς ἔτι Φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι κληθεὶς τὴν βασιλείαν τῶν οὐρανῶν ἐμποροῦν τῆς

ἀδελφῶν· ὑμεῖς δὲ οὐκ εἰσέρχισθε, οὐδὲ τοὺς εἰσερχομένους ἀφίετε κατελθεῖν·

14 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς, & φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι κατεσθίετε τὰς εἰκίας τῶν ἁγίων, & περιβάλλετε μακρὰ προσδύχνηται· διὰ τοῦτο λήψετε πλεονότερον κρίμα·

15 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς & φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι παύετε τὴν θάλασσαν & τὴν ξηρὰν, ποιῆσαι ἵνα προσήλυτον· & ὅταν γένηται, πείρετε αὐτὸν υἱὸν γεέννης διπλοῦτερον ὑμῶν·

16 Οὐαὶ ὑμῖν ὀδῆγοὶ τυφλοί, οἳ λέγοντες· Ὅς ἂν ἐμὸς ἐν τῷ ναῶ, οὐδὲν ἐστίν· ὅς δ' ἂν ὁμῶς ἐν τῷ χρυσῷ ᾤνῃ, ὀφθαλμοί·

17 Μωροὶ & τυφλοὶ· τίς γὰρ μᾶλλον ἐστίν; ὁ χρυσός, ὃ ὁ ταῦς ὁ ἀγιάζων τὸν χρυσόν;

18 Καὶ· Ὅς ἐστὶ ὁμῶς ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, οὐδὲν ἐστίν· ὅς δ' ἂν ὁμῶς ἐν τῷ δώρῳ τῷ ἐπάνω αὐτοῦ, ὀφθαλμοί·

19 Μωροὶ & τυφλοὶ· τίς γὰρ μᾶλλον; τὸ δῶρον, ἢ τὸ θυσιαστήριον τὸ ἀγιάζον τὸ δῶρον;

20 Ὅ· ἢ ὁμῶς ἐν τῷ θυσιαστηρίῳ, ἐμνύει ἐν αὐτῷ & ἐν παντί τοῖς ἐπάνω αὐτοῦ·

21 Καὶ ὁ ὁμῶς ἐν τῷ ναῶ, ἐμνύει ἐν αὐτῷ & ἐν τῷ κατακλῆττι αὐτοῦ·

22 Καὶ ὁ ὁμῶς ἐν τῷ ἁγίῳ, ἐμνύει ἐν τῷ θρόνῳ τοῦ Θεοῦ & ἐν τῷ καθημένῳ ἐπάνω αὐτοῦ·

23 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς & φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι ἀποδεκατῆτε τὸ ἡδύστυμον & τὸ ἀγνόν & τὸ κύμμιον, & ἀφήκετε τὰ βαρύτερα τοῦ νόμου, τὰν κρίσιν & τὸν ἐλεον & τὴν πίσιν· ταῦτα ἴδε ποιῆσαι, καὶ κενεῖν μὴ ἀφίεναι·

24 Ὁδῆγοὶ τυφλοί, οἳ διυλίζοντες τὸν κύνωκα, & οἱ κύνες καταπίνοντες·

25 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς & φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι καθαρίζετε τὸ ἐξώθεν τοῦ ποτηρίου & τοῦ πλυντηρίου, ἔσωθεν δὲ γεμνῶσιν οἱ ἀρπαγῆς & ἀκρασίας·

26 Βαπτίζετε τυφλόν, καθαρῶς πρῶτον τὸ ἐντὸς τοῦ ποτηρίου & τοῦ πλυντηρίου, ἵνα γένηται & τὸ ἐκτὸς αὐτοῦ καθαρόν·

27 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς & φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι παιδομαίετε τάφοις κεκοσμημένοις, οἵτινες ἔξωθεν μὲν φαίνονται ἁγνοί, ἔσωθεν δὲ γεμνῶσιν ὅσους νεκρῶν & πόρος ἀκαθαρσίας·

28 Οὕτως & ὑμεῖς ἔξωθεν μὲν φαίνεσθε τοῖς ἀδελφοῖς δικαίοι, ἔσωθεν δὲ μεσοὶ ἐστὶ ὑποκρίσεις & ἁρμίες·

29 Οὐαὶ ὑμῖν γραμματεῖς & φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι οἰκοδομεῖτε τὰς τάφους τῶν προφητῶν, & κοσμεῖτε τὰς μνημεῖα τῶν δικαίων·

30 Καὶ λέγετε· Εἰ ἡμῖν ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν πατέρων

μεν ἡμῶν· ἢ κ' ἂν ἤμιν κρινώμεν αὐτῷ ἐν τῷ αἵματι
τῷ προφητῷ.

91 Ὡς μαρτυρεῖτε ἑαυτοῖς, ὅτι υἱοὶ ἐστέ τῷ φο-
βησάντων τῆς προφητίας.

92 Καὶ ὑμεῖς πληρώσατε τὸ μέτρον τῷ πατέρων
ὑμῶν.

93 Ὁφείε, θυτήματα ἐχιδνῶν, πῶς φύγατε ἀπὸ τῆ
κρίσεως τῆ γενέσεως;

94 Διὰ τοῦτο, ἰδοὺ, ἐγὼ ἀποστέλλω πρὸς ὑμᾶς προ-
φήτας, ἑ σοφούς, ἑ γραμματεῖς· ἑ ἔξ αὐτῶν ἀποκ-
τενεῖτε ἑ ταυρεῖσθε, ἑ ἔξ αὐτῶν μασιγώσετε ἐν
ταῖς συναγωγαῖς ὑμῶν, ἑ διώξετε ἀπὸ πόλεως εἰς
πόλιν.

95 Ὅπως ἔλθῃ ἐφ' ὑμᾶς πᾶν αἷμα δίκαιον, ἐκχυ-
νόμενον ἐπὶ τῇ γῆς ἀπὸ τοῦ αἵματος Ἀβελ τοῦ δικαίου,
ἕως τοῦ αἵματος Ζαχαρίου υἱοῦ Βαραχίου, ὃν ἐφοιούσα-
τε μεταξὺ τοῦ ναοῦ ἑ τοῦ θυσιαστηρίου.

96 Ἀλλ' ἢ λέγω ὑμῖν, ἥξει ταῦτα πάντα ἐπὶ τῆ γε-
νεῶν ταύτης.

97 Ἰερουσαλὴμ, Ἰερουσαλὴμ, ἡ ἀποκτείνουσα τοὺς προ-
φήτας, ἑ λιθοβολοῦσα τοὺς ἀπεσταλμένους πρὸς αὐτήν,
ποσάκις ἠθέλησα ἐπισυναγαγεῖν τὰ τέκνα σου, ὃν τρέ-
πον ἐπισυναγεῖν ὅπως τὰ νοστίδια ἑαυτῇ ὑπὸ τὰς πτερυ-
γας, ἑ εὖκ ἠθελήσατε;

98 Ἰδὲ, ἀφίσταται ὑμῖν ὁ κύκλος τοῦ αἵματος ἔρημος.

99 Λέγω γὰρ ὑμῖν· Οὐ μὴ με ἴδῃτε ἄπ' ὧντι, ἕως
ἂν εἴπητε· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι
Κυρίου.

Κεφ. κδ'. 24.

1 **Κ**ΑΙ ἔξελθὼν ὁ Ἰησοῦς ἐπερὸύετο ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ.
ἑ προσῆλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπιδιδῆσαι αὐ-
τῷ τὰς οἰκοδομὰς τοῦ ἱεροῦ.

2 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεν αὐτοῖς· Οὐ βλέπετε πάντα
ταῦτα; ἀλλ' ἢ λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀφεθῇ ὧδε λίθος ἐπὶ
λίθον, ὃς οὐ μὴ καταλυθῇσιν.

3 Καθήμεν δὲ αὐτῷ ἐπὶ τῷ ὄρει τῷ ἑλαιῶν, προσ-
ῆλθον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ κατ' ἰδίῳ, λέγοντες· Εἰπέ
ἡμῖν, πότε ταῦτα ἔσονται, ἑ τί τὸ σημεῖον τῆ σῆς τα-
ραχίας, ἑ τῆ συντελέσεως τοῦ αἰῶνος;

4 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, ἀπεν αὐτοῖς· Βλέπετε
μὴ τις ὑμᾶς πλανήσῃ.

5 Πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ἐπὶ τῷ ὀνόματι μου, λή-
ξετε, ἑγὼ εἰμι ὁ Χριστός· ἑ πολλοὺς πλανή-
σουσι.

6 Μελλήσετε δὲ ἀκούειν πολέμους, ἑ ἀκούας πολέ-
μων· ὁράτε μὴ θρῆνισθε· δὲ γὰρ πάντα γνέσθαι,
ἀλλ' οὕτω εἰς τὸ τέλος.

7 Ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνη ἐπὶ ἔθνη, ἑ βασιλείαι
ἐπὶ

ὁ βαπτίζων ὡς νεκρῶν ἠγέρθη, & διὰ τὸ τοῦ ἐνεργῆσαι αὐτὸν δυνάμει ὡς αὐτοῦ.

15 Ἄλλοι ἐλεγον· Ὁ π' Ἡλίας ἐστίν· ἄλλοι δὲ ἐλεγον· Ὁ π' προφήτης ἐστίν, ἢ ὡς εἴς τιν' προφητῶν.

16 Αὐτὸς δὲ ὁ Ἡρώδης, εἶπεν· Ὁ π' ὃν ἐγὼ ἀπεκεφάλισα Ἰωάννην, ὅτις ἐστίν, αὐτός ἠγέρθη ὡς νεκρῶν.

17 Αὐτὸς γὰρ ὁ Ἡρώδης, ἀποστείλας ὁράσασθαι τὸν Ἰωάννην, & ἐδότην αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ διὰ τὴν Ἡρώδιδαν τὴν γυναῖκα Φιλιπποῦ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὅτι αὐτὴν ἐγαμήρεν.

18 Ἐλεγε γὰρ ὁ Ἰωάννης πρὸς τὸν Ἡρώδη· Ὁ π' ἐκ ἐξ ἐμοῦ σοὶ ἔχειν τὴν γυναῖκα τὴν ἀδελφῆς σου.

19 Ἡ δὲ Ἡρώδις ἐνέχεν αὐτῷ, & ἠθέληεν αὐτὸν ἀποκτείνειν· & ἐκ ἡδύνατο.

20 Ὁ γὰρ Ἡρώδης ἐφοβήθη τὸν Ἰωάννην, καθὼς αὐτὸν ἄνδρα δίκαιον & ἅγιον· & συνετήρησεν αὐτόν· & πᾶσας αὐτῷ, πολλὰ ἐποίησεν, καὶ ἡδέως αὐτῷ ἔθηκε.

21 Καὶ γνωμένης ἡμέρας δικάσειν, ὅτε Ἡρώδης τοῖς ἡμετέροις αὐτοῦ δούλοις ἐποίησεν τοῖς μεγιστάταις αὐτοῦ, & τοῖς χιλιάρχοις & τοῖς πρώτοις τῆς Γαλιλαίας.

22 Καὶ ἐπελθόντος τῆς θυγατρὸς αὐτοῦ τῆς Ἡρώδιδος, & ὀρχησμένης, & ἀρεσάσης τοῦ Ἡρώδης & πάντων συνεσθαιμένων, εἶπεν ὁ βασιλεὺς πρὸς κορασίαν· Αἰτήσόν με ὅτι ἐὰν θέλῃς, & δώσω σοί.

23 Καὶ ἠρώρεν αὐτῇ· Ὅτι ὅταν με αἰτήσῃς, δώσω σοι, ὅτις ἐμίσθης τῷ βασιλεὺς μου.

24 Ἡ δὲ θέλησάντα, εἶπε τῇ μητρὶ αὐτοῦ· Τί αἰτήσῃμαι; Ἡ δὲ εἶπε· Τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

25 Καὶ ἐπελθόντα δούεως μετὰ σπυδῆς πρὸς τὸν βασιλέα, ᾤκισεν, λέγουσα· Θέλω ἵνα μοι δῷς ὅπως ἤθελς ἐπὶ πίνακι τῇ κεφαλῇ Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

26 Καὶ πελεύοντος ἡρώδους ὁ βασιλεὺς, διὰ τὴν ὄρκον & τὴν συνεσθαιμένην ἐκ ἠθέλησεν αὐτῇ ἀδελφῆσαι.

27 Καὶ δούεως ἀποστείλας ὁ βασιλεὺς σπυδαίονα, ἐπέταξεν ἐνεχθῆναι τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ.

28 Ὁ δὲ ἀπελθὼν ἀπεκεφάλισεν αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ· & ἔνεγκεν τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ἐπὶ πίνακι, & ἔδωκεν αὐτῇ πρὸς κορασίαν· & τὸ κοράσιον ἔδωκεν αὐτῇ τῇ μητρὶ αὐτοῦ.

29 Καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἦλθον & ἤραν τὸ πτῶμα αὐτοῦ, & ἔθηκαν αὐτὸ ἐν μίμῳ.

30 Καὶ συνάγονται οἱ ἀπόστολοι πρὸς τὸν Ἰησοῦν, & ἀπήγγελλαν αὐτῷ πάντα & ὅσα ἐποίησαν, & ὅσα εἶδαν ἔδειξαν.

31 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Δεῦτε ὑμεῖς αὐτοὶ κατ' ἰδίαν εἰς ἄρμον τόπον, & ἀναπαύσθε ὀλίγον· Ἡ δὲ γὰρ εἰς ἐρχόμενοι & εἰς ὑπάγοντες πολλοί· & οὐκ ἔστι φάραγξ ἀναπαύειν.

32 Καὶ ἀπῆλθεν εἰς ἐρημὸν τόπον πρὸ πλοῦ κατ' ἰδίαν.

33 Καὶ ἔδον αὐτῆς ὑπακούοντες οἱ ὄχλοι· ἔπει-
γυνταν αὐτὸν πολλοί· ἔπερ' ἀπὸ πασῶν τῶν πό-
λεων συνεδραμοὺν ἐκεῖ· ἔπροῆλθον αὐτὸς, ἔσυνῆλ-
θον πρὸς αὐτόν.

34 Καὶ ἰδὼν αὐτὸν ἔδον ὁ Ἰησοῦς πολὺν ὄχλον, ἔ-
ἐσπλαγχνίσθη ἐπ' αὐτοῖς, ὅτι ἦσαν ὡς πρόβατα
μὴ ἔχοντα ποιμένα· ἔῤῥεατο διδάσκειν αὐτοὺς πε-
ρὶ·

35 Καὶ ἦδη ὥρας πολλῆς ᾤνομένης, προσελθόντες
αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῇ, λέγουσιν· Ὅτι ἐρημός ἐστιν ὁ
τόπος, ἔῤῥη ὥρα πολλή·

36 Ἀπέλυσαν αὐτῆς, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τὰς κώκας
ἀγρῶν ἔκωμαν, ἀγωρεύωσιν ἐκιντοῖς ἄρτους· τί γὰρ
φάρμακον κὲ ἔχουσιν.

37 Ὁ δ' ἀποκριθεὶς ἔπεν αὐτοῖς· Δότε αὐτοῖς ὑ-
μεῖς φαγεῖν· Καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Ἀπελθόντες ἀγω-
ρεύωμεν Σιθερυσίων δλωρῶν ἄρτους, ἔδωμεν αὐτοῖς
φάγεσθαι·

38 Ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· Πόσους ἄρτους ἔχετε; ὑπά-
γετε ἔιδετε· Καὶ γινώσκετε, λέγουσι· Πέντε, ἔδύο
ἰχθύες.

39 Καὶ ἐπέταξεν αὐτοῖς ἀνακλῖναι πάντας συμπόσια
συναποσια ἐπὶ τῷ χορτῷ.

40 Καὶ ἀνέπεσον πρῶταί· πρῶταί, ἀνὰ ἑκατὸν ἔ-
κινε πεντήκοντα.

41 Καὶ λαβὼν τῆς πέντε ἄρτης ἔ τῆς δύο ἰχθύας, ὀψά-
βησας εἰς τὸν θρανόν, εὐλόγησε, ἔκατέκλασε τῆς
ἄρτης· ἔεδιδον πρὸς μαθηταῖς αὐτῷ ἵνα παρῃθῶσιν
αὐτοῖς· ἔ τῆς δύο ἰχθύας ἐμέρισε πᾶσι.

42 Καὶ ἔφαγον πάντες, ἔἐχορτάσθησαν.

43 Καὶ ἦσαν κλαυθμῶν δώδεκα κοφίνους πλήρεις, ἔ-
απὸ τῶν ἰχθύων.

44 Καὶ ἦσαν οἱ φαγόντες τῆς ἄρτης, ὡς πεντα-
κισχίλιοι ἄνδρες.

45 Καὶ εὐθέως ἠνάγκασε τῆς μαθητῶν αὐτῷ ἐμ-
βῆσαι εἰς τὸ πλοῖον, ἔπροῆλθον εἰς τὸ πέραν πρὸς Βη-
θσαιδάν, ἐκεῖ αὐτὸς ἀπολυσθὲν τὸν ὄχλον.

46 Καὶ ἀποταξάμενος αὐτοῖς, ἀπῆλθεν εἰς τὸ ὄρος
προσκύεσθαι.

47 Καὶ ἐψίχας ᾤνομένης ἦν τὸ πλοῖον ἐν μέσῳ τῆ
θαλάσσης, καὶ αὐτὸς μόνος ἐπὶ τῇ γῆ.

48 Καὶ ἔδον αὐτῆς βασανιστομένης ἐν τῷ ἰλαρίῳ·
(ἦν γὰρ ἀνεμὸς ἐναντίος αὐτοῖς)· ἔ πρὸς τετάρτῳ ἡ-
λικῶν τῇ νυκτὶ ἐρχεται πρὸς αὐτῆς πῶτα τῶν ἐπὶ τῇ
θαλάσσῃ· ἔ εὐθέως παρελθὼν αὐτῆς.

49 Οἱ δ' ἰδόντες αὐτὴν πῶτα τῶν ἐπὶ τῇ θα-
λάσσῃ, εὐδοξάμ φάντασμα εἶπαι, ἔἀπέκρουσαν.

50 (Πάντες γὰρ αὐτὸν ἔδον, ἔἐταράχθησαν,) καὶ
εὐφραίοντες

Ἰσπ. βασιλεύω· ἐῖσονται λόγοι, ἐποίησά μοι κατὰ τύπον.

8 Πάτερ ἡμ' ἡμῶν ἀρχὴν τῆς δόξης σου.

9 Τότε ἀφ' ἑαυτῶν σπῶσιν ὑμᾶς εἰς θλίψιν, ἡ ἀποκτείνουσιν ὑμᾶς, ἡ ἵστασθε μισέμφοι ὑπὸ πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, ὅτι τὸ ὄνομα μου.

10 Καὶ τότε σκαρδαλισθήσονται πολλοί· ἔσται ἀλλήλους παραδόσεις, ἔσται μισήσεις ἀλλήλους.

11 Καὶ πολλοὶ ψευδοπροφῆται ἐγερθήσονται, ἑ πλα-
γύσονται πολλὰς.

12 Καὶ ἡγ' τὸ πληθυνθῆναι τὴν αἰνομίαν, ψυχῆσται ὁ ἅνατὴ τῷ πολλῶν.

13 Οὗ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, ὅτος παθῆτε-
ται.

14 Καὶ κηρυχθήσεται τὸ πρὸς τὸ εὐαγγέλιον ἡ βασι-
λεία ἐν ὅλῃ τῇ οἰκουμένῃ, καὶ μαρτυρεῖται πᾶσι τοῖς
ἡσασιν· ὁ τότε ἔξει τὸ τέλος.

13 Οὐ τὰ μὲν ἔδωκε τὸ βδελύσκει· ἡ ἐρηκώσις, τὸ
ἐλθεῖν διὰ Δαμιῆλ τῆς προφήτης, ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ
(ἡ ἀναγνωσκὴν γυναικὸς)

16 Τότε οὐ σὺ τῇ Ἰσθμίᾳ φεγγίτωσθαι ἔπι τὰ ὄρη·

17. Οὐ γὰρ ἐν ὁμιλίᾳ, ἀλλ' ἐν καταβολῇ τῇ ἐν ὁμ
 ᾧ οἱ κίχες ἀντιπ.

18 Καὶ ὁ κύριος αὐτοῖς, λέγει ὑποτασσάμενοι ὁ ἀλλήλων κυρίως ὡς ὁ κύριος
τῆ ἐκκλησίας αὐτοῦ·

19 Οὐκ ἂν ταῖς ἀγγελίαις ἐχέταις ἐ ταῖς θηλο-
ύσαις ἐν ὁρίοις ταῖς ἡμέραις.

10 Προσέχεσθε δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ ὑμῶν
χαλιδυνοῦ, μηδὲ ἐν σαββάτῳ.

21 ἔσαι γὰρ τότε θλίψις μεγάλη, οἷά μ' γέγονεν ἡ
ἀρχὴ κόσμου ἕως τῆς νῦν καὶ οὐ μὴ γένηται.

22 Καὶ ἐὰν μὴ κολοβώθῃσιν αἱ ἡμέραι οὐκ εἶ-
ται, ὥς ἂν ἐσώθῃ πᾶσι σάρξ· διὰ δὲ τῆς σκληρῆς
κολοβώθουσιν αἱ ἡμέραι οὐκ εἶναι.

23 Τότε ἐὰν τις ὑμῶν εἴπῃ· Ἰδὼ, ὦδε ὁ Χριστὸς ἢ
ὦδε· μὴ πιστεύσῃτε.

24 Ἐγερθῆσονται γὰρ ψαυδόφρονες καὶ ψαυδοπροφήται,
καὶ δώσουσι σημεῖα μεγάλα καὶ τέρατα· ὥστε πλῆσθαι
αὐτοὺς τοὺς ἀληθεύς.

25 ἡ δὲ προείρηται ὕμνος·

26 Εἰ ἂν ὅτι ἐῖπασιν ὑμῖν· Ἰδοὺ, ὡς τῇ ἐρήμῃ ἐστὶ·
μὴ ὑψέλασθε· ἰδοὺ, ὡς ποτὶς ταπεινός, μὴ πιστεύσητε·

27 Ὡς περ γὰρ ἡ ἀστραὶ ἐξέρχεται ἀπὸ ἀνατολῶν, & φαίνεται ἕως δυσμῶν, ὅτως ἔσται & ἡ παρουσία τοῦ υἱοῦ ἀνθρώπου.

28. Οὐκ ἔστιν ἡ τοῦ πταμένου, ὅκει συνηχῶ ἡσυχασίας
ἐν ἡτοι.

καὶ ἐκείνῳ δὲ μὲν τὰς θανάσις τῶν ἡμερῶν ἐκείτων ὁ
ἄγιος σκοπισθήσεται, & ὁ σελήνη ὁ δῶκεν τὸ φέγγος
αὐτοῦ, & οἱ ἀστέρες πεισῶνται ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, & αἱ δύ-
νάμεις τῶν οὐρανῶν σκλυθήσονται.

30 Καὶ τότε φησὶται, τὸ σημεῖον τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῷ νεφελῇ. Ἐ τότε κρύβονται πάντα ἐν τοῦ καὶ τοῦ γῆς, Ἐ ὄψονται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐπὶ τοῦ νεφελῶν τοῦ ἁγίου, μετὰ δυνάμεως Ἐ ὁρῶν πολλῶν.

31 Καὶ ἀποστείλει τὴν ἀγγέλου αὐτοῦ μετὰ σάλπιγγος φωνῆς μεγάλης. Ὁ ὁπισυνάξῃσι τὴν σὺλλεκτὴν αὐτοῦ ὅκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων, ἀπ' ἀκρῶν ἡρῶν εἰς ἀκρῶν αὐτῶν.

32 Ἀπὸ δὲ τῆς συκῆς μεθίθιτε τὴν καρβαλὴν. ὅταν
ἤδη ὁ κλάδος αὐτῆς γένηται κεφαλὸς, ἐτάφύληα σκίφους,
γινώσκειτε ὅτι ἐγγύς τὸ θεῖος.

33 Οὕτω ὁ ὑμεῖς, ὅταν ἴδῃτε ταῦτα τεύχεα, γινώσκοντες ὅτι ἐγγὺς ἐστὶν ἡμέτις θύραις.

34. Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ἡ μὴ παρέλθῃ ἡ γενεὰ αὕτη, ἕως ἃν πάντα ταῦτα γενῇται.

35. Οὐκ ἄρ' ὁμοῦς ἐν ἡ γῇ παρελθόντες· οἱ δὲ λόγοι μὲν
μὴ παρέλθωσι.

36 Περὶ δὲ τῆς ἡμέρας σπάντος ἔτι ὥρας πέντε οἱ
 δευ, καὶ οἱ ἀγγελοὶ τοῦ ἐράδων, εἰ μὴ ὁ πατήρ με
 μόνος.

37 ὁ ἄνθρωπος ἐξ αὐτῆς ἡμέρας ἔτι, ὡς ἔστι ἐν τῇ πα-
ρουσίᾳ αὐτῆς ὡς ἐν τῇ παρουσίᾳ.

38 Ω² περὶ τοῦ ἁγίου ἐν ταῖς ἡμέραις ταῖς πρὸ τοῦ κα-
τακλυσμῆος τρώγοντες ἐ πίοντες, γαμβροὶ καὶ ἀγα-
μίζοντες, ἄλλα ἢς ἡμέρας εἰπαλέε Νῶε τις ἦ πι-
βυτὸν.

39 Καὶ ἡ ἐξουσία, ἕως ἄλθην ὁ κατακλυσμός, ἔ
ῥηεν ἀπάντης· ὅπως ἐσσι· ἡ παροῖα ἡ υἱὸς ἡ ἀν-
θρώπου.

40 Τότε δύο ἔσονται ἐν τῇ ἀγρῷ · ὁ εἰς παραλαβε-
θήσεται, ὁ δ' ἄλλος ἀφίεται.

41 Δύο ελπίδες: ὅτι τῷ μύλῳ· μία πρυγαμδατέ-
ται, ἡ μία ἀφίσταται.

42 Γρηγοράτε οὖν, ὅτι ἐκ αἰσάτε ποίκα ὄρα ὁ κύριος
ὡμῶν ἐρύεται.

43 Ἐκείνο δὲ γινώσκετε, ὅτι εἰ ἔδει ὁ οἰκοδομητής ποιεῖν φυλακὴν ἐπὶ πλείους ἐρχομένοι, ἐργαζόμενοι καὶ, ἐπεὶ οὐκ ἔνι ἡμέρᾳ διουνοῦναι τὴν οἰκίαν αὐτοῦ.

44 Διὰ τὴν ἑ μέλλας γίνεσθε ἑτοιμαί· ὅτι ἡ ὥρα ἡ
δοκίμη, ὁ υἱὸς τ' ἀμείνων ἐρχεται.

45 Τὰς ἀρεὰς ἐστὶν ὁ πρῶτος δῆλος ἐφρονιμος, ἐν κα-
τέστηεν ὁ κύριος αὐτῷ ὅτι τὸ θεραπεύειν αὐτῷ, καὶ διδά-
σκει αὐτοῖς τὴν τροφὴν ἐν καιρῷ.

46 Μακάριος ὁ ἄνθρωπος ὁκνεῖς, ὃν ἰδοὺ ὁ κύριος
ὠτῇ, ἀναστήσει ποιῶντες ἥτορ.

47 Δ' ἄρτι λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ πάντι τοῖς ὑπαρχουσιν
ἐν τῇ κατὰσῆσιν αὐτῶν.

48 Εἰ μὴ ὁ ἐπὶ τῆς ὁδοῦ τοῦ βασιλέως ἐκείνου ἐκ τῆς πόλεως ἐκείνης
ἐκείνη· Χρονίζει ὁ κύριός μου ἐλθεῖν·

49 Καὶ ἀρξῆται τὸ πνεῦν τοῦ συνδούλου ἐσθίειν

Θ πίνεν κτ' τῷ μεθύοντων.

50 Ἦσαν δὲ πύρις τ' δάμν σκείνη ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἔπρην
δεκά, ἔν ᾧ αὖτ' ἡ γυνώσκει.

51 Καὶ διχοτομήσῃ αὐτόν, ἔν τὸ μέρος αὐτῷ μετὰ
τῷ υποκριτῷ θῆσθαι· σκῆψαι δὲ κλῆμας ἔν ὁ
βρυγμός τῷ οὐδόντων.

Κεφ. κ' 25.

1 **Τ**ότε ἐμοιωθήσεται ἡ βασιλεία τῷ ἡρώων δέ-
κα παρθένους, αἵτινες λαβῶσαι τὰς λαμπάδας
αὐτῶν, ἤλθον εἰς ἀπάντησιν τῷ κυμφίῳ.

2 Πέντε δὲ ἦσαν ἔν αὐτῷ φρόνιμοι, ἔν αἱ πέντε
μωραί.

3 Αἵτινες μωραί, λαβῶσαι τὰς λαμπάδας ἐαυτῶν ἔκ
ἔλαβον μετ' ἐαυτῶν ἔλαιον.

4 Αἱ δὲ φρόνιμοι ἔλαβον ἔλαιον ἐν τοῖς ἀγγείοις αὐ-
τῶν μετὰ τῷ λαμπάδων αὐτῶν.

5 Χρονίζοντος δὲ τῷ κυμφίῳ, ἐνύσταζον πᾶσαι, ἔν
ἐκασθεύον.

6 Μήτις δὲ νυκτὸς κραυγὴ γέγονεν· Ἰδοὺ, ὁ κυμφίος
ἔρχεται, ἔξέρχεσθαι εἰς ἀπάντησιν αὐτῶν.

7 Τότε ἠγέρθησαν πᾶσαι αἱ παρθένοι σκῆψαι, ἔν
ἐκασμῶν τὰς λαμπάδας αὐτῶν.

8 Αἱ δὲ μωραὶ ταῖς φρονίμοις εἶπον· Δότε ἡμῖν σκ
τ' ἔλαιον ὑμῶν, ὅτι αἱ λαμπάδες ὑμῶν σβέννυνται.

9 Αἱ πεκρίθησαν δὲ αἱ φρόνιμοι, λέγουσαι· Μήποτε
ἡ ἀνάγκη ἡμῖν ἔν ὑμῖν· πορεύσθε δὲ μῆλλον πρὸς τὴν
πώληνται, ἔν ἀγοράσατε ἐαυταῖς.

10 Αἱ περχομένων δὲ αὐτῶν ἀγοράσαι, ἤλθεν ὁ κυμ-
φίος· ἔν αἱ ἑτοιμοὶ ἤλθον μετ' αὐτῶν εἰς τὴν γάμν, ἔν
ἐκλείσθη ἡ θύρα.

11 Τίτιρον δὲ ἔρχονται ἔν αἱ λοιπαὶ παρθένοι, λέγου-
σαι· Κυριε, κυριε, ἀνοιξὸν ἡμῖν.

12 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἔν
ἔν ὑμῶν.

13 Τίτιρονται ἔν, ὅτι ἔν οἶδατε τ' ἡμέρας ἔν τ' ὥρων
ἐν τ' ὁ οἶός τ' ἀνδράστη ἔρχεται.

14 Ὡςπερ γὰρ ἄνθρωπος ἀποδηῶν ἐκάλεσε τὰς
ἰδίας δούλκας, ἔν παρέδωκεν αὐτοῖς τὰ ὑπάρχοντα αὐ-
τοῦ.

15 Καὶ ὅ μὲν ἔδωκε πέντε τάλαντα, ὅ δὲ δύο, ὅ
δὲ ἓς· ἐκάστῳ κατὰ τ' ἰδίᾳ δύνάμιν· ἔν ἀπεδήμησεν
ἀφ' αὐτοῦ.

16 Πορεύθη δὲ ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν, ἐργά-
σασθαι ἐν αὐτοῖς, ἔν ἐποίησεν ἄλλα πέντε τάλαντα.

17 Ὡς αὐτοῦ ἔν ὁ τὰ δύο, ἐπέρδητε ἔν αὐτοῖς ἄλλα
δύο.

18 Ὁ δὲ τὸ ἓν λαβὼν, ἀπελθὼν ὠρυξεν ἐν τῇ γῇ,
ἔν ἀπέκρυψε τὸ ἀργύριον τ' κρυῖν αὐτῶν.

19 Μετὰ δὲ χρόνον πολὺν ἔρχεται ὁ κύριος τῶν
δούλων

δούλων ὁκνῶν, ἔσυναίρει μετ' αὐτῷ λόγον.

10 Καὶ προσελθὼν ὁ τὰ πέντε τάλαντα λαβὼν, προσ-
ῆνευκεν ἄλλα πέντε τάλαντα, λέγων· Κύριε, τέττε
τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε, ἄλλα πέντε τάλαντα
ἔκέρδασα ἐπ' αὐτοῖς.

11 Ἐφ' ἧς αὐτῷ ὁ κύριος αὐτῷ· Εὖ ὄντως ἀγαθὲ ἔ-
πιστε· ἐπὶ ὀλίγα ἦς πιστός, ἐπὶ πολλῶν σε καταστήσω·
ἔσσευθε εἰς τὴν χάριν τοῦ κυρίου σου.

12 Προσελθὼν δὲ ὁ τὰ δύο τάλαντα λαβὼν, εἶπε·
Κύριε, δύο τάλαντά μοι παρέδωκας· ἴδε, ἄλλα δύο
τάλαντα ἔκέρδασα ἐπ' αὐτοῖς.

13 Ἐφ' ἧς αὐτῷ ὁ κύριος αὐτῷ· Εὖ ὄντως ἀγαθὲ ἔ-
πιστε· ἐπὶ ὀλίγα ἦς πιστός, ἐπὶ πολλῶν σε καταστήσω·
ἔσσευθε εἰς τὴν χάριν τοῦ κυρίου σου.

14 Προσελθὼν δὲ ὁ τὸ ἐν τάλαντον εἰληψὼς εἶπε·
Κύριε, ἔγνω σε ὅτι σκληρὸς εἶ ἀνθρώπος, θερί-
ζων ὅτις ἢκ' ἐσπείρας, ἔσυναίρων ὅθεν ἢ διεσκόρ-
πισας.

15 Καὶ φοβηθεὶς, ἀπελθὼν ἐκρύψα τὸ τάλαντον σου
ἐν τῇ γῇ· ἴδε, ἔχεις τὸ σόν.

16 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ κύριος αὐτῷ, εἶπεν αὐτῷ· Ποιη-
ρὲ ὄντως ἔκτισαί, ἦδεις ὅτι θερίζω ὅτις ἢκ' ἐσπείρα,
ἔσυναίρει ὅθεν ἢ διεσκόρπισα.

17 Ἐδοὶ οὖν σε βαλὼν τὸ ἀργύριόν μου πρὸς τη-
μιζίταις· ἔλθων ἐγὼ ἐπομισάμενός σου τὸ ἐμὸν σύν-
τοκόν.

18 Ἄρατε ἢν ἀπ' αὐτοῦ τὸ τάλαντον, ἔδοτε τῷ ἔχον-
τι τὰ δέκα τάλαντα.

19 (Τῷ γὰρ ἔχοντι πλεονέεσθαι, ἔσπεριάζου-
σεται· ἀπὸ δὲ τῷ μὴ ἔχοντι, ἔσθαι, ἀρδύσεται
ἀπ' αὐτοῦ.)

30 Καὶ τὸν ἀχρεῖον δούλον ἐκβάλλετε εἰς τὸ σκότος
τῆς ἑσπέρας· ὅτι ἐστὶ ὁ κλαυθμὸς ὁ βρυγμὸς τῆς
οὐδύτης.

31 Οὕτως δὲ ἔλθῃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ δόξῃ
αὐτοῦ, ἔσ πάντες οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ, τότε
καθίστα ἐπὶ θρόνον δόξης αὐτοῦ.

32 Καὶ συναχθήσονται ἐμπροσθεν αὐτοῦ πάντα τὰ
ἔθνη· ἔσ ἀφορᾷ αὐτοῦς ἀπ' ἀλλήλων, ὥσπερ ὁ ποιμὴν
ἀφορίζει τὰ πρόβατα ἀπὸ τῶν ἐρίφων.

33 Καὶ ἔσται, τὰ μὲν πρόβατα ἔσ δεξιῶν αὐτοῦ,
τὰ δὲ ἐρίφια ἔσ ἀριστερῶν.

34 Τότε ἐρεῖ ὁ βασιλεὺς τοῖς ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ· Δι-
τε οἱ ἀγαγεμένοι τῇ πατρὶς μου, κληρονομήσατε τὴν
ἐτοιμασμένην ὑμῖν βασιλείαν ἀπὸ καταβολῆς κόσμου.

35 Ἐπεὶ οὖν ἔσ, ἔδοικατέ μοι φυγεῖν· ἔδωκα,
ἔσ τοπατε με· ξένο ἦμιν, ἔσ συγκατατε με.

36 Γνωστὸς, καὶ ἀφελήσεται με· ἔσ θύνησθαι, ἔ
ἔσκέψασθαι με· ἐν φυλακῇ ἦμιν, ἔ ἔλθεται
πρὸς με.

37 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτοῖς εἰς δίκαιον, λέγον-
τες·

τες· Κύριε, πότε σε εἶδωμι πινόντα, & ἐθρέψαντα; ἢ διψόντα, & ἐποπίσσαντα;

38 Πότε δέ σε εἶδωμι ξένον, & συνηγάγουμι; ἢ γυμνόν, & περιβαλόντα;

39 Πότε δέ σε εἶδωμι ἀσθενῆ, ἢ ἐν φυλακῇ, & ἤλθωμι πρὸς σε;

40 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς ἐρεῖ αὐτοῖς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐφ' ὅσον ἐποίησατε ἐνὶ τούτων τῷ ἀδελφῷ μου τῷ ἐλαχίστῳ, ἐμοὶ ἐποίησατε.

41 Τότε ἐρεῖ & τοῖς πρὸς αὐτούς· Πορεύεσθε ἀπ' ἐμὲ οἱ κατηραμένοι εἰς τὸ πῦρ τὸ αἰώνιον, τὸ ἡτοιμασμένον τῷ διαβόλῳ & τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ.

42 Ἐπεὶ οὖν οὕτως, & ἡ ἐδόκησέν μοι φανερὸν· ἐδίψησα, & ἡ ἐποπίσαστέ με.

43 Ἐνός ἡμῶν, & ἡ συνηγάγετέ με· γυμνός, & ἡ περιβάλετέ με· ἀσθενὴς & ἐν φυλακῇ, & ἡ ἐπεσκέψασθέ με.

44 Τότε ἀποκριθήσονται αὐτῷ & αὐτοὶ, λέγοντες· Κύριε, πότε σε εἶδωμι πινόντα, ἢ διψόντα, ἢ ξένον, ἢ γυμνόν, ἢ ἀσθενῆ, ἢ ἐν φυλακῇ, & ἡ διηκονήσαμεν σοι;

45 Τότε ἀποκριθήσεται αὐτοῖς, λέγων· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐφ' ὅσον οὐκ ἐποίησατε ἐνὶ τούτοις τῷ ἐλαχίστῳ, οὐδὲ ἐμοὶ ἐποίησατε.

46 Καὶ ἀπελεύσονται οὗτοι εἰς κόλασιν αἰῶνας· οἱ δὲ δίκαιοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.

Κεφ. κς'. 26.

1 **Κ**Αὶ ἐγένετο ὅτε ἐτέλεισεν ὁ Ἰησοῦς πάντας τὰς λόγους τούτους, εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ.

2 Οἶδατε ὅτι μετ' αὐτῶν δύο ἡμέρας τὸ πάσχα γίγνεται, & ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παραδίδοται εἰς τὸ θάνατον.

3 Τότε συνηχθήσαν οἱ Ἀρχιερεῖς & οἱ Γραμματεῖς & οἱ Πρεσβύτεροι τοῦ λαοῦ εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ἀρχιερέως τοῦ λεγομένου Καϊάφα.

4 Καὶ συμβουλευσάμενοι ἔνεον τῷ Ἰησοῦ κρατήτως θανάτου, & ἀποκτείνωσιν.

5 Ἐλέγον οὖν. Μὴ ἐν τῇ ἑορτῇ, ἵνα μὴ θόρυβος γένηται ἐν τῷ λαῷ.

6 Τῇ δὲ ἑορτῇ ὀνομαζομένη ἐν Βηθάνιᾳ. ὅτι οἱ κίβη Σίμωνος τοῦ λεγομένου.

7 Προσῆλθεν αὐτῷ γυνὴ ἀλάβαστρον μύρον ἔχουσα βαρυμύρον, & καταέχευεν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ἀνακειμένη.

8 Ἰδόντες οὖν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἠγανάκτησαν, λέγοντες· Εἰς τί ἡ ἀνάστασις αὕτη;

9 Ἡ δὲ οὖν οὕτως τοῦτο τὸ μύρον προεβλήθη πολλοῦ, & δοθήναι πτωχοῖς.

10 Γυνὴ δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Τί κόπως παρέχετε τῇ γυναικὶ; ἔργον γὰρ καλὸν ἐργάσατο εἰς ἐμὲ.

11 Πάρτετε ὃ τοὺς πτωχοὺς ἔχετε μεθ' ἑαυτῶν· ἡμεῖς ὅτι οὐ πλούτε ἔχετε.

12 Βαλόνσα ὃ αὐτὴ τὸ μύρον τοῦτο εἰς τὸ σῶματός μου, πρὸς τὸ στυφίασθαι με ἐποίησεν.

13 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ὅταν κηρυχθῇ τὸ εὐαγγέλιον ἐν ὅλῳ τῷ κόσμῳ, ἀκηθθήσεται ἔτι ἐπὶ τὴν σεν αὐτῇ, εἰς μνημόσυνον αὐτῆς.

14 Τότε πορεύσῃς εἰς τὴν δώδεκα, ὃ λεγόμενος Ἰούδας Ἰσκαριώτης πρὸς τὸν Ἀρχιερεῖς,

15 Εἶπε· Τί θέλετέ μοι δοῦναι, καὶ γὰρ ὑμῖν παραδώσω αὐτόν; Οἱ δὲ ἔκριναν αὐτῷ τετρακόστα ἀργύρια.

16 Καὶ ἀπὸ τότε ἐκτετετεύχετο ἵνα σκοτὸν παραδῇ.

17 Τῇ δὲ πρώτῃ τῇ αἰχμῶν προσήλθε οἱ μαθηταὶ τῷ Ἰησοῦ, λέγοντες αὐτῷ· Ποῦ θέλεις ἐτοιμάσθωμεν σοι φάγειν τὸ πάσχα;

18 Οὗ δὲ εἶπεν· Ὑπάγετε εἰς τὴν πόλιν πρὸς τὸν δούλον, ὃ εἵπατε αὐτῷ· Οὗ διδασκαλοὶ λέγει· Οὗ κειρὸς μου ἐγγύς ἐστίν, πρὸς σε ποιῶ τὸ πάσχα μετὰ τῷ μαθητῇ μου.

19 Καὶ ἐποίησάν οἱ μαθηταὶ ὡς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· ἔτοιμάσαντο τὸ πάσχα.

20 Οὗ δὲ ἔειπεν ὁ Ἰησοῦς· ἔτι καὶ μετὰ τῇ δώδεκα.

21 Καὶ ἐλθούτων αὐτῶν εἶπεν· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἡμεῖς ἐξ ὧν ἐμετὰ παραδώσει με.

22 Καὶ ἀποβύσαντο σφόδρα, ἄρξαντο λέγειν αὐτῷ ἕκαστος αὐτῷ· Μητι ἐγὼ εἰμι, Κύριε;

23 Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν· Οὐδεὶς ὁμοιωθεὶς μετ' ἐμοῦ ἐστὶν τῷ πνεύματι καὶ τῇ χάριτι, ἀλλ' οὗτος με παραδώσει.

24 Οὗ μὲν υἱὸς τῷ ἀνθρώπῳ ὑπάγει, καθὼς γέγραπται περὶ αὐτοῦ· οὐκ ἐστὶν τῷ ἀνθρώπῳ ἐκείνῳ, δι' οὗ δὲ υἱὸς τῷ ἀνθρώπῳ παραδίδοται· καὶ ὅτι ἔστι αὐτῷ, εἰ οὐκ ἐρυνάσθῃ ὁ ἀνθρώπος οὗτος.

25 Ἀποκριθεὶς δὲ Ἰούδας ὃ παραδίδως αὐτόν, εἶπε· Μητι ἐγὼ εἰμι, κύριε; λέγει αὐτῷ· Νῦν εἶπες.

26 Ἐλθούτων δὲ αὐτῶν, λαβὼν ὁ Ἰησοῦς τὸ ἄρτον, ὃ εὐλογῆσαι, ἔκλασε, ἔδωκε τοῖς μαθηταῖς, ἔπειτα λαβὼν, φάγετε· τοῦτο ἐστὶν τὸ σῶμα μου.

27 Καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον, ὃ εὐχαριστήσαι, ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων· Πίνετε ἡμεῖς αὐτὸ πάντες.

28 Τοῦτο γάρ ἐστι τὸ αἷμά μου, τὸ τὴν καινῇ διαθήκῃ, τὸ περὶ πολλοῦ ἐκχυτομένου εἰς ἀφεσιν ἁμαρτιῶν.

29 Λέγω δὲ ὑμῖν, ὅτι οὐ μὴ πίνω ἀπ' ἄρα ὅτι τοῦτου τῷ ἡγιασμένῳ καὶ ἀμπελου, εἰς τὴν ἡμέραν ὁμιλῶν, ὅταν αὐτὸ πίνω μεθ' ὑμῶν καὶ τὸν ἐν τῇ βασιλείᾳ τῷ πατρὸς μου.

30 Καὶ ὑμνήσαντες, ἔκλινον εἰς τὸ ὄρος τῷ ἐλαιῶν.

31 Τότε λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πάρτετε ὑμῶς σκληροδουλοθήσεσθε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ· γέγραπται γὰρ· Πατάξω καὶ ποιμήνα, ἔτι δὲ ἀποκορπισθήσεται τὸ πρόβατον καὶ ποιμῆνι.

32 Μετὰ δὲ τὸ ἐγερθῆναι με, προῆλθον ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

33 Ἀπεκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπεν αὐτῷ· Εἰ & πᾶν-
τες ἐκλυδαλισθήσονται ἐν σοί, ἐγὼ οὐδέποτε ἐκλυδα-
λισθήσομαι.

34 Εἶφη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν λέγω σοί, ὅτι ἐν ταύ-
τῃ τῇ νυκτὶ, πρὶν ἀλέκτορα φωνῆσαι, τρίς ἀπαρτή-
σῃ με.

35 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Καὶ δὴ με σὺν σοί ἀπο-
θάνειν, ὃ μὴ σε ἀπαρτήσομαι· Ὁμοίως & πάντες οἱ
μαθηταὶ εἶπον.

36 Τότε ἔρχεται μετ' αὐτῶν ὁ Ἰησοῦς εἰς χωρίον λε-
γόμενον Γεθσημανῆ· & λέγει τοῖς μαθηταῖς· Καθί-
σατε αὐτῷ, ἕως ἢ ἀπελθεῖν προσέχωμαι ὅκει.

37 Καὶ πρὸς λαβὼν τὸν Πέτρον, & τῆς δύο υἱῶν Ζε-
βεδαίου, ἤρξατο λυπεῖσθαι & ἀδυνατεῖν.

38 Τότε λέγει αὐτοῖς· Περιλυτός ἐσιν ἡ ψυχὴ μου
ἕως θανάτου· μὴνυτε ὡς, & γρηγορεῖτε μετ' ἐμῆ.

39 Καὶ προελθὼν μικρὸν, ἐπεὶ ἐπὶ πόσῳτον αὐ-
τῷ, προσεχόμενος, & λέγων· Πάτερ μου, εἰ δυνατόν
ἐστίν, παρελθέτω ἅπ' ἐμῆ τὸ ποτήριον τούτο· πλὴν ὡς
ὃς ἐγὼ θέλω, ἀλλ' ὡς σύ.

40 Καὶ ἔρχεται πρὸς τῆς μαθητῶν, & ὁρίσκει αὐ-
τῶν καθύδοντας, & λέγει τῷ Πέτρῳ· Οὕτως ἢ ἰχθυ-
εῖσθε μίαν ὥραν γρηγορεῖσθαι μετ' ἐμῆ;

41 Γρηγορεῖτε & προσεύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσέλθῃτε εἰς
πειρασμόν· τὸ μὲν πνεῦμα πρόθυμον, ὃ δὲ σὰρξ
ἀσθενής.

42 Πάλιν ἵνα δοῦτέον ἀπελθὼν προσήύξατο, λέγων·
Πάτερ μου, εἰ ἢ δύναται τί το ποτήριον τοῦτο
παρελθέτω ἅπ' ἐμῆ, εἰ μὴ αὐτὸ τίς, γινεθήτω τὸ θέ-
λημα σου.

43 Καὶ ἐλθεῖν ὁρίσκει αὐτῶν πάλιν καθύδοντας·
ἔσθω δὲ αὐτῷ οἱ ὀφθαλμοὶ διεσπασμένοι.

44 Καὶ ὡφείς αὐτῆς, ἀπελθὼν πάλιν· προσήύξατο ὡς
πρὶν, τὸν αὐτὸν λόγον εἰπὼν.

45 Τότε ἔρχεται πρὸς τῆς μαθητῶν αὐτῷ, & λέγει
αὐτοῖς· Καθιδέτε τὸ λοιπόν, & ἀμπαύεσθε· ἰδὼ,
ἤγγικεν ἡ ὥρα, & ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παρσίδονται εἰς
χαῖρας ἀμαρτανῶν.

46 Εὐαίρεσθε, ἄγωμεν· ἰδὼ, ἤγγικεν ὁ παραδι-
δοῦς με.

47 Καὶ ἔτι αὐτῷ λαλῆντος, ἰδὼ, Ἰούδας εἷς τῶν δώ-
δεκα ἦλθε, & μετ' αὐτοῦ ὄχλος πολλὸς μετ' ὀφθαλ-
μῶν & θυλῶν, ἀπὸ τῶν Ἀρχιερέων & Πρεσβυτέρων
τοῦ λαοῦ.

48 Οἱ δὲ πρὸς διδόντες αὐτὸν, ἔδωκεν αὐτοῖς σημεῖον,
λέγων· Ὅτι ἂν φιλήσω, αὐτός ἐστι· κρατῆσατε
αὐτόν.

49 Καὶ ὡς εἶπεν προσελθὼν, τῷ Ἰησοῦ, ἔπε· Κατὶ
ἐμῇ. Καὶ κατεφίλησεν αὐτόν.

50 Ο ὃς Ἰησοῦς ἔπεν αὐτοῖς· Ἐταῖρε, ἐφ' ᾧ παρῶν ἔστι·
Τότε προσελθόντες ἐτεβλάν τὰς χεῖρας ἐπὶ τὸν Ἰη-
σοῦν, ὃς ἐκράτησεν αὐτοὺς·

51 Καὶ ἰδὼν, εἰς τῶν μὲν Ἰησοῦ, ἐκταίνας τὴν χεῖρα,
ἐκείσπευτε τὴν μάχαιράν αὐτοῦ· καὶ πατάξας τὸν δούλον τὸν
Ἀρχιερεῖς, ἀφείλεν αὐτὴν τὸ ἔτιον·

52 Τότε λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀποστείψον ὁμοῦ τὴν μά-
χαιράν με τὸν τόπον αὐτὸν· πάντες γὰρ οἱ λαβόντες μά-
χαιράν, ἐν μάχαιρᾳ ἀπολύνται·

53 Ἡ δὲ δοκεῖς ὅτι ἡ δύναμις ἔστι πειρασθεῖσαι τὸν
πατέρα μου, καὶ πειρασθήσεται μοι πλὴν οὗ· ὁ δαὲν ἐκ ἀληθεί-
ας ἀγγέλλων·

54 Πῶς οὖν πληρωθῶσιν αἱ γραφαί, ὅτι ἄνθρωπος ἐν γυναι-
κὶ ἔσται·

55 Ἐν ὁμοίᾳ τῇ ᾧ ἔρε ἔπεν ὁ Ἰησοῦς τοῖς ὄχλοις· Ὡς
ἐπὶ λησῶν ὑψήθητε μὲν μαχαιρῶν, ὃς ἔστω συλλαβὴν
με· καὶ ἡμερῶν παρὸς ὑμᾶς ἐκκαθεζόμενος διδάσκων ἐν
τῷ ἱερῷ, ὃς καὶ ἐκράτησάτε με·

56 Τῶτα δὲ ὅλον γέγονεν, ἵνα πληρωθῶσιν αἱ γρα-
φαὶ πᾶν προφητῶν· Τότε οἱ μαθηταὶ πάντες, ἀφέν-
τες αὐτόν, ἐφυγον·

57 Οἱ δὲ, κρατήσαντες τὸν Ἰησοῦν, ἀπήγαγον πρὸς
Καϊάφην τὸν Ἀρχιερεῖς, ὅπου οἱ Γραμματεῖς καὶ οἱ
Πρεσβύτεροι συνήχθησαν·

58 Ο ὃς Πέτρος ἠκολούθει αὐτοῖς ἀπὸ μακρόθεν, ἵνα
καὶ αὐτὸς τὸν Ἀρχιερεῖς· ὃς ἠσπιδίων ἴστω, ἐκείνητος μὲν
τῶν ὑποκριτῶν, ἰδὼν τὸ τέλος·

59 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Πρεσβύτεροι ἐπὶ τὸ συνέ-
δριον ἔλθον ἐξήτην ψευδομαρτυρεῖν κατὰ τὸν Ἰησοῦν, ὅπως
αὐτὸν θάνατον δώσωσιν·

60 Καὶ ἔχοντες· ὃ πολλοὶ ψευδομαρτύρων προσελ-
θόντων, οὐχ ὅσον· ὕστερον δὲ προσελθόντες δύο ψευ-
δομαρτυρεῖς·

61 Εἶπον· Οὗτος ἔφη· Δύναμις καταλῦσαι τὸν ναὸν
τὸν Θεόν, καὶ διὰ τριῶν ἡμερῶν οἰκοδομηθῆναι αὐτόν·

62 Καὶ ἀπατάς οἱ Ἀρχιερεῖς, ἔπεν αὐτοῖς· Οὐδὲν ἀ-
παρεῖναι· τί ἔποι' σὺ καταμαρτυροῦσιν;

63 Ο ὃς Ἰησοῦς εἰσώπη· Καὶ ἀπακριθεὶς ὁ Ἀρχιε-
ρεὺς, ἔπεν αὐτοῖς· Ἐξορκίζω σε κατὰ τὸ Θεοῦ καὶ ζῶν-
τος, ἵνα ἀμὲν εἴπῃς, εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστός, ὁ υἱὸς
τοῦ Θεοῦ·

64 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, Σὺ εἶπας· πλὴν λέγω ὑ-
μῖν, ὅτι ἄρτι ὁψομαι τὸν ναὸν τοῦ Θεοῦ καὶ ἀνθρῶπι-
νον ἐκ δεξιῶν καὶ δυνάμει, καὶ ἐρχόμενον ἐπὶ τῶν νεφέ-
λων καὶ οὐρανοῦ·

65 Τότε ὁ Ἀρχιερεὺς διέρριξε τὰ ῥημάτια αὐτοῦ, λέ-
γων· Ὅτι ἐβλασφήμησε· τί ἐπὶ χρίστος ἐχόμεν μαρ-
τύρων; Ἴδε, νῦν ἀκούσατε τὴν βλασφημίαν αὐτοῦ·

66 Τί ὑμῖν δοκεῖ; Οἱ δὲ ἀποκριθέντες, εἶπον· Ἐ-
νοχος θάνατον εἰσὶ·

67 Τότε ἐπέτυχον εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, ἡ ὁσπία
 φασὶν αὐτὸν· οἱ δὲ ἐρῶσι αὐτὸν.

68 Λέγοντες· Προφῆτῶντος ἡμῖν Χριστὸς τίς ἐστὶν ὁ
 παῖς σου.

69 Οἱ δὲ Πέτρος ἔξω ἐκάθιστο ἐν τῇ αὐλῇ· ἡ προσ-
 ῆλθεν αὐτῷ μία πωδίσκη, λέγουσα· Καὶ σὺ ἔσθαι
 μετ' Ἰησοῦ τοῦ Γαλιλαίου.

70 Οἱ δὲ ἠρώσαστο ἑμπροσθεν πάντων, λέγουσιν· Οὐκ
 εἶδα τί λέγουσιν.

71 Ἐξελθόντα δὲ αὐτὸς εἰς τὴν πυλῶνα, ᾗ δὲν ἀπὸ ἀλ-
 λη· ἡ λέγει πρὸς ὁκλή. Καὶ ἔτσι ἦν μετ' Ἰησοῦ τοῦ Να-
 ζαρεθαίου.

72 Καὶ πάλιν ἠρώσαστο μετ' ἄλλων· Οἱ δὲ εἰς εἶδα τὸ
 ἀνθρώπου.

73 Μετὰ μικρὸν δὲ προσελθόντες αἱ ἱερεῖς, ἔπον-
 τῷ Πέτρῳ· Ἀληθὲς ἔσθαι αὐτῷ ἡ· ἡ γὰρ ἡ λαλῶ
 ἐν ἁλλῶν σε ποιεῖ.

74 Τότε ἠρώσαστο κατακαθιστάμενος, ἡ ὁμνῶν· Οἱ
 δὲ εἰς εἶδα τὸ ἀνθρώπου. Καὶ ἡθὺς ἀλεκτωρ ἐφώνησε.

75 Καὶ ἐμνήσθη ὁ Πέτρος τὸ ῥήματος τοῦ Ἰησοῦ, αἰρη-
 κότες αὐτῷ, ὅτι τρεῖς ἀλεκτορὶ φωνῆσαι, τοῖς ἀπαρη-
 σῆ με. Καὶ ἔχελθὼν ἔξω ἔκλαυσε πικρῶς.

Κεφ. κζ'. 27.

1 Πρώτως δὲ ἡγουμένης, συμβούλιον ἔλαβον πάν-
 τες οἱ Ἀρχιερεῖς ἡ οἱ Πρεσβύτεροι τὸ λαὸν
 κατὰ τὸ Ἰησοῦ, ὥστε θάνατον αὐτοῦ.

2 Καὶ δόσαντες αὐτὸν, ἀπέκτανον, ἡ παρέδωκαν αὐτὸν
 Πορτίῳ Πιλάτῳ τῷ ἡγεμένῳ.

3 Τότε ἰδὼν Ἰούδας ὁ παραδίδας αὐτὸν, ὅτι κατεκρίθη,
 μετῴκησεν ἀπέστρεψε πρὸς τριακοντα ἀργύρια πρὸς Ἀρ-
 χιερεῖς ἡ τοῖς Πρεσβυτέροις.

4 Λέγων· Ἠμέμω, παραδὸν αἷμα ἀθώου· Οἱ δὲ
 αἶψα· Τί πρὸς ἡμῶν; σὺ εἶπες.

5 Καὶ ῥέψας τὰ ἀργύρια ἐν τῷ ναῷ, ἀνεχώρησε· ἡ
 ἀπελθὼν, ἀπήγγαστο.

6 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς λαβόντες τὰ ἀργύρια, ἔπον· Οὐκ
 ἔξοσι βαλεῖν αὐτὰ εἰς τὴν κορβανῶν· ἐπεὶ τμήν αἵμα-
 τὸς ἐστὶν.

7 Συμβούλιον δὲ λαβόντες, ἡγόρασον τὴν αὐτῶν τῶν
 ἀγρῶν τὴν κεραμέως, εἰς ταφὴν τοῖς ξένοις.

8 Διὸ ἐκλήθη ὁ ἀγρὸς οὗτος, ἀγρὸς αἵματος,
 ἡ ἡ σήμερον.

9 (Τότε ἐπληρώθη τὸ ῥήμα διὰ Ἰερεμίην τὸν προφῆ-
 ταν, λέγοντος· Καὶ ἔλαβον τὰ τριακοντα ἀργύρια,
 τὴν τμήν τὴν τεπημαίνην, ὅτι ἐπημύσαστο ἀπὸ τοῦ Ἰου-
 δαίου.)

10 Καὶ ἔδωκαν αὐτὰ εἰς τὴν ἀγρὸν τὴν κεραμέως, κα-
 θὼς συνέταξέ μοι Κύριος.)

11 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἐπὶ ἑμπροσθεν τὸν ἡγεμόνα ἡ ἐπρω-
 τῆσιν

ταῖς αὐτῇ ὁ ἡγεμὼν λέγων· Σὺ γὰρ ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰουδαίας; Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἔφη αὐτῷ· Σὺ λέγεις.

12 Καὶ οὐκ οὐκ κατηγορεῖσθαι αὐτὸν ὑπὸ τοῦ Ἀρχιερέως καὶ τοῦ Πρεσβυτέρου, ἔθεν ἀπεκρίνατο.

13 Τότε λέγει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Οὐκ ἀκούεις πόσα σοι καταμαρτυροῦσι.

14 Καὶ οὐκ ἀπεκρίθη αὐτῷ πρὸς οὐδὲ ἓν ῥῆμα· ὥστε θαυμάζει τὸ ἄνεκτον αὐτοῦ.

15 Κατὰ δὲ ἐσπέρην ἐκείνη ὁ ἡγεμὼν ἀπελυμήνισεν τῷ ὄχλῳ δέσμιον, ὃν ᾔθελαν.

16 Εἶχον δὲ τότε δέσμιον ἐπίσημον λεγόμενον Βαραββᾶν.

17 Συνηγμένοι οὖν αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τίνα θέλετε ἀπολύσω ὑμῖν; Βαραββᾶν, ἢ Ἰησοῦν τὸν λεγόμενον Χριστόν;

18 Ἡ δὲ πλὴν ἀπὸ φθόγου παρέδωκεν αὐτόν.

19 Καθήμεν δὲ αὐτῷ ἐπὶ τῷ βήματος, ἀπέστειλε πρὸς αὐτὴν ἡ γυνὴ αὐτοῦ, λέγοντα· Μηδὲν σοι ἐν τῷ δικασίῳ ἐκείνῳ· πολλὰ γὰρ παίδων σήμερον κατ' οὐρανὸν δεῖ αὐτόν.

20 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Πρεσβύτεροι ἐπικύμασαν τοὺς ὄχλους, ἵνα αἰτήσωνται τὸν Βαραββᾶν, καὶ δὲ Ἰησοῦν ἀτελεσώσιν.

21 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἡγεμὼν ἀπὸ αὐτοῖς· Τίνα θέλετε ἀπὸ τοῦ δύο ἀπολύσω ὑμῖν; Οἱ δὲ εἶπον, Βαραββᾶν.

22 Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τί οὖν ποιήσω Ἰησοῦν, τὸν λεγόμενον Χριστόν; Λέγουσιν αὐτῷ πάντες· Σταυρωθήτω.

23 Οἱ δὲ ἡγεμὼν ἔφη· Τί γὰρ κακὸν ἐποίησεν; Οἱ δὲ ἀκριβοῶς ἐκόντες, λέγοντες· Σταυρωθήτω.

24 Ἰδὼν δὲ ὁ Πιλάτος, ὅτι οὐδὲν ὠφέλει, ἀλλὰ μῆλλον θόρυβος γίνεται, λαβὼν ὕδωρ, ἀπενίψατο τοὰς χεῖρας, ἀπειλῶν τὸν ὄχλον, λέγων· Ἀθωὸς εἰμι ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ δικαίου τούτου· ὑμεῖς ὁφείδετε.

25 Καὶ ἀποκριθεὶς πᾶς ὁ λαὸς, εἶπε· Τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς, καὶ ἐπὶ τὰ τέκνα ἡμῶν.

26 Τότε ἀπέλυσεν αὐτοῖς τὸν Βαραββᾶν, καὶ δὲ Ἰησοῦν φραγγελῶσας παρέδωκεν ἵνα σταυρωθῇ.

27 Τότε οἱ στραῖται καὶ ἡγεμόνες, παραλαβόντες καὶ Ἰησοῦν εἰς τὸ πρακτώριον, συνηγάγον ἐπ' αὐτὸν ὄχλον τὸν ἀπᾶν.

28 Καὶ κοκκύνοντες αὐτὸν, ἐβλήθησαν αὐτῷ χλαμύδα κοκκίνην.

29 Καὶ κλέξαντες εἴφανον ὥς ἀκάρθον, ἐπέθηκαν ὑπὲρ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ βάλαρον ὑπὲρ τῶν δεξιῶν αὐτοῦ· καὶ γονοκνηστῆρας ἔμπροσθεν αὐτοῦ, ἐτακίζον αὐτῷ, λέγοντες· Χαίρε ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰουδαίας.

30 Καὶ ἐμπτύσκιτε εἰς αὐτὸν, ἔλαβεν τὸν κάλαμον,
 ἔειπεν εἰς τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ.

31 Καὶ ὅτε εἰσέταξαν αὐτὸς, Ἰησοῦς αὐτὸν τὴν
 χλαμύδα, ἔσπευσεν αὐτὸν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἔσπευ-
 γον αὐτὸν εἰς τὸ σκουῶσαι.

32 Ἐξέρχόμενοι δ', εὗρον ἀνθρώπον Κυβωαῖον, ἐνό-
 μιτι Σίμωνα· τοῦτον ἤγαγόν αὐτον ἵνα ἀρῇ τὸν σκουῶν
 αὐτοῦ.

33 Καὶ ἐλθόντες εἰς τόπον λεγόμενον Γολγοθᾶ, ὅς
 ἐστὶ λεγόμενος κρῶν τῆρος,

34 Ἐδώκαν αὐτὸ πιεῖν ὄξος μὲν χολῆς μεμιγμένον·
 ἔψαλματος, οὐκ ἔδωκεν πιεῖν.

35 Σταυρώσαντες δὲ αὐτὸν, διμερέσαντο τὰ ἱμάτια
 αὐτοῦ, βάλλοντες κλῆρον· ἵνα πληρωθῇ τὸ ρηθὲν ὑπὸ
 τοῦ προφήτου· διμερέσαντο τὰ ἱμάτια μὴ ἐαυτοῖς, ἔ-
 πί τὸν ἱματισμὸν μὴ ἔβαλον κλῆρον.

36 Καὶ καθήμενοι, ἐτήρην αὐτὸν ὡς ἐπ'.

37 Καὶ ἐπέθηκαν ἐπάνω τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ τὴν αἰτίαν
 αὐτοῦ γεγραμμένην· Οὗτος ἐστὶν Ἰησοῦς ὁ
 βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων.

38 Τότε σταυρῶνται σὺν αὐτῷ δύο λησαί· εἰς ὡς δε-
 ξιών, ἔσπευξεν ὁ ἀνάνυμων.

39 Οἱ δὲ στυγερούμενοι ἐβλασφήμουν αὐτὸν κινου-
 ντες τὰς κεφαλὰς αὐτῶν,

40 Καὶ λέγοντες· Οὗ καταλύων τὸν πύλον, ἔσπευξεν
 σὺν ἡμέραις οἰκοδομῶν, σῶσον σεαυτὸν· εἰ υἱὸς εἶ τοῦ
 Θεοῦ, καταβῆθι ἀπὸ τοῦ σταυροῦ.

41 Ομοίως δὲ οἱ Ἀρχιερεῖς, ἐμπαίζοντες μὲν τῶν
 Γραμματέων ἔσπευξεν, ἔλεγον.

42 Ἄλλως ἔσπευξεν, ἐπιτὸν σὺ δύναται σῶσαι· ἰβρα-
 σιλικὸς Ἰσραὴλ ἐστὶ, κατεβήτω σὺν ἀπὸ τοῦ σταυροῦ, ἔ-
 πιστεύομεν αὐτῷ.

43 Πέποιθεν ἐπὶ τοῖς Θεοῖς· εὐσάσθω σὺν αὐτῶν, ἡ
 θέλει αὐτὸν· εἶπε γὰρ· Οὗ Θεοῦ εἰμι υἱός.

44 Τὸ δ' αὐτὸ καὶ οἱ λησαί, οἱ συσσωρευθέντες αὐτῷ,
 ἐνεκρίνον αὐτῷ.

45 Ἀπὸ δὲ ἑκτῆς ὥρας σκότος ἐγένετο ἐπὶ πᾶσαν τὴν
 γῆν, ὥς ὥρας ὀκτατῆς.

46 Πρὸς τὴν ἑννατὴν ὥραν ἀνεβόασεν ὁ Ἰησοῦς φωνῇ
 μεγάλῃ, λέγων· Ἠλὶ, Ἠλὶ, λαμὰ σαβαχθανί·
 ἥτις ἐστὶ· Θεέ μου, Θεέ μου, ἵνα τί με ἐγκατέ-
 ληπες;

47 Τινὲς δὲ τῶν ὡς ἐπ' ἰσώτων ἀκούσαντες, ἔλεγον·
 Οὗ Ἠλὶαν φωνεῖ οὗτος.

48 Καὶ ἰδὼς δρᾶμα εἰς τὴν αὐτῶν, ἔλαβον σφύ-
 γον, πλήσας τε ὄξος, ἔσπευξεν καλὰ μὲν, ἐπιτίθον
 αὐτῶν.

49 Οἱ δὲ λοιποὶ ἔλεγον· Ἄφες, ἴδομεν εἰ ἔρχεται
 Ἠλίας σῶσαι αὐτὸν.

50 Οὗ δὲ Ἰησοῦς, καλῇ κρῆσας φωνῇ μεγάλῃ, ἀφῆκε
 τὸ πνεῦμα.

51 Καὶ ἰδοὺ, τὸ καταπέτασμα τοῦ ναοῦ ἐσχίσθη εἰς δύο ἀπὸ ἀνωθεν ἕως κάτω· ἔ η γῆ ἐσεισθη· ἔ αἱ πέτραι ἐσχίσθησαν.

52 Καὶ τὰ μνημεῖα ἀνεώχθησαν· ἔ πολλὰ σώματα τῶν κεκοιμημένων ἀγίων ἤγερθη.

53 Καὶ ἔξελθόντες ὅκ τῶν μνημείων μὲν ἦ ἔγερσιν αὐτῶν, εἰσῆλθον εἰς τὸ ἁγίον πᾶν, ἔ ἐμφάνισθησαν πολλοῖς.

54 Οἱ δὲ ἑκατόνταρχοι ἔ οἱ μετ' αὐτῶν, τηροῦντες τὸν Ἰησοῦν, ἰδόντες τὸν σεισμόν ἔ τὰ γινόμενα ἔφοβήθησαν σφόδρα, λέγοντες· Ἀληθῶς Θεοῦ υἱὸς ἔστι οὗτος.

55 Ἦσαν δὲ ἐκεῖ γυναῖκες πολλαί, ἀπὸ μακρόθεν θεωροῦσαι· αἵτινες ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ ἀπὸ τῆ Γαλιλαίας, ἠκολουτοῦσαι αὐτῷ.

56 Ἐν αἷς ἦν Μαρία ἡ Μαγδαλὴν, ἔ Μαρία ἡ τῆ Ἰακώβ, ἔ Ἰωσή μήτηρ, ἔ ἡ μήτηρ τῶν υἱῶν Ζεβεδαίου.

57 Οἱ ψίας ὁ γυμνίστης, ἔλθεν ἄνθρωπος πλούσιος ἀπὸ Ἀρμαθαίας, τοῦτομα Ἰωσήφ, ὅς ἔ αὐτὸς ἐμαρτύρῃσε τῷ Ἰησοῦ.

58 Οὕτως προσελθὼν τῷ Πιλάτῳ, ῆτήσατο τὸ σῶμα τῷ Ἰησοῦ· Τότε ὁ Πιλάτος ἐκέλευσεν ἀποδοθῆναι τὸ σῶμα.

59 Καὶ λαβὼν τὸ σῶμα ὁ Ἰωσήφ, ἐταπόλινεν αὐτὸ σινδόνι καθαρῷ.

60 Καὶ ἔθηκεν αὐτὸ ἐν τῷ καινῷ αὐτῷ μνημείῳ, ὃ ἐκτετύμμεν ἐν τῇ πέτρᾳ· ἔ προσκυλίσας λίθον μέγαν τῇ θύρᾳ τῷ μνημείῳ, ἀπέλθεν.

61 Ἦν ὁ οὗτος Μαρία ἡ Μαγδαλὴν, ἔ ἡ ὅλη Μαρία, καθήμεναι ἀπέναντι τῷ τάφῳ.

62 Τῇ δὲ ἐπαύριον, ἥτις ἐστὶ μετὰ τῶν ᾠχυνσάντων, συνερχόμενοι οἱ Ἀρχιερεῖς ἔ οἱ Φαρισαῖοι πρὸς Πιλάτον.

63 Λέγοντες· Κίε, ἐμνήσθημεν ὅτι οὐκ εἶπες ὁ πλάνος εἶπεν, ἐπὶ ζῶν· Μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἐγείσονται.

64 Κέλυσον οὖν ἀσφαλισθῆναι τὸν τάφον ἕως τῆς τρίτης ἡμέρας· μήποτε ἐλθόντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ τυκτὸς, κλέψωσιν αὐτόν, ἔ εἴπωσι τῷ λαῷ· Ἦγερθη ἀπὸ τῶν νεκρῶν· ἔ ἔσαι ἡ ἐσχάτη πλατὴ χεῖραν τῇ πρώτῃ.

65 Ἐφ' ἣ δὲ αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Ἐχίτε κησωδία· ὑπάγετε, ἀσφαλίσασθε αὐτὸν ὡς οἴδατε.

66 Οἱ δὲ ὅτι ὁ πορεύεσθαι ἀσφαλισάμενος τὸν τάφον, σφραγίσαντες τὸν λίθον, μὲν τῇ κησωδίας.

1 Ο Ψὲ δὲ σαββάτων, τῇ ἐπιφωσκούσῃ εἰς μέσην σαββάτων ἦλθε Μαρία ἡ Μαγδαλὴν, & ἡ ἄλλη Μαρία, θεωρῆσαι τὸν τάφον.

2 Καὶ ἰδὼν, σεισμὸς ἐγένετο μέγας· ἄγγελος γὰρ Κυρίου καταβὰς ἐκ οὐρανοῦ, προσελθὼν ἀπεκυλίσθη τὸν λίθον ἀπὸ τῆς θύρας, & ἐκάθιστο ἐπ' αὐτοῦ.

3 Ἡ δὲ ἡ ἰδέα αὐτῆς ὡς ἀστρική, & τὸ ἐνδύμα αὐτῆς λευκὸν ὡς ἥ χιών.

4, Ἀπὸ δὲ τῷ φόβῳ αὐτῆς ἐσείσθησαν οἱ τηῶντες, & ἐγένοντο ὡς νεκροί.

5 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἄγγελος, εἶπε ταῖς γυναῖξιν· Μὴ φοβῆσθε ὑμᾶς· οἶδα γὰρ ὅτι ἰησοῦν τὸν ἐσαυρωμένον ζητεῖτε.

6 Οὐκ εἶπεν ὧδε· ἠγέρθη γὰρ, καθὼς ἤτε· δεῦτε, ἴδετε τὸν τόπον ὅπου ἐκίπτο ὁ Κύριος.

7 Καὶ ταχὺ πορεύθεσθε, εἰπατε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ὅτι ἠγέρθη ἀπὸ τῆς νεκρῶν· καὶ ἰδὼν, προύγει ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ὅκεν αὐτὸν ὁψισθε· ἰδὼν εἶπον ὑμῖν.

8 Καὶ ἤρξατο ταχὺ ἀπὸ τῆς μηνμεῖας μὲν φόβῳ & χαρᾷ μεγάλῃ, ἐδραμον ἀπαγγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ.

9 Ὡς δὲ ἐπορεύοντο ἀπαγγεῖλαι τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, & ἰδὼν, ὁ ἰησοῦς ἀπήντασεν αὐταῖς, λέγων· Χαίριτε· Αἱ δὲ προσελθούσαι ἐκράτησαν αὐτὴν τὰς πόδας, & προσεκύνησαν αὐτῷ.

10 Τότε λέγει αὐταῖς ὁ ἰησοῦς· Μὴ φοβῆσθε· ὑπάγετε, ἀπαγγεῖlate τοῖς ἀδελφοῖς μὴ ἵνα ἀπέλθωσιν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, κακεῖ με ὁψονται.

11 Πορεύομένην δὲ αὐτῇ, ἰδὼν τινὲς τῆς κηρυχίας ἐλθόντες εἰς τὴν πόλιν, ἀπήγγειλαν τοῖς Ἀρχιερεῦσιν ἅπαντα τὰ ῥησόμενα.

12 Καὶ συσχεθέντες μὲν τῷ Πρεσβυτέρῳ, συμβηλίου τε λαβόντες, ἀργύρια ἑκάστη ἐδωκὼν τοῖς στρατιώταις.

13 Λέγοντες· Εἰπατε, ὅτι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ νεκροὶ ἐλθόντες ἐκλεψάν αὐτὸν ἡμῶν κοιμημένων.

14 Καὶ ἰὼν ἐκκωθῇ τῇτι ἐπὶ τῇ ἡγεμονίᾳ, ἡμεῖς πίπισον αὐτὸν· & ὑμᾶς σιμερίμενος ποιήσοιμεν.

15 Οἱ δὲ, λαβόντες τὰ ἀργύρια, ἐποίησαν ὡς ἐδιδάχθησαν· & διεφθάρθη ὁ λόγος ὅτιος παρὰ τῶν δαίμοις μέγρε τὸ σημεῖον.

16 Οἱ δὲ ἰδὼντες μαθηταὶ ἐπορεύθησαν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, εἰς τὸ ὅριον ὃ ἐτάξατο αὐτοῖς ὁ ἰησοῦς.

17 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν, προσεκύνησαν αὐτῷ· οἱ δὲ ἐδιδάχθησαν,

Καὶ προσελθὼν ὁ Ἰησοῦς, ἐλάλησεν αὐ-
 λέγων· Εἰδόθῃ μοι πᾶσα ὕψισία ἐν οὐρανῷ
 ἡ γῆς.

Πορεύεσθαι οὖν μαθητεύσατε πάντα τὰ ἔθνη,
 βαπτίζοντες αὐτοὺς εἰς τὸ ὄνομα, ᾧ Πατὴρ, ὃ
 ὁ υἱός, ὁ Ἅγιος Πνεύματος.

Διδάσκοντες αὐτοὺς τηρεῖν πάντα ὅσα ἐνετειλά-
 μιν· ὃ ἰδοὺ, ἐγὼ μετ' ὑμῶν εἰμι πάσας τὰς
 ἡμέρας, ἕως τῆς συντελείας τοῦ αἵματος. Ἀμήν.



ΤΟ ΚΑΤΑ ΜΑΡΚΟΝ ΕΥΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κεφ. α'. Ι.

- 1 **Α**ΡΧΗ Τῆς Εὐαγγελίᾳς Ἰησοῦ Χριστοῦ, υἱοῦ τοῦ Θεοῦ.
- 2 Ὡς γέγραπται ἐν τοῖς προφήταις· Ἰδὲ ἐγὼ ἀποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου πρός σε, ὅς κηρύσσει τὴν ἐν σοὶ εὐαγγελίαν· ὃς ἐκπορεύεται ἐμπροσθέν σου.
- 3 φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἐπιμύνατε τὴν ἐδὲν Ἰούδα, ἀφ' ἧς ποιήσατε τὰς τρίβους αὐτῆς.
- 4 Ἐγένετο Ἰωάννης βαπτίζων ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἔ κηρύσσων βάπτισμα μετανοίας εἰς ἄφεσιν ἁμαρτιῶν.
- 5 Καὶ ἔξεπορεύετο πρὸς αὐτὸν πᾶσα ἡ Ἰουδαία, χόρα, ἔ οἱ Ἱεροσολυμίται· ἔ ἐβαπτίζοντο πάντες ἐν τῇ Ἰορδάνῃ ποταμῷ ὑπ' αὐτοῦ, ἔξομολογούμενοι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν.
- 6 Ἦν ὁ Ἰωάννης ἐνδεδυμένος τρίβιν καμήλῳ, καὶ ζώνῃ δερματίνῃ περὶ τὸ ὦσφυν αὐτοῦ· ἔ ἐσθίων ἀκρίδας ἔ μέλι ἄγριον.
- 7 Καὶ ἐκήρυκε, λέγων· Ἐρχεται ὁ ἰσχυρότερός μου ἐπί σοι, ὃς ἔκ' ἐμοῦ ἔκλυσε τὸν ἰσχυρότερόν μου ὑποδημάτων αὐτοῦ.
- 8 Ἐγὼ μὲν ἐβάπτισα ὑμᾶς ἐν ὕδατι· αὐτὸς ὁ βαπτισθεὶς ὑμᾶς ἐν Πνεύματι ἁγίῳ.
- 9 Καὶ ἐγένετο ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, ἦλθεν Ἰησοῦς ἀπὸ Ναζαρετ τῆς Γαλιλαίας, ἔ ἐβαπτίσθη ὑπὸ Ἰωάννη ἐν τῇ Ἰορδάνῃ.
- 10 Καὶ αὐθις ἀναβαίνων ἀπὸ τοῦ ὕδατος, εἶδε σχιζομένην τὴν ἄβυσσον, ἔ τὸ Πνεῦμα ὡς πεπεραμένην, καταβαίνον ἐπ' αὐτόν.
- 11 Καὶ φωνὴ ἐγένετο ἐκ τοῦ ἁετός· Σὺ εἶ ὁ υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ εὐδόκησα.
- 12 Καὶ αὐθις τὸ Πνεῦμα αὐτὸν ἐβαλάνει εἰς τὴν ἐρήμον.
- 13 Καὶ ἦν ἐκεῖ ἐν τῇ ἐρήμῳ ἡμέρας τεσσαράκοντα, πεινυζόμενος ὑπὸ τοῦ Σατανᾶ· ἔ ἦν μετὰ τῶν θηρίων· ἔ οἱ ἄγγελοι διηκόνουν αὐτῷ.
- 14 Μετὰ ὃ τὸ πνεῦμα ἔλαβεν αὐτὸν Ἰησοῦν, ἔλθεν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, κηρύσσων τὸ Εὐαγγέλιον τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ.
- 15 Καὶ λέγων· Ὅτι πεπλήρωται ὁ καιρὸς, καὶ ἤγγικεν

ἐγγικεν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ· μεταστέτε, ὁ πιστεύων ἐν τῷ εὐαγγελίῳ.

16 Μεριστῶν 5 παρὰ τὴν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας, εἶδε Σίμωνα ὁ Ἀνδρέου τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ βύβλουτος ἀμφίβληστρον ἐν τῇ θαλάσσῃ· (ἦσαν 38 ἀδελφοί.)

17 Καὶ ἔπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Δεῦτε ὀπίσω μου, ὁ ποιῆσαι ὑμεῖς ἁγέσθαι ἀδελφοὶ ἀνθρώπων.

18 Καὶ εὐθέως ἀφέντες τὰ δίκτυα αὐτῶν, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

19 Καὶ προβάς ἐκείθεν ὀλίγον, εἶδεν Ἰάκωβος ὁ υἱὸς Ζεβεδαίου, ὁ Ἰωάννης ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, ὁ αὐτὸς ἐν τῇ πλοίῳ καταρτίζοντας τὰ δίκτυα.

20 Καὶ εὐθέως ἐκάλεσεν αὐτὸς· καὶ ἀφέντες τὸν πατέρα αὐτοῦ Ζεβεδαῖον ἐν τῇ πλοίῳ μετὰ τῷ μιτρωτῇ ἀπῆλθον ὀπίσω αὐτοῦ.

21 Καὶ ἐμπορεύονται εἰς Καπερναούμ· καὶ εὐθέως τοῖς σάββασις ἐπέλθων εἰς τὴν συναγωγὴν, ἐδίδασκε.

22 Καὶ ἐξεπλήροτο ἐπὶ τῇ διδαχῇ αὐτοῦ. ὅτι 38 διδάσκων αὐτοὺς ὡς ἔχουσαν ἐξουσίαν, ὁ οὐχ ὡς οἱ Γραμματεῖς.

23 Καὶ ἦν ἐν τῇ συναγωγῇ αὐτοῦ ἄνθρωπος ἐν πνεύματι ἀκαθάρτῳ, ὁ ἀνέκραγε.

24 Λέγων· Ἐγώ, πῶς ἔμεν ὁ σοὶ Ἰησοῦ Ναζαρεῦ; ἤλθες ἀπολεσθαι ἡμῶν; οἶδά σε τίς εἶ, ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

25 Καὶ ἐπετίμηκεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Φιμώθητι, ὁ ἐξελεθὶ ὑπὸ αὐτοῦ.

26 Καὶ σπαράξον αὐτὸν τὸ πνεῦμα τὸ ἀκαθάρτον, καὶ κράξαν φωνῇ μεγάλῃ, ἔξηλθεν ὑπὸ αὐτοῦ.

27 Καὶ ἐθαμβήθησαν πάντες, ὥστε σιγῇ πρὸς αὐτοὺς, λέγοντας· Τί ἐστὶ τοῦτο; τίς ἡ διδαχὴ ἡ καινὴ αὕτη, ὅτι κατ' ἐξουσίαν καὶ τοῖς πνεύμασι τοῖς ἀκαθάρτοις ἐπιτάσσει, καὶ ὑπακούουσιν αὐτῷ;

28 Ἐξῆλθε ὁ ἄκοῦς αὐτοῦ εὐθεὺς εἰς ὅλην τὴν περὶχωρὸν τῆς Γαλιλαίας.

29 Καὶ εὐθέως ἐκ τῆς συναγωγῆς ἔξελθόντες, ἔλθον εἰς τὴν οἰκίαν Σίμωνος καὶ Ἀνδρέου, μετὰ Ἰακώβου ὁ Ἰωάννης.

30 Ἦ δὲ πενθιρὰ Σίμωνος κατέκατο πυρέσματα· ὁ εὐθέως λέγουσιν αὐτῷ περὶ αὐτῆς.

31 Καὶ προσελθὼν ἥγειρεν αὐτήν, κατῆσσε τῆς χειρὸς αὐτῆς· ὁ ἀφῆκεν αὐτήν ὁ πυρετὸς εὐθέως· ὁ δεικνύων αὐτοῖς.

32 Οἱ ψῆες δὲ ὀνομαζόμεναι, ὅτε ἔδωκε ἔλθαι, ἔφερον πρὸς αὐτὸν πάντας τοὺς κακῶς ἔχοντας καὶ τοὺς δαιμονιζομένους.

33 Καὶ ὁ πῶλις ὅλη ἐπισυνηγμένη ἦν πρὸς τὴν θύραν.

34 Καὶ ἐθεράτωτε πολλὰς κακὰς ἔχοντας ποικίλαις νόσοι· ἃ δαιμόνια πολλὰ ἔξεβαλε, ἃ ἢ ἤφιε λαλεῖν τὰ δαιμόνια, ὅτι ἠδαισάν αὐτόν.

35 Καὶ πρῶτ' ἐννυχον λίαν ἀνάσας ἔξηλθε· ἃ ἀπῆλθεν εἰς ἕτημον τόπον, καὶ προσήαχτο.

36 Καὶ κατεδίωξαν αὐτόν οἱ Σίμων καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ.

37 Καὶ ὁρῶντες αὐτόν, λέγουσιν αὐτῷ· Ὅτι πάντες ζητοῦσίν σε.

38 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἀγνοῶ εἰς τὰς ἐχόμενας καιροὺς, ἵνα καὶ κηρύξω· εἰς τὸ τοῦτο γὰρ ἔξεληλυθα.

39 Καὶ ἦν κηρύσσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτοῦ, εἰς ὅλην τὴν Γαλιλαίαν, καὶ τὰ δαιμόνια ἐκβάλλον.

40 Καὶ ἔρχεται πρὸς αὐτόν λεπρός, καὶ θυκαλῶν αὐτὸν· ἃ λέγων αὐτῷ· Ὅτι, εἰάν θέλῃς, δύνασάί με καθαρίζεται.

41 Ὁ δὲ Ἰησοῦς σπλαγχνισθεὶς, ὁκτείνας τὴν χεῖρα, ἥψατο αὐτοῦ, καὶ λέγει αὐτῷ· Θέλω, καθαρισθήτω.

42 Καὶ αἰπύντος αὐτοῦ, ὁ δούλος ἀπῆλθεν ἀπ' αὐτοῦ ἡ λέπρα, ἃ ἐκαθαρίσθη.

43 Καὶ ἐμβρυησάμενος αὐτῷ, δούλος ἔξεβαλεν αὐτόν.

44 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ὅρα μηδενὶ μηδὲν εἶπης· ἀλλ' ὕπαγε, σεαυτὸν δειξόν τῷ ἱερεῖ, καὶ προσένεγκε πρὸς τὸ καθαρισμὸν σὺ ὡς προτέταξε Μωσῆς εἰς μαρτυρίαν αὐτοῖς.

45 Ὁ δὲ ἔξελθὼν ἤρξατο κηρύσσειν πολλὰ καὶ θαυμάζειν τὸν λόγον, ὥστε μηκέτι αὐτόν δύνασθαι φανερῶς εἰς πόλιν εἰσιλθεῖν· ἀλλ' ἔξω ἐν ἐρημοῖς τοῖσις ἦν, καὶ ἤρχοντο πρὸς αὐτόν πλῆταρχοι.

Κεφ. β'. 2.

1 **Κ**ΑΙ πάλιν ἀπῆλθεν εἰς Καπερναὺν δι' ἡμερῶν· ἃ ἠγάσθη ὅτι εἰς οἶκόν ἐστι.

2 Καὶ ὁ δούλος συνήχθησαν πολλοί· ὥστε μηκέτι χωρεῖν μηδὲ τὰ πρὸς τὴν θύραν· καὶ ἐλάλει αὐτοῖς λέγων.

3 Καὶ ἔρχονται πρὸς αὐτόν, παραλυτικὸν φέροντες αἰσόμενον ὑπὸ τεσάρων.

4 Καὶ ἐκ δυνάμεως προσεγγίσαι αὐτῷ λέγει τὸν ὄχλον, ἀπεστέμασθαι τὴν σίγαλιν ὅτι ἦν· καὶ ἰεροῦσάμενοι χαλῶσι τὸν κράββατον, ἐφ' οὗ ὁ Παραλυτικὸς κατέκειτο.

ἡ ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς τὴν πίσιν αὐτῶν, λέγει τῷ παραλυτικῷ· Τίκνον, ἀφίενται σοὶ αἱ ἁμαρτίαι σου.

6 Ἦσαν ὅτι πρὸς τῷ Γραμματέων ἐκὼ καθήκοντι, ὁ δικολογίζεσθαι ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν.

7 Τί ἔστος ἡτοίμασι βλασφημίας; πῶς δύναται ἀφίεναι ἁμαρτίας, εἰ μὴ ἔσθ' ὁ Θεός;

8 Καὶ αὐθις ἐπιγνὼς ὁ Ἰησοῦς τῷ πλούμπτῳ αὐτοῦ ὅτι οὕτως ἀφλογίζονται ἐν ἑαυτοῖς, εἰπεν αὐτοῖς· Τί ταῦτα ἀφλογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;

9 Τί ἐστὶ δύκοπώτερον, εἴτε ἐν τῷ παραλυτικῷ. Ἀφίενται σοὶ αἱ ἁμαρτίαι, ἢ εἴμην· Ἐγείραι, ὁ ἄρην σου καὶ κρῖβαντον, ὁ παρῇται;

10 Ἰὼν ὅτι εἰδότε ὅτι Ἰησοῦς ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀφίεναι ἐπὶ τῇ γῆς ἁμαρτίας· (λέγει τῷ παραλυτικῷ.)

11 Σοὶ λέγω, ἔγεραι, ὁ ἄρην τὸν κρῖβαντον σου, ὁ ὑπαγε εἰς τὸν οἶκόν σου.

12 Καὶ ἤγερθη αὐθις, ὁ ἄρας τὸν κρῖβαντον, ὁ ἔλθεν εὐαρίπῳ πάντων· ὥς ἐξέσπλυναι πάντας, καὶ δοξάζειν τὸν Θεόν, λέγοντας· Ὅτι κότεποτε οὕτως εἶδον.

13 Καὶ ἔξελθε πάλιν παρὰ τὸ θάλασσαν· καὶ πᾶς ὁ ἔσλος ἤρχετο πρὸς αὐτὸν, ὁ εὐδοκίαν αὐτῆς.

14 Καὶ παρῇσαν αἰδε Λαοὶν τὸν τοῦ Ἀλφείου καθήμενος ὅπου τὸ τελώνιον· ὁ λέγει αὐτῷ· Ἀκούσθαι μοι· καὶ ἀναστὰς ἐκολήθησεν αὐτῷ.

15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κατακλῆσθαι αὐτὸν ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτῇ, ὁ πολλοὶ τελῶναι ὁ ἁμαρτωλοὶ συναρέκειντο τῷ Ἰησοῦ, καὶ τοῖς μεθ' αὐτοῦ· ἦσαν γὰρ πολλοί, ὁ ἠκολούθησάν αὐτῷ.

16 Καὶ οἱ γραμματεῖς ὁ οἱ φαρισαῖοι ἰδόντες αὐτὸν ἐσθίοντα μετὰ τῶν τελῶν καὶ ἁμαρτωλῶν, ἔλεγον τοῖς μεθ' αὐτοῦ· Τί ὅτι μετὰ τῶν τελῶν καὶ ἁμαρτωλῶν ἐσθίει ὁ πίνει;

Καὶ ἀκούς ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Οὐ χρὴν ἰσχυροῖν οἱ ἐσθύνοντες ἰατροῦ, ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες· καὶ ἔλθον καλεσθαι δικαίους, ἀλλὰ ἁμαρτωλοὺς οἱ μετάνοιον.

18 Καὶ ἦσαν οἱ μεθ' αὐτοῦ Ἰωάννης ὁ οἱ τῶν φαρισαίων ἡσθύνοντες· ὁ ἐρχονται ὁ λέγουσιν αὐτῷ· Διαπὸ οἱ μεθ' αὐτοῦ Ἰωάννης ὁ οἱ τῶν φαρισαίων ἡσθύνουσιν, οἱ ὅτι σοὶ μεθ' αὐτοῦ ἡ ἡσθύνουσι;

19 Καὶ εἶπερ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Μὴ δύναται ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου, ἐν ᾧ νομφίος μετὰ αὐτῷ ἐστὶ, ἡσθύνει; ὅταν χρέον μετὰ αὐτῷ ἔχῃσι τὸν νομφίον, καὶ δύναται ἡσθύνειν.

20 Ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ' αὐτῷ ὁ νομφίος, καὶ τότε ἡσθύνουσιν ἐν σκεναῖς ταῖς ἡμέραις.

21 Καὶ ἡδὲς ἐτίβληκε ρύκας ἀγαφῆς ὑπὲρ ῥά-
πτει ὑπὸ ἱματίῳ πελαγῷ· εἰ δὲ μὴ, αἶμα τοῦ πλη-
ρωμοῦ αὐτοῦ τὸ καινὸν τοῦ παλαιῦ, & χεῖρα σχισ-
μα γίγεται.

22 Καὶ ἡδὲς βάλλει οἶνον νέον εἰς ἀγκύρην παλαιῆς·
εἰ δὲ μὴ, ῥήματα ὁ οἶνος ὁ νέος τῆς ἀσκήσεως, & ὁ οἶνος
σάχεται, & οἱ ἀσκοὶ ἀπολύνται· ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς
ἀσκήσεως καινῆς ἐλάττειν.

23 Καὶ ἐγένετο ὑπερπορεύεσθαι αὐτὸν ἐν πῖσι σάβ-
βασιν διὰ τῶν ποταμῶν, & ἤρξαντο οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ
ἰδοὶ ποιεῖν πλυντὸς τῆς σαύρας.

24 Καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἔλεγον αὐτῷ· Ἰδε, τί ποιεῖσιν
ἐν πῖσι σάββασιν ὃ ἢ ἐξέσι;

25 Καὶ αὐτὸς ἐλέγχε αὐτοὺς· Οὐδέποτε ἀνέγκυτε τί
ἐποίησε Δαβὶδ, ὅτε χρεὴν ἔχει, & ἐπέτασεν αὐτὸς &
οἱ μετ' αὐτοῦ;

26 Πῶς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τῷ Θεῷ ὑπὸ Ἀβιά-
θαρ τῷ Ἀρχιερεῖς, & τῆς ἄρτης τῆς προθέσεως ἐφα-
γῶν, ὃς ἢ ἐξέσι Φαρισαῖοι εἰ μὴ πῖσι ἱερεῦσι, & ἔδωκε
ἐν τοῖς σὺν αὐτῷ ἄρτι;

27 Καὶ ἐλεγε αὐτοῖς· Τὸ σάββατον διὰ τὸν ἄν-
θρωπον ἐγένετο, & ἢ ὁ ἄνθρωπος ἀπὸ τοῦ σάβ-
βατου.

28 Ὡς κύνες ἐσιν οἱ υἱοὶ τοῦ ἀνθρώπου & τοῦ
σαββάτου.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Κ**Αὶ εἰσῆλθε πάλιν εἰς τὴν συναγωγὴν· καὶ
ἦν ὁ αὐτὸς ἄνθρωπος θελαμίνων ἔχων τὴν
χεῖρα.

2 Καὶ παρετήρην αὐτῷ εἰ τοῖς σάββασιν θερπύσκει
αὐτῷ, ἵνα καταγορεύσωσιν αὐτῷ.

3 Καὶ λέγει τῷ ἀνθρώπῳ τῷ θελαμίνῳ ἔχοντι τὴν
χεῖρα· Ἐγείρει εἰς τὸ μέσον.

4 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἐξέσι πῖσι σάββασιν ἀγαθὸν
ποιῆσαι, ἢ κακοποιῆσαι; Ψυχὴν σώσει, ἢ ἀποκτείνει;
Οἱ δὲ ἐσιώπων.

5 Καὶ περιβλεψάμενος αὐτοὺς μετ' ὀργῆς, συλ-
ληπούμενος ὑπὲρ τῆς παρώσεως τῆς καρδίας αὐτῶν,
λέγει τῷ ἀνθρώπῳ· Ἐκτανον τὴν χεῖρά σου· &
θεύεινε· καὶ ἀποκατεσφίδη ἡ χεὶρ αὐτοῦ ὑγιὲς
ὡς ἡ ἄλλη.

6 Καὶ θεελθόντες οἱ Φαρισαῖοι, αἰδέως μετὰ
τῷ Ἡραδιανῶν συμβῆλιν ἐποίησαν κατ' αὐτοῦ, ὅπως
αὐτὸν ἀπολέσωσι.

7 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀνεχώρησε μετὰ τῶν μαθη-
τῶν αὐτοῦ πρὸς τὴν θαλάσσαν· καὶ πολὺ πλῆθος
ἐκ τῆς Γαλιλαίας ἠκολούθησαν αὐτῷ, καὶ ἀπὸ
τῆς Ἰουδαίας.

8 Καὶ ἀπὸ Ἱερουσολύμων, καὶ ἀπὸ τῆς Ἰδουμαίας, καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου· καὶ οἱ παρὰ Τύρον ἔτι Σιδαῖνα, πλῆθος πολὺ, ἀκούσαντες ὅσα ἐποίησεν ἡλθον πρὸς αὐτόν.

9 Καὶ εἶπε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ἵνα ποιήσωσιν προσηκροῦν αὐτῷ, διὰ τὸν ὄχλον, ἵνα μὴ ἐλπίσιν αὐτόν.

10 Πολλοὶ γὰρ ἐξεδράκοντο· ὥστε ἐπιπίπτειν αὐτῷ, ἵνα αὐτῷ ἄψονται, ὅσοι ἔχον μωσίχας.

11 Καὶ τὰ πνεύματα τὰ ἀκάθαρτα, ὅταν αὐτῷ ἐξουίῃ, προσέπιπτον αὐτῷ, ἔκραζε, λέγοντα· Ὁ π σὺ εἶ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

12 Καὶ πολλὰ ἐπετίμω αὐτοὺς, ἵνα μὴ αὐτὸν φανερεῖν ποιήσωσι.

13 Καὶ ἀνθίστειν εἰς τὸ ὄρος, ἔπροσκαιῆται ὅς ἡθέλει αὐτοῖς· ἔπειλθεν πρὸς αὐτοὺς.

14 Καὶ ἐποίησε διδάσκειν, ἵνα ᾧσι μετ' αὐτοῦ, ἔτι αὐτοῖς ἐκείνην ἡμέραν, ἵνα αὐτοῖς κηρύσσειν.

15 Καὶ ἔχων ἔκστατον ἐξεδράκοντο τὰς νόσους, ἔκβαλλον τὰ δαιμόνια.

16 Καὶ ἐπίθηκε πάλιν Σίμωνι ὄνομα Πέτρον.

17 Καὶ Ἰωάννην τὸν ἀδελφὸν τοῦ Ἰακώβου· (ἔπεθηκεν αὐτοῖς ὄνομα Βροναργεῖς, ὅ ἐστιν, υἱοὶ βροντῆς.)

18 Καὶ Ἀνδρέαν, καὶ Φίλιππον, καὶ Βαρθολομαῖον, καὶ Ματθαῖον, καὶ Θωμᾶν· καὶ Ἰακώβον τὸν τοῦ Ἀλφαίου, ἔτι Θαδδαῖον, ἔτι Σίμωνα τὸν Κανανίτην,

19 Καὶ Ἰῦδαν Ἰσκαριώτην, ὃς ἔπεθηκεν αὐτόν.

20 Καὶ ἔρχονται εἰς οἶκον· καὶ συνέρχεται πάλιν ὄχλος, ὥστε μὴ δύνασθαι αὐτὸν μήτε ἄρτον φαγεῖν.

21 Καὶ ἀκούσαντες οἱ παρ' αὐτοῦ, ἔλθον κρατῆσαι αὐτόν· ἔλεγον γὰρ· Ὁ π θεῖός ἐστις.

22 Καὶ οἱ γραμματεῖς οἱ ἀπὸ Ἱερουσολύμων καταβάντες, ἔλεγον· Ὁ π Βεελζεβὺλ ἔχει, ἔτι ὅπ ὃν τῷ ἀρχενπ τῶν δαιμονίων ἐκβάλλει τὰ δαιμόνια.

23 Καὶ προκαλεσάμενος αὐτοὺς ἐν ὁδοῦ ἀντιπρὸς ἑαυτοῦ ἔλεγον αὐτοῖς· Πῶς δύναται σατανας σατανας ἐκβάλλειν;

24 Καὶ εἰς βασιλείαν ἐφ' ἑαυτὴν μερισθῇ, ὃ δύναται σαθεῖναι ἢ βασιλεία ἐκείνη.

25 Καὶ εἰς οἰκίαν ἐφ' ἑαυτὴν μερισθῇ, ὃ δύναται σαθεῖναι ἢ οἰκία ἐκείνη.

26 Καὶ εἰ ὁ σατανας ἀνέστη ἐφ' ἑαυτόν ἔτι μεμερισθῇ, ὃ δύναται σαθεῖναι, ἀλλὰ τέλος ἔχει.

27 Οὐ δύναται ἡμεῖς τὰ πνεύματα τοῦ ἰσχυροῦ, ἀλλὰ εἰς τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, διὰ τὸν ὄχλον, ἵνα μὴ πρὸς τὸν ἰσχυρὸν δόξῃ· ἔτι τότε τὸ οἶκόν αὐτοῦ διζερπάται.

28 Αὐμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι πάντα ἀφεθήσεται τὰ ἀ-
μαρτήματα τοῖς υἱοῖς τοῦ ἀνθρώπου, & βλασφημίας
ἀντὶ βλασφημίας αὐτῶν.

29 Οὗ δ' αὖ βλασφημίας εἰς τὸ Πνεῦμα, τὸ ἅγιον,
ὃ καὶ ἔχει ἀφ᾽ ἑσῶν εἰς τὸν αἰῶνα, ἀλλ' ἐνόχος ἐστὶν αἰῶ-
νός τε καὶ κρίσεως.

30 Ὅτι ἔλεγον· Πνεῦμα ἀκάθαρτον ἔχει.

31 Ἐρχονται δὲ οἱ ἀδελφοί & ἡ μήτηρ αὐτοῦ·
καὶ ἔξω ἐσώτες ἀπέσπασαν πρὸς αὐτόν, φωνήντες
αὐτόν.

32 Καὶ ἐκείντος ὄχλος πρὸς αὐτόν· εἶπον δὲ
αὐτῷ· Ἰδοὺ, ἡ μήτηρ σου καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἔξω
ζητοῦσί σε.

33 Καὶ ἀπεκρίθη αὐτοῖς, λέγων· Τίς ἐστὶν ἡ μήτηρ
μου ἢ οἱ ἀδελφοί μου;

34 Καὶ περιβλεψάμενος κύκλῳ τῆς πρὸς αὐτόν
καθήμενους, λέγει· Ἰδοὺ ἡ μήτηρ μου καὶ οἱ ἀδελ-
φοί μου.

35 Οὗς γὰρ ἂν ποιήσῃ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, οὗτος ἀδελ-
φός μου καὶ ἀδελφὴ μου καὶ μήτηρ ἐστίν.

Κεφ. δ'. 4.

ΚΑὶ πάλιν ᾤκνητο διδάσκειν παρὰ τὴν θά-
λασσαν· καὶ συνήχθη πρὸς αὐτόν ὄχλος
πολύς, ὥστε αὐτόν ἐμβάντα εἰς τὸ πλοῖον, καθῆσθαι
ἐν τῇ θάλασσῃ. & πᾶς ὁ ὄχλος πρὸς τὴν θάλασσαν
ἔπι τῇ γῆς.

2 Καὶ ἐδίδασκεν αὐτὰς ἐν παραβόλαις πολλά, &
ἔλεγεν αὐτοῖς ἐν τῇ διδασκῇ αὐτῇ.

3 Ἀκῆετε· Ἰδοὺ, ἔρχεται ὁ σπείρων τοῦ σπείραι.

4 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ σπείρειν ὁ μὲν ἐπίσει πα-
ρὰ τὴν ἰδὸν, & ἦλθε τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, & κα-
τέφαγον αὐτόν.

5 Ἄλλο δὲ ἔπετεν ἐπὶ τὸ πετρῶδες, ὅπου ἦν ἄχρη
γῆν πολλήν· & αὐτὰς ἐξείλετο, διὰ τὸ μὴ ἔχειν
βάθος γῆς.

6 Ἄλλο δὲ ἀνατείλωντος ἐκωμαπίσθη, & διὰ τὸ μὴ
ἔχειν ῥίζαν, ὑξηράνηθη.

7 Καὶ ἄλλο ἔπετεν εἰς τὰς ἀκρόθας· καὶ ἀνέβη-
σαν αἱ ἀκρόθαι, & συνέπνιξαν αὐτὸ, & καρπὸν οὐκ
ἔδωκε.

8 Καὶ ἄλλο ἔπετεν εἰς τὴν γῆν τὴν καλήν. & ἐδίδε
καρπὸν ἀναβαίνοντα & αὐξάνοντα· & ἔφερον, ἐν τριᾶ-
κοντα, & ἐν ῥηξήκοντα, & ἐν ἑκατόν.

9 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὁ ἔχων ὥτα ἀκῆεν, ἀ-
κῆτε τοι.

10 Ὅτι ὅς ἐγένετο κατὰ μόνους, ἡρώτηται αὐτὸν οἱ
πρὸς αὐτόν σὺν τοῖς δώδεκα τὴν παραβολήν.

11 Καὶ

11 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ὑμῖν δίδεται γινῶσθαι τὸ μυστήριον τῆ βασιλείας τοῦ Θεοῦ. ὁποῖοις δὲ τοῖς ἔξω, οὐ παραβολαῖς τὰ πάντα γίνεται·

12 ἵνα βλέποντες βλέπωσι, καὶ μὴ ἴδωσι, καὶ ἀκούοντες ἀκούωσι, καὶ μὴ συνιώσι· μήποτε ἐπιστρέψωσι, καὶ ἀφίσθῃ αὐτοῖς τὰ ἁμαρτήματα.

13 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὐκ οἰδατε τὴν παραβολὴν ταύτην; καὶ πῶς πάσας τὰς παραβολὰς γινώσκεισθε;

14 Ὁ σπείρων, τὸν λόγον σπείρει.

15 Οὗτοι εἰσιν οἱ παρὰ τὴν ὁδὸν, ὅπου σπείρεται ὁ λόγος. καὶ ὅταν ἀκούσωσιν, οὐδὲν εἰσέρχεται ὁ σάτanas, καὶ αἶρει τὸν λόγον τὸν ἐσπαρμένον ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν.

16 Καὶ ἄλλοι εἰσιν ὁμοίως οἱ ὅτι τὰ πετρῶδη σπείρουσιν, οἱ, ὅταν ἀκούωσι τὸν λόγον, οὐδὲν μὲν χαράς λαμβάνουσιν αὐτὸν.

17 Καὶ ἡ καρτὶς ἔχει ῥίζαν ἐν ἑαυτοῖς, ἀλλὰ προσκαίρει· ὅταν ἡ θυμὸς θυμῶς ἐκλείψῃ ἢ διωγμῇ διὰ τὸν λόγον, οὐδὲν σκαρδαλίζονται.

18 Καὶ ἄλλοι εἰσιν οἱ εἰς τὰς ἀκαλύφτας σπείρουσιν, ὅτι εἰσιν οἱ τὸν λόγον ἀκούοντες.

19 Καὶ αἱ μέμνηται τῇ οἰδῶς ταύτῃ, καὶ ἡ σπέρται ὅτι πλῆν, καὶ αἱ σπέρται τὰ λοιπὰ ὅτι θυμῶς εἰσπορεύονται συμπνίγναι τὸν λόγον, καὶ ἀκαρπῆς γίνεται.

20 Καὶ ἄλλοι εἰσιν, οἱ ὅτι τὴν γῆν τὴν καλὴν σπείρουντες, οἱ τινες ἀκούει τὸν λόγον, καὶ παραδέχονται· καὶ καρποφοροῦσιν, ἐν τριάκοντα, καὶ ἐν ὀξήκοντα, καὶ ἐν ἑκατὸν.

21 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Μὴ τὸ λύχνος ἐρχεται ἵνα ὑπὸ τὸν μόδιον τεθῇ, ἢ ὑπὸ τῷ κλινῶ; οὐκ ἵνα ἐπὶ τῷ λυχνίῳ ἐπιτεθῇ;

22 Οὐ γὰρ ἐστὶ π κρυπτόν ὃ ἐδρ, μὴ φθμερωθῇ· οὐδὲ ἐγένετο ἀπόκρυφον, ἀλλ' ἵνα εἰς φανερόν ἐλθῇ.

23 Εἴ τις ἔχει ὅτα ἀκούειν, ἀκούτω.

24 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Βλέπετε π ἀκούετε. ἐν ᾧ μέτρῳ μετρεῖτε, μετρηθήσεται ὑμῖν, καὶ προσεθήσεται ὑμῖν τοῖς ἀκούουσιν.

25 Ὁ γὰρ ἂν ἔχη, δοθήσεται αὐτῷ· καὶ ὃς οὐκ ἔχει, καὶ ὃ ἔχει ἀρθήσεται ἀπ' αὐτοῦ.

26 Καὶ ἔλεγεν. Οὕτως ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ, ὡς ἐάνθρωποι βάλῃ τὸ σπέρμα ἐπὶ τὴν γῆν.

27 Καὶ καθύδην, καὶ ἐγείρηται νύκτα καὶ ἡμέραν· καὶ ὁ σπέρμα βλαστῇ, καὶ μακύνηται ὡς οὐκ οἶδεν αὐτοίς.

28 Αὐτομάτῃ γὰρ ἡ γῆ καρποφορεῖ, πρῶτον χόρτοι, εἰτα σάχυν, εἰτα πλὴρ σῖτον ἐν τῇ ταχύν.

29 Ὅταν δὲ παραδῇ ὁ κοπὸς, οὐδὲν ἀπετέλλει

τὸ δὲ πλῆθος, ὅτι παρέστηκεν ὁ σεισμός.

30 Καὶ ἔλεγεν· Τίνι ὁμοιωσάμεν τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ; ἢ ἐν ποίᾳ ὡμοβολῇ ὡμοβάλημεν αὐτῶν;

31 Ὡς κόκκῳ σινάπεως, ὅς, ὅταν σπαρῇ ἐπὶ τῆς γῆς, μικρότερος πάντων τῶν σπερμάτων ἐστὶ τῇ ἐπὶ τῆς γῆς.

32 Καὶ ἔτι σπαρῇ, ἀνίσταται, & γίνεται πάντων τῶν λαχάνων μέζων, & ποιεῖ κλάδον μεγάλον, ὥς ἐδύνασθαι ὑπὲρ τῆς σκιάς αὐτῆς τὰ πετεινὰ τῆς ἔρμης κατακλύειν.

33 Καὶ τοιαύταις ὡμοβολαῖς πολλαῖς ἐλάλει αὐτοῖς τὸν λόγον, καθὼς ἠδύνατο ἀκρῶς.

34 Χρὸς δὲ ὡμοβολῆς καὶ ἐλάλει αὐτοῖς κατ' ἰδίαν ὅτις μαθηταῖς αὐτοῦ ἐτέλεσε πάντα.

35 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὡς ἐκείνη τῇ ἡμέρᾳ, ὁψίας γεγεμένης· Διέδωκεν εἰς τὸ πέραν.

36 Καὶ ἀφέντες τὸν ὄχλον ὡμολογησάμεντιν αὐτὸν εἰς τὴν ἐν τῷ πλοίῳ· & ἄλλα δὲ πλοῖα ἦν μετ' αὐτοῦ.

37 Καὶ γίνεται λαίλαψ ἀνέμου μεγάλη· τὰ δὲ κύματα ἐπέβαλεν εἰς τὸ πλοῖον, ὥς αὐτὸ ἤδη γεμίζεσθαι.

38 Καὶ ἦν αὐτὸς ἐπὶ τῇ πούμῃ ἐπὶ τὸ προσκεφαλῆον καθήμενος· & διεγείρουσιν αὐτὸν, & λεγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, οὐ μέλει σοι ὅτι ἀπολλύμεθα;

39 Καὶ διεγερθεὶς ἐπετίμητε τῷ ἄνεμῳ, & εἶπε τῇ θαλάσσῃ· Σιώπα, πεφίμωσο. Καὶ ἐπάτατεν ὁ ἄνεμος, & ἐγένετο γαλήνη μεγάλη.

40 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί θεοὶ ἐσε ἔγω; πῶς ἔχετε πίστιν;

41 Καὶ ἐφωβήθησαν φόβον μέγαν, & ἔλεγον πρὸς ἀλλήλους· Τίς ἄρα ὁτός ἐστιν, ὅτι & ὁ ἀνεμος & ἡ θάλασσα ὑπακούουσιν αὐτῷ;

Κεφ. ε'. 3.

1 **Κ**ΑΙ ἦλθαν εἰς τὸ πέραν τῆς θαλάσσης εἰς τὴν χώραν τῆς Γαδαρηνῶν.

2 Καὶ ὅτε ἤλθοντι αὐτοῖς ἐκ τῆς πλοῖου, αὐθιγὰς ἀπήντησεν αὐτοῖς ὅκ τῶν μυημείων ἀνδρῶτος ἐν πνύματι ἀκαθάρτῳ.

3 Ὁς τῇ κατοίκησιν εἶχεν ἐν τοῖς μυημείοις, & ἥτε ἀλύσειν ἡδεῖς ἠδύνατο αὐτὸν δεῖναι.

4 Διὰ τὸ αὐτὸν πελάκις πίδαίς & ἀλύσει δεῖσθαι, & διγασχῆσθαι ὑπ' αὐτοῦ τὰς ἀλύσεις, & τὰς πίδαας συντετριφθαι· & οὐδεὶς αὐτὸν ἴσχυε δαμῆσαι.

5 Καὶ

5 Καὶ διὰ πάντων νικτὸς ἔ ημέρας ἐν τοῖς ὅμοις ἔ
 ἐν τοῖς μνήματι ἐν κράζουσ, ἔ κατακύπτων ἑαυτὸν
 κήδοις.

6 Ἰδὼν δὲ τὸν Ἰησοῦν ἀπὸ μακρόθεν, ἰδραμε, ἔ
 προσκυύησεν αὐτῷ.

7 Καὶ κράζας Φωνῇ μεγάλη, εἶπε· Τί ἐμοὶ ἔ σοὶ
 Ἰησοῦ υἱὲ τοῦ Θεοῦ τοῦ ὀψίου; ὀρκίζω σε τὸν Θεόν,
 μή με βασανίσῃς.

8 (Ἐλεγε γὰρ αὐτῷ· Ἐξέλθε τὸ πνεῦμα τὸ ἀκα-
 θαρτεῖν ἐκ τοῦ ἀνθρώπου.)

9 Καὶ ἐπαύσατο αὐτόν· Τί σοι ὄνομα; Καὶ ἀπε-
 κρινθὲν, λέγων· Λεγιὼν ὄνομά μοι· ὅτι πολλοὶ
 ἐσμεν.

10 Καὶ παρεκάλεν αὐτὸν πολλὰ, ἵνα μὴ αὐτοὺς ἀπο-
 στείλῃ εἰς τὰ χωράς.

11 Ἦν δὲ ἐκεῖ πρὸς τὰ ὄρη ἀγέλη χείρων μεγάλη
 βοσκυμένη.

12 Καὶ παρεκάλεσάν αὐτὸν πάντες οἱ δαίμονες, λέ-
 γοντες· Πέμφαν ἡμᾶς εἰς τοὺς χοίρους, ἵνα εἰς αὐτοὺς
 εἰσέλθωμεν.

13 Καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Καὶ
 ἔξελθόντα τὰ πνεύματα τὰ ἀκαθάρτα, εἰσῆλθον εἰς
 τοὺς χοίρους· ἔ ὄρμισεν ἡ ἀγέλη κατὰ τοῦ κρημνὸς εἰς
 τὸ θάλασσαν, (ἔσάν δὲ ὡς διχίλιοι) ἔ ἐπιγυνοῦν ἐν
 τῇ θαλάσσῃ.

14 Οἱ δὲ ῥέοντες τοὺς χοίρους ἔφυγον, ἔ ἀνέγκη-
 λαν εἰς τὸ πέλιον ἔ εἰς τοὺς ἀγρούς· Καὶ ἔξελθον ἰ-
 δεῖν τί ἐστὶ τὸ γεγονός.

15 Καὶ ἐρχονται πρὸς τὸν Ἰησοῦν, ἔ θεωροῦσι
 τὸν δαιμονιζομένον καθήμενον ἔ ἱματισμένον, ἔ
 σαφιστοῦντα τὸν ἑσχηκότα τὸν λεγεῶνα, ἔ ἐφειβή-
 θισάν.

16 Καὶ διηγήσατο αὐτοῖς οἱ ἰδόντες, πῶς ἐγένετο
 τὸ δαιμονιζόμενον, ἔ πρὸς τῷ χοίρῳ.

17 Καὶ ἔρξαντο ὄνυχαιεν αὐτὸν ἀπελθεῖν ἀπὸ τῷ
 ὄρειον αὐτῷ.

18 Καὶ ἐμβάντος αὐτοῦ εἰς τὸ πλοῖον, παρεκάλεν αὐ-
 τὸν ὁ δαιμονισθεὶς ἵνα ἦ μετ' αὐτοῦ.

19 Οὗ δὲ Ἰησοῦς οὐκ ἀφῆκεν αὐτόν, ἀλλὰ λέγει
 αὐτῷ· Ἐπάγε εἰς τὸν οἶκόν σου πρὸς τοὺς σου, ἔ ἀ-
 νήγγειλον αὐτοῖς ὅσα σοι ὁ Κύριος ἐποίησε, ἔ ἡλέ-
 σε σε.

20 Καὶ ἀπῆλθε, ἔ ἔρξατο κηρύσσειν ἐν τῇ Δεκαπό-
 λει ὅσα ἐποίησάν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· ἔ πάντες ἐθαύ-
 μαζον.

21 Καὶ ἀφ' ἐπεράλματος τοῦ Ἰησοῦ ἐν τῷ πλοίῳ πάλιν
 εἰς τὸ πέριον, συνήχθη ὄχλος πολὺς ἐπ' αὐτόν· ἔ ἦν
 παρὰ τὴν θαλάσσαν.

22 Καὶ ἰδοὺ, ἐρχεται εἰς τῷ ἀρχισυνταγῶν, ὀνό-
 ματι Γάβριος· ἔ ἰδὼν αὐτόν, πίπτει πρὸς τοὺς πό-
 δας αὐτοῦ.

23 Καὶ περιεκάλεσεν αὐτὸν πολλὰ, λέγων· Ὅτι τὸ θυγάτριόν μου ἐχάτους ἔχει, ἵνα ἐλθὼν ἐπίθῃς αὐτῇ τὰς χεῖρας, ὅπως σωθῇ, & ζήσεται.

24 Καὶ ἀπελάθε μετ' αὐτῆς· & ἤκολυθε αὐτῇ ὄχλος πολλός, & συνεβλίβον αὐτόν.

25 (Καὶ γυνὴ περὶ οὖσα ἐν ῥύσει αἵματος ἔτη δώδεκα,

26 Καὶ πολλὰ παθῆσεν ὑπὸ πολλῶν ἰατρῶν, & δαπάνησασα τὰ ῥέ εἰσότης πάντα, & μὴδὲν ὠφεληθεῖσα, ἀλλὰ μᾶλλον εἰς τὸ χεῖρον ἐλθούσα·

27 Ἀκούσασα παρὰ τοῦ Ἰησοῦ, ἐλθούσα ἐν τῷ ὄχλῳ ὅστις ἐκεῖ, ἤψατο τοῦ ἱματίου αὐτοῦ.

28 Ἐλεγε γὰρ· Ὅτι καὶ τῷ ἱματίῳ αὐτοῦ ἄψωμαι, σωθήσομαι.

29 Καὶ ὁ θεὸς ἐπεκράτησεν ἡ ἐκτὴς τοῦ αἵματος αὐτῆς· & ἐγινω τῷ σώματι ὅτι ἵσταται ἀπὸ τῆς μαγίης.

30 Καὶ ὁ θεὸς ὁ Ἰησοῦς ἐπιγινούς ἐν εἰρωτῇ τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἐπελθούσῃ, ἐπισταθεὶς ἐν τῷ ὄχλῳ, ἔλεγε· Τίς μου ἤψατο τῷ ἱματίῳ;

31 Καὶ ἔλεγον αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Ὁ ὅστις τὸν ὄχλον συνελθόντά σε, & λέγεις· Τίς μου ἤψατο;

32 Καὶ περιεβλέπετο ἰδεῖν τὴν τοῦτο ποιήσασάν.

33 Ἡ δὲ γυνὴ, φοβηθεῖσα & τρέμουσα, εἰδυῖα ὅτι ἔστη ἐν αὐτῇ, ἦλθε & προσέπεσε αὐτῷ, & εἶπεν αὐτῷ πάντων τὴν ἀλήθειάν.

34 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· Θύγατερ, ἡ πίστις σε σέσωκέ σε· ὕπαγε εἰς εἰρήνῃν, καὶ ἴσθι ὑγιὲς ἀπὸ τῆς μάστιγος σου.)

35 Ἐπὶ αὐτῷ λαλοῦντες, ἔρχονται ἀπὸ τοῦ ἀρχισυναγώγου λέγοντες· Ὅτι ἡ θυγάτηρ σου ἀπέθλη· τί ἔπαισκάλλεις τὸν διδάσκαλον;

36 Ὁ δὲ Ἰησοῦς, ὁθίως ἀκούσας τὸν λόγον λαλοῦντων, λέγει τῷ ἀρχισυναγώγῳ· Μὴ φοβᾶν, μόνην πίστις.

37 Καὶ οὐκ ἀφῆκεν ἕδραν αὐτῷ συνακολληθῆσαι, ἀλλὰ μὴ Πέτρον, & Ἰάκωβον, & Ἰωάννην τὸν ἀδελφόν Ἰακώβου.

38 Καὶ ἔρχεται εἰς τὸν οἶκον τοῦ ἀρχισυναγώγου, καὶ θεωρεῖ θόρυβον, κλαίοντες καὶ ἀλαλῶντες πολλοί.

39 Καὶ εἰσελθὼν λέγει αὐτοῖς· Τί θορυβεῖσθε καὶ κλαίετε; τὸ παιδίον οὐκ ἀπέθλην, ἀλλὰ καθεύδει.

40 Καὶ κατεγέλων αὐτοῦ· Ὁ δὲ, ἐκβυλὼν ἀπάντες, περιεβλήθη τὸν Πάτέρα τοῦ παιδίου καὶ τὴν Μητέρα, & τῆς μετ' αὐτῆς, & εἰσπορεύεται ὅπου ἦν τὸ παιδίον ἀνκειμένον.

41 Καὶ κρατήσας τῆς χειρὸς τοῦ παιδίου, λέγει αὐτῇ· Ταλιθὰ κούμι· ὃ ἐστὶ μεθερμηνεύμενον· Τὸ κοράσιον (σοὶ λέγω) ἔγειραι.

42 Καὶ αὐθεὶς ἀνέστη τὸ κοράσιον, ἔ παθεῖται·
ἐν γὰρ ἐτῷ δαΐδεκα· καὶ ὑξέτησάν ἐκείνη με-
γάλη.

43 Καὶ διετέλεστο αὐτῇ πολλὰ ἵνα μὴ εἴη γυνὴ τῆ-
π· ἔ αἶπε δοθῆναι αὐτῇ φαγεῖν.

Κεφ. ε'. 6.

1 **Κ**Αὶ ἤλθεν ἐκεῖθεν, ἔ ἤλθεν εἰς τὴν πα-
τρίδα αὐτῆ· ἔ ἀκολοῦσιν αὐτῇ οἱ μαθη-
ταὶ αὐτῆ.

2 Καὶ γενομένη Σαββάτι ἤρξατο ἐν τῇ συναγωγῇ
διδάσκειν· ἔ πολλοὶ ἀκρόντες ἠεπλίοντο, λεγον-
τες· Πόθεν ταῦτα; ἔ τίς ἡ σοφία ἡ δοθῆσα
αὐτῇ, ὅτι ἔ δυνάμει τοιαῦτα διὰ τῆς χειρῶν αὐτῆ
γίνονται;

3 Οὐχ ἕτος ἐστὶν ὁ τέκτων, ὁ γιὸς Μαρίας, ἀδελ-
φὸς δὲ Ἰακώβου ἔ Ἰωσήφ, ἔ Σίμωνος; ἔ ἡ
ἐστὶν αὐτῷ ἀδελφὴ αὐτῆ ὡς πρὸς ἡμᾶς; Καὶ ἐσκαρδα-
λίζοντο ἐν αὐτῇ.

4 Ἐλεγε δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὔτις ἐστὶ Προφήτης
ἐν τῇ πατρίδι αὐτῆ, ἔ ἐν τοῖς συγγε-
νέσι, ἔ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτῆ.

5 Καὶ ἡ ἰδύνατο ἐκεῖ ὑδεμίᾳ δυνάμει ποιῆσαι,
εἰ μὴ οἰλίγοις ἀρρώστοις ἐπιθεῖς τὰς χεῖρας, εἰδερὰ
πῶσε.

6 Καὶ ἐθαύμαζε διὰ τὴν ἀπισίαν αὐτῶν. Καὶ παθε-
γε τὰς κοίμας κυκλῶ, διδάσκων.

7 Καὶ προσκαλεῖται τὴν δαΐδεκα, ἔ ἤρξατο αὐτοῖς ἀ-
ποστέλλειν δύο δύο· ἔ ἐδίδω αὐτοῖς ἡεσιάν τῷ Πι-
λάτῳ τῶ ἀκαθάρτου.

8 Καὶ παρήγγειλεν αὐτοῖς, ἵνα μὴ ἐν αἵραιον εἰς ὁ-
δόν, εἰ μὴ ῥάβδον μόνον· μὴ πῆρην, μὴ ἄρτον, μὴ εἰς
τὴν ζώνην χαλκὴν.

9 Ἀλλ' ὑποδεδεμένης σαρδάλια· ἔ μὴ ἐιδύσασθαι
δύο χιτῶνας.

10 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Οὔτις ἐὰν εἰσέλθῃ εἰς οἰ-
κίαν, ἐκεῖ μέτετε ἕως ἂν ἡέλθῃτε ἐκεῖθεν.

11 Καὶ ὅσει ἂν μὴ δέξονται ὑμᾶς, μὴδὲ ἀκρό-
σιν ὑμῶν, ἐκπορεύεσθαι ἐκεῖθεν, ἐκτινάξαι τὸν
χῆν τὸν ὑποκάτω τῷ ποδῶν ὑμῶν, εἰς μαρτύριον αἰ-
πίς· ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ἀνεκτότερον ἐστὶ Σοδό-
μοις ἢ Γεζόρ· τοῖς ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως, ἢ τῇ πέλῃ ἐ-
κείνῃ.

12 Καὶ ἡελθόντες ἐκήρυον ἵνα μετανοήσωσι.

13 Καὶ δαιμόνια πολλὰ ἡέβαλεν· ἔ ἡλειφον ἐκείνῳ
πολλὰς ἀρρώστιας, ἔ εἰδερὰτοον.

14 Καὶ ἐκῆσε ὁ βασιλεὺς Ἡρώδης, (φανερὸν γὰρ
ἐγίνετο τὸ ὄνομα αὐτῆ) ἔ ἐλίγε· ὅτι Ἰωάννης
ἔ ἔα

ὁ βαπτίζων ὡς νεκρῶν ἠγέρθη, & διὰ τῆς ἐνεργήσεως αὐτῆς δυνάμεις ἐν αὐτῷ.

15 Ἄλλοι ἐλέγον· Ὅτι Ἡλίας ἐστίν· ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Ὅτι προφήτης ἐστίν, ἢ ὡς εἰς τῶν προφητῶν.

16 Ἀκούσας ὁ Ἡρώδης, εἶπεν· Ὅτι ὅτι ἐγὼ ἀτεκεφάλισα Ἰωάννην, ὁ τὸς ἐστίν, αὐτὸς ἠγέρθη ὡς νεκρῶν.

17 Αὐτὸς γὰρ ὁ Ἡρώδης, ἀποστείλας ἐκράτησε τὸν Ἰωάννην, & ἔθηκεν αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ διὰ Ἡρωδιδῆς τὴν γυναῖκα Φιλίππου τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ὅτι αὐτὴν ἐγάμησεν.

18 Ἐλεγε γὰρ ὁ Ἰωάννης τῷ Ἡρώδῃ· Ὅτι ἢκ ἔξεςί σοι ἔχην τὴν γυναῖκα τῆς ἀδελφῆς σου.

19 Ἡ δὲ Ἡρωδιδὴς ἐνέχευεν αὐτῷ, & ἠθέλει ἀντὶς ἀποκτείναι· & ἢκ ἡδύνατο.

20 Ὁ γὰρ Ἡρώδης ἐφοβήθη τὸν Ἰωάννην, ἐπὶ ὧς αὐτὸν ἄνδρα δίκαιον & ἁγίον· & συνετήρει αὐτόν· & ἀκούσας αὐτοῦ, πολλὰ ἐποίησεν, & ἠδέως αὐτῷ ἔκανε.

21 Καὶ ἡμετέρας ἡμέρας δικάζει, ὅτε Ἡρώδης τοῖς ἡγεσίοις αὐτοῦ δέπνον ἐποίησεν τοῖς μεγίστοις αὐτοῦ, & τοῖς χηλιάρχοις & τοῖς πρώτοις τῆς Γαλιλαίας.

22 Καὶ εἰσελθούσης τῆς θυγατρὸς αὐτοῦ τῆς Ἡρωδιδῆς, & ὀρχησαμένης, & ἀρεσάσης τῷ Ἡρώδῃ & τοῖς συνανακτιμένοις, εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ κορασίῳ· Αἰτήσόν με ὃ ἐάν θέλῃς, & δώσω σοί.

23 Καὶ ἠρώτησεν αὐτῇ· Ὅτι ὃ ἐάν με αἰτήσῃς, δώσω σοι, ἕως ἡμίσης τῆς βασιλείας μου.

24 Ἡ δὲ θέλθῶσα, εἶπε τῇ μητρὶ αὐτοῦ· Τί αἰτήσωμαι; Ἡ δὲ εἶπε· Τὴν κεφαλὴν Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

25 Καὶ εἰσελθῶσα ἀφ' ἧς μετὰ σπουδῆς πρὸς τὸν βασιλέα, ῥήσασα, λέγῃσα· Θέλω ἵνα μοι δῷς ὡς ἔπαυται ἐπὶ πίνακι τῆς κεφαλῆς Ἰωάννου τοῦ Βαπτιστοῦ.

26 Καὶ πθελόντος ἡρώδους ὁ βασιλεὺς, διὰ τὸ ὅρκον & τὰς συνακτιμένους ἢκ ἠθέλησεν αὐτῇ ἀδότησαι.

27 Καὶ ἀφ' ἧς ἀποστείλας ὁ βασιλεὺς ἀπεκάλυψε τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ.

28 Ὁ δὲ ἀπὸ τοῦ πίνακος ἀπεκάλυψε αὐτὸν ἐν τῇ φυλακῇ· & ἔθηκε τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ ἐπὶ πίνακι, & ἔδωκεν αὐτῇ τῷ κορασίῳ· & τὸ κοράσιον ἔδωκεν αὐτῇ τῇ μητρὶ αὐτοῦ.

29 Καὶ ἀκούσαντες οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἦλθον & ἤραν τὸ πτώμα αὐτοῦ, & ἔθηκαν αὐτὸ ἐν μίθρῳ.

30 Καὶ συνάγονται οἱ ἀπόστολοι πρὸς τὸν Ἰησοῦν, & ἀπήγγειλαν αὐτῷ πάντα & ὅσα ἐποίησαν, & ὅσα ἐδίδαξαν.

31 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Δεῦτε ὑμεῖς αὐτοῖς κατ' ἰδίαν εἰς ἄρμονον τόπον, & ἀναπαύσθε ὀλίγον· Ἡσάμην γὰρ οἱ ἱεροῦσμοι & οἱ υπάγοντες πολλοί· & ἔξω φαγαίτ ἐν καίρῳ.

32 Καὶ ἀπῆλθον εἰς ἔρημον τόπον τῷ πλοίῳ κατ' ἰδίαν.

33 Καὶ εἶδον αὐτὸς ὑπάγοντας οἱ ὄχλοι· ἔπει-
γνῶσαν αὐτὸν πολλοί· ἔτιξεν ἀπὸ πασῶν τῶν πό-
λεων συνεδράκων ἐκεῖ· ἔπροῆλθον αὐτὸς, ἔσπερην-
θον πρὸς αὐτόν.

34 Καὶ προσελθὼν εἶδεν ὁ Ἰησοῦς πολὺν ὄχλον, ἔ-
σπερην γυνίσθη ἐπ' αὐτοῖς, ὅτι ἤσαν ὡς πρόβατα
μὴ ἔχοντες ποιμένα· ἔῤῥητο διδάσκων αὐτοὺς πολ-
λά.

35 Καὶ ἦδη ὥρας πολλῆς ἡγομένης, προσελθόντες
αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῇ, λέγουσιν· Ὅτι ἐρημός ἐστιν ὁ
τόπος, ἔτιξεν ὥρα πολλή·

36 Ἀπολύσαντες αὐτούς, ἵνα ἀπελθόντες εἰς τῆς κύκλῳ
ἀγρῆς ἔκωμος, ἀγαράσωσιν ἰσχυροῖς ἄρτους· τί γὰρ
φύωσιν ἢ ἔχουσιν.

37 Ὁ δ' ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Δότε αὐτοῖς ὑ-
μεῖς φαγεῖν. Καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Ἀπελθόντες ἀγα-
ράσωμεν δίσκους ὅσους ἴσχυον ἄρτας, ἔδωκεν αὐτοῖς
φάγεσθαι.

38 Ὁ δὲ λέγει αὐτοῖς· Πόσους ἄρτας ἔχετε; ὑπά-
γετε ἔιδετε· Καὶ γνόντες, λέγουσι· Πέντε, ἔδωκεν
ἰχθύας.

39 Καὶ ἐτέταξεν αὐτοῖς ἀνακλιῆται πάντας συμπόσιον
συνκρίψας ἐπὶ τῷ χορτῷ.

40 Καὶ ἀνέπεσον πρὸς αὐτὸν πρασιμί, ἀνὰ ἑκατὸν ἔ-
καστος πεντήκοντα.

41 Καὶ λαβὼν τῆς πέντε ἄρτης ἔτιξεν αὐτοῖς ἰχθύας,
ὡναβλέψας εἰς τὸν οὐρανόν, εὐλόγησε, ἔκατέκλασε τῆς
ἄρτης· ἔδωκε τῆς μαθηταῖς αὐτῷ ἵνα καταδιδοῦσιν
αὐτοῖς, ἔτιξεν αὐτοῖς ἰχθύας ἐμέρισε πᾶσι.

42 Καὶ ἔφαθον πάντες, ἔχορτάσθησαν.

43 Καὶ ἔσθην κλαυθμῶν δώδεκα κοφίνους πλήρεις, ἔ-
καστος τῶν ἰχθύων.

44 Καὶ ἔσθην οἱ φαγόντες τῆς ἄρτης, ὡς ἑκατὸν πεν-
τήκοντα ἄνδρες.

45 Καὶ εὐθέως ἠγάπησε τῆς μαθηταῖς αὐτῷ ἰμ-
βῆναι εἰς τὸ πλοῖον, ἔπρασεν εἰς τὸ πέραν πρὸς Βη-
θσαϊδάν, ὥς αὐτὸς ἀπολύσῃ τὸν ὄχλον.

46 Καὶ ἀπαταξάμενος αὐτοῖς, ἀπῆλθεν εἰς τὸ ὄρος
προσέξασθαι.

47 Καὶ ἐψίλας ἡγομένης ἦν τὸ πλοῖον ἐν μέσῳ τῆς
θαλάσσης, καὶ αὐτὸς μόνος ἐπὶ τῷ ῥῆϊ.

48 Καὶ εἶδεν αὐτὸς βασανιζομένην ἐν τῷ ἱλαρίῳ·
(ἦν γὰρ ἄνεμος ἐναντίας αὐτοῖς). ἔπρετε τὸ πλοῖον
καὶ τὸ πλοῖον ἐρχεται πρὸς αὐτὸς πρὸς τὸ πλοῖον ἐπὶ τῆς
θαλάσσης· ἔπρετε περιελθεῖν αὐτὸς.

49 Οἱ δ' ἰδόντες αὐτὸν πρὸς τὸ πλοῖον ἐπὶ τῆς θα-
λάσσης, ἐδοξάν φάντασμα εἶναι, ἔκλυον.

50 (Πάντες γὰρ αὐτὸν εἶδον, ἔταράχθησαν.) Καὶ
εὐθέως

οὐδέως ἐκέλευε μετ' αὐτῶν, & λέγει αὐτοῖς· Θαρσύνετε, ἐγὼ εἰμι, μὴ φοβᾶσθε.

51 Καὶ ἀνέβη πρὸς αὐτῆς εἰς τὸ πλοῖον· & ὁκίσασεν ὁ ἀνεμὸς· & λίαν ὅκωθεν ὅς ἱκανοὺς ἐξείτην, & ἐθαύμαζον.

52 Οὐ γὰρ συνῆκαν ἐπὶ τοῖς ἄρτοις· ὃν γὰρ ἡ καρδία αὐτῶν πεπωρωμένη.

53 Καὶ διψοπερίσχυτες ἦλθον ἐπὶ τῷ γὰρ Γενηθῆναι· & προσωμεύσθησαν.

54 Καὶ ἔλθόντων αὐτῶν ὅκω πλείον, οὐδέως ἐπιγινόντες αὐτόν,

55 Περιδρακνόντες ὅλῳ τῷ πλοῖον ὁκίσαντες, ἠρξάντο ἐπὶ τοῖς κοαββάτις τῆς κακῶς ἔχοντος πωλῆσαι, ὅτι ἤκουον ὅτι ὁκίᾳ ἐστὶ.

56 Καὶ ὅτε ἀνείπερόβητο εἰς κόμας, ἡ πόλις, ἡ ἀγορὰ, ἐν ταῖς ἀγοραῖς ἐτίθουν τοὺς ἀσθενούντας, & παρεκάλουν αὐτὸν ἵνα καὶ τοῦ κρασπέδου τοῦ ἱματίου αὐτοῦ ἄψωνται· & ὅσοι ἀνῆγοντο αὐτοῦ, ἐσθίζοντο.

Κεφ. ζ'. 7.

ΚΑὶ συνάγονται πρὸς αὐτόν οἱ Φαρισαῖοι, καὶ τινες τῶν Γραμματέων, ἐλθόντες ἀπὸ Γεροσολύμων.

2 Καὶ ἰδόντες τινὰς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ κοιναῖς χερσὶ (τὰς εἰν ἀνιπτοῖς) ἐσθίζοντας ἄρτους, ἐμέμψαντο.

3 (Οἱ γὰρ Φαρισαῖοι καὶ πάντες οἱ Ἰουδαῖοι, ἐὰν μὴ πυγμῇ νίψωνται τὰς χεῖρας, οὐκ ἐσθίεισι, κρατύντες τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων.

4 Καὶ ἀπὸ ἀγορᾶς, ἐὰν μὴ βαπτίσωνται, οὐκ ἐσθίεισι· & ἄλλα πολλὰ εἰσιν ἃ παρέλαβον κρατεῖν· βαπτισμοὺς ποτηρίων & ξερῶν & χαλκίων & κλινῶν.)

5 Ἐπειτα ἐπερωτῶσιν αὐτὸν οἱ Φαρισαῖοι & οἱ Γραμματεῖς· Διὰ τί οἱ μαθηταὶ σου ἡ πλεοναξία καὶ τὴν παράδοσιν τῶν πρεσβυτέρων, ἄλλα ἀνιπτοῖς χερσὶν ἐσθίεισι τὸν ἄρτον;

6 Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι καλῶς προφητεύειν Ἡσαΐας περὶ ὑμῶν τῶν ὑποκριτῶν· ὡς γὰρ γράπται· Οὗτος ὁ λαὸς τῆς χεῖρός μου τιμᾷ, ἡ δὲ καρδία αὐτῶν πόρρω ἀπέχει ἀπ' ἐμῆ.

7 Μὰ τὼ ὅς ἐβόλνται με, διδάσκοντες διδασκαλίαις, ἐντάλματα ἀνθρώπων.

8 Αφέντες γὰρ τὴν ἐντολὴν τοῦ Θεοῦ, κρατεῖτε τὴν παράδοσιν τῶν ἀνθρώπων, βαπτισμὸς ξερῶν & ποτηρίων· καὶ ἄλλα παρόμοια τεικῶνται πολλὰ ποιεῖτε.

9 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς· Καλῶς ἀφειρήτε τὴν ἐπιτολὴν τοῦ Θεοῦ, ἵνα τὴν παράδειξιν ὑμῶν τηρήσῃτε.

10 Μωσῆς γὰρ εἶπε· Τίμα τὸν Πατέρα σου καὶ τὴν Μητέρα σου· καὶ· Οὗτο κακολογῶν Πατέρα ἢ Μητέρα, ἀνάττω τελευτάτω.

11 Ὑμεῖς δὲ λέγετε· Εἴαν εἴπῃ ἄνθρωπος, τῷ Πατρὶ ἢ τῇ Μητρί· Κοῦράν (ὃ ἐστὶ, δῶρον) ὃ ἐλθὼν ὑπὲρ ἐμοῦ ὠφεληθήσεται.

12 Καὶ ἀκέτι ἀφίετε αὐτὸν ἕδὲν ποιῆσαι τῷ Πατρὶ αὐτοῦ ἢ τῇ Μητρί αὐτοῦ.

13 Ἀκυρῶντες τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ τῇ παραδόσει ὑμῶν, ἣ παρεδώκατε· καὶ παρέμοια τοιαῦτα πολλὰ ποιεῖτε.

14 Καὶ προσκαλεσάμενος πάντας τὸν ὄχλον, ἔλεγεν αὐτοῖς· Ἀκέτε μὴ πάντες, καὶ συνίετε.

15 Οὐδὲν ἐστὶν ἐξωθεν τῷ ἄνθρωπῳ εἰσπορεύμενον εἰς αὐτόν, ὃ δύναται αὐτὸν κοινῶσαι· ἀλλὰ τὰ ἐκπορεύμενα ἀπ' αὐτοῦ, ἐκείνα ἐστὶ τὰ κοινῶντα τὸν ἄνθρωπον.

16 Εἴτις ἔχει ὅσα ἀκούει, ἀκέται.

17 Καὶ ὅτε εἰσῆλθεν εἰς οἶκον ἀπὸ τοῦ ὄχλου, ἐπῃρώτων αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ περὶ τῆς παραβολῆς.

18 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Οὕτως καὶ ὑμεῖς ἀσυνετοὶ ἐστέ· ἢ νοεῖτε ὅτι πᾶν τὸ ἐξωθεν εἰσπορεύμενον εἰς τὸν ἄνθρωπον, ἢ δύναται αὐτὸν κοινῶσαι;

19 Ὅτι ἢ καὶ μαρτυρεῖται αὐτῷ καὶ τῷ καρδίᾳ, ἀλλ' εἰς τὴν κοιλίαν· καὶ εἰς τὴν ἀφιδρώνα ἐκπορεύεται, καὶ θαρῆζον πᾶντα τὰ βρώματα.

20 Ἐλεγε ὅ, ὅτι τὸ ἐκ τοῦ ἄνθρωπου ἐκπορεύμενον, ἐκείνο κοινῶν τῷ ἄνθρωπῳ.

21 Ἐσῶθεν γὰρ ἐκ τῆς καρδίας τῶν ἀνθρώπων οἱ σαρκογίτμοι οἱ κακοὶ ἐκπορεύονται, μοιχεύειν, πορνεῖν, φόνον,

22 Κλοπαί, πλεονεξίαι, πονηρίαι, δόλος, ἀσέλγεια, ὀφθαλμοὶ πονηροί, βλασφημίαι, ὑπερηφάνεια, ἀφροσύνη.

23 Πᾶντα ταῦτα τὰ πονηρὰ ἐσῶθεν ἐκπορεύεται, καὶ κοινῶν τῷ ἄνθρωπῳ.

24 Καὶ ἐκείθεν ἀναστὰς ἀπῆλθεν εἰς τὰ μετέωρα Τύρου καὶ Σιδῶνος· καὶ εἰσελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν, ἕδεν αὐτὴν καὶ ἠγάπησεν· καὶ ἦν ἡδυνήθη λαθεῖν.

25 Ἀκούσας γὰρ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, ἣς ἦχε τὸ θυγάτριον αὐτοῦ πνεῦμα ἀκάθαρτον, ἐλθὼσα προσέτεσε πρὸς τῆς πόδας αὐτοῦ.

26 (Ἦν δὲ ἡ γυνὴ Ἑλληνίς, Συροφοῖνισσα τῷ γένει.) καὶ ἠρώτα αὐτόν, ἵνα τὸ δαιμόνιον ἐκβάλῃ ἐκ τῆς θυγατρὸς αὐτῆς.

27 Οὗ δὲ ἰσχύς εἶπεν αὐτῇ· Ἀφες πρῶτον χορτασθῆναι τὰ τέκνα, ἢ γὰρ καλὸν ἐστὶ λαβεῖν τὸν ἄρτον τοῦ τέκνου, καὶ βαλεῖν τοῖς κυνάρσι.

28 Ἦ' ὅ ἀπεκρίθη, καὶ λέγει αὐτῇ· Ναὶ Κύριε.

καὶ γὰρ

Εἰς τὰ κυρία ὑποκάτω τῇ τραπέζῃ ἐσθίει ἀπὸ τοῦ ψυχίου τοῦ παιδίου.

29 Καὶ εἶπεν αὐτῇ. Διὰ πτόν τόν λέγον ὑπαγε· ἔξεληλυθε τὸ δαμόνιον ἐκ τῆς θυγατρὸς σου.

30 Καὶ ἀπελθούσα εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς εὗρε τὸ δαμόνιον ἔξεληλυθός, ἔτι τὴν θυγατέρα βεβλημένῳ ἐπὶ τῇ κλίνῃ.

31 Καὶ πάλιν ἔξελθὼν ἐκ τοῦ οἴκου Τύρου ἔτι Σιδωνίταις, ἦλθε πρὸς τὸν θάλασσαν τῆς Γαλιλαίας, ἀνα μέτον τῶν οἰκῶν Δεκαπόλεως.

32 Καὶ φέροντι αὐτῷ ναφὸν μεγάλον· ἔπειτα καλῶσι αὐτόν, ἵνα ἐπιθῇ αὐτῷ τὴν χεῖρα.

33 Καὶ ἀπολαβόμενος αὐτόν ἀπὸ τοῦ ὄχλου κατ' ἐδῆσαν, ἔκλε τῆς δακτύλης αὐτῆς εἰς τὰ ὦτα αὐτῆς· ἔπειτα ἔψατο τὴν γλῶσσαν αὐτῆς.

34 Καὶ ἀναβλέψας εἰς τὸν ἥμερον, ἐσέταξε, ἔπειτα αὐτῷ. Εἴπαθ' ὅτι ἐγώ, Ἰησοῦς Χριστός.

35 Καὶ οὐδὲν διωροίχθησάν αὐτῷ αἱ ἀκοαί. ἔπειτα ὁ δαίμων τῆς γλῶσσης αὐτῆς, ἔπειτα ὁ δαίμων.

36 Καὶ διεσέλατο αὐτοῖς ἵνα μηδεὶς ῥησιν· ὅτι ἐν αὐτοῖς αὐτοῖς διεσέλλετο, μᾶλλον περὶ αὐτοῦ ἐκρυπτοῦσαν.

37 Καὶ ὑπερβησάντες ἐξεπλήθυνον, λέγοντες. Καλῶς πάντα πεποιήκει· ἔπειτα τὸν κοῦφον ποιῶν ἀκούειν, ἔπειτα τὸν ἀλάλυν λαλῶν.

Κεφ. ἡ. 8.

1 Εἰς ἐκείνας ταῖς ἡμέρας, παντόλλῃ ὄχλοι ὄντος, ἔπειτα μὴ ἔχόντων τί φαῖναι, προσκαλεσάμενος ὁ Ἰησοῦς τὸν μαθητὴν αὐτῶν, λέγει αὐτοῖς.

2 Σπλγχνίζομαι ἐπὶ τὸν ὄχλον· ὅτι ἤδη ἡμέρας τρεῖς προσμενησὶ μοι, ἔπειτα ἔχουσι τί φαῖναι.

3 Καὶ ἐπὶ ἀπολύτω αὐτοὺς γῆρας εἰς οἶκον αὐτῶν, ἐκλυθήσονται ἐν τῇ ὁδῷ· τινες γὰρ αὐτῶν μακρόθεν ἦκουσι.

4 Καὶ ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτῶν. Πόθεν τῶν δυνάμεων τις ὡς χαρτάσαι ἄρτων ἐπὶ ἱερμίας;

5 Καὶ ἐπρώτα αὐτῆς. Πότες ἔχετε ἄρτους; Οἱ δὲ εἶπον. Ἐπτά.

6 Καὶ παρήγγειλε τῷ ὄχλῳ ἀναπεταῖν ἐπὶ τῆς γῆς· ἔπειτα λαβὼν τὸν ἑπτὰ ἄρτον, εὐχαριστήσας ἔκλασε, ἔπειτα διδόν τῷ μαθητῇ αὐτῷ ἵνα παραδώσῃ· ἔπειτα παρέθηκεν τῷ ὄχλῳ.

7 Καὶ εἶχον ἰχθυῖδια ἑλίγα· ἔπειτα εὐλογήσας εἶπε παραδίδειν ἔπειτα αὐτά.

8 Ἐφαγεν δὲ, ἔχορτάσθη· ἔπειτα πρὸς ἑαυτὸν
μακάριον ἔλεγεν, ὅτι ἐγώ σαρκοφάγος.

9 Ὁ δὲ εἰς φαγόντες, ὡς τετρακισχίλις· ἔαπὶ-
λυσεν αὐτῷ.

10 Καὶ ἀφ' οὗ ἐμβὰς εἰς τὸ πλοῖον μετὰ τῶν μαθητῶν
αὐτοῦ, ἦλθεν εἰς τὰ μέση Δαλαμανθῆ.

11 Καὶ Ἰσραὴλ οἱ Φαρισαῖοι, ἔκ τῃς ἑρμηνείας
αὐτοῦ, ζητῶντες παρ' αὐτοῦ σημεῖον ἀπὸ τοῦ ὕδατος, περι-
ζῶντες αὐτόν.

12 Καὶ ἀναστὰς ἐπὶ τῷ πλοίῳ αὐτοῦ, λέγει. Τί ἡ
χρῆς αὕτη σημεῖον ἐπιζητεῖτε; ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ἡ δο-
ξάζεται τῇ χρεῇ ταύτῃ σημεῖον.

13 Καὶ ἀφ' οὗ αὐτοῦ, ἐμβὰς πάλιν εἰς τὸ πλοῖον,
ἀπῆλθεν εἰς τὸ πέραν.

14 Καὶ ἐπὶ τῷ πλοίῳ λαβὼν ἄρτους, ἔκ τῃς ἑρμηνείας
αὐτοῦ, ἐκείνῳ μετὰ τῶν μαθητῶν ἐν τῷ πλοίῳ.

15 Καὶ διετέλετο αὐτοῖς, λέγων. Ὁρᾶτε, βλέ-
πτε ἀπὸ τῆς ζύμης τῶν Φαρισαίων ἔκ τῃς ἑρμηνείας ἡ-
ρώδου.

16 Καὶ διελογίζαντο πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες. Ὅσα
ἄρτους ἐκ ἔχομεν.

17 Καὶ γὰρ ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς. Τί διελογί-
ζεσθε, ὅτι ἄρτους ἐκ ἔχετε; ἔγωγε τοῦτο, ἀλλὰ συνίετε·
ἐπὶ πενηνταμέτῳ ἔχετε τὴν καρδίαν ὑμῶν;

18 Ὁφθαλμοὶ ἔχοντες ὅρατε; ἔκ τῃς ἑρμηνείας
ἐκ ἀκούετε; ἔκ τῃς ἑρμηνείας;

19 Ὅτε τὰς πεντήκοντα ἄρτους ἐκείνῳ εἰς τῆς πεντακισ-
χίλις, πόσους κοφίνας πλήρεις κλασμάτων ἤρατε; λέγου-
σιν αὐτῷ, Δώδεκα.

20 Ὅτε δὲ τὸς ἑπτὰ εἰς τῆς τετρακισχίλις, πόσους
σπορίδων πληρεῖς κλασμάτων ἤρατε; Οἱ δὲ ἀπο-
κρίθη, ἑπτὰ.

21 Καὶ ἔλεγε αὐτοῖς. Πῶς ἔσονται;

22 Καὶ ἔρχεται εἰς Βηθσαϊδάν· ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ
τυφλῶν, ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ ἵνα αὐτοῦ ἀφῇται.

23 Καὶ ἐπιλαβόμενος τὰς χεῖρας τοῦ τυφλοῦ, ἐξήγαγεν
αὐτόν ἐκ τῆς κώμης· ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ εἰς τὰ ὄμματα αὐ-
τοῦ, ἐπὶ τῆς ἑρμηνείας αὐτοῦ ἵνα αὐτοῦ ἀφῇται.

24 Καὶ ἀναβλέψας, ἔλεγε. Βλέπω τὰς ἀνθρώπους ὡς
δένδρα θεατῶντας.

25 Ἐπὶ τὰς πεντήκοντα ἄρτους, ἐπὶ τῆς ἑρμηνείας
αὐτοῦ, ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ ἀναβλέψας. ἔκ τῃς ἑρμηνείας
αὐτοῦ, ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ ἀναβλέψας.

26 Καὶ ἀπέστειλεν αὐτόν εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, λέγων·
Μηδὲ εἰς τὴν κώμην εἰσελθῆς, μηδὲ εἰς τὴν κώμην
εἰσελθῆς.

27 Καὶ ἔπλετο ὁ Ἰησοῦς ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ εἰς τὰς
κώμας Κανταρείας καὶ Φιλίππων. ἔκ τῃς ἑρμηνείας αὐτοῦ
εἰς τὰς κώμας Κανταρείας καὶ Φιλίππων. ἔκ τῃς ἑρμηνείας
αὐτοῦ εἰς τὰς κώμας Κανταρείας καὶ Φιλίππων.

28 Οἱ δὲ μετεκρίθησαν· Ἰωάννου τὸν Βαπτιστὰν· ἔτι ἄλλοι, ἡλίου· ἄλλοι δὲ, ἕνα τῶν Προφητῶν.

29 Καὶ αὐτοὶ λέγουσι αὐτοῖς· Ὑμεῖς, δὲ τίνα με λέγετε εἶναι; Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, λέγει αὐτοῖς· Σὺ εἶ ὁ Χρῆστος.

30 Καὶ ἐπετίμησιν αὐτοῖς, ἵνα μηδενὶ λέγωσι περὶ αὐτῶν.

31 Καὶ ᾤρετο διδάσκειν αὐτὰς, ὅτι δεῖ τὸ Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου πολλὰ παθεῖν, ἔτι ἀποδοκιμασθῆναι, ἀπὸ τοῦ Πρέσβυτερον καὶ Ἀρχιερέων καὶ Γραμματέων, καὶ ἀποκτενεσθῆναι, καὶ μετὰ τρεῖς ἡμέρας ἀναστῆναι.

32 Καὶ παρρησίᾳ τὸ λόγον ἐλάλει. Καὶ προσλαβόμενος αὐτὸν ὁ Πέτρος, ᾤρετο ἐπιτιμᾶν αὐτῷ.

33 Οἱ δὲ ὑποσχεθεὶς, ἔτι δὲ ἰδὼν τὴν μαθητὰς αὐτοῦ, ἐπετίμητε τῷ Πέτρῳ, λέγων· Ὑπάγε σίτω με Σαταναῖ· ὅτι ἔφρονεῖς τὰ τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τὰ τῶν ἀνθρώπων.

34 Καὶ προσκυλιστάμενος τὸ ὄχλον σὺν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Ὅστις θέλει σίτω με ἐλθεῖν, ἀπαρνησάτω ἑαυτόν, καὶ ἀράτω τὸ Σταυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἀκολουθήτω μοι.

35 Ὅς γὰρ ἂν θέλῃ τὸ ψυχλὸν αὐτοῦ σῶσαι, ἀπολέσει αὐτὸν· ὅς δ' ἂν ἀπολέσῃ τὴν ψυχλὴν αὐτοῦ ἐνεκεν ἐμοῦ καὶ τοῦ Εὐαγγελίου, ἅτος σώσει αὐτήν.

36 Τί γὰρ ὠφελήσει ἄνθρωπον, εἰάν κερδήσῃ τὸ κόσμον ὅλον, καὶ ζημιωθῇ τὴν ψυχλὴν αὐτοῦ;

37 Ἡ δὲ τί δώσει ἄνθρωπος ἀντάλλαγμα τὸ ψυχῆς αὐτοῦ;

38 Ὅς γὰρ ἂν ἐπαιχυνθῇ μετὰ τοῖς ἐμοῖς λόγοις ἐν τῇ γενεᾷ ταύτῃ τῇ μοιχαλίδι καὶ ἁμαρτωλῇ, καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐπαιχυνθήσεται αὐτόν, ὅταν ἔλθῃ ἐν τῇ δόξῃ τοῦ Πατρὸς αὐτοῦ μετὰ τῶν Ἀγγέλων τῶν αἰγίων.

Κεφ. θ'. 9.

1 **Κ**ΑΙ ἔλεγεν αὐτοῖς· Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι εἰσὶ τινες τῶν ὧδε ἐσσηκίων, οἵτινες ἡ μὴ γινώσκονται θανάτῳ, ἕως ἄν ἴδωσι τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ἐλευθευθῆναι ἐν δυνάμει.

2 Καὶ μετὰ ἡμέρας ἑξὶ παραλαμβάνει ὁ Ἰησοῦς τὸν Πέτρον καὶ τὸν Ἰάκωβον καὶ τὸν Ἰωάννην, καὶ ἀνφέρει αὐτοὺς εἰς ὄρος ὑψηλὸν καὶ ἰδίᾳ μόνος· καὶ μετεμορφώθη ἐμπροσθεν αὐτῶν.

3 Καὶ τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἐγένετο σιλβερὰ, λευκὰ ὡς χιτὼν, οὐκ ἔχοντα γυφούς ἐπὶ τῆς γῆς ἢ δύναται λαβάναι.

4 Καὶ ὤφθη αὐτοῖς Ἡλίας σὺν Μωσέϊ· καὶ ἔσαν συλλαλῶντες τῷ Ἰησοῦ.

Καὶ

5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Πέτρος, λέγει πρὸς Ἰησοῦν· Μαθητὴς, καλὸν ἐστὶν ἡμῶς αὐτὸ εἶναι· ὅπως ποιήσωμεν ὅτι τῆς, σοὶ μίση, ὅτι Μωσὴ μίση, ὅτι Ἡλίου μίση.

6 Οὐ γὰρ ἔδει τί λαλήσῃ· ἡσῶν γὰρ ἐκφοβοί.

7 Καὶ ἐγένετο νεφέλη ὑπερσκιάζουσα αὐτοὺς· καὶ ἦλθε φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης, λέγουσα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ ζῶντος, ἀκούετε.

8 Καὶ ἔκριναν πρὸς τὸν Ἰησοῦν, ἡκούσαντες τὰς φωνάς, καὶ ἔβλεπον αὐτὸν· καὶ ἦλθεν ἡ φωνὴ ἐκ τῆς νεφέλης, λέγουσα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ ζῶντος, ἀκούετε.

9 Καταβαινόντων δὲ αὐτῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους, διπελάτω αὐτοὺς, ἵνα μηδενὶ διηγησώμεθα τὰς φωνάς, εἰ μὴ ὅταν ὁ Υἱὸς τοῦ ζῶντος ἀποστείλῃ ἐκ νεκρῶν ἀνάστα.

10 Καὶ τὸν λόγον ἐκράτησαν πρὸς ἑαυτούς, συζητούντες τί ἐστὶ τὸ ἐκ νεκρῶν ἀνάστα.

11 Καὶ ἐκηρύτταν αὐτὸν, λέγοντες· Ὅτι λέγουσιν οἱ Γραμματεῖς, ὅτι Ἡλίου δεῖ ἔλθειν πρῶτον.

12 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἡλίας μὲν ἔλθων πρῶτον, ἀποκαθίστα πάντα· ὅπως γέγραπται ἐπὶ τοῦ Υἱοῦ τοῦ ζῶντος, ἵνα πολλὰ πάθῃ, καὶ ἔξουθενωθῇ.

13 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὁ Ἡλίας ἔλθων, καὶ ἐποίησαν αὐτῷ ὅσα ἠθέλησαν, καθὼς γέγραπται ἐπὶ αὐτόν.

14 Καὶ ἔλθων πρὸς τῆς μαθητῶν, εἶδεν ὄχλον πολλόν· καὶ αὐτοὺς, καὶ Γραμματεῖς συζητούντας αὐτοῖς.

15 Καὶ ἀποκριθεὶς πᾶσι ὁ ὄχλος ἰδὼν αὐτὸν ἠξεθαμβήθη, καὶ προστρέχοντες ἁπαλίζοντο αὐτόν.

16 Καὶ ἐπερώτησε τῶν Γραμματέων· Τί συζητεῖτε πρὸς αὐτόν;

17 Καὶ ἀποκριθεὶς εἰς ὅσον ὁ ὄχλος, εἶπε· Διδάσκου, καὶ ἡνεγκα τὸν Υἱόν μου πρὸς σέ, ἔχοντα πνεῦμα ἄλλαν.

18 Καὶ ὅτε αὐτὸν καταλάβῃ, ῥήσας αὐτόν, καὶ ἀφείκει, καὶ τρεῖς τῶν ἐδόντας αὐτῷ, καὶ ἡρώαται· καὶ εἶπον τοῖς μαθηταῖς σὺ ἵνα αὐτὸ ἐκβάλῃς· καὶ ἐκ ἰσχυρῶν.

19 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς αὐτοῖς, λέγει· Ὡς γενεὰ ἄπειρον, ἵνα πέτεται πρὸς ὑμᾶς ἵσταμαι; ἕως ποῦ ἀνέξομαι ὑμῶν; Φέρετε αὐτόν πρὸς μέ.

20 Καὶ ἡνεγκα αὐτόν πρὸς αὐτόν· καὶ ἰδὼν αὐτόν, ἀφείκει τὸ πνεῦμα ἐκπαράξεν αὐτόν· καὶ πεσὼν ἐπὶ τὴν γῆν, ἐκυλίετο ἀφείκων.

21 Καὶ ἐστησίωσε τὸν Πατέρα αὐτοῦ· Πέσους χάριτος ἐστὶν αὐτῷ ὅτι τῷ γέγονεν αὐτῷ; Ὁ δὲ εἶπε· Παῖς ἐλθόν.

22 Καὶ πολλὰκις αὐτόν· καὶ εἰς πᾶν ἔβαλε καὶ εἰς ὕδατα, ἵνα ἀπολέσῃ αὐτόν· ἀλλ' εἴτε δύνασαι, δοῦναι αὐτῷ, ἀπλῶς γὰρ εἶπεν· ἡμῶς.

23 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ εἰ δύνασαι κατεῖναι,

πείσσαι, πάντα δυνατὰ τῇ πείσῳ.

14 Καὶ εὐθὺς κραξας ὁ πατὴρ τῶ παιδὶν, μετὰ δακρύων ἔλεγε. Πείσω Κύριε· βοήθει μου τῇ πίσει.

15 Ἰδοὺν δὲ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐπισυντρέχει ὄχλος, ἐπέταξε τῷ πνέματι τῷ ἀκαθάρτῳ, λέγων αὐτῷ. Τὸ πνεῦμα τὸ ἄκαλον καὶ κοφόν, ἐγὼ σοὶ ἐπιτάσσω. Ἐξῆλθε ἔξ αὐτοῦ, καὶ μὴκέτι εἰσέλθῃς εἰς αὐτόν.

16 Καὶ κράξας, ὁ πολλὰ παραέβη αὐτόν, ἔβηλθι. Ὁ εὐγενὴς ὡς νεκρὸς, ὡς πολλὰς λεγὼν ὅτι ἀπεθάρσεν.

17 Ὁ δὲ Ἰησοῦς κρατῆσας αὐτόν τῇ χειρὶ, ἤγειρεν αὐτόν. Ὁ ἀνέστη.

18 Καὶ εἰσελθόντα αὐτόν εἰς οἶκον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπρωῶν αὐτόν κατ' ἰδίῳ. Ὅτι ἡμεῖς ἤκῃ δυνήθημεν σβαλεῖν αὐτόν;

19 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς. Τῷ τὸ γένος ἐν ὑδνὶ δύναται ἔβηλθαι καὶ μὴ ἐν πρὶσχυῇ καὶ πνεύματι.

20 Καὶ ὁκέσθη ἔβηλθόντες παρεπορεύοντο διὰ τῆ Γαλιλαίας καὶ ἤκῃ ἦσαν ἵνα τίς γνῶ.

31 Ἐδίδασκε γὰρ τοὺς μαθητὰς αὐτοῦ, καὶ ἔλεγον αὐτοῖς. Ὅτι ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου παρὰδίδεται εἰς χεῖρας ἀνθρώπων, καὶ ἀποκτενοῦσιν αὐτόν. καὶ ἀποκταμένοι, τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται.

32 Οἱ δὲ ἠγύον τὸ ῥῆμα, καὶ ἐφοβοῦντο αὐτόν ἐπιζητῆσαι.

33 Καὶ ἦλθον εἰς Καπερναούμ. καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ κυρίου, ἐπρωῶν αὐτούς. Τί ἐν τῇ ὁδῷ πρὸς ἑαυτοὺς διελογίζεσθε.

34 Οἱ δὲ ἐτίθων· πρὸς ἀλλήλους γὰρ διελέχθησαν ἐν τῇ ὁδῷ, τίς μείζων.

35 Καὶ καθίσας ἐφώνησε τοὺς δώδεκα, καὶ λέγει αὐτοῖς. Εἴ τις θέλει πρῶτος εἶναι, ἔσται πάντων ἔσχατος, καὶ πάντων διάκονος.

36 Καὶ λαβὼν παιδίον, ἕστηεν αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῶν. καὶ ἐγκαλισσάμενος αὐτό, εἶπεν αὐτοῖς.

37 Ὅς εἴαν ἐν τῷ τοιοῦτῳ παιδίῳ δέξηται ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, ἐμεῖ δέχεται. καὶ ὅς εἴαν ἐμεῖ δέξηται, οὐκ ἐμεῖ δέχεται, ἀλλὰ τὸν ἀποστείλόντά με.

38 Ἀπειρέσθη δὲ αὐτὸς ὁ Ἰωάννης, λέγων. Διδάσκας, εἰδομέν τινα ἐν τῷ ὀνόματί σου σβαλλόντα δαιμόνια, ὅς οὐκ ἀκολουθεῖ ἡμῖν. καὶ σκολύταμεν αὐτόν, ὅτι οὐκ ἀκολουθεῖ ἡμῖν.

39 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπε. Μὴ καλύψετε αὐτόν. οὐδεὶς γὰρ ἐστὶν ὃς ποιήσει δύναμιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, καὶ δυνήσεται ταχὺ σκολογῆσαι με.

40 Ὅς γὰρ οὐκ ἐστὶ καθ' ἑαυτὸν, ὑπὲρ ἡμῶν ἐστίν.

41 Ὅς γὰρ ἀντίση ὑμᾶς ποτήριον ὕδατος ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὅτι Χριστοῦ ἐστέ, ἀμὴν λέγω ὑμῖν, οὐ μὴ ἀπολέσῃ τὸν μισθὸν αὐτοῦ.

42 Καὶ εἰς τὴν σκληροκαλίαν ἔτα τῶν μικρῶν τῶν πεισθύναντων εἰς ἐμέ, καλὸν ἐστὶν αὐτῶ μαλλον εἰ παθήκεται λίθος μυλικὸς περὶ τὸν τρέχοντα αὐτοῦ, ἢ βεβληταί εἰς τὴν θάλασσαν.

43 Καὶ εἰάν σκληροκαλίῃ σε ἡ χεὶρ σου, ἀπόκοψον αὐτήν· καλὸν σοι εἰς κυλλῆν εἰς τὴν ζωὴν εἰσελθεῖν, ἢ τὰς δύο χεῖρας ἔχοντα ἀπελθεῖν εἰς τὴν γέενναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἀσβεστον.

44 Ὅπως δὲ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ, ἢ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται.

45 Καὶ εἰάν ὁ ποῦς σου σκληροκαλίῃ σε, ἀπόκοψον αὐτόν· καλὸν σοι εἰς κυλλῆν εἰσελθεῖν εἰς τὴν ζωὴν καλὴν, ἢ τοὺς δύο πόδας ἔχοντα βληθῆναι εἰς τὴν γέενναν, εἰς τὸ πῦρ τὸ ἀσβεστον.

46 Ὅπως δὲ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ, ἢ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται.

47 Καὶ εἰάν ὁ ὀφθαλμὸς σου σκληροκαλίῃ σε, ἔκβαλε αὐτόν· καλὸν σοι εἰς μονόφθαλμον εἰσελθεῖν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, ἢ τοὺς δύο ὀφθαλμοὺς ἔχοντα βληθῆναι εἰς τὴν γέενναν πῦρος.

48 Ὅπως δὲ σκώληξ αὐτῶν οὐ τελευτᾷ, ἢ τὸ πῦρ οὐ σβέννυται.

49 Πᾶς ὃς πυρὶ ἀλισθήσεται. ἢ πᾶσα θυσιᾶ ἀλί-
αλισθήσεται.

50 Καλὸν τὸ ἅλας· εἰάν δὲ τὸ ἅλας ἀνυλον γένηται, ὅταν τίμῃ αὐτὸ ἀρτύσετε; ἔχετε ὅτι ἐαυτοῖς ἅλας, ἢ εἰρωθεῖτε ὅτι ἀλλήλοις.

Κεφ. ι. 10.

1 **Κ**Αὐτῶν ἀναστὰς ἔρχεται εἰς τὰ δρομά· καὶ Ἰουδαῖοι, διὰ τὴν περὶ τὸν Ἰορδάνην. ἢ συμπορεύονται πάλιν ὄχλοι πρὸς αὐτόν· καὶ ὡς εἰώθα, πάλιν ἐδίδασκεν αὐτούς.

2 Καὶ προσελθόντες οἱ φαρισαῖοι, ἐπαρώτησαν αὐτόν, εἰ ἔξεστιν ἀνδρὶ γυναῖκα ἀπολῦσαι, πειράζοντες αὐτόν.

3 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Τί ὑμῖν ἐπετί-
λατο Μωσῆς;

4 Οἱ δὲ εἶπον· Μωσῆς ἐπέτρεψε βιβλίον ἀποστῆναι γυναικαί, ἢ ἀπολῦσαι.

5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Πρὸς τὴν σκληροκαρδίαν ὁρῶν ἔγραψεν ὑμῖν τὴν ἐπιτολὴν ταύτην.

6 Ἀπὸ δὲ ἀρχῆς κτίσεως, ἄρσεν καὶ θῆλυ ἐποίησεν αὐτοὺς Θεός.

7 Ἐνεκεν τούτου καταλείψει ὁ ἄνθρωπος τὸν πατέρα αὐτοῦ καὶ τὴν μητέρα, καὶ προσκολληθήσεται πρὸς τὴν γυναῖκα αὐτοῦ.

8 Καὶ

8 Καὶ ἔσονται οἱ δύο εἰς σάρκα μίαν· ὥς ἡνέτι
εἰσὶ δύο, ἀλλὰ μία σὰρξ.

9 Ὁ δὲ Θεὸς συνέζωσεν, ἄνθρωπος μὴ χωρι-
ζέσθαι.

10 Καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ πάλιν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ παρῆν
αὐτῷ ἐπρωτότητάς αὐτόν.

11 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὅς ἐὰν ἀπολύσῃ τὴν γυ-
ναῖκα αὐτοῦ, ἔτι γαμέσθαι ἄλλῳ, μοιχᾶται ἐπὶ
αὐτῇ.

12 Καὶ ἐὰν γυνὴ ἀπολύσῃ τὸν ἄνδρα αὐτῆς, ἔτι
γαμήσθαι ἄλλῳ, μοιχᾶται.

13 Καὶ προσέφερον αὐτῷ παιδία, ἵνα ἄψῃται αὐτῷ·
οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπετίμων τοῖς προσφέρουσιν.

14 Ἰδὼν δὲ ὁ Ἰησοῦς ἠγαπάκησεν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς·
Ἀφετε τὰ παιδία ἔρχεσθαι πρὸς με, ἔτι μὴ κα-
λύετε αὐτά· τῷ γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ βασιλεία
Θεοῦ.

15 Ἀντὶ λέγω ὑμῖν, ὅς ἐὰν μὴ δέξῃται τὴν Βα-
σιλείαν τοῦ Θεοῦ ὡς παιδίον, οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐ-
τήν.

16 Καὶ κατακαλίσσάμενος αὐτὰ, τιθεὶς τὰς χεῖρας
ἐπ' αὐτὰ, εὐλόγει αὐτά.

17 Καὶ ἐκπορεύομενος αὐτῷ εἰς ὁδὸν, προσδραμὼν
εἰς ἔτι γονυπετήσας αὐτόν ἐπρωτότα αὐτόν· Διδάσκα-
λε ἀγαθέ, τί ποιήσω ἵνα ζώω αἰώνιον κληρονο-
μήσω;

18 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Τί με λέγεις ἀγαθόν;
ἀλλὰ ἀγαθός, ἐγὼ μὴ εἰς, ὁ Θεός.

19 Τὰς ἐποικίας οὐδας· Μὴ μοιχεύῃς· Μὴ φονεύ-
σῃς· Μὴ κληρῇς· Μὴ ψευδομαρτυρήσῃς· Μὴ ἀ-
ποσερήσῃς· Τίμα τὸν Πατέρα σου καὶ τὴν Μη-
τέρα.

20 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Διδάσκαλε,
ταῦτα πάντα ἐφουξάμην ἐκ νεότητός μου.

21 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἐμβλέψας αὐτῷ, ἠγάπησεν αὐτόν,
καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἐν σοὶ ὑστερεῖ· ὕπαγε, ὅσα ἔχεις
πώλησον, ἔτι δὲς πρὸς τοὺς πτωχοὺς, καὶ ἔξαις θησαυ-
ρὸν ἐν ἁράμῳ· καὶ δεῦρο, ἀκολουθε μοι, ἄρας τὸν
σταυρόν.

22 Ὁ δὲ συγγάσας ἐπὶ τῷ λόγῳ, ἀπῆλθε λυγμέ-
ρος· ἦν γὰρ ἔχων κτήματα πολλά.

23 Καὶ πρὸς βλεψάμενος ὁ Ἰησοῦς λέγει τοῖς μαθηταῖς
αὐτοῦ· Πῶς δύσκολός ἐστι τὰ χρήματα ἔχοντες εἰς τὴν
βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελεύσονται;

24 Οἱ δὲ μαθηταὶ ἐθαμβήσαντο ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐ-
τοῦ· Ὁ δὲ Ἰησοῦς πάλιν ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτοῖς·
Τίττω, πῶς δύσκολόν ἐστι τὰς πεποιθότας ἐπὶ τοῖς
χρήμασιν εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ εἰσελεῖν;

25 Εὐκοπώτερόν ἐστι κάμηλον διὰ τὴν τρυμαλιᾶς τοῦ
ἐλαφίδος διελεῖν, ἢ πλῆσιον εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ
εἰσελεῖν.

16 Οἱ δὲ πᾶσι λέγοντες πρὸς αὐτοὺς· Καὶ τίς δύναται σωθῆναι;

17 Ἐμβλέψας δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, λέγει· Πᾶσι ἀδυνάτου, ἀλλ' ἢ παρὰ τοῦ Θεοῦ πάντα ῥῥοῦνται ἐστὶ παρὰ τοῦ Θεοῦ.

18 Καὶ ἤρξατο ὁ Πέτρος λέγειν αὐτῷ· Ἰδὲ, ἡμεῖς ἀφῆκμεν πάντα, καὶ ἠκολούθησάμεν σοι.

19 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, οὐδεὶς ἐστὶν ὃς ἀφῆκεν οἰκίαν, ἢ ἀδελφούς, ἢ ἀδελφάς, ἢ Πατέρα ἢ Μητέρα, ἢ γυναῖκα, ἢ τέκνα, ἢ ἀγρὸς, ἕνεκεν ἐμοῦ καὶ τῆς Εὐαγγελισμοῦ,

30 Ἐὰν μὴ λάβῃ ἑακτόντα τριακσίονα τῶν ἐν τῷ καιρῷ τῆτι, οἰκίας, καὶ ἀδελφούς καὶ ἀδελφάς, καὶ Μητέρας καὶ τέκνα, καὶ ἀγρὸς, καὶ διαγμῶν, καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομένῳ ζῶναι αἰώνιον.

31 Πολλοὶ δὲ ἐσονται πρῶτοι, ἔχατοι· καὶ οἱ ἔχατοι, πρῶτοι.

32 Ὁ σὺ δὲ ἐν τῇ ὁδῷ ἀναβαίνοντες εἰς Ἱερουσόλυμα· καὶ ἦν πρᾶγμα αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐθαμβῶνται, καὶ ἀκολουθῶντες ἐφοβήντο. Καὶ πρὸς λαβὼν παλιν τῆς δωδεκά, ἤρξατο αὐτοῖς λέγειν τὰ μέλλοντα αὐτῷ συμβαίνειν.

33 Ὅτι ἰδὲ, ἀναβαίνομεν εἰς Ἱερουσόλυμα, καὶ ὁ Τίς ἐν τῇ ἀσπύρῃ πρὸς ἀποδοθήσεται τοῖς Ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς Γραμματέσι, καὶ κατακτενοῦσιν αὐτὸν θάνατον, καὶ πρὸς δώσωσιν αὐτὸν τοῖς ἔθνεσι.

34 Καὶ ἐμταίξουσιν αὐτῷ, καὶ μωσιγώσουσιν αὐτόν, καὶ ἐμπτύουσιν αὐτῷ, καὶ ἀποκτενοῦσιν αὐτόν· καὶ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστήσεται.

35 Καὶ προσπορεύονται αὐτῷ Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης οἱ υἱοὶ Ζεβεδαίου, λέγοντες· Διδάσκαλε, θέλομεν ἔχειν ὅτι ἐὰν αἰτήσωμεν ποιήσῃς ἡμῖν.

36 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Τί θέλετε ποιῆσαί με ὑμῖν;

37 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Δός ἡμῖν ἵνα εἴς ἐκ δεξιῶν σου καὶ εἴς ἐξ ἀριστερῶν σου καθίσωμεν ἐν τῇ δόξῃ σου.

38 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Οὐκ οἶδατε τί αἰτεῖσθε. δύνασθε πίνειν τὸ ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω, καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθῆναι;

39 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Δυνάμεθα. Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ μὲν ποτήριον ὃ ἐγὼ πίνω, πίνετε· καὶ τὸ βάπτισμα ὃ ἐγὼ βαπτίζομαι, βαπτισθήσεσθε.

40 Τὸ δὲ καθίσαι ἐκ δεξιῶν μου καὶ ἐξ ἀριστερῶν μου, ἐκ ἐστὶν ἐμὸν δεῖναι, ἀλλ' οἷς ἂν ἴθω.

41 Καὶ ἀκούσαντες οἱ δέκα, ἤρξαντο ἀγροακτεῖν ὡς Ἰακώβου ἔτι δὲ Ἰωάννου.

42 Οἱ δὲ Ἰησοῦς προτρεπόμενος αὐτοῖς, λέγει αὐτοῖς· Οἴδατε ὅτι οἱ δεκάκοντες ἀρχὴν τῆς ἐθνῶν, κατακυριεύουσιν αὐτῶν· ἔτι μεγάλοι αὐτῶν, κατεξουσιάζουσιν αὐτῶν.

43 Οὐχ, ἡμεῖς δὲ ἔσμεν ἐν ὑμῶν· ἀλλ' ὅς ἐστι θέλην γενέσθαι μέγας ἐν ὑμῖν, ἔσται διάκονος ὑμῶν.

44 Καὶ ὅς ἐστι θέλην ὑμῶν γενέσθαι πρῶτος, ἔσται πᾶντων δούλος.

45 Καὶ ὅς ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἦλθε διὰ τοῦτο θανατοῦναι, ἀλλὰ διακονῆσαι, ἔτι δὲ ὅτι τῶν ψυχῶν αὐτῶν λύτρον ἀρτῇ πολλῶν.

46 Καὶ ἔρχονται εἰς Ἱερουσάλημ· ἔτι δὲ ἐκπορεύομεν αὐτῶν ἀπὸ Ἱερουσάλημ, ἔτι δὲ τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, ἔτι δὲ ὅλην ἱεράμην, υἱὸς Τιμαίου Βουρτίμου· ὁ τυφλὸς ἐκείνου παρὰ τῶν ὁδῶν προσαιτῶν.

47 Καὶ ἀκούσας ὅτι Ἰησοῦς ὁ Ναζαρεὺς ἐστίν, ἤρξατο κραῖναι, ἔτι δὲ λέγειν· Οἱ υἱὸς Δαβὶδ Ἰησοῦ, ἐλίσσον με.

48 Καὶ ἐτετίμων αὐτῷ πολλοὶ ἵνα σιωπήσῃ· ὁ δὲ πολλῶν μᾶλλον ἐκραῖεν· Τίς Δαβὶδ ἐλίσσον με.

49 Καὶ εἰς τὸ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτὸν φωνεῖσθαι· ἔτι δὲ φωνῶσι τὸν τυφλόν, λέγοντες αὐτῷ· Θάρσει, ἔρχου· φωνᾷ σε.

50 Οἱ δὲ ἀποβαλὼν τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, ἀνάστās ἦλθε πρὸς τὸν Ἰησοῦν.

51 Καὶ ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τί θέλεις ποιῆσαι σοί; Οἱ δὲ τυφλὸς εἶπεν αὐτῷ· Ῥ'αββονί, ἵνα ἀνάβληψαι.

52 Οἱ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ὑπάγε· ἡ πίστις σου σέσωκέ σε· ὁ Θεὸς ἀνέβλεψε, ἔτι δὲ ἡκολούθει τῇ Ἰησοῦ ἐν τῇ ὁδῷ.

Κεφ. ια'. II.

1 Καὶ ὅτε ἐγγιζουσιν εἰς Ἱερουσάλημ, εἰς Βηθφαγήν, καὶ Βηθαθαῖαν πρὸς τὸ ὄρος τῶν Ἐλαιῶν, ἀποσέλλει δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ,

2 καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε εἰς τὴν κώμην τὴν κατέναντι ὑμῶν· ἔτι δὲ ὁ Θεὸς ἐκπορεύομεν εἰς αὐτὴν, ἀρῆσατε πῶλον διδεδυμένον, ἐφ' ᾧ οὐδεὶς ἀνθρώπων καβάδικε· λύσαντες αὐτὸν ἀγάγετε.

3 Καὶ ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ· Τί ποιεῖτε τῷ τοῦ; εἶπατε· Ὅτι

Ὅτι ὁ Κριὸς αὐτὸν κτείσει ἐκείνῃ, ἔτι δὲ αὐτὸν ἀ-
ποστείλει εἰς τὴν γῆν.

4 Καὶ ἔλθον δὲ αὐτὸν πρὸς τὸν πῶλον διδεδωμένον
πρὸς τὸν Σαδάρ ἐπὶ τῇ ἀμφίδῳ. Ἐλθούσιν
αὐτὸν.

5 Καὶ πίνεις τὴν οἶνον ἐπὶ τῇ ἀμφίδῳ αὐτοῖς. Τί
ποιεῖτε λέγοντες τῷ πῶλῳ;

6 Καὶ ἀποκρίσας αὐτοῖς καὶ εὐχόμενος ὁ Ἰησοῦς·
Ἐὰν ἔσθω αὐτῶν.

7 Καὶ ἔλθον πρὸς τὸν Ἰησοῦν, ἔτι-
βαλον αὐτὸν ἐν τῇ ἀμφίδῳ αὐτῶν. Ἐκείθεν δὲ
αὐτῶν.

8 Πολλοὶ δὲ τὰ ἱμάτια αὐτῶν ἔστρωσαν εἰς τὴν ὁ-
δὸν. ἄλλοι δὲ σοβαδάς ἐκοπτον ἐν τῷ δένδρῳ, ἔ-
στρώνουσιν εἰς τὴν ὁδόν.

9 Καὶ οἱ παύοντες ἔτι καὶ ἀκολουθοῦντες ἔκραζον,
λέγοντες· Ὡς ἀληθῆς, ὁ βασιλεὺς οὗτος ἐν ἡμῶν
ματι Κυρίῳ.

10 Εὐλογημένη ἡ ἐρχομένη Βασιλεία ἐν ἡμέρᾳ
Κυρίου, ἡ Πατὴρ ἡμῶν Δαβὶδ· Ὡς ἀληθῆς ἐν τοῖς
ὀφθαλμοῖς.

11 Καὶ εἰσῆλθεν εἰς Ἱεροσόλυμα ὁ Ἰησοῦς, ἔτι
τὸ Ἱερὸν. Ἐπεβλεψάμενος πάντα, ὥς ἵκεν ἔτι αἰ-
σῆς τῆς ὥρας, ἔξῃλθεν εἰς Βηθαθαῖν μετὰ τῷ θά-
δεκα.

12 Καὶ τῇ ἐταίρῳ ἔξελθόντων αὐτῶν ἀπὸ Βηθα-
θαῖς, ἐπείνασε.

13 Καὶ ἰδὼν σὺκὸν μακρίθεν, ἔχρισεν φύλλα,
ἔλθον εἰς αὐτὴν καὶ εἰς αὐτῇ. καὶ ἔλθων ἐπὶ αὐ-
τῶν, ἔδεν εὖρεν εἰς μὴ φύλλα· ὅτι ἦν καιρὸς
σύκων.

14 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῇ· Μικέτι
ἐν σὺ εἰς τὸν αἰῶνα ἔδεις καρπὸν φέρει, ἔτι ἡκούσας οἱ
μαθηταὶ αὐτῇ.

15 Καὶ ἔρχονται εἰς Ἱεροσόλυμα. Ἐκείθεν δὲ
Ἰησοῦς εἰς τὸ Ἱερὸν, ἔρετο ἐκβαλεῖν τὰς πωλητάς
ἔτι ἀγοραζόντας ἐν τῷ Ἱερῷ, ἔτι τὰς τραπέζας τῶν κο-
λυβιστῶν, ἔτι τὰς καθέδρας τῶν πωλητῶν τὰς πωλε-
ίας κατέστρεψε.

16 Καὶ ἔτι ἦφιεν ἵνα τις διενέγκῃ σκεῦος διὰ τῷ
Ἱερῷ.

17 Καὶ ἐδίδασκε, λέγων αὐτοῖς· Οὐ γέγραπται·
Ὅτι ὁ οἶκος μου, οἶκος προσευχῆς κληθήσεται πᾶ-
σι τοῖς ἔθνεσιν; ὅμως ἐποίησατε αὐτὸν σπήλαιον
ληστῶν.

18 Καὶ ἔχρισεν οἱ Γραμματεῖς ἔτι οἱ Ἀρχιερεῖς, ἔ-
κείθεν πῶς αὐτὸν ἀπολέσκειν· ἐφοβήθητο δὲ αὐτὸν,
ὅτι πᾶς ὁ ὄχλος ἔτι ἐπληροῦτο ἐπὶ τῇ διδασκῇ
αὐτοῦ.

19 Καὶ ὅτε ὀψὲ ἐγένετο, ἔτι ἐπορεύετο ἔξω τῆς
πόλεως.

20 Καὶ πρὸς τὸν βασιλεὺς ἐξή-
ρασαντο ἐκ τῶν.

21 Καὶ ἀναμνησθεὶς ὁ Πέτρος· λέγει αὐτῷ· Γαββί
"ὅε, ἡ συκὴ ἣν κατηράσῃ, ξηρανταί.

22 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, λέγει αὐτοῖς· Ἔχετε
πίστιν Θεῷ.

23 Ἀμὲν, ὃ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὃς ἀντίπληρὸς ὅ-
ραν τούτων ἀρθεῖται, ἐκβληθήσεται ἐκ τῆς βασι-
λείας τοῦ οὐρανοῦ, καὶ μὴ διακρίσθῃ ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ, ἀλλὰ
πιστεύσῃ ὅτι ἃ λέγει γίνεται ἔξω αὐτοῦ, ὃ ἐὰν
εἴπῃ.

24 Διὰ τοῦτο λέγω ὑμῖν, πᾶν ὅσα ἂν προσδου-
λόγηται αὐτῷ, πιστεύετε ὅτι λαμβάνετε, ὃ ἐ-
στὶν ὑμῖν.

25 Καὶ ὅταν εὐχῆσθε προσευχόμενοι, ἀφίετε ἅτι ἐ-
χετε κατὰ τινος· ἵνα ὁ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ ὢν τὸν ἄρα-
τος ἀφῇ ἅμῃς τὰ ὀφειλόμενα ὑμῶν.

26 Εἰ δὲ ὑμεῖς ἤκ ἀφίστε, καὶ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ὁ
ὢν πατὴρ ἡρώδοις ἀφήσει τὰ παραπτώματα ὑμῶν.

27 Καὶ ἔρχονται πάλιν εἰς Ἱεροσόλυμα· Ἐν ᾧ
τῇ ἑρῇ περὶ ταῦτα αὐτῷ, ἔρχομαι πρὸς αὐ-
τόν οἱ Ἀρχιερεῖς ἔοι Γραμματεῖς ἔοι Πρεσβύ-
τεροι,

28 Καὶ λέγουσιν αὐτῷ· Ἐν ποίᾳ ἔκθεσιν ταῦτα ποιεῖς; καὶ τίς σοι τῶν ἔκθεσιν ταύτων ἔδωκεν ἵνα ταῦτα ποιῇς;

29. Ο δὲ Ἰησὺς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἐ-
περωτήσω ὑμᾶς καὶ γὰρ ἓνα λόγον· Ἐ ἀποκρι-
θετέ μοι, καὶ ἐρῶ ὑμῖν ἐν ποίᾳ θεσσίᾳ ταῦτα
πρῶτον·

30 Τὸ Βάπτισμα Ἰωάννης ἔξ ἡρώων ἦν, ἢ ἔξ ἀνθρώπων· ἀποκριθεὶς μοι·

31 Καὶ ἐλθόντες πρὸς ἑαυτοὺς, λέγοντες· Ἐὰν
ἐπαυῶν, ὡς ἠρώμεν, ἐρεῖ· Διὰ τί ἔτι ἢ καὶ ἐπιστάσατε
αὐτῷ;

32 Ἀλλ' ἐλὼ ἁπλῶς· Ἐξ ἀνθρώπων· ἐφοβήθη
τὸν λαόν· ἀπάρτες γὰρ ἔχον τὸν Γαδρῖν, ὅτι οὕτως
Προφήτης ἔν.

33 Καὶ ἀποκριθέντες, λέγουσι τῷ Ἰησοῦ· Οὐκ ὠδυνᾷς· Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, λέγει αὐτοῖς· Οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ δεξιᾷ ταῦτά ποίω.

Κεφ. 18. 12.

1 **Κ**Αὶ ἤρξατο αὐτοῖς ἐν παραβολαῖς λέγειν. Ἀμπελῶνα ἐφύτασεν ἄνθρωπος, & περιέθηκε φραγμόν, & ὠρυξεν ὑπολήνιον, & ἐκοδόμησεν πύργον, & ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς. & ἀπεδήμασε.

2 Καὶ ἀπέστειλε πρὸς τῆς γεωργίας τῷ καιρῷ δούλον, ἵνα παρὰ τῶν γεωργῶν λαβῇ ἀπὸ τοῦ καρπῆ τοῦ ἀμπελῶνος.

3 Οἱ δὲ, λαβόντες αὐτὸν, ἔδειραν, & ἀπέστειλάν κενόν.

4 Καὶ πάλιν ἀπέστειλε πρὸς αὐτῆς ἄλλον δούλον. καὶ αὐτὸν λιθοβολήσαντες ἐκεφαλαίωσαν, & ἀπέστειλάν ἠτιμωμένον.

5 Καὶ πάλιν ἄλλον ἀπέστειλε. καὶ αὐτὸν ἀπέκτεινάν. & πολλὰ ἄλλα, τῆς μὲν ἐκόντες, τῆς δὲ ἀποκτείνοντες.

6 Ἐπεὶ ἦν ἕνα τίον ἔχον ἀγκυρῆτόν αὐτῷ, ἀπέστειλε & αὐτὸν πρὸς αὐτῆς ἔχοντα, λέγων. Ὅτι ἐντραπήσανται τὸν τίον μου. Ἐκεῖνος δὲ οἱ γεωργοὶ ἔκρινον πρὸς ἑαυτούς.

7 Ὅτι ὁ αὗτός ἐστιν ὁ κληρονόμος. δεῦτε ἀποκτείνωμεν αὐτόν, & ἡμεῖς ἔσμεν ἡ κληρονομία.

8 Καὶ λαβόντες αὐτόν, ἀπέκτεινάν, & ἐξέβαλον ἔξω τοῦ ἀμπελῶνος.

9 Τι ἔν ταις οὗτο ὁ Κύριος τοῦ ἀμπελῶνος; Ἐλούτιται & ἀπολέσει τῆς γεωργίας, & δώσει τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις.

10 Οὐδὲ τῶν γραφῶν ταύτων ἀνέγνωτε; Δίδου ὃν ἀπεισπίμασαν οἱ οἰκοδομῶντες, ὥστε ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν γυναικός.

11 Παρὰ Κυρίῳ ἐγένετο αὕτη, & ἐστὶ θαυμαστὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν.

12 Καὶ ἐζήτην αὐτὸν κρατῆσαι. & ἐφοβήθησαν τὸν ἄλλον. ἐγνώσαν γὰρ ὅτι πρὸς αὐτὸν τῶν παραβολῶν ἔειπε. & ἀφέντες αὐτὸν ἀπῆλθον.

13 Καὶ ἀποστέλλουσιν πρὸς αὐτὸν τινας τῶν Φαρισαίων & τῶν Ἡραδιδαίων, ἵνα αὐτὸν ἀγκυρῶσι λόγοι.

14 Οἱ δὲ ἐλθόντες λέγουσιν αὐτῷ. Διδάσκαλε, οἴδαμεν ὅτι ἀληθὴς εἶ, & ἡ μέλη σοι παρὰ ἡδυνός. & γὰρ βλέπεις εἰς πρῶτον ἀνθρώπων, ἀλλ' ἐπ' ἀληθείας τῶν ὁδῶν τοῦ Θεοῦ διδάσκεις. Ἐξέστι κληρὸν Καίσαρι δῶναι, ἢ ὡς δῶμεν, ἢ μὴ δῶμεν;

15 Ὁ δὲ, εἰδὼς αὐτῶν τῶν ὑπέρχειν, ἔπεν αὐτοῖς.

Ε 3

αὐτοῖς· Τί με πειράζετε; Φέρετί μοι δακτύλιον, ἵνα ἴδω.

16 Οἱ δὲ ἄστυγχοι· Καὶ λέγουσιν αὐτοῖς· Τίτος ἡ ἡκὼν αὕτη ἐστι γραφή; Οἱ δὲ εἶπον αὐτοῖς· Καίσαρες.

17 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Ἀπόδοτε τὰ Καίσαρος, Καίσαρι· ἔτι τὴν Θεῷ, τῷ Θεῷ. Καὶ ἐθαύμασαν ἐπ' αὐτῷ.

18 Καὶ ἔρχονται Σαδδουκαῖοι πρὸς αὐτὸν, οἵτινες λέγουσιν ἀμαρτῶν μὴ εἶναι· ἔπιμνησθαι αὐτὸν λέγοντες·

19 Διδάσκαλε, Μωσὴς ἔγραψεν ἡμῖν, ὅτι ἐάν τις ἀδελφὸς ἀποθάνῃ, ἔτι καταλείπη γυναῖκα, ἔτι τέκνον μὴ ἔσῃ, ἵνα λάβῃ ὁ ἀδελφὸς αὐτῆς τὴν γυναῖκα αὐτῆς, ἔτι ἁνασθήσῃ σπέρμα τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ.

20 Ἐπὶ τὴν αὐτὴν ἀδελφεὶ ἦσαν· ἔτι ὁ πρῶτος ἔλαβεν γυναῖκα, ἔτι ἀποθνήσκων ἢ ἀφῆκε σπέρμα.

21 Καὶ ὁ δεύτερος ἔλαβεν αὐτὴν, ἔτι ἀπέθανεν, ἔτι ὁ αὐτὸς ἀφῆκε σπέρμα· ἔτι ὁ τρίτος ἀπέθανεν.

22 Καὶ ἔλαβον αὐτὴν οἱ ἑπτὰ, καὶ ἢ ἀφῆκαν σπέρμα· ἔτι αὐτὴν πάντες ἀπέθανον καὶ ἡ θυγάτηρ.

23 Ἐν τῇ ὥρᾳ ἐμαρτύρουν, ὅτι αὐτὴν ἔλαβον αὐτὴν ἑπτὰ ἄνδρες καὶ οἱ ἑπτὰ ἔχον αὐτὴν γυναῖκα.

24 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτοῖς· Οὐ διὰ τὴν πλάνην λέγετε, μὴ εἰδότες τὰς γραφάς, μηδὲ τὴν ἐντολήν τῆς Θεῆς;

25 Ὅταν γὰρ οἱ νεκροὶ ἀμαρτύρουν, ὅτε γαμήσιν, ὅτε νυμφεύονται· ἀλλ' οὐκ εἰσὶν ὡς ἄγγελοι οἱ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

26 Περὶ δὲ τῶν νεκρῶν, ὅτι ἐγείρονται, καὶ ἀνέγνωται ἐν τῇ βίβλῳ Μωσέως, ἐπὶ τῆς βάτης ὡς εἶπεν αὐτῷ ὁ Θεός, λέγων· Εἰς τὸν Θεόν Ἀβραάμ, ὁ Θεὸς Ἰσαὰκ, καὶ ὁ Θεὸς Ἰακώβ;

27 Οὐκ εἰσὶν ὁ Θεὸς νεκρῶν, ἀλλὰ Θεὸς ζώντων· ὁμοίως ἔστι πολλὰ πλάττεισθε.

28 Καὶ προσελθὼν εἰς τὴν Γραμματείων, ἀκύσας αὐτῷ συζητῶνται, εἰδὼς ὅτι καλῶς αὐτοῖς ἀπεκρίθη, ἐπιμνησθῆναι αὐτὸν· Ποίῃ ἐστὶ πρώτη πασῶν ἐντολῶν;

29 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Ὅτι πρώτη πασῶν τῶν ἐντολῶν· Ἀκούε Ἰσραὴλ, Κύριος ὁ Θεὸς ἡμεῶν, Κύριος εἷς ἐστὶ.

30 Καὶ ἀγαπήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου ὡς ὅλης τῆς καρδίας σου, καὶ ὡς ὅλης τῆς ψυχῆς σου, καὶ ὡς ὅλης τῆς διανοίας σου, καὶ ὡς ὅλης τῆς ἰσχύος σου· αὕτη πρώτη ἐντολή.

31 Καὶ δευτέρα ὁμοία αὕτη· Ἀγαπήσεις τὸν πλη-

σίον, σὺ δὲς σεαυτὸν. μείζων τῶν ἄλλων ἐστὶν ἢ ἐγώ.

32 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Γραμματεὺς· Καλῶς, διδάσκαλε, ἐπ' ἀληθείας εἶπας, ὅτι εἴς ἐστι Θεὸς, καὶ οὐκ ἐστὶν ἄλλος πλὴν αὐτῆ.

33 Καὶ τὸ ἀγαπᾶν αὐτὸν ἢ ἐ ὅλης τῆς καρδίας, ἐ ἢ ἐ ὅλης τῆς συνέσεως, ἐ ἢ ἐ ὅλης τῆς ψυχῆς, ἐ ἢ ἐ ὅλης τῆς ἰκχύος. ἐ τὸ ἀγαπᾶν τὸν πλησίον ὡς ἑαυτὸν, πλεον ἐστὶ πάντων τῶν ἀποκατωμάτων ἐ τῶν θυσιῶν.

34 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἰδὼν αὐτὸν ὅτι γνηχῶς ἀπεκρίθη, εἶπεν αὐτῷ· Οὐ μακρὰν εἶ ἀπὸ τῆς Βασιλείας τοῦ Θεοῦ. Καὶ οὐδεὶς ἔτι ἐτόλμα αὐτὸν ἐπερωτῆσαι.

35 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς ἔλεγεν, διδάσκων ἐν τῷ Ἱερῷ· Πῶς λέγουσιν οἱ Γραμματεῖς, ὅτι ὁ Χριστὸς υἱὸς ἐστὶ Δαβὶδ;

36 Αὐτὸς γὰρ Δαβὶδ εἶπεν ἐν τῷ Πνεύματι τῷ Ἁγίῳ· Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου· Κάθου ἐκ δεξιῶν μου, ἕως ἃν θῶ τὴν ἐχθρὴν σου ὑποπόδιον τῶν ποδῶν σου.

37 Αὐτὸς ἦν Δαβὶδ λέγει αὐτὸν Κύριον. ἐ πόθεν υἱὸς αὐτῆ ἐστὶ; Καὶ ὁ πολὺς ὄχλος ἤκουεν αὐτῷ ἡδέως.

38 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς ἐν τῇ διδαχῇ αὐτοῦ· Βλέπετε ἀπὸ τῶν Γραμματέων τῶν Φαρισαίων ἐν ποταῖς πωπατεῖν, ἐ ἀσπασμούς ἐν ταῖς ἀγοραῖς.

39 Καὶ πρωτοκαθεδεραί ἐν ταῖς συναγωγαῖς, ἐ πρωτοκλισίαι ἐν ταῖς δαίτιοις.

40 Οἱ κατεσθίοντες τὰς οἰκίας τῶν χηρῶν, ἐ προφάσει μακρὰ προσδουλοῦναι. ἔτσι λήφονται πλεονύστερον κέρμα.

41 Καὶ καθίσκει ὁ Ἰησοῦς κατενέμει τῷ γαζοφυλακίῳ, ἐθεώρει πῶς ὁ ὄχλος βάλλει χαλκὸν εἰς τὸ γαζοφυλάκιον. ἐ πολλοὶ πληττοῖ ἐβαλλον πολλὰ.

42 Καὶ ἐλθὼσα μία χήρα πτωχὴ ἐβαλε λεπτὰ δύο, ὃ ἐστὶ κοδράντης.

43 Καὶ προσκαλεσάμενος τῆς μαθητῶν αὐτοῦ, λέγει αὐτοῖς· Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἡ χήρα αὕτη ὃ πτωχὴ πλεον πάντων βέβληκε τῶν βαλόντων εἰς τὸ γαζοφυλάκιον.

44 Πάντες γὰρ ἐκ τῷ πλεονείοντος αὐτοῖς ἔβαλον. αὕτη δὲ ἐκ τῆς ὑπερησείας αὐτῆς πάντα ἔτα ἔχεν ἔβαλεν, ὅλον τὸν βίον αὐτῆς.

Κεφ. 13. 13.

1 **Κ**ΑΙ ἐκπορεύομεν αὐτὸς ἐκ τοῦ Ἱερὺ, λέγει αὐτῷ εἰς τὴν μαθητῶν αὐτοῦ· Διδάσκαλε, ἴδε ποταποὶ λίθοι καὶ ποταπαὶ οἰκοδομαί.

2 Καὶ ὁ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Βλέπεις ταύτας τὰς μεγάλας οἰκοδομαί; ἢ μὴ ἀφεθῇ λίθος ὑπὲρ λίθου, ὃς ἢ μὴ καταλυθῇ.

3 Καὶ καθήμενός ἐστις τὸ ὄρος τῶν Ἐλαιῶν κατέ-
ιδυτο τοῦ Ἱερὺ, ἐφηρώτων αὐτὸν κατ' ἰδίαν Πέτρος καὶ
Ἰάκωβος καὶ Ἰωάννης καὶ Ἀνδρέας.

4 Εἶπε ἡμῖν πότε ταῦτα ἐσθαι, καὶ τί τὸ σημεῖον ὅταν μέλλῃ πάντα ταῦτα συντελεσθῆναι.

5 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀποκριθεὶς αὐτοῖς, ἤρξατο λέγειν· Βλέπετε μὴ τις ὑμᾶς πλανήσῃ.

6 Πολλοὶ γὰρ ἐλεύσονται ὑπὲρ τοῦ ὀνόματί μου, λέγοντες· Ὅτι ἐγὼ εἰμι· καὶ πολλοὶ πλανή-
σουσιν.

7 Ὅταν δὲ ἀκούσῃτε πολέμους καὶ ἀκοὰς πολέ-
μων, μὴ θροῖσθε· ἐν γὰρ γενέσθαι· ἀλλ' ἔστω
τὸ τέλος.

8 Ἐγερθήσεται γὰρ ἔθνος ὑπὲρ ἔθνος, καὶ βασιλεία
ὑπὲρ βασιλείας· καὶ ἔσονται σεισμοὶ καὶ τῆτοι, καὶ ἔσον-
ται λιμοὶ καὶ παραχαί.

9 Ἀρχαὶ αἰνῶν ταῦτα· βλέπετε δὲ ὑμεῖς ἑα-
σθῆναι· παραδώσεται γὰρ ὑμᾶς εἰς συνέδρια καὶ εἰς
συναγωγάς· βαστήσθε, καὶ ὑπὲρ ἡγμονῶν καὶ βα-
σιλέων βαστήσθε ἵνα κεν ἐμὲ, εἰς μαρτύριον αὐ-
τοῖς.

10 Καὶ εἰς πάντα τὰ ἔθνη δεῖ πρῶτον κηρυχθῆναι
τὸ Εὐαγγέλιον.

11 Ὅταν δὲ ἀγγάγωσιν ὑμᾶς παραδιδόντες, μὴ
παισιμίζετε τί λαλήσετε, μηδὲ μελετᾶτε· ἀλλ' ὅ
ἰδω δοθῇ ὑμῖν ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ, τί ποτε λαλήτε· ἢ
γὰρ ἐσε ὑμεῖς οἱ λαλῶντες, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ
Ἁγίον.

12 Παραδώσει δὲ ἀδελφὸς ἀδελφὸν εἰς θάνατον, καὶ
πατὴρ τέκνον· καὶ ἐπαρσησονται τέκνα ὑπὲρ γενεῶν,
καὶ θανατώσουσιν αὐτάς.

13 Καὶ ἔσονται μισούμενοι ὑπὸ πάντων διὰ τὸ
ὄνομα μου· ὁ δὲ ὑπομείνας εἰς τέλος, ἢ τὸς σωθή-
σεται.

14 Ὅταν δὲ ἴδωτε τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως τὸ
ρεθῆναι ὑπὸ Δαυὶδ τῷ Προφῆτῃ, ἕως ὅπῃ ἂν δεῖ·
(ὁ ἀνυμνῶν τὸν κύριον.) τότε εἰ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ φθί-
νεται ὁ κύριος εἰς τὰ ὄρη.

15 Ὁ δὲ ὑπὲρ τοῦ θάνατος, μὴ καταβάτω εἰς
τὴν

τὴν εἰδέω, μηδὲ εἰπελθέτω ἄραί τι ἐκ τῆς εἰκίας αὐτῆς.

16 Καὶ ὁ εἰς τὸ ἀγρόν αὐτῶν, μὴ ὑπισχεσάτω εἰς τὸ ἐπίσω, ἄραί τὸ ἱματίον αὐτοῦ.

17 Οὐαὶ δὲ ταῖς ἐν γαστρὶ ἐχούσαις καὶ ταῖς θηλαζούσαις ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις.

18 Προσεύχεσθαι δὲ ἵνα μὴ γένηται ἡ φυγὴ ὑμῶν χειμῶνες.

19 Ἔσονται γὰρ αἱ ἡμέραι ἐκτεῖναι θλίψεις, οἷα οὐ γένοιε τοιαύτη ἀπ' ἀρχῆς κτίσεως ἕως ἐκτίσειν ὁ Θεός, ἕως τοῦ νῦν, καὶ οὐ μὴ γένηται.

20 Καὶ εἰ μὴ Κύριος ἐκολόρωσε τὰς ἡμέρας, ἢκ ἀρ' ἐσώθη πᾶσα σὰρξ· ἀλλὰ διὰ τῆς ἐκλεκτῆς ἕως θλίψεω, ἐκολόρωσε τὰς ἡμέρας.

21 Καὶ τότε ἰδοὺ τις ὑμῖν εἴη· Ἰδοὺ, ὡς δὲ ὁ Χρῆστος· ἡ· Ἰδοὺ ἐκεῖ· μὴ πεισώσχητε.

22 Ἐγερθήσονται γὰρ ψευδοχριστοὶ καὶ ψευδοπροφῆται· καὶ δώσουσι σημεῖα καὶ τέρατα, πρὸς τὸ ἀποπλανᾶν, εἰ δοκᾷ, καὶ τὸς ἐκλεκτῆς.

23 Τίμας δὲ βλέπετε· Ἰδοὺ, προεῖρηκα ὑμῖν τὰ ταῦτα.

24 Ἀλλ' ἐν ἐκείναις ταῖς ἡμέραις, μὲν τὴν θλίψιν ἐκείνην, ὃ ἡλῖος σκοτισθήσεται, καὶ ἡ σελήνη ὃ δώσει τὸ φεγγος αὐτῆς.

25 Καὶ αἱ ἀστέρες ὡς ἡρόμεν ἔσονται ἐκπίπτοντες, καὶ αἱ δυνάμεις αἱ ἐν τοῖς οὐρανοῖς σαλευθήσονται.

26 Καὶ τότε ἵσονται τὸν Υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν νεφέλαις μὲν δυνάμει πολλῇ καὶ δόξῃ.

27 Καὶ τότε ἀποστέλει τὸν ἀγγέλους αὐτοῦ, καὶ ὑποσυνάξει τὸς ἐκλεκτῆς αὐτοῦ ἐκ τῶν τρισάρων θηρών, ἀπ' ἀκρῆς γῆς ἕως ἀκρῆς οὐρανοῦ.

28 Ἀπὸ τῆς συνῆς μεθήτε τὴν παραβολὴν· ὅταν αὐτὸς ἦσιν ὁ κλάδος ἀπαλὸς γένηται, καὶ ἐκφυῇ τὰ φύλλα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς τὸ θερος ἐστίν.

29 Οὕτως καὶ ὑμεῖς, ὅταν ταῦτα ἴδωτε γινόμενα, γινώσκετε ὅτι ἐγγύς ἐστιν ἡ ἡμέρα τοῦ θυρίου.

30 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι εἰ μὴ παρέλθῃ ὃ γένηται αὕτη, μέχεις ὃ πάντα ταῦτα γένηται.

31 Ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ παρελθούσονται· αἱ δὲ λόγοι μὴ καὶ μὴ παρέλθωσι.

32 Περὶ τῆς ἡμέρας ἐκείνης καὶ τῆς ὥρας ἡδὲ οἱ οἶδες, καὶ οἱ ἄγγελοι οἱ ἐν οὐρανοῖς, καὶ ὁ Υἱὸς, εἰ μὴ ὁ Πατήρ.

33 Βλέπετε, ἀκριβεστε καὶ προσεύχεσθε· ἢκ εἰδότε γὰρ πότε ὁ καιρὸς ἐστίν.

34 Ὡς ἄνθρωπος ἀπόδημος ἀφῆκε τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, καὶ ὡς τοῖς δούλοις αὐτοῦ τὴν ἐντολήν, καὶ ἐκῆκεν.

- 106 ΕΥ' ΑΤΓΕ' ΑΙΟΝ Cap. 14.
 ἔκαστὸν τὸ ἔργον αὐτοῦ, καὶ τὰ θυρωρὰ συνετέλεστο ἵνα
 γρηγορή.·
 35 Γρηγορεῖται ὢν· (ὃν οἶδατε ὅτι τότε ὁ Κύριος
 τὸ οἶκόν αὐτοῦ ἔρχεται, ὃς ἐν τῇ μεσουκτιῇ, ἢ ἀλεκτορο-
 φωνίας, ὡς πρὸς·)
 36 Μὴ ἐλθὼν ἐξαίφνης, ὥστε ὑμᾶς καθύπνου-
 νται·
 37 Ἀλλὰ δὲ ὑμῖν λέγω, πάνσι λέγω· Γρηγο-
 ρεῖτε·

Κεφ. 18. 14.

- 1 **Η**Ν ὅτι τὸ Πάχος καὶ τὰ ἄζυμα μετὰ δύο ἡμέ-
 ρας· Ἐξήκην οἱ Ἀρχιερεῖς ἔτι οἱ Γραμ-
 ματεῖς πῶς αὐτὸν ἐν δόλῳ κρατήσαντες ἀποκτε-
 νώσιν·
 2 Ἐλέγον δέ· Μὴ ἐν τῇ εὐρεσίᾳ, μήποτε θόρυμβος
 ἔσται τοῦ λαοῦ·
 3 Καὶ οὗτος αὐτῷ ἐν Βηθάνιᾳ ἐν τῇ οἰκίᾳ Σίμων-
 ος τοῦ Πέτρου, κατακειμένη αὐτοῦ, ἦλθε θυγὴ ἔχουσα
 ἀλάβαστρον μύρου γάρου πισικῆς πολυτελεῖς· Ἐ συν-
 τείψατα τὸ ἀλάβαστρον, κατέχευεν αὐτοῦ κατὰ τῆς
 κεφαλῆς·
 4 Ἡ δὲ αὐτῷ δέ τινες ἀγανακτῶντες πρὸς ἑαυτὴν,
 ἔλεγοντες· Εἰς τί ἡ ἀπώληα αὕτη τοῦ μύρου γέ-
 γεναι;
 5 Ἡ δὲ δύνατο ὅτι τῆτο πρὸς τὴν ἐποπείαν τριηκοσίων
 ἀναγείναι, καὶ δοθῆναι τοῖς πτωχοῖς· Καὶ συνεβραμύ-
 νοντο αὐτῇ·
 6 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἔειπεν· Ἀφίετε αὐτήν· τί αὕτη
 κρίνεις παρέχετε; καλὸν ἔργον ἐργάσατο ἐν
 ἐμοί·
 7 Πάντοτε ὅτι τῆς πτωχότητος ἔχετε μετὰ ἑαυτῶν, ἔτι
 ἔτι αὐτὴν θέλητε, δύνασθε αὐτὴν εὖ ποιῆσαι· ἐμὲ δὲ οὐ
 πάντοτε ἔχετε·
 8 Ὁ δὲ ἔχεν αὐτήν, ἐποίησε· προέλαβε μυρίσαι με-
 τὰ τὸ σῶμα ἐν τῷ σκταφισμῶν·
 9 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἂν κηρυχθῇ τὸ Εὐαγγέ-
 λιον τῆτο εἰς ὅλον τὸν Κόσμον, καὶ ὅ ἐποίησεν αὕτη,
 ἀλλοθίσεται εἰς μνημότυπον αὐτῆς·
 10 Καὶ ὁ Ἰάκωβος ὁ Ἰσκαριώτης, εἰς τῶν δώδεκα,
 ἀπῆλθε πρὸς τῆς Ἀρχιερεῖς, ἵνα πωρῇ αὐτὸν
 αὐτοῖς·
 11 Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐχάρησαν· Ἐπεληγάδατο
 αὐτῷ ἀργύριον δοῦναι· Ἐξήκην πῶς δίκαιος αὐτὸν
 πωρῇ·
 12 Καὶ τῇ πρώτῃ ἡμέρᾳ τῶν Ἀζύμων, ὅτε τὸ
 Πάχος ἔδουεν, λέγουσιν αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ·
 ΠΒ

Πῶς θέλεις ἀπελθόντες ἐτοιμασάμεν ἵνα φάγῃς τὸ Πάσχα;

13 Καὶ ἀποέλλαε δύο τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ λέγει αὐτοῖς· Ὑπάγετε εἰς τὴν πόλιν, ἥ ἀπλῆτῃσιν ὑμῖν ἀνδραποσ κεράμιον ὕδατος βασιζών· ἀκολουθήσατε αὐτῷ.

14 Καὶ ὅπῃ εἰάν εἰσέλθῃ, εἰπάτε τῷ οἰκοδεσπότῃ· Ὅτι ὁ Διδάσκαλος λέγει· Πῶς ἐστὶ τὸ κατὰ-
λύμα ὅπου τὸ Πάσχα μὲν τῷ μαθητῷ μου φα-
νεί;

15 Καὶ αὐτὸς ὑμῖν δείξει ἀνάγειον μέγα ἐστραμέ-
νον, ἐτοιμον· ἐνθα ἐτοιμασάτε ἑμῖν.

16 Καὶ ὑξήλθον οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἥ ἦλθον εἰς τὴν πόλιν, καὶ εὗρον καθὼς ἔπεν αὐτοῖς· καὶ ἠτοίμα-
σαν τὸ Πάσχα.

17 Καὶ ὁψίας γενομένης ἔρχεται μετὰ τῶν δώ-
δεκα.

18 Καὶ ἀνακειμένων αὐτῶν, ἥ ἐσθιόντων, ἔπειτ ὁ Ἰησοῦς· Ἀλλῶ λέγω ὑμῖν, ὅτι εἰς ἃς ὑμῶν παροῦσ-
αί με, ὁ ἐσθίων μετ' ἐμῆ.

19 Οἱ δὲ ἠξήλθον λυπεῖσθαι, ἥ λέγειν αὐτῷ εἰς
καθ' εἰς· Μητι ἐγὼ; Καὶ ἄλλος· Μητι ἐγὼ;

20 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, ἔπεν αὐτοῖς· Εἴς ἐστι τῶν
δώδεκα, ὁ ἱερατευόμενος μετ' ἐμοῦ εἰς τὸ τρυ-
φαῖον.

21 Ὁ μὲν γιγὼς τῷ ἀνθρώπῳ ὑπάγει, καθὼς
γεγραπται περὶ αὐτοῦ· καὶ δὲ τῷ ἀνθρώπῳ ἐκεί-
νῳ, οἱ δὲ ὁ γιγὼς τῷ ἀνθρώπῳ παροῦσθαι· κα-
λὸν ἦν αὐτῷ, εἰ ἢ ἐγεννήθη ὁ ἄνθρωπος ἐ-
κεῖνος.

22 Καὶ ἐσθιόντων αὐτῶν, λαβὼν ὁ Ἰησοῦς ἄρτον,
ἀλλογῆσας ἔκλασε· ἥ ἔδωκεν αὐτοῖς, καὶ εἶπε· Λαβέ-
τε, φάγετε, τὸ ἐστὶ τὸ σῶμα μου.

23 Καὶ λαβὼν τὸ ποτήριον, εὐχαριστήσας ἔδωκεν
αὐτοῖς· καὶ ἔπιον ἃς αὐτῷ πάντες.

24 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ ἐστὶ τὸ Αἷμά μου
τὸ τῆς καινῆς διαθήκης, τὸ περὶ πολλῶν ἀφεχυσί-
μενον.

25 Ἀλλῶ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἕκτι ἢ μὴ πῶς ὅτι
τῷ γνησματος τῆς ἀμπέλου, ἕως τῆς ἡμέρας ὁκτεί-
νης, ὅταν αὐτὸ πίνῃ καινὸν ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ
Θιού.

26 Καὶ ὑμνήσαντες ὑξήλθον εἰς τὸ ὄρος τῶν
ἐλαιῶν,

27 Καὶ λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι πάντες σκλη-
ρακισθήσεσθε ἐν ἐμοὶ ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ· ὅτι γέγρα-
πται· Πατάσω τὸν ποιμένα, ἥ διασκορπισθήσεται
τὰ πρόβατα.

28 Ἀλλῶ μὲν τὸ ἐγερθήναι με, προῶν ὑμᾶς εἰς
τὴν Γαλιλαίαν.

29 Ο' δὲ Πέτρος εἶπεν αὐτῷ · Καὶ εἰ πάντες σκηνήσονται, ἀλλ' ἢ ἐγώ.

30 Καὶ λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς · Ἀμὲν λέγω σοι, ὅτι σήμερον ἐν τῇ νυκτὶ ταύτῃ, πρὶν ἢ δις ἀλείκτορα ζυγῆσαι, τρίς ἀπαρνήσῃ με.

31 Ο' ὅν παρρησίᾳ ἔλεγε μᾶλλον· Εἴπαμε δὲ συνάψαντα σοι, ὅ μὴ σε ἀπαρνήτομαι· Ὡσαύτως ὁ ὢ πάντες ἔλεγον.

32 Καὶ ἔρχονται εἰς χεῖρας ὁ τὸ ὄνομα Γεθσημαν· ὃ λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Καθίστατε ὧδε ἕως προσέξωμαι.

33 Καὶ περιλαμβάνει ὁ Πέτρον ὃ ὁ Ἰωάννης ὃ Ἰωάννης μετ' αὐτοῦ· ὃ ἔροζατο σκταμβείσθαι καὶ ἀδελφοῖν.

34 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Περίλυπός ἐστι ἡ ψυχὴ μου ὡς θανάτου· μείνατε ὧδε, ὃ γρηγορεῖτε.

35 Καὶ προσελθὼν μικρὸν, ἔτεσεν ὑπὶ ὃ γῆς· ὃ προσκύχεται ἵνα, εἰ δυνατόν ἐστὶ, παρέλθῃ ἀπ' αὐτοῦ ὃ ὥρα.

36 Καὶ ἔλεγεν· Ἀββᾶ ὁ Πατήρ, πάντα δυνατόν σοι· παρένεγκε τὸ ποτήριον αὐτὸ ἐμὸν ταῦτα, ἀλλ' ἢ τί ἐγὼ θέλω, ἀλλὰ τί σύ.

37 Καὶ ἔρχεται ὃ οὐρείσκει αὐτὸς καθύδοντας· ὃ λέγει τῷ Πέτρῳ· Σίμων, καθύδεις; ἢ ἔχουσας μίαν ὥραν γρηγορῆσαι;

38 Γρηγορεῖτε ὃ προσκύχεσθε, ἵνα μὴ ἐκλείπητε εἰς πειρασμόν· τὸ μὲν Πνεῦμα πράθυμον, ἡ δὲ σὰρξ ἀσθενής.

39 Καὶ πάλιν ἀπελθὼν προσήγατο, ὃ αὐτὸν λόγον εἰπών.

40 Καὶ ὑποτρέψας εὖρεν αὐτὸς πάλιν καθύδοντας, (ἦσαν γὰρ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ βεβαρημένοι) ὃ ἢ ἔδεισαν τί αὐτῷ ἀποκριθῶσι.

41 Καὶ ἔρχεται τὸ τρίτον, ὃ λέγει αὐτοῖς· Καθύδετε τὸ λοιπὸν ὃ ἀσπαύεσθε· ἀπέχει, ἦλθεν ὃ ὥρα· ἰδὲ, παραδίδεται ὁ Ἰησοῦς ὃ ἀνθρώποις εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἀμαρτωλῶν.

42 Εὐγείρεσθε, ἀγώμεν· ἰδὲ, ὃ παραδίδεις μὴ ὃ γινε.

43 Καὶ οὐθίως, ὅτι αὐτὸς λαλήσας, παραγίνεται Ἰάκωβ, εἰς ὃν τῶν δώδεκα· ὃ μετ' αὐτοῦ ὃ ἄλλος πολὺς μὲν μαχαιρῶν ὃ ξύλων, παρὰ τῶν Ἀρχιερέων καὶ τῶν Γραμματέων ὃ τῶν Πραβυτέρων.

44 Διδῶκε δὲ ὃ παραδίδεις αὐτὸν σύσπικτον αὐτοῖς, λέγων· Ὅν δὴ φιλήσω, αὐτός ἐστὶ· κρατῆσατε αὐτόν, καὶ ἀπαγάγετε ἀσφαλῶς.

45 Καὶ ἔλθων, οὐθίως προσελθὼν αὐτῷ, λέγει·

74. Ρ'αββί, Ρ'αββί. & κτεφίλησιν αὐτόν.

46 Οἱ δ' ἐπέβαλον ἐπ' αὐτόν τὰς χεῖρας αὐτοῦ. & ἐκράτησαν αὐτόν.

47 Εἰς δὲ τις τῶν παρεστηκότων σπασάμενος τὴν με-
χρίδα, ἐπάειπε ᾧ ὄλον τῷ Ἀρχιερεῶς, & ἀφείλιν
αὐτῷ τὸ ὄπιον.

48 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, ἔπεν αὐτοῖς. Ὡς
ἐπὶ λησῆν ἔβηλατε μετ' ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἐβλήκατε
ἐμὴν μετὰ;

49 Καὶ ἡμέραν ἡμέλῃ πρὸς ὑμᾶς ὃν πῶς ἱερᾶ δι-
δάσκων, & οὐκ ἐκράτησατέ με· ἀλλ' ἔτι πληρωθῶσιν
αἱ Γραφαί.

50 Καὶ ἀφέντες αὐτόν πάντες ἔφυγον.

51 Καὶ εἰς τις νεανίσκος ἠκολούθει αὐτῷ, περιβε-
βλημένος σινδὼνα ἐπὶ γυμνῷ. & κρατῶσιν αὐτόν οἱ
νεανίσκοι.

52 Οἱ δ' καταλιπὼν τὴν σινδὼνα, γυμνὸς ἔφυγεν
ἀπ' αὐτοῦ.

53 Καὶ ἀπάγων αὐτὸν τὸν Ἰησοῦς πρὸς τὸν Ἀρχιερεῖα. &
συνέρχονται αὐτῷ πάντες οἱ Ἀρχιερεῖς & οἱ Πρεσβύτε-
ροι & οἱ Γραμματεῖς.

54 Καὶ ὁ Πέτρος ἀπὸ μακρόθεν ἠκολούθει αὐτῷ
ἕως ἔσθαι εἰς τὴν αὐλὴν τοῦ Ἀρχιερεῶς. & ὃν συ-
καθήμενος μετ' τῶν ὑπαρχόντων, & θειμαίνοντος πρὸς
τὸ φῶς.

55 Οἱ δ' Ἀρχιερεῖς & ὅλον τὸ συνέδριον ἰζήτησιν
κατὰ τὸν Ἰησοῦν μαρτυρίαν, εἰς τὸ θανατοῦν αὐτόν. &
οὐκ εὗραν.

56 Πολλοὶ γὰρ ἐψέβεον μαρτυρεῖν κατ' αὐτόν. & ἴσαι
αἱ μαρτυρίαι αὐτῶν.

57 Καὶ πᾶς ἀναστάντες, ἐψέβεον μαρτυρεῖν κατ' αὐ-
τοῦ, λέγοντες. Ὅτι ἡμεῖς ἠκούσαμεν αὐτὸν λέγον-
τος.

58 Ὅτι ἐγὼ καταλύσω τὴν ἑαυτοῦ τῆτον & χαρο-
ποιήσω, & διὰ τρεῖς ἡμερῶν ἄλλον ἀχρηστεύοντα οἰ-
κοδομήσω.

59 Καὶ ἡδὲ ἤτοι ἴση ἢ ἡ μαρτυρία αὐτοῦ.

60 Καὶ ἀναστὰς ὁ Ἀρχιερεὺς εἰς τὰ μέσον, ἐπαρώ-
τησε τὸν Ἰησοῦν, λέγων. Οὐκ ἀποκριθὲν ἡδὲν; πῶς οὖν
καταμαρτυροῦσιν;

61 Οἱ δὲ ἐστίασα, & οὐδὲν ἀπεκρίναιτο. Πάλιν δ'
Ἀρχιερεὺς ἐπαρώτα αὐτόν, & λέγει αὐτῷ. Σὺ μὴ ὁ
Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ ὀβλουητοῦ;

62 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἔπεν. Εἰγὼ εἰμι. καὶ ὁ ὀ-
βλουητὸς τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου καθήμενον ἐκ δε-
ξιῶν τῆς δυνάμεως, & ἐρχόμενον μετ' τῶν νεφελῶν
τὸν ἔρχομαι.

63 Οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς, διαρρήξας τῆς χιτῶ-
νος αὐτοῦ, λέγει. Τί ἐτι χρεῖαν ἔχομεν μαρ-
τυρίων.

64 Ἦκασατε τῆς βλασφημίας· πῶς ὑμῖν φαίνονται; Οἱ δὲ πάντες κατέκριναν αὐτὸν εἶναι ἐνοχὸν θανάτου.

65 Καὶ ἤρξαντό τινες ἐμπτύειν αὐτῷ, ἔσθρακαλύπτειν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, ἔκολαφίζεον αὐτόν, ἔλεγον αὐτῷ· Προφήτεύσον. Ἐπὶ ᾧ ὑπέρκειται ῥάπισμασιν αὐτὸν ἐβόλλεν.

66 Καὶ ὅντος τῇ Πέτρῳ ἐν τῇ αὐλῇ κάτω, ἔρχεται μία τῶν παιδίσκων τῆς Ἀρχιερέως.

67 Καὶ ἰδῶσα τὸν Πέτρον θερμαινόμενον, ἐμβλήψασα αὐτῷ, λέγει. Καὶ σὺ μὲν τῆς Ναζαρέθ Ἰησοῦ ἦσθα.

68 Οὗ δὲ ἠρνήσατο, λέγων· Οὐκ οἶδα, κἀγὼ ἐπίσταμαι τί σὺ λέγεις. Καὶ ἔξηλθεν ἔξω εἰς τὸ προαύλιον· ἔκλυτον ἐφώτατε.

69 Καὶ ἡ παιδίσκη ἰδῶσα αὐτὸν πάλιν, ἤρξατο λέγειν τοῖς παρεσθασίν· Οὗτος δὲ αὐτῷ ἐστίν.

70 Οὗ δὲ πάλιν ᾠκείη. Καὶ μὲν μικρὸν πάλιν αὐτῷ ἐλέγον· Ἀληθῶς δὲ αὐτῷ ἐστίν, ἔκλυτον ἐφώτατε. Ἀλλ' ἡ λαλιά σου ὁμοιάζει.

71 Οὗ δὲ ἤρξατο ἀναθεματίζειν ἔκλυτον· Οὗτος οἶδα τὸν ἀνθρώπου τῆτον ὃν λέγετε.

72 Καὶ ὅτε δαυτέρη ἐκλυτον ἐφώτατε· ἔκλυτον ἐφώτατε. ὁ Πέτρος τῇ ῥήματι αὐτοῦ ἔπεσεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Οὗτος πρὶν κλέκτορα φωνῆσαι δὲς, ἀπαγγέλλε με τρίς· Καὶ ὑπεβόλη, ἔκλυτον.

Κεφ. 14. 15.

1 **Κ**ΑΙ ὡς οὕτως ὑπὲρ τὸ πρῶτον συμβόλιον ποιήσαντες οἱ Ἀρχιερεῖς μὲν τῶν Πρεσβυτέρων ἔγραμμάτων, ἔκλυτον τὸ συνέδριον, δῆσαντες τὸν Ἰησοῦν ἀπὸ πῆχυκα, ἔπαρεδουκον τῷ Πιλάτῳ.

2 Καὶ ἐπρώτησεν αὐτόν ὁ Πιλάτος· Σὺ εἶ ὁ Βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων; Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ· Σὺ λέγεις.

3 Καὶ κατηγοροῦν αὐτῷ οἱ Ἀρχιερεῖς πολλὰ· αὐτοῖς δὲ οὐκ ἀπεκρίνατο.

4 Οὗ δὲ Πιλάτος πάλιν ἐπρώτησεν αὐτόν, λέγων· Οὐκ ἀποκρίθη οὐδέν; ἴδε πόσα σοι καταμαρτυροῦσιν.

5 Οὗ δὲ Ἰησοῦς ἔκλυτον οὐκ ἀπεκρίθη, ὥς ἐθιμολόγηται τῷ Πιλάτῳ.

6 Κατὰ δὲ ἑορτῇ ἀπέλευεν αὐτοῖς ἕνα δέσμιον, ὅστις ἠθύντο.

7 Ἦν δὲ ὁ λεγόμενος Βαραββᾶς μὲν τῶν συσασιαστῶν δεδωμένος, οἵτινες ἐν τῇ τάξει φόνον ἐπιτοίχισον.

8 Καὶ ἀνταποκρίνας ὁ ὄχλος, ἤρξατο αἰτεῖσθαι, κατὰ τὴν ἐπίστασιν αὐτοῖς.

9 Οὗ δὲ Πιλάτος ἀπεκρίθη αὐτοῖς, λέγων· Θέλετε αὐτόν.

ἀπολύειν ὑμῶν πόν Βασιλεία τοῦ Ἰσδαιῶν ;

10 (Εὐτάσκει γὰρ ὅτι διὰ τὸ φθόρον παρεδίδεκεσθαι
αὐτὸν οἱ Ἀγγελοί.)

11 Οἱ δ' ἄρχιερεῖς ἀνέστησαν τὸν ὄχλον ἵνα μετὰ
 τῷ Βαραββᾷ ἀπολύσῃ αὐτοῖς.

12 Ο δὲ Πιλάτος ἀποκριθεὶς, πάλιν εἶπεν αὐτοῖς·
Τί ἂν θέλητε ποιῆσαι ὃν λέγετε Βασιλέα τῶν Ἰου-
δαίων;

13 Οὐ γὰρ πάλιν ἐκρῶξάμ· Σταύρωσον αὐτόν.

14 Οἱ δὲ Πλάτων ἐλέγεν αὐτῷ· Τί γὰρ κακὸν
ἰσχυρεται; Οἱ δὲ περιωτέρας ἐκράξαν· Σταύρωσον
αὐτόν.

15 Οὗ ὁ Πιλάτος βολύβωτος πρὸ ὄχλου τὸ ἱκανὸν
ποιᾶται, ἀπέλευσεν αὐτοῖς ἡ Βαραββᾶ. Ἐπαρίδωκε
ἡ Ἰστανὸν Φραγγελλώσας, ἵνα στυραθῇ.

16 Οὐ γὰρ ἐστιν ἐκείνῳ ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ἔτι τῆς
αἰῶνος, ὁ ἐστὶν πρῶτος. Ἐπεὶ καὶ οὐκ ἔστιν ὅλως
παλαιός.

17 Καὶ ἐξούνησιν αὐτὸν πορφύρῳ, ὥστε τιθίσκειν αὐτὸν πλεξάντες ἀκαθάρσιον σέφδρον.

18 Καὶ ἔρξάμπη ἀποσάξουσθαὶ αὐτὸς· Χαῖρε Βασιλεῦ
τῶ Ἰσδαιῶν.

19 Καὶ ἐτύπην αὐτὸ τῆν κεφαλὴν καλὰρμῃ·
καὶ συνέπτυσεν αὐτὴν, καὶ τιδέοντες τὰ γόνατα προσέκυνον αὐτῇ.

20 Καὶ ὅτι ἐρέταιζον αὐτῷ, ἡρέδουσιν αὐτὸν τῶν
περιφύγων, ἔρεδουσιν αὐτὸν τὰ ἱμάτια τὰ ἴδια· ἔ-
ρεουσιν αὐτὸν ἵνα σπαιρώσασιν αὐτὸν.

21 Καὶ ἀναρρέουσιν παρόντα τινὰ Σίμωνα Κυρηναῖον, (ἐκ δαίμον ἀπ' ἀγῶν, τὸν Πατέρα Ἀλεξάνδρου © R¹ 898) ἵνα ἄρῃ τὸ σταυρὸν αὐτοῦ.

22. *Καὶ φέρεται αὐτὴν ἐπὶ Γολγοθᾶ τόπος, ὃ ἐστὶν μεθ' ἑρμηνείας, καὶ λέγεται, κρατὶς τόπος.*

23 Καὶ ἔδιδεν αὐτῷ πικρὸν ἐσμυρνισμένον οἶνον· ὃ ὁ
ἦν ἔλαβε.

24 Καὶ παρωπόμενοι αὐτὸν, διεμέριζον τὰ
ἱμάτια αὐτοῦ, βάλλοντες κλῆρον ἐπ' αὐτῷ, τίς
πᾶσι.

25 Ἡ γὰρ ὥρα τρίτη, ἐῖς αὐτὴν αὐτὸν.

26 Καὶ ἔτι ἐπὶ τῶν αἰσίων αὐτοῦ ὁπρυεργε-
 μεν. Ο' ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΤΩ'Ν ΙΟΥΔΑΙ-
 ΩΝ.

37 Καὶ σὺν αὐτῇ παραῖσι δύο λεγάς, ἕνα ἐκ δεξιῶν, ὃ ἕνα ἐκ ἀριστεύων αὐτῇ.

18 Καὶ ἐπληρώθη ἡ γραφή, ἥ λέγουσα· Καὶ μὲν
 κρίνεται ἐλογισθῆναι.

29 Καὶ οἱ πνευματικοὶ ἄνθρωποι ἐλαιοφόροι εἰ-
σίν· κρατῶντες τὰς κεφαλὰς αὐτοῦ, καὶ λέγον-
τες· Οὗτος, ὁ καταλύων τὸν θάνατον, ἔστι τρισὴν
ἀνδράσις οἰκοδομῶν.

30 Σῶσον σωτὴρ, & κατὰ βῆ ἀπὸ τῆ Σταυρῆ.

31 Ομοίως δ' & οἱ Ἀρχιερεῖς ἐμπικίζοντες πρὸς ἀλλήλους μὲν τῷ Γραμματεῖν, ἔλεγον· Ἄλλως ἐσωσεν, εἰσὶν ἡ δύναται σῶσαι.

32 Ο' Χρῆστος ὁ Βασιλεὺς τῆ Ἰσραὴλ καταβῆτω νῦν ἀπὸ τῆ Σταυρῆ, ἵνα ἴδωμεν & πισθῶμεν. Καὶ οἱ συν-εσσημεμένοι αὐτῷ ἀντιδίζον αὐτόν.

33 Γενομένης δὲ ὥρας ὥκτης, σκότος ἐγένετο ἐφ' ὅλῳ τῷ ᾧ ἕως ὥρας ἑννάτης.

34 Καὶ τῇ ὥρᾳ τῇ ὀνάτῃ, ἐβήτην ὁ Ἰησοῦς φωνῇ μεγάλῃ, λέγων· Ἐλπί, Ἐλπί, λαμψαὶ Σαβαχθανί; ὃ ἐστὶ μεθερμολώμενον· Ο' Θεὸς μου, ὁ Θεός μου, τίς με ἐγκατέλειπες;

35 Καὶ πάλιν τῷ παρεστηκότι ἀκούςαντες ἔλεγον· Ἰδοὺ, Ἡλίου φανή.

36 Δρακὼν δ' εἶπεν, & γεμίσας πτόλιν ὅσας, παθεῖν τε καὶ κλάμειν, ἐποτρύν αὐτόν, λέγων· Ἄφerte ἴδωμεν εἰ ἐρχεται Ἡλίας καθελεῖν αὐτόν.

37 Ο' δὲ Ἰησοῦς ἀφῆκε φωνὴν μεγάλην, & ἐπώπτε.

38 Καὶ τὸ καταπέτασμα τῆς θύρας ἐσχίσθη εἰς δύο, ἀπὸ ἀνωθεν ἕως κάτω.

39 Ἰδὼν δὲ ὁ κεντυρίων ὁ παρεστηκὼς με συναντίας αὐτόν, ὅτι ἔτι κλάμειν ἐπέπαισεν, ἔειπεν· Ἀληθῶς ὁ ἄνθρωπος ἦτος Υἱὸς ἡν Θεοῦ.

40 Ἦσαν δὲ & γυναῖκες ἀπὸ μακρόθεν θεωρεῖσαι· ἐν αἷς ἦν & Μαρία ἡ Μαγδαλὴν, & Μαρία ἡ τῆ Ἰακώβου τῆ μικρῆς, & Ἰωσὴ Μήτηρ, & Σαλώμην.

41 Αἱ δ' & ὅτε ἦν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, ἠκολούθησαν αὐτῷ, & διεκόνουν αὐτῷ· & αἱ λοιπὴν αἱ συναναβασαὶ αὐτῷ εἰς Ἱερουσόλυμα.

42 Καὶ ἤδη ὁψίας γενομένης, (εἰπεῖ ἦν παρασκώη, ὃ ἐστὶ προσαββατόν·)

43 Ἦλθεν Ἰωσήφ ὁ ἀπὸ Ἀρμαθαίας, εὐχόμενος βολύτης, ὅς & αὐτὸς ἦν προσδεχόμενος τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, τολμήσας εἰσῆλθε πρὸς Πιλάτον, & ἤτησεν αὐτὸν τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ.

44 Ο' δὲ Πιλάτος ἐθαύμαζεν εἰ ἤδη τέθνηκε· & προσκαλίσσμενος τὸν κεντυρίωνα, ἐπηρώτησεν αὐτόν εἰ πάλοι ἀπέθανε.

45 Καὶ γινώσκων ἀπὸ τοῦ κεντυρίωνος, ἐδωρήσατο τὸ σῶμα τῷ Ἰωσήφ.

46 Καὶ ἀγοράσας σινδῶνα, & καθελὼν αὐτόν, ἐνέταξε τῇ σινδῶνι· & κατέθηκεν αὐτόν ἐν μνημείῳ ὃ ἐν λιθοτομημένῳ ὡς πέτρας· & προσηκύλισε λίθον ἐπὶ τὴν θύραν τοῦ μνημείου.

47 Ἦ δὲ Μαρία ἡ Μαγδαλὴν & Μαρία ἡ Ἰωσὴ ἐθεώρουν πᾶν τίς ἐταί.

Κεφ. ις', ιβ'.

1 **Κ** Α' διαγενομένη ἡ Σαββάτη, Μαρία ἡ Μαγδαλὴ καὶ Μαρία ἡ ἑστὴ Ἰακώβου καὶ Σαλώμη ἀγύρασαν ἀρώματα, ἵνα ἐλθῶσι ἀλείψασιν αὐτόν.

2 Καὶ λίαν πρῶτ' τῆς μιᾶς Σαββάτων ἔρχονται ἐπὶ τὸ μνημεῖον, ἀνατείλαντος ἡ ἡλίου.

3 Καὶ ἔλεγον πρὸς ἐμῆς· Τίς ἀποκελύσει ἡμῖν τὸ λίθον ὅτι τῆς θύρας τῆς μνημεῖου;

4 Καὶ ἀναβλέψασαι θεωρῶσιν ὅτι ἀποκεκλύσται ὁ λίθος· ἦν γὰρ μέγας σφῆρα.

5 Καὶ εἰσληθῶσι εἰς τὸ μνημεῖον, εἶδον νεανίσκον καθήμενον ἐν τοῖς δεξιotois, περιβεβλημένον ὑαλῆν ἁλίου· καὶ ἔκταθ' αὐτῶν.

6 Οὗ δὲ λεγόν αὐταῖς· Μὴ ὀκθαμβήσθε· Ἰησοῦς ὁ ζητεῖτε τὸν Ναζαρεῖν τὸν ἐσταυρωμένον· ἡ γέγραπται, οὐκ ἔστιν ὁδε· ἴδε ὁ τόπος ὅπου ἔθηκαν αὐτόν.

7 Ἀλλ' ὑπάγετε, εἰπάτε τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, καὶ τῷ Πέτρῳ, ὅτι προέβη ὑμῶν εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ὁκεῖ αὐτὸν ὁψείθε, καθὼς ἐγένετο ὑμῖν.

8 Καὶ ἔκταθ' αὐτῶν ταχὺ, ἐφυγεν ἀπὸ τῆς μνημεῖου· ἦτο γὰρ αὐτῶν τρόμος καὶ ἐκστασις· καὶ ἔθεντο ἑαυτὰς ἐφ' ὧν ἔκειτο.

9 Ἀναστὰς δὲ πρῶτ' πρῶτῃ Σαββάτῃ, ἔφανη πρῶτον Μαρίᾳ τῇ Μαγδαλῇ, ἀφ' ἧς ὀκταβλήθη ἐπὶ ταῖς θάψαι.

10 Εἰκοὴν πορεύεσθαι ἀπήγγειλε τοῖς μετ' αὐτῶν γενομένοις, περὶ τῆς καὶ κλεισῆς.

11 Καὶ ἐκεῖνοι, ἀκούσαντες ὅτι ζῇ, καὶ ἐθεώρουν αὐτὴν, καὶ ἐπίστησαν.

12 Μετὰ δὲ ταῦτα, δυσὶν ἄλλοις περὶ αὐτῶν περὶ αὐτῶν ἐφανερώθη ἐν ἑτέρᾳ μορφῇ, πορεύμεναι εἰς ἕτερον.

13 Καὶ ἐκεῖνοι ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν τοῖς ἀποστόλοις· καὶ ἐκεῖνοι ἐπίσταντο.

14 Τότε ἔειπεν αὐτοῖς αὐτοῖς τοῖς ἑστέροις ἑαυτῶν ἐφανερώθη, καὶ ἀνείδιστε τὴν ἀπιστίαν αὐτῶν, καὶ σκληροκαρδίαν, ὅτι τοῖς θεωρομένοις αὐτῶν ἐγγεγερμένον ἐκ ἐπίσταντο.

15 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Πορεύεσθαι εἰς πάντα κόσμον εἰπάτε, κηρύξατε τὸ εὐαγγέλιον πάσῃ τῇ κτίσει.

16 Οὗ πιστεύοντες καὶ βαπτισθεῖς, σωθήσονται· ὁ δὲ ἀπιστῶν, κατακριθήσεται.

17 Σημεῖα ἃ τοῖς πιστεύουσιν ταῦτα παρακολουθήσει.
Εν τῷ λόγῳ καὶ μὴ δαιμόνια ἐκβαλεῖσι· γλώσσαις λα-
λήσονται καὶ ναῖς·

18 Ὅφεις ἀρῶσι· καὶ θανάσιμόν τι πίωσιν, ἢ μὴ
αὐτοὶ βλάβῃ· ὑπὸ ἀρρώστου χεῖρας ἐπιθήτησι, ἔκα-
λῶς ἔξουσιν.

19 Ὁ μὲν ἦν Κύριος μὲν τὸ λαλῆσαι αὐτοῖς, ἀνε-
λήφθη εἰς τὸν ἑρῆμόν, ἔκαστος δὲ ἐκείθεν ὅτι δεξιάς τῷ
Θεῷ.

20 Ἐκείνοι δὲ ὁρμώμενοι ἐκέρουζον πλῆταχῇ, τῇ
Κυρίῳ συνεργῶντες, καὶ τῷ λόγῳ βεβαιούντες διὰ τὴν
ἐπακολουθούντων σημείων.



ΤΟ ΚΑΤΑ ΛΟΥΚΑΝ

ΕΤ' ΑΓΓΕΛΙΟΝ.

Κεφ. α'. Ι.

Ε'ΠΕΙΔΗ ΠΕΡ πολλοὶ ἐτεχέαρησαν ἀνατάξασθαι διήγησιν, ὡς τῷ πε-
πληροφορημένων ἐν ἡμῖν πραγμάτων,
2 Καθὼς παρέδοσαν ἡμῖν οἱ ἀπ' ἀρχῆς αὐτόπται καὶ ὑπρέται γενόμε-
νοι λόγον.

3 Ἐδοξε καί μοι, παρεκκληθηκότες ἀναθεῖν τα-
σιν ἀκριβῶς, καθεξῆς σοι γράψαι, κράτσει Θεο-
φιλε'.

4 Ἰτα ἐπιγνῶς περὶ ὧν κατηχήθης λόγον τῷ ἀσφάλειαν.

5 Ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἡρώδου τοῦ βα-
σιλέως τῆς Ἰουδαίας, ἱερῶς τις οὐνό-
ματι Ζαχαρίας, ὃς ἐφημερίᾳς Ἀβιά· καὶ ἡ συ-
νὴ αὐτῆς ἐκ τῶν θυγατέρων Ἀάρων, ἡ τὸ ὄνομα αὐ-
τῆς Ἐλισάβετ.

6 Ἡ δὲ αὐτῷ ὅτι δίκαιοι ἀμφότεροι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ,
πορευόμενοι ἐν πάσαις ταῖς ἐντολαῖς τοῦ Κυρίου ἀμεμπτοί.

7 Καὶ ἦν ἡν αὐτοῖς τέκνον, καθότι ἡ Ἐλισάβετ
ἦν στείρα, ἡ ἀμφότεροι προβεβηκότες ἐν ταῖς ἡμέραις
αὐτῶν ἡσάρ.

8 Ἐγένετο δὲ ἐν πῶ ἱερατεύειν αὐτὸν ἐν τῇ τάξει
τῆς ἐφημερίας αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ τοῦ Θεοῦ,

9 Κατὰ τὸ ἔθος τῆς ἱερατείας, ἔλαχε τοῦ θυμιά-
σαι, εἰσελθὼν εἰς τὸ ναὸν τοῦ Κυρίου.

10 Καὶ πᾶν τὸ πλῆθος τοῦ λαοῦ ἦν προσδύχόμενον ἔξω
τῆς θύρας τοῦ θυμιάματος.

11 Ὡφθη δὲ αὐτῷ ἄγγελος Κυρίου, ἔσως ἐκ δεξιῶν
τοῦ θυμιάματος τοῦ θυμιαματος.

12 Καὶ ἐταράχθη Ζαχαρίας ἰδὼν, ἡ φόβος ἐπέτε-
σεν ἐπ' αὐτόν.

13 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτόν ὁ ἄγγελος· Μὴ φοβῆ
Ζαχαρία· διότι εἰσηκήσθη ἡ δεήσις σου· ἡ γυνὴ
σου Ἐλισάβετ ἔσται ὡνόματι τῆς ἡμετέρας σου, ἡ καλέσεις τὸ ὄνο-
μα αὐτῆς Ἰωάννην.

14 Καὶ ἔσται χαρά σοι ἡ ἀγαλλίασις, ἡ πολλοὶ ἐπὶ
τῇ ἡμετέρας σου χαρήσονται.

15 Ἐσται γὰρ μέγας ἐνώπιον τοῦ Κυρίου· ἡ οἶνον
ἡ σί-

Ε σίκερα ἢ μη πῆρ· Ε Πνύματα Α'γίς πλητθήσε-
ται ἐτι ὡς κοιλίας μητρὸς αὐτῆς.

16 Καὶ πολλοὺς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ ὑπερέψαι ὅτι
Κύριον τὸ Θεὸν αὐτῶν.

17 Καὶ αὐτοὶ προελθόντες ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν πνύμα-
τι Ε δυνάμει Ἡ'λιού, ὑπερέψαι καρδίας Πατέρων ὅτι
τέκνα, καὶ ἀπειθεῖς ἐν φρονήσει δικαίων, ἐτοιμαῖσαι
Κυρίῳ λαὸν κατεσκευασμένον.

18 Καὶ εἶπε Ζαχαρίας πρὸς τὸ ἄγγελον· Κυ-
τὰ τῇ γνώσῳμαι τοῦτο· ἐγὼ γὰρ εἰμι πρεσβύ-
της, καὶ ἡ γυναῖξ μου προβεβηκυῖα τῇ ταῖς ἡμέραις
αὐτῆς.

19 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγελος, εἶπεν αὐτῷ· Ε-
γὼ εἰμι Γαβριὴλ ὁ παριστῶς ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ· Ε
ἀπεστάλην λαλῆσαι πρὸς σέ, Ε ἀγγαλιῶσασθαί σε
ταῦτα.

20 Καὶ ἰδοὺ, ἔστη σιωπῶν, καὶ μὴ ἐντάμνωτος λαλῆ-
σαι, ἀχρεὴς ἦς ἡμέρας γένεσθαι ταῦτα. ἀλλ' ὡς καὶ ἐ-
πίσθυσας ταῖς λόγοις μου, εἴ τινες παρεδήκοντα εἶ
τὸ κκερὸν αὐτοῦ.

21 Καὶ ἦν ὁ λαὸς προσδοκῶν τὸ Ζαχαρίαν· Ε ἐ-
παύμαζον ἐν τῇ χρονίῳ αὐτοῦ ἐν τῇ κατῷ.

22 Ἐξελθὼν τοὺς ἡδυνάτο λαλῆσαι αὐτοῖς· Ε ἐ-
πίγνωσαν ὅτι ὅσπαιον ἐώρακεν ἐν τῷ πατρί. καὶ αὐτοὶ
ἦν ἀληθύνων αὐτοῖς· καὶ διέμεινε κωφός.

23 Καὶ ἐγένετο ὡς ἐπλήσθησαν αἱ ἡμέραι τῇ λει-
τουργίᾳ αὐτοῦ, ἀπῆλθεν εἰς τὸ οἶκον αὐτοῦ.

24 Μετὰ δὲ ταῦτα τὰς ἡμέρας ἐπέλαβεν Ἐλισά-
βετ ἡ γυναῖξ αὐτοῦ· καὶ παρέκρυβεν ἑαυτὴ μῆνας τέντε,
λέγουσα·

25 Ὅτι ὅταν μοι πεποιήκεν ὁ Κύριος ἐν ἡμέραις αὐτῆς
ἐπαύειν ἀφελῆν τὸ ὄνειδος μου ἐν ἀνθρώποις.

26 Ἐν τῷ μῶνι τῷ ἑκτῷ ἀπεστάλη ὁ ἄγγελος Γα-
βριὴλ πρὸς τοῦ Θεοῦ εἰς πόλιν τὴν Γαλιλαίας ἣν ὄνομα
Ναζαρέτ,

27 Πρὸς Παρθένον μεμνησθυσμένην ἀνδρὶ ὃν ὄνομα
Ἰωσήφ, καὶ οἴκου Δαβὶδ· Ε τὸ ὄνομα τὸ Παρθένου,
Μαριάμ.

28 Καὶ ἐισελθὼν ὁ ἄγγελος πρὸς αὐτὴν εἶπε·
Χαῖρε κεχαριστομένη· ὁ Κύριος μετὰ σέ· εὐλογημένη
σύ ἐν γυναῖξιν.

29 Ἡ δὲ ἰδοὺς διέταραχθῆ ἐπὶ τῷ λόγῳ αὐτοῦ· Ε
διελογίζετο ποταπὸ εἴη τὸ ἰσχυρὸν ἡτοῦ.

30 Καὶ εἶπεν ὁ ἄγγελος αὐτῇ· Μὴ φοβῆ Μαριάμ·
ἐγὼ γὰρ χάριν παρὰ τοῦ Θεοῦ.

31 Καὶ ἰδοὺ, συλλήβη ἐν γαστρί, Ε τέξῃ Υἱόν· Ε
καλέσεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰησοῦ.

32 Οὗτος ἔσται μέγας, Ε τῶν Υἱῶν κληθήσε-
ται· Ε δώσω αὐτῷ Κυρεὸς ὁ Θεὸς τὸν θρόνον Δαβὶδ
τῷ Πατρί αὐτοῦ.

33 Καὶ βασιλεύσει ὑπὲρ τοῦ οἴκου Ἰακώβου τὰς αἰῶνας, καὶ τὸ βασιλεῖαι αὐτοῦ ἔσται τέλος.

34 Εἶπε ὁ Μαριάμ πρὸς τὸν ἄγγελον· Πῶς ἔσται ἥτο, ἐπεὶ ἄνδρα ἢ γυναῖκα;

35 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ ἄγγελος εἶπεν αὐτῇ· Πνεῦμα Ἅγιον ἐπελεύσεται ὑπὲρ σέ, καὶ δύναμις ὑψίστης ὑπισκιάσει σοί· διὸ καὶ τὸ γινώμενον ἐν σοὶ ἅγιον, κληθήσεται Ἰδοὺ Θεοῦ.

36 Καὶ ἰδοὺ, Ἐλισάβετ ἡ συγγενὴς σου, καὶ αὕτη συνηλφύει τὸν ἐν γήρατι αὐτῆς· καὶ ἔτος μὲν ἕκτος ἐστὶν αὐτῇ τῇ καλυμμένη σαύρᾳ.

37 Ὅτι ἔκ ἀδυνατήσῃ παρὰ τῷ Θεῷ πάν ῥῆμα.

38 Εἶπε ὁ Μαριάμ· Ἰδοὺ ἡ δέλη Κυρίου· γένοιτό μοι κατὰ τὸ ῥῆμα σου· καὶ ἀπήλθεν ἀπ' αὐτῆς ὁ ἄγγελος.

39 Ἀναστὰς ὁ Μαριάμ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις, ἐπορεύθη εἰς τὴν ὄρειν μὲν σπυδαῖς, εἰς πόλιν Ἰδὼν.

40 Καὶ ἐσῆλθεν εἰς τὸ οἶκον Ζαχαρίου, καὶ ἡσπασατο τὴν Ἐλισάβετ.

41 Καὶ ἐγένετο ὡς ἤκουεν ἡ Ἐλισάβετ τὸ ἀσπασμὸν τοῦ Μαριάμ, ἐσκίρτισε τὸ βρέφος ἐν τῇ κοιλίᾳ αὐτῆς, καὶ ἐπλήθη Πνεύματος Ἁγίου ἡ Ἐλισάβετ.

42 Καὶ ἀνεφώνησεν φωνῇ μεγάλῃ, καὶ εἶπεν· Εὐλογεῖται σὺ ἐν γυναιξὶ, καὶ ὀλογημένος ὁ καρπὸς τῆς κοιλίας σου.

43 Καὶ πόθεν μοι ἥτο, ἵνα ἔλθῃ ἡ Μητὴρ τοῦ Κυρίου μου πρὸς με;

44 Ἰδὼν γὰρ, ὡς ἐγένετο ἡ φωνὴ τοῦ ἀσπασμῆς σου εἰς τὰ ὠτά μου, ἐσκίρτησεν ἐν ἀγαλλιάσει τὸ βρέφος ἐν τῇ κοιλίᾳ μου.

45 Καὶ μακαρεῖα ἡ πισδύσασα· ὅτι ἔσται τελείωσις τοῖς λεκαλημένοις αὐτῇ παρὰ Κυρίου.

46 Καὶ εἶπε Μαριάμ· Μεγαλύνει ἡ ψυχὴ μου τὸν Κύριον.

47 Καὶ ἠγαλλίασε τὸ πνεῦμά μου ὑπὲρ τῷ Θεῷ τῷ Σωτήρῳ μου.

48 Ὅτι ἐπέβλεψεν ὑπὲρ τῶν ταπεινῶν καὶ δούλῳ αἰῶν· ἰδοὺ γὰρ, ἀπὸ τῶν μακκαρίστί μου πάσαι αἰ ὕμναι.

49 Ὅτι ἐποίησέ μοι μεγαλεῖα ὁ δυνατὸς, καὶ ἡ ἡγίαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ.

50 Καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ εἰς γενεὰς γενεῶν τοῖς φοβουμένοις αὐτόν.

51 Ἐποίητε κράτος ἐν βραχίονι αὐτοῦ· δισκήρπισαν ὑπερφάνους ὀφθαλμοὺς καρδίας αὐτοῦ.

52 Καθίστηλε δυνάστας ἀπὸ θρόνων, καὶ ὑψώσε ταπεινούς.

53 Πεινῶντας ἐρέπλησιν ἀγαθῶν, ἔ παντῶντας
ἔχρατες ἐλε κερῆς.

54 Ἀντελάβετο Ἰσραὴλ παιδὸς αὐτοῦ μνηστῆται
ἐλες.

55 (Καθὼς ἐλάλησε πρὸς τῶν Πατέρων ἡμῶν,
τῷ Ἀβραάμ, ἔ τῷ σπερματι αὐτοῦ,) εἰς τὸν
αἰῶνα.

56 Ἐμεινε δὲ Μαριὰμ σὺν αὐτῇ ὑπερέμνητας τρεῖς.
ἔ ὑπέσπευεν εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς.

57 Τῇ δὲ Ἐλισάβετ ἐπλήσθη ὁ χρότος τῷ τεκεῖν
αὐτὴν. ἔ ἐγέννησιν Υἱόν.

58 Καὶ ἠκυσαν οἱ πατέριοι ἔ οἱ συγγενεῖς αὐτῆς,
ὅτι ἐμεγάλυνε Κύριος τὸ ἔλεος αὐτῷ μετ' αὐτῆς. ἔ
συνέχαλλον αὐτῇ.

59 Καὶ ἐγένετο, ἐν τῇ ὁγδοῇ ἡμέρᾳ ἦλθον πατρι-
μὲν τὸ παιδίον. ἔ ἐκάλην αὐτὸ ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῷ
Πατρὸς αὐτοῦ, Ζαχαρίᾳ.

60 Καὶ ἀποκριθεῖσα ἡ μήτηρ αὐτοῦ, εἶπεν. Οὐχί.
ἔ μὰ κληθῆσεται Ἰωάννης.

61 Καὶ εἶπον πρὸς αὐτὴν. Ὅτι ἑδείς ἐσιν ἐν τῇ
συγγενείᾳ σὴ, ὅς καλεῖται τὸ ὄνοματι τούτῳ.

62 Ἐγένον δὲ τῷ Πατρὶ αὐτοῦ, τὸ τί ἂν θέλοι κα-
λεῖσθαι αὐτόν.

63 Καὶ αἰτήσας πινακίδιον, ἔγραψε, λέγων.
Ἰωάννης ἐστὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἐθαύμασαν πάν-
τες.

64 Ἀνέβη δὲ τὸ σῶμα αὐτῇ παρὰ τὸν οἶκον,
ἔ ἐλάλη ἀλογῶν τὸν Θεόν.

65 Καὶ ἐγένετο ἐπὶ πάντας φόβος τῆς πατρι-
μῆς. ἔ ἐν ὅλῃ τῇ ἐρημῇ τῆς Ἰουδαίας διελαλῶτο
πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα.

66 Καὶ ἔθεντο πάντες οἱ ἀκήσαντες ἐν τῇ καρδίᾳ
αὐτῶν, λέγοντες. Τί ἄρα τὸ παιδίσκον τούτο ἐστὶ; Καὶ
χεῖρ Κυρίου ἦν μετ' αὐτοῦ.

67 Καὶ Ζαχαρίας ὁ Πατὴρ αὐτοῦ ἐπλήσθη Πνώμα-
τος Ἀγίου. ἔ προσφῆτάωσε, λέγων.

68 Εὐλογητός Κύριος ὁ Θεός τῷ Ἰσραὴλ, ὅτι ἐπι-
σκέψατο ἔ ἐποίησε λύτρωσιν τῷ λαῷ αὐτοῦ.

69 Καὶ ἠγάρε κίεας σωτηρίας ἡμῶν, ἐν τῷ οἴκῳ
Δαβὶδ τῷ παιδὸς αὐτοῦ.

70 Καθὼς ἐλάλητε διὰ στόματος τῶν ἁγίων τῶν
ἀπ' αἰῶνος Προφητῶν αὐτοῦ.

71 Σωτηρίᾳ ἡμῶν ἐχθρῶν ἡμῶν, ἔ ἐκ χειρὸς πάν-
των τῶν μισήντων ἡμῶν.

72 Ποῦσαι ἔλεος μὲ τῶν Πατέρων ἡμῶν, ἔ μνη-
στῆται ἡμῶν ἀγίας αὐτοῦ.

73 Ὅρκον ὃν ὤμοσε πρὸς Ἀβραάμ τῷ Πατρί ἡμῶν
τῷ δύναι ἡμῶν.

74 Ἀφοβῶν, ἐκ χειρὸς τῶν ἐχθρῶν ἡμῶν ῥυσθῆν-
τας, λατρώων αὐτοῦ.

75 Ἐν ὁσιότητι ἔ δικαιοσύνη ἐνώπιον αὐτῶν, πάσαι
ταῖς ἡμέραις τῆ ζωῆς ἡμῶν.

76 Καὶ σὺ παῖδιον, Προφῆτης ὑψίστη κληθήσῃ·
προπορεύσῃ γὰρ πρὸ προσώπου Κυρίου, ἐτοιμάσαι ὁδὸν
αὐτοῦ.

77 Τῷ δὲ ἔναι γνώσιν σωτηρίας τῷ λαῷ αὐτοῦ, ἐν
ἀφ᾽ ἧς ἀμαρτιῶν αὐτῶν.

78 Διὰ σπλάγχνα ἐλπίς Θεῷ ἡμῶν, ἐν εἰς ἐπισκέ-
ψατο ἡμᾶς ἀνατολὴ Ἰη. ὑψους.

79 Ἐπιφάνει τοῖς ἐν σκότει καὶ σκιᾷ θανάτου καθη-
μένοις, καὶ καταλύεται τὰς πόδας ἡμῶν εἰς ὁδὸν εἰ-
ρήνης.

80 Τὸ δὲ παῖδιον ἤρξαντο καὶ ἐκραταίωτο Πνύματι·
ἔ ἦν ἐν ταῖς ἐρήμοις ἕως ἡμέρας ἀναδείξεως αὐτοῦ πρὸς
τὸ Ἰσραὴλ.

Κεφ. β'. 2.

1 Ἐγένετο δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ἔβηθε
δύγμα παρὰ Καίσαρος Αὐγούστου, ἀπογραφε-
σθαι πᾶσιν τῷ οἰκουμενῷ.

2 (Αὕτη ἡ ἀπογραφὴ πρώτη, ἐγένετο ἡγεμονούον-
τος τῆ Συρίας Κυρηνίου.)

3 Καὶ ἐπορεύοντο πάντες ἀπογραφεσθαι, ἕκαστος εἰς
τὴν ἰδίαν πόλιν.

4 Ἀνέβη δὲ ἔ Ἰωσήφ ἀπὸ τῆ Γαλιλαίας, ἐκ πό-
λεως Ναζαρέτ, εἰς τὴν Ἰουδαίαν, εἰς πόλιν Δαβὶδ,
ἧτις καλεῖται Βηθλεὲμ, (διὰ τὸ εἶναι αὐτὸν Ἰη υἱ-
ὸς ἔ πατρὸς Δαβὶδ.)

5 Ἀπογράψασθαι σὺν Μαριὰμ τῇ μεμνησμένη
αὐτοῦ γυναικὶ, ἣσιν ἐγκύον.

6 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ εἶναι αὐτὸς ἐκεῖ, ἐπλήσθη-
σαν αἱ ἡμέραι τῆ τεκείναι αὐτὴν.

7 Καὶ ἔτεκε τὸν Υἱὸν αὐτῆς τὸν πρωτότοκον,
καὶ ἰσπαργάνωσεν αὐτὸν, ἔ ἀνεκλινεν αὐτὸν ἐν τῇ
φάτνῃ. Διότι ἔκ ἦν αὐτοῖς τόπος ἐν τῷ κατα-
λύματι.

8 Καὶ ποιμένες ἦσαν ἐν τῇ χώρα τῇ αὐτῇ ἀγρα-
λλῆντες, ἔ φυλάσσοντες φυλακὰς τῆ νυκτὸς ἐπὶ τῷ
ποίμνῳ αὐτῶν.

9 Καὶ ἰδὼς, ἄγγελος Κυρίου ἐπέστη αὐτοῖς, καὶ ὁ-
ξὰ Κυρίου παύσατο αὐτοὺς· καὶ ἐφοβήθησαν φόβον
μεγάλον.

10 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ ἄγγελος· Μὴ φοβεῖσθε·
ἰδὼς γὰρ, εὐαγγελίζομαι ὑμῖν χαρὰν μεγάλην, ἥτις
ἔσται παντὶ τῷ λαῷ.

11 Ὅτι ἐτέχθη ὑμῖν σήμερον Σωτὴρ, ὃς ἐστὶ Χρ-
στὸς Κύριος, ἐν πόλει Δαβὶδ.

12 Καὶ τὸ πρῶτον τὸ σημεῖον· Εὐρήσατε βρέφος ἐσπαρ-
γνυμένον, καίμενον ἐν τῇ φάττῃ·

13 Καὶ Ἡραίας ἐγένετο σὺν τῷ ἀγγέλῳ πλῆ-
θος στρατῶν ἑβραίων, αἰνούντων τὸν Θεόν, καὶ
λεγόντων·

14 Δόξα ἐν ὑψίστοις Θεῷ, & ἐπὶ γῆς εἰρήη, ἐν
ἀνθρώποις εὐδοκία·

15 Καὶ ἐγένετο, εἰς ἀπῆλθον ἀπ' αὐτῶν εἰς τὸν
νόμον οἱ ἀγγελοι, & οἱ ἄνθρωποι οἱ ποιμένες ἦσαν
πρὸς ἀλλήλους· Διέλθοντες δὲ εἰς Βηθλεέμ, καὶ
ἰδόντες τὸ ῥῆμα τῷ τοῦ γεγονότος, ὃ ὁ Κύριος
ἐγνώρισεν ἡμῖν·

16 Καὶ ἦλθον ἀπόσπαστες, & Ἀρεῦρον τὴν τε
Μαριάμ & τὸν Ἰωσήφ, & τὸ βρέφος κεκρυμμένον ἐν τῇ
φάττῃ·

17 Ἰδόντες δὲ διεγνώρισαν πρὸς τὸ ῥῆματος τὸ λα-
λῆντος αὐτοῖς πρὸς τὰ παῖδ' αὐτῶν·

18 Καὶ πάντες οἱ ἀκησάντες ἐθαύμαζον πρὸς τὴν
ἡλιαζέντων κατὰ τῶν ποιμένων πρὸς αὐτῆς·

19 Ἡ δὲ Μαριάμ τὰς συνέχευεν τὰ ῥήματα ταῦ-
τα, συμβάλλουσα ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς·

20 Καὶ ἐπέσρεψαν οἱ ποιμένες, δεξάζοντες & αἰ-
νῶντες τὸν Θεόν ὅτι· πᾶσιν οἷς ἠκέσθη & εἶδον, καὶ οὕτως
ἐκλήθη πρὸς αὐτῆς·

21 Καὶ ὅτε ἐκλήσθησαν ἡμέραι ὀκτὼ τὸ πρῶτον·
μὲν τὸ παῖδ' αὐτόν, & ἐκλήθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰησοῦς,
τὸ κληθῆναι αὐτὸν τὸ ἀγγέλου πρὸς τὸ συλλαφθῆναι αὐτόν
ἐν τῇ κοιλίᾳ·

22 Καὶ ὅτε ἐκλήσθησαν αἱ ἡμέραι τὸ καθαρισμὸν
αὐτῆς κατὰ τὸ νόμον Μωσέως, ἀνήγαγον αὐτόν εἰς
Ἱερουσαλὴμ, πρὸς τὴν Κυρίαν,

23 (Καθὼς γέγραπται ἐν νόμῳ Κυρίου· Ὅτι
πάν ἄρτεν ἄνιόντος μητρί, ἅγιον τῷ Κυρίῳ
κληθήσεται)

24 Καὶ τὸ δῶναι θυσίαν, κατὰ τὸ ῥηκέντος
ἐν νόμῳ Κυρίου, ζεύγος περιούριον, ἢ δύο περὶ τοῦ
περισσεύον·

25 Καὶ ἰδὼν, ἦν ἄνθρωπος ἐν Ἱερουσαλὴμ ὃ ὄνομα
Σιμεὼν· & ὁ ἄνθρωπος ἦτος δίκαιος & εὐλαβὴς, προσ-
δεχόμενος παρακληθῆναι τῷ Ἰσραὴλ· & Πνεῦμα Ἄγιον
ἦν ἐπ' αὐτόν·

26 Καὶ ἦν αὐτῷ κεχρηματισμένον κατὰ τὸ Πνεῦμα
μνηστὴρ τῷ Ἄγιῳ, μὴ ἰδεῖν θάνατον πρὶν ἢ ἰδῇ τὸν Κυ-
ρίον·

27 Καὶ ἦλθεν ἐν τῷ Πνεύματι εἰς τὸ ἱερόν·
& ἐν τῷ αἰσχυρῶν τῆς ζωῆς τὸ παῖδ' αὐτόν Ἰησοῦν,
τοῦ ποιῆσαι αὐτόν κατὰ τὸ ῥηκέντος τῷ νόμῳ
κατὰ τὸν αὐτόν·

28 Καὶ αὐτὸς εἰδέκετο αὐτὸ εἰς τὰς ἀγκάλας αὐτοῦ
& εὐλόγησε τὸν Θεόν, & εἶπε·

29 Νῦν ἀπολύεις τὸν δούλόν σου, δάσποτα, κατὰ τὸ
μᾶλλον, ἐν εὐεχίᾳ.

30 Ὅτι εἶδον οἱ ὀφθαλμοί μου τὸ σωτήριόν

31 Ὅ ἡτοίμασας κατὰ πρόσωπον πάντων τῶν
ῥαββίνων.

32 Φῶς εἰς ἀποκάλυψιν ἐθνῶν, ἡ δόξα σου ὡς ἐκ
ραββίλ.

33 Καὶ ἦν Ἰωσήφ ὁ ἡ Μήτηρ αὐτοῦ θωπεύοντες
ἐν τοῖς λαλῶμένοις περὶ αὐτῆς.

34 Καὶ ἐβλόγηκεν αὐτὰς Συμεὼν, ὁ ἔπι πρὸς
ἐντολὴν τῆς Μητὸς αὐτοῦ. Ἰδοὺ, ἔτος κείται εἰς
ῥαββίνων ὁ ἀρχισυνάγωγος πολλῶν ἐν τῇ Ἰερουσαλῇ, ὁ εἰς ση-
μεῖον ἀντιλεγεμένων.

35 (Καὶ σὺ ὁ αὐτῆς τῶν ψυχῶν διελευσέταί σου ὁμο-
ῖα.) ὅπως ἀπὸ ἀποκαλυφθείσιν ἐκ πολλῶν καρδίᾳς
λογισμοί.

36 Καὶ ἦν Ἄννα Προφῆτις, θυγάτηρ Φαρισαίου,
φυλῆς Ἀσέρ, αὕτη προβεβηκυῖα ἐν ἡμέραις πολ-
ύς, ζήσασα ἐν τῇ μὲν ἀνδρὶ ἐπὶ ἀπὸ τῆς Παρθε-
νης αὐτῆς.

37 Καὶ αὕτη χάρις ὡς ἐπὶ ὀρθόκοντα τεσσάρων, ἡ
ἀφίστατο ἀπὸ Ἱερουσαλῆ, καὶ δεῖσεν λατρεύον-
τα ὡς ἡμέραν.

38 Καὶ αὕτη αὕτη τῇ ὥρᾳ ἐπιστάσα ἀνδομολογεῖτο
Κυρίῳ, ὁ ἐλάλει περὶ αὐτῆς πᾶσι τοῖς προσδεχομέ-
νοις λύτρωσιν ἐν Ἱερουσαλῇ.

39 Καὶ ὡς ἐτέλεσαν ἅπαντα τὰ κατὰ τὸν νόμον
τοῦ κυρίου, ὑπέστρεψαν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, εἰς τὴν πόλιν
τῆς Ναζαρέτ.

40 Τὸ δὲ παιδίον ἤμελλεν, καὶ ἰσχυροῦτο
ῥαββί, πληροῦν σφίνας, ὁ καὶ χάρις Θεοῦ ἔτι
ἐν αὐτῷ.

41 Καὶ ἐπορεύοντο οἱ γονεῖς αὐτοῦ κατ' ἔτος εἰς Ἱε-
ρουσαλὴν τῇ ἑορτῇ τῇ Πάσχᾳ.

42 Καὶ ὅτε ἐγένετο ἐπὶ δώδεκα, ἀναβά-
τον αὐτοῦ εἰς Ἱερουσαλὴν κατὰ τὸ ἔθος τῆς
ῥαββί.

43 Καὶ τελειοσάντων τῶν ἡμέρας, ἐν τῷ ἀποστρέ-
φειν αὐτὸς, ἀπέμεινεν Ἰησοῦς ὁ παῖς ἐν Ἱερουσαλῇ.
ὅτι ἔγνω Ἰωσήφ ὁ ἡ Μήτηρ αὐτοῦ.

44 Νομίσαντες ὁ αὐτὸν ἐν τῇ συνοδίᾳ εἶναι, ἡλ-
θον ἡμέρας ὁδόν. ὁ ἀνέζητον αὐτὸν ἐν τοῖς συγγενέ-
σι καὶ ἐν τοῖς γνωστοῖς.

45 Καὶ μὴ εὕροντες αὐτόν. ἀπέστρεψαν εἰς Ἱερουσα-
λὴν, ζητῶντες αὐτόν.

46 Καὶ ἐγένετο, μεθ' ἡμέρας τρεῖς ἕξον
ἐπὶ τῇ ἐν τῇ Ἱερῷ καθεζομένη ἐν μέσῳ τῶν δι-
δασκάλων, καὶ ἀκούοντα αὐτοῦ, καὶ ἐπερωτῶ-
ντα αὐτὸς.

47 Εξίστατο ὅ πάντες οἱ ἀκούοντες αὐτῷ, ἐπὶ τῇ συνέσει ἃ ταῖς ἀποκρίσεσιν αὐτοῦ.

48 Καὶ ἰδόντες αὐτὸν ὑπελάμβανον ὅτι πρὸς αὐτὸν ἡ Μήτηρ αὐτοῦ εἶπε· Τέκνον, τί ἐποίησας ἡμῖν ὕτως; ἰδὼ ὁ Πατὴρ σου καὶ ὁ δυνάμωσι ἐζητῶμέν σοι.

49 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὴν· Τί ὅτι ἐζητῶτί με; ἢ ἤδετε ὅτι ἐν ποῖς τῷ Πατρί μου εἰμὶ;

50 Καὶ αὐτοὶ ἃ συνῆκαν τὸ ῥῆμα, ὃ ἐλάλησεν αὐτοῖς.

51 Καὶ κατέβη μετ' αὐτοῦ, ἃ ἦλθεν εἰς Ναζαρετ· ἃ ἦν ὑποτακόμενος αὐτοῖς. Καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ διέτρεφε πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς.

52 Καὶ Ἰησοῦς πρόεκατε σοφία ἃ ηλικία, ἃ χάριτι παρὰ Θεοῦ καὶ ἀνθρώποις.

Κεφ. γ'. 3.

1 Εἰς τὴν ἡμέραν ἐκείνην ὅ πεντεκαδεκάτῃ τῆς ἡγεμονίας Τιβεριῦ Καίσαρος, ἡγεμονεύοντος Ποντίου Πιλάτου τῆς Ἰουδαίας, καὶ τετραρχούντος τῆς Γαλιλαίας Ἡρώδης, Φίλιππος δὲ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ τετραρχῶντος τῆς Ἰτρυαίας καὶ Τραχανίπιδος χώρας, καὶ Λυτανίου τῆς Ἀβιλιωνίης τετραρχῶντος,

2 Ἐπὶ Ἀρχιερέων Ἀννᾶ καὶ Καϊάφα, ἐγένετο ῥῆμα Θεοῦ ὅτι Ἰωάννης τὸν τῷ Ζαχαρίᾳ γένον, ἐν τῇ ἐρήμῳ.

3 Καὶ ἦλθεν εἰς πᾶσαν τὴν περὶ χώραν τοῦ Ἰορδάνου, κηρύσσων Βάπτισμα μετανοίας εἰς ἅφεσιν ἁμαρτιῶν.

4 Ὡς γέγραπται ἐν βίβλῳ λόγων Ἡσαΐου τοῦ Προφήτου, λέγοντος· Φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἐπιμαρτυρεῖτε τῷ ὁδὸν Κυρίου, ὡς θεὸς ποιῇτε τὰς τρίβους αὐτοῦ.

5 Πᾶσα φωνὴ κηρύσσεται, ἃ πᾶν ἔπος ἃ δουρὸς ταπεινῶνται· ἃ ἔσται τὰ σκοτία εἰς φῶς καὶ ἃ αἱ τραχεῖαι εἰς ὁδὸν λαοῦ.

6 Καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ τὸ Σωτήριον τοῦ Θεοῦ.

7 Εἰπὼν οὖν τοῖς ἀποκρινομένοις ὅχλοις ἐπιστρέφειν πρὸς αὐτοῦ· Γεννήματα ἐχιδνῶν, τί ἐπαρθεῖς ἡμῖν φυγεῖν ἀπὸ τῆς μελλούσης ὁρῆς;

8 Ποιήσατε οὖν καρποὺς ἀξίους τῆς μετανοίας· καὶ μὴ ἀρξήσθε λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Ἰδοὺ τὸ ἔργον

ἐκ ἔχοντες τὸν Ἀβραάμ· λέγει γὰρ ὑμῖν, ὅτι
ἵσταται ὁ Θεὸς ἐκ τῆς λίθου τούτων ἐγῆραι τέκνα
τοῦ Ἀβραάμ.

9 Ἡ δὲ ὅτι καὶ ἡ ἐξίτητος πρὸς τὴν ῥίζαν τοῦ
ἐνδρὸς καίτοι· τὰ δὲ οὗτοι δένδρον μὴ ποιεῖν
κατὸν καλὸν, ὀκνεῖται, καὶ εἰς πῦρ βάλλ-
εται.

10 Καὶ ἐπαρώτων αὐτοὺς οἱ ὄχλοι, λέγοντες·
τί ἔν ποιήσομεν;

11 Ἀποκριθεὶς ὁ, λέγει αὐτοῖς· Ὁ ἔχων δύο
ἰταγὰς, μεταδότην τῇ μὴ ἔχοντι· ὁ δὲ ἔχων βρώ-
ματα, ὁμοίως ποιεῖται.

12 Ἡ δὲ οὗτος ἐτελεύτησε βαπτισθῆναι, ὁ εἶπεν πρὸς
αὐτόν· Διδάσκαλε, τί ποιήσομεν;

13 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτὸν· Μηδέτις πλεονεχῆς τὸ
ἐσταταγμένον ὑμῖν τρώσεται.

14 Ἐπρωτῶν δὲ αὐτόν ἐσφαττόμενοι, λέγον-
τες· Καὶ ἡμῖς τί ποιήσομεν; ὁ εἶπε πρὸς αὐτὸν·
Μηδένα διαστῆσαι, μηδέ συκοφαντῆσθαι· ὁ ἀρκεῖται
οὗτος ὁ φωνῶν ὑμῶν.

15 Προσδοκῶντος δὲ τοῦ λαοῦ, ὁ ἀφρογίζομένων
πάντων ἐν ταῖς καρδίαις αὐτοῦ πρὸς τὸν Ἰωάννην, μα-
ρτυροῦντες αὐτὸν εἰς τὸ Χριστόν,

16 Ἀπεκρίνατο ὁ Ἰωάννης, ἀπασι λέγων· Ε-
γὼ μὲν ὕδατι βαπτίζω ὑμᾶς· ἔρχεται δὲ ὁ ἰσχυ-
ρότερός μου, ὃς ἔχει ἐμὴν ἰκλῆν λῦσαι τὸν ἰμῶνα
τοῦ ὑποδημάτων αὐτοῦ· αὐτὸς ὑμᾶς βαπτίσει ἐν Πνεύ-
ματι Ἁγίῳ, ὁ πῦρ.

17 Οὗ τὸ πῦρον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ
ἀφθαδεῖ τὴν ἄλυσιν αὐτοῦ, καὶ συλλάβει τὸν σί-
τον εἰς τὴν ἀποθήκην αὐτοῦ, τὸ δὲ ἄχυρον κατακρούσει
ἐν τῇ ἀσβέτῳ.

18 Πολλὰ μὲν ἔν ἐτερα πολλοῦ ἀγγελίου
ἔλεγε τὸν λαόν.

19 Ὁ δὲ Ἡρώδης ὁ Τετραρχὴς, ἐλεγχόμενος αὐ-
τοῦ πρὸς Ἡρωδιάδος τῆς γυναίκος Φιλίππου τοῦ
ἀδελφοῦ αὐτοῦ, καὶ πρὸς πάντων ὧν ἐπέταξε πο-
νήρων ὁ Ἡρώδης,

20 Προσέθηκε ἐν τῇ ὄπῃ πᾶσι, ὁ κατέκλεισε
τὸν Ἰωάννην ἐν τῇ φυλακῇ.

21 Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ βαπτισθῆναι ἅπαντα τὸν λαόν,
ὁ Ἰησοῦς βαπτισθῆναι, ὁ προσελχόμενος, ἀνεψυχθῆναι
τὸν ἡρόδον,

22 Καὶ καταβαίνει τὸ Πνεῦμα, τὸ Ἅγιον σωμα-
τικῶς εἶδει, ὡς ἐκ νεφελῶν, ἐπ' αὐτόν· ὁ φωνὴν ἔ-
κ νεφελῶν γενέσθαι, λέγουσαν· Σὺ εἶ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ
ἀγαπητός, ἐν σοὶ ἡδοκῆσα.

23 Καὶ αὐτὸς ὡς ὁ Ἰησοῦς ὡς ἐπὶ τῇ τελευ-
τῇ αὐτοῦ, ὡς (ὡς ἐννομεῖτο) Υἱὸς τοῦ
Θεοῦ, τὸ Ἅγιον,

- 14 Τῷ Ματθαί, τῷ Ἀδύ, τῷ Μελχί, τῷ Ἰαννά,
τῷ Ἰωσήφ,
25 Τῷ Ματθαίῳ, τῷ Ἀμώς, τῷ Ναῦμ, τῷ
Ἐσλί, τῷ Ναυγαί,
26 Τῷ Μακάθ, τῷ Ματθαίῳ, τῷ Σεμεί, τῷ Ἰω-
σήφ, τῷ Ἰύδα,
27 Τῷ Ἰωαννᾷ, τῷ Ρῆσά, τῷ Ζοροβάβελ, τῷ Σπλα-
θίλ, τῷ Νηλ,
28 Τῷ Μελχί, τῷ Ἀδδί, τῷ Κωτάμ, τῷ Ἐλμωδάμ,
τῷ Ηῤ,ρ,
29 Τῷ Ἰωσήφ, τῷ Ἐλίεζερ, τῷ Ἰωρείμ, τῷ Ματ-
θαί, τῷ Ἀδύ,
30 Τῷ Συμεῶν, τῷ Ἰύδα, τῷ Ἰωσήφ, τῷ Ἰωάν, τῷ
Ἐλιακίμ,
31 Τῷ Μελιᾷ, τῷ Μαϊνᾷ, τῷ Ματθαί, τῷ Να-
θαῖ, τῷ Δαβίδ,
32 Τῷ Ἰεσαῖ, τῷ Ωβηδ, τῷ Βοόζ, τῷ Σαλμών,
τῷ Νααθαὼν,
33 Τῷ Ἀμιναδάβ, τοῦ Ἀράμ, τοῦ Ἐσρώμ, τοῦ
Φαρες, τοῦ Ἰούδα,
44 Τῷ Ἰακώβ, τῷ Ἰσαάκ, τῷ Ἀβραάμ, τῷ Θάρα,
τῷ Ναχωρ,
35 Τῷ Σαράχ, τῷ Ραγαῦ, τῷ Φαλέκ, τῷ Ἐβέρ,
τῷ Σακκ,
36 Τῷ Κεϊνᾷ, τῷ Ἀρφαξάδ, τῷ Σήμ, τῷ Νῶε,
τῷ Λάμεχ,
37 Τῷ Μαθεσάλα, τῷ Ἐνώχ, τῷ Γάρεδ, τῷ Μα-
λελεήλ, τῷ Κεϊνᾷ,
38 Τοῦ Ἐνῶς, τοῦ Σήθ, τοῦ Ἀδάμ, τοῦ
Θεοῦ.

Κεφ. δ'. 4.

1 Ἰησοῦς ὁ Πνεύματος Ἀγίου πλήρης ἐπέστρεψεν
ἀπὸ τοῦ Ἰερουσάλη· ὁ ἤγετο ἐν τῷ Πνεύματι εἰς
τιλὴ ἔρημος.

2 Ἡμέρας τεσσαράκοντα περὰζόρῳτος ὑπὸ τοῦ
Διαβόλου· καὶ οὐκ ἔφαγεν οὐδὲν ἐν ταῖς ἡμέ-
ραις ἐκείναις· καὶ συντελεσθεῖσάν αὐτῷ, ὑπερον-
ήκενάσιν.

3 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ διάβολος· Εἰ Υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ,
εἰπὲ τῷ λίθῳ τούτῳ ἵνα γένηται ἄρτος.

4 Καὶ ἀπεκρίθη Ἰησοῦς πρὸς αὐτὸν, λέγων· Γέγρα-
πται, ὅτι ἢ ἐπ' ἄρτῳ μόνῳ ζήσεται ὁ ἄνθρωπος, ἀλλ'
ἐπὶ πάντῃ ῥήματι Θεοῦ.

5 Καὶ ἀναγαγὼν αὐτὸν ὁ διάβολος εἰς ὄρος ὕψους,
ἔδειξεν αὐτῷ πᾶσας τὰς βασιλείας τῆς οὐραμένης ἐν
σὺγκῃ χρόνου.

6 Καὶ

6 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ διάβολος· Σοὶ δώσω τὴν θυσίαν ταύτην ἁπασάν· καὶ τὴν δέξῃς ὡς ὅτι ἐμοὶ προσκυνᾷς, ἢ εἰ ἂν θέλω, ἰδοὺ αὐτὴν.

7 Σὺ δ' ἂν προσκυνήσῃς ἐνώπιόν μου, ἔσται σοι δαῖτα.

8 Καὶ ἀποκριθεὶς αὐτῷ, εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Πᾶσι ὀπίσω με Σατανα· Γέγραπται γάρ· Προσκυνήσεις Κύριον τὸν Θεόν σου, καὶ αὐτῷ μόνῳ λατρεύσεις.

9 Καὶ ἤγαγεν αὐτὸν εἰς Γερσαλήμ, ἔστη αὐτὸν ἐπὶ τὸ πτερύγιον τῆς Ἱερῆς, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Εἰ ὁ Υἱὸς εἶ τοῦ Θεοῦ, βάλε σεαυτὸν ὥστε ῥυθῆν κατω.

10 Γέγραπται γάρ, Ὅτι τοῖς Ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντέλλεται περὶ σε, τὴν διαφυλάξαι σε.

11 Καὶ ὅτι ἐπὶ χειρὸν κρείσσει σε, μήποτε προσκύνῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα σου.

12 Καὶ ἀποκριθεὶς, εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι εἶρηται· Οὐκ ἐκπειράσεις Κύριον τὸν Θεόν σου.

13 Καὶ συντελέσας πάντα πειρασμὸν ὁ διάβολος, ἀΐεσθαι αὐτὴν ἀπὸ αὐτοῦ ἀφῆκε.

14 Καὶ ὑπέστρεψεν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῇ δυνάμει τῆς Πνεύματος εἰς τὴν Γαλιλαίαν· ἔφη μὴ δεῖλθε καθ' ὅλης τῆς πρεσβυτερίας αὐτοῦ.

15 Καὶ αὐτὸς ἐδίδασκεν ἐν ταῖς συναγωγαῖς αὐτοῦ, ἡξιοῦντος ὅσοι πάντων.

16 Καὶ ἦλθεν εἰς τὴν Ναζαρέτ, οὗ ἦν τετρακισμύριος· καὶ εἰσῆλθε κατὰ τὸ εἰωθὸς αὐτοῦ, ὥστε ἡμέραν τὴν Σαββάτου, εἰς τὴν συναγωγὴν· καὶ ἤρξατο ἀπαγγεῖλαι.

17 Καὶ ἐπέδωκε αὐτῷ βιβλίον Ἡσαΐου τοῦ Προφήτου· ἔλαβεν αὐτὸς τὸ βιβλίον, ἔκρυψε τὸν τόπον οὗ ἦν γεγραμμένον.

18 Πνεῦμα Κυρίου ἐστὶ ἐμὲ, ὅς ἐνεκεν ἔχρισέ με, ναγγιλίζεσθαι πτωχοῖς ἀπέσπλῆκέ με, ἰάσασθαι τοὺς συντετριμμένους τὴν καρδίαν, κηρύξαι ἀντικατωτέρως ἡμῖν, ἔτι τυφλοῖς ἀνάβλεψιν, ἀπεσπῆλαι τεθρῶσμένους ἐν ἀφίεσιν.

19 Κηρύξαι ἐν παντὶ Κυρίῳ δικτὸν.

20 Καὶ πτύξας τὸ βιβλίον, ἀποδὲς τὸ ὑπερήντη κατέβη· ἔτι πάντων δὲ τῇ συναγωγῇ οἱ ἐφθάρμενοι ἠκούοντες αὐτοῦ.

21 Ἦρξατο δὲ λέγειν πρὸς αὐτοὺς· Ὅτι σήμερον τελεθῆναι ἢ γραφὴ αὕτη ἐν τοῖς ὠσίν μου.

22 Καὶ πάντες ἐκάρτουν αὐτῷ, καὶ ἐθαύμαζον ἐπὶ τοῖς λόγοις πᾶσι χάριτος, τοῖς ἐκπορεύομενοις ἐκ τοῦ στόματος αὐτοῦ, ἔτι ἔλεγον· Οὐχ οὗτος ἐστὶν ὁ Υἱὸς Ἰωσήφ;

23 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Πάντοι ἐρεῖτε μοι τὴν ὁδοβολὴν ταύτην· Ἰατρὲ, θεραπεύοντες σωματὸν· ὅπως ἤκηται ἡ ψυχὴ ἐν τῇ Καπερναῖμ, ποιήσαντες ὡς ἐστὶ ἐν τῇ πατρίδι σου·

24 Εἰπὼν δὲ· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι οὐδεὶς Προφῆτης δεκτός ἐστι ἐν τῇ πατρίδι αὐτοῦ·

25 Εἰς ἄλλὰ θάλασσά δὲ λέγω ὑμῖν, πολλὰ καὶ ἤσκησαι Ἰσραὴλ ἐν ταῖς ἡμέραις Ἡλίου· ἐν τῇ Ἰσραήλ, ὅτε ἐκλήθη ὁ οὐρανὸς ὑπὲρ ἐκείνου, καὶ μέγας ἦν, ὡς ἐγένετο λίμνη μέγας ἐπὶ τῆς σάου τῆς γῆς·

26 Καὶ πρὸς οὐδεμίαν αὐτῶν ἐπέμφθη Ἡλίας, εἰ μὴ εἰς Σαρεπτά τῆς Σιδωνος, πρὸς θυγατέρα χηδὸν·

27 Καὶ πολλοὶ λεπροὶ Ἰσραὴλ ὑπὲρ Ἑλισαίου τῷ Προφήτῃ ἐν τῇ Ἰσραήλ· ὡς οὐδεὶς αὐτῶν ἐκκαθαρίσθη, εἰ μὴ Νεεμὰν ὁ Σύρος·

28 Καὶ ἐπληρώθησαν πάντες θυμῷ ἐν τῇ συναγωγῇ, ἀκρόατες τούτου·

29 Καὶ ἀρχαῖντες ἤρξαντο αὐτὸν ἔξω τῆς πόλεως· καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἕως τῆς ὄφρους τῆς ὁδοῦ, ἐφ' ἧς ἡ πόλις αὐτῶν οἰκοδόμητο, εἰς τὸ κατακρημνίσαι αὐτόν·

30 Αὐτοὶ δὲ διελθὼν ἄφ' ὧν μέση αὐτῶν, εἰσπορεύεσθαι·

31 Καὶ κατέβηκεν εἰς Καπερναῖμ πάλιν τῇ Γαλιλαίᾳ· καὶ ὅτι διδάσκων αὐτὸς ἐν τοῖς συναγωγαῖς·

32 Καὶ ἐξεπλήρωσαν ὑπὲρ τῆς διδαχῆς αὐτοῦ· ὅτι ἐν ἑκαστῇ τῇ ὁδοῦ αὐτοῦ·

33 Καὶ ἐν τῇ συναγωγῇ ἦν ἄνθρωπος ἔχων πνεύμα δαιμονίου ἀκαθάρτου, καὶ ἀνέκραξε φωνῇ μεγάλῃ·

34 Λέγων· Ἐγώ, τί ἔμελλεν σοὶ Ἰησοῦ Ναζαρενῶν; ἤλθεις ἀπολέσαι ἡμᾶς; οἶδά σε τίς ὁ εἶς ἡ γένος τῆς Θεᾶς·

35 Καὶ ἐπετίμησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Φιμώθητι, ὅτι ἐξέλθε ἔξ αὐτοῦ· Καὶ ῥίψαν αὐτὸν τὸ δαιμόνιον εἰς τὸ μέσον, ἔξελθεν ὅτι αὐτοῦ, μηδὲ βλάψαν αὐτόν·

36 Καὶ ἐγένετο θάμβος ὑπὲρ πάντας· ὅτι συνελθόντες πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες· Τίς ὁ λόγος ἡτος, ὅτι ἐν ἑκαστῇ καὶ δυνάμει ἐπιτάσσει τοῖς ἀκαθάρτοις πνεύμασι, καὶ ἔξέρχονται;

37 Καὶ ἡγεπορεύετο ὁ ἦχος περὶ αὐτοῦ εἰς πάντα τόπον τῆς περιχώρου·

38 Ἀναστὰς δὲ ἐκ τῆς συναγωγῆς, ἐκτέλει εἰς τὴν οἰκίαν Σίμωνος· ἡ πενθερὰ δὲ τῆς Σίμωνος ἦν συνεχωμένη πυρετῷ μεγάλῳ· ὅτι ἡρώτησαν αὐτὸν περὶ αὐτῆς·

39 Καὶ ἐπιστὰς ἐτάνω αὐτῆς, ἐπετίμησε τῷ πυρετῷ. Ἐκάλειεν αὐτὴν· Ὁσυχρῆμα δὲ ἀνέστη διηκόνει αὐτοῖς.

40 Δυνάστης ὅς τις ἦλθεν, πᾶντες ὅσοι εἶχον ἀσθενέοντας ἡσίοις ποικίλαις, ἤγαγον αὐτῆς πρὸς αὐτόν· ὃ δὲ ἐνὶ ἐκαστῇ αὐτῷ τὰς χεῖρας ἐπιθείς, ἐθεράπευεν αὐτῆς.

41 Ἐξήρχετο δὲ ἡ δαιμόνια ἀπὸ πολλῶν, κράζοντα ἑλεγοντα· Ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ. Καὶ ἐπιτιμῶν ἢ καὶ αὐτὴ λαλεῖν, ὅτι ἤδεσαν τὸν Χριστὸν αὐτὸν εἶναι.

42 Γενομένης δὲ ἡμέρας θελόντων ἐπορεύθαι εἰς ἑρμεῖον τόπον, ἑοὶ ὄχλοι ἐζήτην αὐτόν, καὶ ἔλθον εἰς αὐτὸν· ἑ κατέχον αὐτόν ἵνα μὴ πορεύσθαι ἀπ' αὐτῶν.

43 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτῆς· Ὅτι καὶ ταῖς ἑτέροις πόλεσιν ἀπεγγεῖλαι τῷ με δεῖ τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, ὅτι εἰς ταῦτο ἀπέσταλμαι.

44 Καὶ ἦν κηρύσσων ἐν ταῖς συναγωγαῖς τῆς Γαλιλαίας.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Ε**γένετο ὅτι ἐν τῷ τὸν ὄχλον ἐπικαίεσθαι αὐτῷ ἵνα ἀκούσιν τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ἑ αὐτοὶ ἦν ἐς αὐτὸν ὁσυχρῆ τὴν λίμνην Γεννησαρέτ.

2 Καὶ εἶδε δύο πλοῖα ἐς αὐτὸν ὁσυχρῆ τὴν λίμνην· οἱ δὲ ἄλιεες ἀποβάντες ἀπ' αὐτῶν ἀπέπλυναν τὰ δίκτυα.

3 Εἰμβὰς δὲ εἰς ἐν τῶν πλοίων ὃ ἦν τοῦ Σίμωνος, ἠρώτησεν αὐτόν ἀπὸ τῆς γῆς ἐπιταγῆν ὀλίγον· ἑ καθίσας ἐδίδασκεν ὅτι τοῦ πλοῖου τῆς ὄχλης.

4 Ὡς ὅτι ἐπαύσατο λαλῶν, εἶπε πρὸς τὸν Σίμονα· Ἐπαράγαγε εἰς τὸ βάθος, ἑ χαλάσατε τὰ δίκτυα ὡς εἰς ἄγρην.

5 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Σίμων, εἶπεν αὐτῷ· Ἐπιστάτα, δι' ὅλης τῆς νυκτὸς κοπιᾶσάντες, ἠδὲν ἐλάβομεν· ἐπὶ δὲ τῷ ῥήματί σου χαλάσω τὸ δίκτυον.

6 Καὶ ταῦτο ποιήσαντες, συνέκλεισαν ἰχθυῶν πλῆθος πολὺ· διερέγγυσται δὲ τὸ δίκτυον αὐτῶν.

7 Καὶ κατέβησαν τοῖς μετόχοις πῶς ἐν τῷ ἑτέρῳ πλοίῳ, ἑ ἐλθόντας συλλαβεσθαι αὐτοῖς· ἑ ἦλθον, ἑ ἐπλάσαν ἀμφότερα τὰ πλοῖα, ὥστε βυθίζεσθαι αὐτά.

8 Ἰδὼν δὲ Σίμων Πέτρος, προσέειπε τοῖς

F 4

γίγκ-

ῥοῦσι τὰ ἱησοῦ, λέγων· Ἐξέλθε ἀπ' ἡμοῦ, ὅτι ἀνὴρ ἁμαρτωλὸς ἐμὲ, Κύριε.

9 Θάμβος γὰρ παρῆσθεν αὐτὸν ὃ πάντας τὰς σὺν αὐτῷ, ἐπὶ τῇ ἄρᾳ ἧ' ἰχθύων ἢ συνελθόντων.

10 Οἱμοίως δὲ Ἰάκωβον ὃ Ἰωάννην, τῆς Ζεβεδαίου, οἱ ἦσαν κοινοὶ τῷ Σίμωνι. Καὶ εἶπε πρὸς τὸν Σίμωνα ὁ ἱησοῦς· Μὴ φοβοῦ· ἀπὸ τῶν σὺν ἀνδράσιν ἐστὶν ζωγράν.

11 Καὶ κατακαγόντες τὰ πλοῖα ἐπὶ τῷ γῆν, ἀφέντες ἅπαντα, ἠκολούθησαν αὐτῷ.

12 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν μιᾷ τῇ πύλῳ, ὃ ἰδὼν, ἀνὴρ πλήρης λέπρας· ὃ ἰδὼν τὸν ἱησοῦ, πεσὼν ἐπὶ προσώπῳ, ἐδεύθη αὐτῷ λέγων· Κύριε, ἐὰν θέλῃς, δύνασαι με καθαρίσαι.

13 Καὶ στείνας τῷ χεῖρα, ἥψατο αὐτῆ, εἰπὼν· Θέλω, καθαρίσθαι. Καὶ εὐθέως ἡ λέπρα ἀπῆλθεν ἀπ' αὐτοῦ.

14 Καὶ αὐτὸς παρήγγειλεν αὐτῷ μηδὲν εἰπεῖν· ἀλλὰ ἀπελθὼν δείξον σεαυτὸν τῷ ἱερεῖ, ὃ προσέτιναι περὶ τοῦ καθαρισμοῦ σου, καθὼς προσέταξε Μωϋσῆς, εἰς μαρτύριον αὐτοῖς.

15 Διήρχετο δὲ ἡθὺλλον ὁ λόγος περὶ αὐτοῦ· ὃ συνέχευτο ὄχλοι πολλοὶ ἀκούειν, ὃ θεραπεύεσθαι κατ' αὐτὴν κατὰ τῆς ἀσθενείας αὐτῶν.

16 Αὐτὸς δὲ ἦν ὑποχωρῶν ἐν ταῖς ἐρήμοις, καὶ προσώχουμος.

17 Καὶ ἐγένετο ἐν μιᾷ τῇ ἡμέρᾳ, ὃ αὐτοὺς ἔν διδάσκων· ὃ ἔσαν καθ' ἑαυτοὺς Φαρισαῖοι ὃ Νομιδαῖοι σκαλοὶ, οἱ ἦσαν ἐλλαυδότες ἐν πάσῃ κόμῃ τῆς Γαλιλαίας ὃ Ἰουδαίας ὃ Ἱερουσαλὴμ· ὃ δύναμις Κυρίου ἦν εἰς τὸ ἵσταναι αὐτούς.

18 Καὶ ἰδὼν, ἄνδρες φέροντες ἐπὶ κλίνης ἄνθρωπον ὃς ἦν πρηνελελυμένος· ὃ ἐζήτην αὐτὸν εἰσενεγκεῖν, ὃ δεῖναι ἐνώπιον αὐτοῦ.

19 Καὶ μὴ ὁρῶντες διὰ ποίας εἰσενέγκασιν αὐτῷ, διὰ τῆς ἔχρας, ἀναβάντες ἐπὶ τὸ δῶμα, διὰ τῆς κερύμῃν καθέκλιν αὐτῷ σὺν τῷ κλινιδίῳ εἰς τὸ μέτρον, ἵμπερσθεν τῷ ἱησοῦ.

20 Καὶ ἰδὼν τὴν πίσιν αὐτῶν, εἶπε αὐτοῖς· Ἀνδρες, ἀφένταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου.

21 Καὶ ἠρξάμην διαλογίζεσθαι οἱ Γαμματεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι, λέγοντες· Τίς ἐστὶν ὁ ἄνθρωπος ὃς λαλεῖ βλασφημίας; τίς δύναται ἀφίεναι ἁμαρτίας, εἰ μὴ μόνος ὁ Θεός;

22 Ἐπιγνοὺς δὲ ὁ ἱησοῦς τῆς διαλογισμῆς αὐτῶν, ἀποκριθεὶς εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί διαλογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;

23 Τί ἐστὶν ἀκοπώτερον, εἰπὼν· Ἀφένταί σοι αἱ ἁμαρτίαι σου· ὃ εἰπεῖν· Ἐγὼ σοὶ ἐπιτάττω;

24 Ἰνα ὃ εἰδῆτε ὅτι θεσπίσθαι ἔχει ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὑπὲρ τῆς γῆς ἀφίεναι ἁμαρτίας· (εἶπε τοῦ παρολειπούμενου) Σοὶ λέγω, ἔγεραι, ἔσθρας τὸ κλειδίον σου, παρὸν εἰς τὸ οἶκόν σου.

25 Καὶ παρὰ χρημῶν ἀμαρτίας ἐνώπιον αὐτοῦ, ἄρχει ἐν τῇ κατέκειτο, ἀπῆλθεν εἰς τὸ οἶκόν αὐτοῦ, δοξαζόν τὸ θεόν.

26 Καὶ ἑκαστὸς ἔλαβεν ἅπλυντος, ἔδιδόξαν τὸν θεόν· ἔπαλθθησαν φόβῳ, λέγουτες· Ὅτι ἐδοξάμεν παραδοῖν σήμερον.

27 Καὶ μὴ ταῦτα θεῇ λαθε, καὶ ἐδεῖσάτο τελωνῶν ὀνόματι Δευτὴν, καθήκον ὑπὲρ τὸ τελῶνιον, ἔειπεν αὐτῷ· Ἀπολύθει μοι.

28 Καὶ κτηλιῶν ἅπαντα, ἀμαρτίας ἠκολούθησεν αὐτῷ.

29 Καὶ ἐποίησε δοχὴν μεγάλην ὁ Δευτὴς αὐτῷ ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτῇ· ἔην ὄχλος τελωνῶν πολλός, ἔ ἀλλων ὡς ἑσθαι μετ' αὐτοῦ κτηκίμνοι.

30 Καὶ ἐγόγγυζον οἱ γραμματεῖς αὐτοῦ ἔ οἱ φαρισαῖοι πρὸς τῆς μαθητῆς αὐτοῦ, λέγοντες· Διὰ τί μὴ τελωνῶν ἔ ἁμαρτωλῶν ἐσθίετε ἔ πίνετε;

31 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς αὐτῆς· Οὐ καὶ οὐ ἔχουσιν οἱ υἱοὶ αἰνοῦντες ἰατρῇ, ἀλλ' οἱ κακῶς ἔχοντες.

32 Οὐκ ἐλήλυθα καλεῖται δικαίους, ἀλλὰ ἁμαρτωλούς εἰς μετάνοιαν.

33 Οἱ δὲ εἶπον πρὸς αὐτόν· Διὰ τί οἱ μαθηταὶ Γιωάννη νηστῶσιν πυκνά, ἔ δεήσεις ποιῶνται, ὁμοίως ἔ οἱ υἱοὶ φαρισαίων· οἱ δὲ σοὶ ἐσθίουσιν ἔ πίνουσιν;

34 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτῆς· Μὴ δύνασθε τῆς υἱᾶς τῆς νυμφεύου, ἐν ᾗ ὁ νυμφίος μετ' αὐτοῦ εἶσι, ποιῆσαι νηστῶν;

35 Ἐλεύσονται δὲ ἡμέραι ἔ ὅταν ἀπαρθῇ ἀπ' αὐτοῦ ὁ νυμφίος, τότε νηστῶσιν ἐν σκηναῖς ταῖς ἡμέραις.

36 Ἐλεγε δὲ ἔ παροβολὴν πρὸς αὐτῆς· Ὅτι υἱεὶς ἐπίβλημα ἱματίου καὶνῷ ὑπὲρβάλλει ἱπὶ ἱμάτιον παλαιόν· εἰ δὲ μήγε, ἔ τὸ καιρὸν σχίζει, ἔ τῷ παλαιῷ συμφαίνει ἐπίβλημα τὸ ἀπὸ τοῦ καινοῦ.

37 Καὶ υἱεὶς βάλλει οἶνον νέον εἰς ἀσκὸς παλαιός· εἰ δὲ μήγε, ῥήξει ὁ νέος οἶνος τοῦ ἀσκός, ἔ αὐτὸς σπυρτήσεται, ἔ οἱ ἀσκοὶ ἀπολούνται.

38 Ἀλλὰ οἶνον νέον εἰς ἀσκούς καινοὺς βλητέον· ἔ ἀμφότεροι συντηροῦνται.

39 Καὶ οὐδεὶς πινὼν παλαιός, ἀδίδως θίλει νέον· λέγει γὰρ· Ὁ παλαιός κρηστότερός ἐστι.

Κεφ. 5'. 6.

1 **Ε**γένετο δὲ ἐν Σαββάτῳ δεύτερῳ πρώτῳ Σαβ-
 παύεσθαι αὐτὸν διὰ τῶν σπορίμων· καὶ
 ἔπλυνον οἱ μαθηταὶ αὐτῷ τὰς πόδας, ὡς ἔσθιον,
 ψάλλοντες ταῖς χερσὶ.

2 Τινὲς ὅ τιν' Φαρισαίων εἶπον αὐτοῖς. Τί ποιεῖτε,
 ὃ ἢ ἐξέστι ποιεῖν ἐν τοῖς σαββάτι;

3 Καὶ ἀποκριθεὶς πρὸς αὐτὸς εἶπεν ὁ Ἰησοῦς. Οὐ-
 δὲ τὴν ἀνέγνωτε, ὃ ἐποίησε Δαβὶδ, ὅτε ἐπέλα-
 σεν αὐτὸς, ὡς οἱ μετ' αὐτοῦ ὄντες;

4 Ὡς εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ, καὶ
 τῆς ἁγίας τῆς προθέσεως ἔλαβε, ὡς ἔφαγε, ὡς ἔ-
 βωκε ὡς τοῖς μετ' αὐτοῦ, ὡς ἢ ἐξέστι φάγεσθαι εἰ μὴ
 μόνης τῆς ἱερείας.

5 Καὶ ἔλεγεν αὐτοῖς. Ὅτι Κύριός ἐστι ὁ Υἱὸς τοῦ
 ἀνθρώπου καὶ τοῦ σαββάτου.

6 Ἐγένετο δὲ καὶ ἐν ἑτέρῳ σαββάτῳ εἰσέλ-
 θεῖν αὐτὸν εἰς τὴν συναγωγὴν, καὶ διδάσκειν·
 καὶ ἦν ὁκεῖ ἄνθρωπος, καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ ἡ δε-
 ξιά ἦν ξηρά.

7 Παρατήρων δὲ αὐτὸν οἱ γραμματεῖς καὶ οἱ φα-
 ρισαῖοι εἰ ἐν τῷ σαββάτῳ θεραπεύσει· ἵνα ἐνῇ αὐτῷ
 κατηγορεῖν αὐτοῦ.

8 Αὐτὸς ὅ ἰδὼς τὴν διαλογισμὸς αὐτοῦ. ὡς εἶπε
 τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ξηρῷ ἔχοντι τὴν χεῖρα· Ἐγείρα, ὡς
 εἴθι εἰς τὸ μέσον. Ὁ ὅ ἀνέστη ἔσθ.

9 Εἶπεν ὁ ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτὸς· Ἐπειρω-
 τίτω ὑμῶς π. Ἐξέστι τοῖς Σαββάσι ἀγαθοποιῆ-
 σαι, ἢ κακοποιῆσαι; ψυχὴν σῶσαι, ἢ ἀπο-
 λῆσαι;

10 Καὶ ὁ βασιλεὺς πάντας αὐτὸς, εἶπε
 τῷ ἀνθρώπῳ· Ἐκτενον τὴν χεῖρά σου. Ὁ δὲ
 ἐποίησεν ἕτω· ὡς ἀποκατεστάθη ἡ χεὶρ αὐτοῦ ὡς
 ἡ ἄλλη.

11 Αὐτοῖς ὅ ἐπλήσθησαν ἀντίαι· ὡς διεκάλουν πρὸς
 ἀλλήλους, πὶ δὲ ποιήσκειν τῷ Ἰησοῦ.

12 Ἐγένετο ὅ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις, ὡς ἔλθοι
 εἰς τὸ ὅρος προσδεῖσθαι· ὡς ἦν διατυκτερόμενος ἐν τῇ
 πρεσβυτέρῳ τοῦ Θεοῦ.

13 Καὶ ὅτε ἐγένετο ἡμέρα, προτιθῶντες τὴν κο-
 ρυδαὶ αὐτοῦ· ὡς ἐκλεξαμένους ἀπ' αὐτοῦ δαδίκας, ὡς ὡς
 ἀποστόλους ἀνέμασε.

14 (Σίμωνα, ὃν ὡνόμασε Πέτρον, ὡς Ἀνδρέαν
 τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, Ἰάκωβον ὡς Ἰωάννην, Φίλιππον ὡς
 Βαρθολομαῖον·

15 Ματθαῖον καὶ Θωμᾶν, Ἰάκωβον τὸν υἱὸν
 Ἀλ-

ἁφαιή, καὶ Σίμωνα τὸν καλούμενον Ζαχαρῆαν.

16 Ἰδὼν Ἰακώβον, καὶ Ἰδὼν Ἰσκαριώτην, ὅς ἐστιν υἱὸς τοῦ προδότης.)

17 Καὶ καταβὰς μετ' αὐτῶν, ἔσκη ὑπὸ τῷ πεδίον· ὁ ὄχλος μαθητῶν αὐτοῦ, καὶ πλῆθος πολλὸν τῶν λαῶν ἀπὸ πάσης τῆς Ἰουδαίας καὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ τῆς παραλίης τῆς ὁδοῦ εἰς Σιδῶνος· οἳ ἦλθον ἀκοῦσαι αὐτοῦ, καὶ ἰαθεῖναι τοῦ τῶν νόσων αὐτοῦ.

18 Καὶ οἱ ὄχλοι μένοντες ὑπὸ τὸν σκῆτον ἀκαθάρτων· ἐξεδραστήετο.

19 Καὶ τὰς ὁ ὄχλος ἐζήτην ἀπτεσθαι αὐτοῦ· ὅτι δύναμις παρ' αὐτοῦ ἐξήρχετο, καὶ ἰάτο πάντας.

20 Κυρίως αὐτὸς ἐπέρας τῆς ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ, εἰς τὴν μενομένην αὐτοῦ, ἔλεγεν· Μακάριοι οἱ πτωχοί· ὅτι ὑμεῖς ἐσὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ.

21 Μακάριοι οἱ πεινῶντες νῦν· ὅτι χορταθήσισθε. Μακάριοι οἱ κλαίοντες νῦν· ὅτι γελᾶσετε.

22 Μακάριοι ἐπεὶ ὅταν μισήσωσιν ὑμᾶς οἱ ἄνθρωποι, καὶ ὅταν ἀφορίσωσιν ὑμᾶς, καὶ ἐνεδίωξουσιν, καὶ σκεβύλωσιν τὸ ὄνομα ὑμῶν ὡς πονηρῶν, ἔλεκα τῷ Ἰησοῦ τῷ ἀνδρὶ τούτῳ.

23 Χαίρετε ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ καὶ σκιρτήσατε· ὅτι ὁ μισθὸς ὑμῶν πολὺς ἐστὶν τῷ κυρίῳ· κατὰ ταῦτα γὰρ ἐποίησεν τοῖς Προφῆταις οἱ πατέρες αὐτοῦ.

24 Πάλιν οὐαὶ ὑμῖν τοῖς πλουσίοις· ὅτι ἀπέχετε τὴν παρακλήσιν ὑμῶν.

25 Οὐαὶ ὑμῖν οἱ ἐμπεπλησμένοι· ὅτι πεινάσετε. Οὐαὶ ὑμῖν οἱ γελοῦντες νῦν· ὅτι πενθήσετε καὶ κλαύσετε.

26 Οὐαὶ ὑμῖν ὅταν καλῶς ὑμᾶς εἴπωσι πάντες οἱ ἄνθρωποι· κατὰ ταῦτα γὰρ ἐποίησεν τοῖς ψευδοπροφήταις οἱ πατέρες αὐτοῦ.

27 Ἀλλ' ὁμῖν λέγω τοῖς ἀκούουσιν· Ἀγαπᾶτε τοὺς ἐχθρούς ὑμῶν· καλῶς ποιεῖτε τοῖς μισοῦσιν ὑμᾶς.

28 Εὐλογεῖτε τοὺς καταρωμένους ὑμῖν· καὶ προσεύχεσθε ὑπὲρ τῶν ἐπηρεαζόντων ὑμᾶς.

29 Τῷ τύποντι σε ὑπὸ τῆς σιαγόνας, πάρεχε καὶ τῷ ἄλλῳ· καὶ ἀπὸ τοῦ αἵματος σου τὸ ἐμύτιον, καὶ τῷ χιτῶνα μὴ κοιλῆσιν.

30 Παντὶ ὃ τὸ αἵματιόν σου δίδω· καὶ ἀπὸ τοῦ αἵματος τοῦ σώματος σου, μὴ ἀπαίτη.

31 Καὶ καθὼς θέλετε ἵνα ποιῶσιν ὑμῖν οἱ ἄνθρωποι, καὶ ὑμεῖς ποιεῖτε αὐτοῖς ὁμοίως.

32 Καὶ εἰ ἀγαπᾶτε τοὺς ἀγαπῶντας ὑμᾶς, ποῖον ὁμῖν χάρις ἐστὶν; καὶ γὰρ οἱ ἁμαρτωλοὶ τοὺς ἀγαπῶντας αὐτοὺς ἀγαπᾶσι.

33 Καὶ ἐὰν ἀγαθοποιῇτε τῆς ἀγαθοποιήτης υἱοῦ
μας, ποία ὑμῖν χάρις ἐστὶ; Ἐ γὰρ οἱ ἀμνηστῶσι τὸ
αὐτὸ τοῖς υἱοῖς.

34 Καὶ ἐὰν δανείζητε παρ' ὧν ἐλπίζετε ἀπολα-
βεῖν, ποία ὑμῖν χάρις ἐστὶ; Ἐ γὰρ οἱ ἀμνηστῶσι
καὶ ἀμνηστῶσι δανείζουσιν, ἵνα ἀπολάβωσι τὸ
ἴσον.

35 Πλὴν ἀγαπᾶτε τῆς ἐχθρῆς ὑμῶν, Ἐ ἀγα-
ποῦντε, Ἐ δανείζετε μηδὲ ἀπελπίζοντες. Ἐ ἴσα-
σθε μισθὸς ὑμῶν πλοῦς, Ἐ ἔσσεσθε υἱοὶ τοῦ ὑψίστου
ὅτι αὐτὸς χάρις ἐστὶν ὑπὲρ τῆς ἀχαρίστου Ἐ πο-
νηρῆς.

36 Γίνεσθε ὡς οἰκτίρμονες, καθὼς Ἐ ὁ πατὴρ ὑ-
μῶν οἰκτίρμων ἐστὶ.

37 Καὶ μὴ κριτεῖτε, Ἐ ἢ μὴ κριθῆτε· μὴ καταδι-
καζετε, Ἐ ἢ μὴ καταδικασθῆτε. ἀκούετε, Ἐ ἀπο-
λυθήσεσθε.

38 Δίδετε, Ἐ δοθήσεται ὑμῖν· μέτρον καλὸν, πε-
πιστμένον Ἐ σεσαλμμένον, Ἐ ὑπερεκχυνόμενον δώσωσιν
ὑμῖν ὡς τὸ μέτρον ὑμῶν· τὸ γὰρ αὐτὸ μέτρον ὃ μετρεῖτε
ἐντιμετρηθήσεται ὑμῖν.

39 Εἴτε δὲ παραβολὴν αὐτοῖς· Μήτις δύναται τυ-
φλοὶ τυφλοὶ εἰσάγειν; ἢ χεῖρ ἀμφοτέρων εἰς βόθυνον πε-
σύνται.

40 Οὐκ ἐστὶ μεδότης ὑπὲρ τὸν διδάσκαλον αὐ-
τοῦ· κατηρτισμένος δὲ πᾶς ἐστὶ ὡς ὁ διδάσκαλος
αὐτοῦ.

41 Τί δὲ βλέπω τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ
ἀδελφοῦ μου· καὶ δὲ δοκὸν καὶ ἐν τῷ ἰδίῳ ὀφθαλμῷ
κατανοεῖς;

42 Ἡ' πῶς δύναται λέγειν τὸ ἀδελφοῦ μου· Ἀ-
δελφε, ἄφες ἐκβάλλω τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλ-
μῷ σου, αὐτὸς τὴν ἐν τῷ ὀφθαλμῷ σου δοκὸν
ὃ βλέπων; Ὑποκριτὰ, ἐκβαλε πρῶτον τὴν δοκὸν
ἐκ τοῦ ὀφθαλμοῦ σου. Ἐ τότε διδύμῳ ἐκβα-
λεῖν τὸ κάρφος τὸ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ τοῦ ἀδελ-
φοῦ σου.

43 Οὐ γὰρ ἐστὶ δένδρον καλὸν, ποιεῖν καρπὸν
σαπρὸν· οὐδὲ δένδρον σαπρὸν, ποιεῖν καρπὸν κα-
λόν.

44 Ἐκαστος γὰρ δένδρον ὅτι ἴδιον κάρφον γινώσκει-
ται· ἢ γὰρ ἐξ ἀκανθῶν συλλέγῃσι σύκα, ἢ ἐξ ὅσων βλά-
ται τρυγῶσι σφυλὴν.

45 Ὁ ἀγαθὸς ἄνθρωπος ὅτι ἁγαθῶ θησαυρῷ τῇ
καρδίᾳ αὐτοῦ προφέρει τὸ ἀγαθόν· Ἐ ὁ πονηρὸς ἄν-
θρωπος ὅτι πονηρῷ θησαυρῷ τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ προφέρει
τὸ πονηρόν· ὅτι γὰρ τὸ πνεῦμα τοῦ καλοῦ τῇ καρδίᾳ λαλεῖ
τὸ σῶμα αὐτοῦ.

46 Τί δὲ μοι καλεῖται Κύριε, Κύριε. Ἐ ὁ ποιῶν
καὶ λέγων;

47 Πᾶς ὁ ἐρχόμενος πρὸς με, & ἀκούων μου τῶν λόγων, & ποιῶν αὐτάς, ὑποδείξω ὑμῖν τί ἐστι ὁμοίος.

48 Ὅμοιός ἐστιν ἀνθρώπῳ οἰκοδομῶντι οἰκίαν, ὃς ἐσκαψεν & ἐβάθυνεν & ἐθήκε θεμελίον ἐπὶ τὴν πέτρην. πλημμύρας δὲ ῥυομένης, προσεῖρ-
ρήξεν ὁ ποταμὸς τῇ οἰκίᾳ ἐκείνῃ, & οὐκ ἴσχυσε σαλευσθαι αὐτήν. τεθεμελίωτο γὰρ ὑπὲρ τῆς πέ-
τρης.

49 Οὗ δὲ ἀκούσας & μὴ ποιήσας, ὁμοίος ἐστὶν ἀν-
θρώπῳ οἰκοδομῶντι οἰκίαν ἐπὶ τὴν γῆν χαλκῇ θε-
μελίᾳ. ἥ προσεῖρρήξεν ὁ ποταμὸς & αὐθὺς ἐπέπεσε, & ἐγένετο τὸ ῥῆγμα τῆς οἰκίας ἐκείνης μέγα.

Κεφ. ζ'. 7.

1 Εἰπὼν δὲ ἐπλήρωσε πάντα τὰ ῥήματα αὐτοῦ
εἰς τὰς ἀκὰς τῆς λαῆς, εἰσῆλθεν εἰς Καπερ-
ναούμ.

2 Ἐκατοντάρχης δὲ τις δούλος κακῶς ἔχων, ἡμελη-
λε τελευτᾶν, ὃς ἦν αὐτοῦ ἐντίμος.

3 Ἀκούσας δὲ παρὰ τοῦ Ἰησοῦ, ἀπέστειλε πρὸς αὐτὸν
πρεσβυτέρους τῶν Ἰουδαίων, ἐρωτᾷ αὐτὸν, ὅπως ἐλθῶν
διασωσῇ τὸν δούλον αὐτοῦ.

4 Οἱ δὲ παραχρυσόμενοι πρὸς τὸ Ἰησοῦ, παρεκάλουν
αὐτὸν σπουδαίως, λέγοντες, ὅτι ἀξίός ἐστιν ὃ παρέξει
τῷτο.

5 Ἀγαπᾷ γὰρ τὸ ἔθνος ἡμῶν, & τὸ συναγαγεῖν αὐ-
τὸς οἰκοδομήσιν ἡμῖν.

6 Οὗ δὲ Ἰησοῦς ἐπεράβετο σὺν αὐτοῖς. ἡδὴ δὲ αὐτὸς ἦ
μακρὰν ἀπέχοντος ἀπὸ τῆς οἰκίας, ἐπεμψε πρὸς αὐτὸν
ὁ εκατοντάρχης φίλος, λέγων αὐτῷ. Κύριε, μὴ
σκύλλῃς. ἐγὼ γὰρ εἰμι ἱκανὸς ἵνα ὑπὸ τῆς σέγῃς μου εἰσ-
έλθῃς.

7 Διὸ ἡδὲ ἐμνηστῆξίωσα πρὸς σὲ ἐλθῶν. ἀλλὰ κί-
πὲ λόγῳ, & ἰαθήσεται ὁ παῖς μου.

8 Καὶ γὰρ ἐγὼ ἄνθρωπός εἰμι ὑπὸ θεκρίαν τι-
σόμενον, ἔχων ὑπὲρ ἐμαυτοῦ κρατιώτας. & λέγω τῷ-
τῳ. Πορεύθητι, & πορεύεται. & ἄλλῳ. Ἐρ-
χῇ, & ἔρχεται. & τῷ δούλῳ μου. Ποίησον τῷτο, &
ποιεῖ.

9 Ἀκούσας δὲ ταῦτα ὁ Ἰησοῦς, ἐθαύμασεν αὐτόν.
& γραφίς, τῷ ἀκολουθῶντι αὐτῷ ὄχλῳ εἶπε. Λέ-
γει ὑμῖν, ἡδὲ ἐν τῷ Ἰσραὴλ τοσαύτην πίστιν
οὐκ εἶμι.

10 Καὶ ὑποσείψαντες οἱ πεμφθέντες εἰς τὴν οἰκίαν,
εἶμι τὸ ἀσθενῶντα δούλον, ὑγιαίνοντα.

11 Καὶ ἐγένετο ἐν τῇ ἑξῆς, ἐπορεύετο εἰς πόλιν κα-
καμένω Ναϊμ· ἔ συνεπορεύοντο αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐ-
τοῦ Ἰωάννης, ἔ ὄχλος πολὺς.

12 Ὡς δὲ ἤγγισε τῇ πόλει τῇ πόλεως, ἔ ἰδὼν, ἤε-
καμίζετο τεθνηκώς, υἱὸς μονογυμῆς τῇ Μητρὶ αὐτῇ·
ἔ αὐτὴ ἦν χήρα· ἔ ὄχλος τῆς πόλεως ἰδὼν τοῦ
σὺν αὐτῇ.

13 Καὶ ἰδὼν αὐτὴν ὁ Κύριος, ἐσπλαγχνίσθη ἐπὶ
αὐτῇ, ἔ ἔειπεν αὐτῇ· Μὴ κλαίε.

14 Καὶ προσελθὼν ἔψατο τῆς σοῦν, (οἱ δὲ βασί-
ζοντες ἐστήλιν,) ἔ ἔειπε· Νεδρίσκε, σοὶ λέγω, ἐ-
γερθῆτι.

15 Καὶ ἀνέκλινεν ὁ νεκρὸς, ἔ ἤρξατο λαλεῖν· ἔ
ἔδωκεν αὐτὴν τῇ Μητρὶ αὐτῇ.

16 Ἐλάβε δὲ φίλος αὐαῦται, ἔ ἐδόξεκον τὸν
Θεόν, λέγοντες· Ὅτι Προφῆτης μέγας ἐγήγερται
ἐν ἡμῖν, ἔ ὅτι ἐπισκέψατο ὁ Θεὸς τὸν λαόν
αὐτῶν.

17 Καὶ ἤρξατο ὁ λόγος ὑποῖς ἐν ὅλῃ τῇ Ἰουδαίᾳ
παρὶ αὐτοῦ, ἔ ἐν πάσῃ τῇ περιχώρῳ.

18 Καὶ ἀπήγγειλάν Ἰωάννης οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ παρὶ
πᾶσι τῶν· Καὶ προσκαλεσάμενος δύο πινῶς τῷ
μαθητῷ αὐτοῦ ὁ Ἰωάννης,

19 Ἐπέμψεν πρὸς τὴν Ἰσθμὴν, λέγων· Σὺ εἶ ὁ ἐρχό-
μενος, ἢ ἄλλον προσδοκῶμεν;

20 Παραχρῆμα οἱ πρὸς αὐτὸν οἱ ἄνδρες, ἔ-
πον· Ἰωάννης ὁ Βαπτιστῆς ἀπέσταλκεν ἡμᾶς πρὸς
σε, λέγων· Σὺ εἶ ὁ ἐρχόμενος, ἢ ἄλλον προσδο-
κῶμεν;

21 Ἐν αὐτῇ ὁ τῇ ὥρᾳ ἐθεράπευε πολλὰς ἀπὸ τῶ-
ν ἔ μασίγων ἔ πηλιδῶν πονηρῶν· ἔ τυφλοῖς
πολλοῖς ἔχασατο τὸ βλέπειν.

22 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, ἔειπεν αὐτοῖς· Πορὴ-
θέντες ἀπαγγέλατε Ἰωάννῃ ἃ ἔδετε ἔ ἔχασατε· ὅτι
τυφλοὶ ἀμὰ βλέπουσιν, χωλοὶ περιπατοῦσιν, λεπροὶ κα-
θαρίζονται, κωφοὶ ἀκούουσιν, νεκροὶ ἐγείρονται, πτω-
χοὶ ἀντιλαμβάνονται.

23 Καὶ μακάριός ἐστιν, ὅς ἐδῶ μὴ σκάνδαλισθῇ
ἐν ἐμοί.

24 Ἀπελθόντων ὁ τῷ ἀγγέλιον Ἰωάννῃ, ἔρξατο λέ-
γειν πρὸς τοὺς ὄχλους παρὶ Ἰωάννῃ· Τί ἤρξατο
εἰς τὴν ἐρημὸν διαστὰσθαι; καὶ ἡμεῖς ὡς οὐκ ἐμε
σὺ λαλοῦμεν;

25 Ἀλλὰ τί ἤρξατο εἰς τὴν ἰδέαν; ἀνθρώπων ἐν ἡ-
ρακοῖς ἑμψέσμενοι; ἰδὼν, οἱ ἐν ἰσχυρί-
μῳ ἐνδόξῳ ἔ τρυφῇ ὑπάρχοντες, ἐν τοῖς βασιλείοις
ἔσονται.

26 Ἀλλὰ τί ἤρξατο εἰς τὴν ἰδέαν; Προφῆτῶν; καὶ
λέγω ὑμῖν, ἔ περὶ τοῦτον Προφῆτην.

27 Οὗτος ἐστὶ παρὶ ἐν γένεσιν· Ἰδὼν, ἔγὼ ἐπὶ
εἰλλω

εἰλω τὸ ἄγγελόν μου πρὸ προσώπου σου, ὅς κατασκευάσῃ τὴν ὁδὸν σου ἐμπροσθέν σου.

28 Λέγει γὰρ ὁ υἱός σου, μέζον ἐν ἀνθρώποις ἡμεῖς· καὶ Προφήτης Ἰωάννης Βαπτιστῆς ἦρθε ἐν ὀνόματι σου, μέζον γὰρ ἐστὶ.

29 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀκούς, οἱ τε λαοὶ ἐδικαιώσαντο τὸν Θεόν, βαπτισθέντες ἐν ὕδατι ἐν ὀνόματι τοῦ Θεοῦ ἡμετέρου.

30 Οἱ δὲ Φαρισαῖοι καὶ οἱ ὀνόματι τοῦ Θεοῦ ἡμετέρου βαπτισθέντες, μὴ ἐκκαθαίροντο ἀπὸ τῆς καρδίας.

31 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Τίμιόν ἐστιν ἡμεῖς ἅνθρωποις τῆς γενεᾶς ταύτης; Ἐ τίμωμεν οὐρανὸν καὶ γῆν;

32 Οἱμοὶ εἰσι παῖδες τοῦ ἐν ἀγορᾷ καθεμένου, καὶ προσφωνῶσιν ἀλλήλοις, καὶ λέγουσιν· Ὁ υἱὸς σου ἐστὶν, καὶ ἐκ ἀρχῆς σάβασθε· ἐδωθήσαμεν ὑμῖν, καὶ ἔκ ἐκκαθαίροντο.

33 Ἐλήλυθε γὰρ Ἰωάννης ὁ Βαπτιστῆς μήτε αἶνον ἐσθίου, μήτε οἶνον πίνων· καὶ λέγετε· Δαιμόνιον ἐκίχεν.

34 Ἐλήλυθεν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐσθίου καὶ πίνων· καὶ λέγετε· Ἰδὼν, ἄνθρωπος φάγος καὶ οἰνοπότης, τρώγων φίλους καὶ ἀμαρτωλῶν.

35 Καὶ ἐδικαιώθη ἡ σοφία ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῆς ἀμύμων.

36 Ἡρώδα δὲ τις αὐτὸν τῶν Φαρισαίων ἴκοντα φάγη μετ' αὐτοῦ· καὶ ἐισελθὼν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ Φαρισαίου, αὐτὸν ἐκκλήθη.

37 Καὶ ἰδὼν ὁ υἱὸς σου ἐν τῇ πόλει, ἥτις ἦν ἀμαρτωλὸς, ἐπηγγένηται ὅτι ἀνάκειται ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ Φαρισαίου, κομέμενος ἀλάβαστρον μέλιτος.

38 Καὶ εὐθὺς παρὰ τῆς πόδας αὐτοῦ ἐπίσω, κλαίοντα, ἤρξατο βρέχειν τὰς πόδας αὐτοῦ τοῖς δάκρυσι· καὶ τοῖς ὤμοις ὀρθῶς κεφαλῆς αὐτοῦ ὀψέμενος, καὶ κατεφίλη τὰς πόδας αὐτοῦ, καὶ ἔλειψε τὸ μύρον.

39 Ἰδὼν δὲ ὁ Φαρισαῖος ὁ καλέσας αὐτόν, εἶπεν ὁ υἱὸς σου λέγων· Οὗτος, εἰ ἦν Προφήτης, ἐγνώσκειν ὅτι ἐγὼ καὶ ὁ πατήρ μου ἡ γυνὴ, ἥτις ἀπαιτεῖται αὐτόν, ὅτι ἀμαρτωλὸς ἐστίν.

40 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε πρὸς αὐτόν· Σίμω, ἔχω σοὶ τί εἰπεῖν· Ὁ δὲ φησὶ· Διδάσκαλε, τίτι;

41 Δὲν χρειάζεται, ἥσαν ὁδοὶ καὶ τίτι· οὐκ εἰς ἀνάγκην δὴνάρεται πεντακόσια, ὁ δὲ ἕτερος πεντακόντη.

42 Μὴ ἐχόντων δὲ αὐτῶν ἀποδοῦναι, ἀμφοτέροις ἐχρεώσθη· τίς γὰρ αὐτῶν, εἰπὶ, πλείους αὐτὸν ἀποδοῦναι;

43 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Σίμων, εἶπεν· Ὑποκυβέτω ἐν ἐμοὶ πλῆθι ἡμερίστων. Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ὁρῶς ἐκρίνας;

44 Καὶ γραφαὶς τρεῖς τῶν γυναικῶν, τῷ Σίμωνι ἔφη· Βλέπεις ταύτῃ τῶν γυναικῶν; εἰσῆλθόν σε εἰς τὴν οἰκίαν, ὅπου ἔστι τῆς πόδας μου ἢ ἐδοκας· αὕτη δὲ πόδις κρυπὴν βρεῖται τῆς πόδας, ἢ ταῖς θραξὶ τῆς κεφαλῆς αὐτῆς ἔσκαψε.

45 Φίλημα μοι ἢ ἐδοκας· αὕτη δὲ, ἀφ' ἧς εἰσῆλθον, ἢ διήλπε καταφιλήσά με τῆς πόδας.

46 Ἐλαίῳ τῶν κεφαλῶν μου ἢ ἐλάψας· αὕτη δὲ μύρρον ἔλειψέ με τῆς πόδας.

47 Οὐ χάριν, λέγει σοι, ἀφένται αἱ ἁμαρτίαι αὐτῆς αἱ πολλαί, ὅτι ἡγάπησε πολὺ· ὧς δὲ ὀλίγον ἀφίεται, ὀλίγον ἀγαπᾷ.

48 Εἶπε δὲ αὐτῇ· Ἀφένται σοι αἱ ἁμαρτίαι.

49 Καὶ ἤρξαντο οἱ συναγαγέμενοι λέγειν ἐν ἑαυτοῖς· Τίς ὅτις ἐστίν, ὃς ἔσκαρσεν ἀφίησιν;

50 Εἶπε δὲ πρὸς τὴν γυναῖκα· Ἡ πίστις σε σώσει· καὶ σε· πορεύεαι εἰς εἰρήνην.

Κεφ. η'. 8.

ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ καθεξῆς, καὶ αὐτοὶ διώδουν πρὸς πόλιν ἢ κώμην, κηρύσσοντες καὶ διαγγέλλοντες τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ· καὶ οἱ δώδεκα σύν αὐτοῖς.

1 Καὶ γυναῖκές τιτις, αἱ ἥσαν τεθραυκόμεναι ἀπὸ πλῃμάτων πονηρῶν καὶ ἀσθενειῶν· Μαρία ἡ καλεσμένη Μαγδαληνὴ, ἀφ' ἧς δαίμονια ἑπτὰ ἐξεληλύθει.

2 Καὶ Ἰωάννα γυναῖκα Χυζᾶ ὑπηρέτου Ἡρώδου, καὶ Σαδδνα, καὶ ἕτεραι πολλαί, αἱ τινες διηκόνουν αὐτοῖς ἀπὸ τῶν ὑπαρχόντων αὐταῖς.

3 Συνιόντος δὲ ὄχλου πολλοῦ, καὶ τῶν κατὰ πόλιν ὑποβοσχομένων πρὸς αὐτόν, εἶπε αὐτῷ πᾶσι·

4 Εἰσῆλθεν ὁ σπείρων καὶ σπείρειν καὶ σπείρον αὐτό· καὶ ἐν τῷ σπείρειν αὐτόν, ὃ μὲν ἔπεσε πρὸς τὴν ὁδὸν, καὶ κατεπατήθη, καὶ τὰ πέτεινα καὶ ἄλλα κατέφαγον αὐτό.

5 Καὶ ἕτερον ἔπεσεν ἐπὶ τὴν πέτραν, καὶ φύειν οὐκ ἔδυνάμην, διότι τὸ μὴ ἔχειν ἰκμάδα.

6 Καὶ ἕτερον ἔπεσεν ἐν μέσῳ τῶν ἀκρωθῶν, καὶ συρφεῖσαι αἱ ἀκρωθαὶ ἀπέπνιξαν αὐτό.

7 Καὶ ἕτερον ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν τῶν ἀγαθῶν, καὶ φύειν ἐποίησε καρπὸν ἑκατοσιπλάσιον. Ταῦτα λέγων

λέγων· εἰσὶν οἱ ἔχοντες πάντα ἀκάντες, ἀκμήτω.

9 Ἐπαύσαντο δὲ αὐτῷ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέγοντες· τίς ἐστὶ ἡ ὑπερβολὴ αὐτῆς;

10 Οὗ δὲ εἰπὺν· Ὑμῖν δέδοται γινῶσκει τὰ μυστήρια τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ· τοῖς δὲ λοιποῖς ἐν ὑπερβολαῖς, ἵνα βλέποντες μὴ βλέπωσι, καὶ ἀκούοντες μὴ συνῶσιν.

11 Ἔστι δὲ αὕτη ἡ ὑπερβολή· ὁ σάτορος, εἰςιν, ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ.

12 Οἱ δὲ παρὰ τὴν ὁδὸν, εἰσιν οἱ ἀκούοντες· αἵ τε ἔρχεται ὁ διάβολος, καὶ αἵρει τὸν λόγον ἀπὸ τῆς καρδίας αὐτῶν, ἵνα μὴ πιστεύσῃτε σωθῶσιν.

13 Οἱ δὲ ὑπὲρ τὴν πέτραν, οἱ ὅταν ἀκούσωσι, μετὰ χαρᾶς δέχονται τὸν λόγον· καὶ ἔπειτα ῥιζῶν ἕκ ἑκάστην, οἱ πρὸς καιρὸν πιστεύουσι, καὶ ἐν καιρῷ πειρασμῷ ἀφίστανται.

14 Τὸ δὲ εἰς τὰς ἀκαρπύδας πεσόν, ἔπειτα εἰσιν οἱ ἀκούσαντες, καὶ ὑπὸ μεριμνῶν καὶ πλεῖν καὶ ἡδονῶν τῆς βίου περιουσίᾳ συνεγείρονται, καὶ ἡ τελειοφροσύνη.

15 Τὸ δὲ ἐν τῇ καλῇ γῇ, ἔπειτα εἰσιν εἴτινες ἐν καρδίᾳ καλῇ καὶ ἀγαθῇ ἀκούσαντες τὸν λόγον, κατέχευσι, καὶ καρποφοροῦσιν ἐν ὑπομονῇ.

16 Οὐδαίς δὲ λυχνον ἄψας, καλύπτει αὐτὸν σκόφος, ἡ ὑποκατω κλίτης τίθησιν· ἀλλ' ὑπὲρ λυχνίας ὀπτιθήσιν, ἵνα οἱ ἐπισπορεύοντες βλέπωσι τὸ φῶς.

17 Οὐ γὰρ ἐστὶ κρυπτόν, ὃ ἢ φανερόν γενήσεται· καὶ ὃ ἐκρυφον ὃ ἢ γνωσθήσεται, καὶ εἰς φανερόν ἔλθῃ.

18 Βλέπετε ὅτι πῶς ἀκούετε· ὅς γ' ἂν ἔχη, λαμβάνεται αὐτῷ· καὶ ὅς ἂν μὴ ἔχη, καὶ ὃ δοκῇ εἶναι, ἀρνήσεται ἀπ' αὐτοῦ.

19 Παρεγενοντο δὲ πρὸς αὐτὸν ἡ μήτηρ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, καὶ ἕκ ἑδύνατο συντυχεῖν αὐτῷ· ἀλλ' οὐκ ἔχον.

20 Καὶ ἀπεγγέλη αὐτοῖς, λεγόντων· Ἡ μήτηρ καὶ οἱ ἀδελφοί σου ἐσθῆκασιν ἔξω, ἵδῃν σε θέλονται.

21 Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπε πρὸς αὐτούς· Μήτηρ μου καὶ ἀδελφοί μου οὗτοί εἰσιν, οἱ τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ ἀκούοντες, καὶ ποιῶντες αὐτόν.

22 Καὶ ἐγένετο ἐν μιᾷ τῶν ἡμερῶν, καὶ αὐτὸς ἐξῆλθῃ εἰς πλοῖον, καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· καὶ ἔπειτα πρὸς ὕψους· διέλαθον εἰς τὸ πέραν τῆς λίμνης· καὶ ἀνέχθησαν.

23 Πλεόντων δὲ αὐτῶν ἀφύπνωσι· καὶ κατέβη λαίλαψ ἀέριος εἰς τὴν λίμνην· καὶ συνεπληρύντο, καὶ ἐκινδύνεον.

24 Προσελθόντες δὲ διήγνησαν αὐτῷ, λέγοντες· Ἐπιστάτα, ἔησάμεν, ἀναλωμένοι. Ὁ δὲ ἐγερθεὶς ἐπιτίμησε τῷ ἀνέμῳ ὡς τῷ κλύδωνι τῷ ὕδατος· ὡς ἐπαύσατο, ὡς ἐγένετο γαλήνη.

25 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Πῶς ἐσὶν ἡ πέσις ὑμῶν; φοβηθέντες δὲ θαύμασεν, λέγοντες πρὸς ἀλλήλους· Τίς ἄρα ὁτός ἐστιν, ὅτι ὡς τοῖς ἀνέμοις ἐπιτάσσει ὡς τῷ ὕδατι, ὡς ὑπακούσιν αὐτῷ;

26 Καὶ κατέπλευσαν εἰς τὴν χώραν τῆς Γαδαρήν, ἥτις ἐστὶν ἀντιπέραν τῆς Γαλιλαίας.

27 Ἐξελθόντι δὲ αὐτῷ ἐπὶ τῷ γῆνι, ὑπήντασαν αὐτῷ ἀνθρώποι ὡς τὸ πόλιος, οἳ ἔμελλαν διαμόνια ὡς χότων ἰσχυρῶν, ὡς ἐμάχοντο ἐκ ἐνεδιδυκτοῦ, ὡς οἱ κίβητοι ἔμενον, ἀλλ' ἐν τοῖς μνήματιν.

28 Ἰδὼν δὲ τὸν Ἰησοῦν, ὡς ἀνέκραξας, προσέειπεν αὐτῷ, ὡς φωνῇ μεγάλῃ· Τί ἐμοὶ ὡς σοὶ, Ἰησοῦ; τί ἐγὼ τῷ Θεῷ ὡς ὑφίσταμαι; δέομαί σε, μὴ με βασανίσῃς.

29 Πλήγναι γὰρ τὸν Πιλάτον τὸ ἀκαθάρτον ἔχοντα ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου· πολλοὶ γὰρ χρόνους συνηρτάκει αὐτῷ, ὡς ἰδεσμένῳ αἰνέσει, ὡς πίδακι φυλασσόμενος· ὡς ἀφ' ὧν τὰ δεινὰ, κλάινετο ὑπὸ τοῦ δαίμονος εἰς τὰς ἐρήμους.

30 Ἐπρωτήσθη δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων· Τί σοὶ ἐστὶν ὄνομα; Ὁ δὲ ἔειπε· Λεγεών· ὅτι δαμόνια πολλὰ ἐσθλύναν εἰς αὐτόν.

31 Καὶ παρεκάλει αὐτὸν ἵνα μὴ ἐπιτάξῃ αὐτοῖς εἰς τὴν ἄβυσσον ἀπελθεῖν.

32 Ἦν δὲ ὡς ἐγγύθεν χοίρων ἰσχυρῶν βοσκομένων ἐν τῷ ὄρει· ὡς παρεκάλει αὐτόν ἵνα ἐπιτρέψῃ αὐτοῖς εἰς ἐκείνους εἰσελθεῖν· Καὶ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς.

33 Ἐξελθόντα δὲ τὰ δαμόνια ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου, εἰσῆλθεν εἰς τὴν χοίρην· ὡς ὤρμησεν ἡ ἀγέλη κατὰ τὴν κρημνὴν εἰς τὴν λίμνην· ὡς ἀπεπείγη.

34 Ἰδόντες δὲ οἱ βόσκοντες τὸ γεγενημένον, ἔφυγον· ὡς ἀπελθόντες ἀπήγγειλαν εἰς τὴν πόλιν ὡς εἰς τὴν ἀγρόν.

35 Ἐξῆλθον δὲ ἰδεῖν τὸ γεγονός· ὡς ἦλθον πρὸς τὸν Ἰησοῦν, ὡς εὖρον καθήμενον τὸν ἀνθρώπον, ὡς τὰ δαμόνια ἔχοντα, ἰμμετισμένον ὡς σφρονοῦντα πρὸς τὴν πόλιν τοῦ Ἰησοῦ· ὡς ἐφωβήθησαν.

36 Ἀπήγγειλαν δὲ αὐτοῖς ὡς οἱ ἰδόντες, πῶς ἐτάθη ὁ δαίμονισθαις.

37 Καὶ ἠρώτησαν αὐτὸν ἅπαν τὸ πλῆθος ὡς πᾶσι τῆς Γαδαρήν, ἀπελθὼν ἀπ' αὐτοῦ, ὅτι φόβος μεγάλος συνέχευετο· αὐτοῖς δὲ ἐμβαλὼν εἰς τὸ πλοῖον, ὡς ἐπέτρεψεν.

38 Ἐδέετο ὁ αὐτὸς ὁ ἀνὴρ ἀφ' ἧς ὑπεληλύθει τὰ θαύματα, εἶναι τὸν αὐτῷ· ἐπέλυσε δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, λέγων·

39 Ὑπάρχει εἰς τὸ οἶκόν σου, ἔστι δὲ διχρῶν ὅσα ἐποίησέν σοι ὁ Θεός· καὶ ἀπῆλθε, καὶ ὁλῶ τὴν πόλιν κηρύσσων ὅσα ἐποίησεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς·

40 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ ὑποσρέψαι τὸ Ἰασην, ἀπεδέξατο αὐτῷ ὁ ὄχλος· ἦσαν γὰρ πάντες προσδοκῶντες αὐτόν·

41 Καὶ ἰδὼς, ἦλθεν ἀνὴρ ὃν ὄνομα Ἰάκωβος, ὁ αὐτὸς ἀρχὸν τῆς συναγωγῆς ὑποῆρχε· ἔπεσόν τινες τῆς πόδας τῷ Ἰησοῦ, παρεκάλει αὐτὸν εἰσελθεῖν εἰς τὸ οἶκόν αὐτοῦ·

42 Ὅτι θυγάτηρ μονογενὴς ἦν αὐτοῦ ὡς ἐτῶν δώδεκα, καὶ αὕτη ἀπέθνησκεν· (ἐν τῷ ὑποσπῶν αὐτῷ οἱ ὄχλοι συνέπνιγον αὐτόν·)

43 Καὶ γυνὴ ἥσα ὡς ῥύσει αἷματος ἀπὸ ἐτῶν δώδεκα, ἥτις εἰς ἱατρῆς προσημαρίσασα ὅλον τὸ βίον, ἢ ἐχούσιν ὑπὸ κενόδοξον θεραπεύεσθαι·

44 Προσελθὼσα ὀπίσθεν, ἥψατο τῆς κοιλίας τῆς ἱματίου αὐτοῦ, ἔσχατον ἔσχατον ὅτι ῥύσιν τῆς αἱματὸς αὐτῆς·

45 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς· Τίς σ' ἀψάμενός με; Ἄρτι μνησθεὶς πάντων, εἶπεν ὁ Πέτρος· ἔσχατον αὐτῷ· Ἐπιστάτω, οἱ ὄχλοι συνέχευόν τε καὶ ἐκποδίζοντες, ἔλεγον· Τίς σ' ἀψάμενός με·

46 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν· Ἦψατό με τίς· ἐγὼ γὰρ ἔγνω ὅτι δύναμις ἤξει ἐκ μου ἐν ἐμοί·

47 Ἰδὼσα ὁ γυνὴ ὅτι ἢ ἐλάθε, τρέμῃσιν ἦλθε, ἔπροσπεσὼσα αὐτῷ, δι' ἣν αἰτίαν ἥψατο αὐτοῦ, καὶ ἐγγύλαεν αὐτῷ ἐνώπιον πάντων τῶν λαῶν, ἔως ἵνα εἰδῇ ὁ Ἰησοῦς·

48 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῇ· Θάρσει θυγάτηρ, ὁ τίς σε σέσωκέ σε· πορεύου εἰς εἰρήνην·

49 Ἔτι αὐτῷ λαλῶντος, ἐρχεται τις παρὰ τῆς συναγωγῆς, λέγων αὐτῷ· Ὅτι τέθνηκεν ἡ θυγάτηρ σου· μὴ σκυλλεῖς τὸ διδασκαλεῖν·

50 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀκούσας ἀνέκρινεν αὐτῇ, λέγων· Μη φοβῶ· μόνον πίστευε, ἔσωθήσεται·

51 Εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν οἰκίαν, ἢ ἀφῆκεν εἰσελθεῖν ὑδῖνα, καὶ μὴ Πέτρον καὶ Ἰάκωβον καὶ Ἰωάννην, ἔτι πατέρα τῆς παιδὸς καὶ τὴν μητέρα·

52 Ἐκλαίον δὲ πάντες ἔκοπτοντο αὐτῇ· Ὁ δὲ εἶπε· Μη κλαίετε· ἢ κτεθήσεται, ἀλλὰ καὶ ζήσεται·

53 Καὶ καταγέλων αὐτῷ, εἰδότες ὅτι ἀπεθνήκειν·

54 Αὐτὸς δὲ ἐμβαλὼν ἔξω πάντας, ἔκρατῆσεν τὰς χεῖρας αὐτῆς, ἐφώνησεν, λέγων· Ἦ ταῖς ἐγῆρου·

55 Καὶ ἐπέσπευε τὸ πνεῦμα αὐτῆς, ἔδιδε
την παραχρῆμα· ἔδιδε αὐτῇ δοθῆναι φα-
γεῖν.

56 Καὶ ἔξῃσάν οἱ γενεὶς αὐτῆς· ὁ δὲ παρίγγι-
λεν αὐτοῖς μηδενὶ εἰπεῖν τὸ γεγεῖναι.

Κεφ. θ'. 9.

1 ΣΥΓΚΑΛΙΣΑΜΕΝΟΣ δὲ τῆς δώδεκα μαθητῶν
αὐτῆς, ἔδωκεν αὐτοῖς δύναμιν, ἔδωκεν
αὐτοῖς πάντα τὰ δαιμόνια, καὶ νόσους θεραπεύειν.

2 Καὶ ἀπέστειλεν αὐτὰς κηρύσσειν τὴν βασιλείαν τοῦ
Θεοῦ, ἔδωκεν αὐτοῖς ἀσθενεῖν.

3 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὰς· Μηδὲν αἴρετε εἰς τὴν ὁ-
δὸν, μήτε ῥάβδους, μήτε πήλας, μήτε ἄρτον, μήτε
ἀργύριον· μήτε ἀλλ' ὅσα χιτῶνας ἔχετε.

4 Καὶ εἰς ἣν οἰκίαν εἰσελθῆτε, ἐκεῖ μένετε,
ἔκκεθεν ἑξέρχεσθε.

5 Καὶ ὅσοι ἀρ' μὴ δέξονται ὑμᾶς, ἑξερχόμενοι ἀ-
πὸ τῆς πόλεως ἐκεῖνης, ἔκ τῆς κοιτοῦν ἀπὸ τῆς
πόλεως ὑμῶν ἀποτιναξάτω, εἰς μαρτύριον εἶ-
ναι αὐτῆς.

6 Ἐξερχόμενοι δὲ διήρχοντο κατὰ τὰς κώμας, εὐαγ-
γελιζόμενοι ἔκ τερατοῦντες πλутаχῶν.

7 Ἦν κατε δὲ Ἡρώδης ὁ τετραρχὴς τὰ ἱερὸν καὶ
αὐτῆς πάντα· ἔδωκεν αὐτοῖς, ἀλλ' ὅσα χιτῶνας ὑπὸ τι-
των, ὅτι Ἰωάννης ἐγγυερταὶ ὡς νεκρῶν.

8 Ὑπὸ τινῶν δὲ, ὅτι Ἡλίας ἐφάνη· ἄλλων δὲ, ὅ-
τι Προφῆτης εἰς τῶν ἀρχαίων ἀνέστη.

9 Καὶ εἶπεν ὁ Ἡρώδης· Ἰωάννης ἐγὼ ἀπεκεφάλι-
σα· τίς δὲ ἐστὶν ὅτος περὶ ὃ ἐγὼ ἀκούω τοιαῦτα; Καὶ
ἐζητεῖ ἰδεῖν αὐτόν.

10 Καὶ ὑποσπείσαντες οἱ ἀπέστολοι διηγήσαντο αὐ-
τῷ ὅσα ἐποίησαν· ἔκ παραλαβῶν αὐτῆς, ὑπεχώρησεν
κατὰ ἰδίαν εἰς τόπον ἔρημον πόλεως καλεμένης Βηθ-
σαΐδα.

11 Οἱ δὲ ὄχλοι γινόντες, ἠκολούθησαν αὐτῇ· καὶ
δεξάμενος αὐτῆς, ἐλάλει αὐτοῖς περὶ τῆς Βασι-
λείας τοῦ Θεοῦ, ἔκ τῆς χρείας ἔχοντας θεραπείας
ἰατοῦ.

12 Ἦ δὲ ἡμέρα ἤρξατο κλίνειν· προσελθόντες δὲ
οἱ δώδεκα, εἶπον αὐτῇ· Ἀπόλυσον τὸν ὄχλον, ἵνα ἀ-
πελθόντες εἰς τὰς κώμας κώμας ἔκ τῆς αὔρας, κατα-
λύσωσι, ἔκ ἄρρωσιν ὑποσιτισμῶν· ὅτι ὧδε ἐν ἱερῇ
τοπῇ ἐσμέν.

13 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὰς· Δότε αὐτοῖς ὑμῶν φαγεῖν.
Οἱ δὲ εἶπον· Οὐκ ἔστιν ἡμῖν πλέον ἢ πάντι
ἄρτοι.

ἀρτοι ἐ δὲ ἰχθυῖες, ἡ μῆτι πορρωθέντες ἡ-
μῖς ἀγορεύσαμεν εἰς πάντας τῶν λαῶν τῶτον βρώ-
ματα.

14 Η^τ σὰμ γδ ὡς αὖ ἀνδρες πεντακισχίλιοι . ἔπε οὖν
πρὸς τὸς μαθητάς αὐτοῦ . κατακλίνατε αὐτὴς πλίσιας
ἀλλ' ἐκ πεντήκοντα .

29. Καὶ ἐποίησεν ὕψος, ἐν ἀνέκλινον ἀπὸ-

16 Λαβὼν δὲ τὰς πέντε ἄρτους καὶ τὰς δύο ἰχθύας,
ἀμβλέψας εἰς τὸ ὄχλον, ἀκούσας αὐτῆς· κατε-
κλυσσε, ὡς εἶδεν τοῖς μαθηταῖς, παρατίθεσθαι τὸ
ὄχλῳ.

17 Καὶ ἔφαγον, ὁ ἑχρηστάθηται πάντες· ὁ ἦ-
θη τὸ πλεονεῦσθαι αὐτοῖς κλισμάτων κόφινος δώ-
δεκα.

18 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ᾄδει αὐτὸν προσωχόμε-
νον καταμόνας, συζητᾷ αὐτῷ οἱ μεθ' αὐτοῦ· ὁ ἰε-
ρεὺς αὐτῶν, λέγων· Τίνα με λέγουσιν οἱ ὄχλοι
εἶναι;

19 Οἱ δὲ ἀποκριθέντες, ἔπουν· Ἰωάννην ὁ Βα-
πτιστὴν ἄλλοι δὲ Ἡλὶαν· ἄλλοι δὲ, ὅτι Προφῆτης
τῆς τῶν ἀρχαίων ἀνέστη.

20 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ὑμῶς δὲ τίνα με λέγετε, ἁ-
γιοι; Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος, εἶπε· Τὸν Χριστὸν τὸ
Θεόν.

21 Ὁ δὲ ὑπτιμώσας αὐτοὺς, παρήγγειλε μηδεὶς
εἰπεῖν τῇ τιμῇ,

22. Επειὶ οὐ γὰρ ἴδοντες ἀνθρώποις πολλὰ πα-
θεῖν, ἔπεισε καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τῶν Πρεσβυτέρων καὶ
ἐκκλησιῶν καὶ Γραμματέων, ἔπεισε καὶ ἡμεῖς ἀπὸ τῶν
τρίτων ἡμερῶν εὐερεῖσθαι.

23 Εἶπεν δὲ πρὸς πάντας· Εἴ τις θέλει· ὀψι-
σαι με ἔλθῃν, ἀπαρνησάσθω ἑαυτόν, ὁ ἀράτω
τὸν Σταυρὸν αὐτοῦ καθ' ἡμέραν, ὁ ἀκολουθήτω
μοι.

24 Οὗ γὰρ ἀπὸ θείης τῆς ψυχῆς αὐτῆς σωθῆναι, ἀπο-
λίσσει αὐτήν· ὅς δ' ἀπὸ ἀπολίσσει τῆς ψυχῆς αὐτῆς ἐν-
κεν ἰματί, ἕως σώσει αὐτήν.

25 Τὸ γὰρ ἐπιφελῆται ἀπ' ὁρατοῦ περὶ ἡσας τὸν Κόσ-
μου ὅλον, ἐαυτὸν δὲ ἀπολέσας, ἢ ζῆραι-
σθαι;

26 Οὗτος γὰρ ἀποκρίσκειν με καὶ τῆς ἐμῆς λῶντος,
τῷ πονηρῷ τῷ ἵππῳ ἀποδίδωμι ἐπαύριον ἵσταται, ὅταν ἐλ-
θῇ ἐν τῇ πόλει αὐτοῦ ἐν τῷ Πατρὶ, ἐν τῷ ἁγίῳ ἀν-
γέλῳ.

27 Λέγω δὲ ὑμῖν ἀληθῶς, οἱσὶ τινες τῶν ὧδε ἐστ-
χόντων, οἳ ἢ μὴ γούσονται θανάτῳ, ἕως ἃν ἴδωσι τὸ
Βασιλεῖον τοῦ Θεοῦ.

18 Ἐγένετο δὲ μετὰ τῆς λόγους τήτης ὡς αὐτὴ ἡμέρας
ἑκτῇ, καὶ παραλαβὼν τὸν Πέτρον ἐὶ τὸ ὕψος ἐ
ἑκτῇ.

Ἰακώβον, ἀνέβη εἰς τὸ ὄρος προσκύβασθαι.

29 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ προσκύβασθαι αὐτοῦ, τὸ ἄδου ᾧ προσώπῳ αὐτοῦ ἕτερον, καὶ ὁ ἱματισμὸς αὐτοῦ λευκὸς ὡς ὕακριν.

30 Καὶ ἰδὼν, ἄνδρες δύο συνελάλουν αὐτῷ, οἵτινες ἦσαν Μωσῆς καὶ Ἡλίας.

31 Οἱ ὀφθέντες ἐν δόξῃ, εἶλεγον ᾧ ἐξοδὸν αὐτοῦ, ἣν ἐμελλε πληρῶν ἐν Ἱερουσαλὴμ.

32 Οἱ δὲ Πέτρος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ ἦσαν βεβαρημένοι ὕπνῳ. Ἀφ' ἡτορμήσεως δὲ αἶδον τὴν δόξαν αὐτοῦ, καὶ τὰς δύο ἀνδρας τῆς συνομιλίας αὐτοῦ.

33 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀφ' ἡτορμίζεσθαι αὐτὸς ἀπ' αὐτοῦ, εἶπεν ὁ Πέτρος πρὸς τὸν Ἰησοῦν· Ἐπιστάτα, καλὸν ἐστὶν ἡμᾶς ὥδε εἶναι· καὶ ποιήσωμεν σκηνὰς τρεῖς, καὶ μὶς σοί, καὶ Μωσῇ μὶς, καὶ Ἡλῷ μὶς· μὴ εἰδὼς ὃ λέγει.

34 Ταῦτα δ' αὐτοῦ λέγοντος, ἐγένετο νεφέλη, καὶ ἐπισκίασεν αὐτούς· ἐφοβήθησαν δὲ ἐν τῷ ἐκείνης ἀσπείδειν εἰς τὴν νεφέλην.

35 Καὶ φωνὴ ἐγένετο ἐκ τῆς νεφέλης, λέγοντα· Οὗτός ἐστιν ὁ Υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, αὐτοῦ ἀκούετε.

36 Καὶ ἐν τῷ ἀκούεσθαι τὴν φωνήν, ἀνέβη ὁ Ἰησοῦς μόνος· καὶ αὐτοὶ ἐστήθησαν, καὶ μὴ ἐν ἀπὸρρηκτοῦ ἐν σκευαῖς ταῖς ἡμέραις ὅθεν ὦν ἐν ῥακασίν.

37 Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ ἑξῆς ἡμέρᾳ, κατελθόντων αὐτῶν ἀπὸ τῆς ὄρει, συνήντησεν αὐτοῦ ὄχλος πολὺς.

38 Καὶ ἰδὼν, ἀνὴρ ἀπὸ τοῦ ὄχλου ἀνέβόηκε, λέγων· Λιδαίκαλε, δεομαι σοι, ἐπίβλεψον ὑπὲρ τοῦ υἱοῦ μου, ὅτι μονογενὴς ἐστὶ μοι.

39 Καὶ ἰδὼν, πνεῦμα λαμβάνει αὐτόν, καὶ ὑψαίνου φωνὴ κράζει, καὶ σπαιρᾷ αὐτὸν μετ' ἀφρον, καὶ μετ' ἀποκρυφῇ ἀπ' αὐτοῦ, συντρίβον αὐτόν.

40 Καὶ ἰδεῖν τὴν μεθ' αὐτοῦ σε ἵνα ἀνθάλλῃς αὐτόν, καὶ ἃ ἐκ ἡδονῆς σου.

41 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ὡς γενεὰ ἀπίστος καὶ διεσπασμένη, ἕως ποτε ἴσονται πρὸς ὁμᾶς, καὶ ἀνέξονται ὑμῶν; Πρεσβύταγε ὥδε τὸν υἱόν σου.

42 Ἐπὶ δὲ προσερχομένῳ αὐτοῦ, ἐρῶσεν αὐτόν τις θυμῶν, καὶ συνεσπάρταξεν· ἐπετίμητε δὲ ὁ Ἰησοῦς τῷ πνέματι τῷ ἀκαθάρτῳ, καὶ ἔτατο τὸν παῖδα, καὶ ἀνέδωκεν αὐτόν τῷ πατρὶ αὐτοῦ.

43 Ἐξελθόντων δὲ πάντες ὑπὲρ τῆς μεγάλης ταπείνου· πάντων δὲ θυμῶν τῶν πατρὶς αὐτοῦ εἰς ἱστορίαν ὁ Ἰησοῦς, ἔμελλε πρὸς τὰς μεθ' αὐτοῦ.

44 Θέσθι ὑμεῖς εἰς τὰ ὅτα ὑμεῖς τῆς λόγους τῆτος·
ὅτι ἡ γὰρ ἡμεῖς ἀνθρώπων μέλλει παραδίδοσθαι εἰς χεῖρας
ἀνθρώπων.

45 Οἱ δὲ ἠγνόουν τὸ ῥῆμα τῆτο, καὶ ἦν παρακα-
κολλημένοι ἀπ' αὐτῶν, ἵνα μὴ οἴσθωνται αὐ-
τό· καὶ ἐφοβῶντο ἐρωτῆσαι αὐτὸν περὶ τῶν ῥημάτων
τῆτων.

46 Εἰσῆλθι δὲ ἀφ' αὐτοῖς ἐν αὐτοῖς, τὸ τίς αὐ-
τῶν μαίμων αὐτῶν.

47 Οἱ δὲ ἰησοῦς ἰδὼν τὸν ἀφ' αὐτοῖς καὶ καρδίαν
αὐτῶν, ὑπελαβόμενος παιδίον, ἐκτίσεν αὐτὸ παρ'
ἐαυτοῦ.

48 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι εἰ δέξεται τῆτο τὸ
παιδίον ὑπὲρ τῶν ὀνομάτων, ἐμὲ δέχεται· καὶ ὅς εἰ
ἐμὲ δέξεται, δέχεται τὸν ἀποστείλαντά με· ὁ
γὰρ μικρότερος ἐν πᾶσιν ὑμῖν ὑπάρχων, ὅτος ἐστὶ
μεγας.

49 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἰωάννης, εἶπεν· Ἐπιστάτω,
ἰδομέν τινα ὑπὲρ τῶν ὀνομάτων σὺ ὀκθαλλόντα τὰ δι-
μόνια· καὶ ὀκθαλύσαμεν αὐτόν, ὅτι καὶ ἀκολούθει μετ'
ἡμεῶν.

50 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν ὁ ἰησοῦς· Μὴ κωλύετε· ἐ-
γὼ γὰρ ἐστὶ κατὰ ἡμῶν, ὑπὲρ ἡμῶν ἐστίν.

51 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ συμπληρῶσθαι τὰς ἡμέρας τὴν
ἀνακλήσειν αὐτῶν, καὶ αὐτὸς τὸ πρόσωπον αὐτῶν ἐξήραξε
καὶ παραβύσθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ.

52 Καὶ ἀπέστειλιν Ἀγγέλους πρὸς προποῖτον αὐτῶν· καὶ
παραβύσαντες εἰσῆλθον εἰς κώμην Σαμαρειτῶν, ὥστε ἐ-
πειράσθαι αὐτοὺς.

53 Καὶ καὶ ἐδέξαντο αὐτοὺς, ὅτι τὸ πρόσωπον αὐτῶν
ἦν παραβύσθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ.

54 Ἰδόντες δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτῶν ἰωάννης καὶ ἰωάν-
νης, εἶπον· Κύριε, θέλεις εἰπομεν πῦρ καταβῆναι ἀ-
πὸ σοῦ ἔρῃν, καὶ καταλῶσαι αὐτούς, ὥς καὶ Ἡλίας ἐ-
ποίησε;

55 Στραφεὶς δὲ ἐπετίμησεν αὐτοῖς, καὶ εἶπεν· Οὐκ
οἶδατε οὐκ πνεύματος ἐστὶ ὑμεῖς.

56 Ὁ γὰρ ἡμεῖς ἀνθρώπων καὶ ἡλθε ψυχὰς ἀνθρώ-
πων ἀπολεσσαι, ἀλλὰ σωσαι· καὶ ἐπορεύθησαν εἰς
ἐτέραν κώμην.

57 Ἐγένετο δὲ παραβύσθαι αὐτοῦ, ἐν τῇ ὁδῷ εἶ-
πε πρὸς αὐτόν· Ἀκολουθήσω σοι, ὅτι καὶ ἀπὸ τῆς
Κύριε.

58 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ ἰησοῦς· Αἱ ἀλώτικες φο-
νὴς ἔχεις, καὶ τὰ τέκνα τῶν ἡρώων κατακλωσῶναι·
ὁ δὲ ἡμεῖς ἀνθρώπων καὶ ἔχει πᾶσι τῶν κεφαλῶν
κλῆρον.

59 Εἴτε δὲ πρὸς ἴτιον· Ἀκολουθε μοι· ὁ δὲ εἶ-
πε· Κύριε, ἐπίτρεψέ μοι ἀπελθόντι πρῶτον ψάψαι
τὸν τῆτον.

60 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀφες τῆς μικρᾶς θά-
ψαι τῆς ἐαυτῷ νεκρᾶς· σὺ δὲ ἀπελθὼν διάγγελλε
τῷ βασιλεῖ τῆς οὐρ.

61 Εἶπε δὲ ὁ ἕτερος· Ἀκολουθήσω σοι, Κύριε·
πρῶτον δὲ ἐπίτρεψόν μοι ἀποταξέσθαι τοῖς εἰς τὸν
οἶκόν μου.

61 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Οὐδεὶς ἔσπι-
βαλὼν τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπ' ἄροτρον, καὶ βλέπων εἰς
τὰ ὀπίσω, ὁψεται· ὁ δὲ θέλος εἶναι εἰς τὴν βασιλείαν
τῆς Θεοῦ.

KfG, 1. 10.

Ι ΜΕΤὰ τὸ ταῦτα ἀνέβηκεν ὁ Κύριος ἐν ἑτέροις ἰσχυρομέντοις, καὶ ἀπέστειλεν αὐτὴν ἀπὸ δύο πρὸ προσώπου αὐτοῦ, εἰς πᾶσαν πόλιν καὶ τόπον, ἃ ἐμελλεν αὐτὸς εἰσελθεῖν.

2 Εἰλεγεν ἔτι πρὸς αὐτάς· Ὁ μὲν θείσμιος πολὺς,
οἱ δὲ ἐργάται ὀλίγοι· ἀγαθὰτε ἔτι ἢ Κυρίῃ τῇ θει-
σμίῃ, ὅπως σκευάλη ἐργάτας εἰς τὸν θεισμίῃ
αὐτῇ.

3 Ἰπάρχετε· ἰδοὺ, ἐγὼ ἀποστέλλω ὑμᾶς ὡς ἄρνους
ἐν μέσῳ λύκων.

4 Μὴ βασίζετε βαλάντιον, μὴ πῆλμα, μη-
δὲ σποδήματα. Ἐ μὴδὲν κατὰ τὴν ὁδὸν ἀσπ-
σασθε.

5 Εἰς ἣν δ' αὖ οἰκίαν εἰσέρχῃσθε, πρῶτον λέγε-
τε· Εἰρήνῃ τῷ οἴκῳ τήτῳ.

6 Καὶ ἔαυ μὲν ἡ ἐκκ^η ὁ υἱὸς κίρκης, ἐπαμπαύται
τοὶ ἐπ' αὐτὸν ἡ κίρκη ὑμῶν· εἰ δὲ μήγε, ἐφ' ὑμῶν
ἀνακύψει.

7 Ἐν αὐτῇ δὲ τῇ οἰκίᾳ μένετε, ἐσθίωντες καὶ
πίνοντες τα παρ' αὐτῶν. ὅτις ὁ ἐργάτης τῇ μι-
σθῇ αὐτῇ ἐστί. Μὴ μεταβάλλετε ἐκ οἰκίας εἰς οἰ-
κίαν.

8 Καὶ εἰς ἣν δ' ἀπὸ πόλιν εἰσέρχησθε, καὶ δέχονται
ὑμᾶς, ἐσθίετε τὰ ὁσδήποτε βρῆμα ὑμῶν.

9 Καὶ θεραπεύετε τοὺς ἐν αὐτῇ ἀσθενεῖς, ἵνα
 γένηται αὐτοῖς· Ἡ γυνὴ ἐφ' ἡμᾶς ἡ βασιλεῖα τῆς
 Θεῆς.

10 Εἰς ἣν δ' αὖ πόλιν εἰσέρχασθε, ἵνα μὴ δέχωνται ὑμᾶς, ὑξεληθόντες ὡς τὰς πλατείαις αὐτῆς, ἐκπατεῖ.

ἐνέκρη δυνεκτότερον ἔσαι, ἢ τῇ πόλει ἐκείνῃ.

13 Οὐαί σοι Χοραζίν, καὶ σοι Βηθσαϊδά· ὅτι εἰ ἐν Τύρῳ ἔτι Σιδῶνι ἐγένοντο αἱ δυνάμεις αἱ γυνόμεναι ἐν ὑμῖν, πόλαι ἂν ἦν σάκεα ἔτι σποδῶ καθήμεναι μετενοήσαν.

14 Πάλιν Τύρῳ ἔτι Σιδῶνι δυνεκτότερον ἔσαι ἢ τῇ κρίσει, ἢ ὑμῖν.

15 Καὶ σὺ Καπερναὺμ ἡ ἕως τῆ ἑρῆμῃ ὑψωθῆσαι, ἕως αὐτῆς καταβιβασθῆσαι.

16 Ὁ ἀκούων σου, ἡμῶν ἀκούει· ἔδ' ἀδειτῶ ὑμᾶς, ἐμὶ ἀδειτῶ· ὃς ὅ ἐμὶ ἀδειτῶ, ἀδειτῶ τὸ ἀποσταλῆναι με.

17 Ὑπερεψάτω ὁ οἶς ἐβδόμηκεται μὲν χιρᾶς, λέγοντες· Κύριε, καὶ τὰ δαιμόνια ὑποτάσσεται ἡμῖν ἐν τῷ ὀνόματί σου.

18 Εἴπε ὁ αὐτοῖς· Ἐξείρων τὸ σατὰν ἂν, ὡς αἶτρα πῶν, ὅκα τὸ ἑρῆμῳ πεσύντα.

19 Ἰδὼν, δίδωμι ὑμῖν τὴν ἰσχύον τοῦ πνεύματος ἐπὶ τῶν ὄφρων ἔτι σκορπίων, ἔτι ὅτι πᾶσαν τὴν δύναμιν τὴν ἐχθρῶν καὶ ὅθεν ἡμᾶς ἡ μὴ ἀδικῆσαι.

20 Πάλιν ἐν τούτῳ μὴ χαίρετε, ὅτι τὰ πνεύματα ὑμῖν ὑποτάσσεται· χαίρετε δὲ μᾶλλον ὅτι τὰ ὀνόματα ὑμῶν ἐχάθη ἐν τοῖς κελυσσίν.

21 Ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἀγαλλιάσατο τῷ πνεύματι ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν· Ἐξομολογῆμαί σοι Πάτερ, Κύριε τῆ ἑρῆμῃ καὶ τῇ γῆς, ὅτι ἀπέκρυψας ταῦτα ἀπὸ σοφῶν, καὶ συνετίς, καὶ ἀπεκάλυψας αὐτὰ ἡλίσις· καὶ ὁ Πατήρ, ὅτι ὅταν ἐγένετο δίδοκία ἐμπροσθέν σου.

22 Πᾶντα παρεδόθη μοι ὑπὸ τῷ Πατρὸς μου· ἔτι οὐκ οἶσιν οἱ υἱοὶ, εἰ μὴ ὁ Πατήρ, ἔτι οἱ υἱοὶ, εἰ μὴ ὁ Πατήρ, εἰ μὴ ὁ υἱός, ἔτι ὁ υἱὸς βουληταὶ ὁ υἱὸς ἀποκαλύψαι.

23 Καὶ γραφεὶς πρὸς τῆς μυθίας, κατ' ἰδίαν εἶπε· Μακάριοι οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ βλέποντες ἃ βλέπετε.

24 Λέγει γὰρ ὑμῖν, ὅτι πολλοὶ προφῆται ἔτι βασιλεῖς ἠθέλησαν ἰδεῖν ἃ ὑμεῖς βλέπετε, ἔτι ἂν εἶδον· ἔτι ἀκούσαι ἢ ἀκούετε, ἔτι ἂν ἤκουσαν.

25 Καὶ ἰδὼν, νόμικὸς τις ἀνίστη, ἐπιτεράζων αὐτὸν, καὶ λέγων· Διδάσκαλε, τί ποιήσας ζῶν αἰώνιος κληρονομήσω;

26 Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτόν· Ἐν τῷ νόμῳ τί γέγραπται; πῶς ἀντιτάξαι;

27 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς, εἶπεν· Ἀγαπήσεις Κύριον τὸ Θεόν σου ὅλην τῇ καρδίᾳ σου, καὶ ὅλην τὴν ψυχὴν σου, ἔτι ὅλην τῇ ἰσχύϊ σου, ἔτι ὅλην τῇ διανοίᾳ σου· ἔτι πλησίον σου ὡς σεαυτὸν.

18 Εἶπε δὲ αὐτῷ· Ὁρῶς ἀπεκριθῆς· τῷτ' ποίει
 ἔτι.

19 Ὁ δὲ θέλων δικαιῶν ἑαυτῷ, εἶπε πρὸς τὸν Ἰησοῦν·
 Καὶ τίς ἐστὶ μὴ πλῆσιός;

30 Ὁ πολυβών δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἀνθρωπὸς τις
 κατέβηκεν ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ εἰς Ἱερικὴν, καὶ ληστὰς
 παρεπιέσεν, οἱ δὲ ἐκδύσαντες αὐτῷ, ἔπληγαν
 ὑποθνήσκοντες· ἀπῆλθεν, ἀφέτετε ἡμῖν ἀνὴρ τυγχάνωντα.

31 Κατὰ συγχυρίαν δὲ ἰδοὺς τις κατέβηκεν
 ἐν τῇ ὁδῷ σκαιῇ· ἔιδων αὐτὸν, ἀντίπαρῃλθεν.

32 Ὁ μοίαις δὲ ἔλκοντος, ῥυθμῆρος καὶ τὸ πόπον
 ἐλθὼν ἔιδων, ἀντίπαρῃλθε.

33 Σαμαρείτης δὲ τις ὁδῶν, ἦλθε κατ' αὐτῷ, καὶ
 ἰδὼν αὐτῷ, ἐπαλαγχνίσθη.

34 Καὶ προσελθὼν κατέδρασε τὰ τραύματα αὐτοῦ
 ἐπιχέων ἔλαιον ἔλαιον· ὑπεβίβασας δὲ αὐτῷ ὑπὲρ τοῦ
 ἰδίου κτήνος, ἤγαγεν αὐτῷ εἰς πόρδοχαίον, ἔπεμψε
 λήθον αὐτοῦ.

35 Καὶ ὑπὲρ τῶν αὐριον ἤελθων, ἐκβαλὼν δύο δυνάμεις
 εἰς ὁδοὺς τῶν πόρδοχαί, ἔειπεν αὐτῷ· Ἐπιμελήθητι
 αὐτοῦ, ἔσθ' ἂν ἀντιπροσδοκῆς, ἐγὼ δὲ ἐν τῷ ἐπαρῆρξαι
 σθαί με, ἀποδώσω σοι.

36 Τίς ἦν τῶν τῶν τριῶν δοκεῖ σοι πλῆσιόν γε
 γινέσθαι τῷ ἐμπετόντος εἰς τῆς λησείας;

37 Ὁ δὲ εἶπεν· Ὁ ποιήσας τὸ ἔλεος μετ' αὐτοῦ.
 Εἶπεν ἡν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Παροῦν, καὶ σὺ ποίει ὁμοίως.

38 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ κορῶεσθαι οὕτως, καὶ αὐτὴ
 ἀνῆλθεν εἰς κόμην τινα· γυνὴ δὲ τις ὀνόματι Μάρθα
 ἐπεδέξατο αὐτῷ εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς.

39 Καὶ τῇδε ἦν ἀδελφὴ καλεμένη Μαρία, ἡ ἑλπίς
 πρὸς τὸν Ἰησοῦν, ἥτις ποῦσας τὸν Ἰησοῦν, ἔθηκε τὸν
 ἰόν αὐτῷ.

40 Ἡ δὲ Μάρθα παρεπαύσατο πρὸς πολλὰν ἀσπονδίαν
 ὑπὲρ πάντων· εἶπε· Κύριε, καὶ μέλει σοι ὅτι ἡ ἀδελφὴ μου
 μόνον με κατέλιπε ἀσπονδῆν; εἶπε ἡν αὐτῇ ἵνα μὴ
 συνῆμιτι λέγεται.

41 Ἀποκριθεὶς δὲ εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μαρία,
 Μαρία, μεριμνᾷς ἔτι τυρβάζῃ πρὸς πολλὰ· Ἐνός δὲ
 ἐστὶν κρίσις.

42 Μαρία δὲ τῶν ὑπαθῶν μερίδα ἤξελέξατο, ἥτις
 καὶ κωφισθῆσεται αὐτῷ κωτῆς.

Κεφ. ια. ιι.

ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τότε τινὶ προσδύχῳ, ὡς ἐπαύσατο, ἔπε τις τῶν μαθητῶν αὐτοῦ πρὸς αὐτὸν· Κύριε, δάδαξές ἡμᾶς προσευχεσθαι, καθὼς ἡ Ἰωάννης ἐδίδαξε τὰς μαθητάς αὐτοῦ.

2 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ὅταν προσδύχησθε, λέγετε· ΠΑΤΕΡ ἡμῶν ὁ ἐν τοῖς οὐρανοῖς, ἀγιασθήτω τὸ ὄνομά σου· ἔλθέτω ἡ βασιλεία σου· γενήθῃ τὸ θέλημά σου, ὡς ἐν οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῇ γῆς.

3 Τὸν ἄρτον ἡμῶν ἡμεῖς οὐκ ἐσθίον διδὼς ἡμῖν τὸ καθ' ἡμέραν.

4 Καὶ ἄφεες ἡμῖν τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν· καὶ ὅς αὐτὴ ἀφιερωμένη πάντῃ σφαιλῶντι ἡμῖν· καὶ μὴ εἰσενέγκῃς ἡμῶς εἰς πειρασμόν, ἀλλὰ ῥύσαι ἡμᾶς ἀπὸ παντὸς πειρασμοῦ.

5 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὰς· Τίς ἐστὶ υἱὸς ἐξου φίλον, καὶ παύσεται πρὸς αὐτὸν μεσονυκτικῶς, καὶ εἴπῃ αὐτῷ· Φίλε, χρηστὸν μοι τρεῖς ἄρτους.

6 Ἐπειδὴ φίλος μὴ παρεγένετο ὅς ἐδῶ πρὸς με, καὶ οὐκ ἔχει ὁ σὺμαθῆτω αὐτῷ.

7 Κακέως ἐσθίειν ἀποκριθεὶς εἶπεν· Μὴ μοι κήτης παρέχε· ἔσθῃ ἡ θύρα κλεισμένη, καὶ τὰ παῖδιά μὴ μετ' ἐμὲ εἰς τὴν κοίτην εἰσὶν· ἐγὼ δύνάμαι ἀρᾶσαι δυνάμει σου.

8 Λέγου ὑμῖν, καὶ ἐὰν δώσῃ αὐτῷ ἀρᾶσαι, διὰ τὸ εἶναι αὐτοῦ φίλον· διὰ γὰρ τὴν ἀγαθότητα αὐτοῦ ἔχει δῶσαι αὐτῷ ὅσα ἐπαιτεῖ.

9 Καί γε, ὑμῖν λέγει· Αἰτῆτε, καὶ δοθήσεται ὑμῖν· ζητετε, καὶ ὀρήσετε· κρούετε, καὶ ἀνοίγεται ὑμῖν.

10 Πᾶς γὰρ ὁ αἰτῶ λαμβάνει· καὶ ὁ ζητῶ ὀρέσκει· καὶ τὸ κρούοντι ἀνοίγεται.

11 Τίνα δὲ υἱὸς πατέρα αἰτῆσαι ὁ υἱὸς ἄρτον, καὶ λῆθον ὑπαδάσκει αὐτῷ; εἰ καὶ ἰχθύων, καὶ ἀντὶ ἰχθύος ὅστις ὑπαδάσκει αὐτῷ;

12 Ἡ καὶ ἐὰν αἰτήσῃ ὄνον, καὶ ὑπαδάσκει αὐτῷ σκορπίον;

13 Εἰ καὶ ὅτι ὑμεῖς κτηνῶν ὑπάρχοντες, οἴδατε ἀγαθὰ δόματα δίδόναι τοῖς τέκνοις ὑμῶν, πόσῳ μάλλον ὁ Πατήρ ὁ ἐν οὐρανῷ δώσει Πνεῦμα Ἅγιον τοῖς αἰτῶσιν αὐτόν;

14 Καὶ ὅτι ἐκβαλὼν δαίμονιον, καὶ αὐτὸ ἦν κωφόν· ἐγένετο δὲ τῷ δαίμονι ἡ ἐκβαλόμενος, ἐλάλησεν ὁ κωφός· καὶ ἰθαυμάσθη οἱ ὄχλοι.

15 Τινὲς δὲ ἐκ αὐτῶν εἶπον· Εἴς Βεελζεβὺλ ἄρχοντι τῷ

τῶν δαιμονίων ὀκβάλλει τὰ δαιμόνια .

16 Ἐτεροι δὲ πειράζοντες , σημεῖον παρ' αὐτοῦ ἔχοντες κρίνειν .

17 Αὐτοὶ δὲ εἰδὼς αὐτῶν τὰ δειγνόμενα , ἔειπεν αὐτοῖς · Πᾶσα βασιλεία ἐφ' ἑαυτῷ διμερίζεται , καὶ ἡ οἰκὸς ὑπὲρ οἴκου πίπτει .

18 Εἰ δὲ ὁ σατὰρ ἐφ' ἑαυτὸν διμερίζεται , πῶς σαθρήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ ; ὅτι λέγετε , ὅτι Βεελζεβὺλ ὀκβάλλει με τὰ δαιμόνια .

19 Εἰ δὲ ἐγὼ ἐν Βεελζεβὺλ ὀκβάλλω τὰ δαιμόνια , οὗτοι υἱοὶ ὑμῶν ἐν τίνι ὀκβάλλουσιν ; διὰ τὸ τοῦτο κρατοῦντες αὐτοὶ ἔσονται .

20 Εἰ δὲ ἐν δακτύλῳ Θεοῦ ὀκβάλλω τὰ δαιμόνια , ἄρα ἐφθόσεν ἐφ' ὑμᾶς ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ .

21 Ὅταν δὲ ἡ ἰσχυρὸς καθυπελισμένος φυλάσσῃ τὸν ἑαυτοῦ αἰλῶνα , ἐν εἰρήνῃ ἐστὶ τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ .

22 Ἐπὶ δὲ ὁ ἰσχυρότερος αὐτὸν ἐπιλαθὼν νικήσῃ αὐτόν , καὶ τὸ πᾶν ὁπλίῃ αὐτὸν αἶρεν ἐφ' ἧς ἐπεποιθεῖ , καὶ τὸ σκύλα αὐτὸν διφθιδύσειν .

23 Ὅ μὴ οὖν μετ' ἐμῇ , κατ' ἐμῆ ἐστὶ · καὶ ὁ μὲν συνάγων μετ' ἐμῆ , σκορπίζειν .

24 Ὅταν τὸ ἀκαθαρτον πνεῦμα ἐξέλθῃ ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου , διερχεται δι' ἀμύδρων τόπων , ζητῶν ἀνάπαυσιν , καὶ μὴ εὗρισκον , λέγει · Ὑποτρέψω εἰς τὸ οἶκόν μου , καὶ ἐξέλθω .

25 Καὶ ἐλθὼν εὗρισκει σιταρομένον καὶ κεκοσμημένον .

26 Τότε πορεύεται καὶ περιπατεῖ ἐν ταῖς ἐκκλησίαις , καὶ ἐκεῖ πορεύεται ἑλθὼν ἐπὶ αὐτοὺς , καὶ εἰσελθόντα κατοικεῖ ἐκεῖ . καὶ γίνεται τὰ ἔχματα τοῦ ἀνθρώπου ὀκνῶν χάριν τῶν πρώτων .

27 Ἐγένετο δὲ ἐν τῇ λέγειν αὐτὸν ταῦτα , ἐπάκουσαν αὐτὸς τις γυνὴ φωνῶν ὅτι ὁ ὄχλος , εἶπεν αὐτῇ · Μὴ περὶ αὐτῆς ἡ κοιλία ἡ βασύσασά σε , καὶ μεσοὶ ὅς ἐβήλας σε .

28 Αὐτὸς δὲ εἶπε · Μενύγγε μακάριοι οἱ ἀκούοντες τῆς λέξεως τοῦ Θεοῦ , καὶ φυλάσσοντες αὐτήν .

29 Τότε δὲ ὁ ὄχλος ἐπαθροισμένων ἤρξατο λέγειν ἡ γυνὴ αὕτη πόνηρά ἐστι · σημεῖον ὑπὲρ πάντων , καὶ σημεῖον ὃ δοξάζεται αὐτῇ , καὶ μὴ τὸ σημεῖον ἰσχυρῶς προφητῆς .

30 Καθὼς δὲ ἐγίνετο Ἰωάννης σημεῖον τοῖς Νινυῖταις , ἕτως ἔστι καὶ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου τῇ γυναικὶ ταύτῃ .

31 Βασιλεία νῦν ἐγγερθήσεται ἐν τῇ κρίσει καὶ τῶν ἀνδρῶν τῆς γυναικὸς ταύτης , καὶ κατακρινεῖ αὐτὴν ὁ Θεός · ὅτι ἤλθεν ἐκ τῆς περάτων τῆς γῆς ἀκούσαι τῆς σοφίας Σολομῶντος . καὶ ἰδοὺ , πληροὺς Σολομῶντος οὐκ ἔστι .

32 Ἄνδρες Νινυῖ ἀπαθήσονται ἐν τῇ κρίσει μὲν τῆς γενεᾶς ταύτης, καὶ κατακριθῶσιν αὐτήν· ὅτι μετὰ τινος αἰῶνος εἰς τὸ κήρυγμα Ἰωάν· Ἐἰδὼν, πλῆθος Ἰουδαίων.

33 Οὐδὲν δὲ λύχνος ἄψας, εἰς κροτῆτι θητήν, ἡδὲ ὑπὸ τῷ μύθῳ, ἀλλὰ ὅππῃ λύχνος, ἵνα οἱ εἰσπορεύωμεν τὸ φέγγος βλέπωμεν.

34 Ὁ λύχνος τοῦ σώματος ἐστὶν ὁ ὀφθαλμός· ἔσθ' ἢ ὁ ὀφθαλμός σου ἀπλῆς ἦ, καὶ ὅλον τὸ σῶμά σου φωτεινὸν ἐστί· ἔσθ' ἢ ποτηρὸς ἦ, καὶ τὸ σῶμά σου σκοτεινόν.

35 Σκότειν ὢν, μὴ τὸ φῶς τὸ ἐν σοὶ σκότους ἐστί.

36 Εἰ ἂν τὸ σῶμά σου ὅλον φωτεινόν, μὴ ἔχον τι μέρος σκοτεινόν, ἔσθαι φωτεινόν ὅλον, ὡς ὅτ' ἂν ὁ λύχνος τῇ ἀσραπῇ φωτίζη σε.

37 Ἐν τῷ λαλῆσαι, ἡρώτα αὐτὸν φαρισαῖοι τις ὡς ἀκριβέστη παρ' αὐτοῦ· εἰσελθὼν δ' ἀπέκρινεν.

38 Ὁ δὲ φαρισαῖος ἰδὼν ἐθαύμασεν, ὅτι ἡ πρώτη ἐβαπτίσθη πρὸς αἵρεσιν.

39 Εἶπε δ' ὁ Κύριος πρὸς αὐτόν· Νῦν ὑμεῖς οἱ φαρισαῖοι τὸ ἐξώθεν τῇ κοτηρίῳ καὶ τῇ πίνακι καθαρίζετε· τὸ δὲ ἐσωθεν ὑμῶν γέμει ἀρπαγῆς καὶ πονηρίας.

40 Ἀφρονες, ἔχ' ὁ ποιήσας τὸ ἐξώθεν, καὶ τὸ ἐσωθεν ἐποίησεν;

41 Πλὴν τὰ ἐνόντα ὅτε ἐλεημοσύνην· καὶ ἰδὼν, πρῶτα καθαρά ὑμῖν ἐσιν.

42 Ἀλλ' ἡμεῖς ὑμῖν τοῖς φαρισαῖοις, ὅτι ἀποδεκατῆτε τὸ ἐξέουσμα καὶ τὸ πηλῶρον καὶ πλῶν λάχλων, καὶ παρέρχεσθε τῶν κρίσιν καὶ τῶν ἀγαπῶν τῇ Θεῷ· ταῦτα ἰδοὺ ποιῆσαι, κακίαν μὴ ἀφιέται.

43 Οὐκ ἔστι ὑμῖν τοῖς φαρισαῖοις, ὅτι ἀγαπᾶτε τῶν πρωτοκθεδρίων ἐν ταῖς συναγωγαῖς, καὶ τῆς ἀσπασμῆς ἐν ταῖς ἀγοραῖς.

44 Οὐκ ἔστι ὑμῖν γραμματεῖς καὶ φαρισαῖοι ὑποκριταί, ὅτι ἐγὼ ὡς τὰ μνημεῖα τὰ ἀθάλα, καὶ οἱ ἀνθρώποι οὐ βλέποντες ἐπ' αὐτῶν οὐκ οἶδασιν.

45 Ἀποκριθεὶς δὲ τις τῶν νομικῶν, λέγων αὐτοῦ· Διδασκαλε, ταῦτα λέγων καὶ ἡμᾶς ὑβρίζεις.

46 Ὁ δὲ εἶπε· Καὶ ὑμῖν τοῖς νομικοῖς καὶ, ὅτι φορτίζετε τῆς ἀνθρώπου φορτίαν δυσβάστακτον, καὶ ἀσπίδι ἐν τῷ δακτύλῳ ὑμῶν προσψαύετε τοῖς φροτίοις.

47 Οὐκ ἔστι ὑμῖν, ὅτι οἰκοδομεῖτε τὰ μνημεῖα τοῦ προφήτου, οἱ δὲ πατέρες ὑμῶν ἀπεκτείναν αὐτούς.

48 Ἄρα μαρτυρεῖτε καὶ συνδουλοῦναι τοῖς ἔργοις τοῦ

τῷ πατρὶν ἡμῶν· ὅτι αὐτοὶ μὲν ἀπεκτείον αὐτὸς
ἡμῶς δὲ οἰκονομεῖτε αὐτῷ τὰ κληροῦα.

49 Διὰ τὴντο ἔστι σοφία π θεῶ ἐπεὶ Ἀποσελῶ
εἰς αὐτὴν προφήτας, ἔ ἀποσέλεις, ἔ ἔξ αὐτῶ ἀποκτε-
νῶσι ἔ ὁποῖα ἔστιν.

50 ἡ δὲ ἐκζητᾷ τὸ ἅμην πάντων τῷ πατρὶ, τὸ ἐκκινᾷ ἀπὸ καταβολῆς κόσμου, ἀπὸ τῆς γενέσεως ταύτης.

51 Ἀπὸ τῶν αἱμάτων Ἀβὶλ γὰρ τῶν αἱμάτων Ζυγ-
εῖν, τῶν ἀπολομένων μεταξὺ τῶν θυσιαστηρίων ἐπὶ οὐρανῷ·
καὶ λέγει ἡμῖν, ἐκζητηθήσεται ἀπὸ τῆ γειτίας
ταύτης.

52 Οὐκ ὁμῶς τοῖς νομικοῖς, ὅτι ἤρατε πλὴν κλη-
δα τῆς γραφῆς· αὐτοὶ ἔκ ἐσθήλαθε, ἐπὶ τῆς ἐπιτε-
λεῖας ἐκβαλόμενοι.

53 Λέγοντες δὲ αὐτῷ ταῦτα πρὸς αὐτὴν, ἤρξαντο οἱ γραμματεῖς ἔτι οἱ φαρισαῖοι δευτέρως συνέχευεν, ἔτι ἀποδοματίζον αὐτὴν πλεόντων.

54. Ἐνεδροῦντες αὐτὸν, ὁ ζητῶντες διαρῆσαι
 τὸν σὺν τῷ σώματι αὐτοῦ, ἵνα καταργήσῃ
 αὐτοῦ.

К.Ф. 1 β. 12.

ΕΝ ΟΙΣ ΥΠΟΝΗΧΗΘΕΤΩΝ Τῆς ΜΟΥΣΗΣ ὁ
 ἄλλος, ὥς καταπατεῖν ἀλλήλους, ἤρξατο λέ-
 γειν πρὸς τῆς ΜΟΥΣΗΣ ἀπ' ἑ. Πρῶτον προτεχετε ἑαυ-
 τοὺς ἀπὸ τῆς ζύμης τῆς Φαρισαίων, ὥτις ἐστὶν ὑπο-
 κρίσις.

2 Οὐδὲν δὲ συγκεκαλιμμένον ἐστίν, ὃ ἔκ ἀποκα-
λυφθήσεται, ἢ κρυπτόν, ὃ ἔγνωθήσεται.

3 Αὐτὸ δὲ ὅσα ἐν τῇ σοφίᾳ ἔχετε, ἐν τῷ φαι-
νεύθῃτε· ὁ πρὸς τὸ εὖ ἀλλήλας ἐν τοῖς τα-
μείοις, κηρυχθήτεται ὑπὲρ τῶν δομάτων.

4 Λέγει δὲ ὑμῖν τοῖς φίλοις μὴ. Μὴ φοβηθῆται ὑ-
πο τῶν ἀποκτεινόντων τὸ σῶμα, ὅτι μὲν ταῦτα μὴ ἐ-
χούτων ~~παρα~~βελότερον ποιήσῃ.

5 ὁ τοῦ αἵματος δὲ ὑμῶν τίνα φοβήθητε· φοβήθητε
τὸν μὲν τὸ ἀποκτείνει, ψῆφισίν μ' ἔχοντα ἐμβα-
λῶν εἰς τὴν γέενναν· ἐγὼ λέγω ὑμῖν, τὸν τοῦ φο-
βήθητε.

6 Οὐχὶ πάντε σπονδία παλαῖται καταρίων δύο,
ἐ ἐν τῇ αὐτῇ ἐκ ἑσιν ὑπελοισμένον ἐνώπιον τῆ
Θεῆ.

7 Ἀλλὰ καὶ αἱ τρεῖς ἐκφυγόντες ὑμῶν πάντες ἐρί-
διωται· μὴ ἢν φοβῆσθε· πολλὰν σπευδίαν ἔχ-
ετε.

8 λέγω δὲ ὑμῖν· Πᾶς ὃς ἀρ^α ὁμολογήσῃ ὅτι ἐμοὶ
ἐστίν·

ἔμπροσθεν τῷ ἀνθρώπῳ, ὃς ὁ τῶν ἁγίων ἀνθρώπων ὁμολογήσει ἐν αὐτῇ ἔμπροσθεν τῷ ἀγγέλῳ καὶ τοῖς ἁγίοις.

9 Ὁ δὲ ἀκησάμενός με ἐν αὐτῇ τῷ ἀνθρώπῳ, ἀπαρνηθήσεται ἐμπροσθεν τῷ ἀγγέλῳ τοῦ Θεοῦ.

10 Καὶ πᾶς ὃς ἐρεῖ λόγον εἰς τὸν ἄνθρωπον, ἀφεθήσεται αὐτῷ· τὸ δὲ εἰς τὸ Ἅγιον Πνεῦμα βλασφημήσῃ, οὐκ ἀφεθήσεται.

11 Ὅταν δὲ προσφέρωσιν ὑμῖς ὅππῃ τὰς συναγωγὰς καὶ τὰς ἐκκλησίας, καὶ τὰς ἐκκλησίας, μὴ μεριμνᾶτε πῶς ἢ τί ἀπολογησῃτε, ἢ τί ἔσται.

12 Τὰ τοῦ ἁγίου Πνεύματος διδάσκει ὑμᾶς ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, ἃ δὲ ἔσται.

13 Εἶπε δὲ τις αὐτῷ ἐν τῷ ὄχλῳ· Διδάσκαλε, καὶ ἐν τῷ ἀδελφῷ μὴ μερίσασθαι μετ' ἐμῶν τὸν κληρονομίῳ.

14 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ἄνθρωπε, τίς με κατέστη δικαστὴν ἢ μεριστὴν ἐφ' ὑμῶν;

15 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν· Ὁρᾶτε ὅτι φυλάσσεσθε ἀπὸ τῆς πλυνεῖας· ὅτι οὐκ ἐν τῷ πῶντι τινὶ ἢ ζῶντι αὐτῶν ἐστὶν ἐν τῷ πατρὶ καὶ τῷ υἱῷ.

16 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν, λέγων· Ἄνθρωπε, τινὸς πλυνεῖα ἀφάρτηται ἢ χώρα;

17 Καὶ διελογίζεσθαι ἐν αὐτῷ, λέγων· Τί ποιήσω; ὅτι οὐκ ἔχω πῶς συναῖμι τὴν καρπὸν μου;

18 Καὶ εἶπε· Τὴν ποιήσω. Καθελὼ με τὰς ἀποθήκας, καὶ μείζονας οἰκοδομήσω· καὶ συναῖμι ὅλην τὴν γῆν καὶ τὰ ὕδατα.

19 Καὶ ἐρεῖ τῇ ψυχῇ μου· Ψυχὴ, ἔχεις πολλὰ ἀγαθὰ κείμενα εἰς ἔτη πολλά· ἀμάρτυρ, φάγε, πίε, ἀφάρτη.

20 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Θεός· Ἄφρων, ταῦτα τῇ συνειδήσει σου ψυχῇ σου ἀπειτυῶσιν ἀπὸ σοῦ· ἃ δὲ ἡτοίμασας, τίτι ἔσται;

21 Οὗτοι δὲ θησαυρίζον ἐν αὐτῷ, καὶ μὴ εἰς Θεόν.

22 Εἶπε δὲ πρὸς τὴν μαθητὴν αὐτῇ· Διὰ ταῦτα ὑμῖν λέγω, μὴ μεριμνᾶτε τῇ ψυχῇ ὑμῶν, τί φάγετε, μηδὲ τί σκευάζετε, τί ἐνδύσεσθε.

23 Ἡ ψυχὴ πλείον ἐστὶ τῆς τροφῆς, καὶ τὸ σῶμα τῆς ἐσθυρίας.

24 Καταμνησάσθε τὰς κόρας, ὅτι ἡ σπεῖρσεν, καὶ ἡ θερίσκει· οἷς οὐκ ἐστὶ τριβῶν, καὶ οὐκ ἀποθήκη, καὶ ὁ Θεὸς τρέφει αὐτάς· πόσῳ πολλὸν ὑμῖς ἀφαιρετε τῷ πετεινῷ.

25 Τίς δὲ ὑμῶν μεριμνᾷ δύναται προσθεῖναι ὑπὲρ τῶν ἡλικιῶν αὐτοῦ τὰ χυρῆστα;

26 Εἰ ὅτι ἡτε ἐλάχιστον εὐκασθε, τί φεῖ τῷ ἁγίῳ μεριμνᾶτε;

27 Καταδοξάτε τὰ κρίνα, πῶς αὐξάνει· ἡ κοτίς αὐτῶν ἡ γῆ· λέγει δὲ ὑμῖν, εἰς Σολομών ἐν τῇ τῇ δόξῃ αὐτῇ περικυβάλεται ὡς ἐν τούτοις.

28 Εἰ δὲ τὸ κρίνον ἐν τῇ ἀρχῇ σήμερον ὄντι, καὶ αὐτοὶ οὐκ ἐκείθεν βαλλομένοι, ὁ Θεὸς ἕως ἂν ἀμφιερύτοι, πόσω μᾶλλον ὑμεῖς, ὀλιγόπιστοι;

29 Καὶ ὑμεῖς μὴ ζητᾶτε τί φάγητε, ἢ τί πίνητε, καὶ μὴ μετρωρίζεσθε.

30 Ταῦτα γὰρ πάντα τὰ ἔθνη, καὶ τὸ Κόσμον ὑπελάμβανεν· ὑμεῖς ὅμως ὁ πατὴρ οἶδεν ὅτι χρῆζετε τούτων.

31 Πάλιν ζητᾶτε τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, καὶ ταῦτα πάντα προσεισθῆσθαι ὑμῖν.

32 Μὴ φοβῆ τὸ μικρὸν ποίμνιον· ὅτι αὐδέκησιν ὁ πατὴρ ὑμῶν θῆναι ὑμῖν τὴν βασιλείαν.

33 Πωλήσατε τὰ ὑπάρχοντα ὑμῶν, καὶ δότε ἐλεημοσύνην. Ποιήσατε ἑωυτοῖς βαλάντια μὴ παλαιόμνη, θησαυροὺς ἀφίκελτον ἐν τοῖς οὐρανοῖς· ὅπου κλέπτει οὐκ ἐγγίζει, καὶ οὐκ ἐκείθεν ἀφαιρείται.

34 Ὅτι οὗτοι γὰρ εἰσιν οἱ θησαυροὶ ὑμῶν, οὐκ ἔστι καὶ ἡ καρδία ὑμῶν ἐκεῖ.

35 Ἐν τούτῳ ὑμῶν αἱ ὁσφύες περιζωσμέναι, καὶ οἱ λύχθοι καθαυροί.

36 Καὶ ὑμεῖς ὅμοιοι ἀνθρώποις προσδεχομένοις τὸν Κύριον ἑωυτῶν, τότε ἀπαλῦσαι ἐκ τῶν γαμῶν· ἵνα ἐλθόντος καὶ κρυπτόντος, αὐθιγὸς ἀνδρῶν αὐτῶν.

37 Μακάριοι οἱ δούλοι οὐκ αἰνοῦντες, ὡς ἐλθὼν ὁ Κύριος ἀρήσει γεγυρόντας· ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι περιζωσθήσονται, καὶ ἀνγκλινη αὐτοὺς, καὶ παρελθὼν ἀφικονήσονται αὐτοῖς.

38 Καὶ ἐλθὼν ἐλθὼν ἐν τῇ δευτέρᾳ φυλακῇ, καὶ ἐν τῇ τρίτῃ φυλακῇ ἐλθὼν, καὶ ἀρῇ ἡτοῦ, μακάριοι οἱ σὺν οἱ δούλοι οὐκ αἰνοῦντες.

39 Τῷτο δὲ γινώσκετε, ὅτι εἰ ἤδη ὁ οἰκοδεσπότης τοῦ οἴκου ὡρᾷ ὁ κλέπτης ἐρχεται, ἐκγεγυρόσιν αὐτῷ, καὶ ἐκ αὐτοῦ ἀφῆκε διорυγῆσαι τὸν οἶκον αὐτοῦ.

40 Καὶ ὑμεῖς ὅταν γίνεσθε ἑτοιμοί· ὅτι ἡ ὥρα ἡ δοκεῖται, ὁ Κύριος καὶ ἀνθρώπων ἐρχεται.

41 Εἴπα ὅμως ὁ Πέτρος· Κύριε, πρὸς ἡμᾶς καὶ πρὸς τοὺς ἀδελφούς ταύτους λέγε, ἢ ἐπὶ πρὸς πάντας;

42 Εἶπε ὁ Κύριος· Τίς ἄρα ἐστὶν ὁ πιστὸς οἰκονόμος καὶ φρόνιμος, ὃν καταθήσει ὁ κύριος ἐπὶ τῆς θειότητος αὐτοῦ, καὶ δίδόναι ἐν καιρῷ τὸ σιτομέτριον;

43 Μακάριος ὁ δούλος οὐκ αἰνοῦντος, ὃν ἐλθὼν ὁ κύριος αὐτὸς ἀρήσει παῖντα ἡτοῦς.

44 Ἀλλ' ὡς λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ πᾶσι τοῖς ἀνθρώποις αὐτὸς καταθήσει αὐτοῖς.

43 Ἐὰν δὲ εἴπῃ ὁ δούλος ὁ αἰνὸς ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ·
Χρονίζω ὁ κύριός μου ἔρχεσθαι· ἔαρεται τύπτειν
τῆς παιδὸς ἡ τῶν παιδίσκας, ἐσθίειν τε ἔτι πίνειν καὶ
μεθύσκεσθαι.

46 Ἡ δὲ ὁ κύριος ἔτι δόλῃ ἐκείνῃ ἐν ἡμέρᾳ ἣ ἢ
προσδοκᾷ, ἔτι ἐν ὥρᾳ ἣ ἢ γινώσκει· ἔτι διχοτομῶ-
σιν αὐτὸν, ἔτι τὸ μέρος αὐτοῦ μὴ τῷ ἀτίτῳ
θήσεται.

47 Ἐκείνους δὲ ὁ δούλος ὁ γνῶς τὸ θέλημα τοῦ κυρίου
ἐαυτοῦ, καὶ μὴ ἐπιμάσας, μηδὲ ποιήσας πρὸς τὸ θέ-
λημα αὐτοῦ, θαυμάσεται πολλὰς.

48 Ὁ δὲ μὴ γνῶς, ποιήσας δὲ ἄξια πληγῶν, θαυμά-
σεται ὀλίγας· πάντῃ δὲ ὡς ἐδόθη πολὺ, πολὺ ζητηθή-
σεται παρ' αὐτοῦ· καὶ ὡς παρέθεντο πολὺ, περισσότερον
αἰτήσονται αὐτόν.

49 Πῦρ ἤλθον βαλεῖν εἰς τὴν γῆν, ἔτι τί θέλω εἰ ἤδη
ἀρῇθῃ;

50 Βάπτισμα δὲ ἔχω βαπτισθῆναι, ἔτι πῶς συνέ-
χεμαι ἕως ἢ τελειωθῇ;

51 Δοκεῖτε ὅτι εἰρήνῃ παρελθόμενῳ δεῖναι ἐν τῇ γῇ·
οὐκ ἔτι, λέγω ὑμῖν, ἀλλ' ἡ διαμερισμὸν.

52 Ἔσονται γὰρ ἀπὸ τοῦ νῦν πέντε ἐν οἴκῳ ἐνὶ
διαμερισμένῳ, τρεῖς ὑπὲρ δύο καὶ δύο ὑπὲρ
τρεῖς.

53 Διαμερισθήσεται πατὴρ ἐφ' οὐδὲν, ἔτι υἱὸς ὑπὲρ
πατέρα, μήτηρ ὑπὲρ θυγατρί, καὶ θυγάτηρ ὑπὲρ μητρί,
πενθερά ὑπὲρ τῷ νόμφῳ αὐτῆς, ἔτι νόμφη ὑπὲρ τῷ
πενθερᾷ αὐτῆς.

54 Ἐλέγε δὲ ἔτι τοῖς ὄχλοις· Ὅταν ἴδῃτε τὴν νε-
φέλῃν ἀνατίλλουσαν ἀπὸ δυσμῶν, εὐθὺς λέγεται·
Ὁμβρος ἔρχεται· ἔτι γίνεται ἕτω.

55 Καὶ ὅταν νότον πνέοντα, λέγεται· Ὁπὶ καύσων
ἔσται, ἔτι γίνεται.

56 Ὑποκριταί, τὸ πρόσωπον τῆς γῆς ἔτι ἡράμην
εἶδате δοκιμάζειν· ἔτι δὲ καιρὸν τούτου πῶς ἢ δοκιμά-
ζετε;

57 Τί δὲ ἔτι ἐαυτοῦ ἢ κρίνετε τὸ δίκαιον;

58 Ὡς γὰρ ὑπαγοίη μὴ τοῦ ἀντιδίκου σε ἐπ' ἀρχον-
τα, ἐν τῇ ὁδῷ δὸς ἐργασίᾳ ἀπληλῆλῃ ἀπ' αὐτοῦ,
μήποτε κατασύρῃ σε πρὸς τὸ κριτῶν, ἔτι ὁ κριτὴς σε
ὑποκαταστήσει πρὸς τὸν πράκτορα, ἔτι ὁ πράκτωρ σε βάλλῃ εἰς φυ-
λακὴν.

59 Λέγω σοι, ἢ μὴ θέλῃς ἐκκεῖθεν ἕως ἢ κατὰ τὸ
ἐγκατον λεπτὸν ἀπὸ τοῦ.

Κεφ. 13. 13.

Π Ἀρῆσαν δὲ τινες ἐκ αὐτῶ τῷ καιρῷ ἀπαγ-
 γέλλοντες αὐτῷ πρὸς τὴν Γαλιλαίαν,
 ὡν τὰ ὄνομα Πιλάτος ἐμίξε μὲ τῷ θυσιῶν
 αὐτῶν.

2 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς· Δοκεῖ-
 τε ὅτι οἱ Γαλιλαῖοι ἡτοὶ ἀμωρτωλοὶ πρὸς πλῆ-
 τας τῶν Γαλιλαίων ἐγένοντο, ὅτι τοιαῦτα πέπον-
 θασιν;

3 Οὐχὶ, λέγω ὑμῖν· ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοῇτε,
 πάντες ὁμοίως ἀποκείσθε.

4 Ἡ ἐκείνοι οἱ δέκα ἔστω, ἰφ' ἧς ἔπεσεν ὁ
 πύργος ἐν τῇ Σιλωάμ, ἡ ἀπέκτεινεν αὐτῆς, δοκεῖτε
 ὅτι ἔτοι οὐκ ἐμμένει ἐγένοντο παρὰ πάντας ἀμωρτω-
 τῆς κατωκύντας ἐν Ἱερουσαλὴμ;

5 Οὐχὶ, λέγω ὑμῖν· ἀλλ' ἐὰν μὴ μετανοῇτε,
 πάντες ὁμοίως ἀποκείσθε.

6 Ἐλεγε δὲ ταύτῃ τῷ παραβολῇ· Συκὴν εἶχε
 τις ἐν τῷ ἀμπελῶνι αὐτῷ πεφυτούμενην· καὶ ἦλθε καρ-
 πὸν ζητῶν ἐν αὐτῇ, καὶ οὐκ εὗρεν.

7 Ἐπεὶ δὲ πρὸς τὸ ἀμπελουργόν· Ἰδοὺ, τρεῖς ἔτη ἐρ-
 χουμαι ζητῶν καρπὸν ἐν τῇ συκῇ ταύτῃ, καὶ οὐκ
 εὗρίσκω· ἐκκαψαὶ αὐτήν· ἵνα τί ἔστι τῷ γῆν κα-
 ταργῇ;

8 Οἱ δὲ ἀποκριθεὶς λέγει αὐτῷ· Κύριε, ἄφες αὐ-
 τῷ ἔτι τὸ ἔτος, ἕως ὅτε σκάψω πρὸς αὐτῷ,
 ἡ βάλω κοπρίαν.

9 Καὶ μὲν ποιήσῃ καρπὸν· εἰ δὲ μήγε, εἰς τὸ
 μέλλο ἐκκόψῃς αὐτήν.

10 Ἦν δὲ διδάσκων ἐν μίᾳ τῇ συναγωγῇ ἐν τοῖς
 σάββασι.

11 Καὶ ἰδοὺ, γυνὴ ἣν πνεῦμα ἔχουσα ἀσθενείας ἔ-
 τη δέκα καὶ ὀκτὼ· καὶ ἦν συγκύπτουσα, καὶ μὴ δυναμένη
 ἀμικρῶσαι εἰς τὸ πᾶντελες.

12 Ἰδὼν δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, προσιφώνησε, ἡ εἶπεν
 αὐτῇ· Γυναίκα, ἀπολείψας τὸ ἀσθενεῖας σου.

13 Καὶ ἐπέθηκεν αὐτῇ τὰς χεῖρας· καὶ παραχρῆμα
 ἀμωρτώθη, καὶ ἐδόξαζε τὸ Θεόν.

14 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἀρχισυνάγωγος, ἀγανακτῶν,
 ὅτι τῷ σαββάτῳ ἐδιδράσκεν ὁ Ἰησοῦς, λέγει τῷ ὄ-
 χλῳ· Ἐξ ἡμερῶν εἰσὶν ἐν αἷς δὲ ἐργάζεσθαι· ἐν
 ταύταις ἢν ἐρχόμενοι θεραπεύεσθε, καὶ μὴ τῇ ἡμέρᾳ
 τοῦ σαββάτου.

15 Ἀπεκρίθη ἢν αὐτῷ ὁ Κύριος, καὶ εἶπεν· Ὑποκει-
 τὰ, ἕκαστος ὑμῶν τῷ σαββάτῳ ἢ κύει τὸν βίον αὐ-
 τοῦ καὶ τὸν ἀνέν ἀπὸ τῆς φάτης, καὶ ἀπαγαγὼν πο-
 τίει.

16 Ταῦτῳ δὲ θυγατέρα Ἀβραάμ ἦν, ἣν ἔδωκεν ὁ πατὴρ αὐτῆς ἰδὼν δέκα καὶ ὀκτὼ ἔτη, καὶ ἔδει λυθῆναι ἀπὸ τοῦ δεσμοῦ ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ τῇ Σαββάτῃ·

17 Καὶ ταῦτα λέγοντος αὐτῇ, κατηχύνοντο πάντες οἱ ἀντικείμενοι αὐτῇ· καὶ πᾶς ὁ ὄχλος ἔχαιρεν ὑπὸ πᾶσι τοῖς ἐνδοξαίοις τοῖς γινομένοις ἐπ' αὐτῇ·

18 Ἐλέγε δέ· Τίνι ὁμοία ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ; Ὡς τίνι ὁμοιωτὰ αὐτήν;

19 Ὅμοία ἐστὶ νόκῳ σιγάτῳ, ὃν λαβὼν ἀνδραποὺς ἔβαλεν εἰς κηπὸν εἰωπῆ· ὧς ἤμεινε, καὶ ἐγένετο εἰς δένδρον μέγα, ὧς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατεσκήνωσαν ἐν τοῖς κλαδοῖς αὐτοῦ·

20 Καὶ πάλιν εἶπε· Τίνι ὁμοιωσώ τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ;

21 Ὅμοία ἐστὶ ζύμῃ, ἣν λαβὼσα γυνὴ ἐπέκρουεν εἰς αἰλῶρα πάντα τρία, ἕως ὅτε ἐζυμώθη ὅλον·

22 Καὶ διαπορεύετο καὶ πόλεις καὶ κόμας διδάσκων, καὶ πορεύει πορεύμενος εἰς Ἱερουσαλὴμ·

23 Εἶπε δέ τις αὐτῷ· Κύριε, εἰ ἐλίθοι οἱ σελόμενοι; Ὁ δὲ εἶπε πρὸς αὐτὸν·

24 Ἀγαπήσειςτε εἰτελεθεῖν ἄλφ' ἢ σενῆς πύλης· ὅτι πολλοὶ λέγω ὑμῖν, ζητήσασιν εἰσελθεῖν, καὶ οὐκ ἰσχύουσιν·

25 Ἀφ' ἧς ἀν' ἐμερθεῖ ὁ οἰκοδομητής, καὶ ἀποκαίσει τὴν θύραν, καὶ ἀρῆσθε ἐξοῖς ἔσθαι, καὶ κρήνην τῇ θύρᾳ, λέγοντες· Κύριε, Κύριε, ἀνοίξον ἡμῖν· καὶ ἀποκριθεὶς ἐρεῖ ἡμῖν, καὶ οἶδα ὑμᾶς πόθεν εἶτε·

26 Τότε ἀρῆσθε λέγειν· Ἐφύγεμεν διώπτευσεν, καὶ ἐτίσαμεν, καὶ ἐν ταῖς πλατείαις ἡμῶν ἐδάδαξας·

27 Καὶ ἐρεῖ· Λέγω ὑμῖν, καὶ οἶδα ὑμᾶς πόθεν εἶτε· ἀποστῆτε ἀπὸ ἐμῆ πάντες οἱ ἐργάται τῆς ἀδικίας·

28 Ἐκεῖ ἔσται ὁ κλωθμὸς καὶ ὁ βρυγμὸς τοῦ ὀδόντων, ὅταν ὀψῇσθε Ἀβραάμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακώβ, καὶ πάντας τὴς προφῆτας ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ, ὑμεῖς δὲ ἐκβαλλομένοις ἐξω·

29 Καὶ ἔξουσιν ἀπὸ ἀνατολῶν καὶ δυσμῶν, καὶ ἀπὸ βορρᾶ καὶ νότου· καὶ ἀνακληθήσονται ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ·

30 Καὶ ἰδὼν, εἰσὶν ἔχοντες οἱ ἔσονται πρῶτοι, καὶ εἰσὶ πρῶτοι οἱ ἔσονται ἔχοντες·

31 Ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ προσήλθόν τινας Φαρισαῖοι, λέγοντες αὐτῷ· Ἐξέλθε, καὶ πορεύου ἐντεῦθεν, ὅτι ἡμεῖς θέλομεν σε ἀποκτείνειν·

32 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Πορεύθέντες εἰπάτε τῇ

ἐλπίετε ταύτη· Ἰδὲ, ὁκβάλλω δαίμονια, ἔ γάρ τις ὑπίπτελῶ σήμερον κατὰ αὐριον κατὰ τῇ τρίτῃ τελειομαι.

33 Πλὴν δὲ με σήμερον ἔ αὐριον, ἔ τῇ ἐχόμενῃ κερύεσθαι· ὅτι ἔκ ἐνδέχεται προφητῶ ἀπολεσθαι ἔξω Ἱερουσαλὴμ.

34 Ἱερουσαλὴμ, Ἱερουσαλὴμ, ἡ ἀποκτείνουσα τὰς προφῆτας, ἔ λιθοβολῶσα τὴν ἀπεσταλμένην πρὸς αὐτὴν, ποταμὸς ἡ θάλασσα ὑψισυναΐξει τὰ τέκνα σου, ὃν τρόπον ὅροι· ἔ ἐσὺ τοιοῦτον ὑπὸ τὰς πτέρυγαι, ἔ ἔκ ἡθελήσατε.

35 Ἰδὲ, ἀφίεται ὑμῖν ὁ οἶκος ὑμῶν ἔρημος· αἰμῶν δὲ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἔ μή με ἴδῃτε ἔως ἂν ἡξῇ ἔστε εἴπητε· Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου.

Κεφ. 14.

1 **Κ**Αὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐλθεῖν αὐτόν εἰς οἶκόν τινος τῶν ἀρχόντων τῶν Φαρισαίων σαββαίῳ φαγεῖν ἄρτον, καὶ αὐτοὶ ἡσάμ ὡς τὴν ἡμέραν αὐτόν.

2 Καὶ ἰδὲ, ἀνθρώπος τις ἦν ὑδρωπικός ἐμπροσθεν αὐτοῦ.

3 Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ Ἰησοῦς εἶπε πρὸς τὰς νομικὰς ἔ Φαρισαίους, λέγων· Εἰ ἔξεσι τῷ σαββάτῳ θεραπεύειν; Οἱ ἔ ἡσύχασαν.

4 Καὶ ὑπαλαβόμενος ἰάσατο αὐτόν, καὶ ἀπέλυσε.

5 Καὶ ἀποκριθεὶς πρὸς αὐτὸς, εἶπε· Τίνος ὑμῶν ἕνος ἡ βῆς εἰς φρέαρ ἐμπεσείται, ἔ ἔκ αὐθιγῶς ἀνασπᾷται αὐτὴ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἔ σαββάτῳ;

6 Καὶ ἔκ ἰσχυρὰν ἀνταποκριθεῖσιν αὐτῷ πρὸς ταῦτα.

7 Ἐλέγε δὲ πρὸς τὰς κεκλημένους ὡς βολὴν, ἐπείχων πῶς τὰς πρωτοκλισίας ὕψιζοντο, λέγων πρὸς αὐτὸς.

8 Ὅταν κληθῇς ὑπὸ τινος εἰς γάμους, μὴ κατακλισθῇς ἐν τῇ πρωτοκλισίᾳ· μήποτε ἐντιμώτερός σου ἢ κλημείνους ἔστ' αὐτῷ.

9 Καὶ ἡλθὼν ὁ σὺ ἔ αὐτὸν καλέσας, εἶπεν· Δὲς τὸν τόπον· ἔ τότε ἀρξῇ μετ' αἰχμῆς ἔ ἔχοντος τόπον κατέχειν.

10 Ἀλλ' ὅταν κληθῇς, κορῶν δὲ ἀνάπεσον εἰς τὸν ἔσχατον τόπον· ἔ ἔκ ὅταν ἔλθῃ ὁ κεκληκὼς σε, εἶπεν σοι· Φίλε, προσάναβηθι ἀνώτερος· τότε ἔσται σοι δόξα ἔνωπιον τῶν συνδρακηνέων σου.

11 Ὅτι γὰρ ὁ δούλος ἐαυτὸν, ταπεινώσεται· ἔσται ταπεινὸν ἐαυτὸν, ὑψωθήσεται.

12 Ἐλθὺν ἔτι καὶ ἐπὶ κεκληρότη σὺν. Ὅτι ποίης ἄριστον ἢ δεῖπνον, μὴ φαίει τῆς φίλης σε, μηδὲ τῆς ἀδελφῆς σε, μηδὲ τῆς συγγενῆς σε, μηδὲ γέγονας πλησίον· μήποτε ἔσται σοὶ ἀντιπαλεῖς, ἔτι γίνεταί σοι ἀνταποδομῶ.

13 Ἀλλ' ὅτι ποίης δοχῶν, καλὴν πτωχῶν, ἀναπῆρας, χαλῶν, τυφλῶν.

14 Καὶ μακάριος ἔσθι· ὅτι ἡ ἐλπίς σου ἀπὸ τοῦ ποδοῦναι σοὶ· ἀνταποδοθήσεται γὰρ σοὶ ἐν τῷ ἀμαρτάνῃ σου δικαίῳ.

15 Ἀκούσας δὲ πῶς τῶν συλλαβαμένων ταῦτα, εἶπεν αὐτῷ· Μακάριος ὅς φαγεται ἄρτον ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.

16 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ἄνθρωπος πῶς ἐποίησε δεῖπνον μέγα, ἔτι ἀκούσας πολλῶν.

17 Καὶ ἀπέστειλε τὸν δούλον αὐτοῦ τῇ αἰῶνι τῇ δεῖπνον εἰπεῖν τοῖς κεκλημένοις· Ἐρχεσθε, ὅτι ἡδὴ ἑτοιμά ἐστι πάντα.

18 Καὶ ἤρξαντο ἀπὸ μιᾶς ἀρτίστειν πάντες· Ὁ δὲ πρῶτος εἶπεν αὐτῷ· Ἄγρον ἡγόρασα, ἔχω ἀνάγκη ὑπελθεῖν ἔτι ἰδεῖν αὐτὸν· ἐρωτᾷ σε, ἔχει με παρητημένον.

19 Καὶ ἕτερος εἶπε· Ζώον βοὸν ἡγόρασα πέντε, ἔτι πορεύομαι δοκιμάσαι αὐτά· ἐρωτᾷ σε, ἔχει με παρητημένον.

20 Καὶ ἕτερος εἶπε· Γυναικα ἔγρημα, ἔτι διὰ τοῦτο ἡ δύναμις ἐλθεῖν.

21 Καὶ ἀπεγενόμην ὁ δούλος ἀκούσας ἀπέγχετο πρὸς τοὺς κυρίους αὐτῶν ταῦτα· Τότε ὑργισθῶν ὁ οἰκοδεσπότης εἶπε τῷ δούλῳ αὐτοῦ· Ἐξελθε ταχέως ἡμεῖς τὰς πλατείας καὶ ῥύμους τῆς πόλεως, καὶ τὰς πτωχῶν καὶ ἀμαρτάνων καὶ χαλῶν ἔτι τυφλῶν εἰσάγαγε ἔτι.

22 Καὶ εἶπεν ὁ δούλος· Κύριε, γέγονεν ὡς ἐπέταξας, ἔτι ἐπὶ τόποι ἐστί.

23 Καὶ εἶπεν ὁ κύριος πρὸς τὸν δούλον· Ἐξελθε ἔτι τὰς ὁδούς ἔτι φραγμῶν, ἔτι ἀνάγκατον εἰσελθεῖν, ἔτι γεμισθῶν ὁ οἶκος μου.

24 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἡδὴ τῶν ἀνδρῶν ὁπείνῃ τῶν κεκλημένων, γαστρίται μὴ ἔτι δεῖπνῃ.

25 Συνετορῶντο ἔτι αὐτῷ ὅχλοι πολλοί· ἔτι σφαιρίαι εἶπε πρὸς αὐτούς.

26 Εἰ πῶς ἐρχεται πρὸς με, καὶ οὐ μιστῶ τὸν πατέρα ἐαυτοῦ, καὶ τὴν μητέρα, ἔτι τὴν γυναῖκα, ἔτι τὰ τέκνα, καὶ τὸς ἀδελφούς, ἔτι τὰς ἀδελφάς, ἔτι ἔτι ἔτι τὴν ἰδίαν ψυχὴν, ὅς δύναται μεν καθεστῆς εἶναι.

27 Καὶ ὅστις ὁ βασίζων τὸν σαρὸν αὐτοῦ, ἔτι ἔτι-

ἔρχεται ὁπίσω μου, οὐ δύναται μου εἶναι μαθητής.

28 Τίς γὰρ ἔξ ὑμῶν, θέλων πύργον οἰκοδομήσῃ, ἢ καὶ πρῶτον καθίσας ψηφίσει τὴν δαπάνην, εἰ ἔχει τὰ πρὸς ἀταρπισμόν;

29 Ἴνα μήποτε θέντος αὐτῷ θεμέλιον, ἔμῃ ἰσχύοντος ἐκτελέσαι, πάντες οἱ θεωρῶντες ἄρξονται ἐμταλίζειν αὐτῷ.

30 Λέγοντες· Ὅτι ὁ αὐτοῦ ἄνθρωπος ἤρξατο οἰκοδομῆναι, ἔκ ἃς ἰσχύσεν ἐκτελεσθαι.

31 Ἡ δὲ βασιλεὺς παραούμενος συμβαλεῖν ἐτέρῳ βασιλεῖ εἰς πόλεμον, ἢ καὶ καθίσας πρῶτον βυλόμεται εἰ δυνατός ἐστιν ἐν δέκα χιλιάσιν ἀπαιτῆσαι τῷ μὲν εἰκοσι χιλιάδων ἐσχομένῳ ἐπ' αὐτόν;

32 Εἰ δὲ μήγε, ἐπ' αὐτοῦ πόρρω ὄντος, πρεσβείαν ἀποσείλῃ, ἐρωτᾷ τὰ πρὸς εἰρήνην.

33 Οὕτως οὖν, πᾶς ἔξ ὑμῶν ὅς οὐκ ἀποτάσσεται τῷσι τοῖς ἐαυτοῦ ὑπάρχουσιν, ἢ δύναται μὲ εἶναι μαθητής.

34 Καλὸν τὸ ἄλλας· εἴν δὲ τὸ ἄλλας μαρτυρεῖται, ὅτι πῶς ἀποτυγχάνεται; Οὔτε αἰ γὰρ, εἴτε εἰς κατρίαν εὐθετόν ἐστιν· ἔξω βάλλουσιν αὐτά· Ὁ δὲ ἔχων ὅτι ἀκύνῃ, ἀκύντω.

Κεφ. ιε'. 15.

1 Ἡ δὲ Σάδῃ ὃ ἐγγίζοντες αὐτῷ πάντες οἱ τέτρωτοι καὶ οἱ ἀμαρτωλοὶ, ἀκούειν αὐτοῦ.

2 Καὶ διεγόνοντο οἱ Φαρισαῖοι, ἔοι Γραμματεῖς, λέγοντες· Ὅτι ὁ αὐτοῦ ἀμαρτωλὸς προσδέχεται, ἔοι συνεσθίει αὐτοῖς.

3 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτούς τῶν ὀφειλομένων ταύτων, λέγων·

4 Τίς ἀνθρώπος ἔξ ὑμῶν ἔχων ἑκατὸν πρόβατα, ἔοι ἀπολέσας ἓξ ἔξ αὐτῶν, ἢ καταλείπει τὰ συνεκονταγεννέα ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἔοι παραύεται ἐπὶ τὸ ἀπολαύειν, ἔοι εὖνη αὐτός;

5 Καὶ εὖνην ὑπὲρ πάντων ὅτι τὰς ὥρας ἐαυτοῦ χαίρειν.

6 Καὶ ἐλθὼν εἰς τὸν οἶκον, συγκαλεῖ τὰς φίλους ἔοι τοὺς γείτονας, λέγων αὐτοῖς· Συγχαίρετέ μοι, ὅτι εὑρον τὸ πρόβατόν μου τὸ ἀπολαύειν.

7 Λέγων ὑμῖν ὅτι ἡτοίματός ἐστι ἐν τῷ ἡρώδῃ ὅτι εἰς ἀμαρτωλὰ μετανοήσῃ ἢ ὅτι συνεκονταγεννέα δικαίους, οἱ πῶς ἢ καὶ ἔχουσιν μετανοήσας.

8 Ἡ δὲ τίς γυνὴ δραχμὰς ἔχουσα δέκα, εἴν ἀπολέσῃ δραχμὴν μίαν, ἢ οὐχὶ ἅπτη λούχον καὶ

καὶ σαρκοὶ τῶν οἰκίαν, καὶ ζῆται ὑπὸ μιλῶς, ἵως
ὅτε εὐρή;

9 Καὶ ὄρῳσα συγκαλεῖται τὰς φίλας ἑ τὰς γείτο-
νας, λέγῃσα· Συγχαρτέ μοι, ὅτι εὗρον τὴν δραχ-
μὴν ἣν ἀποκίεσα.

10 Οὕτω, λέγω ὑμῖν, χαρὰ γίγνεται ἐνώ-
πιον τῷ ἀγγέλῳ τοῦ Θεοῦ ὅτι ἐνὶ ἀμάρτανῃ
μετανοοῦντι.

11 Εἶπε δέ· Ἄνθρωπός τις εἶχε δύο υἱούς·

12 Καὶ εἶπεν ὁ νεώτερος αὐτῷ τῷ πατρί· Πάτερ,
δός μοι τὸ ἐπιβάλλον μέρος τῆς ὑσίας· καὶ διέδωκε
αὐτῷ τὸν βίον.

13 Καὶ μετ' ἡ πολλὰς ἡμέρας συναγαγὼν ἅπαντα
ὁ νεώτερος υἱὸς ἀπεδῆμνεν εἰς χώραν μακρὰν· ἑ ἐκεῖ
διεσκόρπισε τὴν ὑσίδα αὐτῆς, ζῶν πώτοις.

14 Διαπνῆσάμην ὁ αὐτὸς πάντα, ἐγένετο λιμὸς
ἐσχυρὸς κατὰ τὴν χώραν ἐκείνην· καὶ αὐτὸς ἤρξετο
ὕστερος θῆαι.

15 Καὶ πορεύθεις ἐπολαλῆθαι ἐνὶ τῇ πολιτῇ τῆς
χώρας ἐκείνης· ἑ ἐπεμψεν αὐτὸν εἰς τὴν ἀγρὸν αὐτῆς
βοσκήν χοίρας.

16 Καὶ ἐπεθύμη γεμίσαι τὴν κοιλίαν αὐτοῦ
ἀπὸ τῶν κεραπίων ὧν ἡσθιον οἱ χοῖροι· ἑ εὐδαῖ· ἐδίδα
αὐτῷ.

17 Εἰς ἐαυτὴν ὁ ἐλθὼν, εἶπε· Πόσαι μίσθιοι
τῷ πατρί μου πωροῦνται ἄρτων, ἐγὼ ὁ λιμὸς ἀπολ-
υμαι.

18 Ἀναστὰς πορεύσομαι πρὸς τὸν πατέρα μου,
ἑ ἐρῶ αὐτῷ· Πάτερ, ἡμάρταν εἰς τὸν ὕμνον, ἑ
ἐνώπιόν σου·

19 Καὶ ἠκέπ' εἰμὶ ἄξιός κληθῆναι υἱός σου·
παῖσόν με ὡς εἶπα τὸν μισθίον σου.

20 Καὶ ἀναστὰς ἦλθε πρὸς τὸν πατέρα αὐτοῦ·
ἑτι δέ αὐτοῦ μακρὰν ἀπέχεσθαι, εἶδεν αὐτὸν
ὁ πατὴρ αὐτοῦ, ἑ ἐσπαραγγίσθη· ἑ δραπετὴν
ἐπέπιπεν ἐπὶ τὸν τραχήλον αὐτοῦ, ἑ κατεφίλησεν
αὐτόν.

21 Εἶπε ὁ αὐτοῦ ὁ υἱός· Πάτερ, ἡμάρταν εἰς τὸν
ὕμνον ἑ ἐνώπιόν σου, ἑ ἠκέπ' εἰμὶ ἄξιός κλη-
θῆναι υἱός σου.

22 Εἶπε ὁ πατὴρ πρὸς τὴν δούλην αὐτοῦ· ἑλ-
νύκατε τὴν σολὴν τὴν πρώτην, ἑ ἐνδύσατε αὐτόν,
ἑ δότε δακτύλιον εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ, ἑ ἀποδύνατε
αὐτὸν τὸν πόδα.

23 Καὶ ἐνύκνηται ὁ μόνον ὁ σιταῦτός θύσατε,
ἑ φωνάσας ἀφῶνθώμεν.

24 Ὅτι ἡ τις ὁ υἱὸς μου νεκρὸς ἦν, καὶ ἀ-
νίστα· ἑ ἀπολαλῶς ἦν, ἑ ὀρίθη· καὶ ἡρῆματα
ἀφῶνθῆκε.

25 Ἡ δὲ ὁ υἱὸς αὐτοῦ ὁ πρεσβύτερος ἐν ὀργῇ·
ἑ ὡς

καὶ ὡς ἐρχόμενος ἤγγισε τῇ οἰκίᾳ, ἤκουσε συνα-
φῆς ἐν χορῶν·

26 Καὶ προσκαλεσάμενος ἕνα τῶν παίδων ἐπυνθάνε-
το τι μὴ ταῦτα·

27 Ὁ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι ὁ ἀδελφός σου ἦκει· Ἐ-
δυσεν ὁ πατήρ σου τὸ μίσχον τὸ σιτόν, ὅτι ὑγιαί-
νοντα αὐτὸν ἀπέλαβεν·

28 Ὡργίσθη δὲ, ἔκ κ' ἤθελεν εἰσελθεῖν· ὁ δὲ πα-
τήρ αὐτοῦ θέλων παρεκάλεi αὐτόν·

29 Ὁ δὲ ἀποκριθεὶς εἶπε τῷ πατρί· Ἰδὲ, τοσαῦ-
τα ἔτη δαδάω σοι, ἔτι δέποτε συντάλω σου παρῆλ-
θον, ἔμοι ὑδέποτε ἔδωκας ἔριφον, ἵνα μὴ τῷ φί-
λῳ μὴ εὐφρανθῶ·

30 Ὅτε δὲ ὁ υἱὸς σου ἦτος, ὁ καταφυγὼν σου τὸν
βίον μετὰ πορνῶν, ἦλθεν, ἐδυσας αὐτῷ τὸ μίσχον
τὸ σιτόν·

31 Ὁ δὲ εἶπε αὐτῷ· Τέκνον, σὺ πάντοτε μετ' ἐμῷ
εἶ, ἔτι πάντα τὰ ἐμὰ, σὰ ἐσίν·

32 Εὐφρανθήσῃ δὲ ἔχαρται ἔδει, ὅτι ὁ ἀδελ-
φός σου ἦτος νεκρὸς ἦν, ἔ ανέζησε, ἔ ἀπολωλὸς ἦν,
ἔ ὤρεθη·

Κεφ. 15. 16.

1 **Ε**ἰπεν δὲ καὶ πρὸς τὰς μαθητάς αὐτοῦ·
Ἄνθρωπος τις ἦν πλούσιος, ὃς ἔχεν οἴκο-
νόμεν· ἔ ἦτος διεβλήθη αὐτῷ ὡς ληστικορπίζον τὰ
ἐπάρχοντα αὐτῇ·

2 Καὶ φωνήσας αὐτὸν, εἶπεν αὐτῷ· Τί τοῦτο ἀκῆω
πρὸς σὴ; ἀπόδος τὸν λόγον τὴν οἰκονομίας σου· ὃ γὰρ δύ-
νησθ' ἐπὶ οἰκονομεῖν·

3 Εἶπε δὲ ὁ αὐτοῦ οἰκονόμος· Τί ποιήσω, ὅτι ὁ
Κύριός μου ἀφαιρεῖται τὴν οἰκονομίαν ἀπ' ἐμῶν, σκά-
πτειν ἢ ἐσχύω, ἐκαιτῇν αἰσχύνομαι·

4 Ἐγὼν τι ποιήσω, ἵνα ὅταν μετασθῶ τὴν οἰκono-
μίας, δέξωνταί με εἰς τὸν οἶκόν αὐτοῦ·

5 Καὶ προσκαλεσάμενος ἕνα ἑκάστον τῶν κλεφτικῶν
τῶν τῷ Κυρίῳ αὐτοῦ, ἔλεγε τῷ πρώτῳ· Πόσον ὀφείλεις
τῷ Κυρίῳ μου;

6 Ὁ δὲ εἶπεν· Ἐκατὸν βάτης ἐλαίου· Καὶ εἶπεν αὐ-
τῷ· Δέξαι σου τὸ γράμμα, ἔ καθίσαις ταχέως γρά-
φον πεντήκοντα·

7 Ἐπειτα ἑτέρῳ εἶπε· Σὺ δὲ πόσον ὀφεί-
λεις; Ὁ δὲ εἶπεν· Ἐκατὸν κόρους σίτου· Καὶ
λέγει αὐτῷ· Δέξαι σου τὸ γράμμα, ἔ γράφον
εὐδοήκοντα·

8 Καὶ ἐπήνεσεν ὁ Κύριος τὸν οἰκονόμον τῆς ἀδι-
κίας, ὅτι φρονίμως ἐποίησεν· ὅτι οἱ υἱοὶ τοῦ αἰῶνος
τούτου

τῆς φρονιμώτεροι ὑπὲρ τὰς υἱὰς τῆς φωτὸς εἰς τὴν γυναικὴν τῶν ἰουδαίων εἰσι.

9 Καὶ ὡς ἔτι λέγει· Ποιήσατε ἑαυτοῖς φίλους ἐκ μαμωνᾶ τῆς ἀδικίας· ἵνα ὅταν ἐκλείψητε, ἔσονται υἱοὶ εἰς τὰς αἰωνίους σκῆνας.

10 Οὐ τίς ἐστι ἐν ἐλαχίστῳ, ἔνθα πολλὰ πιστὸς ἐστὶ· ἔνθα ἔτι ἐν ἐλαχίστῳ ἀδίκος, ἔνθα πολλὰ ἀδίκος ἐστίν.

11 Εἰ ἢν ἐν τῷ ἀδίκῳ μαμωνᾷ πιστοὶ ἢκ ἐγένεσθε, τὸ ἀλαθιπρὸν πρὸς ὑμῶν πισύται;

12 Καὶ εἰ ἔν τῷ ἀλλοτρίῳ πιστοὶ ἢκ ἐγένεσθε, τὸ ὑμῶν πρὸς ὑμῶν δώσει;

13 Οὐδὲν αἰκίτης δύναται δυοὶ κυρίους δαλύνειν· ἢ ὅς τῳ ἐστὶ μισήσει, ἢ ἑτέρον ἀγαπήσει· ἢ ἐνὸς ἀντιῆται, ἢ ἑτέρῳ καταφρονήσει. ἢ δύνασθε Θεὸν δαλύνειν ἢ μαμωνά.

14 Ἦ κεν ὅ ταῦτα πάντα ἔοι φαρισαῖοι, Φιλήγγυροι ὑπαρχοντες· ἔνθα ἐκμυκτήριζον αὐτόν.

15 Καὶ ἔπει αὐτοῖς· Ὑμῶς ἐστὶ οἱ δικαιοῦντες ἑαυτὰς ἐν ὀφείῳ τῶν ἀνθρώπων· ὁ δὲ Θεὸς γινώσκει τὰς καρδίας υἱῶν· ὅτι τὸ ἐν ἀνθρώποις ὑψηλόν, βδελύγῃς Θεῶν πρὸς Θεὸν ἐστίν.

16 Οὐ νόμος ἔοι Προφῆται ἔοι Ἰωάννης· ἀπὸ τότε ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἀγγελλίζεται, ἔνθα πᾶς εἰς αὐτὴν βιάζεται.

17 Εὐκοτώτερον δὲ ἐστὶ τῷ ἄνθρωπῳ ἔνθα τὴν γῆν παραλῆναι, ἢ τῷ νόμῳ μίσην καρδίαν πεποιῆν.

18 Πᾶς ὁ ἀπολύων τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, ἔνθα καὶ ἑτέραν, μοιχῶνται· ἔνθα πᾶς ὁ ἀπολελυμένῳ ἀπὸ ἀνδρός γαμῶν, μοιχῶνται.

19 Ἀνθρώπος δὲ τις ἦν πλῆστος, καὶ ἐνεδιδύσκετο πορφύρῳ καὶ βύσσιν, ἀφραγνόμενος κατ' ἐμέριον λαμπρῶς.

20 Πτωχὸς δὲ τις ἦν ὀνόματι Λάζαρος, ὃς ἐβέβηκε πρὸς τὴν πυλῶνα αὐτῆς ἑλκωμένος.

21 Καὶ ἐπιθυμῶν χορτασθῆναι ἀπὸ τῶν ψιχίων τῶν πίπτοντων ἀπὸ τῆς τραπέζης τοῦ πλουτοῦ· ἀλλὰ καὶ οἱ κύνες ἐρχόμενοι ἀπέλειπον τὰ ἑλκῆ αὐτοῦ.

22 Ἐγένετο δὲ ἀποθάνειν τὸν πτωχόν, καὶ ἀπεψυχῆναι αὐτόν· ἀπὸ τῶν ἀγγέλων εἰς τοὺς κόλπον τοῦ Ἀβραάμ· ἀπέθανε δὲ ἔνθα ὁ πλούσιος, ἔνθα ἐτάφη.

23 Καὶ ἐν τῷ ᾧ ἡ ἐρώτησις τῆς ἐφθάλμους αὐτοῦ, ὁ πλούσιος ἐν βασιλείᾳ, ὅρα τὸν Ἀβραάμ αὐτὸ μακρόθεν, ἔνθα Λάζαρον ἐν τοῖς κόλποις αὐτοῦ.

24 Καὶ αὐτὸς φωνήσας εἶπε· Πάτερ Ἀβραάμ· ἐλέησόν με, ἔνθα πέμψον Λάζαρον, ἵνα βάψῃ τὸ ἄκρον τοῦ δακτύλου αὐτοῦ ὕδατος, ἔνθα καταψύξῃ τὴν γλῶσσαν μου· ὅτι ἐδυνάμην ἐν τῇ φλογὶ ταύτῃ.

25 Εἶπε δὲ Ἀβραάμ· Γέγονεν, μὴ ἐλθῇ ὅτι ἀπέλαβες σὺ τὰ ἀγαθὰ σὺ ἐν τῇ ζωῇ σου· ὁ Λάζαρος δὲ μοίῃς τὰ κακὰ· νῦν δὲ ὁδε παρακαλεῖται, σὺ δὲ οὐ δύνασαι.

26 Καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις, μετὰ τὴν ἡμῶν ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐξέρχεται, ὅπως οἱ θελοῦντες ἀκολουθεῖν αὐτῷ πρὸς ἑαυτοὺς, μὴ ὑποτασσάμενοι, μηδὲ οἱ ἐκείθεν πρὸς ἡμᾶς ἀποκριθῶσιν.

27 Εἶπε δὲ· Ἐρωτῶ ὑν σε Πάτερ, ἵνα πέμψῃς αὐτῷ εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Πατρὸς μου.

28 Ἐχὼ γὰρ πέντε ἀδελφούς, ὅπως ἀποκριθῶσιν αὐτοῖς, ἵνα μὴ ὡς αὐτοὶ ἐλθῶσιν εἰς τὸ τοιοῦτον τὸ ὄνομα τοῦ υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.

29 Λέγει αὐτῷ Ἀβραάμ· Ἐχῇτι Μωσῆς καὶ τὰς προφῆτας· ἀκούσάτωσαν αὐτῶν.

30 Οὗ δὲ εἶπεν· Οὐχί, Πάτερ Ἀβραάμ· ἀλλ' εἰάν τις ἀπὸ νεκρῶν πορεύθῃ πρὸς αὐτὴν, μετανοήσῃ.

31 Εἶπε δὲ αὐτῷ· Εἰ Μωσῆς καὶ τῶν προφητῶν οὐκ ἀκούσῃ, ὅτε εἰάν τις ὦν νεκρῶν ἀναστῇ, πεισθήσεται.

Κεφ. ιζ. 17.

1 Εἶπε δὲ πρὸς τὴν μαθητῶν· Ἀνδριανὸν ἐστὶν ὃς μὴ ἐλθεῖν τὰ σκάνδαλα· καὶ δὲ δὲ ὁ ἐρχεται.

2 Ἀποστείλει αὐτῷ εἰς μύλος οὐκὸς πορεύεσθαι πρὸς τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ ἐρρίπτει εἰς τὴν θάλασσαν, ἥ ἵνα σκάνδαλίσῃ ἐν τῷ μικρῷ τούτῳ.

3 Προσέχετε ἑαυτοῖς. Εἰάν τις ἁμάρτη εἰς σὲ ὁ ἀδελφός σου, ὑποτίμησον αὐτῷ· καὶ εἰάν μετανοήσῃ, ἀφες αὐτῷ.

4 Καὶ εἰάν ἑπτὰκις ἡμέρας ἁμάρτη εἰς σὲ, καὶ ἑπτὰκις ἡμέρας ὑπερέβῃ ἐπὶ σε, λέγων· Μετανοῶ· ἀφίσεις αὐτῷ.

5 Καὶ εἶπον οἱ ἀπόστολοι τῷ Κυρίῳ· Πράσθαι ἡμῖν τίςτις;

6 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Εἰ ἔχετε πίστιν ὡς κόκκον σιναίτης, ἐλέγετε ἂν τῇ συκαμίνῳ ταύτῃ· Ἐκκλίθει, καὶ φοιτῶν ἐν τῇ θαλάσσῃ· καὶ ἐπήκουσεν αὐτοῖς.

7 Τίς δὲ ἔξ ὑμῶν θέλει ἄλλον ἔχειν ἀποτεινόντα, καὶ ποιμαίνοντα, ὃς εἰσελεύσονται ἐν τῇ αἰχρῇ ἐρεῖ αὐτοῦ.

8 Ἀλλ' ἡχί ἐρεῖ αὐτῷ· Ἐτοιμάσον τί δεικνύσω, καὶ ποιήσω ἡμῖν;

9 Αὐτῷ δὲ ἀπεκρίθη· Ἐὰν θέλῃς, ἐν τῇ αἰχρῇ ἐρεῖ αὐτοῦ.

μὴ ταῦτα φάγεσθαι ἔπεισαι σὺ;

9 Μὴ χάριν ἔχει τῷ δούλῳ ἐκείνῳ ὅτι ἐποίησε τὰ διαταχθέντα αὐτῷ; ἢ οὐκᾶν.

10 Οὕτω ἔφη, ὅταν ποιήσῃτε πάντα τὰ διαταχθέντα ὑμῖν, λέγετε· Ὅτι δούλοι ἀχρεῖοί ἐσμεν· ὅτι ὁ ὠφείλομεν ποιῆσαι, πεποιήκαμεν.

11 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ παραύριον αὐτῷ εἰς Γερουσίαν, ἡ αὐτοῦ διήρχετο διὰ μέσου Σαμαρείας καὶ Γαλιλαίας.

12 Καὶ εἰσερχομένη αὐτῷ εἰς τινα κώμην, ἀπήγαγον αὐτῷ δέκα λεπροὶ ἄνδρες, οἱ ἐστησαν πύρρῳ.

13 Καὶ αὐτοὶ ἤραν φωνὴν, λέγοντες· Ἰσὲν ὑπάτα, ἐλεῆσος ἡμᾶς.

14 Καὶ ἰδὼν εἶπεν αὐτοῖς· Παραυθέντες ὑπαδείξατε ἑαυτοὺς τοῖς ἱεροῦσι. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ὑπαύριον αὐτῶν, ἐκαθαρίσθησαν.

15 Εἰς δὲ ἔτι αὐτῷ, ἰδὼν ὅτι ἰάθη, ὑπέστη, μὴ φωνῇ μεγάλης δοξάζων τὸ Θεόν.

16 Καὶ ἐπεσεν ὑπὸ πρόσωπον παρὰ τοῦ πόδας αὐτοῦ, ὁμοκαρτῶν αὐτῷ· καὶ αὐτὸς ἐν Σαμαρείᾳ.

17 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Οὐκ ἔστι δέουσα ἐκαθαρίσθησαν; οἱ δὲ ἐνέειπον·

18 Οὐχ ὡς ἰάθησαν ὑποσείψαντες δυνάμι δόξαν τῷ Θεῷ, εἰ μὴ ὁ ἄλλοθεν ἦτος.

19 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἀναστὰς πορεύου· ἡ πίστις σε σέσωκε σε.

20 Ἐπερωτηθεὶς δὲ ὑπὸ τῶν Φαρισαίων πότε ἔρχεται ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ, ἀπεκρίθη αὐτοῖς, ἔειπεν· Οὐκ ἔρχεται ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ μὴ παρατηρήτως.

21 Οὐδὲ ἔρχεται· Ἰδοὺ ὡδε, ἡ, ἰδοὺ ἐκεῖ· ἰδοὺ ὅδε ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ ἐντός ὑμῶν ἐστίν.

22 Εἶπε δὲ πρὸς τοὺς μαθητάς· Ἐλπίσαντοί ἡμῖν, ὅτε ὅπρωθετε μίαν τῶν ἡμερῶν τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου ἰδεῖν, ἔτι οὐκ ὤψισθε.

23 Καὶ ἐρωτῶν ὑμῖν· Ἰδοὺ ὡδε, ἡ, ἰδοὺ ἐκεῖ· μὴ ἀπέλθῃτε, μηδὲ διώξῃτε.

24 Ὡςπερ ὅδε ἡ ἀσραπὴ ἡ ἀσράπτισα ὅκα τῷ ἡμῶν, εἰς τὸν ἡμῶν λαμπρῶν· ὥτως εἶναι καὶ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐν τῇ ἡμέρᾳ αὐτῇ.

25 Πρῶτον δὲ δεῖ αὐτῷ πολλὰ παθεῖν, ἔπειτα δοκιμασθῆναι ἀπὸ τῆς θανάτου ταύτης.

26 Καὶ καθὼς ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ Νῶε, οὕτως εἶναι καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου.

27 Ὡς οἱ υἱοὶ, ἔπιον, ἐγάμον, μεθύον, ἔχοντες, ἄλλοι δὲ ἡμέρας εἰσῆλθε Νῶε εἰς τὸ κιβωτόν· ἔλαθεν ὁ κατακλυσμὸς, καὶ ἀπώλεσεν πάντας.

28 Ὁμοίως ἔως ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν ἡσθιον, ἐπινον, ἡγόραζον, ἐπόλυν, ἐφύ-
τλυν, ἀκοδόμουν.

29 Ἡ δὲ ἡμέρα μετὰ ταῦτα αὐτὸν ἐκ τῆς Σοδομόων, ἐβρέξε πῦρ καὶ θεῖον ἀπ' οὐρανόθεν, καὶ ἀπώλεσεν αὐτάς.

30 Κατὰ ταῦτα ἔσται ἡ ἡμέρα ὃ ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἀποκαλύπτει.

31 Ἐν σκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὃς ἔσται ὑπὸ τοῦ θανάτου, καὶ τὰ σκώλη αὐτῶν ἐν τῇ οἰκίᾳ, μετὰ καταβύθου αὐτῶν. Ὁ δὲ ἐν τῷ ἀγρῷ, ὁμοίως μὴ ἐπι-
συνέσται εἰς τὴν ὀπίσσω.

32 Μνημονεύετε τοῦ γυναικὸς αὐτοῦ.

33 Ὁ δὲ εἰάν ζητήσῃ τὴν ψυχὴν αὐτῆς σώσει, ἀ-
πολέσει αὐτήν. Ὁ δὲ ἐὰν ἀπολέσῃ αὐτήν, ζωογονήσει αὐτήν.

34 Λέγω ὑμῖν, ταύτη τῇ νυκτὶ ἔσονται δύο ὑπὸ
κλίτης μίας. ὃς εἰς ὡς ἀφελήσεται, ὁ δὲ ἕτερος ἀ-
φεθήσεται.

35 Δύο ἔσονται ἀλήθειαι ἐπὶ τὸ αὐτό. ἡ μία πα-
ραληφθήσεται, ὁ δὲ ἕτερος ἀφεθήσεται.

36 Δύο ἔσονται ἐν τῷ ἀγρῷ. ὃς εἰς παραληφθήσε-
ται, ὁ δὲ ἕτερος ἀφεθήσεται.

37 Καὶ ἀποκριθέντες λέγουσιν αὐτῷ. Πῶς Κύριε;
Ὁ δὲ εἶπεν αὐτοῖς. Ὅπως τὸ σῶμα, ὅπου συναχθή-
σονται οἱ αἱετοί.

Κεφ. ιγ. 18.

1 Ἐπεὶ δὲ καὶ παρεβόλην αὐτοῖς πρὸς τὸ
δεῖν πάντως προσέχεσθαι, καὶ μὴ
ἐκκακεῖν,

2 Λέγων. Κρατὴς τις ἦν ἐν τῇ πόλει τοῦ Θεοῦ μὴ φο-
βῆναι, ὁ δὲ ἀνθρώπον μὴ ἐντρέπεσθαι.

3 Χρὸς δὲ τις ἦν ἐν τῇ πόλει σκείνη. καὶ ἤρ-
χετο πρὸς αὐτὸν, λέγουσα. Ἐκδίκησόν με ἀπὸ τοῦ
ἀντιπάλου μου.

4 Καὶ ὅτε ἠθέλησεν ὑπὸ χρόνον. μετὰ ταῦτα εἶπεν
ἐν ἑαυτῷ. Εἰ ὁ Θεὸς ἢ φοβῆμαι, ὁ δὲ ἀνθρώπον ἢ
ἐντρέπομαι,

5 Διὰ τοῦτο παρέχων μοι κόπον τὴν χήρην ταύτην,
ἐκδίκησόν αὐτήν. ἵνα μὴ εἰς τέλος ἐρχομένη ὑποπία-
ζῃ με.

6 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος. Ἀκούσατε τί ὁ κρατὴς τῆς ἀ-
δικίας λέγει.

7 Ὁ δὲ Θεὸς ἢ μὴ ποιήσει τὴν ἐκδίκησιν τῇ ἐκ-
λεκτῇ αὐτῇ τῇ βοῶντι πρὸς αὐτὸν ἡμέρας ὁ δὲ νυκτός,
ὁ δὲ μακροθυμῶν ἐπὶ αὐτοῖς;

8 Λέ-

8 Λέγει ὑμῖν ὅτι ποιήσῃ τὴν ἐκδίκησιν αὐτῷ ἐν τῇ ῥῃ· πλὴν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ἐλθὼν ἄρξαι ἀρετῆς τὴν πίσιν ὅτι τοῦ γῆς.

9 Εἶπε δὲ ἔτι πρὸς πᾶσι τὰς πεποιθότας ἐφ' ἑαυτοῖς ὅτι εἰσὶ δίκαιοι, ἔξωθεν ὄντας τὰς λοιπὰς, τὴν παραβολὴν ταύτην.

10 Ἄνθρωποι δύο ἀνέβησαν εἰς τὸ ἱερὸν προσάξασθαι· ὁ εἷς Φαρισαῖος, ὁ ἕτερος τελωνῆς.

11 Ὁ Φαρισαῖος σταθεὶς πρὸς ἑωυτὸν ταῦτα προσήχετο· Ὁ Θεὸς ἀγαπᾷ σοι, ὅτι ἔκ ἐμοὶ ὡς περ οἱ λοιποὶ τοῦ ἀνθρώπου, ἀρπαγες, ἀδικοὶ, μοιχοί, ὁ δὲ ὡς ὅτις ὁ τελωνῆς.

12 Νηστῦν δὲ Σαββάτῳ, ἀποδεκατῶ πάντα ὅσα κτῶμαι.

13 Καὶ ὁ τελωνῆς ἠσπρόθεν ἔς τὴν ἑκ. ἔθελεν καὶ τὴν ὀφθαλμὸν εἰς τὸν ἑρῶν ἐστῆναι· ἀλλ' ἔσπευεν εἰς τὸ σῆδος αὐτοῦ, λέγων· Ὁ Θεὸς ἰλάσθητί μοι τὰ ἁμαρτωλά.

14 Λέγει ὑμῖν, κατέβη εὖτος δεδικαιομένος εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, ἢ εκείνος· ἐπὶ τῆς ὀψωνίας ἑαυτὸν, ταπεινώσεται· ὁ δὲ ταπεινὸς ἑαυτὸν ὑψώσεται.

15 Προσέφερον ὁ αὐτῷ ἑ τὰ βρέφη, ἵνα αὐτῷ ἄψεται· ἰδόντες ὁ οἱ μυθιστοῦντες ἐπετίμησαν αὐτοῖς.

16 Ὁ δὲ Ἰησοῦς προσκαλεσάμενος αὐτὰ, εἶπεν· Ἀφerte τὰ παιδία ἔρχεσθαι πρὸς με, καὶ μὴ καλύετε αὐτά· τῷ γὰρ τοιούτων ἐστὶν ἡ Βασιλεία τοῦ Θεοῦ.

17 Ἀμὲν λέγει ὑμῖν, ὅς ἐάν μὴ δέξηται τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ ὡς παιδίον, οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐτήν.

18 Καὶ ἐπηρώτησέ τις αὐτὸν ἄρχων, λέγων· Διδάσκαλε ἀγαθέ, τί ποιήσας ζήναι αἰώνιον κληρονομήσω;

19 Εἶπε ὁ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τί με λέγεις ἀγαθός; καὶ εἰς ἀγαθός, εἰ μὴ εἷς, ὁ Θεός.

20 Τὰς ἐντολάς οὐδας· Μὴ μοιχεύῃς· Μὴ φονεύῃς· Μὴ κλέψῃς· Μὴ ψευδομαρτυρήσῃς· Τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα σου.

21 Ὁ δὲ εἶπε· Ταῦτα πάντα ἐφυλαξάμην ἐκ νεότητός μου.

22 Ἀκρίβως ὁ ταῦτα ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν αὐτῷ· Ἐπὶ σοὶ λείπει πάντα ὅσα ἔχεις πάλιστον, καὶ διάδος πτωχοῖς, καὶ ἔξεις θησαυρὸν ἐν ἑρῶν· ἔπειτα· ἀκολουθε μοι.

23 Ὁ δὲ, ἀκρίβως ταῦτα, κερίλυτος ἐγένετο· καὶ ὁ δὲ πάλιστος σάβδα.

24 Ἰδὼν δὲ αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς πρὸς αὐτὸν γενόμενος, εἶπε· Πᾶσι δυσκόλως οἱ ταῖς χημάτων ἔχοντες εἰσελεύσονται εἰς τὴν Βασιλείαν τοῦ Θεοῦ;

25 Εὐκοπώτερον γὰρ ἐστὶ κάμῃον διὰ τρυφῆς
ῥαφίδας εἰσελθεῖν, ἢ πλῆστον εἰς τὴν Βασιλείαν ᾧ Θεῷ
κτελεσθῆναι.

26 Εἶπον ὃ οἱ ἀκησάμετες· Καὶ πῶς δύναται σω-
θῆναι;

27 Οὗ ὃ εἶπε· Τὰ ἀδύνατα παρὰ ἀνθρώποις, δυνα-
τὰ ἐστὶ παρὰ τοῦ Θεοῦ.

28 Εἶπε ὃ ὁ Πέτρος· Ἰδὲ, ἡμεῖς ἀφ' ἡμῶν πάντα,
καὶ ἡκολούθητάμεν σοι.

29 Οὗ ὃ εἶπεν αὐτοῖς· Ἀμὴν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἡδεῖς
ἐσίν, ὅς ἀφ' ἡμῶν οἰκίαν, ἢ γυναικί, ἢ ἀδελφῇ, ἢ γυ-
ναικί, ἢ τέκνῳ, ἐνεκεν τοῦ Βασιλείας τοῦ Θεοῦ.

30 Οὗ ὃ καὶ ἀπαλάβη πολλὰ πλάστον ἐν τῷ καιρῷ
τῷ τῷ, καὶ ἐν τῷ αἰῶνι τῷ ἐρχομένῳ ζήσιν αἰώνιον.

31 Παραλαβὼν ὃ τὴν δωδεκά, εἶπε πρὸς αὐτῆς·
Ἰδὲ, ἀναβαίνουμι εἰς Ἱερουσόλυμα, καὶ τελεσθήσεται
πάντα τὰ γεγραμμένα διὰ τοῦ Προφῆτου, τοῦ Ἰσά·

32 Παραδοθήσεται γὰρ τῷ ἔθνει, καὶ ἐμπαιχθή-
σεται, καὶ ὑβρισθήσεται, καὶ ἐμπτυσθήσεται.

33 Καὶ μαρτυρήσονται ἀποκτενεῖσιν αὐτὸν· καὶ τῇ
ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ ἀνστήσεται.

34 Καὶ αὐτὸς ἡδὲν τέτων συνηκῶν· καὶ ἦν τὸ ῥῆ-
μα τὸ κρυμμένον ἀπ' αὐτοῦ, καὶ ἔκ ἐγνώσκον τὰ
λεγόμενα.

35 Ἐγένετο ὃ ἐν τῷ ἐγγίζειν αὐτὸν εἰς Ἱερουσόλυμα,
τυφλὸς τις ἐκάθητο πρὸς τὴν ὁδὸν προσκλιθεῖς.

36 Ἀκούσας ὃ ὅτι ἐκείθεν διαπορεύομεν, ἐπυνθάνετο πῶς
εἴη τῷ τῷ.

37 Ἀπήγγελλεν ὃ αὐτῷ, ὅτι Ἰησοῦς ὁ Ναζαρεὺς
παρέσθεται.

38 Καὶ ἐβόησε, λέγων· Ἰησοῦ Υἱὲ Δαβὶδ, ἐλέη-
σόν με.

39 Καὶ οἱ προάγοντες ἐπετίμων αὐτῷ ἵνα σιωπῇ·
αὐτὸς ὃ πολλὰ μᾶλλον ἔκραζεν· Υἱὲ Δαβὶδ, ἐλέησόν
με.

40 Σταθεὶς ὃ ὁ Ἰησοῦς ἐκέλευεν αὐτὸν ἀχθῆναι
πρὸς αὐτὸν· ἐγγίσαντος ὃ αὐτῷ ἐπηρώτησεν αὐτὸν,

41 Λέγων· τί σοι θέλεις ποιῆσαι; Οὗ ὃ εἶπε· Κύ-
ριε, ἵνα ἀναβλέψω.

42 Κύριε ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἀνάβλεψον· ἡ πί-
στις σε σέσωκε σε.

43 Καὶ ὡς ἔρχοντο ἀνέβλεψε, καὶ ἡκολούθει αὐτῷ
δοξαζὼν τὸν Θεόν· καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἰδὼν, ἔδωκεν αὐτῷ
τὸν Θεόν.

Κεφ. ιθ'. 19.

- 1 **Κ**Αὶ εἰσελθὼν διήρχετο τῷ Γεσιχαί.
 2 Καὶ ἰδὼν, ἀνὴρ ὀνόματι καλημένος Ζακχαῖος· καὶ αὐτὸς ἦν ἀρχιτελώνης, καὶ ὁ τοῦ ἔθνους τῶν
 3 Καὶ ἐξήκει ἰδεῖν τὸν Ἰησοῦν τίς ἐστὶ καὶ οὐκ
 4 Καὶ προδραμὼν ἐμπροσθεν, ἀνέβη ὑπὲρ σύκομιν
 5 Καὶ ὡς ἦλθεν ὑπὲρ τὸν τόπον, ἀναβλέψας ὁ Ἰη-
 6 Καὶ ἀποβὰς κατέβη, καὶ ὑπεδέξατο αὐτὸν χαίρων.
 7 Καὶ ἰδόντες ἅπαντες διεσπύοντο, λέγον-
 8 Σταθεῖς δὲ Ζακχαῖος εἶπε πρὸς τὸν Κύριον· Ἰδὼν,
 9 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι σήμερον σω-
 10 Ἦλθεν γὰρ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ζητῆσαι καὶ σῶσαι
 11 Ἀκούντων δὲ αὐτῷ ταῦτα, προσθεῖς εἶπα πα-
 12 Εἶπεν οὖν· Ἀνθρώπος τις σύγγενός ἐστι μοι καὶ
 13 Καλέσας δὲ δέκα δούλους ἐκείνους, ἔδωκεν αὐτοῖς
 14 Οἱ δὲ πολῖται αὐτῷ ἐμίσησαν αὐτὸν, καὶ ἀπέστειλαν
 15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐπανελθεῖν αὐτὸν λαβόντα
 16 Περιγένετο δὲ ὁ πρῶτος, λέγων· Κύριε, ἡ
 17

17 Καὶ ἔπεν αὐτῷ· Εὖ ἀγαθὲ δούλε· ὅτι ἐν ἐλαχίστῳ πιστὸς ἐγένη, ἰσθὶ θευσίῳ ἔχων ἐπ' αὐρὸν δέκα πύλων.

18 Καὶ ἦλθεν ὁ δεύτερος, λέγων· Κύριε, ἡ μὲν σὺ ἐποίησε πέντε μνάς.

19 Εἶπε ὁ ὢν τῷ· Καὶ σὺ γὰρ ἐπ' αὐρὸν πέντε πύλων.

20 Καὶ ἕτερος ἦλθε, λέγων· Κύριε, ἰδὺ ἡ μὲν σὺ, ἣν ἔχον ἀποκειμένην ἐν σπυδαίῳ.

21 Εφοβημὴν γάρ σε, ὅτι ἄνθρωπος μυστηριῶν εἶ· αἶρας ὁ οὐκ ἔδρακε, καὶ θερίζεις ἐν ἡμέραις.

22 Λέγει δὲ αὐτῷ· Ἐκ τοῦ τόματός σου κρινάω σε, ποιηρὲ δούλε· ἦδεις ὅτι ἐγὼ ἄνθρωπος μυστηρίῳ εἰμι, αἶρων ὁ οὐκ ἔδρακε, ὁ θερίζων ἐν ἡμέραις.

23 Καὶ λέγει· τί ἡν ἔδρακε τὸ ἀργυρίον μου ὑπὲρ τῶν τραπέζων, καὶ ἐγὼ ἐλθὼν σὺν τῷ δούλῳ ἐπράξα αὐτό;

24 Καὶ τοῖς παρεσώσιν εἶπεν· Ἀράτε ἐπ' αὐτοῦ τῶν μνάων, καὶ δότε τῷ τὰς δέκα μνάς ἔχοντι.

25 Καὶ ἔπον αὐτῷ· Κύριε, ἔχει δέκα μνάς.

26 Λέγει ὁ ὢν· ὅτι πᾶσι τὰ ἔχοντι δοθήσεται· ἀπὸ ὧν μὴ ἔχοντος, καὶ ὁ ἔχει, ἀρθρήσεται ἐπ' αὐτόν.

27 Πᾶσι τὰς ἐχούσας μὴ ὀκνήτε, τὰς μὴ θελήσασθαις με βασιλεύσαι ἐπ' αὐτῆς, ἀγάγετε ὡς, ὁ κατασφάξεται ἐμπροσθέν μου.

28 Καὶ εἶπεν ταῦτα, ἐπορεύετο ἐμπροσθεν, ἀρμυβαίων ἐς Ἱερουσόλυσιν.

29 Καὶ ἐγένετο ὡς ὅρτισεν εἰς Βηθφαγὴν ὁ Βηθαθαίμ, πρὸς τὸ ὄρος τὸ καλὸν μὲν Ἑλαιῶν, ἀπεσεύχετο εὐς τῶν μεθ' αὐτοῦ.

30 Εἶπεν· Ὑπάγετε εἰς τὴν κατένυτον κώμην· ἐν ἡ ἐκπορεύεσθαισι ἀράσσετε πολλὸν διδιδυμένον, ἐφ' ὃν ἡδὲς πᾶποτε ἀνθρώπων ὀκνᾶτε· λύσαντες αὐτὸν ἀγάγετε.

31 Κυὶ εἰπὼν περὶ ὑμῶν ἐρωτᾷ· Διὰ τί λυγτε; Οὕτως ἐρεῖτε αὐτῷ· Ὅτι ὁ Κύριος αὐτοῦ χρεῖαν ἔχει.

32 Ἀπελθόντες ὁ οἱ ἀπεσταλμένοι, εὗρον καθὼς εἶπεν αὐτῷ.

33 Ἀπάντων ὁ αὐτῷ τὸν πόλον, εἶπον οἱ κύριοι αὐτοῦ πρὸς αὐτόν· τί λυγτε τὸν πόλον;

34 Οἱ δὲ εἶπον· ὁ Κύριος αὐτοῦ χρεῖαν ἔχει.

35 Καὶ ἤγαγον αὐτόν πρὸς τὸν Ἰησοῦν. Καὶ ἔπαρ' ἰδόντες αὐτῷ τὸ ἱμάτιον ὑπὲρ τὸν πόλον, ἐπιβίβασαν τὸν Ἰησοῦν.

36 Πορεύμενοι ὁ αὐτὸς, ὑπεσπώνυσεν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ ἐν τῇ ὁδῷ.

37 Ἐγγιζόντος δὲ αὐτοῦ ἤδη πρὸς τῇ καταβάσει τῶν ὄρεων τῶν Ἑλαιῶν, ἤρξατο ἀπὸ τοῦ πληθους τῶν μαθητῶν χαίροντες αἰνεῖν τὸ Θεὸν φωνῇ μεγάλῃ πᾶσαν πᾶσαν ὥν ἔδον δυνάμεων.

38 Λέγοντες· Ευλογημένος ὁ ἐρχόμενος βασιλεὺς ἐν ὀνόματι Κυρίου· εἰρήνῃ ἐν ἡμῖν, ὁ δόξα ἐν ὑψίστοις.

39 Καὶ πινεσ τῶν Φαρισαίων ἀπὸ τοῦ ὄχλου κῆτον πρὸς αὐτόν· Διδάσκαλε, ὑπετίμησεν τοῖς μαθηταῖς σου.

40 Καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς· Λέγω ὑμῖν, ὅτι εἰάν ἦτοι σιωπήσωσιν, οἱ λίθοι κεκράξονται.

41 Καὶ ὡς ἤγγισεν, ἰδὼν τὴν πόλιν, ἔκλαυσεν ἐν αὐτῇ.

42 Λέγων· Οὐκ εἶ ἔγνωσ ὁ σὺ, καὶ γὰρ ἐν τῇ ἡμέρᾳ σου ταύτῃ, τὰ πρὸς εἰρήνῃ σου· νῦν δὲ ἐκρύβη ἀπὸ ὀφθαλμοῦ σου.

43 Οὐκ ἤξεσιν ἡμέραι ὑπὲρ σε, ὁ παῖς ἀβραάμ· οἱ ἔχθροί σου χάριν σοι, καὶ παῖς κυκλώσῃ σε, ὁ συγγενὴς σου πάντοθεν.

44 Καὶ ἐδαφίῃσί σε, καὶ τὰ τέκνα σου ἐν σοί· καὶ οὐκ ἀφήσουσιν ἐν σοί λίθον ὑπὲρ λίθου· ἀνθ' ὧν οὐκ ἔγνωσ τὸν καιρὸν τῆς ἐπισκοπῆς σου.

45 Καὶ εἰσελθεὶν εἰς τὸ Ἱερὸν, ἤρξατο ἐκβάλλειν τὰς πωληντάς ἐν αὐτῷ ὁ ἀγοράζοντας.

46 Λέγων αὐτοῖς· Γεγραπται· Οἱ οἶκος μου, οἶκος προσευχῆς ἐστίν· ὑμεῖς δὲ αὐτὸν ἐποίησατε σπήλαιον λησῶν.

47 Καὶ ἦν διδάσκων τὸ κατ' ἡμέραν ἐν τῷ Ἱερῷ· οἱ δὲ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς ἐζήτουν αὐτὸν ἀπολέσαι, καὶ οἱ πρῶτοι τοῦ λαοῦ.

48 Καὶ ἔχ· εὐχρισκὸν τὸ πᾶν ποιήσωσιν· ὁ λαὸς γὰρ ὅλος ὑπεκρέματο αὐτὸν ἀκέων.

Κεφ. κ'. 20.

1 **Κ**ΑΙ ἔρχετο ἐν μιᾷ τῇ ἡμέρᾳ ἀκούων, διδάσκοντος αὐτοῦ τὸν λαὸν ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ ἀκούοντων αὐτοῦ, ἐπέστησαν οἱ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς σὺν τοῖς πρεσβυτέροις.

2 Καὶ εἶπον πρὸς αὐτὸν, λέγοντες. Εἰπέ ἡμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιεῖς; ἢ τίς ἐστὶν ὃ δὲς σοὶ τὴν ἐξουσίαν ταύτην;

3 Ἀποκριθεὶς ὁ εἶπε πρὸς αὐτοὺς. Ἐρωτήσω ὑμᾶς πρῶτον ἓνα λόγον. Ἐπατέ μοι.

4 Τὸ βάπτισμα Ἰωάννου ἦν ἢ οὐκ ἦν ἀνθρώπων;

5 Οἱ δὲ συνελογίσαντο πρὸς ἑαυτοὺς, λέγοντες. Οὐκ ἐὰν εἰπωμεν· Ἐξ ἀνθρώπου· ἐρεῖ· Διὰ τί ἔτι οὐκ ἐκτελέσωμεν αὐτὸ;

6 Ἐὰν ὅμως εἰπωμεν· Ἐξ ἀνθρώπων· πάντες οἱ λαοὶ κατακλιθεῖσιν ἡμᾶς. πεπεισμένοι γάρ ἐσιν Ἰωάννου Προφήτην εἶναι.

7 Καὶ ἀπεκρίθησαν μὴ εἰδέναι πόθεν.

8 Καὶ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτοῖς. Οὐδὲ ἐγὼ λέγω ὑμῖν ἐν ποίᾳ ἐξουσίᾳ ταῦτα ποιεῖ.

9 Ἦρξατο ὁ εἰς πρὸς τὸν λαὸν λέγειν τὴν παραβολὴν ταύτην. Ἀνθρώπος τις ἐφύτρευσεν ἀμπελῶνα, καὶ ἐξέδοτο αὐτὸν γεωργοῖς. καὶ ἀπέστειλε καὶ ἄλλους ἰσχυροὺς.

10 Καὶ ἐν καιρῷ ἀπέστειλε πρὸς τῶν γεωργῶν δούλον, ἵνα ἀπὸ τοῦ ἀμπελῶνος δάσῃ αὐτῷ. οἱ δὲ γεωργοὶ διεφύκεσαν αὐτὸν, καὶ ἀπέκτελλον αὐτόν.

11 Καὶ προσέθετο πέμψαι ἕτερον δούλον. οἱ δὲ καὶ αὐτὸν διεφύκεσαν καὶ ἀπέκτελλον αὐτόν.

12 Καὶ προσέθετο πέμψαι τρίτον. οἱ δὲ καὶ τούτον ἐφύκεσαν καὶ ἀπέκτελλον αὐτόν.

13 Εἶπε ὁ Κύριος τοῦ ἀμπελῶνος. Τί ποιήσω; Πέμψω πάλιν υἱόν μου τὸν ἀγαπητόν. ἵσως τούτον ἰδόντες ἐστραπήσονται.

14 Ἰδόντες ὅμως αὐτόν οἱ γεωργοὶ, διελογίζοντο πρὸς ἑαυτοὺς, λέγοντες. Οὗτός ἐστιν ὁ κληρονομός. δεῦτε, ἀποκτείνωμεν αὐτόν, ἵνα ἡμεῖς γένηται ὁ κληρονομός.

15 Καὶ ἀποστέλλων αὐτὸν ἔξω τοῦ ἀμπελῶνος, ἀπέκτειναν αὐτόν. Τί ἔτι ποιήσω αὐτοῖς ὁ Κύριος τοῦ ἀμπελῶνος;

16 Ἐλθέτω καὶ ἀπολέσω τὸν ἀμπελῶνα τούτον.

281.

της, & δώσει τὸν ἀμπελῶνα ἄλλοις. Ἀκούσαυτες δὲ ἔκριν· Μὴ γένοιτο.

17 Οὗ δὲ ἐμβλέψας αὐτοῖς, εἶπε· Τί ἔν ἐστι τὸ γεγραμμένον ταῦτο· Δίδου, ἔν, ἀτεδωκίμωσάν οἱ οἰκοδομῶντες, ὅπως ἐγερῇθῃ ἐς κερὰν τὴν γυναῖκα;

18 Πᾶς ὁ πρῶν ἐπ' ὁκῶτον τ' ἔδωκε, συνθλασθήσεται· ἐφ' ὃν δ' ἂν πέσῃ, λικμήσῃ αὐτόν.

19 Καὶ ἐζήτησαν οἱ Ἀρχιερεῖς & οἱ Γραμματεῖς ἐπιβλέειν ἐπ' αὐτὸν τὰς χάρας ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, καὶ ἐφοβήθησαν τ' λαόν· ἐγνωσαν γὰρ ὅτι πρὸς αὐτὸς τῶν παραβολῶν ταύτων εἶπε.

20 Καὶ παρατηρήσαντες ἀπέστειλαν ἐγκαθέτας, ὁποκεινομένους ἐκείνῃς δικαίαις εἶναι· ἵνα ὑπὸ πλάξωται ὡς λόγος, ἐς τὸ παραδῆναι αὐτὸν τῇ ἀρχῇ & τῷ Ἰουδαίᾳ τῷ ἡγεμόνι.

21 Καὶ ἐπρωῶτησάν αὐτὸν, λέγοντες· Διδάσκων, οἶδαμεν ὅτι ὁρθοὺς λόγους & διδάσκεις, & ἡ λαμβάνεις πρόσωπον, αἰν' ἐπ' ἀληθείας τῶν ἰδῶν τ' Θεὸν διδάσκεις.

22 Ἐξέειπεν ἡμῖν Καίσαρι φόρον δεῖται, ἡ ἡ;

23 Κατανοήσας δὲ αὐτῶν τῶν πλῆρη γλῶσσαν, εἶπε πρὸς αὐτοὺς· Τί με πειράζετε;

24 Ἐπιδείξατέ μοι δητάρειν· πῶς ἔχει κικῶνα & ὑπὸ γραφῆς Ἀποκριθέντες δ' εἶπον· Καίσαρος.

25 Οὗ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἀπόδοτε τί νυν τὰ Καίσαρος Καίσαρι, & τὰ Θεῷ τῷ Θεῷ.

26 Καὶ κτ' ἰσχυρὰν ὑπὸ πλάξωται αὐτῷ ῥήματος ἐνδρῶν τ' λαόν· & θυμαίνοντες ὑπὸ τῇ ἀποκρισῇ αὐτοῦ, ἐσίσχον.

27 Προσιλθόντες δ' εἶπεν τῷ Σαδδουκαίων, (οἱ ἀντιλέγοντες ἀμάρτυσιν μὴ εἶναι,) ἐπρωῶτησάν αὐτὸν.

28 Λέγοντες· Διδάσκαλε, Μωσῆς ἐγραφετὶ ἡμῖν· Ἐάν τις ἀδελφὸς ἀποθῇ, ἔχων γυναῖκα, καὶ ὅπως ἀτεκνὸς ἀποθῇ, ἵνα λαβῇ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν γυναῖκα, & ἐξδραμῇσθ σπέρμα τὸ ἀδελφοῦ αὐτοῦ.

29 Ἐπτα ἦν ἀδελφοὶ ἡσάν· καὶ ὁ πρῶτος, λαβὼν γυναῖκα, ἀπέθαρεν ἀτεκνός.

30 Καὶ ἔλαβεν ὁ δεύτερος τὴν γυναῖκα, & ὅπως ἀπέθαρεν ἀτεκνός.

31 Καὶ ὁ τρίτος ἔλαβεν αὐτῶν· ὁσάυτως δὲ καὶ οἱ ἑπτὰ· καὶ οὐ κατέλιπον τέκνα, & ὁ ὀκτῷτος.

32 Τ' ἑσπερον δ' ἐπὶ τῶν ἀπένδων & ἡ γυναῖκα.

33 Ἐν τῇ ἡν ἀμάρτυσιν, πῶς αὐτῶν γίνεται γυναῖκα; οἱ γὰρ ἑπτὰ ἔσχον αὐτῶν γυναῖκα.

34 Καὶ ἀποκριθεὶς εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οἱ υἱοὶ τ' αἰῶνος τῆς γὰρ ἀνθρώπου & ὁκτανισκονται.

35 Οἱ δὲ καταβιβασθέντες ἄιδιος σφείνη τυχεῖν ,
 ἐ τῆς ἀναστάσεως τῆς ἐκ νεκρῶν , ἥτε γομφίῳ , ὅτε
 ὀκλαμίσκονται .

36 Οὔτε γὰρ ἀποθάρσειν ἐπὶ δύνανται · ἰσαγγελοι
 γὰρ εἰσι , ἐ υἱοὶ εἰσι ἢ Θεῷ , τῆς ἀναστάσεως
 υἱοὶ ὄντες .

37 Οἱ δὲ ἐνείρονται οἱ νεκροὶ , καὶ Μωσῆς
 ἐκνήυσεν ὑπὲρ τῆς βασιτείας , ὡς λέγει Κύριον τὸν
 Θεόν Ἀβραάμ , καὶ τὸν Θεὸν Ἰσαάκ , καὶ τὸν Θεὸν
 Ἰακώβ .

38 Θεοὶ δὲ ἢ ἐκ νεκρῶν , ἀλλὰ ζώοντων πάντες γὰρ
 αὐτοὶ ζῶσιν .

39 Ἀποκριθέντες ὅτινες τῷ γραμματέϊ ἐπὶ ἔργῳ
 διδάσκοντες , καλῶς εἶπες .

40 Οὐκ ἐπὶ δὲ ἐτόλμων ἐπερωτᾶν αὐτὸν ἡδέν .

41 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὴν · Πῶς λέγῃσι ἢ Χριστὸν
 υἱὸν Δαβὶδ εἶναι ;

42 Καὶ αὐτὸς Δαβὶδ λέγει ἐν βίβλῳ ψαλ-
 μῶν · Εἶπεν ὁ Κύριος τῷ Κυρίῳ μου · Κάθε ἐκ
 δεξιῶν μου ,

43 Ἔως ἂν θῶ τῆς ἐχθρῆς σου λαοπόδιον τῷ πο-
 δῶν σου .

44 Δαβὶδ ἢ Κύριον αὐτὸν καλεῖ , ἐ πῶς υἱὸς αὐ-
 τοῦ εἶναι ;

45 Ἀκνηστὸς δὲ πλὴτὸς τῷ λαῷ , εἶπε τοῖς μαθη-
 ταῖς αὐτοῦ ·

46 Προσέχετε ἀπὸ τῷ γραμματέϊ τῷ δε-
 λήτων πωπᾶτεϊν ἐν στολαῖς , καὶ φιλοῦντων ἀ-
 σπασμοὺς ἐν ταῖς ἀγοραῖς , καὶ πρωτοκαθεδρίας
 ἐν ταῖς συναγωγαῖς , καὶ πρωτοκλισίας ἐν ταῖς
 δεῖπνοις .

47 Οἱ καταδείκνυσι τὰς οἰκίας τῷ χηρῷ , καὶ προ-
 φάσκει μακρὰ προσδύχονται · ἅτοι λέγουσιναι πλεονέκτη-
 ρον κῆμα .

Κεφ. κα. 21.

1 Ἀναβλέψας δὲ εἶδε τὰς βάλλουσας τὰ δό-
 ρα αὐτῷ εἰς τὸ γαζοφυλάκιον πλου-
 σίους .

2 Εἶδε δὲ καὶ πᾶσα χήρᾳ πενιχρὰν βάλλουσαν ἐκεῖ
 δύο λεπτά .

3 Καὶ εἶπεν Ἀληθεὶς λέγων ὑμῖν , ὅτι ἡ χήρα ἡ
 πτωχὴ αὕτη πλεον πάντων ἔβαλεν .

4 Ἀπλῆτες γὰρ ἦτοι ἐκ πωπᾶτεϊν αὐτοῖς ἔβα-
 λον εἰς τὸ δοῦμα ἢ Θεῷ · αὕτη δὲ ἐκ πωπᾶτεϊν
 αὐτῆς ἀπλῆτα τὸν βίον ἢν εἶχε ἔβαλε .

5 Καὶ πᾶν λεγόντων πᾶσι ἢ ἱερῷ , ὅτι λίθους κα-
 λοῖς

λοῦς ἔτι ἀναθήκῃσι κεκόσμηται, εἶπε.

6 Ταῦτα ἃ θεωρεῖτε, ἐλθούσονται ἡμέραι ἐν αἷς οὐκ ἀφεθήσεται λίθος ὑπὸ λίθῳ, ὃς οὐ κατεκλυθήσεται.

7 Ἐπρωΐησαν δὲ αὐτὸν, λέγοντες. Διδάσκαλε, τότε οὗν ταῦτα ἔσαι; καὶ πὶ τὸ σημεῖον ὅτῳ μέλλῃ ταῦτα γίνεσθαι;

8 Οὗ δὲ εἶπε. Βλέπετε μὴ πληρῶθῃτε πολλοὶ ὅτι ἐλθούσονται ὑπὶ τῷ ὀνόματι μου, λέγοντες. Ὅτι ἐγὼ εἰμι. Ἐ δὲ κίριος ἤγγικε. μὴ οὖν παραβῆτε οἷσιν αὐτῶν.

9 Ὅτῳ δὲ ἀκούσῃτε πολέμῳ ἔτι ἀκαταστάσις, μὴ πτωθῆτε. δεῖ γὰρ ταῦτα γενέσθαι πρῶτον. ἀλλὰ οὐκ ὀφείλει τὸ τέλος.

10 Τότε ἐλεγεν αὐτοῖς. Ἐγερθήσονται ἔθνη ἐπὶ ἔθνος, καὶ βασιλεία ὑπὶ βασιλείᾳ.

11 Σεισμὸς τε μεγάλος κατὰ τόπους ἔτι λιμοὶ καὶ λοιμοὶ ἔσονται, φόβητρά τε ἔτι σημεῖα αἰσῶν ἡρώων μεγάλα ἔσαι.

12 Πρὸ δὲ τούτων πάντων ὑπὸ βασιλεὺς ἐφ' ὅμῳ τὰς χεῖρας αὐτῶν, ἔτι διώξει, ἀφελθόντες εἰς συναγωγὰς ἔτι φυλακὰς, ἀγομένῳ ὑπὶ βασιλεὺς ἔτι ἡγεμόνας, ἐνεκὸν τῷ ὀνόματι μου.

13 Ἀποβήσεται δὲ ὑμῶν εἰς μαρτύριον.

14 Θέσθε ἥν εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν, μὴ προμελετῆν ἀπολογηθῆναι.

15 Ἐγὼ γὰρ δώσω ὑμῶν σέμα ἔτι σφίδα, ἥ οἱ διηγήσονται ἀντιπεῖν, καὶ ἀντιπῆσαι πάντες οἱ ἀντικείμενοι ὑμῶν.

16 Παραδοθήσεσθε δὲ καὶ ὑπὸ γονέων, ἔτι ἀδελφῶν, καὶ συγγενῶν, καὶ φίλων. ἔτι θανατώσουσι ὑμῶν.

17 Καὶ ἔσισθε μισούμενοι ὑπὸ πάντων ἡνθρώπων ἔτι ἐνεκα μου.

18 Καὶ θεῖς ὅτι τῆς κεφαλῆς ὑμῶν οὐ μὴ ἀπολήται.

19 Ἐν τῇ ὑπομονῇ ὑμῶν κτήσεσθε τὰς ψυχὰς ὑμῶν.

20 Ὅτῳ δὲ ἴδῃτε κυκλιμένῳ ὑπὸ στρατοπέδῳ τῷ Ἱερουσαλὴμ, τότε γινώτε ὅτι ἤγγικεν ἡ ἐρήμωσις αὐτῆς.

21 Τότε οἱ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, φεύγετωσαν εἰς τὰ ὄρη. ἔτι οἱ ἐν μέσῳ αὐτῆς, ἀπχωρείτωσαν. ἔτι οἱ ἐν ταῖς χώραις, μὴ εἰσέρχεταισαν εἰς αὐτήν.

22 Ὅτι ἡμέραι ὀδυνησέων αὐταῖς εἰσι, ἔτι πληροῦσθαι πάντα τὰ γεγραμμένα.

23 Οὐκί δὲ ταῖς ὁδοῖς γαστρίαν ἔχουσας καὶ ταῖς θλαζούσαις ἐν ὁρείνοις ταῖς ἡμέραις. ἔσαι γὰρ ἀνάγκη μεγάλη ὑπὶ τῆς γῆς, καὶ ὄργη ἐν τῷ αἵματι τούτῳ.

24 Καὶ τεθῶνται εἰς οὐρανὸν μαχαίραις, ἃ αἰχμαλωποσθήσονται εἰς πάντα τὰ ἔθνη· καὶ Ἰερουσαλὴμ ἔσται παταμένη ὑπὸ ἐθνῶν, ἄχει πληρωθεὶς καιροὶ ἐθνῶν.

25 Καὶ ἔσται σημεῖον ἐν ἡλίῳ ἔσται σελήνῃ ἔσται ἄστροις· ἔσται ἡσπέρ τῆς γῆς συνοχὴ ἐθνῶν ἐν ἀπορείᾳ, ἡχῶσιν θαλάσσης ἔσται σάλην.

26 Ἀνθρώπων ἀνθρώπων ἀπὸ φάβης ἔσται προσδοκίαις τῶν ἐπερχομένων τῇ οἰκουμένη· αἱ δὲ δυνάμεις τῶν ἁρμάτων θαλάσσης ἔσονται.

27 Καὶ τότε ὄψονται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου ἐρχόμενον ἐν νεφέλῃ μετὰ δυνάμεων ἔσται δόξης πολλῆς.

28 Ἀρχομένων δὲ τούτων γίνεσθαι, ἀνκηρύσσετε καὶ ἐπύρατε τὰς κεφαλὰς ὑμῶν· διότι ἐγγίζει ἡ ἀπολύτρωσις ὑμῶν.

29 Καὶ εἶπε παραβολῇ αὐτοῖς· Ἰδετε τὴν συκὴν ἔσται πάντα τὰ δένδρα.

30 Ὅταν προβάλῃσιν ἡδὲ, βλέποντες ἀφ' ἑαυτῶν γινώσκειτε ὅτι ἡδὲ ἐγγύς τὸ θεῖον ἔστιν.

31 Οὕτω καὶ ὑμεῖς, ὅταν ἴδῃτε ταῦτα γινόμενα, γινώσκειτε, ὅτι ἐγγύς ἐστὶν ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ.

32 Ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἢ μὴ παρέλθῃ ἡ γενεὴ αὕτη, ἕως ἂν πάντα γένηται.

33 Ὁ ἥρως ἔσται ἡ γῆ παρελθούσονται, οἱ δὲ λόγοι μου ἢ μὴ παρέλθωσι.

34 Προσέχετε ὅτι ἑαυτοῖς μήποτε βαρυνθῶσιν ὑμῶν αἱ καρδίαι ἐν κραιπάλῃ καὶ μέθῃ καὶ μερίμναις βιωπαιῶν, ἔσται αἰφνίδιος ἐφ' ὑμῶν ἔσται ἡμέρα ὁκνήν.

35 Ὡς παγίς δὲ ἐπελεύσεται ἐπὶ πάντας τὸς κἀθήμενους ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς.

36 Ἀγρυπνεῖτε οὖν, ἐν παντὶ καιρῷ δεόμενοι, ἵνα καταξιώσῃτε ἀσφυγεῖν ταῦτα πάντα τὰ μέλλοντα γίνεσθαι, ἔσται σῶσθαι ἐμπροσθεν τοῦ κυρίου τοῦ ἀνθρώπου.

37 Ἦν δὲ τὰς ἡμέρας ἐν τῷ ἱερῷ διδάσκων· τὰς δὲ νύκτας ὑπερχόμενος ἠυλίζετο εἰς τὸ ὄρος τὸ καλῶμενον Ἐλαιῶν.

38 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς ὠρθεῖζε πρὸς αὐτὸν ἐν τῷ ἱερῷ ἀκούειν αὐτοῦ.

Κεφ. κβ'. 21.

1 Ἦν γὰρ δὲ ἡ εὐρατὴ τῶν ἀζύμων, ἡ λεγομένη Πάσχα.

2 Καὶ ἐξήτην οἱ Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Γραμματεῖς, τί πᾶς

173
πῶς ἀνέλθουσιν αὐτόν· ἐφοβήθητο γὰρ τὸν λαόν·

3 Εἰσῆλθε δὲ ὁ Σαταναὶ εἰς Ἰουδαν τὸν ἐπι-
καλούμενον Ἰσκαριώτην, ὅστις ἦν ὁ ἀποστόλου τοῦ δαι-
μονίου.

4 Καὶ ἀπελθὼν συνελάλησε τοῖς ἀρχιερεῦσι
καὶ τοῖς γραμματέσι, τὸ πῶς αὐτὸν παραδῆ-
αί τοις.

5 Καὶ ἐχάρησαν· καὶ σπεύδοντο αὐτῷ ἀργύρεον
δῆναι.

6 Καὶ ἤρωτολόγησε· ὃ ἐλθὼν δύκαριζόν· παραδῆ-
ναι αὐτὸν αὐτοῖς· ὡς ὅτι οὐκ ἔστιν.

7 Ἦλθε δὲ ἡ ἡμέρα τῇ ἀζύμῳ, ὥς ἡ ἕβδομος
σφαίρει τὸ πάχος.

8 Καὶ ἀπέστειλε Πέτρον καὶ Ἰωάννην, λέγων·
Πορεύεσθε ἐτοιμάσαντες ἡμῖν τὸ πῆσχα, ἵνα φα-
γωμεν.

9 Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Πού θέλεις ἐτοιμάσω-
μεν;

10 Οἱ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἰδοὺ, ἀπελθόντων ὑμῶν
εἰς τὴν πόλιν, συνιδήσεται ὑμῖν ἄνθρωπος κρα-
μύον ὑδάτος βυσσέων· ἀκολουθήσατε αὐτῷ εἰς τὴν οἰ-
κίαν· ὃ ἐκεῖ ἐστιν.

11 Καὶ ἐρᾷτε τῷ οἰκοδεσπότῃ τῆς οἰκίας· λέγει-
σαι ὁ διδασκαλός· Πῦρ ἐστὶ τὸ καταλύμα, ἐπεὶ τὸ πά-
χος μὲν τῇ μεθυστῇ μὴ φαγεῖν;

12 Καὶ κέκοιται ὑμῖν δεῖξαι ἀναγινῶν μέγαν ἐστρωμένον·
ὅκα ἐτοιμάσατε.

13 Ἀπελθόντες δὲ εὗρον καθὼς ἔρηκεν αὐτοῖς· καὶ
ἐτοίμασαν τὸ πάχος.

14 Καὶ ὅτε ἐγένετο ἡ ὥρα, ἀνέστη, ὃ οἱ δούλους
ἀπόστολοι σὺν αὐτῷ.

15 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτούς· Ἐπιθυμία ἐπεθυ-
μησα τοῦτο τὸ πάχος φαγεῖν μετ' ὑμῶν πρὸ τοῦ
με παθεῖν.

16 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἢ ἐκεῖ ἢ μὴ φάγω μετ' αὐτοῦ,
ἵνα ὅτε πληρωθῇ ἐν τῇ βασιλείᾳ τοῦ Θεοῦ.

17 Καὶ δεξιόμενος ποτήριον, δύχαριστήσας εἶπε· Δά-
βετε τῆτο, ὃ διαμερίσατε ἑαυτοῖς.

18 Λέγω γὰρ ὑμῖν ὅτι οὐ μὴ πῖω ἀπὸ τοῦ γυν-
γῆματος τῆς ἀμπέλου, ἵνα ὅτε ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ
ἔλθῃ.

19 Καὶ λαβὼν ἄρτον δύχαριστήσας ἔκλασε· καὶ
ἔδωκεν αὐτοῖς, λέγων· Τοῦτό ἐστι τὸ σῶμα μου,
τὸ ὑπὲρ ὑμῶν διδομένον· τῆτο ποιεῖτε εἰς τὴν ἐμὴν
ἀνάμνησιν.

20 Ὡς αὐτως ὃ τὸ ποτήριον, μὲν τὸ δεικνύεται, λέ-
γων· Τῆτο τὸ ποτήριον, ἡ κίνη διαθήκη ἐν τῷ αἵματι
μου, πρὸ ὑπὲρ ὑμῶν ὁρκυνομένων.

21 Πάλιν ἰδὼν, ἡ χεὶρ τοῦ πατρὸς διδόντος με μετ' ἐμῶν
ὅτι τῆς τραπέζης.

22 Καὶ ὁ μὲν Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου πορεύεται κατὰ τὸ ἐρασμένον· πλην καὶ τῷ ἀνθρώπῳ ὁκείτω δὲ ἡ ἀσχη-
δεύουσα.

23 Καὶ αὐτοὶ ἤρξαντο συζητεῖν πρὸς ἑαυτοὺς, τὸ, πῶς ἄρα εἴη ἢ αὐτῷ ὁ τῶτο μέλλων πρᾶσ-
σεν.

24 Εὔγενετο δὲ καὶ φιλονεικία ἐν αὐτοῖς, τὸ, πῶς αὐτῷ δοκεῖ εἶναι μέλλων.

25 Οὗ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Οἱ βασιλεῖς τῆς ἐθνῶν κυρεῖσθαι αὐτῷ· Ἐσὲ δὲ ὑποτάσσοντες αὐτῷ ὑπεργέται καλεῖνται.

26 Ὑμεῖς δὲ ἔχ' ἥτως· ἀλλ' ὁ μέλλων ἐν ὑμῖν, γενέσθω ὡς ὁ νεώτερος· Ἐσὲ δὲ ἡγούμενος, ὡς ὁ ἀρχικύβητος.

27 Τίς γὰρ μέλλων; ὁ ἀνακείμενος, ἢ ὁ ἀρχικύβητος; ἢ καὶ ὁ ἀνακείμενος; ἐγὼ δὲ εἰμι ἐν μέσῳ ὑμῶν ὡς ὁ ἀρχικύβητος.

28 Ὑμεῖς δὲ ἐστέ οἱ ἀσμενιζόμενοι μετ' ἐμῷ ἐν τοῖς πειρασμοῖς μου.

29 Καὶ ὁ δικαίωμας ὑμῖν, καθὼς διεθετό μοι ὁ Πατὴρ μου, βασιλεῖα.

30 Ἰνα ἐσθίητε καὶ πίνατε ὑπὲρ τῆς τρυφῆς μου ἐν τῇ βασιλείᾳ μου, Ἐκδοσθήτω ὑπὲρ ἐθνῶν, κείνοντες τὰς δώδεκα φυλὰς τοῦ Ἰσραὴλ.

31 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος· Σίμων, Σίμων, ἰδοὺ, ἐσθ' ἡ σκληρὰ ὑμῶν· καὶ συνίστα ὡς τὸν σκῆτον.

32 Εἰ γὰρ δὲ ἐδεήθην σὺν σὺν, ἵνα μὴ ἐκλείπῃ καὶ πῖσις σου· Ἐσὺ ποτε ὑπερέβας, ἐξέλεον τῆς ἀδελφῆς σου.

33 Οὗ δὲ εἶπεν αὐτῷ· Κύριε, καὶ σὺ ἔτοιμός εἰμι Ἐπὶ φυλακὴν Ἐπὶ θάνατον πορεύεσθαι.

34 Οὗ δὲ εἶπε· Λέγω σοι Πέτρε, οὐ μὴ φωνῇ σήμερον ἀλέκτωρ, πρὶν ἢ τρεῖς ἀπαρνήσῃ μὴ εἰδέναι με.

35 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ἀπίστεια ὑμῶν ὡς ἄτερ βαλάντιος, Ἐπὶ πῆρας, Ἐπὶ ἀποδημίαν, μὴ πῶς ὑπερήσατε; Οἱ δὲ εἶπον· Οὐδένος.

36 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς· Ἀλλὰ νῦν, ὁ ἔχων βαλάντιον, ἐράτω ὁμοίως Ἐπὶ πῆρας· Ἐσὲ δὲ μὴ ἔχων, πωλησάτω τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, Ἐπὶ ἀγορασάτω μάχαιραν.

37 Λέγω γὰρ ὑμῖν, ὅτι ἐπὶ τῶτο τὸ γεγραμμένον δεῖ τελεσθῆναι ἐν ἐμοί, τὸ· Καὶ μετὰ ὁνόμων ἐλογίσθη· Καὶ γὰρ τὰ πρὸς ἐμὴν τέλος ἔχον.

38 Οἱ δὲ εἶπον· Κύριε, ἰδὲ μάχαιραι αἰδε δύο. Οὗ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Ἰκλύνοντες.

39 Καὶ ὑπελθὼν ἐπορεύθη κατὰ τὰ ἔθνη εἰς τὰ

τὸ ὅσος τῶν Ἑλλήνων· ἠκολούθησαν δὲ αὐτῷ ὡς μα-
θῆται αὐτοῦ.

40 Γενόμενος δὲ ἐπὶ τὸ πηλόν, εἶπεν αὐτοῖς· Προσδύ-
χεσθε μετ' εἰσελθόντες εἰς πικρασμόν.

41 Καὶ αὐτὸς ἀπεσπασθὲν ἀπ' αὐτῶν ὡς λίθον βε-
λὴν, ὡς θεὸς τὰ γενέσθαι προσηύχετο,

42 Λέγων· Πατέρ, εἰ βύβλη παρενεγκῆν τὸ ποτήριον
τῆτο ἀπ' ἐμοῦ· πλὴν μὴ τὸ θέλημα μὲν, ἀλλὰ τὸ σὺν
γενέσθω.

43 Ὡφθῆ δὲ αὐτῷ ἄγγελος ἀπ' οὐρανοῦ ἐπιχρῶν
αὐτόν.

44 Καὶ γενόμενος ἐν ἀγανίᾳ, ὀκτανέστερον προσηύ-
χετο· ἐγένετο ὃ ὁ ἰδὼν αὐτῷ ὡς δρόμοι αἰμῶτος
καταβαίνοντες ἐπὶ τὴν γῆν.

45 Καὶ ἀναστὰς ἀπὸ τῆς προσδύχῃς, ἐλθὼν πρὸς
τῆς μαθητῶν αὐτοῦ, εὗρεν αὐτοὺς κοιμωμένους ἀπὸ τῆς
λυπῆς.

46 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί καθεύδετε; ἀνα-
στάντες προσδύχεσθε, ἵνα μὴ εἰσελθῆτε εἰς πικ-
ρασμόν.

47 Ἐπὶ ὃ αὐτῷ ἀλλήντος, ἰδὼν ἕχλος, ὡς λεγόμενος
Ἰούδας, ὡς τῶν δώδεκα, προήρχετο αὐτῷ, ὡς ἤγγιστε
τῷ Ἰησοῦ φιλήσαι αὐτόν.

48 Ὁ δὲ Ἰησοῦς εἶπεν αὐτῷ· Ἰούδα, φιλήσῃς τὸν Ἰη-
σοῦν ἀνδρῶν πρῶτον;

49 Ἰδόντες ὃ οἱ πᾶσι αὐτὸν τὸ ἰσόμενον, εἶπεν αὐ-
τῷ· Κόρει, εἰ πατάξωμεν σὺν μαχαίρᾳ;

50 Καὶ ἐπάταξεν εἰς τὴν γῆν αὐτῷ τὸ δαλὸν τῷ ἀρ-
χιερεῖ, ὡς ἀφείλεν αὐτῷ τὸ ὄψος τὸ δεξιόν.

51 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Ἰησοῦς, εἶπεν· Ἐστε
ἰσὺς τάχα· Καὶ ἀψάμενος τοῦ ὤπτις αὐτοῦ, ἰά-
σατο αὐτόν.

52 Εἶπε δὲ ὁ Ἰησοῦς πρὸς τῆς παρενεγομένης ἐπ'
αὐτόν ἀρχιερεῖς ὡς στρατηγῶν τῷ ἱεροῦ, καὶ πρεσ-
βυτέρους· Ὡς ἐπὶ λητῶν ὑπεληλύθατε μετὰ μα-
χαίρων ὡς ἐξύλων.

53 Καθ' ἡμέραν ὄντος μετ' ὁμοῦ ἐν τῇ ἱερᾷ,
καὶ ὑπετάνατε τὰς χεῖρας ἐπ' ἐμὲ· ἀλλ' αὕτη ὑμῶν
ἐστὶν ἡ ὥρα, ὡς ἡ ὑμεῖς τῷ σκοπῷ.

54 Συλλαβόντες ὃ αὐτόν ἤγαγον, ὡς εἰσάγαγον αὐ-
τόν εἰς τὸν οἶκον τῷ ἀρχιερεῖ· Ὁ δὲ Πέτρος ἠκο-
λέσθαι μακρόθεν.

55 Ἀψάντων δὲ πῦρ ἐν μέτρῳ τῆς αὐλῆς, ὡς
συγκαθίστασθαι αὐτῶν, ἐκείνητο ὁ Πέτρος ἐν
μέτρῳ αὐτῶν.

56 Ἰδὼσα δὲ αὐτόν παιδίσκη πρὸς καθήμενον ποδὸς
τὸ φῶς, ὡς ἀτενίσασα αὐτῷ, εἶπε· ὡς ὅστις σὺν
αὐτῷ ἦν.

57 Ὁ δὲ ἠρτήσατο αὐτόν, λέγων· Γύναι, ἐκ οἷδα
αὐτόν.

58 Καὶ μὲν Βραχὺ ἕτερος ἰδὼν αὐτὸν, εἶπεν. Καὶ σὺ δὲ αὐτῷ εἶ. Ὁ δὲ Πέτρος εἶπεν· Ἀνδρῶπε, ἢ τίς εἰμί.

59 Καὶ διαστάσης ὡς αἰώρας μίαις, ἄλλος τις δι᾽ ἐχυρίζετο, λέγων· Ἐπὶ πλῆθείας ἐστὸς μετ' αὐτῷ ἦν· ἐν δὲ Γαλιλαίᾳ ἐσιν.

60 Εἶπε δὲ ὁ Πέτρος· Ἀνδρῶπε, ἢ οἶδα ὃ λέγεις. Καὶ ὠρῶ χεῖμα, ἐπὶ λαλῶντος αὐτοῦ, ἐφώνησεν ὁ ὁ ἀλέκτωρ.

61 Καὶ γραφαῖς ὁ Κύριος ἐπέβλεψε πρὸς Πέτρου· καὶ ὑπεμνήσθη ὁ Πέτρος τοῦ λόγου τοῦ Κυρίου, ὡς εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι πρὶν ἀλέκτωρα φωνῆσαι, ἀπαρτήσῃς με τρίς.

62 Καὶ θξελθὼν ἔξω ὁ Πέτρος ἔκλωσε πτερὰ.

63 Καὶ οἱ ἄνδρες οἱ συνάχοντες τῷ Ἰησοῦ, ἐνέπαυζον αὐτῷ, δέοντες.

64 Καὶ περικαλύψαντες αὐτὸν, ἐτυπτον αὐτῷ τὸ πρόσωπον· καὶ ἐπηρώτων αὐτὸν, λέγοντες· Προφήτουσάν τις ἐσιν ὁ παῖσάς σε.

65 Καὶ ἕτερα πολλὰ βλασφημοῦντες ἔλεγον εἰς αὐτόν.

66 Καὶ ὡς ἐγένετο ἡμέρα, συνέχθη τὸ πρεσβυτέραιον τῷ λαῷ, ἀρχιερεῖς τε καὶ γραμματεῖς, καὶ ἀνήγαγον αὐτόν εἰς τὸ συνέδριον ἐαυτῶν.

67 Λέγοντες· Εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστός, εἰπὲ ἡμῖν. Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Ἐὰν ὑμῖν εἴπω, ἢ μὴ πιστεύσητε.

68 Ἐὰν ὅτι ἐρωτήσω, ἢ μὴ ἀποκριθῇτέ μοι, καὶ ἀπολεύσῃτε.

69 Ἀπὸ τῶν νῦν ἔσμεν ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου καθήμενος ἐκ δεξιῶν τῆς δυνάμεως τοῦ Θεοῦ.

70 Εἶπον δὲ πάντες· Σὺ οὖν εἶ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ; Ὁ δὲ πρὸς αὐτὸς εἶπεν· Ὑμῖν λέγετε ὅτι ἐγώ εἰμι.

71 Οἱ δὲ εἶπον· Τί ἐπὶ χρεῖαν ἔχομεν μαρτυρεῖσαι; αὐτοῖ γὰρ ἠκούσαμεν ἀπὸ τοῦ σέμνους αὐτοῦ.

Κεφ. κγ'. 23.

1 **Κ**ΑΙ ὁμῶς αὖ ἅπαν τὸ πλῆθος αὐτῷ, ἄγαγεν αὐτόν ὅπου τῷ Πιλάτῳ.

2 Ἡρῶδης δὲ κατηγορεῖ αὐτοῦ, λέγοντες· Τῷτον εὗρομεν ἀσφριφόρον τὸ ἔθνος, καὶ κολύοντα καὶ σπείρον φόβος διδόναι, λέγοντα ἐαυτὸν Χριστὸν Βασιλέα εἶναι.

3 Ὁ δὲ Πιλάτος ἐπηρώτησεν αὐτόν, λέγων· Σὺ ἢ Ἰσρα-

ὁ βασιλεὺς τῆς Ἰουδαίας ; Οὗ δὲ ἀποκριθεὶς αὐτῷ εἶπεν ὁ λέγων.

4 Οὗ ὁ Πιλάτος εἶπε πρὸς τὸν ἀρχιερεῖς ὅτι τὸν ὀχλόν· οὐδὲν ἔρεσκαι αἰπὸν ἐν τῷ Ἀνδρῶνι τῷ τῷ.

5 Οἱ δὲ ἐπύχον, λέγοντες· Οὗ Ἀμαρτωλὸν τὸν λαόν, διδάσκων καὶ ὅλον τὴν Ἰουδαίαν, ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας ἕως ὧδε.

6 Πιλάτος δὲ ἀκήσας Γαλιλαίαν, ἐπηρώτησεν αὐτὸν ὁ Ἀνδρῶν Γαλιλαῖος ἐστίν.

7 Καὶ ἐπύχον ὅτι ὁ Ἰησοῦς Ἡρώδης ἐστίν, ἀνέπεμψεν αὐτὸν πρὸς Ἡρώδην, ὅτι αὐτὸν ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν ταῖς ταῖς ἡμέραις.

8 Οὗ δὲ Ἡρώδης, ἰδὼν τὸν Ἰησοῦν, ἐχάρη λίαν· ἦν γὰρ θέλων ἵκεν ἰδεῖν αὐτόν· διὰ τὸ ὅτι ἀκήσας πολλὰ περὶ αὐτοῦ. καὶ ἠλπίζετο σημεῖον ἰδεῖν ἐκ αὐτοῦ γινόμενον.

9 Επηρώτα ὁ αὐτόν ἐν λόγοις ἱκανοῖς· αὐτὸς ὁ δὲ οὐκ ἀπεκρίνατο αὐτῷ.

10 Εἰς ἡμέραν ὁ οὗ ἀρχιερεῖς ὁ οὗ γραμματεῖς αὐτοῖς κατηγοροῦντες αὐτῷ.

11 Εξουθενήσας ὁ αὐτόν ὁ Ἡρώδης συντοῖς στρατοῦ αὐτοῦ, ὁ ἐμπαίξας, περὶβαλὼν αὐτόν ἐσθῆτα λαμπράν, ἀνέπεμψεν αὐτόν τῷ Πιλάτῳ.

12 Ἐγένοντο ὁ φίλοι ὁ, τε Πιλάτος ὁ ὁ Ἡρώδης ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ μετ' ἀλλήλων· προὔπῃρχεν γὰρ ἐν ἑσθρᾷ ἐντε πρὸς ἑαυτῶν.

13 Πιλάτος ὁ, συγκαλεσάμενος τὸν ἀρχιερεῖς ὁ τὸν ἀρχόντας ὁ τὸν ἄνδρα.

14 Εἶπε πρὸς αὐτοὺς· Προσβλέψατέ με τὸν ἄνθρωπον τούτον, ὡς ἀποστέφοντα τὸν λαόν· ὁ ἰδὼν, ἐγὼ ἐνώπιον ὑμῶν ἀνακρίνας, ἴδεν εὖρον ἐν τῷ ἀνθρώπῳ τῷ αἰπὸν, ὃν κατηγορεῖτε κατ' αὐτόν.

15 Ἀλλ' ἴδὲ Ἡρώδης· ἀνέπεμψα γὰρ ὑμᾶς πρὸς αὐτόν, καὶ ἰδὼν, ἴδεν ἄξιον θανάτου ἐστὶ τετραχόμενον αὐτόν.

16 Παιδεύσας ὁ αὐτόν ἀπελύσας.

17 Ἀνάγκην δὲ εἶχεν ἀπολύειν αὐτοῖς κατὰ ἑορτὴν ἑνῶν.

18 Ἀνέκραζον δὲ παμπληθεῖς, λέγοντες· Ἀφίρε τόν, ἀπόλυτον ὁ ἡμῖν τὸν Βαραββᾶν.

19 Ὅστις ἦν διὰ τῶν πινά γετομένων ἐν τῇ πόλει ὁ φόνος βεβλημένος εἰς φυλακὴν.

20 Πάλιν ὁ Πιλάτος προσεφώνησε, θέλων ἀπολύσαι τὸν Ἰησοῦν.

21 Οἱ ὁ ἐπιφώνοντες, λέγοντες· Σταύρωσον, σταύρωσον αὐτόν.

22 Οὗ ὁ τρίτος εἶπε πρὸς αὐτούς· Τί γὰρ κακὸν ἔποιτσεν ὁ αὗτος ; ἴδεν αἰπὸν θανάτου εὖρον ἐν αὐτῷ· παιδεύσας ὁ αὐτόν ἀπελύσας.

23 Οὗ δὲ ἐπικέκρυτο φωνάκις μεγάλης, αἰτῆμένοι ἀπὸ τοῦ σπουδαίου· ἔκατιχον αἱ φωναὶ αὐτῶν καὶ τῷ ἀρχιερεϊ.

24 Οὗ δὲ Πιλάτος ἐπέκρανε γνέσθαι τὸ αἶτημα αὐτῶν.

25 Ἀπέλυσεν δὲ αὐτοῖς τὸν Δαυὶδ σάτιν καὶ φόνον βαβυλωνίον εἰς τὴν φυλακὴν, ἐν ᾗ τούτου· τὸ δὲ Ἰησοῦν παρέδωκε τῷ βασιλεῖ αὐτῶν.

26 Καὶ οὗτος ἀπηγάγεν αὐτὸν, ὑπὸ πλοβόμοις Σίμωνος τινος Κυρηναίου, ἔρχομενος ἀπὸ ἀγροῦ, ἐπέθηκεν αὐτῷ τὸ σπαρὸν, φέρειν ὀπίσθεν τὸ Ἰησοῦν.

27 Ἡκολούθει δὲ αὐτῷ πολὺ πλῆθος τῶν καὶ τῶν γυναικῶν· αἱ καὶ ἐκόπτατο ἑξορῆσαι αὐτόν.

28 Στραφεῖς δὲ πρὸς αὐτὰς ὁ Ἰησοῦς, εἶπε· Ουγαπῆρες Ἰερουσαλὴμ, μὴ κλαίετε ἐπ' ἐμὲ, πληρὴ ἐφ' ἑαυτὰς κλαίετε, ἔτι τὰ τέκνα υἱῶν.

29 Οἳ γὰρ ἰδοὺ, ἔρχονται ἡμέραι, ἐν αἷς ἐμῶσι· Μνησθήσονται αἱ σείραι, καὶ κοιλίαι αἱ ἃς ἐγέννησαν, καὶ μηροὶ αἱ ἃς ἐθήλησαν.

30 Τότε ἀρξονται λέγειν τοῖς ὄρεσι· Πέσετε ἐφ' ἡμᾶς· καὶ τοῖς βουνοῖς· Καλύψατε ἡμᾶς.

31 Οἳ γὰρ εἰ ἐν τῇ ὑγρῇ ξυλῇ ταῦτα ποιεῖσιν, ἐν τῇ ξερῇ τί γίνονται;

32 Ἦγοντο δὲ καὶ ἕτεροι δύο κακούργοι σὺν αὐτῷ ἀπαρεθῆναι.

33 Καὶ ὅτε ἀπῆλθον ὑπὸ τὸν τόπον τὸν καλούμενον Κρανίου, ὅκει ἐσταύρωσαν αὐτὸν καὶ τοὺς κακούργους· ὃν μὲν οὐκ δεξιῶν, ὃν δὲ ἄριστερων.

34 Οὗ δὲ Ἰησοῦς ἔλεγε· Πάτερ, ἄφες αὐτοῖς· σὺ γὰρ οἶδας τί ποιοῦσι. Διμεμεζόμενοι δὲ τὰ ἱμαῖα αὐτῶν, ἐβάλλον κλήρον.

35 Καὶ εἰσῆκει ὁ ἁλὸς θειρῶν· ὁρμηκῆσαι δὲ καὶ οἱ ἀρχόντες σὺν αὐτοῖς, λέγοντες· Ἄλλως ἐσώτε, σῶσά τω ἑαυτὸν, εἰ ἡ τὰς ἐσιν ὁ Χριστὸς ὁ τὸ Θεοῦ ἀλεκτόν.

36 Εἰπέτωσαν δὲ αὐτῷ καὶ οἱ τραυιῶται, προσερχόμενοι, καὶ ὄξος προσφέροντες αὐτῷ.

37 Καὶ λέγοντες· Εἰ σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων, σῶσον σεαυτὸν.

38 Ἦν δὲ ἡ ὑπεγραφή γεγραμμένη ἐπ' αὐτῷ ἑβραϊστικῇ, ἑλληνικῇ καὶ ῥωμαϊκῇ, καὶ ἑβραϊστικῇ, Οὗτος ἐστὶν ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων.

39 Εἷς δὲ τῶν κρεμασθέντων κακούργων ἐβλασφήμη αὐτὸν, λέγων· Εἰ σὺ εἶ ὁ Χριστὸς, σῶσον σεαυτὸν καὶ ἡμᾶς.

40 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ ἕτερος ἐπετίμη αὐτῷ, λέγων· Οὐδέ φοβῆσαι σὺ τὸν Θεόν, ὅτι ἐν τῇ αὐτῇ κρίματι πεί;

41 Καὶ ἡμεῖς μὲν δικαίως· ἄξια γὰρ ὧν ἐπράξαμεν

ἔχμεν ἀπολαμβάνομεν . ὅτος δὲ ἔδεν ἄποτον ἔπραξε .

42 Καὶ ἔλεγεν πρὸς Ἰησοῦν . Μνησθητί μου , Κύριε , ὅταν ἔλθῃς ἐν τῇ βασιλείᾳ σου .

43 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς . Ἀμὲν λέγω σοι , σήμερον μετ' ἐμὲ ἔσθι ἐν τῷ πνεύματι .

44 Ἦν ὅμως ὥρα ἕκτη , ἡ σκοτία ἐγένετο ἰφ' ὀλίγῳ τῷ γῆν , ἕως ὥρας συνάτης .

45 Καὶ ἐσκοτίσθη ὁ ἥλιος , ἡ ἐσχίσθη τὸ καταπέτασμα τῆς θύρας μέσον .

46 Καὶ φωνήσας φωνῇ μεγάλῃ ὁ Ἰησοῦς ἔειπε . Πάντες , εἰς χεῖράς μου παραδοθήσονται τὸ πνεῦμά μου . Καὶ ταῦτα εἰπὼν ἐξεπνέυσεν .

47 Ἰδὼν ὅς ἐκατόνταρχος τὸ γυνώμενον , ἐδόξαζε τὸν Θεόν , λέγων . Οὕτως ὁ ἀνθρώπος ὅτος δίκαιος ἦν .

48 Καὶ πάντες οἱ συμπαραγινώσκοντες ὅχλοι ὑπὲρ τῆς θεωρίας ταύτης , θεωρῶντες τὰ γινώμενα , τύπτοντες ἐαυτῶν τὰ στήθη ὑπέσπεφον .

49 Εἰσηκασάν ὅ πάντες οἱ γνωστοὶ αὐτοῦ μακρόθεν , καὶ γυναῖκες αἱ συνακολουθήσασαι αὐτῷ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας , ἑώραται ταῦτα .

50 Καὶ ἰδὼν , ἀνὴρ ὀνόματι Γεωσῆφ , βυλούτης ὑπαρχών , ἀνὴρ ἀγαθὸς ἡ δίκαιος ,

51 (Οὗτος ἐκ ἦν συγκατατεθειμένος τῇ βουλῇ καὶ τῇ πράξει αὐτοῦ ,) ἀπὸ Ἀρριμαθαίας πόλεως τῆς Γαλιλαίας ὅς ἡ προτεδέχετο ἡ αὐτὸς τῷ βασιλεὶν τῷ Θεῷ .

52 Οὗτος προσελθὼν πρὸς Πιλάτῳ , ᾐτήσατο τὸ σῶμα τῷ Ἰησοῦ .

53 Καὶ καθελὼν αὐτὸ ἐνετύλιξεν αὐτὸ σινδόνι , ἡ ἐθήκεν αὐτὸ ἐν μνήματι λαξούτῃ , ἡ ἐκ ἦν ἡδέτω ἡ δὲ κείνῳς .

54 Καὶ ἡμέρας ἦν παρασκευὴ , ἡ Σάββατον ἐπέφωσκε .

55 Κατακολουθήσασαι δὲ ἡ γυναῖκες , αἵτινες ἦσαν συνεληλυθῆσαι αὐτοῖς ἐκ τῆς Γαλιλαίας , ἐθεάσαντο τὸ μνημεῖον , καὶ ὡς ἐτέθη τὸ σῶμα αὐτοῦ .

56 Ὑποσπείσασαι δὲ ἡτοίμασαν ἀρώματα καὶ μύρα . ἡ τὸ μὲν Σάββατον ἡσυχασάν κατα τῷ ἐντολῇ .

Κεφ. κδ' 24.

1 Τῇ ἡμέρᾳ τῇ Σαββάτῳ, ὁρθεὶς βαθείας ἤλ-
θον ἐπὶ τὸ μνημεῖον, φέρουσαι αὐτὸν ἡτοιμασάν-
τες ἀρώματα· καὶ τινες σὺν αὐταῖς.

2 Εὗρον δὲ τὸν λίθον ἀποκεκλισμένον ἀπὸ τῆς μνη-
μεῖου.

3 Καὶ εἰσελθόνσαι ἔχοντες εὗρον τὸ σῶμα τῷ Κυρίῳ
Ἰησοῦ.

4 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀπορεῖσθαι αὐτὰς περὶ τῆ-
της, καὶ ἰδὼν, δύο ἄνδρες ἐπέσταν αὐταῖς ἐν ἐσθῆσε-
σιν ἀσραπτύσαις.

5 Ἐμφόβων δὲ ἡχομένων αὐτῶν, ἔειπεν αὐταῖς τὸ
πρῶτον εἰς τὴν γῆν, εἶπον πρὸς αὐτὰς· Τί ζητεῖτε
τὸν ζῶντα μετὰ τῶν νεκρῶν;

6 Οὐκ ἐστὶν ὧδε, ἀλλ' ἠγέρθη· μνησθήτε ὡς ἐλά-
λησεν ὑμῖν, ἐτι ὡς ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ.

7 Λέγων· Ὅτι δεῖ τὸν Υἱὸν τοῦ ἄνθρώπου πα-
ρυσθῆναι εἰς χεῖρας ἀνθρώπων ἀμαρτωλῶν, ἑταρω-
θῆναι, ἑ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ ἀναστῆναι.

8 Καὶ ἐμνήσθησαν τῶν ῥημάτων αὐτοῦ.

9 Καὶ ὑποσέψασαι ἀπὸ τοῦ μνημεῖου, ἀπήγ-
γυλῶν ταῦτα πάντα τοῖς ἑνδεκά ἑ πασι τοῖς λοι-
ποῖς.

10 Ἦσαν δὲ ἡ Μαγδαλὴ Μαρία καὶ
Ἰωάννα καὶ Μαρία Ἰακώβου, καὶ αἱ λοιπαὶ
σὺν αὐταῖς, αἱ ἔλεγον πρὸς τὴν ἀποστόλου
ταῦτα.

11 Καὶ ἐφάρυσαν ἐνώπιον αὐτῶν ὥστε λῆρος τὰ ῥή-
ματα αὐτῶν, ἑ ἠπίσαν αὐταῖς.

12 Ὁ δὲ Πέτρος ἀναστὰς ἔδραμον ἐπὶ τὸ μνη-
μεῖον· ἑ ὡρμήσας βλέπει τὰ ὀθόνια κείμενα μό-
να· καὶ ἀπῆλθε, πρὸς ἑαυτὸν θαυμάζων τὸ γε-
γονός.

13 Καὶ ἰδὼν, δύο ἦσαν αὐτῶν ἦσαν πορεύμενοι
ἐν αὐτῇ τῇ ἡμέρᾳ εἰς κώμην ἀπέχουσαν τα-
δίους ἐξήκοντα ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ, ἡ ὄνομα Ἐμ-
μαῦς.

14 Καὶ αὐτοὶ ὁμίλουν πρὸς ἀλλήλους περὶ πάντων τῶν
συμβεβηκότων τῶν.

15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ὁμιλεῖν αὐτῆς ἑ συζη-
τῆς, ἑ αὐτὸς ὁ Ἰησοῦς ἐγγίσας σιωποῦντος αὐ-
τοῦ.

16 Οἱ δὲ ἐφθαλμοὶ αὐτῶν ἐκρατῆντο ἑ μὴ ὁπηνύ-
ναι αὐτόν.

17 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν· Τίς εἰς οἱ λόγοι ὑποῖς εἰ
ἀντι-

ἀντιβάλλετε πρὸς ἀλλήλους πεπαιστωμένοι, ὡς εἰς σκω-
 θρωποί·

18 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ εἰς τὸ ὄνομα Κλεόπας, εἶπε
 πρὸς αὐτόν· Σὺ μόνος παροικεῖς ἐν Ἱερουσαλὴμ,
 ὃ ἢκ ἐργάζεσθαι τὰ ὑμῶν ἐν αὐτῇ ἐν ταῖς ἡμέραις
 ταύταις;

19 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ποῖα; Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Τὰ
 πρὸς Ἰησοῦν τὸν Ναζαρεν, ὃς ἐγένετο ἀνὴρ προφῆτης,
 δυνατὸς ἐν ἔργῳ καὶ λόγῳ ἐναντίον τοῦ Θεοῦ, καὶ πάντες
 τὸ λαοῦ.

20 Ὅπως τε παρέδωκεν αὐτὸν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ
 ἀρχόντες ἡμῶν εἰς κρίμα θανάτου, καὶ ἐσταύρωσαν αὐ-
 τόν.

21 Ἡμεῖς δὲ ἠλπίσαμεν ὅτι αὐτὸς ἐστὶν ὁ μέλλων
 λυτῆσαι τὸν Ἰσραὴλ· ἀλλὰ γε σὺν πάνσι ταῖς
 ταύταις ταῦταις ἡμέραις ὡς σήμερον ἀφ' ἧς ταῦτα ἐ-
 γένετο.

22 Ἀλλὰ καὶ γυναῖκες τινες ἦν ἐμῶν ἐ-
 ξερχομένων ἡμῶν, γνωσθῆναι ὀρθροῦν ὅτι τὸ μετα-
 μῆν.

23 Καὶ μὴ δοῦναι τὸ σῶμα αὐτῷ, ἵνα ἔλθῃ,
 καὶ ἐπιταξάτω ἀγγέλων εὐρακέναι, οἱ λέγουσιν αὐ-
 τὸν ζῆν.

24 Καὶ ἀπηλθόντινες τῶν σὺν ἡμῖν ὅτι τὸ μετα-
 μῆν, καὶ εὗρον ὅτι καθὼς καὶ αἱ γυναῖκες εἶπον· αὐτὸς
 δὲ ἦν ζῶν.

25 Καὶ αὐτὸς εἶπε πρὸς αὐτάς· Ὡς ἀδύνατοι καὶ βρα-
 δύναι τῇ καρδίᾳ τὸ πιστεῖν ἐπὶ πάντιν οὗς ἐλάλησαν οἱ
 προφῆται.

26 Οὐχὶ ταῦτα εἶδε παθεῖν τὸ Χριστόν, καὶ ἐσταύ-
 ρῆναι εἰς τὸ δόξαι αὐτόν;

27 Καὶ ἀρχαῖος ἀπὸ Μωσέως, καὶ ἀπὸ πάντων τῶν
 Προφητῶν, διακηρύσσας αὐτοῖς ἐν πάσαις ταῖς γραφαῖς
 τὰ περὶ αὐτοῦ.

28 Καὶ ἤγγισαν εἰς τὸ κώμα ἃ ἐπορεύοντο· καὶ αὐ-
 τὸς προεπορεύετο πορεύοντες πρόωκοντες.

29 Καὶ παρεβιάσθη αὐτὸν, λέγοντες· Μεί-
 νον μεθ' ἡμῶν, ὅτι πρὸς ἑσπέρην ἐσὶ, καὶ κέκλι-
 κεν ἡ ἡμέρα· καὶ εἰσῆλθε τῇ μετὰ σὺν αὐ-
 τοῖς.

30 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κατακλιθῆναι αὐτὸν μετ' αὐ-
 τῶν, λαβὼν τὸ ἄρτον εὐλόγησε, καὶ κλάσας ἐπέδωκε
 αὐτοῖς.

31 Αὐτῷ δὲ διωκοίχθησαν οἱ ἀφθνητοὶ, καὶ
 ἐπέγνωσαν αὐτόν· καὶ αὐτὸς ἀφάπτως ἐγένετο αὐ-
 τοῖς.

32 Καὶ εἶπον πρὸς ἀλλήλους· Οὐχὶ ἡ καρδία ἡμῶν
 κακομένη ἦν ἐν ἡμῖν, ὥς ἐλάλει ἡμῖν ἐν τῇ ὁδῷ, καὶ
 εἰς διακηρύσσεν ἡμῖν τὰς γραφάς;

33 Καὶ ἀμαρτάντες αὐτῇ τῇ ὥρᾳ, ὑπέσρεψάν ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἔειπον συνηθροισμένους τῆς ἐνδεκά ἑταίρων αὐτοῦ.

34 Λέγοντας· Ὅτι ἡγέρθη ὁ Κύριος ὄντως, ἔψαλλεν Σίμωνι.

35 Καὶ αὐτοὶ διεκλόνοντο τὰ ἐν τῇ ὁδῷ· ἔως ἐγγίνοντο αὐτοῖς ἐν τῇ κλασείᾳ τῶν ἁγίων.

36 Ταῦτα δὲ αὐτῷ λαλόντων, αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς ἔειπεν ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ λέγει αὐτοῖς· Εἰρήνη ἔμιν.

37 Πτοηθέντες δὲ ἔμφοβοι ἡνόμενοι, ἐδόκουν πρὸς αὐτὸν θεωρεῖν.

38 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Τί τεταραγμένοι ἐστέ, ἔτι τί ἀλογισμοὶ ἀναβαίνουσιν ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν;

39 Ἰδετε τὰς χεῖρας μου ἔν τῆς πόδας μου· ὅτι αὐτὸς ἐγὼ εἰμι. ψαλφῆσατέ με καὶ ἴδετε, ὅτι πνεύμα σαρκὸς ἔσθ' ἡ ἐξ ἐμοῦ, καθὼς ἐμὲ θεωρεῖτε ἵδοντα.

40 Καὶ τοῦτο εἰπὼν ἐπέθηκεν αὐτοῖς τὰς χεῖρας ἔν τῆς πόδας.

41 Ἐπὶ δὲ ἀπιστούντων αὐτῷ ἀπὸ τῆς χαρῆς, ἔθιμαζόντων, εἶπεν αὐτοῖς· Ἐχέτε πνεύμα βρώσιμον ἐν ὑμῖν;

42 Οἱ δὲ ἐπέδωκαν αὐτῷ ἰχθύος ὑπὲρ μέρος, ἔσθ' ὁ μελιωρὶς κρημνῶν.

43 Καὶ λαβὼν, ἐνώπιον αὐτῶν ἔφαγεν.

44 Εἶπε δὲ αὐτοῖς· Οὗτοι οἱ λόγοι θ' ἰσχυρῶς πρὸς ὑμᾶς ἐπὶ ὧν σὺν ἡμῖν, ὅτι δὴ πληροῦσθαι πάντα τὰ γεγραμμένα ἐν τῇ γράμῃ Μωσέως, ἔν τῇ προφῆταις, καὶ ψαλμοῖς πατρὸς ἐμοῦ.

45 Τότε διήνοιξεν αὐτῷ τὸ βιβλίον, καὶ συνεῖναι τὰς γραφάς.

46 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ἔγωγε γέγραπται, καὶ ἔτι εἶμι παθεῖν ὑπὲρ Χριστοῦ, ἔν τῇ Ἱερουσαλὴμ τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ.

47 Καὶ κηρυχθήσεται ὅτι τῷ ὀνόματι αὐτοῦ μετάνοιαν ἔσθ' ἀφεσὶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν πάντα τὰ ἔθνη, ἀρχαίον ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ.

48 Ὑμεῖς δὲ ἐστέ μάρτυρες τούτων.

49 Καὶ ἰδὼν, ἐγὼ ἀποσέλλω τὼ ἐπαγγελίας τῷ Πατρὶ μὴ ἐφ' ὑμᾶς· ὑμεῖς δὲ καθίστατε ἐν τῇ πόλει Ἱερουσαλὴμ ἕως ἃς ἐκδύσησθε δύναμιν τοῦ ἁγίου.

50 Εξήγαγε δὲ αὐτὸς ἔξω τὰς εἰς Βηθάνιαν· καὶ ἐτίνας τὰς χεῖρας αὐτοῦ, εὐλόγησεν αὐτούς.

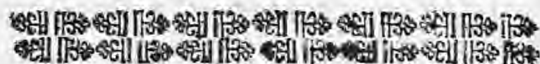
51 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀιολογῆν αὐτὸν αὐτοῖς.

τούς, διέσκη ἀπ' αὐτῶν, καὶ ἀνεφέρετο εἰς τὸν ἑράμιον.

52 Καὶ αὐτοὶ προτινύσαντες αὐτὸν, ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερουσαλὴμ μὲν χαρᾶς μεγάλης.

53 Καὶ ἦσαν διαπάρτος ἐν τῷ ἱερῷ, αἰτῶντες ἐὺ δόλογοντες τὸ Θεόν. Ἀμήν.





ΤΟ ΚΑΤΑ ΓΙΩΑΝΝΗΝ

ΕΤ' ΑΓΓΕΛΑΙΟΝ.

Κεφ. κ. Ι.

- Ε**Ν ἀρχῇ ἦν ὁ Λόγος, ἔσθ' ὁ Λόγος ἦν πρὸς
 ἃ Θεόν, ἔσθ' Θεὸς ἦν ὁ Λόγος.
 2 Οὗτος ἦν ἐν ἀρχῇ πρὸς ἃ Θεόν.
 3 Πάντα δι' αὐτοῦ ἐγένετο· ἔσθ' χάρις
 αὐτοῦ ἐγένετο καὶ ἐν ὁ γεγονός.
 4 Ἐν αὐτῷ ζωὴ ἦν, ἔσθ' ἡ ζωὴ ἦν τὸ φῶς τῆς ἀν-
 θρώπων.
 5 Καὶ τὸ φῶς ἐν τῇ σκοτίᾳ φαίνει, ἔσθ' ἡ σκοτία
 αὐτὸ ἢ κατέλαβεν.
 6 Ἐγένετο ἀνθρώπος ἀπεσταλμένος παρὰ Θεοῦ, ὄνο-
 μα αὐτοῦ Γιωάννης.
 7 Οὗτος ἦλθεν εἰς μαρτυρίαν, ἵνα μαρτυρή-
 σῃ παρὰ τῷ φωτός, ἵνα πάντες πιστεύσωσι δι' αὐ-
 τόν.
 8 Οὐκ ἦν ἐκκλῆτος τὸ φῶς, ἀλλ' ἵνα μαρτυρήσῃ πε-
 ρὶ τῷ φωτός.
 9 Πᾶν τὸ φῶς τὸ ἀληθινόν, ὃ φωτίζει πάντα ἀνθρώ-
 πον ἐρχόμενον εἰς ἃ κόσμον.
 10 Ἐν τῷ κόσμῳ ἦν, καὶ ὁ κόσμος δι' αὐτοῦ ἐγένετο·
 καὶ ὁ κόσμος αὐτὸν ἢ ἐκ ἔγνω.
 11 Εἰς τὰ ἱερά ἦλθε, ἔσθ' οἱ ἴδιοι αὐτὸν ἢ παρέ-
 λαβον.
 12 Οἱ οἱ ἔλαβον αὐτὸν, ἔδωκεν αὐτοῖς ἱεροῦ
 τέκνα Θεοῦ γενέσθαι, τοῖς πιστεύουσιν εἰς τὸ ὄνομα
 αὐτοῦ.
 13 Οἱ οἱ ἔκ ἁιμάτων, καὶ ἐκ θελήματος σαρ-
 κὸς, καὶ ἐκ θελήματος ἀνδρὸς, ἀλλ' ἐκ Θεοῦ ἐγενή-
 τησαν.
 14 Καὶ ὁ Λόγος σὰρξ ἐγένετο· ἔσθ' ἐσκήνωσεν ἐν
 ἡμῖν, (ἔσθ' ἐθεσάμεθα τῷ δόξαν αὐτοῦ, δόξαν ὡς
 μονογενὴς πατρὸς,) πλήρης χάριτος ἔσθ' ἀλη-
 θείας.
 15 Γιωάννης μαρτυρεῖ παρὰ αὐτῷ, ἔσθ' κέκραγε·
 λέγων· Οὗτος ἦν ἐν ἐπὶ· Οἱ οἱ πρὸς με ἐ-
 χόμενος, ἐμπροσθεν μου γέγονεν· ὅτι πρῶτος
 μου ἦν.
 16 Καὶ ἐκ ἁ πληρώματος αὐτοῦ ἡμεῖς πάντες ἐλάβο-
 μεν, ἔσθ' χάριν ἀντὶ χάριτος.

17 Ο'π' ε' γέμος Δις Μωσίου· ἐδόθη· ἡ χάρις αὐτῷ καὶ ἡ ἀλήθεια Δις Ἰησοῦ Χριστῷ ἐγένετο.

18 Θεὸς ἡδὴς εἰσάκει πῶποτε· ὁ μονογενὴς Υἱὸς, ὁ ὢν εἰς τὸν κόλπον τοῦ Πατρὸς, σκῆτος ὤφθη· σατο.

19 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μετοχὴ τοῦ Ἰωάννου, ὅτε ἀπέστειλαν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς Ἱεροσόλυμον Ἰησοῦν καὶ Ἀδύταν, ἵνα ἐρωτήσωσιν αὐτόν· Σὺ τίς εἶ;

20 Καὶ ἀπολόγησε, ὡς ἡν ἠρώσαστο· Ὁ ἀπολόγησεν· Ὅτι ἐκ ἐγὼ εἰμὶ ὁ Χριστός.

21 Καὶ ἐρωτήσαν αὐτόν· Τί ἡν; Ἡλίας εἶ σύ; Καὶ λέγει· Οὐκ εἰμὶ· Ὁ Προφήτης εἶ σύ; Καὶ ἀπεκρίθη· Οὐ.

22 Εἶπον οὖν αὐτοῖς· Τίς εἶ; ἵνα ἀποκρισὶν δοῦμεν τοῖς ἐπιμαρτυροῦσιν ἡμᾶς· τί λέγεις πρὸς αὐτοῦ;

23 Εἶφη· Εἰγὼ φωνὴ βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ· Ἐξθύνετε τὴν ὁδὸν Κυρίου· καθὼς εἶπεν Ἡσαΐας ὁ Προφήτης.

24 Καὶ οἱ ἀπεσταλμένοι ἦσαν ἐκ τῆς Σαμαρείας.

25 Καὶ ἠρώτησαν αὐτόν, ὡς εἶπον αὐτοῖς· Τί ἡν; Σαπφίρις, εἶ σύ ἐκ τῶν ὁ Χριστός; ἢ Ἡλίας; ἢ ὁ Προφήτης;

26 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰωάννης, λέγων· Εἰγὼ βαπτίζω ὡς ὕδατι· μέσος ὃ ὁμῶς ἔστηκεν ὅτι ὑμεῖς οὐκ οἴδατε.

27 Αὐτοὶ ἐστὶν ὁ ὀπίσω μου ἐρχόμενος, ὃς ἐμπρὸς ἐμὸν μὴ γέγονεν· ὃ ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ἄξιος ἵνα λύσω αὐτοῦ τοῦ ἰμάντος τοῦ ὑποδηματοῦ.

28 Ταῦτα ἐν Βηθαβαρᾷ ἐγένετο πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὅπου ἦν Ἰωάννης βαπτίζων.

29 Τῇ ἐπαύριον βλέπει ὁ Ἰωάννης τοῦ Ἰησοῦ ἐρχόμενον πρὸς αὐτόν, ὃ λέγει· Ἰδὲ ὁ ἀμνὸς τοῦ Θεοῦ ὁ αἴρων τὴν ἁμαρτίαν τοῦ κόσμου.

30 Οὗτος ἐστὶ πρὸς ὃν εἶπα· Ὁπίσω μου ἔρχεται ἄνθρωπος, ὃς ἐμπροσθέν μου γέγονεν· ὅτι πρῶτός ἐστι μου ἢ ἐγώ.

31 Καὶ οὕτως ἦσαν ἡρώτων αὐτόν· ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ τῷ Ἰσραὴλ, Δις τὸτο ἦλθεν ἐγὼ ἐν τῷ ὕδατι βαπτίζων.

32 Καὶ ἐμαρτύρησεν Ἰωάννης, λέγων· Ὁπ' ἐπεδείξαται τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον ὡς περὶ πτερὰ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἔμεινεν ἐπ' αὐτόν.

33 Καὶ οὕτως ἦν ἡδείκται αὐτόν· ἀλλ' ὁ πῦρ καὶ ἡ βαπτίζων ἐν ὕδατι, ἐκείνός μοι εἶπεν· Ἐφ' ἐν ᾧ ἴδης τὸ Πνεῦμα καταβαῖνον καὶ μένον ἐπ' αὐτόν, ἕως ὅτου ὁ βαπτίζων ἐν Πνεύματι ἀγγίξῃ.

34 Καὶ ὁ εὐαγγέλιος, ὃς μεμαρτύρηκε, ὅτι ὅτις ἐστὶν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

35 Τῇ ἐπαύριον πάλιν ἐσέκη ὁ Ἰωάννης, ὃς ὅκ τῷ μαθητῷ αὐτοῦ δύο.

36 Καὶ ἐμβλέψας τῷ Ἰησοῦ περπατῶντι, λέγει· Ἰδε ὁ ἀνὴρ τοῦ Θεοῦ.

37 Καὶ ἤκουον αὐτῷ οἱ δύο μαθηταὶ λαλοῦντες, καὶ ἠκολούθησαν τῷ Ἰησοῦ.

38 Στραφείς δὲ ὁ Ἰησοῦς, ὃς θεασάμενος αὐτὸς ἀκολουθῶντας, λέγει αὐτοῖς·

39 Τί ζητεῖτε; Οἱ δὲ εἶπον αὐτῷ· Ῥ'αββί, (ὃ λέγεται ἐρμηνεύμενον, διδάσκαλε,) πῶς μένεις;

40 Λέγει αὐτοῖς· Ἐρχεσθε ὃς ἴδετε· Ἦλθον ὃς ἔδον πῶς μένει· ὃ παρ' αὐτῷ ἐμεινὰ τῶν ἡμερῶν ἐκείνων, ὅρα δὲ ἦν ὡς δεκάτη.

41 Ἦν Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρου, καὶ ὃς ὅκ δύο τῶν ἀκουσάντων τοῦ Ἰωάννου, καὶ ἀκολούθησαν αὐτῷ.

42 Ἐύρισκε ἵππος πρῶτος τοῦ ἀδελφῶν τοῦ ἰδίου Σίμωνος, ὃς λέγει αὐτῷ· Εὐρήκαμεν τοῦ Μεσσία, ὃ ἐστὶ μετερμηνεύμενον ὁ Χρῆστος.

43 Καὶ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς τὸν Ἰησοῦν. Ἐμβλέψας δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς, εἶπε· Σὺ εἶ Σίμων ὁ Υἱὸς Ἰωάννου· σὺ κληθήσῃ Κηθᾶς, ὃ ἐρμηνεύεται Πέτρος.

44 Τῇ ἐπαύριον ἠθέλησεν ὁ Ἰησοῦς ἔξελθαι εἰς τὴν Ταλιθαῖν· ὃ εὕρισκε Φίλιππον, ὃς λέγει αὐτῷ· Ἀκολούθη μοι.

45 Ἦν δὲ ὁ Φίλιππος ἀπὸ Βηθσαῖδα, ὃς τὴ πόλιν Ἀνδρέας καὶ Πέτρος.

46 Εὐρίσκει Φίλιππος τοῦ Ναθαναὴλ, ὃς λέγει αὐτῷ· Οὐκ ἔγραψε Μωσῆς ἐν τῷ νόμῳ καὶ οἱ προφῆται, ὁμολογήσαμεν, Ἰησοῦν τοῦ υἱοῦ τοῦ Ἰωσήφ τοῦ ἀπὸ Ναζαρέτ.

47 Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ναθαναὴλ· Ἐκ Ναζαρέτ δύναται τι ἀγαθὸν εἶναι; Λέγει αὐτῷ Φίλιππος· Ἐρχε ὃς ἴδε.

48 Εἶδεν ὁ Ἰησοῦς τοῦ Ναθαναὴλ ἐρχόμενον πρὸς αὐτόν, καὶ λέγει πρὸς αὐτόν· Ἰδε ἀληθῶς Ἰσραηλῆτης ὃς ἦν ὁλός ἐκ ἐστὶ.

49 Λέγει αὐτῷ Ναθαναὴλ· Πόθεν με γινώσκεις; Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, ὃς εἶπεν αὐτῷ· Πρὸ τοῦ σε Φίλιππον φωνῆσαι, ὅτα ἔσθαι τῶν συκῆν, ὃς ἔδον σε.

50 Ἀπεκρίθη Ναθαναὴλ, ὃς λέγει αὐτῷ· Ῥ'αββί, σὺ εἶ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ, σὺ εἶ βασιλεὺς τοῦ Ἰσραὴλ.

51 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς ὃς εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι εἶπὸν σοι· Εἶδόν σε ὑποκάτω τοῦ συκῆς, πισθῶναι· μείζων τέτων ὁφθαλμοῦ.

52 Καὶ λέγει αὐτῷ· Ἀλλὰ ἀλλοῦ λέγω ὑμῖν· Ἀπ' αὐτοῦ ὄψεσθε τὸν ἀδελφὸν ἀνθρώπου, ὃς τὰς ἀγγέλους τῆς Θεοῦ ἀρᾷβαίροντας καὶ καταβαίνοντας ἐπὶ τῇ γῇ τῶν ἀνθρώπων.

Κεφ. β. 2.

1 **Κ**Αὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ γάμος ἐγένετο ἐν Κα-
ναῶ τῇ Γαλιλαίας· καὶ ἦν ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ
ἐκεῖ.

2 Ἐκλήθη δὲ καὶ ὁ Ἰησοῦς καὶ οἱ μεθ' αὐτοῦ εἰς τὸ
γάμον.

3 Καὶ ὑπερήσκητος οἶνος, λέγει ἡ μήτηρ τοῦ Ἰησοῦ
πρὸς αὐτόν· Οἶνον ἥκ ἔχουσιν.

4 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Τί ἐμοὶ καὶ σοί, γύναι;
ἥτις ἡκεῖ ἡ ώρα μου.

5 Λέγει ἡ μήτηρ αὐτοῦ πρὸς τοὺς δούλους· Ὅτι ἂν λέ-
γῃ ὑμῖν, ποιήσατε.

6 Ἡ σάρξ δὲ οὐκ ᾔδει ὕδρια λίθινα ἔξ κείμενα καὶ τὸ
καθαρισμὸν τῶν Ἰουδαίων, χωρησάμενα ἅμα μετρητάς δύο
ἢ τρεῖς.

7 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Γεμίσατε τὰς ὑδρίας ὑ-
δάτος. Καὶ ἐγέμισαν αὐτὰς ἕως ἁπλῆς.

8 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἀντλήσατε τῶν, καὶ φέρετε
τὸ ἀρχιτεχνικόν. Καὶ ἠνεγκαν.

9 Ὡς δὲ ἐξόυστο, ὁ ἀρχιτεχνικὸς τὸ ὕδωρ οἶνον
ἐκδημένον, (καὶ ἥκ ἔδει πίνειν εἶναι· οἱ δὲ ἐδοκίμασαν
καὶ οἱ ἀντληκότες τὸ ὕδωρ) φωνῇ τοῦ κυμφίου ὁ
ἀρχιτεχνικὸς·

10 Καὶ λέγει αὐτοῖς· Πᾶς ἄνθρωπος πρῶτον
τὸν καλὸν οἶνον τίθῃσι, καὶ ὅταν μεθύσῃσι, τότε
τὸν ἐλάσσει· σὺ τετήρηκας τὸν καλὸν οἶνον ἕως
ἄρτι.

11 Ταῦτῳ ἐποίησε τὴν ἀρχὴν τῶν σημείων ὁ Ἰη-
σοῦς ἐν Κανᾷ τῆς Γαλιλαίας, καὶ ἐφανέρωσε τὴν δό-
ξαν αὐτοῦ· καὶ ἐπίστῃσαν εἰς αὐτὸν οἱ μεθ' αὐτοῦ.

12 Μετὰ ταῦτα κατέβη εἰς Καπερναῦν, αὐτοῖς καὶ ἡ
μήτηρ αὐτοῦ καὶ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ· καὶ οἱ μεθ' αὐτοῦ
καὶ οὐκ ᾔδει ἔμειναν ἐκεῖ πολλὰς ἡμέρας.

13 Καὶ ἐγγύς ἦν τὸ πάρος τῶν Ἰουδαίων, καὶ ἀνέ-
βη εἰς Περσόλυμα ὁ Ἰησοῦς.

14 Καὶ εὗρεν ἐν τῷ ἑρῷ τὰς πολλὰς βοῆς καὶ
πρόβατα καὶ ποτεράς, καὶ τὰς κερματιστὰς καθήμε-
νους.

15 Καὶ ποιήσας φραγέλιον ἐκ χαλκίῳ, πλῆρας
ἔθηκεν ἐκ τῆς ἑρῆς, τὰ τε πρόβατα καὶ τὰς βοῆς· καὶ
τὴν κολυβιστῶν ἔσχεε τὸ κείμενόν, καὶ τὰς τραπέζας
ἀνέστρεψε.

16 Καὶ τοῖς ταῖς πεντήκοντα παλαιαῖς εἶπεν· Ἀγαπᾶτε τούτα ἐντεῦθεν· μὴ ποιῆτε τὸ ἔργον τῶν πατρὸς μου οὔκον ἐμπορίῃ.

17 Ἐμνήσθησαν δὲ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ὅτι γεγραμμένον ἐστίν· Ὁ ζήλος τῆ οἴκου σου κατέφαγε με.

18 Ἀπεκρίθησαν ἄν οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ εἶπον αὐτῷ· Τί σημεῖον δεικνύεις ἡμῖν, ὅτι ταῦτα ποιεῖς;

19 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Δύναται τὸν νεκρὸν τούτου, καὶ ἐν τρισὶν ἡμέραις ἐγερῶ αὐτόν.

20 Εἶπον ἄν οἱ Ἰουδαῖοι· Τροσπαράγοντα εἶ, ἐξ ἑτέρας ψευδοδομηθῇ ὁ νεκρὸς ὅτος, καὶ σὺ ἐν τρισὶν ἡμέραις ἐγερῇς αὐτόν;

21 Ἐκείνος δὲ ἐλεγε περὶ τῆ γὰρ τῆ σώματος αὐτοῦ.

22 Ὅτι ἡν ἠγέρθη ἐκ νεκρῶν, ἐμνήσθησαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ὅτι τήντο ἔλεγεν αὐτοῖς· καὶ ἐπίστανται τῇ γραφῇ, καὶ περὶ λέγει ὁ Ἰησοῦς.

23 Ὡς δὲ ἦν ἐν Ἱερουσαλὴμοις ἐν τῇ σάββῳ ἐν τῇ ἑορτῇ, πολλοὶ ἐπίστανται εἰς τὸ ὄνομα αὐτοῦ, θεωροῦντες αὐτὸν τὰ σημεῖα ἃ ἐποίει.

24 Αὐτὸς δὲ ὁ Ἰησοῦς καὶ ἐπίστανται αὐτοῖς, καὶ τὸ αὐτὸ γινώσκουσιν ὅτι αὐτός.

25 Καὶ ὅτι ἡ χρεία αὐτοῦ ἵνα περὶ μαρτυρήσῃ περὶ τῶν ἀνθρώπων· αὐτὸς γὰρ ἐγίνωσκε τί ἦν ἐν τῷ ἄνθρωπῳ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Ἦ**Ν δὲ ἀνθρώπος ἐκ τῆς φαρασαίων, Νικάνορ, ὁ καλεῖται ὄνομα αὐτοῦ, ἀρχὴν τῆς Ἰουδαίας.

2 Οὗτος ἦλθε πρὸς τὸν Ἰησοῦν συζητῶν, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ῥαββί, οἶδμεν ὅτι ἀπὸ Θεοῦ ἐλεύησαι διδάσκαλος· καὶ οὐ γὰρ ταῦτα τὰ σημεῖα δύναται ποιεῖν ἢ σὺ ποιεῖς, ἢ ὁ Θεὸς μετ' αὐτοῦ.

3 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ἀλλ' ἂν ἀμὲν λέγω σοι, ἢ ὁ Θεὸς τίς ἔστιν ὁ δύναται ἰδεῖν τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

4 Λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ Νικάνορ· Πῶς δύναται ἄνθρωπος ἡγοῦναι γέροντος; καὶ μὴ δύναται εἰς τὴν κοιλίαν τῆς μητρὸς αὐτοῦ εἰσελθεῖν καὶ γινώσκειν;

5 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Ἀλλ' ἂν ἀμὲν λέγω σοι, ἢ ὁ Θεὸς τίς ἔστιν ὁ δύναται ἰδεῖν τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ.

6 Τὸ γεγνημένον ἔκ τῆς σαρκὸς, σὰρξ ἐστὶ·
 ἔ τὸ γεγνημένον ἔκ τοῦ Πνεύματος, πνεῦμα
 ἐστὶ·

7 Μὴ θαυμάσης ὅτι εἶπόν σοι· Δεῖ ὑμᾶς γνη-
 θῆναι πρῶτον·

8 Τὸ πνεῦμα ὅπου θέλει πνεῖ· Ἐ τῶν φωνῶν αὐ-
 τῆ ἀκούς· ἀλλ' ἢν οἶδας πόθεν ἔρχεται, καὶ πῶ
 ὑπάγει, ἔτως ἐστὶ πᾶς ὁ γεγνημένος ἔκ τοῦ Πνεύ-
 ματος·

9 Ἀπεκρίθη Νικόδημος, ἔ εἶπεν αὐτῷ· Πῶς δύνα-
 ται ταῦτα γινέσθαι;

10 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Σὺ
 αἰ δὲ ριδαίσκεας τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ ταῦτα ἢ γινώ-
 σκεις;

11 Ἀμὲν· ἀμὲν λέγω σοι, ὅτι ὁ οἶδαμεν λαλῶ-
 μεν, ἔ ὁ εἰσάκουεν μαρτυροῦμεν, ἔ τῶν μαρτυρίων
 οὐκ ἔ λαμβανέτε·

12 Εἰ τὰ ἐπίγραμμα εἶπον ὑμῖν, καὶ ἢ πιστεύ-
 τε, πῶς, ἐγὼ εἶπω ὑμῖν τὰ ἐπερῶμαι, πιστέ-
 σιτε·

13 Καὶ ὁδεῖς ἀναβέβηκεν εἰς τὸν ἕρμιον εἰ μὴ ὁ ἔκ
 τοῦ ἕρμιον καταβάς, ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὁ ὢν ἐν τῷ
 ἕρμιον·

14 Καὶ καθὼς Μωσῆς ὕψωσε τοῦ ὄφιν ἐν τῇ ἐρήμῳ,
 ἔτως ὕψωθη καὶ δεῖ τοῦ Υἱοῦ τοῦ ἀνθρώπου·

15 Ἰνα πᾶς ὁ πισθῶν εἰς αὐτόν, μὴ ἀπόληται,
 ἀλλ' ἔχη ζωὴν αἰώνιον·

16 Οὕτω γὰρ ἡγάπησεν ὁ Θεὸς τοῦ κόσμον, ὥστε
 τὸν Υἱόν αὐτοῦ τὸν μονογῆν ἔδωκεν, ἵνα πᾶς ὁ
 πισθῶν εἰς αὐτόν, μὴ ἀπόληται, ἀλλ' ἔχη ζωὴν
 αἰώνιον·

17 Οὕτω γὰρ ἀπέσταλεν ὁ Θεὸς τοῦ Υἱόν αὐτοῦ εἰς
 τὸν κόσμον, ἵνα κρίνῃ τοῦ κόσμον, ἀλλ' ἵνα σωθῇ ὁ κόσ-
 μος δι' αὐτόν·

18 Ὁ πισθῶν εἰς αὐτόν, ἢ κρίνεται· ὁ δὲ μὴ πι-
 σθῶν, ἔδη κέκεται, ὅτι μὴ πεπίσθυκεν εἰς τὸ ὄνομα
 τοῦ μονογῆν Υἱοῦ τοῦ Θεοῦ·

19 Αὕτη δὲ ἐστὶν ἡ κρίσις, ὅτι τὸ φῶς ἐλήλυ-
 θεν εἰς τοῦ κόσμον, ἔ ἡγάπησαν οἱ ἄνθρωποι μᾶλ-
 λον τὸ σκότος ἢ τὸ φῶς, ἔ γὰρ ποτὴρ αὐτῶν τὰ
 ἔργα·

20 Πᾶς γὰρ ὁ φαῦλα πράξας, μισεῖ τὸ φῶς· ἔ
 οὐκ ἔρχεται πρὸς τὸ φῶς, ἵνα μὴ ἐλεγχθῇ τὰ ἔρ-
 γα αὐτοῦ·

21 Ὁ δὲ ποιῶν τοῦ ἀληθείας, ἔρχεται πρὸς τὸ
 φῶς, ἵνα φανερωθῇ αὐτοῦ τὰ ἔργα, ὅτι ἐν Θεῷ ἐστὶν
 εἰργασμένα·

22 Μετὰ ταῦτα ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς ἔ οἱ μαθηταὶ
 αὐτοῦ εἰς τὴν Ἰουδαίαν γῆν, ἔ ὁκεῖ διέτριβε μετ' αὐ-
 τῶν ἔ ἐλάττωζεν·

23 Ἦν δὲ Ἰωάννης βαπτίζων ἐν Αἰνῶν ἕρμῃ
 π Σαλείμ, ὅτι ὕδατι πολλὰ ἦν ὅκει· καὶ παρεγγύοντο
 εἰς ἐδαπτίζοντο.

24 Οὕτω γὰρ ἦν βεβλημένος εἰς τὴν φυλακὴν
 Ἰωάννης.

25 Ἐγένετο ἦν ζήτησις ἐκ τῶν μαθητῶν Ἰωάννου με-
 τὰ Ἰουδαίων περὶ καθαρῆς μὴ.

26 Καὶ ἦλθον πρὸς τὸν Ἰωάννην εἰπόντες αὐτῷ· Ῥα-
 βὶ, ὃς ἦν μὲν σὺ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, ὡς σὺ μέμαρτύ-
 ρηκες, ἴδε, ἡ τὸς βαπτίζει, καὶ πάντες ἔρχονται πρὸς
 αὐτόν.

27 Ἀπεκρίθη Ἰωάννης καὶ εἶπεν· Οὐ δύναται ἄνθρω-
 πος λαμβάνειν ὑδὲν, εἰ μὴ ἡ δεδομένον αὐτῷ ἐκ
 ἡρᾶς.

28 Αὐτοὶ οὖν μοι μαρτυρεῖτε ὅτι εἶπον· Οὐκ ε-
 μὶ ἐγὼ ὁ Χριστός, ἀλλ' ὅτι ἀπεσταλμένος εἰμι ἐκ
 προσθεν ἐκείνου.

29 Ὁ ἔχων τὴν σύμφων, συμφίος ἐστίν· ὁ δὲ φ-
 λος π συμφίος ὁ ἐσηκὼς καὶ ἀκίμων αὐτῷ, καὶ οὐ χαίρει
 μετὰ τὴν φωνὴν π συμφίον· αὕτη ἦν ἡ χαρὰ ἡ ἐμὴ
 πεπληρωμένη.

30 Ἐκείνον δεῖ αὐξάνειν, ἐμὲ δὲ ἐλάττω-
 σθαι.

31 Ὁ ἄνωθεν ἐρχόμενος, ἐπάνω πάντων ἐστίν·
 ὁ ἦν ἐκ τῆς γῆς, ἐκ τῆς γῆς ἐστίν, καὶ ἐκ τῆς γῆς γ-
 λαίει· ὁ ἐκ τοῦ ἡρᾶν ἐρχόμενος, ἐπάνω πάντων
 ἐστίν.

32 Καὶ ὁ ἐνόηκε εἰ ἤκουσε, τὴν μαρτυρεῖ· εἰ
 μαρτυρεῖται αὐτῷ ἡδὲ λαμβάνει.

33 Ὁ λαβὼν αὐτῷ τὴν μαρτυρίαν, ἐσφράγισεν ὅτι
 Θεὸς ἀληθὴς ἐστίν.

34 Ὁ γὰρ εἰπέειπεν ὁ Θεός, τὰ ῥήματα π Θε-
 οῦ λαλεῖ· καὶ γὰρ ἐκ μέτρου δίδωσιν ὁ Θεός τὸ
 Πνεῦμα.

35 Ὁ Πατὴρ ἀγαπᾷ τὸν Υἱόν, καὶ πάντα δέδωκεν
 τῷ Υἱῷ αὐτοῦ.

36 Ὁ πιστεύων εἰς τὸν Υἱόν, ἔχει ζωὴν αἰώνιον·
 καὶ ἀπειθῶν τῷ Υἱῷ, ὁ ἔσται ζῶν, ἀλλ' ἡ ὀργὴ
 τοῦ Θεοῦ μένει ἐπ' αὐτόν.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Ω**ς ἦν ἔργον ὁ Κύριος ὅτι ἤκουσαν οἱ Φα-
 ραῖοι, ὅτι Ἰησοῦς πλείονας μαθητὰς ποιεῖ
 βαπτίζει, ἢ Ἰωάννης.

2 (Καίτοιγε Ἰησοῦς αὐτὸς οὐκ ἐβάπτιζεν, ἀλλ' οἱ
 μαθηταὶ αὐτοῦ.)

3 Ἀφῆκε τὸν Ἰουδαίον, καὶ ἀπέλθε πάλιν εἰς τὴν
 Γαλιλαίαν.

4 Ἐδὲ

6 Ἐδὲ δὲ αὐτὸν διέρχουσαν 249 τῆς Σαμαρείας·

7 Ἐρχεται ἡν εἰς πόλιν τῆς Σαμαρείας λεγομένην Σιγχάρ, πλησίον τῆ χειρὸς, ἣ ἔδωκεν Ἰακώβ Ἰωσήφ τῷ υἱῷ αὐτοῦ.

8 Ἦν δὲ ἐκεῖ πηγὴ τῇ Ἰακώβ· ὃ ἦν Ἰησοῦς πεποπιωκώς ἐκ τῆ ὁδοπορείας, ἐκαθίζετο ἔτως ὑπὸ τῇ πηγῇ· ὅρα ἦν ὡσεὶ ἐκτὴ.

9 Ἐρχεται γυνὴ ἐκ τῆ Σαμαρείας ἀντλήσαι ὕδωρ· λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Δός μοι ποιεῖν.

10 Οἱ γὰρ μαθῆναι αὐτὴ ἀπεληλυθεν ἄνθρωποι τῇ πόλιν, ἵνα τροφὰς ἀγοράσωσι.

11 Λέγει ἡν αὐτῷ ἡ γυνὴ ἡ Σαμαρεῖτις· Πῶς σὺ Ἰουδαῖος ὢν παρ' ἐμοῦ πίνεις αὐτὴν, ἥτις γυναικὸς Σαμαρετιδὸς; ἡ γὰρ συγχρῶνται Ἰουδαῖοι Σαμαρεῖταις.

12 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, ἔτι πειν αὐτῇ· Εἰ ᾔδεις τὸ φρέαρ τῆ Οὐκ, ἔτι τίς ἐστιν ὃ λέγων σοι· Δός μοι πίνειν· σὺ γὰρ ᾔτησας αὐτῷ, ἔδωκεν ἄν σοι ὕδωρ ζῆν.

13 Λέγει αὐτῷ ἡ γυνὴ· Κύριε, ἔτι ἀντλήσω, ἔρχεις, καὶ τὸ φρέαρ ἐστὶ βαθύ· πόθεν ἦν ἔχεις τὸ ὕδωρ τὸ ζῆν;

14 Μὴ σὺ μείζων εἶ τῷ πατρὶ ἐμοῦ Ἰακώβ, ὃς ἔδωκεν ὑμῖν τὸ φρέαρ, ἔτι αὐτὸς ἔλεγε αὐτῷ ἐπεὶ, ἔτι οἱ εἶπο αὐτῷ, ἔτι πατρὸς ἐμῶν;

15 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, ἔτι πειν αὐτῇ· Πᾶς ὁ πίπων ἐκ τῆ ὕδατος τῆς, διψήσει πάντις.

16 Ὁς δ' ἀντλήσῃ ἐκ τῆ ὕδατος, ἡ ἐγὼ δώσω αὐτῷ, ἡ μὴ διψήσει εἰς τὸ αἶμα· ἀλλὰ τὸ ὕδωρ ὃ δώσω αὐτῷ, γινώσκεται ἐν αὐτῷ πηγὴ ὕδατος ἀλλομένου εἰς ζωὴν αἰώνιον.

17 Λέγει πρὸς αὐτῇ ἡ γυνὴ· Κύριε, δός μοι τῆτι τὸ ὕδωρ, ἵνα μὴ διψῶ, καὶ ἐρχομαι ἐνθάδε ἀντλεῖν.

18 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ὑπαγε, φώνησον τῷ ἀνδρὶ σου, καὶ ἐλθέ ἐνθάδε.

19 Ἀπεκρίθη ἡ γυνὴ, ἔτι πειν· Οὐκ ἔχω ἀνδρα· Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Καλὸς εἶπας· Ὅτι ἀνδρα ἔκτισας.

20 Πέντε γὰρ ἀνδρας ἔχεις· ἔτι νῦν ὃν ἔχεις, ἔκτισας ἀνδρα· τῷ αληθεῖς εἶρηκας.

21 Λέγει αὐτῇ ἡ γυνὴ· Κύριε, θεωρῶ ὅτι προφήτης εἶ σὺ.

22 Οἱ πατέρες ἐμῶν ἐν τῷ τόπῳ τῷ ὅρει προσκύνουσιν· καὶ ὁμοίως λέγετε, ὅτι ἐν Ἱερουσαλὺμ ἐστὶν ὁ τόπος ὅπου δεῖ προσκυνεῖν.

23 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γύναι, πείθομέν μοι, ὅτι ἔρχεται ὥρα, ἔτι καὶ ἐν τῷ ὅρει τῷ τόπῳ, ἔτι ἐν Ἱερουσαλὺμ προσκυνήσετε τῷ πατρί.

22 Ὑμεῖς προσκυνεῖτε ὃ ἔκ οὐδ' ἔστι· ἡμεῖς προσκυνῶμεν δ' οὐρανὸν· ὅτι ἡ σωτηρία ἐκ τῆς Ἰουδαίας ἐστίν.

23 Ἀλλ' ἔρχεται ἔρχε, ἡ νῦν ἐστίν, ἔτε οἱ ἀληθινοὶ προσκυνῆται προσκυνήσονται τῷ πατρὶ ἐν πνεύματι καὶ ἀληθείᾳ· καὶ ἢ ὁ πατὴρ ταύτης ζητεῖ τῆς προσκυνήτας αὐτόν.

24 Πνεῦμα ὁ Θεός· ἡ τῆς προσκυνήσας αὐτῇ, ἐν πνεύματι ἡ ἀληθείᾳ δεῖ προσκυνεῖν.

25 Λέγει αὐτῇ ἡ γυνὴ· Οἶδ' ὅτι Μεσίτης ἔρχεται, ὁ λεγόμενος Χριστός· ὅταν ἔλθῃ ἀκούω, ἀμαρτυρεῖ ἡμῖν πάντα.

26 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἰμι, ὁ λαλῶν σοι.

27 Καὶ ὅταν ταῦτα ἤλθον οἱ μαθηταὶ αὐτῇ, καὶ ἐθαύμαζον ὅτι μὴ γυναικὸς ἐλάλει· ἐκείναις μὲντοι εἶπε· Τί ζητεῖς; ἡ, τί λαλῆς μετ' αὐτῆς;

28 Ἀφῆκεν ἡν τῶν ὕδατον αὐτῆς ἡ γυνὴ, ἡ ἀπῆλθεν εἰς τὴν πόλιν, ἡ λέγει τοῖς ἀδελφοῖς.

29 Δεῦτε, ἴδετε ἀνθρώπον, ὃς εἶπέ μοι πάντα ὅσα ἐποίησα· μήτι ἔτος ἐστίν ὁ Χριστός;

30 Ἐξῆλθεν ἡν ἐκ τῆς πόλεως, ἡ ἔρχοντο πρὸς αὐτόν.

31 Ἐν τῷ μεταξὺ ἡρώτων αὐτῇ οἱ μαθηταὶ, λέγοντες· Ρ' αββί, φαγε.

32 Οἱ τῷ εἶπεν αὐτοῖς· Ἐγὼ βρωσὶν ἔχω φαγεῖν, ἡν ὑμεῖς ἔκ οὐδ' ἔστι.

33 Ἐλέγον ἡν οἱ μαθηταὶ πρὸς ἀλλήλους· Μήτις ἡνεγκεν αὐτῇ φαγεῖν;

34 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐμὸν βρωμὴ ἐστίν, ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς μου, ἡ τελειώσω αὐτὸ τὸ ἔργον.

35 Οὐχ' ὑμῖς λέγετε, ὅτι ἐπὶ τετραμένην ἐστίν, ἡ ὁ θερισμὸς ἔρχεται; ἴδ' ἡ, λέγει ὑμῖν, ἐπάρατε τῆς σφύραλις ὑμῶν, ἡ θεάσασθε τὰς χώρας· ὅτι λόκοι εἰσι πρὸς θερισμὸν ἔδω.

36 Καὶ ὁ θερίζων, μισθὸν λαμβάνει ἡ συνάγει καρπὸν εἰς ζωὴν αἰώνιον· ἵνα ἡ ὁ σπείρων ἔμῃ χαίρῃ, ἡ ὁ θερίζων.

37 Ἐν τῷ τῷ λόγος ἐστίν ὁ ἀληθινός, ὅτι ἄλλος ἐστίν ὁ σπείρων, ἡ ἄλλος ὁ θερίζων.

38 Ἐγὼ ἀπέστειλα ὑμᾶς θερίζειν ὃ ἔκ ὑμῶν κεκοπίακατε· ἄλλοι κεκοπίακασιν, ἡ ὑμεῖς εἰς τὸν κόπον αὐτῶν εἰσεληλύθατε.

39 Ἐκ δὲ τῆς πόλεως ἐκείνης πολλοὶ ἐπιστάται εἰς αὐτόν τῷ Σαμαρεῖτῳ, διὰ τὸν λόγον τῆς γυναικὸς, ἡ μαρτυρίας· ὅτι εἶπέ μοι πάντα ὅσα ἐποίησα.

40 Ὡς ἔν ἤλθον πρὸς αὐτ' οἱ Σαμαριῖται, ἡρώτων αὐτ' μένειν παρ' αὐτοῖς· ἔδεικνεν ὅτι δύο ἡμέρας.

41 Καὶ πολλῶ πλείους ἐπίσδυσαν διὰ τὸν λόγον αὐτοῦ.

42 Τῇ τε γυναικὶ ἔλεγον· Ὅτι ἡκέτι διὰ τὴν σὴν λαλῶν πιστεύουσιν· αὐτοὶ γὰρ ἀκηκόαμεν, καὶ οἶδαμεν ὅτι ἡτός ἐστιν ἀληθὺς ὁ σατὴρ ὃν κόσμῳ, ὁ Χρῆστος.

43 Μετὰ δὲ τὰς δύο ἡμέρας ἀπῆλθεν ἐκείθεν, καὶ ἀπῆλθεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

44 Αὐτός γὰρ ὁ Ἰησοῦς ἐμαρτύρησεν, ὅτι προφήτης ἐν τῇ ἰδίᾳ πατρίδι τιμῶν κα' ἔχῃ.

45 Ὅτε ἔν ἤλθον εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἡξεδύτω αὐτ' οἱ Γαλιλαῖοι, πάντα ἐωρεκέτες αὐτ' ἐπείστην ἐν Ἱεροσολύμοις ἐν τῇ ἑορτῇ· καὶ αὐτοὶ γὰρ ἤλθον εἰς τὴν ἑορτήν.

46 Ἦλθεν ἔν ὁ Ἰησοῦς πάλιν εἰς τὴν Κανὰ τῆς Γαλιλαίας, ὅπου ἐποίησε τὸ ὕδωρ οἶνον· καὶ ἦν τις βασιλικὸς, ἢ ὁ υἱὸς ἡσδρέκῃ ἐν Καπερναύμῳ.

47 Οὗτος ἀνέσας ὅτι Ἰησοῦς ἦκε ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἀπῆλθε πρὸς αὐτ', ἔειπεν αὐτ', ἵνα καταβῇ ἔδεισθαι αὐτὸν ὃν υἱόν· ἡμελλε γὰρ ἀποθνήσκειν.

48 Εἶπεν ἔν ὁ Ἰησοῦς αὐτόν· Ἐὰν μὴ σημεῖα καὶ τέρατα ἴδῃτε, ἢ μὴ πιστεύσῃτε.

49 Λέγει πρὸς αὐτὸν ὁ βασιλικὸς· Κύριε, καταβέβη πρὶν ἀποθάνω τὸ παιδίον μου.

50 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Πορεύ· ὁ υἱός σου ζῇ, καὶ ἐπίσδυσεν ὁ ἀνθρώπος τῷ λόγῳ ὃν εἶπεν αὐτῷ Ἰησοῦς, καὶ ἐπορεύετο.

51 Ἦδ' ὃ αὐτὸν καταβαίνοντος, οἱ δούλοι αὐτοῦ ἀπέστησαν αὐτῷ, καὶ ἀπήγγελλον, λέγοντες· Ὅτι ὁ παῖς σου ἔστι.

52 Εἰπύθετο ἔν παρ' αὐτῷ τὴν ὥραν ἐν ἣ κομψότερον ἔχε· ἔειπον αὐτῷ· Ὅτι χθὲς ὥραν ἐβδόμῳ ἀφῆκεν αὐτὸν οἱ πυρετός.

53 Εἰπὼν ἔν ὁ πατὴρ ὅτι ἐκ ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ ἐν ἣ εἶπεν αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι ὁ υἱός σου ζῇ· καὶ ἐπίσδυσεν αὐτός· καὶ ἡ οἰκία αὐτοῦ ἔστη.

54 Τῷ τε πάλιν δεύτερον σημεῖον ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἐλθὼν ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἰς τὴν Γαλιλαίαν.

Κεφ. ε. 5.

- 1 **Μ**ΕΤΑ ταῦτα ἦν ἑστὴ τῶν Ἰουδαίων, ἡ δὲ ἑστὴ ἦν ἡ πρώτη εἰς Ἱεροσολύμους.
- 2 Ἐστὶ δὲ ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις ὑπὲρ τῆς προβατικῆς κολυμβήθρας, ἡ ὑψηλομένη Ἐβραϊστὶ Βηθσεδαί, πέντε σταδία ἔχουσα.
- 3 Ἐν ταύταις κατέκειτο πληθὺς πολὺ τῶν ἀσθενούντων, τυφλῶν, χωλῶν, ξηρῶν, ἐκδεχομένων τὴν ὕδατος κίνησιν.
- 4 Ἀγγελὸς γὰρ αὐτὸν κατέβαινεν ἐν τῇ κολυμβήθρᾳ, ἡ ἐτάσσοντο τὸ ὕδωρ· ὁ ἦν πρῶτος ἐμβὰς ἐν τῷ ταραχῶ τῷ ὕδατος, ὕγιής ἐγένετο, ὃ δὴποτε κατετίχετο νοσήματι.
- 5 Ἦν δὲ τις ἀνθρώπος· ὁ καὶ τετράκοντα ὅκτω ἔτη ἔχων ἐν τῇ ἀσθενείᾳ.
- 6 Τῆτον ἰδὼν ὁ Ἰησοῦς κατακλίωσεν, ἡ γυνὴ ὅτι πολὺν χρόνον ἔχει, λέγει αὐτῷ· Οἷός τις ὕγιής γενέσθαι;
- 7 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ἀσθενῶν· Κύριε, ἀνθρώπον ἢ ἔχει, ἵνα, ὅταν ταραχθῇ τὸ ὕδωρ, βαλὼν με εἰς τὴν κολυμβήθραν; ἦν δὲ ἐρχομαι ἐγώ, ἄλλος πρό ἐμὲ καταβαίνει.
- 8 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγείραι, ὅρον τὴν κράββατόν σου, ἡ παρῇσιν.
- 9 Καὶ αὐθὺς ἐγένετο ὕγιής ὁ ἀνθρώπος, ἡ ἦρε τὴν κράββατον αὐτῇ, ἡ παρῇσιν. ὡς δὲ σάββατον ἐκείνη τῇ ἡμέρᾳ.
- 10 Ἐλεγον ἔνιοι Ἰουδαῖοι τῷ τεθροονομένῳ· Σάββατον ἐστίν· ἢ ἐξέσι σοι φέραι τὴν κράββατον;
- 11 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Ὁ ποιήσας με ὕγιή, ἡ κείνος μοι εἶπεν· Ἀρον τὸν κράββατόν σου, ἡ παρῇσιν.
- 12 Ἡρώτηται ἔνιοι αὐτόν· Τίς ἐστίν ὁ ἀνθρώπος ὁ εἰπὼν σοι· Ἀρον τὸν κράββατόν σου, ἡ παρῇσιν;
- 13 Ὁ δὲ ἰαθεὶς ἢκ ἔδει τίς ἐστίν· ὁ γὰρ Ἰησοῦς ἔξενώτεν ὅλην ὥστεν ἐν τῷ τόπῳ.
- 14 Μετὰ ταῦτα ὤρισεν αὐτόν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ ἱερῷ, ἡ εἶπεν αὐτῷ· Ἰδε, ὁ ὕγιής γενέσθαι· μηκέτι ἁμαρτάνει, ἵνα μὴ χειρὸν πί σοι γένηται.
- 15 Ἀπῆλθεν ὁ ἀνθρώπος, ἡ ἀγγέλε τοῖς Ἰουδαίοις, ὅτι Ἰησοῦς ἐστίν ὁ ποιήσας αὐτῷ ὕγιή.
- 16 Καὶ διὰ τοῦτο ἐδίωκον τὸν Ἰησοῦν οἱ Ἰουδαῖοι, ἡ ἐξῆν.

ἐξήτην αὐτὸν ἀποκτείνει, ὅτι ταῦτα ἐποίησεν ἐν σαββάτῳ.

17 Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίνατο πρὸς αὐτοὺς· Ὁ πατὴρ μου ἔργον ἐργάζεται, καὶ ἐγὼ ἐργάζομαι.

18 Διὰ τὴν ἥν μᾶλλον ἐξήτην οὐκ οἱ Ἰουδαῖοι ἀποκτείνει, ὅτι ἡ μόνον ἔλκε το σάββατον, ἀλλὰ καὶ πατέρα ἴδιον ἔλαγε τὸν Θεόν, ἴσον ἑαυτοῖς ποιοῦν τῷ Θεῷ.

19 Ἀπεκρίνατο ἄνδρ' Ἰησοῦς, ὃς εἶπεν αὐτοῖς· Ἀλλὰ καὶ λέγω ὑμῖν, ὃ δύναται ὁ υἱὸς ποιεῖν ὡς ὁ πατὴρ ποιεῖ, ἐὰν μὴ π βλέπῃ τὸν πατέρα ποιοῦντα· ὃ γὰρ ὃν ὁ πατὴρ ποιεῖ, ταῦτα καὶ ὁ υἱὸς ὁμοίως ποιεῖ.

20 Ὁ γὰρ Πατὴρ φιλεῖ τὸν υἱόν, ὃ πάντα δείκνυσιν αὐτῷ· ὃς αὐτὸς ποιεῖ. ὃ μᾶλλον τούτων δείξει αὐτῷ ἔργον, ἵνα ὑμεῖς θαυμάζητε.

21 Ὡς περὶ γὰρ ὁ Πατὴρ ἐγείρει τὴν νεκρὸς καὶ ζωοποιεῖ, ἕτοιμ' ὁ υἱὸς ἢς θέλει ζωοποιεῖ.

22 Οὐδὲ γὰρ ὁ Πατὴρ κρίνει ἡδὲνα, ἀλλὰ τὴν κρίνιν πᾶσιν δέδωκε τῷ υἱῷ.

23 ἵνα πάντες πινῶσι τὸν υἱόν, καθὼς πινῶσι τὸν Πατέρα, ὃ μὴ πινῶν τὸν υἱόν, ἡ πινῶν τὸν Πατέρα τὸν πέμψαντα αὐτόν.

24 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ὃς πίνοι καὶ ἀπόκειται ἐν τῷ πέμψαντί με, ἔχει ζωὴν αἰώνιον, ὃ εἰς κρίσιν ἤν ἐρχεται, ἀλλὰ μεταβέβηκεν ὅς τ' ἔσται ὡς τὸν ζῶντα.

25 Ἀλλὰ λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐρχεται ὥρα, καὶ νῦν ἐστίν, ὅτι οἱ νεκροὶ ἀκούσονται τὴ φωνῆς τοῦ υἱοῦ τοῦ Θεοῦ. ὃ οἱ ἀκούσαντες ζήσονται.

26 Ὡς περὶ γὰρ ὁ Πατὴρ ἔχει ζωὴν ἐν ἑαυτῷ, ἕτοιμος ἔδωκε τῷ υἱῷ ζωὴν ἐκ ἐαυτοῦ.

27 Καὶ ὁ υἱὸς ἑαυτοῦ ἔδωκε αὐτῷ καὶ κρίνιν ποιεῖν, ὅτι ὁ υἱὸς ἀνθρώπου ἐστίν.

28 Μὴ θαυμάζεσθε τούτῳ· ὅτι ἐρχεται ὥρα ἐν ἣ πάντες οἱ ἐν τῷ κόσμῳ ἀκούσονται τῆς φωνῆς αὐτοῦ.

29 Καὶ ἐκπορεύσονται οἱ τὸ ἀγαθὸν ποιῆσαντες, εἰς ἀνάστασιν ζωῆς· οἱ δὲ τὸ φαῦλον πράξαντες, εἰς ἀνάστασιν κρίσεως.

30 Οὐ δύναμαι ἐγὼ ποιεῖν ἅπ' ἐμαυτοῦ ἡδὲν· καθὼς ἀκούω, κρίνω· καὶ ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ δίκαια ἐστίν· ὅτι ἡ ζωὴ τῷ Θεῷ ἐστίν, ἀλλὰ τὸ θέλημα τοῦ πατρὸς ἐστίν· ὃς πέμψαντός με ππερος.

31 Ἐὰν ἐγὼ μαρτυρῶ πρὸς ἐμαυτοῦ, ἡ μαρτυρία μου ἡ ἐμὴ ἐστὶν ἀληθής.

32 Ἄλλος ἐστὶν ὃ μαρτυρῶν πρὸς ἐμῷ, ὃ οἶδα ὅτι ἀληθής ἐστὶν ἡ μαρτυρία, ὃ μαρτυρεῖ πρὸς ἐμῷ.

33 Ὑμεῖς ἀπέσταλκατε πρὸς Ἰωάννην, ὃς μαρτυρήσκει τῇ ἀληθείᾳ.

34 Ἐγὼ δὲ ἢ πρὸς ἀνθρώπων τὴν μαρτυρίαν λαμβάνω· ἀλλὰ ταῦτα λέγει, ἵνα ὑμεῖς σωθῆτε.

35 Ἐκείνος ἦν ὁ λύχνος ὁ καλούμενος ὁ Φαίμων· ὑμεῖς ὃ ἀδεύσατε ἀγαλλισσάμενοι πρὸς τὸν ὄντα ἐν τῇ φωτὶ αὐτοῦ.

36 Ἐγὼ ὃ ἔχω τὴν μαρτυρίαν μίζω ἢ Ἰωάννη· τὰ ὅς ἐργα ἃ ἔδωκε μοι ὁ πατήρ ἵνα τελειώσω αὐτά, αὐτὰ τὰ ἔργα ἃ ἐγὼ ποίω, μαρτυρεῖ περὶ ἐμοῦ· ὅτι ὁ πατήρ με ἀπέσταλκε.

37 Καὶ ὁ πέμψας με πατήρ, αὐτὸς μαρτυρήσκει περὶ ἐμοῦ· ὅτε φωνῇ αὐτοῦ ἀκηκάτε πάντοτε, ὅτε ἔδος αὐτοῦ ἐώρακατε.

38 Καὶ τὸν λόγον αὐτοῦ ἃ ἔχετε μένοντα ἐν ὑμῖν· ὅτι ἐν ἀπέσταλκεν ὁ καίνας, τῷ ὑμεῖς ἢ πιστεύετε.

39 Ἐρρωσάτε τὰς γραφαίς, ὅτι ὑμεῖς δοκεῖτε ἐν αὐταῖς ζωὴν αἰώνιον ἔχειν, ὃς ὁ καίνας εἶπεν αἱ μαρτυρῆσαι περὶ ἐμοῦ.

40 Καὶ ἢ θέλετε ἐλθεῖν πρὸς με, ἵνα ζωὴν ἔχητε.

41 Δέξαι πρὸς ἀνθρώπων ἢ λαμβάνω.

42 Ἀλλ' ἐγὼ καὶ ὑμεῖς, ὅτι ἢ ἀγάπῃ ἢ Θεῷ ἢ ἔχετε ἐν ἑαυτοῖς.

43 Ἐγὼ ἐγγύς ἐσθ' ἐν τῷ ὀνόματι ἢ Πατρός μου, ὃς ἢ λαμβάνετε με· ἐλθὼ ἄλλος ἐλθῇ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἰδίῳ, ὁ καίνας λήψεται.

44 Πῶς δύνασθε ὑμεῖς πιστεῦσαι, δέξαι πρὸς ἀληθῶν λαμβάνοντες, ὃς τὴν δόξαν τὴν πρὸς ἢ μόνον Θεῷ ἢ ζητεῖτε;

45 Μὴ δοκεῖτε, ὅτι ἐγὼ κατηγοροῦμαι ὑμῶν πρὸς ἢ πατέρα· εἰς ὃ κατηγοροῦν ὑμῶν, Μωσῆς, εἰς ὃν ὑμεῖς ἠλείκατε.

46 Εἰ ὃ ὑποσέετε Μωσῆ, ὑποσέετε ἀπὸ ἐμοῦ· περὶ ὃ ἐμὴ ὁ καίνας ἐρρωσεν.

47 Εἰ ὃ τοῖς καίνοις γραμμασίῳ ἢ πιστεύετε, πῶς πρὸς ἐμοῖς ἢ ἡμῶν πιστεύετε;

Κεφ. γ'. 6.

1 **Μ**ετὰ ταῦτα ἀπῆλθεν ὁ Ἰησοῦς πέραν τῆς θαλάσσης τῆς Γαλιλαίας, τῆς Τιβεριάδος.

2 Καὶ ἠκολούθη αὐτῷ ὄχλος πολὺς, ὅτι εἰρων αὐτῷ τὰ σημεῖα, ἃ ἐποίησεν ἐπὶ τῷ ἄσθενέστων.

3 Ἀνῆλθε ὅς τις τὸ ῥος ὁ Ἰησοῦς, ἵνα ἐκείνῳ ἐκμάθηται τῷ μαθητῷ αὐτοῦ.

4 Ἦν ὅς ἐγγὺς τὸ πάχος, ἡ ἑορτὴ τῷ Ἰουδαίων.

5 Ἐτάρας ἦν ὁ Ἰησοῦς τῆς ὀφθαλμῆς, ἅς θεασάμενος ὅτι πολὺς ὄχλος ἔρχεται πρὸς αὐτὸν, λέγει πρὸς τὸν Φίλιππον· Πόθεν ἀγοράσομεν ἄρτους, ἵνα φάωσιν οὗτοι;

6 (Τὸτο ὅς ἔλεγε περὶ αὐτοῦ· αὐτὸς γὰρ ᾔδει τί ἐμελλε ποιεῖν.)

7 Ἀπεκρίθη αὐτῷ Φίλιππος· Διακοσίων δυνάμενον ἄρτοι ἐκ ἀρκυῖν αὐτοῖς, ἵνα ἕκαστος αὐτῷ βροχὺν τι λάβῃ.

8 Λέγει αὐτῷ εἰς οὗ τῷ μαθητῷ αὐτοῦ, Ἀνδρέας ὁ ἀδελφὸς Σίμωνος Πέτρου.

9 Ἔστι παιδάριον ἐν αὐτοῖς ὃ ἔχει πέντε ἄρτους κριθίνων καὶ δύο ὀψάρια· ἀλλὰ ταῦτα τί ἐστὶν εἰς τοσούτους;

10 Ἐπεὶ ὁ Ἰησοῦς· Ποιήσατε τῆς ἀνθρώπων ἀναγκῆς. Ἦν ὅς χορτὸς πολὺς ἐν τῷ τόπῳ. Ἀνέπεσον ἦν οἱ ἄνδρες τῶν ἀριθμῶν ὡσεὶ πεντακισχίλιοι.

11 Ἐλαβε δὲ τὸς ἄρτους ὁ Ἰησοῦς, ἅς εὐχαρισήσας δέδωκε τοῖς μαθηταῖς, οἱ δὲ μαθήται τοῖς ἀναγκημένοις· ὁμοίως καὶ ἐκ τῷ ὀψαρίῳ ὅταν ἤθελον.

12 Ὡς δὲ συνεπλήσθησαν, λέγει τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ· Συναγάγετε τὰ περισσεύοντα κλάσματα, ἵνα μὴ τι ἀπολῇται.

13 Συναγαγὼν ἦν, καὶ ἐγένιστον δώδεκα κοφίνας κλασματῶν ἐκ τῷ πέντε ἄρτων τῷ κριθίνῳ, ἃ ἐπερίσσευσεν τοῖς βεβρωκόσιν.

14 Οἱ ἦν ἄνθρωποι ἰδόντες ὃ ἐποίησε σημεῖον ὁ Ἰησοῦς, ἔλεγον· Ὅτι οὗτος ἐστὶν ἀληθῶς ὁ προφήτης ὁ ἐρχόμενος εἰς τὸν κόσμον.

15 Ἰησοῦς ἐν γὰρ ὅτι μύλησιν ἔρχεσθαι, καὶ ἀρπάξαι αὐτὸν ἵνα ποιήσωσιν αὐτῷ βασιλεῖα, ἀμειψάμενοι πάλιν εἰς τὸ ῥος αὐτοῦ μόνος.

16 Ὡς δὲ οὗτος ἐγένετο, κατέβησαν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἐπὶ τῷ θάλασσῳ.

17 Καὶ ἐμβάτετες εἰς τὸ πλοῖον, ἤρχοντο πέραν τῆς θαλάσσης εἰς Καπερναῦμ· ἡ σκοτία ἤδη ἐγγύονε, ἡ ἡμέρα ἐληλύθει πρὸς αὐτοὺς ὁ Ἰησοῦς.

18 Ὡς τε θαλάσσης, ἀνέμῃ μεγάλῃ πνέοντος, διεγύμνετο.

19 Ἐλλακότες ἦν ὡς τεθόνης ἐκκοσιτέσσερις ἡ τριάκοντα, θεωροῦσι τὸν Ἰησοῦν πλεοναυτὰ ὑπὲρ τῆς θαλάσσης, καὶ ἐγγυὶ τῷ πλοίῳ γινόμενον· ἡ φόβη-θισον.

20 Οὗ δὲ λέγει αὐτοῖς· Εἰμὶ ἐγώ, μὴ φοβῆσθε.

21 Ὡς δὲ λὼν λαβεῖν αὐτὸν εἰς τὸ πλοῖον, καὶ ἀναβῆναι τὸ πλοῖον ἐγένετο ὑπὲρ τῆς γῆς εἰς ὡς ὑπερῶον.

22 Τῇ ἐπαύριον ὁ ὄχλος ὁ ἰσραηλῆς πέραν τῆς θαλάσσης, ἰδὼν ὅτι πλοίαρον ἄλλο ἢ καὶ ὡς ὅκτι ἢ μὴ εἶναι σκηνὴν εἰς ὃ ἐκβήσονται οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ ὅτι ἐπὶ συνεισῆλθε ταῖς μαθηταῖς αὐτοῦ ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸ πλοίαρον, ἀλλὰ μόνοι οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ ἀπῆλθον.

23 Ἀλλὰ δὲ ἦλθε πλοίαρον ὅκτι Τιβεριάδος ἐγγυὶ τῷ τόπῳ ὅπου ἔφαγον τὸ ἄρτον, ἀνέμῃς ἰσχυρῶς τῷ Κυρίῳ.

24 Ὅτε ἦν εἶδεν ὁ ὄχλος ὅτι Ἰησοῦς ἢ ἐκείνῃ, καὶ οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, ἐκβήσονται καὶ αὐτοὶ εἰς τὰ πλοία, ἡ ἦλθον εἰς Καπερναῦμ, ζητούντες τὸν Ἰησοῦν.

25 Καὶ ὁρῶντες αὐτὸν πέραν τῆς θαλάσσης, ἔπλεον αὐτῷ· Ῥαββί, τότε ὡς γέγονας;

26 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ζητεῖτέ με ἢ ὅτι εἰδετε σκηνήν, ἀλλ' ὅτι ἐφάγετε ὅκτι τῷ ἄρτῳ, ἡ ἐχορτάσθητε.

27 Ἐργάζεσθε μὴ τῷ βρώσιν τῷ ἀπολλυμένῳ, ἀλλὰ τῷ βρώσιν τῷ μένουσιν εἰς ζωὴν αἰώνιον, ὡς ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου ὅστις ἔδωκεν· τὸν γὰρ ὁ πατήρ ἐξ-φράγισεν ὁ Θεός.

28 Εἶπεν ἡ πρὸς αὐτόν· τί ποιεῖς, ἵνα ἐργαζώμεθα τὰ ἔργα τῷ Θεῷ;

29 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς ἡ εἶπεν αὐτοῖς· Τὸ ἐστὶν τὸ ἔργον τοῦ Θεοῦ, ἵνα πιστεύητε εἰς ὃν ἀπέστειλεν ἡ-κεῖνος.

30 Εἶπεν ἡν αὐτόν· Τί ἦν ποιεῖς σὺ σημεῖον, ἵνα ἴδωμεν ἡ πιστεύσωμεν σοι; τί ἐργάζῃ;

31 Οἱ πατέρες ἡμεῖς τὸ μῆναι ἔφαγον ἐν τῷ ἔργῳ, καὶ οὗτος ἐστὶ γεγραμμένον· Ἄρτον ὅκτι τῷ ἄρτῳ ἐ-δοκεν αὐτοῖς φαγεῖν.

32 Εἶπεν ἡν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑ-μῖν· Ὁὗς Μωϋσὴς εἰδὼκεν ὑμῖν τὸ ἄρτον ὅκτι τῷ ἄρτῳ, ἀλλ' ὁ πατήρ μου δίδωσιν ὑμῖν τὸ ἄρτον ὅκτι τῷ ἄρτῳ τῷ ἀληθινῷ.

33 Ο ἄρτος ὃς Θεὸς ἐστὶν ὁ καταβαίνων ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ζῶν διδόν· τῷ κόσμῳ.

34 Εἶπον οὖν πρὸς αὐτὸν· Κύριε, πᾶντοτε θὸς ἡμῖν ὁ ἄρτος τῆτον.

35 Εἶπε δὲ αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ μὴ οἱ ἄρτος τῆς ζωῆς· ὁ ἐρχόμενος πρὸς με, καὶ μὴ πεινάσῃ· καὶ ὁ πιστεύων εἰς ἐμέ, καὶ μὴ διψήσῃ πώποτε.

36 Αὐτὸς εἶπον ὑμῖν ὅτι ἐώρακά με· καὶ ἡ πίστις ὑμῶν.

37 Πάν ὃ δίδωσί μοι ὁ πατήρ, πρὸς ἐμέ ἔχει· καὶ ὁ ἐρχόμενος πρὸς με καὶ μὴ ἐκβαλλῶ ἐξω.

38 Οἱ καταβεβήκα ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἵνα ποιῶ τὸ θέλημα τοῦ ἐμοῦ, ἀλλὰ τὸ θέλημα τὸ πέμψαντός με.

39 Τῆτο δὲ ἐστὶ τὸ θέλημα τῷ πέμψαντός με πατρός, ἵνα πᾶν ὃ δέδωκέ μοι, καὶ μὴ ἀπολέτω ἢ αὐτὸ, ἀλλὰ ἀνάστηται αὐτὸ ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

40 Τῆτο δὲ ἐστὶ τὸ θέλημα τῷ πέμψαντός με, ἵνα πᾶς ὁ θεωρῶν τὸν Υἱόν, καὶ πιστεύων εἰς αὐτόν, ἔχῃ ζωὴν αἰώνιον· καὶ ἀνάστηται αὐτόν ἐγὼ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

41 Εὐλογοῦντες οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς αὐτὸν, ὅτι εἶπεν· Εἰ μὴ ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ καταβάς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ.

42 Καὶ ἐλέγον· Οὐχ ἅτες ἐστὶν Ἰησοῦς ὁ υἱὸς Ἰωσήφ, ὃς ἡμεῖς οἰδαμεν τὸν πατέρα καὶ τὴν μητέρα; Πῶς οὖν λέγει ἡτοῦτο· ὅτι ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβέβηκε;

43 Απεκρίθη οὖν ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Μὴ λογίζεσθε μετ' ἀλλήλων.

44 Οὐδεὶς δύναται ἐλθεῖν πρὸς με, ἐὰν μὴ ὁ πατήρ ὁ πέμψας με ἐγκύσῃ αὐτὸν· καὶ ἐγὼ ἀνάστηται αὐτὸν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

45 Ἔστι γεννηθέντων ἐν τοῖς προφήταις· καὶ ἔσονται πάντες διδασκτοὶ τοῦ Θεοῦ. Πᾶς οὖν ὁ ἀκούσας παρὰ τοῦ πατρὸς, καὶ μαθὼν ἔρχεται πρὸς με.

46 Οὐχ ὅτι τὸ πατέρας τις εἰώρακεν, εἰ μὴ ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ· οὗτος εἰώρακε τὸν πατέρα.

47 Αὐτὸν αὐτὸν λέγω ὑμῖν, ὁ πιστεύων εἰς ἐμέ, καὶ ἔχει ζωὴν αἰώνιον.

48 Εἰ μὴ ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος τῆς ζωῆς.

49 Οἱ πατέρες ἡμῶν ἐφαγον τὸ μᾶζον ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἀπέθανον.

50 Οὗτος ἐστὶν ὁ ἄρτος ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβαίνων, ἵνα πᾶς ὃς αὐτὸν φάγῃ καὶ μὴ ἀποθάνῃ.

51 Εἰ μὴ ἐγώ εἰμι ὁ ἄρτος ὁ ζῶν, ὁ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καταβάς· ἐὰν τις φάγῃ ἐκ τούτου τοῦ ἁρτος, ζήσεται εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ ὁ ἄρτος δὲ ὃν ἐγὼ δώσω, ὁ σαῶς μου ἐστίν, ὃν ἐγὼ δώσω ὑπὲρ τῆς τοῦ κόσμου ζωῆς.

52 Εμάχοντο ἔν πρὸς ἀλλήλους οἱ Ἰουδαῖοι, λίγοντες· Πῶς δύναται ὁτοῦ ἡμῖν δοῦναι τὴν σάρκα φαγεῖν;

53 Εἶπεν ἔν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ἐὰν μὴ φάγητε τὴν σάρκα καὶ τὸ ἵν καὶ ἀνδρείη, καὶ πίητε αὐτὸ τὸ αἷμα, καὶ ἔχετε ζωὴν ἐν αὐτοῖς.

54 Οὗ τρώγων μὴ τὴν σάρκα, καὶ πίνων μὴ τὸ αἷμα, ἔχει ζωὴν αἰώνιον· καὶ ἐγὼ ἀναστήσω αὐτὸν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

55 Ἡ καὶ σὰρξ μὴ ἀληθῶς ἐστὶ βρώσις, καὶ τὸ αἷμα μὴ ἀληθῶς ἐστὶ πόσις.

56 Οὗ τρώγων μὴ τὴν σάρκα, καὶ πίνων μὴ τὸ αἷμα, ὅς ἐμοὶ μένει, καὶ ἐγὼ ἐν αὐτῷ.

57 Καθὼς ἀπέστειλέ με ὁ ζῶν πατήρ, καὶ ἐγὼ ζῶ καὶ ὁ πατήρ· καὶ ὁ τρώγων με, καὶ αἶμας ζήσεται ἐν ἐμῇ.

58 Οὗτος ἐστὶν ὁ ἄρτος ὁ ὅς ἐκ τῆς ἡράνῃ καταβάς· καὶ καθὼς ἔφαγον οἱ πατέρες ὑμῶν τὸ μάννα, καὶ ἀπέθανον· ὁ τρώγων τῆτον καὶ ἄρτον ζήσεται εἰς τὴν αἰώνον.

59 Ταῦτα εἶπεν ὅς συναγωγῇ, διδάσκων ἐν Κεπερναῦμ.

60 Πολλοὶ ἔν ἀκούσαντες ὅς τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, εἶπον· Σκληρὸς ἐστὶν ὁτοῦ ὁ λόγος· τίς δύναται αὐτὸν ἀκούειν;

61 Εἰδὼς δὲ ὁ Ἰησοῦς ἐν ἑαυτῷ ὅτι γογγύζουσιν πρὸς τῶν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, εἶπεν αὐτοῖς· Τὸτο ὑμᾶς σκληραίνει;

62 Εἰ ἔν θειοῦτε καὶ τὸν Ἰὸν καὶ ἀνθρώπου ἀναβαίνοντα ὅς ἐν τὸ πρότερον;

63 Τὸ πνεῦμα ἐστὶ τὸ ζωοποιῶν, καὶ σὰρξ καὶ ὠφελεῖ ὅθεν· τὰ ῥήματα αὐτοῦ ἐγὼ λαλῶ ὑμῖν, πνεῦμά ἐστὶ καὶ ζωὴ ἐστὶν.

64 Ἀλλ' ἐστὶν οἱ ὅς ὑμῶν τινες οἱ καὶ πιστεύουσιν· ἥδε καὶ ὅς ἀρχῆς ὁ Ἰησοῦς τινες ἐστὶν οἱ καὶ μὴ πιστεύοντες, καὶ τίς ἐστὶν ὁ παραδόντων αὐτόν.

65 Καὶ εἶπεν· Διὰ τῶν ἡρῶν ὑμῶν, ὅς ἡδὲ δύναται ἐλθεῖν πρὸς με, ἐὰν μὴ ἡ δεδομένον αὐτῷ ἐκ τοῦ πατρὸς μου.

66 Εἰς τῶν πολλοὶ ἀπῆλθον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ ἡκέτι μετ' αὐτοῦ ὄντος ἑκατὸν.

67 Εἶπεν ἔν ὁ Ἰησοῦς τοῖς δώδεκα· Μὴ καὶ ὑμεῖς θέλετε ἀποῶναι;

68 Ἀπεκρίθη καὶ αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, πρὸς τίνα ἀπολεισθήμεθα; ῥήματα ζωῆς αἰώνιον ἔχεις.

69 Καὶ ἡμεῖς πεπιστεύκαμεν καὶ ἐγνώκαμεν ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ καὶ ζῶντος.

70 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ ἐγὼ ὑμῶν
τῆς δωδεκά ἡμετέρας, καὶ οὐκ ἐγὼ εἰς διάβολόν
εἰμι·

71 Ἐλεγε δὲ τῷ Ἰησοῦ Σίμωνος Ἰσκαριώτου· ὅτι
ὁ ἡμελλεν αὐτὸν πρὸς διδοῦναι, εἰς ὃν ὁκ τῷ δώ-
δεκα.

Κεφ. ζ. 7.

1 **Κ**Αὶ παρεπάτη ὁ Ἰησοῦς μὲν ταῦτα ἐν τῇ
Γαλιλαίᾳ, καὶ ὁ ἡμελλεν ἐν τῇ Ἰου-
δαίᾳ παρεπαιτεῖν, ὅτι ἐζήτην αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι ἀ-
ποκτεῖναι.

2 Ἦν δὲ ἐγγύς ἡ εὐρτη τῷ Ἰουδαίῳ ἡ σκηνο-
πηγία.

3 Εἶπον ἄν πρὸς αὐτὸν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ· Με-
τάβηθι ἐντεύθεν, καὶ ὑπάγε εἰς τὴν Ἰουδαίαν,
ἵνα καὶ οἱ μαθηταὶ σου θεωρήσωσι τὰ ἔργα σου ἃ
ποιεῖς.

4 Οὐδεὶς γὰρ ἐν κρυπτῷ τι ποιεῖ, καὶ ζητεῖ αὐτὸς ἐν
παρρησίᾳ εἶναι· εἰ ταῦτα ποιεῖς, φανερώσου σεαυτῷ
τῷ κόσμῳ.

5 Οὐδὲ γὰρ οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ ἐπίσταντες εἰς αὐ-
τὸν.

6 Λέγει ἄν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὁ καιρὸς ὁ ἐμὸς ἤ-
τοι πάρεστιν· ὁ δὲ καιρὸς ὁ ὑμέτερος πάντοτε ἐστίν
ἐτοιμος.

7 Οὐ δύναται ὁ κόσμος μισεῖν ὑμᾶς· ἐμὲ δὲ μι-
σεῖ, ὅτι ἐγὼ μαρτυρῶ περὶ αὐτοῦ, ὅτι τὰ ἔργα αὐτοῦ
πονηρὰ εἰσι.

8 Ὑμεῖς ἀνέβητε εἰς τὴν εὐρτην ταύτην· ἐγὼ ἤτοι
ἀναβαίνω εἰς τὴν εὐρτην ταύτην, ὅτι ὁ καιρὸς ὁ ἐμὸς ἤ-
τοι πεπληρώται.

9 Ταῦτα δὲ εἰπὼν αὐτοῖς, ἔμενεν ἐν τῇ Γαλι-
λαίᾳ.

10 Ὡς δὲ ἀνέβησαν οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ, τότε καὶ αὐ-
τὸς ἀνέβη εἰς τὴν εὐρτην, καὶ φανερώς, ἀλλ' ὡς ἐν κρυ-
πτῷ.

11 Οἱ ἄν Ἰουδαῖοι ἐζήτην αὐτὸν ἐν τῇ εὐρτῇ, καὶ ἐ-
λεγον· Πῶς ἐστίν ὁποιον·

12 Καὶ χορυσμὸς πολὺς περὶ αὐτοῦ ἦν ἐν
τοῖς ὄχλοις· οἱ μὲν ἔλεγον, ὅτι ἀγὰθος ἐ-
στίν· ἄλλοι δὲ ἔλεγον· Οὐ· ἀλλὰ πλάττω τὸν
ὄχλον.

13 Οὐδεὶς μὲντοι παρρησίᾳ ἐλάλει περὶ αὐτοῦ, διὰ
τὸ φόβον τῷ Ἰουδαίῳ.

14 Ἦν δὲ τῆς εὐρτῆς μεσότης, ἀνέβη ὁ Ἰησοῦς εἰς
τὸ ἱερὸν, καὶ ἐδίδασκεν.

15 Καὶ ἐθαύμαζον οἱ Ἰουδαῖοι, λέγοντες· Πῶς οὗτοι γράμματα οὕτως, καὶ μὴ μαθηταί;·

16 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς καὶ εἶπεν· Ἡ ἐμὴ διδαχὴ οὐκ ἐστὶν ἐμὴ, ἀλλὰ τοῦ πέμψαντός με·

17 Ἐὰν τις θέλῃ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιῆναι, γνώσεται περὶ τῆς διδαχῆς, πότερον ἐκ τῶ Θεοῦ ἐστίν, ἢ ἐγὼ ἀπ' ἐμαυτοῦ λαλῶ·

18 Ὁ ἀπ' ἐμαυτοῦ λαλῶν, τὴν δόξαν τὴν ἰδίαν ζητεῖ· ὁ δὲ ζητῶν τὴν δόξαν τοῦ πέμψαντός αὐτόν, οὗτος ἀληθὴς ἐστίν, καὶ ἀδικία ἐν αὐτῷ οὐκ ἐστίν·

19 Οὐ Μωσὴς δίδωκεν ὑμῖν τὸν νόμον, καὶ οὐδεὶς ἔτι ὑμῶν ποιεῖ τὸν νόμον; τί με ζητεῖτε ἀποκτεῖναι;

20 Ἀπεκρίθη ὁ ὄχλος, καὶ εἶπε· Δαιμόνιον ἔχεις· τί σε ζητεῖ ἀποκτεῖναι;

21 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ἐν ἔργῳ ἐποίησα· καὶ πάντες θαυμάζετε·

22 Διὰ τοῦτο Μωσὴς δίδωκεν ὑμῖν τὴν περικομὴν, (οὐχ ὅτι ἐκ τοῦ Μωσέως ἐστίν, ἀλλ' ἐκ τοῦ Πατρὸς) καὶ ἐν Σαββάτῳ περικομίζετε αὐτόν·

23 Εἰ περικομὴν λαμβάνει ἄνθρωπος ἐν Σαββάτῳ, ἵνα μὴ λυθῇ ὁ νόμος Μωσέως, ἐμοὶ χαλεπότερον ὅτι ὅλον ἄνθρωπον ὑγιᾶ ἐποίησα ἐν Σαββάτῳ;

24 Μὴ κρίνετε κατ' ὄψιν, ἀλλὰ τὴν δικαίαν κρίσιν κρίνατε·

25 Ἐλέγον ἄν τινες ἐκ τοῦ Ἱεροσολυμιτῶ· Οὐχ οὗτος ἐστὶν ὃν ζητοῦσιν ἀποκτεῖναι;

26 Καὶ ἴδε, παρήρσιμα λαλεῖ, καὶ οὐδὲν αὐτῷ λέγεται· μήποτε ἀληθῶς ἐγνώσασιν οἱ ἄρχοντες ὅτι οὗτός ἐστιν ἀληθῶς ὁ Χριστός;

27 Ἀλλὰ τοῦτον οἰδαμεν πόθεν ἐστίν· ὁ δὲ Χριστὸς ὅταν ἔρχεται, οὐδεὶς γινώσκει πόθεν ἐστίν·

28 Ἐκράζει οὖν ἐν τῷ Ἱερῷ διδάσκων ὁ Ἰησοῦς, καὶ λέγων· Καμὲ οἴδατε, καὶ οἴδατε πόθεν εἰμὶ· καὶ ἀπ' ἐμαυτοῦ ἐκ ἐλθύνθαι, ἀλλ' ἐστὶν ἀληθινὸς ὁ πέμψας με, ὃν ὑμεῖς οὐκ οἴδατε·

29 Ἐγὼ δὲ οἶδα αὐτόν, ὅτι παρ' αὐτοῦ εἰμι, καὶ κενός με ἐποίησεν·

30 Ἐζήτην οὖν αὐτὸν πιάσαι· καὶ οὐδεὶς ἐπιβάλειν ἐπ' αὐτόν τὴν χεῖρα, ὅτι οὐπω ἐληλύθει ἡ ὥρα αὐτοῦ·

31 Πολλοὶ δὲ ἐκ τοῦ ὄχλου ἐπίστανται εἰς αὐτόν, καὶ ἔλεγεν· Ὅτι ὁ Χριστὸς ὅταν ἔλθῃ, μή τι πλείονα σημεῖα τούτων ποιῇαι ὥς οὗτος ἐποίησεν·

32 Ἦκουσάν οἱ Φαρισαῖοι τῷ ὄχλῳ γογγυζόντος περὶ

πρὸς αὐτὰ ταῦτα. Ἐκτείναντες οἱ Φαρισαῖοι ἔτι ἄρ-
χειρὰς ὑπερέτας, ἵνα πιάσωσιν αὐτόν.

33 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐπὶ μικρὸν χρό-
νον μεθ' ὑμῶν εἰμι, καὶ ὑπάγω πρὸς τὸν πα-
τέρα μου.

34 Ζητήσατέ με, ἔτι ἔσθ' ὅτε εἰμὶ ἐγὼ,
ὅμως ἢ δύνασθε εἰλθεῖν.

35 Εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς ἑαυτὴν· Πῶς ὅτις
μέλῃα πορεύεσθαι, ὅτι ἡμεῖς ἔτι οὐ δύνασμεν αὐτόν; καὶ
εἰς τὴν διασπορὰν τῷ Ἑβραίων μέλῃα πορεύεσθαι, ἔ-
διδάσκεν τῆς Ἑβραίας;

36 Τίς ἐστὶν ἡτοῦτο ὁ λόγος ὃν ἔειπε· Ζητήσατέ με,
καὶ ἔτι οὐ δύνασθε εἰλθεῖν; ὅτε εἰμὶ ἐγὼ, ὅμως ἢ δύνασθε
εἰλθεῖν;

37 Ἐν δὲ τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ τῇ μεγάλῃ τῆς ἐορτῆς ἐ-
στῆκε ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἔκραξε, λέγων· Ἐάν τις διψᾷ, ἐρ-
χέσθω πρὸς με, καὶ πίναται.

38 Ὁ πιστεύων ἐν ἐμῇ, καθὼς εἶπεν ἡ γρα-
φὴ, ποταμοὶ ἐκ τῆς κοιλίας αὐτοῦ ῥέουσιν ὕδατος
ζώντος.

39 (Ταῦτο δὲ εἶπε πρὸς τὸ Πνεῦμα τοῦ ἁ-
γίου λαμβάνοντες οἱ πιστεύοντες ἐν αὐτῷ. Ἡμεῖς
γὰρ ὡς Πνεῦμα Ἅγιον, ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἠδὲ ποῦ ἐδο-
ξάσθην.)

40 Πολλοὶ οὖν ἐκ τοῦ ὄχλου ἀκησάντες τὸν λόγον, ἔ-
λεγον· Οὗτος ἐστὶν ἀληθῶς ὁ προφήτης.

41 Ἄλλοι ἐλεγον· Οὗτοι ἐστὶν ὁ Χριστός· ἄλλοι
δὲ ἐλεγον· Μὴ γὰρ ἐκ τῆς Γαλιλαίας ὁ Χριστός ἐρχε-
ται;

42 Οὐχὶ ἡ γραφὴ εἶπεν, ὅτι ἐκ τοῦ σπέρματος Δα-
βὶδ, καὶ ἀπὸ Βηθλεὲμ τῆς πόλεως ὅπου ὁ Δαβὶδ, ὁ Χρι-
στός ἐρχεται;

43 Σχίσμα οὖν ἐν τῷ ὄχλῳ ἐγένετο δι'
αὐτόν.

44 Τίτις δ' ἠθέλοντο αὐτῷ πιάσαι αὐτόν· ἀλλ'
οὐκ ἐπέβαλεν ἐπ' αὐτόν τις χεὶρ.

45 Ἦλθον οὖν οἱ ὑποκριταὶ πρὸς τὴν ἀρχιερεῖς καὶ
Φαρισαίους, καὶ εἶπον αὐτοῖς ἐκείναι· Διὰ τί οὐκ ἐπαγ-
γετέ αὐτόν;

46 Ἀπεκρίθησαν οἱ ὑποκριταὶ· Οὐδέποτε ἡμεῖς ἐ-
λάβημεν ἀμάρτιαν, οἷς ἡμεῖς οὐκ ἀμάρτιοι.

47 Ἀπεκρίθησαν οὖν αὐτοῖς οἱ Φαρισαῖοι· Μὴ καὶ
ὅμως πεπληρώσθε;

48 Μὴ τις ἐκ τῶν ἀρχόντων ἐπίσθουσι ἐν αὐτῷ, ἢ
ἐκ τῶν Φαρισαίων;

49 Ἀλλ' οὐκ ἔχλος ἦτορ, ὁ μὴ γινώσκων τὸν νόμον,
ὑποκατάκειται αὐτῷ.

50 Λέγει Νικόδημος πρὸς αὐτόν· ὁ ἐλθὼν νυκτὸς
πρὸς αὐτόν, εἰς ἃν εἶπε αὐτῷ.

51 Μὴ ὁ νόμος ἡμεῖς κρίνει τὸν ἀμάρταν, ἢ
οὐκ;

εάν μὴ ἀκούσῃ παρ' αὐτῆς πρότερον καὶ γυνὴ π
ποίη;

52 Ἀπεκρίθησαν ἔπειτα αὐτῷ· Μὴ ἔσθ' οὐκ τῆς
Γαλιλαίας εἶ; ἐρώτησον ἔτι ὅτι Προφήτης οὐκ ἔστι Γα-
λιλαίας ἢ μὴ ἐγγυερταί.

53 Καὶ ἐπορεύθη ἕκαστος εἰς τὸ οἶκον αὐτοῦ.

Κεφ. η'. 8.

1 Ἰησοῦς δὲ ἐπορεύθη εἰς τὸ ὄρος τῷ Ε'-
λαιῶν.

2 Ὁ ὄρη δὲ πάλιν παρεγένετο εἰς τὸ ἱερόν, καὶ
πᾶς ὁ λαὸς ἤρχετο πρὸς αὐτόν. καὶ καθίσας ἐδι-
δάσκεν αὐτούς.

3 Ἀγασοὶ ὅι γράμματις ἔτι Φαρισαῖοι πρὸς αὐ-
τὸν γυναῖκα ἐν μοιχαλῇ κατελημμένην· ἔζητοῦντες
αὐτὴν ἐν μέσῳ.

4 Λέγουσιν αὐτῷ· Διδάσκαλε, αὕτη ἡ γυνὴ κατε-
λήφθη ἐπανθοφάρῳ μοιχομένη.

5 Εὐ δὲ τῷ νόμῳ Μωσῆς ἡμῖν ἐνετείλατο
τὰς τοιαύτας λιθοβολεῖσθαι· σὺ οὖν τί λέγεις;

6 Τῷτο ὁ ἐλεγον περὶ αὐτὴν, ἵνα ἔχωσι κα-
τηγορεῖν αὐτῇ. Ὁ ὅτι Ἰησοῦς κάτω κύψας, τῷ δακτύλῳ
ἔγραψεν εἰς τὴν γῆν.

7 Ὡς ὁ ἐπέμψον ἐρωτᾶντες αὐτὴν, ἀνακύψας εἶπε
πρὸς αὐτὴν· Ὁ ἀναμάρτητος ὕμῳ, πρῶτος τῷ λίθον
ἐπ' αὐτὴν βαλέτω.

8 Καὶ πάλιν κάτω κύψας, ἔγραψεν εἰς τὴν
γῆν.

9 Οἱ ὅτι, ἀκούσαντες, ἔτι τῆς συνεδήσεως ἐ-
λεγχόμενοι, ἤρπχοντο εἰς καθῆς, ἐρεξάμενοι ἀπὸ τῷ
πριτρυτέρῳ ἕως τῷ ἑκάτῳ. Ἐκατελήφθη μόνος ὁ
Ἰησοῦς, ἔτι ἡ γυνὴ ἐν μέσῳ ἑσθῆς.

10 Ἀνακύψας δὲ ὁ Ἰησοῦς, καὶ μεθ' ἑαυτοῦ θεα-
σάμενος πλὴν τῆς γυναίκος, εἶπεν αὐτῇ· Ἡ γυ-
νὴ, ποῦ εἰσιν οἱ κείνοι οἱ κατήγοροί σου; ἡδὲ σε κα-
τεκρίνεν;

11 Ἡ δὲ εἶπεν· Οὐδείς, Κύριε· Εἶπε δὲ αὐτῇ ὁ
Ἰησοῦς· Οὐδέ ἐγώ σε κατακρίνω· πορεύου, ἔτι μηκέτι
ἀμάρτανε.

12 Πάλιν οὖν ὁ Ἰησοῦς αὐτοῖς ἐλάλησε, λέ-
γων· Εγὼ εἰμι τὸ φῶς κόσμου· ὁ ἀκολουθεῖς ἐ-
μοί, ὁ μὴ πατατήσῃ ἐν τῇ σκοτίᾳ, ἀλλ' ἔσται τὸ
φῶς τῆς ζωῆς.

13 Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Φαρισαῖοι· Σὺ ποῦ
συναιτοῦ μαρτυρεῖς· ἡ μαρτυρία σου οὐκ ἔστι ἀ-
ληθής.

14 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, ἔτι αὐτοῖς· Κἂν ἴγω
μαρ-

μαρτυροῦν πρὸς ἐμοὺς, ἀληθῆς ἐστὶν ἡ μαρτυρία μου· ὅτι οἶδα ποθεν ἦλθον, καὶ πῇ ὑπάγω· ὑμεῖς δὲ οὐκ οἰδατε ποθεν ἔρχομαι, καὶ πῇ ὑπάγω.

15 Ὑμεῖς κατὰ τὴν σάρκα κρίνετε, ἐγὼ δὲ κρίνω ὕδενον.

16 Καὶ ἐγὼ κρίνω θεὸν ἐγὼ, ἡ κρίσις ἡ ἐμὴ ἀληθῆς ἐστὶν· ὅτι μόνος οὐκ εἰμί, ἀλλ' ἐγὼ εἰς τὸ πέμψας με Πατὴρ.

17 Καὶ ὅτι τὸ νόμιμον θεὸς τῷ ὑμετέρῳ γέγραπται, ὅτι δύο ἀνθρώπων ἡ μαρτυρία ἀληθῆς ἐστὶν.

18 Ἐγὼ εἰμι ὁ μαρτυροῦν πρὸς ἐμοὺς, εἰς μαρτυρίαν πρὸς ἐμὴν ὁ πέμψας με Πατὴρ.

19 Ἐλέγον ἔν αὐτοῖς· Ποῦ ἐστὶν ὁ Πατὴρ σου; Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὔτε ἐμὲ οἰδατε, ὅτε τὸν Πατέρα μου· αἱ ἐμὲ ᾔδατε, καὶ τὸν Πατέρα μου ᾔδατε ἅν.

20 Ταῦτα τὰ ῥήματα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ γαλιθακαίῳ, διδάσκων ἐν τῷ Ἱερὺ· εἰς οὓς ἐπίστευον αὐτόν, ὅτι ἔκω ἐξηλεύθην ἡ ἄνω χυτῆ.

21 Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ ὑπάγω, καὶ ζητήσετε με, καὶ ἐν τῇ ἀμαρτίᾳ ἣν ἔχω ἀποθάνεσθε· ἔτι ἐγὼ ὑπάγω, ὑμεῖς δὲ θανάσθε ἐλθεῖν.

22 Ἐλέγον ἔν οἱ Ἰουδαῖοι· Μῆτι ἀποκτενεῖ ἑαυτὸν, ὅτι λέγει· Ὅτι ἐγὼ ὑπάγω, ὑμεῖς δὲ θανάσθε ἐλθεῖν;

23 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς οὐκ ᾔκατε ἐπὶ ἐγὼ οὐκ ᾔκατε ἐπὶ ἐμὶ· ὑμεῖς οὐκ ᾔκατε κόσμῳ τῷ ἐστί, ἐγὼ δὲ οὐκ εἰμί οὐκ ᾔκατε κόσμῳ τῷ ἐστί.

24 Εἶπον ἔν ὑμῖν ὅτι ἀποθάνεσθε ἐν ταῖς ἀμαρτίαις ὑμῶν· ἐάν γὰρ μὴ πιστεύετε, ὅτι ἐγὼ εἰμι, ἀποθάνεσθε ἐν ταῖς ἀμαρτίαις ὑμῶν.

25 Ἐλέγον οὖν αὐτῷ· Σὺ τίς εἶ; Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Τὴν ἀρχὴν ὅ, τι εἰς λαλῶ ὑμῖν.

26 Πολλὰ ἔχω πρὸς ὑμῶν λαλεῖν εἰς κρίναι· ἀλλ' ὁ πέμψας με ἀληθῆς ἐστὶ· καὶ γὰρ ἡ ἡμῶν παρ' αὐτοῦ, ταῦτα λέγω εἰς τὸν κόσμον.

27 Οὐκ ἔγνωσαν ὅτι τὸν Πατέρα αὐτοῖς ἔλεγον.

28 Εἶπεν ἔν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ὅταν ὑψώσῃτε τὴν γλῶσσαν ὑμῶν, τότε γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ εἰμι, εἰς ὅτι ἐμοὺς ποιεῖ ὕδενον, ἀλλὰ καθὼς ἐδίδαξέ με ὁ Πατὴρ μου, ταῦτα λαλῶ.

29 Καὶ ὁ πέμψας με, μετ' ἐμοῦ ἐστὶ· οὐκ ἔφη· καὶ με μόνον ὁ Πατὴρ, ὅτι ἐγὼ τὰ ἀρετὰ αὐτοῦ ποιεῖ πάντοτε.

30 Ταῦτα αὐτὸς ἀπαγγέλλων πολλοὶ ἐπίστευσαν εἰς αὐτόν.

31 Ἐλέγει ἔν ὁ Ἰησοῦς πρὸς τὰς πεντήκοντας αὐτοῦ
18-

208 ΕΥ' ΑΓΓΕΛΙΟΝ Cap 8.
Ἰουδαῖοι· Ἐὰν ὑμεῖς μείντε ἐν τῷ λόγῳ τοῦ ἐμοῦ, ἀ-
ληθεὶς μεθεσται ὑμῖν ἐσέ.

31 Καὶ γνώσεσθε τὴν ἀληθειάν, ἥ ἡ ἀλήθεια ἐ-
λευθερώσει ὑμᾶς.

32 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· σπέρμα Ἀβραάμ ἐσμεν, ἃ
ἐξενί δεδαυκαμὴν ποτε· πῶς σὺ λέγεις· Ὅτι ἐ-
λευθεροί γενήσεσθε;

34 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀμὲν ἀμὲν λέγω
ὑμῖν, ὅτι πᾶς ὁ ποιῶν τὴν ἀμαρτίαν, ἐσθλὸς ἐστὶ τῆς
ἀμαρτίας.

35 Ὁ ὃ δὲ ὅλος ἢ μένει ἐν τῇ αἰκίᾳ εἰς τὴν αἰῶνα· ὁ
τῷος μένει εἰς τὴν αἰῶνα.

36 Ἐὰν ἦν ὁ τῷος ὑμῶν ἐλευθερώσῃ, ὅπως ἐλευ-
θεροί ἴσεσθε.

37 Οἶδα ὅτι σπέρμα Ἀβραάμ ἐσε· ἀλλὰ ζη-
τεῖτε με ἀποκτεῖναι, ὅτι ὁ λόγος ὁ ἐμὸς οὐ χω-
ρεῖ ἐν ὑμῖν.

38 Ἐγὼ ὁ εἰράνα φέρω τῷ Πατρὶ μου, κα-
λῶ, καὶ ὑμεῖς ἂν ὁ εἰράνατε φέρω τῷ Πατρὶ ὑμῶν;
ποιεῖτε.

39 Ἀπεκρίθησαν καὶ αὐτὸν αὐτῷ Ὁ Πατὴρ ἡ-
μῶν Ἀβραάμ ἐστὶ. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ
τέκνα τοῦ Ἀβραάμ ἦτε, τὰ ἔργα τοῦ Ἀβραάμ
ἐποιεῖτε ἄν.

40 Νῦν ὃ ζητεῖτέ με ἀποκτεῖναι, ἀφ' ὅθεν ὅς τῷ
ἀληθείαν ὑμῖν λελάληκα, ἣν ἤκουσα πατρὸς τοῦ Θεοῦ. Ἐ-
πο Ἀβραάμ ἢ ἐποίησεν.

41 Ὑμεῖς ποιεῖτε τὰ ἔργα τοῦ πατρὸς ὑμῶν. Εἶπον
αὐτῷ· Ἡμεῖς ὅτι πορεύεσθαι ἡ γεννηθήμεθα· ἐνὰ Πα-
τέρα ἔχομεν, τὸν Θεόν.

42 Εἶπεν ἡν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ ὁ Θεὸς Πατὴρ
ὑμῶν ὡς, ἡγαπάτε ἄν ἐμὲ· ἐγὼ γὰρ ὅτι τὸν Θεὸν ἡγα-
θῶν ἔχω· ὅδε γὰρ ἀπ' ἐμῶν ἐλήλυθα, ἀλλ' ὅτι
ἐκείνους με ἀπέστειλε.

43 Διὰ τί τῷ λαλῶν τῷ ἐμῷ ὃ γινώσκετε; ὅτι οὐ
δυνάσθε ἀκούειν τὸν λόγον τοῦ ἐμοῦ.

44 Ὑμεῖς ὅτι πατέρες τοῦ διαβόλου ἐστέ, καὶ
τὰς ἐπιθυμίας τοῦ πατρὸς ὑμῶν θέλετε ποιεῖν·
ἐκεῖνος ἀφ' ὅθεν ἀποκτενοῦ ὡς ἀπ' ἀρχῆς, ἃ ἐν τῇ ἀλη-
θείᾳ ἢ ἐσηκεν ὅτι ἢ ἐστὶν ἀλήθεια ἐν αὐτῷ, ὅταν
λαλή τὸ ψεῦδος, ὅτι τῷ ἰδίῳ λαλῶ· ὅτι ψεύστης
ἐστὶ, ἃ ὁ πατὴρ αὐτοῦ.

45 Ἐγὼ δὲ ὅτι τῷ ἀληθείαν λέγω, οὐ πιστεύ-
ετε μοι.

46 Τίς ὃ ὑμῶν ἐλέγχει με περὶ ἀμαρτίας;
εἰ δὲ ἀλήθειαν λέγω, τί ὑμῖς οὐ πι-
στεύετε μοι;

47 Ὁ ὃ ἐν ὅτι τῷ Θεῷ, τὰ ρήματα τοῦ Θεοῦ
ἀκούει. Διὰ τοῦτο ὑμῖς οὐκ ἀκούετε, ὅτι ὅτι τοῦ
Θεοῦ ὅτι ἐστέ.

48 Ἀπὸ

48 Ἀπεκρίθη τὰρ ἡν οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ εἶπον αὐτῷ·
Οὐ καλῶς λεγοῦμεν ἡμεῖς, ὅτι Σαμαρεῖτης εἶ σὺ, καὶ
δαιμόνιον ἔχεις;

49 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· Εἰ γὰρ δαιμόνιον οὐκ ἔχω,
ἀλλὰ πρὸς τὸν Πατέρα μου, καὶ ὑμεῖς ἀπιστεῖ-
τετέ με.

50 Εἰ γὰρ ᾧ οὐ ζητῶ τὴν δόξαν μου· ἐσὶν ὁ ζητῶν
καὶ κρίνων.

51 Ἀλλ' ἂν ἀλλ' λέγω ὑμῖν, ἐὰν τις τὸν λόγον
τὸν ἐμὸν τηρήσῃ, θάψεται οὐ μὴ θεωρήσῃ εἰς τὸν
αἰῶνα.

52 Εἶπον οὖν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Νῦν ἐγνώ-
καμεν ὅτι δαιμόνιον ἔχεις· Ἀβραάμ ἀπέθανε,
καὶ οἱ Προφῆται, καὶ σὺ λέγεις· Εἰ γὰρ τις
τὸν λόγον μου τηρήσῃ, οὐ μὴ γόσεται θανάτου
εἰς τὸν αἰῶνα;

53 Μὴ σὺ μίζων εἶ τῷ Πατρὶς ἡμῶν Ἀβραάμ, ᾧ-
σις ἀπέθανε; καὶ οἱ Προφῆται ἀπέθανον· τίνα
σεαυτὸν σὺ ποιεῖς;

54 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς· Εἰ γὰρ ἐγὼ δοξάζω ἐμ-
αυτὸν, ἡ δόξα μου οὐδὲν ἐστίν· ἐστὶν ὁ Πα-
τήρ μου ὁ δοξάζων με, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι Θεὸς
ὑμῶν ἐστίν.

55 Καὶ οὐκ ἐγνώκατε αὐτόν· ἐγὼ δὲ οἶδα
αὐτόν· καὶ ἐὰν εἶπω ὅτι οὐκ οἶδ' αὐτόν, ἐσκα-
μα ὅμοιος ὑμῶν, ψεύστης· ἀλλ' οἶδα αὐτόν, καὶ
τὸν λόγον αὐτοῦ τηρῶ.

56 Ἀβραάμ ὁ Πατὴρ ὑμῶν ἠγαλλιάσατο ἵνα
ᾶ δὴ τὴν ἡμέραν τὴν ἐμὴν· καὶ εἶδε, καὶ
ἠχάρη.

57 Εἶπον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς αὐτόν· Πεν-
τήκοντα ἔτη αὐτῷ ἔχεις, καὶ Ἀβραάμ· εἴωρα-
κας;

58 Εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀλλ' ἂν ἀλλ'
λέγω ὑμῖν, πρὶν Ἀβραάμ γενέσθαι, ἐγὼ
εἰμι.

59 Ἦ δὲ οὖν λίθους ἵνα βάλλωσιν ἐπ' αὐ-
τόν· Ἰησοῦς δὲ ἐκρύβη, καὶ διεῖλθεν ἐκ τοῦ
ἱεροῦ, διελθὼν διὰ μέσου αὐτῶν· καὶ παρή-
λθ' οὕτως.

Κιφ. 9. 9.

- 1 **Κ**ΑΙ παράγων εἶδεν ἄνθρωπον τυφλὸν ἐκ γενετῆς.
- 2 Καὶ ῥωτήσας αὐτὸν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ, λέγου-
τες· Ῥαββί, τίς ἥμαρτεν, ὅπως, ἢ οἱ γονεῖς αὐτοῦ,
ἵνα τυφλὸς γεννηθῇ;
- 3 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὔτε ἡτος ἥμαρτεν, ἢτε
οἱ γονεῖς αὐτοῦ· ἀλλ' ἵνα φανερωθῇ τὰ ἔργα τοῦ Θεοῦ
ἐν αὐτῷ.
- 4 Ἐγὼ δὲ ἔργαζομαι τὰ ἔργα τοῦ μέμφαντός
μου ἐν ἡμέρᾳ ἐστίν· ἔρχεται νύξ, ὅτε οὐδὲς δύναται
ἐργαζέσθαι.
- 5 Οὕτω ἐν τῷ κόσμῳ εἰ, φῶς εἶμι τοῦ
κόσμου.
- 6 Ταῦτα εἰπὼν, ἔπτυσε χαμαί, ἔποίησε πηλὸν
ἐκ τῆς πτύματός, ἔπέχρισε τὸν πηλὸν ὅπῃ τῆς
ὀφθαλμῆς τοῦ τυφλοῦ.
- 7 Καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὑπάγε, νίψαι εἰς τὴν
κορυμβήθραν τοῦ Σιλωᾶ, (ὃ ἐρμηνεύεται, ἀπε-
ταλμένος.) Ἀπῆλθεν οὖν καὶ νίψατο, καὶ ἤλθι
βλέπων.
- 8 Οἱ ὃν γείτονες ἔοι θεωρῶντες αὐτὸν τὸ πρῶ-
τον ὅτι τυφλὸς ἦν, ἔλεγον· Οὐχ' ὅτις ἐστίν ὁ καθή-
μενος ἔπραττε;
- 9 Ἄλλοι ἔλεγον· Οὐκ οὕτως ἐστίν· ἄλλαι δὲ
οὐκ ὅμοιοι αὐτῷ ἐστίν· Ἐκεῖνος ἔλεγεν· Οὐκ εἶμι
τίμι.
- 10 Ἐλεγον ἄν αὐτῷ· Πῶς ἀνέφχθησάν σοι οἱ ὀφ-
θαλμοί;
- 11 Ἀπεκρίθη ἐκεῖνος, ἔειπεν· Ἄνθρωπος λε-
γόμενος Ἰησοῦς, πηλὸν ἐποίησε, ἔπέχρισέ με τῆς
ὀφθαλμῆς, ἔειπέ μοι· Ὑπάγε εἰς τὴν κορυμβήθραν
τῆς Σιλωᾶ, ἔνιψαι. Ἀπελθὼν ἔνι νιψάμηνος, ἀνι-
βλεψα.
- 12 Εἶπον οὖν αὐτῷ· Πῶς ἐστίν ἐκεῖνος; Λέγει·
Οὐκ οἶδα.
- 13 Ἄγνοισιν αὐτὸν πρὸς τοὺς φαρισαίους, τὸν ποτὶ
τυφλόν.
- 14 Ἦν δὲ Σάββατον ὅτε τὸν πηλὸν ἐποίη-
σεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἀνέφξεν αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλ-
μοὺς.
- 15 Πάλιν οὖν ῥωτῶν αὐτὸν καὶ οἱ φαρισαῖοι
πῶς ἀνέβλεψεν. Οὗ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Πηλὸν ἐπέ-
θηκεν ὑπὲρ τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἐνιψάμην, ἔ-
βλεπον.
- 16 Ἐλεγον ἄν ἐκ τῆς φαρισαίων πρέσ· Οὗτος ὁ
ἄνθρω-

ἀνθρώπου ἢ ἐστὶ παρὰ τῷ Θεῷ, ὅτι τὸ Σάββατον ἢ τηρεῖ. Ἄλλοι ἐλέγον· Πᾶς δυνατὸς ἄνθρωπος ἁμαρτωλὸς τοιαῦτα σημεῖα ποιεῖν; Καὶ σχίσμα ἦν ἐν αὐτοῖς.

17 Λέγουσι τῷ τυφλῷ πάλιν· Σὺ τί λέγεις παρὰ αὐτῷ, ὅτι ἤνοιξεν σοι τὰς ὀφθαλμούς; Οὗ δὲ εἶπεν· ὅτι προφῆτης ἐστίν.

18 Οὐκ ἐπίσταται ἔν οἱ Ἰουδαῖοι παρὰ αὐτῷ ὅτι τυφλὸς ἦν ἔτι ἀνιέμενος, ἔως ὅτε ἐρωτήσῃ τὰς γυνεῖς αὐτῷ ᾧ ἀναβλεψάμενος.

19 Καὶ ἠρώτησάν αὐτὰς, λέγοντες· Οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς ὑμῶν, ὃν ὑμεῖς λέγετε ὅτι τυφλὸς ἐγενήθη; πῶς ἔν ἄρτι βλέπει;

20 Ἀπεκρίθησάν αὐτοῖς αἱ γυνεῖς αὐτῷ καὶ εἶπον· Οἶδαμὲν ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ υἱὸς ἡμῶν, ἔτι τυφλὸς ἐγενήθη.

21 Πᾶς δὲ νῦν βλέπει, ἢ οἶδαμὲν, ἢ τίς ἤτοιξεν αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμούς; ἡμεῖς οὐκ οἶδαμὲν· αὐτὸς ἡλικιὰν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε· αὐτὸς παρὰ αὐτῷ λαλήσει.

22 Ταῦτα εἶπον αἱ γυνεῖς αὐτοῦ, ὅτι ἐφοβήντο τὸν Ἰουδαῖον· ἡδὴ γὰρ συνετέθειντο οἱ Ἰουδαῖοι, ἵνα εἰάν τις αὐτὸν ὁμολογήσῃ Χριστὸν, ἀποσυζήτως γένηται.

23 Διὰ τῆτο οἱ γυνεῖς αὐτῷ εἶπον· Οὗ ἡλικιὰν ἔχει, αὐτὸν ἐρωτήσατε.

24 Εἰρώνησαν ἢν ἑα δούτερον τὸ ἄνθρωπον ὅς ἦν τυφλός, ἔτι εἶπον αὐτῷ· Δὸς δεξάν τῷ Θεῷ ἡμεῖς οἶδαμὲν ὅτι ὁ ἄνθρωπος ὅτος ἁμαρτωλὸς ἐστίν.

25 Ἀπεκρίθη ἢν ὁκείνος, ἔτι εἶπεν· Εἰ ἁμαρτωλὸς ἐστίν, ἢν οἶδα· ἐν οἶδα, ἐπὶ τυφλὸς ἦν, ἄρτι βλέπω.

26 Εἶπεν δὲ αὐτῷ πάλιν· Τί ἐποίησέν σοι; πῶς ἤνοιξεν σοι τὰς ὀφθαλμούς;

27 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς· Εἶπον ὑμῖν ἤδη, ἔτι ἢν ἡκούσατε, τί πάλιν θέλετε ἀκούειν; μὴ καὶ ὑμεῖς θέλειτε αὐτῷ μαθηταὶ γενέσθαι;

28 Εἰλοιδόρησαν ἢν αὐτὸν, καὶ εἶπον· Σὺ τι μαθητὴς ὀκείνῃ; ἡμεῖς δὲ τῷ Μωσῇ ἐσμὲν μαθηταί.

29 ἡμεῖς οἶδαμεν ὅτι Μωσῇ λαλήσκειν ὁ Θεός· τῆτον δὲ ἢν οἶδαμεν τὸν Θεὸν ἐστίν.

30 Ἀπεκρίθη ὁ ἄνθρωπος, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· ἔν ᾧ τῷ Θεῷ θαυμαστὸν ἐστίν, ὅτι ὑμεῖς ἢν οἶδατε τὸν Θεὸν ἐστίν, καὶ ἀνέωξέν μου τοὺς ὀφθαλμούς.

31 Οἶδαμεν δὲ ὅτι ἁμαρτωλὸν ὁ Θεὸς οὐκ ἀκούει· ἀλλ' εἰάν τις θεοσεβῇ ἢ, καὶ τὸ θέλημα αὐτῷ ποιῇ, τότε ἀκούει.

32 ἔτι τῷ κείνῳ οὐκ ἠκούσθη ὅτι ἤνοιξέν τι ὀφθαλμούς τυφλοῦ γεννημένου.

33 Εἰ μὴ ὡς υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ἂν ἠδύνατο πτεῖν οὐδέν.

34 Ἀπεκρίθη αὐτῷ, ἔειπεν αὐτῷ. Ἐν ἡμαρτίαις σὺ γεννήθης ὅλος, ἔσθ' οὐδὲν δίδασκεις ἡμᾶς; Καὶ ἔξεβαλον αὐτὸν ἔξω.

35 Ἦκουσεν ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἔξεβαλον αὐτὸν ἔξω. καὶ ὄρων αὐτόν, ἔειπεν αὐτῷ. Σὺ πιστεύεις ἢς τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ;

36 Ἀπεκρίθη ἀκένως, ἔειπε. Τίς ἐστὶ, Κύριε, ἵνα πιστεύσω εἰς αὐτόν;

37 Εἶπε ὁ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς. Καὶ ἑώρακας αὐτόν, ἔσθ' ὁ λαλῶν μὲν σὴν, ἀκένως ἐστίν.

38 Ὁ δὲ ἔφη. Πιστεύω, Κύριε. ἔ προσεκύνησεν αὐτῷ.

39 Καὶ εἶπεν ὁ Ἰησοῦς. Εἰς κρίμα ἐγὼ εἰς τὴν κρίσιν μου τῶν ἡλθόν. ἵνα οἱ μὴ βλέποντες βλέπωσι, ἔσθ' οἱ βλέποντες τυφλοὶ γένωνται.

40 Καὶ ἤκουσάν ἐκ τῆς Φαρισαίων ταῦτα οἱ ὄντες μετ' αὐτοῦ, ἔειπον αὐτῷ. Μὴ ἔσθ' ἡμῖς τυφλοὶ ἐσμεν;

41 Εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς. Εἰ τυφλοὶ ἦτε, ἂν οὐκ ἔχετε ἡμαρτίαν· νῦν ὅμως λέγετε. Ὅτι βλέπομεν, ἡ οὖν ἡμαρτία ὑμῶν μένει.

Κεφ. ι. 10.

1 **Α**ὐτῷ ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὁ μὴ εἰσέρχόμενος διὰ τῆς θύρας εἰς τὴν αὐλήν τῆς προβάτων, ἀλλὰ ἀναβάντων ἀλλαχόθεν, ἐκείνος κλέπτης ἐστὶ ἔσθ' ἡρπῆς.

2 Ὁ δὲ εἰσέρχόμενος διὰ τῆς θύρας, ποιμὴν ἐστὶ τῶν προβάτων.

3 Τὸν δὲ θυρωρὸς ἀνοίγει, ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει. ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει. ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει. ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει.

4 Καὶ ὅταν τὰ ἴδια πρόβατα ἐκβάλῃ, ἐμπροσθεν αὐτοῦ πορεύεται, ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει. ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει. ἔσθ' αὐτῷ ἀκούει.

5 Ἄλλοτεριον δὲ οὐ μὴ ἀκολουθήσωσιν, ἀλλὰ φέρονται ἀπ' αὐτοῦ. ὅτι οὐκ εἶδασιν τῶν ἄλλοτεριον τῶν φωνῶν.

6 Ταῦτῳ τῶν ποιμῶν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς. ἐκείνοι δὲ οὐκ ἔγνωσαν πῶς ὡς ἔλελεν αὐτοῖς.

7 Εἶπεν οὖν πάλιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς. Αὐτῷ ἀμὲν λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐγὼ εἰμι ἡ θύρα τῆς προβάτων.

8 Πάρ-

8 Πάντες οὗτοι πρὸ ἐμῆ ἦλθοι, κλέπται ἐσὶ ἡ ἀληθείας· ἀλλ' ἢ κ' ἠκνέτω αὐτῶν τὰ πρόβατα.

9 Ἐγὼ εἰμι ἡ θύρα· ὃς ἐὰν ἐλθῇ πρὸς ἐμένα, σωθήσεται· ἡ ἀπολείπεται ἡ ὕλη, καὶ ὁ ποιμὴν ἀρήσει.

10 Ὁ κλέπτης ὃς ἔρχεται εἰς τὴν κλέψῃ καὶ θύσῃ ἡ ἀπολέσῃ· ἐγὼ ἦλθον ἵνα ζωὴν ἔχωσι, ἡ περὶ αὐτῶν ἔχουσιν.

11 Ἐγὼ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός· ὁ ποιμὴν ὁ καλὸς τὴν ψυχὴν αὐτοῦ τίθει ὑπὲρ τῶν προβάτων.

12 Ὁ μισθωτὸς δ' ὅς ἐστιν ὁ ποιμὴν, ὃς ἐκ τῶν προβάτων ἴδια, θεωρεῖ τὴν λύκον ἐρχόμενον, ἡ ἀφίησιν τὰ πρόβατα, ἡ φύγει· ὁ δ' ὁ λύκος ἀρπάζει αὐτὰ, ἡ σκορπίζει τὰ πρόβατα.

13 Ὁ δ' ἐκ μισθωτῶν φύγει, ὃς ἐκ μισθωτῶν ἐστίν, ἡ μέλει αὐτῶν ὑπὲρ τῶν προβάτων.

14 Ἐγὼ εἰμι ὁ ποιμὴν ὁ καλός, ἡ γινώσκω τὰ ἐμά, ἡ γινώσκωμαι ὑπὸ τῶν ἐμῶν.

15 Καθὼς γινώσκει με ὁ Πατὴρ, καὶ γὰρ γινώσκω τὸν Πατέρα· ἡ τὴν ψυχὴν μου τίθωμι ὑπὲρ τῶν προβάτων.

16 Καὶ ἄλλα πρόβατα ἔχω, ἢ ἢ κ' ἐστὶν ἐκ τῆς αἰλῆς ταύτης· καὶ κἀκὴν με δεῖ ἀγαγεῖν· καὶ τῆς φωνῆς μου ἀκούσονται· ἡ γενήσονται μία ποίμνη, εἰς ποίμνην.

17 Διὰ τούτο ὁ Πατὴρ με ἀγαπᾷ, ὃς ἐγὼ τίθωμι τὴν ψυχὴν μου ἵνα πάλιν λαβῶ αὐτήν.

18 Οὐδεὶς αἶρε αὐτήν ἀπ' ἐμῆ· ἀλλ' ἐγὼ τίθωμι αὐτήν ἀπ' ἐμαυτοῦ· ὅς ἐστιν ὁ ποιμὴν ἔχω θῆναι αὐτήν, ἡ ὅς ἐστιν ὁ ποιμὴν ἔχω πάλιν λαβεῖν αὐτήν· ταύτην τὴν ἐκ τῆς αἰλῆς ταύτης παραπλήρως Πατὴρ μου.

19 Σχίσμα ὃν πάλιν ἐγένετο ἐν τοῖς Ἰουδαίοις διὰ τῆς λόγου ταύτης.

20 Ἐλεγον δὲ πολλοὶ πρὸς αὐτῶν· Δαιμόνιον ἔχει ἡ ραίνεται· τί αὐτῶν ἀκούετε;

21 Ἄλλοι ἔλεγον· Ταῦτα τὰ ῥήματα ὃς ἐστὶν ὁ δαιμονιζόμενος· μὴ δαιμόνιον δύναται τυφλῶν ὀφθαλμοὺς ἀνοίγειν;

22 Ἐγένετο δὲ τὰ ἐγκαινία ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις ἡ γαμοὺν ἦν.

23 Καὶ παροικεῖται ὁ Ἰησοῦς ἐν τῷ Γερσὶ ἐν τῇ σιῶν ἡ Σλομωνίῳ.

24 Ἐκκύλισται ὃν αὐτῶν οἱ Ἰουδαῖοι, ἡ ἔλεγον αὐτῶν· Ἐως ποτε τὴν ψυχὴν ὑμῶν αἶρεις; εἰ σὺ εἰς ὁ Χριστός, εἰπέ ἡμῖν παρρησια.

25 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἶπον ὑμῖν ἡ περὶ αὐτῶν· τὰ ῥήματα ὃς ἐγὼ ποιεῖ ἐν τῷ ὄνοματι τοῦ Πατρὸς μου, ταῦτα μαρτυρεῖ περὶ ἐμῆ.

26 Ἀλλ' ὑμεῖς ὃς πιστεύετε· ὃς γὰρ ἐστὶ ἐκ τῶν

πρόβατον τῷ ἐμῷ, καθὼς εἶπον ὑμῖν.

27 Τὰ πρόβατα τὰ ἐμὰ τῆς Φωνῆς μου ἀκούει, καὶ γινώσκω αὐτὰ, καὶ ἀκολουθεῖ μοι.

28 Καὶ γὰρ ζωὴν αἰώνιον δίδωμι αὐτοῖς, καὶ ἡ μὴ ἀπόλλυται ἐκ τῆς αἰῶνα, ἔτι καὶ ἀρπάσῃ τις αὐτὰ ἐκ τῆς χειρὸς μου.

29 Ὁ Πατὴρ μου ὅς ἐδωκεῖ μοι, μείζων πάντων ἐστίν· ἔτι καὶ δύναται ἀρπάξαι ἐκ τῆς χειρὸς τῆς Πατρὸς μου.

30 Ἐγὼ καὶ ὁ Πατὴρ ἓν ἐσμεν.

31 Ἐβάστασάν οὖν πάλιν λίθους οἱ Ἰουδαῖοι, ἵνα λιθάσωσιν αὐτόν.

32 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Πολλὰ καλὰ ἔργα ἔδειξα ὑμῖν ἐκ τῆς Πατρὸς μου· διὰ τοῦτον αὐτῶν ἐργον λιθάζετε με;

33 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι λέγοντες· Περὶ καλοῦ ἔργου ἡ λιθάζομέν σε, ἀλλὰ περὶ βλασφημίας, ἔτι ὅτι σὺ ἄνθρωπος εἶ, ποίως σεαυτὸν Θεόν;

34 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ ἐστὶ γεγραμμένον ἐν τῷ τόμῳ ὑμῶν· Ἐγὼ εἶπα, Θεοὶ εἰτε;

35 Εἰ ὁκέτους εἶπα Θεούς, πρὸς ὧς ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ἐγένετο, καὶ οὐ δύναται λυθῶμαι ἡ γραφή.

36 Ὁ δὲ Πατὴρ ἡγάσας ἔαπέστειλεν εἰς τὸν κόσμον, ὑμεῖς λέγετε· Ὅτι βλασφημίας, ὅτι εἶπον· Τίς Θεὸς εἰμι;

37 Εἰ ἡ ποιῶ τὰ ἔργα τῆς Πατρὸς μου, μὴ πιστεύετε μοι.

38 Εἰ δὲ ποιῶ, καὶ ἐμοὶ μὴ πιστεύετε, πῶς ἔργοις πιστεύσατε; ἵνα γινώτε καὶ πιστεύετε ὅτι ἐγὼ ἐμὸς ὁ Πατὴρ, καὶ γὰρ ἐκ αὐτοῦ.

39 Ἐζήτην ἄν πάλιν αὐτὸν πιάσαι· καὶ ἔκλινεν ἐκ τῆς χειρὸς αὐτοῦ.

40 Καὶ ἔκλινε πάλιν πέραν τῆς Ἰορδάνης, εἰς τὸν τόπον ὅπου Ἰωάννης τὸ πρῶτον βαπτίζων· καὶ ἐπίνειν ὤκει.

41 Καὶ πολλοὶ ἦλθον πρὸς αὐτόν, καὶ ἔλεγον· Ὅτι Ἰωάννης μὲν σημεῖον ἐποίησεν ἡμεῖς· πάντα δὲ ὅσα εἶπεν Ἰωάννης περὶ τῆς ἀληθείας ἡμεῖς.

42 Καὶ ἐπιστάσαντες πολλοὶ ὤκει εἰς αὐτόν.

Κεφ. ια' ιι.

1 **Η**Ν δέ τις ἀσθενῶν Λάζαρος ἀπὸ Βηθαθαίας, ὃν ἡ κόρη Μαρία καὶ Μάρθας ἡ ἀδελφὴ αὐτοῦ.

2 (Ἦν ἡ Μαρία ἡ ἀλείψασα τὸ Κύριον μύρω, ἡ ἐκμαίνας τὴν πόδα αὐτοῦ ταῖς θριξίν αὐτῆς ἥς ἡ ἀδελφὴ Λάζαρος ἠσθένει..)

3 Ἀπεκρίθη ἡν αἱ ἀδελφαὶ πρὸς αὐτὸν, λέγουσαι· Κύριε, ἴδε, ὃν φιλεῖς, ἀσθενεῖ.

4 Ἀκούςας δὲ ὁ Ἰησοῦς εἶπεν· Αὕτη ἡ ἀσθένεια ἢ ἐστὶ πρὸς θάνατον, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς δοξῆς τοῦ Θεοῦ, ἵνα δοξασθῇ ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ δι' αὐτῆς.

5 Ἡ γὰρ δὲ ὁ Ἰησοῦς καὶ Μάρθα καὶ ἡ ἀδελφὴ αὐτοῦ καὶ Λάζαρος.

6 Ὡς ἂν ἤκησιν ὅτι ἀσθενεῖ, τότε μὲν ἔμνηεν ὃν ἦν τόπω δύο ἡμέρας.

7 Ἐπειτα μὲν τῷτο λέγει τοῖς μαθηταῖς· Ἀγόμεν ἐς τὸ Ἰουδαίον πάλιν.

8 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ λαθηταί· Ρ' αββί, νῦν ἐξήτην σε λιθάσαι οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ πάλιν ὑπάγεις ἐκεῖ;

9 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Οὐχὶ δώδεκά ἡσιν ὥραι τῆς ἡμέρας; εἰάν τις περπατῇ ἐν τῇ ἡμέρᾳ, ἢ προσκώπται· ὅτι τὸ φῶς τοῦ κόσμου τῷτο βλέπει.

10 Εἰάν δέ τις περπατῇ ἐν τῇ νυκτὶ, προσκώπται, ὅτι τὸ φῶς ἢν ἔστιν ἐν αὐτῷ.

11 Ταῦτα εἶπε· καὶ μὲν τῷτο λέγει αὐτοῖς· Λάζαρος ὁ φίλος ἡμῶν κεκοιμήται· ἀλλὰ πορεύομαι ἵνα ἐξυπνίσω αὐτόν.

12 Εἰπόν ἡν οἱ μαθηταὶ αὐτοῦ· Κύριε εἰ κεκοιμήται, σωθήσεται.

13 Εἶπεν καὶ ὁ Ἰησοῦς περὶ τοῦ θανάτου αὐτοῦ· ὅκεινοι ἡ ἐδοξάμην ὅτι περὶ τῆς κοιμήσεως τοῦ υἱοῦ λέγει.

14 Τότε ἡν εἶπεν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς παρ' ῥησέω· Λάζαρος ἀπέθανε.

15 Καὶ χαίρει δὲ ὑμεῖς, (ἵνα πιστεύσῃτε,) ὅτι ἢν ἡμῶν ἐκεῖ· καὶ ἄγωμεν πρὸς αὐτόν.

16 Εἶπεν ἡν Θωμᾶς, ὁ λεγόμενος Δίδυμος, τοῖς συμμαθηταῖς· Ἀγόμεν καὶ ἡμεῖς, ἵνα ἀποθανώμεν μετ' αὐτοῦ.

17 Ἐλθὼν ἡν ὁ Ἰησοῦς εὗρεν αὐτὸν τέσσαρας ἡμέρας ἢν ἔχοντα ἐν τῷ μνημείῳ.

18 (Ἦν ἡ Βηθαθαία ἐγγὺς τῇ Ἱεροσολύμῳ, ὡς ἀπὸ σαδέων δεκαπέντε.

19 Καὶ πολλοὶ ἐκ τῶν Ἰουδαίων ἐληλύθεισαν πρὸς τὸν πατέρα Μάρθαν καὶ Μαρίας, ἵνα παρηγορηθῶσιν αὐτὰς παρὰ τὸ ἀδελφὸν αὐτῶν.

20 Ἡ δὲ Μάρθα ὡς ἤκουσεν ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἔρχεται, ὑπεβόησεν αὐτῇ· Μαρία δὲ ἐν τῇ οἰκῇ ἐκαθέζετο.

21 Εἶπεν ἡ Μάρθα πρὸς τὸν Ἰησοῦν· Κύριε, εἰ ᾗς ᾧδε, ὁ ἀδελφός μου καὶ ἀνέτεθνήκει.

22 Ἀλλὰ καὶ νῦν οἶδα ὅτι ὅσα ἀναιτήσῃ τὸ Θεόν, δώσει ὁ Θεός.

23 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Αἰσθήσεται ὁ ἀδελφός σου.

24 Λέγει αὐτῇ Μάρθα· Οἶδα ὅτι αἰσθήσεται ἐν τῇ ἀναστάσει ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

25 Εἶπεν αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἰμι ἡ ἀνάστασις καὶ ἡ ζωὴ· ὁ πιστεύων εἰς ἐμέ, καὶ ἀποθάνῃ, ζήσεται.

26 Καὶ πᾶς ὁ ζῶν καὶ πιστεύων εἰς ἐμέ, ἔμψωθήσεται καὶ οὐ μὴ ἀποθάνῃ.

27 Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε· ἐγὼ πεπίστευκα ὅτι σὺ εἶ ὁ Χριστὸς ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, καὶ εἰς τὸν κόσμον ἐρχόμενος.

28 Καὶ ταῦτα εἰπὼσα ἀπῆλθε, καὶ ἐφώνησε Μαρίαν τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς καθεύουσαν, εἰπὼσα· Οἱ διδάσκαλος παρῆναι, καὶ φωνεῖ σε.

29 Ἡ καὶ ὡς ἤκουσεν, ἐγείρεται ταχὺ, καὶ ἔρχεται πρὸς αὐτόν.

30 (Οὕτως δὲ ἐληλύθει ὁ Ἰησοῦς εἰς τὴν πόλιν· ἀλλ' ὡς ἐν τῷ τόπῳ ὅπου ὑπεβόησεν αὐτῇ ἡ Μάρθα.)

31 Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι οἱ ὄντες μετ' αὐτῇ ἐν τῇ οἰκῇ καὶ παρηγορημένοι αὐτῇ, ἰδόντες τὴν Μαρίαν ὅτι ταχέως ἀνέστη καὶ ὑβήλησεν, ἠκολούθησαν αὐτῇ, λέγοντες· Οἱ ὅτι ὑπάρχει εἰς τὸ μνημεῖον ἵνα κλαύσῃ ἐκεῖ.

32 Ἡ δὲ Μάρθα ὡς ἤλθεν ὅπου ὡς ὁ Ἰησοῦς, ἰδὼσα αὐτόν, ἔπεσεν εἰς τοὺς πόδας αὐτοῦ, λέγουσα αὐτῷ· Κύριε, εἰ ᾗς ᾧδε, οὐκ ἂν ἀπέθνηκεν ὁ ἀδελφός.

33 Ἰησοῦς οὖν, ὡς εἶδεν αὐτὴν κλαίονσαν, καὶ τοὺς συτελεσάντας αὐτῇ Ἰουδαῖοι κλαίοντας, ἐνεβριμήσατο τῷ πένθιμῳ, καὶ ἔταραξεν ἑαυτόν.

34 Καὶ εἶπε· Πού πεθεῖκατε αὐτόν; Λέγουσιν αὐτῇ· Κύριε· ἔρχου καὶ ἰδε.

35 Ἐδάκρυσεν ὁ Ἰησοῦς.

36 Ἐλεγον οὖν οἱ Ἰουδαῖοι· Ἰδε πῶς ἐφίλη αὐτόν.

37 Τινὲς δὲ ἐκ αὐτῶν εἶπεν· Οὐκ ἠδύνατο ἕως, ὁ ἀντίλας τοὺς ὀφθαλμοὺς τοῦ τυφλοῦ, ποιῆσαι ἵνα καὶ οὗτος μὴ ἀποθάνῃ;

38 Ἰησοῦς ἦν πάλιν ἐμβριμώμενος ἐν ἑαυτῷ, ἔρχεται
 ἐν τῷ μνημείῳ. Ἦν δ' ἀσηλῶν, ἔλθας ἐπὶ τὴν
 ἐκ' αὐτῆς.

39 Λέγει δ' Ἰησοῦς· Ἄρατε τὸν λίθον. Λέγει αὐτῷ
 ἡ ἀδελφὴ τῆς τεθνηκότης Μάρθα· Κύριε, ὅδη ὅξαι· τι-
 ταρταλὸς γὰρ ἐστίν.

40 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Οὐκ εἶπον σοι, ἐπὶ ἐλπί-
 σούσης, ὅψιν τῷ δόξῃ τῷ Θεῷ;

41 Ἦν δ' αὖ οὖν τὸν λίθον οὗ· ἦν δ' τεθνηκώς
 κείμενος. Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἤρε τούς ὀφθαλμοὺς αὐτῶ, ἔ-
 ἴκε· Πάτερ, ὡχαριστῶ σοι ὅτι ἤκουσάς με.

42 Εἰπὼν δ' ἦν ὅτι πάντοτε μὴ κινήσῃς· ἀλλὰ διὰ
 τὸν ὄχλον τὸν παριέστωτα εἶπον, ἵνα πιστεύσωσιν ὅτι
 σὺ με ἀπέστειλας.

43 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, φωνῇ μεγάλῃ ἐκράγασε· Λά-
 ληρε, δεῦρο ἔξω.

44 Καὶ ὤκνησεν ὁ τεθνηκώς, δεδεμένος τῆς πίδας
 καὶ τὰς χεῖρας καίρας· καὶ ἡ ὄψις αὐτῆς σεδάρειν
 παρεδέδετο. Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἀνάστα αὐτόν, ἔ-
 λφτε ὑπάγειν.

45 Πολλοὶ ὦν ἐκ τῶν Ἰουδαίων εὐελθόντες πρὸς τῷ
 Μωρίῳ, ἔθεσάν τε αὐτοὺς ὅτι ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἐτίσαν-
 σάν τε αὐτόν.

46 Τινὲς δὲ ἦν αὐτῷ ἀπῆλθον πρὸς τὰς φαρισαίους,
 ἔπεισαν αὐτοὺς ὅτι ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς.

47 Συνήγαγον ὦν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ φαρισαῖοι συνί-
 δεοντες, ἔλεγον· Τέ τοιῦτον; ὅτι ἔπαι· ὁ ἀνθρώπος
 πολλὰ σημεῖα ποιεῖ;

48 Εἰπὼν αὐτῶν αὐτόν ἔπαι, πᾶντες πιστεύουσιν εἰς
 αὐτόν· ἔλθουσιν οἱ Ῥωμαῖοι, ἔλθουσιν ἡμεῖς ἔλθουσιν
 ἔλθουσιν ἔλθουσιν.

49 Εἰπὼν δὲ πρὸς αὐτῶν Καίσαρος, ἀρχιερεῖς ὦν
 τοῦ συναγῶντος ἐκείνου, εἶπεν αὐτοῖς· Ὑμεῖς ἐκ εἰδού-
 τε ὅτι;

50 Οὐδὲ ἀπολογίζεσθε ὅτι συμφέρει ἡμῖν ἵνα ἔσ-
 ται ἀνθρώπος ἀποθνήσκων ὑπὲρ τῆς λαῶν, ἔλθουσιν ὅτι ἔθνος
 ἀπὸ τῆς λαῶν.

51 Τῷ τῷ δ' αὖτ' ἔπαι ἔπαι· ἀλλὰ ἀρχιερεῖς ὦν
 τῶν συναγῶντος ἐκείνου, προφήτευσεν ὅτι ἐμελλεν ὁ Ἰησοῦς
 ἀποθνήσκων ὑπὲρ τῆς λαῶν.

52 Καὶ οὐχ ὑπὲρ τοῦ ἔθνους μόνον, ἀλλ' ἵνα
 καὶ τὰ τέκνα τοῦ Θεοῦ τὰ διεσκορπισμένα συναγα-
 γῇ εἰς ἑν.

53 Ἀπ' ἐκείνης ἦν ἡμέρας συνεβουλεύσαντο ἵνα
 ἀποκτείνωσιν αὐτόν.

54 Ἰησοῦς οὖν οὐκ ἐπὶ παρ' ὅστις παρῆναι ἐν
 τοῖς Ἰουδαίοις, ἀλλὰ ἀπῆλθεν ἐκείθεν εἰς τὴν χερσὶν
 ἑλθὼν τῶν Ἰουδαίων, εἰς Ἐφραίμ λεγομένῳ πόλει· καὶ
 διέτριβε μετ' αὐτῶν μεθ' ἑαυτῶν αὐτῶν.

55 Ἦν δὲ ἐγγύς τὸ πάσχα τῶν Ἰουδαίων· ἔλθουσιν
 βρῶν

ἔσαν πολλοὶ εἰς Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ τῆς χώρας πρὸ τῆς πόλεως, ἵνα ἀκούσωσιν αὐτοῦ.

56 Ἐξήτην ὡν τῶ Ἰησοῦν, καὶ ἔλεγον μετ' ἀλλήλων ἐν τῇ Ἱερῇ ἐσκατάῃ· τί δοκεῖ ὑμῖν, ὅτι ἡ μὴ ἔλθῃ εἰς τὴν ἑορτήν;

57 Δεδώκεται δὲ ἡ αἰὶς Ἀρχιερεῖς καὶ οἱ Φαρισαῖοι ἐπελθεῖν, ἵνα ἐκὼν περὶ τοῦ πᾶσι, μὴνύσῃ, ὅπως ποῖα ποιεῖ αὐτοῖς.

Κεφ. ιβ'. 12.

1 Οὖν Ἰησοῦς πρὸ ἑξ ἡμερῶν τῆς πόλεως ἔλθειν εἰς Βηθαθαῖαν, ὅπου ὁ Λαζαρος ὁ τεθνηκώς, ὃν ἠγόρευεν ὅτι νεκρῶν.

2 Ἐποῖησάντων αὐτῷ δαίμων ὁκνή, καὶ ἡ Μάρθα διηκῶν· ὁ δὲ Λαζαρος εἰς τὴν τῶν συνδουλεύων αὐτῷ.

3 Ἡ δὲ οὖν Μάρθα, λαβοῦσα λίτραν μύρου κάρου πιστικῆς πολυτίμου, ἠλάλησε τοὺς πόδας τοῦ Ἰησοῦ, καὶ ἔξερξε τὰς θοῆς αὐτῆς τοὺς πόδας αὐτοῦ· ἡ δὲ οἰκία ἐπληρώθη ὁσμῆς τῆς μύρου.

4 Λέγει οὖν αὐτῷ τῶ μαθητῷ αὐτοῦ, Ἰούδας Σίμωνος Ἰσκαριώτης, ὁ μέλλων αὐτὸν παραδίδοιναί.

5 Διὰ τὴν ταῦτο τὸ μύρον ἢ ἐπράθη τριακοσίων ἀνταλίων, καὶ ἐδόθη πτωχοῖς;

6 Εἶπε δὲ τοῦτο, οὐχ' ὅτι πτωχῶν πλῆθος ἔμελλεν αὐτῷ, ἀλλ' ὅτι κλέπτης ὤν, καὶ τὸ γλωσσόκομον ἔσχε, καὶ τὰ βαλλόμενα ἐβάσταζεν.

7 Εἶπεν οὖν ὁ Ἰησοῦς· Ἀφες αὐτῷ· εἰς τὴν ἡμέραν τῆς σιταφικσμῆς μὴ τετήρηκεν αὐτό.

8 Τῆς πτωχικῆς ὅμως πάντοτε ἔχετε μετ' ἐαυτῶν, ἐμὲ δὲ πάντοτε ἔχετε.

9 Ἐγγὺν ὢν ὁ ὄχλος πολὺς ἀπὸ τῶν Ἰουδαίων ὅτι ὁκνή εἰσι· καὶ ἔλθον ἐκ διὰ τὸν Ἰησοῦν μόνον, ἀλλ' ἵνα καὶ τῷ Λαζάρῳ ἰδῶσιν, ὃν ἠγόρευεν ὅτι νεκρῶν.

10 Ἐβηλόσαρτο δὲ οἱ ἄρχιερεῖς, ἵνα καὶ τῷ Λαζάρῳ ἀποκτείνωσιν.

11 Ὅτι πολλοὶ δὲ αὐτὸν ὑπῆγον τῷ Ἰουδαίῳ, καὶ ἐπίσταντες εἰς τὸν Ἰησοῦν.

12 Τῇ ἐπορεύσει ὁ ὄχλος πολὺς ἐλθὼν εἰς τὴν ἑορτήν, ἀκησάμενοι ὅτι ἔρχεται ὁ Ἰησοῦς εἰς Ἱερουσαλὴμ.

13 Ἐλάβον τὰ βῆλα τῶν φοινίκων, καὶ ἔκρουον αὐτάς· λέγοντες· Ὁσάννα, ὁσάνα, ὁ βασιλεὺς ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι Κυρίου, ὁ βασιλεὺς τῶ Ἰσραὴλ.

14 Εὐ-

14 Εὐρών ὃ ὁ Ἰησοῦς ἀνάγειν, ἐκάθισεν ἐπ' αὐτὸ, καθὼς ἐστὶ γεγραμμένον·

15 Μὴ φοβέσθαι θυγάτηρ Σιών· ἰδεὺ, ὁ βασιλεὺς σου ἔρχεται, καθήμενος ἐπὶ πόλει ἐνῆ.

16 Τοῦτο δὲ ἔκ ἐξιστάλι οἱ μαθηταὶ ἀπὸ τῶν πύλων· ἀλλ' ὅτε ἐδόξασθαι ὁ Ἰησοῦς, τότε ἐμνήσθησαν ἐπὶ ταῦτα ὡς ἐπ' αὐτῷ γεγραμμένα, ὅτι ταῦτα ἐποίησαν αὐτῷ.

17 Ἐμπούρουσιν οὖν ὁ ὄχλος ὁ εὖν μετ' αὐτοῦ, ὅππότεν Λαζαρόν ἐφαίνεσεν ἐκ τοῦ μνημείου, ὅτι ὅρμεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

18 Διὰ τοῦτο καὶ ἐπλήθυνεν αὐτῷ ὁ ὄχλος, ὅτι ἤκουσε τοῦτο αὐτὸν πεποιθέναι τὸ σημεῖον.

19 Οἱ οὖν Φαρισαῖοι εἶπον πρὸς αὐτούς· Φεισθε ὅτι μή κηφελήτε ἡδὲν· ἰδε, ὁ κόσμος ἐπίστω αὐτῷ ἀπὸ τῶν πύλων.

20 Ἡ δὲ αὐτῶν δέειπνε Ἑλλήνες ἐκ τῆς ἀναβαινόντων ἵνα προσηλύτῳσιν ἐκ τῆς ἑσθῆς.

21 Οὗτοι οὖν προσῆλθον Φίλιππον πρὸς αὐτὸν Βηθσαϊδᾶ τῆς Γαλιλαίας, ὅτι ἡρώτων αὐτὸν, λέγοντες· Κύριε, θέλομεν ᾗ Ἰησοῦν ἰδεῖν.

22 Ἐρχεται Φίλιππος καὶ λέγει πρὸς Ἀνδρέαν· καὶ πάλιν Ἀνδρέας καὶ Φίλιππος λεγούσι τῷ Ἰησοῦ.

23 Οἱ δὲ Ἰησοῦς ἀπεκρίναντο αὐτοῖς, λέγοντες· Ἐλέλυθεν ἡ ὥρα ἵνα δοξασθῇ ὁ Υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου.

24 Ἀμὲν ἀμὲν λέγω ὑμῖν· εἴαν μὴ ὁ κόσμος τοῦ σιτοῦ πεσῇ εἰς τὴν γῆν ἀποθάναι, αὐτῆς μένος μένει· εἴαν δὲ ἀποθάνῃ, πολλὴ καρπὸν φέρει.

25 Οἱ φιλοῦν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ἀπολέσκει αὐτήν· καὶ ὁ μισῶν τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐν τῷ κόσμῳ τοῦτῳ, εἰς ζωὴν αἰώνιον φυλάξει αὐτήν.

26 Εἴαν ἐμοὶ Δι᾽ σκοπῇ περὶ ἐμοὶ ἀκολουθεῖτω· καὶ ὅπου ἔρῃ ἐγώ, ἐκεῖ καὶ ὁ δούλος ὁ ἐμὸς ἔσται· καὶ εἴαν περὶ ἐμοὶ Δι᾽ σκοπῇ, πρήσει αὐτὸν ὁ Πατήρ.

27 Νῦν ἡ ψυχὴ μου τετάσσεται· καὶ τί εἶπω; Πάτερ σὺ σπών με ἐκ τῆς ὥρας ταύτης, ἀλλὰ Δι᾽ τοῦτο ἦλθον εἰς τὴν ὥραν ταύτην.

28 Πάτερ, δόξασον σου τὸ ὄνομα· ἦλθεν οὖν φωνὴ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ· καὶ ἐδόξασα, ὅτι πάλιν δόξαται.

29 Οἱ οὖν ὄχλος ὁ ἰσχυρὸς καὶ ἀκούσας, ἔλεγε βροντῶν γεγενῆσθαι· ἄλλοι ἔλεγον· Ἄγγελος κυρίου ἐλάλησεν.

30 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς, ἔπειν· Οὐδὲ ἐμὲ οὕτη ἢ φωνὴ γέγονεν, ἀλλὰ δι' ὑμᾶς.

31 Νῦν κρίσις ἐστὶ τῷ κόσμῳ τῷ· νῦν ὁ ἄρχων τῷ κόσμῳ τῷ ἐκβαλεθήσεται ἔξω.

32 Καὶ γὰρ, ἐὰν ὑψωθῶ ἐκ τῆς γῆς, πάντας ἐκύψω πρὸς ἐμαυτὸν.

33 (Τὴν τοῦ θεοῦ λέγει, σημαίνων ποῖον θανάτῳ ἡμετέραν ἀποθνήσκειν)

34 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ ὄχλος· Ἡμεῖς, ἡκούσαμεν ὅτι τοῦ νόμου ὅτι ὁ Χριστὸς μένει εἰς τὴν αἰῶνα· καὶ τὰς σὺ λέγεις ὅτι θεὸς ὑψώσεται τὸν υἱὸν τοῦ ἀνθρώπου; τίς ἐστὶν οὗτος ὁ υἱὸς τοῦ ἀνθρώπου;

35 Εἶπεν οὖν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐπεὶ μικρὸν χρόνον τὸ φῶς μεθ' ἡμῶν ἐστὶ· περιπατεῖτε εἰς τὸ φῶς, ἵνα μὴ σκοπῇ ὑμᾶς κατὰ λῆν· καὶ ὁ πῶτα τῶν ἐν τῇ σκοτίᾳ οὐκ οἶδε πού ὑπάγει.

36 Ἔως τὸ φῶς ἔχετε, πισθεύετε εἰς τὸ φῶς, ἵνα υἱοὶ φωτός γένησθε. Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, ἔπειθ' ἐκρύβη ἀπ' αὐτῶν.

37 Ταῦτα ὁ αὐτὸς σημεῖα πεποιηκότος ἐμπροσθεν αὐτῶν, ἔκ ἐπίσθου ἐκείνου.

38 Ἦν δ' ὁ λόγος Ἡσαΐας τῷ προφῆτῃ πληρωθῆναι, ὃν ἔειπε· Κύριε, τίς ἐπίσθου τῇ ἀκοῇ ἡμῶν, ἔσθ' ὁ βραχίονας Κυρίου τίνι ἀτεκαλύφθη;

39 Διὰ τῆτο ἐκ ἡδυνάτου πισθεύειν, ὅτι πάλιν εἶπεν Ἡσαΐας·

40 Τετύφλωκεν αὐτῷ τὰς ὀφθαλμούς, ἔπειθ' ἔκρυψε αὐτῷ τὴν καρδίαν· ἵνα μὴ ἴδωσι πῶς ὀφθαλμοῖς, ἔπειθ' ἔκρυψε αὐτῷ τὴν καρδίαν, καὶ ἔκρυψε αὐτῷ τὴν καρδίαν.

41 Ταῦτα εἶπεν Ἡσαΐας ὅτε εἶδε τὴν δόξαν αὐτοῦ, ἔπειθ' ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν.

42 Οἱ μὲν μέντοι ἔσθ' ὅτι τῶν ἀρχόντων πολλοὶ ἐπίσθου εἰς αὐτόν· ἀλλὰ διὰ τῆς φρεσίνος ἔχ' ὁμολογῆναι, ἵνα μὴ ἀποσταλέντες γένωνται.

43 Ἡ γὰρ πρὸς τὴν δόξαν τῶν ἀνθρώπων πολλοὶ ἔσθ' ὅτι δόξαν τῷ Θεῷ.

44 Ἰησοῦς δὲ ἐκραξε καὶ εἶπεν· Οἱ πισθεύοντες εἰς ἐμὲ, οὐ πισθεύετε εἰς ἐμὲ, ἀλλ' εἰς τὸν πέμψαντά με.

45 Καὶ ὁ θεωρῶν ἐμὲ, θεωρεῖ τὸν πέμψαντά με.

46 Ἐγὼ φῶς εἰς τὸν κόσμον ἐλάλησα, ἵνα πᾶς ὁ πισθεύων εἰς ἐμὲ ἐν τῇ σκοτίᾳ μὴ μείνῃ.

47 Καὶ εἰάν τις μου ἀκούσῃ τῶν ῥημάτων, ἔσθ' ὅτι μὴ πισθεύσῃ, ἐγὼ οὐ κρίνω αὐτόν· Οὐ γὰρ ἔστιν ἵνα κρίνω τὸν κόσμον, ἀλλ' ἵνα σώσω τὸν κόσμον.

48 Ο' ἀδελφὸν ἐμὲ καὶ μὴ λαμβάνων τὰ ῥήματα μου, ἔχει τὸν κρινόμενον αὐτόν· ὁ λόγος ὃν ἐλάλησα, ὁ κρινόμενος αὐτὸν ἐν τῇ ἐσχάτῃ ἡμέρᾳ.

49 Ὅτι ἐγὼ ἔξ ἐμαυτοῦ οὐκ ἐλάλησα· ἀλλ' ὃ πέμψα με Πατὴρ, αὐτὸς μοι ἐντολὴν ἔδωκε τί εἴπω ἔτι λαλήσω.

50 Καὶ εἶδα ὅτι ἡ ἐντολὴ αὐτοῦ ζωὴ αἰώνιος ἐστίν· ἃ ἦν λαλῶ ἐγὼ, καθὼς εἶρηκέ μοι ὁ Πατὴρ, οὕτως λαλῶ.

Κεφ. ιγ'. 13.

1 Πρὸ δὲ τῆς ἐορτῆς τοῦ πάσχα, εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐλήλυθεν αὐτοῦ ἡ ὥρα ἵνα μεταβῇ ἐκ τοῦ κόσμου τούτου πρὸς τὸν Πατέρα, ἀγαπήσας τὰς ἰδίους τὰς ἐν τῷ κόσμῳ, εἰς τέλος ἠγαπήσεν αὐτάς.

2 Καὶ δείκνυσι ῥηομένῃ, (τὴν Μαρίαν ἥδη βεβληκότις εἰς τὴν καρδίαν Ἰησοῦ Σίμωνος Ἰσκαριώτου, ἵνα σὺ τὸν πῶτον ἀποδῇς.)

3 Εἰδὼς ὁ Ἰησοῦς ὅτι πάντα δέδωκεν αὐτῷ ὁ Πατὴρ εἰς τὰς χεῖρας, ἔτι ἀπὸ Θεοῦ ἔχων λατρεῖν, ἔτι πρὸς τὸν Θεὸν ὑπακούει.

4 Ἐγχεῖται ὅτι τὸ δείκνυσι, ἔτι πῶς τὰ ἱμάτια· ἔτι λαβὼν λέντον, διεζώνταν ἑαυτόν.

5 Εἶτα βάλλει ὕδωρ εἰς τὴν νιπτήρα, ἔτι ἤρξατο νίπτειν τὰς πόδας τῶν μαθητῶν, ἔτι σκεύασεν τὴν λέντον ὡς διεζωνόμενος.

6 Ἐρχεται οὖν πρὸς Σίμωνα Πέτρον· καὶ λέγει αὐτῷ σκύρις· σὺ μου νίπτεις τοὺς πόδας;

7 Ἀπεκρίθη Ἰησοῦς, καὶ εἶπεν αὐτῷ· Ὅτι ἐγὼ ποῶ, σὺ οὐκ εἶδας ἅρτι, γνώστη δὲ μετὰ ταῦτα.

8 Λέγει αὐτῷ Πέτρος· Οὐ μὴ νίψῃς τὰς πόδας μου ἢς τὸ αἰδοῖμαι. Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ μὴ μὴ νίψω σε, οὐκ ἔχεις μέρος μετ' ἐμοῦ.

9 Λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, μὴ τοὺς πόδας μου μόνον, ἀλλὰ ἔτι τὰς χεῖρας ἔτι τὴν κεφαλὴν.

10 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὁ λεγουμένος οὗ κριὸν ἔχει ἢ τοὺς πόδας νίψασθαι, ἀλλ' ἔστι καθαρός ὅλος· καὶ ὑμεῖς καθαροί ἐσθε, ἀλλ' οὐχὶ πάντες.

11 Ἡμεῖς γὰρ τὸ πᾶν διδοῦμεν αὐτόν· Διὰ τῆς αἵτης· Οὐχὶ πάντες καθαροί ἐσθε.

12 Ὅτε οὖν ἐνίψε τὰς πόδας αὐτοῦ, ἔτι ἔλαβε τὰ ἱμάτια.

ἡμέτερον αὐτῷ· ἀταπεσὼν πάλιν, εἶπεν αὐτοῖς· Ἐπορεύεσθαι πορεύεσθαι ὑμῖν·

13 Ὑμεῖς φωνεῖτέ με· Ὁ διδάσκαλος & ὁ Κύριος· & καλῶς λέγετε· εἰμὶ γὰρ.

14 Εἰ δὲ ἐγὼ ἐνίψα ὑμῶν τὰς πόδας, ὁ κύριος & ὁ διδάσκαλος, & ὑμεῖς ὀφείλετε ἀλλήλων νίπτειν τὰς πόδας.

15 Ὑποδάμνητε, ὅς ἐδωκα ὑμῖν, ἵνα καθὼς ἐγὼ ἐποίησα ὑμῖν, & ὑμεῖς ποιῆτε.

16 Ἀμὴν λέγει ὑμῖν, ὃς ἐστὶ δούλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ, οὐδὲ ἀπόστολος μείζων τοῦ πέμψαντος αὐτόν.

17 Εἰ ταῦτα οἰδάτε, μακάριοί ἐστε ἐὰν ποιῆτε κτλ.

18 Οὐκ οἶδ' ὅτι πάντων ὑμῶν λέγω· ἐγὼ οἶδα ὡς ὀφείλεται· ἀλλ' ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ· Ὁ τρώγων μετ' ἐμοῦ τὸν ἄρτον, ἐπὶ ἡμέτερον πτερνίσματι αὐτοῦ.

19 Ἀπ' ἄρτου λέγει ὑμῖν πρὸς τὸν Χριστόν, ἵνα ὅταν γένηται, πιστεύσητε ὅτι ἐγὼ εἰμι.

20 Ἀμὴν ἀμὴν λέγει ὑμῖν· Ὁ λαμβάνων ἐάν πινῃ τὴν ψυχὴν, ἐμὲ λαμβάνει· ὁ δὲ ἐμὲ λαμβάνων, λαμβάνει & τὴν ψυχὴν μου.

21 Ταῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἐταράχθη τὸ πνεῦμα, & ἐμφοτύρῃσεν, & εἶπεν· Ἀμὴν ἀμὴν λέγει ὑμῖν, ὅτι ἡς ὃς ὑμῶν πρὸς ἐμοῦ.

22 Ἐβλεπον δὲ εἰς ἀλλήλους οἱ μαθηταί, ἀπορήμηντι ὡς τίς λέγει.

23 Ἦν δὲ ἀνακειμένος εἰς τῷ μαθητῷ αὐτοῦ ἐν τῷ κήλῳ τοῦ Ἰησοῦ, ἐν ἡγάτῳ ὁ Ἰησοῦς.

24 Νῦν ἐν τούτῳ Σίμων Πέτρος πυθέσθαι τίς αὐτῷ οἶδ' ὃς λέγει.

25 Ἐπιτεσπὼν δὲ ὁ κύριος ὑπὸ τὸ σῆμα τοῦ Ἰησοῦ, λέγει αὐτῷ· Κύριε, τίς εἰς;

26 Ἀποκρίνεται ὁ Ἰησοῦς· Εἰκενός εἰς ὃς ἐγὼ Ἰάκωβος τὸ ψαμίον ὑποδύστην. Καὶ ἐμβάψας τὸ ψαμίον, δίδωσιν Ἰὺδα Σίμωνος Ἰσκαριώτῃ.

27 Καὶ αὐτὸ τὸ ψαμίον τότε εἰσῆλθεν εἰς ὁκεῖνον ὁ Σατανᾶς. Λέγει δὲ αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὁ ποιεῖς, ποιῇσιν τάχιστα.

28 Τῷ δὲ ἡδὲ ἐγὼ τῷ ἀνακειμένῳ πρὸς πέπτον αὐτοῦ.

29 Τίς γὰρ εἰδὼς, εἰπὶ τὸ γλωσσόκομον αἰχλὺν ὁ Ἰουδαῖος, ὅτι λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἀγνοῶσιν δὲ γὰρ ἡμεῖς ἐξ ὧν εἰς τὴν εὐχρίαν· ἡ τοῖς πτωχοῖς ἵνα πᾶσι.

30 Λαβὼν δὲ τὸ ψαμίον ὁ κύριος, εὐθὺς ἔβηλθεν· καὶ ἔα τὸν.

31 Ὅτι ἐν ἔβῃ, λέγει ὁ Ἰησοῦς· Νῦν εἰδὼς ὁ Ἰουδαῖος τοῦ ἀνθρώπου, & ὁ Θεὸς εἰδὼς αὐτόν.

32 Εἰ ὁ Θεὸς ἐδεξάσθῃ ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ Θεὸς δεξάσθῃ αὐτὸν ἐν ἑωυτῷ, ἔστι δίδου· δεξάσθῃ αὐτὸν.

33 Τεκνίον, ἐπὶ μικρὸν μεθ' ὑμῶν εἰμι· ζητήσετε με, καὶ καθὼς εἶπον τοῖς Ἰουδαίοις· Ὅτι ἐπεὶ ὑπάγω ἐγώ, ὑμεῖς οὐ δύνασθε εἰλθεῖν· ἔστι ὑμῖν λόγος ἄρτι.

34 Ἐν πολλῷ καλῶς δίδωμι ὑμῖν, ἵνα ἀγαπάτε ἀλλήλους· καθὼς ἠγάπησα ὑμῶς, ἵνα ὁ ὑμῶν ἀγαπάτε ἀλλήλους.

35 Ἐν τούτῳ γνώσονται πάντες ὅτι ἐμοὶ μεθυσθεῖς, ἐπὶ ἀγαπῶν ἔχετε ἐν ἀλλήλοις.

36 Λέγει αὐτῷ Σίμων Πέτρος· Κύριε, πῶς ὑπάγω; Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅπου ὑπάγω, οὐ δύνασαι μοι νῦν ἀκολουθήσαι, ὑπερον δὲ ἀκολουθήσεις μοι.

37 Λέγει αὐτῷ ὁ Πέτρος· Κύριε, ὅπου εἶ, ἐγὼ οὐ δύναμαι σοι ἀκολουθήσαι ἄρτι; τὴν ψυχὴν μου ὑπὲρ σου θήσω.

38 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τὴν ψυχὴν σου ὑπὲρ ἐμοῦ θήσῃς; Ἀλλ' ἀλλ' λέγουσιν, οὐ μὴ ἀλέκτωρ φωνῇται ἐως οὗ ἀπαργήσῃ με τῆς.

Κεφ. ιδ'. 14.

1 **Μ**Η' ταραχέσθαι ὑμῶν ἡ καρδίαν· πισθύνετε εἰς τὸν Θεόν, καὶ εἰς ἐμὲ πισθύνετε.

2 Ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ Πατρὸς μου μοι πολλὰ εἰσιν· ἐγὼ δὲ μὴ, εἶπον ἅν ὑμῖν· πορεύομαι ἐπιμεύσαι τόπον ὑμῖν.

3 Καὶ εἰς πορεύω, ἔστι μετέσθαι ὑμῖν τόπον, πάλιν ἐρχομαι, καὶ παραλάβωμαι ὑμῶς πρὸς ἐμαυτὸν· ἵνα ὅπου εἰμι ἐγώ καὶ ὑμεῖς ᾔτε.

4 Καὶ ὅπου ἐγώ ὑπάγω οἴδατε, καὶ τὴν ὁδὸν οἴδατε.

5 Λέγει αὐτῷ Θωμᾶς· Κύριε, ποῦ οἴδαμεν ποῦ ὑπάγεις; καὶ πῶς δύναμεθα τὴν ὁδὸν εἰδέναι;

6 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐγὼ εἰμι ἡ ὁδὸς, ἔστι ἀλήθεια, ἔστι ζωὴ· οὐδεὶς ἐρχεται πρὸς τὸν Πατέρα, ἢ μὴ δι' ἐμοῦ.

7 Εἰ ἐγνώκετέ με, καὶ τὸν πατέρα μου ἐγνώκετε ἅν· ἔστι ἄρτι γινώσκετε αὐτόν, ἔστι ἐσθλάτε αὐτόν.

8 Λέγει αὐτῷ Φίλιππος· Κύριε, δεῖξον ἡμῖν τὸν Πατέρα, ἔστι ἀρκῇ ἡμῖν.

ο Λόγος αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Τοῦτον χάριτον μετ' ἐμοῦ
ἔχει, ὅτι ἐξ ἀναγκῆς με· φίλιππε, ὁ συναρκῶς ἐμὲ, ἐω-
ράκει τὸν Πατέρα· ὁ παρὲς σὺ λέγεις· Διῆξον ἡμῖν τὸν
Πατέρα;

10 Οὐ πισθάμεν ὅτι ἐγὼ ἐν τῇ Πατρὶ, καὶ ὁ Πα-
τὴρ ἐν ἐμοί ἐστίν; τὰ ῥήματα αὐτοῦ ἐγὼ λαλῶ ἡμῖν, καὶ
ἐμαυτῷ ἢ λαλῶ; ὁ δὲ Πατὴρ ὅς ἐν ἐμοί μένων, αὐτὸς
ποιεῖ τὰ ἔργα.

23 Πιστεύετε μοι ὅτι ἐγὼ ἐν τῷ Πατρὶ, ὅς ὁ Πα-
τήρ ἐστί μοι ἑστῆν· ἡ δὲ μή, διὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ πι-
στεύετε μοι.

12 Ἀλλὰ ἀλλὰ λέγει ὑμῶν, ὁ πισθύνων εἰς ἐμὲ,
τὰ ἔργα αὐτοῦ ποιεῖ, καὶ κίνους ποιήσει, καὶ μέ-
λιστα τούτων ποιήσει· ὅτι ἐγὼ πρὸς τὸν Πατέρα μὴ πο-
ιδύμαι.

13 Καὶ ὁ, ὁ ἀπὸ ἀνθρώπου ἐν τῷ ὄντι μου, τοῦτο ποιεῖται. ἵνα ὁ ἐκείνου ὁ Πατήρ ἐν τῷ ὄντι.

14 Ἐάν τι αἰτήσητε ἐν τῷ ὀνόματί μου, ἐγὼ ποιήσω.

15 Εἰς ἃν ἀγαπήτε με, τοὺς ὀφθαλμοὺς τοὺς ἐμούς τη-
ρήσατε.

16 Καὶ ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν Πατέρα, ἵνα ἄλλον πα-
ράκλητον ᾷωσιν ὑμῖν, ἵνα μένη μεθ' ὑμῶν εἰς τὸν
αἰῶνα.

17 Τὸ Πνεῦμα τῆς ἀληθείας, ὃ ὁ κόσμος ἠδύνηται λαβεῖν, ὅτι ἡ θύρα τοῦ αὐτοῦ, καὶ οὐκ οἶσκεν αὐτὸ· ὑμεῖς δὲ γινώσκετε αὐτό, ὅτι παρ' ὑμῶν μένει, ὅτι ἐν ὑμῶν ἔστι.

18 Οὐκ ἀφίσω ὑμῶς ὀρφανούς . ἔρχομαι πρὸς ὑμᾶς .

19 Ἐπὶ μικρὸν, ἔτι ὁ κόσμος με ἀπ' ἐπὶ θανάτου
ὑμῶν δὲ θεωρεῖτέ με· ὅτι ἐγὼ ζῶ, ἔτι ὑμῶν
ἐκείσε.

20 Εἰς χάριν τῇ ἡμέρᾳ γνώσεσθε ὑμᾶς ὅτι
ἐγὼ εἰς τὸ Πατρί μου, ὡς ὑμεῖς ἐν ἐμοί, καὶ ἐν
ὑμῖν.

21 Ὁ ἔχων τὰς ἐντολάς μου, ἐπὶ τῶν αὐτῶν, οὐκ ἔστιν ὁ ἀγαπῶν με· ὁ δὲ ἀγαπῶν με, ἀγαπήσεται ὑπὸ τοῦ Πατρὸς μου· ἐγὼ ἀγαπήσω αὐτόν, ἐμὲ φανήσω αὐτῷ ἐμμετόν.

22 λέγει αὐτὸ Ἰσίδας· (ἢ· ὁ Ἰσχυροκράτης·) Ῥώ-
ρει, πῶς γέγονεν ὅτι ἡμῖν μέλλας ἐμφανίζαν σικαντὸν,
ἐν ἢ καὶ τὸ κύτω;

23 Ἀπεκριθὼς ὁ Ἰησοῦς, ἔειπεν αὐτῷ· Ἐάντις ἀ-
γαπᾷ με, τὸν λόγον μου τηρεῖ· ἔσὶ ὁ Πατὴρ μου ἀγα-
πῆσαι αὐτόν, ἔστω αὐτὸν ἐλεῶσά μεναι, ἔστω αὐτῷ ποιήσασθαι.

24 Οὐ μὴ ἀγαπαῖν με, τὰς λόγους μὴ ἢ τὰς ἐν ᾧ
ἐλόγους ὅν ἀκούετε, ἀλλ' ἐν ᾧ ἐμὸς, ἀλλὰ τὸ πνεῦμα
τὸ μετὰ τὸν πατέρα.

25 Τούτα λελάληκα ὑμῖν παρ' ὑμῖν μένων.

26 Ο' δὲ παράκλητος, τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, πέμψῃ ὁ Πατὴρ ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὁ καὶνος ὑμῖν διδάξει πάντα, καὶ κατοικήσιν ὑμῖν πάντα ἃ εἶπον ὑμῖν.

27 Εἰρήνην ἀφήμι ὑμῖν· εἰρήνην τὴν ἐμὴν ἴδωμι ὑμῖν· οὐ καθὼς ὁ κόσμος δίδωσιν, ἐγὼ δίδωμι ὑμῖν· μὴ ταραχέσθω ὑμῶν ἡ καρδία, καὶ δὲ δειλιάτω.

28 Ἡκίστατε ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑμῖν· Ὑπάγει ὁ ἐρχόμενος πρὸς ὑμῖν· Εἰ ἠγαπήτε με, ἐχάριστε ἅρ' ὅτι εἶπον, πορεύομαι πρὸς τὸν Πατέρα· ὅτι ὁ Πατὴρ μου μέζων μου ἐστίν.

29 Καὶ νῦν ἦρκα ὑμῖν πρὶν ἁγιάσθαι· ἵνα ὅταν ἔλθῃται, πιστεύητε.

30 Οὐκ ἔπι πηλὰ λαλήτω μεθ' ὑμῶν· ἔρχεται γὰρ ὁ τῶ κόσμου τῶτος ἄρχων, ὃς ἐν ἐμοὶ ἔκ ἐχέει ἥδέν.

31 Ἀλλ' ἵνα γινῶ ὁ κόσμος ὅτι ἀγαπᾷ τὸν Πατέρα, ὃς καθὼς ἐνετείλατό μοι ὁ Πατὴρ, ὅτως ποιῶ· ἐγείρεσθε· ἀγνοῶν ἐντεῦθεν.

Κεφ. ι ε. 15.

1 **Ε**γὼ εἰμι ἡ ἄμπελος ἡ ἀληθινή, ὃς ὁ Πατὴρ μου ὁ γεωργὸς ἐστίν.

2 Ἡδὴ κλήμυ. ἐν ἐμοὶ μὴ φέρει καρπὸν, αἵρει αὐτὸ· ὃς πᾶν τὸ καρπὸν φέρει, καθαίρει αὐτὸ, ἵνα πλείονα καρπὸν φέρῃ.

3 Ἡδὴ ὑμεῖς καθαροὶ ἐστέ διὰ τὸν λόγον ὃν λελάληκα ὑμῖν.

4 Μείνετε ἐν ἐμοὶ, καὶ γὰρ ἐν ὑμῖν· καθὼς τὸ κλήμυ οὐ δύναται καρπὸν φέρειν ἄφ' ἑαυτοῦ, ἐὰν μὴ μένῃ ἐν τῇ ἀμπελῇ· ὅτως καὶ ὑμεῖς, ἐὰν μὴ ἐν ἐμοὶ μένητε.

5 Εγὼ εἰμι ἡ ἄμπελος, ὑμεῖς τὰ κλήματα· ὃς μένων ἐν ἐμοί, καὶ γὰρ ἐν αὐτῷ, ὃς φέρει καρπὸν πολύν· ὅτι χωρὶς ἐμοῦ οὐ δύνασθε ποιῆν ἥδέν.

6 Ἐὰν μὴ πεμνῇ ἐν ἐμοὶ, ἐβλήθη ἔξω ὡς τὸ κλήμυ, ὃς ὀξυράσθῃ καὶ συνάγῃσιν αὐτὰ, ὃς εἰς πῦρ βάλλῃσιν, ὃς καίεται.

7 Ἐὰν μείνητε ἐν ἐμοί, καὶ τὰ ῥήματά μου ἐν ὑμῖν μένῃ, ὃς ἴαν θέλῃτε αἰτήσεσθε, ὃς ἁγιάσῃται ὑμῖν.

8 Ἐν τῷ ἐδεξάσθῃ ὁ Πατὴρ μου, ἵνα καρπὸν πόν φέρῃτε· ὃς ἁγιάσῃται ἐμοὶ καθαίρειται.

9 Καθώς ἠγάπησέ με ὁ Πατήρ, καὶ ἡ ἀγάπησα ὑμᾶς. μένετε ἐν τῇ ἀγάπῃ τῇ ἐμῇ.

10 Ἐὰν τὰς ἐντολὰς μου τηρήσῃτε, μὴ ἔσται ἐν τῇ ἀγάπῃ μου· καθὼς ἐγὼ τὰς ἐντολὰς τοῦ Πατρὸς μου τηρῶκα, ἔμεινεν αὐτοῦ ἐν τῇ ἀγάπῃ.

11 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ἡ χαρὰ ἡ ἐμὴ ἐν ὑμῖν μείνῃ, καὶ ἡ χαρὰ ὑμῶν πληρωθῇ.

12 Αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολὴ ἡ ἐμὴ, ἵνα ἀγαπᾶτε ἀλλήλους, καθὼς ἠγάπησα ὑμᾶς.

13 Μείζονα τούτης ἀγάπης οὐδεὶς ἔχει, ἵνα περὶ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ θῇ ὡς περὶ τῆς φίλου αὐτοῦ.

14 Ὅμοιως φίλοι μου ἐστέ, ἐὰν ποιῇτε ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ὑμῖν.

15 Οὐκέτι ὑμᾶς λέγω δούλους· ὅτι ὁ δούλος εἶναι οὐδεὶς πρὸς αὐτοῦ ὁ κύριος· ὑμᾶς δὲ εἴρηκα φίλους, ὅτι πάντα ἃ ἤκουσα πατρὸς τοῦ Πατρὸς μου, ἐγγεγραμμένα ὑμῖν.

16 Οὐχ ὑμῖς με ἤξελεσθε, ἀλλ' ἐγὼ ἤξελεξάμην ὑμᾶς, καὶ ἔδωκα ὑμᾶς, ἵνα ὑμεῖς ὁπαύετε, καὶ καρπὸν φέρετε, καὶ ὁ καρπὸς ὑμῶν μένη· ἵνα ὁ, πρὸς αὐτὴν ἐστὶν πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δῶ ὑμῖν.

17 Ταῦτα ἐντέλλομαι ὑμῖν, ἵνα ἀγαπᾶτε ἀλλήλους.

18 Εἰ ὁ κόσμος ὑμᾶς μισεῖ, γινώσκετε ὅτι ἐμὴ πρῶτον ὑμῶν μίσησεν.

19 Εἰ ὁ τοῦ κόσμου ἦτε, ὁ κόσμος ἀπὸ τὸ ἰδιον ἐφίλει· ὅτι δὲ ἐκ τοῦ κόσμου οὐκ ἐστέ, ἀλλ' ἐγὼ ἤξελεξάμην ὑμᾶς ἀπὸ τοῦ κόσμου, διὰ τὸ μισῆ ὑμᾶς ὁ κόσμος.

20 Μνημονεύετε τοῦ λόγου οὗ ἐγὼ εἶπον ὑμῖν· Οὐκ ἔστι δούλος μείζων τοῦ κυρίου αὐτοῦ· εἰ ἐμὲ ἐδίωξαν, καὶ ὑμᾶς διώξουσιν, εἰ τὸν λόγον μου ἐτήρησαν, ἔσται ὑμῶν τὸν τῆς ἀπορίας.

21 Ἀλλὰ ταῦτα πάντα ποιήσουσιν ὑμῖν διὰ τὸ ὄνομα μου, ἵνα οὐκ εἰδᾶσι τὸν πέμψαντά με.

22 Εἰ μὴ ἦλθον, ἔλαλθα αὐτοῖς, ἀμαρτιὰν ἣν εἶχον· νῦν δὲ πρόφασιν ἔκ ἐχκει παρὰ τῆς ἀπορίας αὐτῶν.

23 Ὅτι ἐμὲ μισοῦν, ἔσται τὸν Πατέρα μου μισοῦν.

24 Εἰ τὰ ἔργα μὴ ἐποίησα ἐν αὐτοῖς, ἃ ἡδεῖς ἄλλοι πεποιθήκειν, ἀμαρτιὰν ἣν εἶχον· νῦν δὲ ἐννοεῖται, καὶ μισήσκειν ἔσται ἐμὲ καὶ τὸν πατέρα μου.

25 Ἀλλ' ἵνα πληρωθῇ ὁ λόγος ὁ γεγραμμένος ἐν τῇ γένεσιν αὐτῶν· Ὅτι ἐμίσησάν με Ἰουδαῖοι.

26 Ὅτι

26 Ὅτι ἐλθὼν ὁ πατέρας, ὃν ἐγὼ πέμψαι ὑμῶν πρὸς τὸν Πατέρα, (τὸ Πνεῦμα τὸ ἀληθινόν, ὃ παρὰ τοῦ Πατρὸς ἀποστάζει,) ὁ αἰὼν μαρτυρήσεται περὶ ἐμοῦ.

27. Καὶ ὑμεῖς ὁμολογεῖτε, ὅτι ἀπ' ἀρχῆς μετ' ἐμοῦ ἔσθε.

KsΦ. 15. 16.

Ἰ **Τ** Αὐτὰ ληλάηκα ὑμῖν, ἵνα μὴ σπάρδαλε-
σθῇτε.

2 Ἀποσυνηγάμενος ποιήσασιν ὑμᾶς· ἀλλ' ἔρχεται
ὄρα, ἵνα πᾶς ὁ ἀποκτείνων ὑμᾶς, δόξῃ κατὰ τὴν προ-
φῆαν τῆς Θεῷ.

3 Καὶ ταῦτα ποιήσατι ὑμῖν, ὅτι ἐκ ἐγώ εἰμι ὁ
Πατήρ καὶ ἐγὼ ἐμὲ.

4 Ἀλλὰ ταῦτα λευκάλακα ὑμῶν, ἵνα ὅταν ἔλ-
θῃ ἡ ὥρα, μνημονεύετε αὐτῶν, ὅτι ἐγὼ εἶπον ὑ-
μῖν. ταῦτα δὲ ὑμῶν ἦν ἀρχῆς καὶ εἶπον, ὅτι μεθ' ὑ-
μῶν ἦμεν.

5. Νῦν δὲ παύσω πρὸς τὴν πέμψαντά με, ὁ ἡδὲ
 ἔτι ἔρχεται με. Πῶς παύσεις;

6 Ἀλλ' ἐπὶ ταῦτα λελαλήκαμε ὑμῖν, ἡ κύπη πεπλη-
ρώκεν ὑμῶν πλὴν καρδίου.

7 Ἀλλ' ἐγὼ τὴν ἀλήθειαν λέγω ὑμῖν, συμφέρει ὑμῖν ἵνα ἐγὼ ἀπέλθω· ἐὰν γὰρ μὴ ἀπέλθω, ὁ Παράκλητος οὐκ ἐλεύσεται πρὸς ὑμᾶς· ἐὰν ὅ πορεύθῃ, πεμψῶ αὐτὸν πρὸς ὑμᾶς.

8 Καὶ ἐλθὼν σκῆτος, ἐλέγχε τὸν κόσμον πρὸς ἡμέραν
πᾶς ἐν πρὸς δικαιοσύνης καὶ πρὸς κτιστοῦς.

9 Περὶ ἁμαρτίας μὲν, ὅτι οὐ πιστεύουσιν εἰς
ἐμέ.

10 Περὶ δικαιοσύνης δὲ, ὅτι πρὸς τὸ Πατέρα με ὑ-
πάρχω, ἔτι καὶ ὅτι θεωρεῖτέ με.

11 Περὶ δὲ κρίσεως, ἐπὶ ᾧ ἄρχων ὁ κόσμος τῶτον
ἔχειται.

12 Ἐπὶ πολλὰ ἔχω λέγειν ὑμῖν, ἀλλ' ἢ δύνασθε
ἀκούειν ὅτι.

13. Οὐ γὰρ ὁ ἔλθῃ ἐκ μὲν, τὸ Πνεῦμα τὸ ἀληθὲς, ἰδοὺ ἡμεῖς μετὰ πάντων τῶν ἀληθῶν· ἢ γὰρ λαλήσῃ ἐφ' ἑαυτῇ, καλλῶν ἑαυτὴν αἰσῶση, λαλήσῃ, ὥς τὰ ἐρχόμενα ἀναγγελεῖ ὑμῖν.

14 Ἐκείνος ἐμὲ δοξάσῃ, ὅτι οὐκ ἔμῃ λήψεται.
 Ἐναντιοῦμαι ὑμῖν.

15 Πάντα ὅσα ἔχει ὁ Πατήρ, ἐμῷ ἔσι·
διὰ τοῦτο εἶπον ὅτι ἐπεὶ ἐμὴ λήψεται, καὶ ἀναγγε-
λῇ ὑμῖν.

16 Μικρόν, καὶ ὃ θεωρεῖτέ με. καὶ πάλιν μικρόν, ἔοψεσθε με, ὅπ' ἐγὼ ὑπάγω πρὸς τὸν Πατέρα.

17 Εἶπεν ἄν' ὅτι τῷ μεθ' αὐτῶν αὐτῶν πρὸς ἀλλήλους· τί ἐστὶ τὸ ὃ λέγει ἡμῖν· Μικρόν, ἔοψεσθε με· καὶ πάλιν μικρόν, ἔοψεσθε με· ἔ, ὅπ' ἐγὼ ὑπάγω πρὸς τὸν Πατέρα;

18 Εἰπὼν ἄν'· Τῷτο τί ἐστὶν ὃ λέγει, τὸ μικρόν; ἢ οἵδαμεν πῶς λαλῇ.

19 Εἰπὼν ἄν' ὁ Ἰησοῦς, ὅτι ἡθελον αὐτὸν ἐρωτᾶν, καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Περὶ τούτου ζητεῖτε μετ' ἀλλήλων, ὅτι εἶπεν· Μικρόν, καὶ ὃ θεωρεῖτέ με· ἔ πάλιν μικρόν, καὶ ὃ θεωρεῖτέ με;

20 Ἀμὲν· ἀμὲν· λέγω ὑμῖν, ὅτι κλαύσονται καὶ θηλώσετε ὑμεῖς, ὃ δὲ κόσμος χαρήσεται· ὑμεῖς δὲ λυπηθήσεσθε, ἅλλ' ἡ λύπη ὑμῶν εἰς χαρὰν γενήσεται.

21 Ἡ γυνὴ ἑστέ τίκτει, λύπῃ ἔχει, ὅτι ἔλθον ἡ ὥρα αὐτῆς· ὅταν δὲ γενήσῃ τὸ παιδίον, οὐκ ἔτι μνημονεύει τῆς θλίψεως, ἀλλ' ὅτι γέννηται ἀνδρῶς εἰς τὸν κόσμον.

22 Καὶ ὑμεῖς οὕτως λύπῃ μὲν νῦν ἔχετε· πάλιν δὲ ἔσομαι ὑμᾶς, καὶ χαρήσεται ὑμῶν ἡ καρδία, καὶ τῷ χαρᾷ ὑμῶν οὐδεὶς αἶρει ἀφ' ὑμῶν.

23 Καὶ ὅς ὁκεῖν, τῇ ἡμέρᾳ ἐμὲ οὐκ ἐρωτήσετε οὐδέν· Ἀμὲν· ἀμὲν· λέγω ὑμῖν, ὅπ' ὅσα ἀπαιτήσετε τὸν πατέρα ἐν τῷ ὀνόματί μου, δώσει ὑμῖν.

24 Ἔως ἄρτι οὐκ ἠτήσατε οὐδέν ἐν τῷ ὀνόματί μου· αἰτεῖτε, ἔοψεσθε, ἵνα ἡ χαρὰ ὑμῶν ἡ πεπληρωμένη.

25 Τοῦτο ἐν παροιμίαις λαλάσκα ὑμῖν· ἅλλ' ἔρχεται ὥρα ὅτε οὐκ ἔτι ἐν παροιμίαις λαλήσω ὑμῖν, ἀλλὰ παρ' ῥησὶα πρὸς τοῦ Πατρὸς ἀναγγελῶ ὑμῖν.

26 Ἐν ὁκείῃ τῇ ἡμέρᾳ ἐν τῷ ὀνόματί μου αἰτήσεσθε· ἔ οὐ λέγω ὑμῖν ὅπ' ἐγὼ ἐρωτήσω τὸν Πατέρα πρὸς ὑμᾶς.

27 Αὐτὸς γὰρ ὁ Πατὴρ φιλεῖ ὑμᾶς, ὅτι ὑμεῖς ἐμὲ πεφιλήκατε, ἔ πεπιστώκατε ὅτι ἐγὼ πρὸς τὸν Θεὸν ἔξῃλθον.

28 Ἐξῃλθὼν πρὸς τὸν Πατέρα, ἔ ἐλήλυθα εἰς τὸν κόσμον· πάλιν ἀφίγμι τὸν κόσμον, ἔ πορεύομαι πρὸς τὸν Πατέρα.

29 Λέγουσιν αὐτῷ οἱ μεθ' αὐτοῦ· Ἰδὲ νῦν παρ' ῥησὶα λαλῇς, ἔ παροιμῶν ἡδαιμῶν λέγεις.

30 Νῦν οἵδαμεν ὅπ' οἵδαις πάντα, ἔ ὃ χρῆμα ἔχεις· τί σε ἐρωτῶ· ἐν τούτῳ πιστεύομεν ὅπ' ἀπὸ Θεοῦ ἔξῃλθεις.

31 Ἀπεκρίθη αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς · Ἀρτι πί-

32 Ἰδὲν, ἔρχεται ὥρα, ἢ νῦν ἐλήλυθεν, ἵνα
καρπίσῃτε ἰκαστος εἰς τὰ ἴδια, καὶ ἐμὲ μόνον
φῆτε · Ἐγὼ εἰμὶ μόνος, ὅτι ὁ Πατὴρ μετ' ἐμοῦ
51.

33 Ταῦτα λελάληκα ὑμῖν ἵνα ὅτι ἐμοὶ ἐκλήνχον ἔ-
χητε · ὅτι τῷ κόσμῳ θλίψιν ἔχετε · ἀλλὰ θαρσύνετε ·
καὶ νενίκηκα τὸν κόσμον.

Κεφ. ιζ'. 17.

1 Ταῦτα ἐλάλησεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἐπῆκε τῆς ἐφ-
θαλμῆς αὐτοῦ εἰς τὸν Ἰωάννην, ἔειπε · Πάτερ,
ἐλήλυθεν ἡ ὥρα, δεξασθὲν σὺ τὸν υἱόν, ἵνα ἢ ὁ Τίθες
τὴν δοξάσῃ σε.

2 Καθὼς ἔδωκας αὐτῷ ἐξουσίαν πάσης σαρκός,
ἵνα πᾶν ὃ δέδωκας αὐτῷ, δώσῃ αὐτοῖς ζωὴν
αἰώνιον.

3 Αὕτη δέ ἐστιν ἡ αἰώνιος ζωὴ, ἵνα γινωσκασί σε
τὸν μόνον ἀληθινόν Θεόν, καὶ ὃν ἀπέστειλας Ἰησοῦν
Χριστόν.

4 Ἐγὼ σε ἐδόξασα ἵνα τῆς γῆς · τὸ ἔργον ἐτε-
λείωσα ὃ δέδωκας μοι ἵνα ποιήσω.

5 Καὶ νῦν δεξασθὲν με σὺ Πάτερ, πᾶσι σπουδῇ
τῇ, δόξῃ ἡ ἐκχὺον πρὸς τὸν κόσμον εἶναι, πᾶσι
τοῖς.

6 Ἐφάρμοσά σε, τὸ ὄνομα τοῦ ἀμδραύτοιο,
αὐτὸς δέδωκας μοι ὅτι τοῦ κόσμου · σοὶ ἡ σὰρξ,
καὶ ἐμοὶ αὐτοὺς δέδωκας, καὶ τὸν λόγον σου
τήτηρήκασι.

7 Νῦν ἐγνωκὼς ὅτι πάντα ὅσα δέδωκας μοι, πᾶσι
σὺ ἐστίν.

8 Ὅτι τὰ ῥήματα ἃ δέδωκας μοι, δέδωκα αὐ-
τοῖς · ἔαυτοὶ ἐλάβον, ἔγνωσαν ἀληθῶς ὅτι πα-
τὴρ σὺ ἐξῆλθον, καὶ ἐπίστουτάν ὅτι σὺ με ἀπέσταλ-
λας.

9 Ἐγὼ πᾶσι αὐτοῖς ἐρωτῶ · ἢ πᾶσι τὸν κόσμον ἐρωτῶ,
ἀλλὰ πᾶσι ὃν δέδωκας μοι, ὅτι σοὶ εἰσι.

10 Καὶ τὰ ἐμὰ πάντα σὰ ἐστίν, ἔτι καὶ τὰ σὰ ἐμὰ · ἔ-
τι δίδωσμαι ὅτι αὐτοῖς.

11 Καὶ ἔτι εἰμὶ ἐν τῷ κόσμῳ, ἔτι ὅπου ἐν τῷ
κόσμῳ εἰσί · ἔτι ἐγὼ πρὸς σὲ ἔρχομαι · Πάτερ ἄγιε,
τῆς αἰῆτος ἐν τῷ ἐνόματί σου, ὃς δέδωκας μοι,
112 ὅτι σὺ ἐν καθάραις ἡμῶν.

12 Ὅτι ἐμὼ μετ' αὐτοῖς ἐν τῷ κόσμῳ, ἐγὼ ἐ-
τήνην αὐτοῖς ἐν τῷ ὀνόματί σου · ὃς δέδωκας μοι
ἐφύ-

ἐφύλαξα, καὶ ἡδὲς ἔξ αὐτῶ ἀπάλεται, καὶ
 μὴ ὁ υἱὸς τῆς ἀπολήσεως, ἵνα ἡ γραφὴ πλη-
 ρωθῇ.

13 Νῦν δὲ πρὸς σὲ ἔρχομαι, ἔ ταῦτα λαλῶ ἐν
 τῷ κόσμῳ, ἵνα ἔχωσι τὴν χαρὰν τὴν ἐμὴν πεπληρω-
 μένῃ ἐν αὐτοῖς.

14 Εἰγὼ δέδωκα αὐτοῖς τὸν λόγον σου, καὶ ὁ κόσμος
 ἠμίσησεν αὐτὸν, ὅτι ἐκ εἰσὶν ἐκ τοῦ κόσμου, καθὼς
 ἐγὼ ἐκ εἰμὶ ἐκ τοῦ κόσμου.

15 Οὐκ ἐρωτῶ ἵνα ἄρῃς αὐτὸν ἐκ τοῦ κόσμου, ἀλλ'
 ἵνα τηρήσῃς αὐτὸν ἐκ τοῦ πονηροῦ.

16 Ἐκ τοῦ κόσμου ἐκ εἰσὶ, καθὼς ἐγὼ ἐκ τοῦ κόσμου
 ἐκ εἰμὶ.

17 Ἀγίασον αὐτὸν ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου· ὁ λόγος ὁ
 σὺς ἀληθεύει ἐστίν.

18 Καθὼς ἐμὲ ἀπέστειλας εἰς τὸν κόσμον, καὶ ἐκ
 πέστειλα σὸν υἱόν ἐκ τοῦ κόσμου.

19 Καὶ ὑπὲρ πάντων ἐγὼ ἀγιάζω ἐμὲν, ἵνα ἔσῃ
 πᾶσι ὅσιν ἡγιασμένοι ἐν ἀληθείᾳ.

20 Οὐ παρὰ τούτων δὲ ἐρωτῶ μόνον, ἀλλὰ ἔ παρὰ
 τῇ πιστεύουσάντων διὰ τοῦ λόγου αὐτῶ ἐς ἐμέ.

21 Ἴνα πάντες ἐν ᾧ, καθὼς σὺ Πάτερ ἐν ἑμοῖ,
 καὶ ἐγὼ ἐν σοὶ, ἵνα καὶ αὐτοὶ ἐν ἑμῖν ἐν ᾧ σὺν· ἵνα ὁ
 κόσμος πιστεύσῃ ὅτι σὺ με ἀπέστειλας.

22 Καὶ ἐγὼ τὴν δόξαν ἣν δέδωκάς μοι, δέ-
 δωκα αὐτοῖς· ἵνα ᾧ σὺν, καθὼς ἡμεῖς ἐν ᾧ σὺν.

23 Εἰγὼ ἐν αὐτοῖς, καὶ σὺ ἐν ἑμοῖ, ἵνα ᾧ σὺν τιτι-
 λημένοι ἐς ἐν, ἔ ἵνα γινώσκῃ ὁ κόσμος, ὅτι σὺ με
 ἀπέστειλας, ἔ ἡγάπησας αὐτὸν, καθὼς ἐμὲ ἡγά-
 πησας.

24 Πάτερ, ὅς δέδωκάς μοι, θέλω ἵνα ὅπως εἰμὶ ἐ-
 γὼ, καὶ πάντες ᾧ σὺν μετ' ἐμὲ· ἵνα θεωρῶσι τὴν δόξαν
 τὴν ἐκείνην ἣν ἔδωκάς μοι, ὅτι ἡγάπησάς με πρὸ κα-
 ταβολῆς κόσμου.

25 Πάτερ δέκαμε, καὶ ὁ κόσμος σε ἐκ ἐγὼ,
 ἐγὼ δὲ σε ἐγνων, καὶ ᾧ σὺν ἐγνώσῃ ὅτι σὺ με ἀπέ-
 στειλας.

26 Καὶ ἐγνώρισα πᾶσι τὸ ὄνομά σου, καὶ γνωρί-
 σαι ἵνα ἡ ἀγάπη ἣν ἡγάπησάς με, ἐν αὐτοῖς ἡ, καὶ
 γὰρ ἐν αὐτοῖς.

Κεφ. ιη. 18.

1 **Τ**αῦτα εἰπὼν ὁ Ἰησοῦς ἔβηλθεν σὺν τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ πέραν τοῦ χειμάρρου τοῦ Κεδρὸν, ὅπου ἦν κήπος, εἰς ὃν εἰσῆλθεν αὐτὸς ἔτι καθεστὼς αὐτῷ.

2 Ἦν δὲ ἔτι ἐκεῖ ὁ ᾠδοῦνός αὐτοῦ, καὶ τὸ πνεῦμα ἐπεπλήθυνεν αὐτὸν ὁ Ἰησοῦς ὅκει μὲν τῷ μαθητῇ αὐτοῦ.

3 Ὁ Ἦν ἐκεῖ λαβὼν καὶ σπῆραν, ἔτι ὅτε τῷ ἀρχιερέων ἐφαισάμην ὑπακούειν, ἐρχεται ὅπου μὲν φωνῶν ἔτι λαμπαδῶν ἔτι ὅτε.

4 Ἰησοῦς Ἦν εἰδὼς πάντες τὰ ἐρχόμενα ἐπ' αὐτόν, ἐξελθὼν εἶπεν αὐτοῖς· Τίνα ζητεῖτε;

5 Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ Ἰησοῦς καὶ Ναζωραῖον. Λέγουσιν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Εἰ γὰρ εἶμι. Εἰσῆλκε δὲ καὶ Ἰούδας ὁ ᾠδοῦνός αὐτοῦ, μετ' αὐτῶν.

6 Ὡς Ἦν εἶπεν αὐτοῖς· Ὅτι ἐγὼ εἶμι· ἀπῆλθον ἐκ τῶ ὀπίσσω, ἔτι ἐπεσον χαμαί.

7 Πάλιν Ἦν αὐτὸς ἐπρωτόησε· Τίνα ζητεῖτε; Οἱ δὲ ἔπεισαν· Ἰησοῦν καὶ Ναζωραῖον.

8 Ἀπεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Ἦσαν ὑμῖν ὅτι ἐγὼ εἶμι· καὶ Ἦν ἐμὲ ζητεῖτε, ἀφετε τίς τις ὑποσχεῖται.

9 Ἰτα πληρωθεὶς ὁ λόγος ὃν εἶπεν· Ὅτι ἔτι δεδοκῆκε μοι, ἐκ ἀπώλειαν εἶναι αὐτῷ ἡδὲνα.

10 Σίμων Ἦν Πέτρος, ἔχων μάχαιραν, ἔλκευσεν αὐτῷ, ἔτι ἐπαισε τὸν καὶ ἀρχιερέως δούλον, καὶ ἀπέκονεν αὐτόν τὸ ὀπίσσω τὸ δεξιόν. Ὡς δὲ ἄκουσεν τὸ δούλον Μάλχος.

11 Εἶπεν Ἦν ὁ Ἰησοῦς τῷ Πέτρῳ· Βάλε τὴν μάχαιράν σου εἰς τὸ θηλάριον, τὸ πατήριον ὃ δεδοκῆκε μοι ὁ Πατήρ, καὶ μὴ πῶ αὐτόν.

12 Ἦν δὲ σπῆραν καὶ ὁ χιλιάρχος καὶ οἱ ὑπακούοντες τῷ Ἰουδαίῳ συνελαβόν τὸν Ἰησοῦν, ἔτι ἐδούσαν αὐτόν.

13 Καὶ ἀπήγαγον αὐτόν πρὸς Ἀννᾶν πρῶτον· Ὡς δὲ παθέρως τῷ Καίᾳφ, ὃς ἦν ἀρχιερεὺς καὶ ὄντων τῷ ὀκνῶν.

14 Ἦν δὲ Καίᾳφας ὁ συνβουλεύσας τοῖς Ἰουδαίοις ὅτι συμφέρει ἓνα ἄνθρωπον ἀποθνήσκειν, ὑπὲρ τοῦ λαοῦ.

15 Ἦν καὶ ἐκεῖ τῷ Ἰησοῦ Σίμων Πέτρος, ἔτι ὁ ἄλλος μαθητὴς· ὃς δὲ καὶ ἦν ὁ ὀκνῶν· Ὡς γινώσκων τὸν ἀρχιερέα, ἔτι συνεβλήθη τῷ Ἰησοῦ εἰς τὴν αὐλήν καὶ ἀρχιερέως.

16 Ὁ δὲ Πέτρος ἐκείνην πρὸς τὴν θύραν ἔξω· ἔβηλθεν Ἦν ὁ μαθητὴς ὁ ὀκνῶν· ὃς Ὡς ἦν ὁ ὀκνῶν τῷ ἀρχιερέι, ἔτι Ἦν τῷ θυροφύλῃ, ἔτι ἀπήγαγε καὶ Πέτρον.

17 Λέγει ἢ ἡ παιδεία ἡ θουραὸς τοῦ Πέτρου· Μὲν εἰ σὺ ὅτι τῷ μαθητῷ εἶ ᾧ ἀνθρώπῳ τῷ· Λέγει ἡ καὶ οὐκ· Οὐκ εἰμὶ.

18 Εἰς ἡμεῖς δὲ οἱ δούλοι καὶ οἱ ὑποτάτοι ἀνθρώπων πεποιηκότες, ὅτι ψόχος ἡ, καὶ ἐθελοντο· ὡς δὲ μετ' αὐτῶν ὁ Πέτρος ἐπὶ τῶν ἐθελοντο.

19 Οὗ ἢ ἀρχιερεὺς ἠρώτησε τὸν Ἰησοῦν περὶ τοῦ μαθητῆ αὐτοῦ, καὶ περὶ τῆς διδασκίης αὐτοῦ.

20 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ μὴ παρ' ἡμῶν ἐλάλησεν τὸ κόσμῳ· ἐγὼ πάντως εἰδὼς ὅτι τῇ συγγενεῇ καὶ ἐν τῷ γένει, ὅπου πλῆθος οἱ Ἰουδαῖοι συνέρχονται, ἔσονται κρυπτὰ ἐκάλησα ἔσονται.

21 Τί με ἐπερωτᾷς; ἐπερωτήσων τῶν ἀκηκόων, τί ἐλάλησα αὐτοῖς· ἴδε, εἴποι οἱδοκίαν αὐτοῖς ἐγὼ.

22 Ταῦτα ὁ αὐτὸς εἰπόντος, ἢς τῶν ὑποτακόντων παρ' ἡμῶν ἐδόκεν βίσις τοῦ Ἰησοῦ, εἰπὼν· Οὕτως ἀποκρίθη τῷ ἀρχιερεῖ.

23 Ἀπεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Εἰ κακῶς ἐλάλησα, μαρτύρησον περὶ τῆς κακίας· εἰ δὲ καλῶς, τί με ἐπερωτᾷς;

24 Ἀπεκρίθη ὁ αὐτὸς ὁ ἄνθρωπος διδασκὼν πρὸς Καϊάφην τὸν ἀρχιερεῖ.

25 Ἦν δὲ Σίμων Πέτρος ἐπὶ τῶν καὶ ἐθελοντο. εἶπον ἢ αὐτῷ· Μὴ καὶ σὺ ὅτι τῷ μαθητῷ αὐτοῦ εἶ; ἠρνήσατο οὐκ εἶ, καὶ εἶπεν· Οὐκ εἰμὶ.

26 Λέγει ἢς ὅτι τῷ δούλῳ τῷ ἀρχιερεῖ, συγγενεῇ ὢν αὐτῷ· Πέτρος τὸ ὄνομα· Οὐκ ἐγὼ σὺ εἶδον οὐκ ἐγὼ καὶ μετ' αὐτοῦ.

27 Πάλιν ἢ ἠρνήσατο ὁ Πέτρος, καὶ εὐθέως ἀέκωτον ἐφώθησεν.

28 Ἄνθρωποι ἢ τὸν Ἰησοῦν ἀπὸ τῆς Καϊάφης εἰς τὸ πραιτώριον· ὡς δὲ πρῶτα· ἔσονται αὐτοῖς ἢ ἐπὶ τῷ πραιτώριον, ἵνα μὴ μισθώσιν, ἀλλ' ἵνα φάγωσιν τὸ πᾶν.

29 Ἐξῆλθεν ἢ ὁ Πιλάτος πρὸς αὐτὸν, καὶ εἶπεν· Τίνα κατηγορίαν φέρετε κατὰ τῆς ἀνθρώπου τῷ;

30 Ἀπεκρίθη αὐτῷ· Εἰ μὴ ὡς ἔπος κακοποιῶν, ἢ ἀνθρώπου παρεδωκέναι αὐτόν.

31 Εἶπεν ἢ αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Λάβετε αὐτὸν ὡς ἔπος, καὶ κατὰ τὸν νόμον ἡμῶν κρίνατε αὐτόν· Εἶπεν ἢ αὐτοῖς οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡμεῖς ἢ ἐξέσιν ἀποκτείναντες ἔσονται.

32 Ἰνα ὁ λόγος τῆς ἡμετέρας πληρωθῇ, ὃν εἶπε, σημαίνων ποίῳ θανάτῳ ἡμελλεν ἀποθνήσκειν.

33 Εἰσῆλθεν ἢ εἰς τὸ πραιτώριον πάλιν ὁ Πιλάτος, ἔσονται τῶν ἡμετέρας· καὶ εἶπεν αὐτοῖς· Σὺ εἶ ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων;

34 Α'πεκρίθη αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Α'φ' ἑαυτοῦ σὺ τὸ τοῦ λέγεις, ἢ ἄλλοι σοὶ εἶπον πρὸς ἐμὴν;

35 Α'πεκρίθη ὁ Πιλάτος· Μῆτι ἐγὼ Ἰουδαῖός εἰμι; τὸ ἔθνος τὸ σὸν ἔστι οἱ ἀρχιερεῖς ταρεδωκᾶν σε ἐμοί· τί ἰποίῃσαι;

36 Α'πεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ ἢ ἐστὶν ἐκ τοῦ κόσμου τούτου· ἐκ δὲ τοῦ κόσμου τούτου ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ, οἱ ὑπαγρέται ἀπὸ οἱ ἐμοὶ ἡγωνίζονται ἵνα μὴ τ' ἐλθῶσιν τοῖς Ἰουδαίοις· νῦν δὲ ἡ βασιλεία ἡ ἐμὴ ἢ ἐστὶν οὐρανοῦ.

37 Εἶπεν ἄν αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Οὐκ ἔστι βασιλεὺς ἐγὼ; Α'πεκρίθη ὁ Ἰησοῦς· Σὺ λέγεις ὅτι βασιλεὺς εἰμι ἐγὼ· ἐγὼ εἰς τοῦτο γεγεννημαι, καὶ εἰς τὴν τοῦ ἐλθῆναι εἰς τὸν κόσμον, ἵνα μαρτυρήσω τῇ ἀληθείᾳ· Πᾶς ὁ ὢν ἐκ τῆς ἀληθείας ἀκούει μου τῆς φωνῆς.

38 Λέγει αὐτῷ ὁ Πιλάτος· Τί ἐστὶν ἀλήθεια; Καὶ τούτο κέποι, πάλιν ἤλθε πρὸς τῆς Ἰουδαίας, καὶ λέγει αὐτοῖς· Εἰγὼ ἡδεμίαν αἰτίαν οὐρίσκω ἐν αὐτῷ.

39 Εἴςτι δὲ συνέθικα ὑμῖν ἵνα ἕνα ὑμῖν ἀπολύτω ἐν τῷ πάσῃ· Βύλεσθε ἄν ὑμῖν ἀπολύσω τὸν βασιλέα τῶν Ἰουδαίων;

40 Ἐκραύγασαν ἄν πάλιν πάντες, λέγοντες· Μὴ τούτον, ἀλλὰ τὸν Βαραββᾶν· ὃν δὲ ὁ Βαραββᾶς λεγέσθαι.

Κεφ. ιθ'. ιθ'.

1 **Τ**Ο' τε ἄν ἔλαβεν ὁ Πιλάτος τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἔμαρτύρησε.

2 Καὶ οἱ στρατιῶται πλέξαντες στέφανον ἐκ ὀκνηδυνῶν, ἐπέθηκαν αὐτῷ τὴν κεφαλὴν, καὶ ἱμάτιον πορφυρῶν περιβαλόν αὐτόν.

3 Καὶ ἔλεγον· Χαῖρε ὁ βασιλεὺς τῶν Ἰουδαίων· καὶ εἰδὼν αὐτῷ ῥαπίσματα.

4 Ἐξῆλθεν ἄν πάλιν ἔξω ὁ Πιλάτος, καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἴδε, ἀγὼ ὑμῖν αὐτῷ ἔξω, ἵνα γινώτε ὅτι ἐν αὐτῷ ἡδεμίαν αἰτίαν οὐρίσκω.

5 Ἐξῆλθεν ἄν ὁ Ἰησοῦς ἔξω, φορῶν τὸ ἀκλάνθινον στέφανον, καὶ τὸ πορφυρὸν ἱμάτιον· Καὶ λέγει αὐτοῖς· Ἴδε ὁ ἄμωροίς.

6 Ο' τε ἄν εἶδον αὐτόν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ ὑπαγρέται, κραύγασαν, λέγοντες· Σταυρώσον, σταυρώσον· Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Λάβετε αὐτόν ὑμεῖς, καὶ σταυρώσατε· ἐγὼ γὰρ οὐκ οὐρίσκω ἐν αὐτῷ αἰτίαν.

7 Α'πεκρίθησαν αὐτῷ οἱ Ἰουδαῖοι· Ἡμεῖς νόμον ἔχοντες·

ἐχούμεν, ἐκ τῶν πορευομένων ἡμεῶν ὁφείλου ἀποβλεπεῖν, ἐν
ἐω τῶν τῶν Θεοῦ ποιοῦσιν.

8 Οὐτὶς γὰρ ἠκούσεν ὁ Πιλάτος τῆς τῆς λέγουσιν, μάλλον ἐφοβήθη.

9 Καὶ ἐπελθόντες εἰς τὸ πρῶτον πάλιν, ἔλεγε
αὐτῷ ἰησοῦ· Πόθεν εἰ σὺ; Ὁ δὲ ἰησοῦς ἀπεκρίσας ἐκείνῳ
ἔειπεν αὐτῷ.

10. Δὲν ἐκ τῆς κινήσεως τοῦ Πιλάτου· Ἐμοὶ ἢ ἀλλοῖς ; καὶ τίς οὖν ὅτι θῆξαι ἐμὲ ἔχω σωρῆσαι σε ; καὶ θῆξαι ἐμὲ ἔχω ἀπολῦσαι σε ;

Τὸ Ἀποκρίθη δ' ἱσχυρῶς· Οὐκ ἔστις περὶ τοῦτο
μὴν κατ' ἐμὴν, εἰ μὴ ἴσως διδομένου ἀμείνου
ἀπὸ τῆς οὐ παραδίδως μὲν σοι μέζονα ἁμαρτίαν
ἔχῃ.

12 Ἐκ τούτων αἰχμαλωτὶς οὐκ ἐγένετο αὐτῶν ἀπολύσας αὐτοὺς
καὶ οἱ ἐξ ἑαυτῶν ἐκράζοντες λέγοντες Ἐὰν τῷ πατρὶ ἀ-
πολύσῃς, ἢ καὶ φίλος τῷ Καίσαρι. πάντες οὖν βασιλεὺς αὐτῶν ποιεῖν, ἀντιλέγοντες τῷ Καί-
σαρι.

113 Ο' ὦν Πιλάτος ἀκήσας τῶτον τὸν λόγον, ἤγαγεν ἰσχυρὰ τὸν Ἰησοῦν, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ τῆ βήματος, πρὸς τοποῦ λεγόμενον Διδοῦστρον, Ἐβραϊσὶ δὲ Γαββαθᾶ.

14 Η^{ος} δὲ παρατησῇ τὴν πάχυνσιν, ὥρα δὲ ὡσπερ
ἐκτὴ· Ἐ λέγει τοῖς Ἰουδαίοις· Ἰδε ὁ βασιλεὺς
ὁ αὐτοῦ.

15 Οἱ δὲ ἐκράγαζον· Ἄρον, ἄρον, ταύρωσαν αὐτόν. Λέγει αὐτοῖς ὁ Πιλάτος· Τὸν βασιλέα θύοις θυρώσω; Ἀπεκρίθησαν οἱ ἀρχιερεῖς· Οὐκ ἔχομεν βασιλέα εἰ μὴ Καίσαρα.

16 Τότε ἡν παρέδωκεν αὐτῷ αἰσώεις ἵνα σωρῶσῃ
παρέλαβον ὁ ἰησοῦς ἐ ἀπήγαγον.

17 Καὶ βασιλεύων ἡ σαυρὸν αὐτῇ ἤλθεν εἰς τὸν
λεγομένον Κραδίον τόπον, ὅς λέγεται Ἐβραϊστὶ Τολ-
δοθᾶ.

18 Οὐκ αὐτὸν ἐπαύριον, καὶ μετ' αὐτῶν ἄλ-
λους δύο, σπεύθει καὶ σπεύθει, μέσση δὲ τὴν
ἰησοῦν.

19 Ἐγράφε 5 ἑ τίτλος ὁ Πλάτος, ἑ ἔθηκεν ἔφη
 75 αὐτῷ. ἑ ὁ γεγραμμένον· ἸΗΣΟΥΣ Ο' ΝΑ-
 ΖΩΡΑΙ'ΟΣ Ο' ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΤΩ'Ν ΙΟΥΔΑΙΩΝ.

10 Τῶτον δὲ τίτλον πολλοὶ ἀμείνωσιν τῷ 1^{στ}
θαύμαζον· ὅτι ἐγγύς ᾤ τῆς πόλεως ὁ τόπος ὅπου ἵκανον
ἔχῃ ὁ 1^{ος} πῦρ, καὶ ᾧ γεγραμμένον Ἑβραϊστὶ, Ἑλληνιστὶ,
Ῥωμαϊστὶ.

21 ἔλεγον οὖν πρὸς Πιλάτῳ οἱ ἀρχιερεῖς τῷ Ἰουδαίων· Μὴ γράψῃς· Ὁ βασιλεὺς τῷ Ἰουδαίων· ἀλλ' ὅτι ἐκείνος εἶπε βασιλεὺς εἰμι τῷ Ἰουδαίων.

22 Ἀπεκρίθη ὁ Πιλάτος : Ὁ γέγραφα , γέ-
γραφα .

23 Οἱ οὖν ἐρατιῶνται, ὅτε ἐσαῦρισαν τὸν Ἰησοῦν, ἔλαβον τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, (καὶ ἐποίησαν τέσσαρες μέρη, ἐκάστην ἐρατιῶντι μέρος)· καὶ τῶν χιτῶν ταύτης δὲ ἡ χιτὼν ἀν' ἑαυτοῦ, ὥς τις ἀμύνει ὑφ' αὐτῆς οἱ ἄλλοι.

24 Εἶπεν οὖν πρὸς ἀλλήλους· Μὴ σχίσωμεν αὐτὸν, ἀλλὰ λήξωμεν παρ' αὐτοῦ, τιςος ἕσται· ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ ἣ λέγουσα· Διμερίσθητε τὰ ἱμάτια μου ἐμοῖς, καὶ ὑπὲρ τὸν ἱματισμὸν μου ἐβλήτε κλήρον· Οἱ μὲν οὖν ἐρατιῶνται ταῦτα ἐποίησαν.

25 Εἰσαγγεσθὼν δὲ παρὰ τῷ σωρῷ τῷ Ἰησοῦ ἡ Μήτηρ αὐτοῦ, καὶ ἡ ἀδελφὴ τῆς Μητρὸς αὐτοῦ Μαρία ἡ τῆς Κλωπᾶ, καὶ Μάρθα καὶ Μαγδαλὴν.

26 Ἰησοῦς οὖν ἰδὼν τὴν Μητέρα, καὶ τὴν μαθητῶν ταμεῖντα οὗν ἡγάπη, λέγει τῇ μητρὶ αὐτοῦ· Γυναίκα, ἰδοὺ ὁ Τίος σου.

27 Εἶτα λέγει τῷ μαθητῇ· Ἰδοὺ ἡ μήτηρ σου. Καὶ ὅτι οὐκ ἦν ἐκεῖ ἄλλος ἐλαβεῖν αὐτῶν ὁ μαθητὴς αἰς τὰ ἱμάτια.

28 Μετὰ ταῦτο εἰδὼς δὲ Ἰησοῦς ὅτι πάντα ἤδη τετέλεστοι, ἵνα τελεσθῇ ἡ γραφὴ, λέγει· Διψῶ.

29 Σκευὸς οὖν ἔκμητο ὅξος μισόν· οἱ δὲ, πλήσδυτες ἐπέχον ὅξος, καὶ ὑδάτιν πᾶλιν ἐτίθει, προσάμεινον αὐτῷ τῷ σωρῳ.

30 Ὅτε οὖν ἔλαβε τὸ ὅξος ὁ Ἰησοῦς, ἔπει· Τετέλεστοι· καὶ κλίνας τὴν κεφαλὴν, παρέδωκε τὸ πνεῦμα.

31 Οἱ οὖν Ἰουδαῖοι, ἵνα μὴ μὴν ὑπὲρ τῷ σωρῷ τὰ σώματα ὡς τῷ Σαββάτῳ, καὶ παρασκευῇ αὐτοῦ, (ὡς γὰρ μεγάλη ἡ ἡμέρα οὐκ ἔστιν τῷ Σαββάτῳ,) ἠρώτησαν τὸν Πιλάτον ἵνα κατεργασίῃ αὐτοῦ τὰ σκέλη, καὶ ἀρθῶσιν.

32 Ἡλθον οὖν οἱ ἐρατιῶνται, καὶ τῷ μὲν πρώτη κατέβηκε τὰ σκέλη, καὶ τῷ ἄλλῳ τῷ συσπυρῶντι αὐτῷ.

33 Εἰπὶ δὲ τῷ Ἰησοῦ ἐλθόντι, ὡς εἶδον αὐτὸν ἤδη τεθνηκότα, καὶ κατέβηκε αὐτῷ τὰ σκέλη.

34 Ἀλλ' αἰς τῷ συντινῶν λέγουσιν αὐτῷ τῶν πλάκων ἐν ἑαυτῷ, καὶ ὡς οὗτος ἀνέβηκεν αἶμα καὶ ὕδωρ.

35 Καὶ ὁ ἑωρακὸς μεμαρτύρηκε, καὶ ἀληθεῖς αὐτῷ ἔστιν ἡ μαρτυρία· καὶ οὗτος οἶδεν ὅτι ἀληθὴς λέγει, ἵνα ὑμεῖς πιστεύετε.

36 Εἰγὼ οὖν γὰρ ταῦτα ἵνα ἡ γραφὴ πληρωθῇ· Ὅτι οὗν ἡ συντελεσθήσεται αὐτῷ.

37 Καὶ πάλιν ἑτέρα γραφὴ λέγει· Ὅψονται αἰς ὃν ὕψιστος αὐτοῦ.

38 Μετὰ δὲ ταῦτα ᾤκτισσε τῷ Πιλάτῳ ὁ Ἰωσήφ ὁ υἱὸς Ἀρμαθαίας, (ὁ μαθητὴς τῷ Ἰησοῦ, κεκρυμμένος ὢν αἰς τὸ φόβον τῷ Ἰουδαίῳ,) ἵνα ᾤρη τὸ σῶμα τῷ Ἰησοῦ· καὶ πατρεψεν ὁ Πιλάτος· ἤλθεν οὖν καὶ ἔρε τὰ σῶμα τῷ Ἰησοῦ.

39 Ἦλθε δὲ ὁ Νικόδημος (ὁ ἐλθὼν πρὸς τὸν Ἰησοῦν νυκτὸς τὸ πρῶτον ,) φέρον αἷμα σμύρνης ὡς ἀλός ὡσεὶ λίτρας ἑκατὸν .

40 Ἐλάβεν ἦν τὸ σῶμα τῇ Ἰησοῦ , ὁ ἔδωκεν αὐτὸ ὀδονίοις μετ' τῷ ἀρωματῶν , καθὼς ἔθος ἐστὶ τοῖς Ἰουδαίοις ἐνταφιάζειν .

41 Ἦν δὲ ἐν τῷ τότε ὅτε ἐσαυρεύθη , κήπος , καὶ ἐν τῷ κήπῳ μνημεῖον κενόν , ἐν ᾧ ἔδετο ἕδαις τεθῆναι .

42 Ἐκεῖ ἦν λίθος λίαν ὠρεσκόδυνος τῷ Ἰουδαίῳ , ὅτι ἐγγὺς ᾧ τὸ μνημεῖον , ἔθηκεν τὸν Ἰησοῦν .

Κεφ. x. 20.

1 Τῇ δὲ μετὰ τῷ Σαββάτῳ Μαρία ἡ Μαγδαλὴν ἔρχεται πρὸς σκοτίας ἐπὶ ἕτης εἰς τὸ μνημεῖον , καὶ βλέπει τὸν λίθον ἡρμένον ἐκ τοῦ μνημείου .

2 Τρέχει δὲ ὡς ἔρχεται πρὸς Σίμωνα Πέτρον , καὶ πρὸς τὸν ἄλλον μαθητὴν ὃν ἐφίλει ὁ Ἰησοῦς . καὶ λέγει αὐτοῖς ὅτι Ἦρξεν ὁ Κύριος ἐκ τοῦ μνημείου . ὡς οὐδὲν μὴν πᾶς ἔθηκεν αὐτὸν .

3 Ἐξῆλθεν ἦν ὁ Πέτρος ὁ ὁ ἄλλος μαθητὴς , καὶ ἤρχοντο εἰς τὸ μνημεῖον .

4 Ἐτρέχον δὲ οἱ δύο ὁμῶς , ὁ ὁ ἄλλος μαθητὴς προέδραμε τάχιον τοῦ Πέτρου , ὁ ἦλθε πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον .

5 Καὶ ὠρεσκόδυνος βλέπει κείμενα τὰ ὀδονία ὅτι μὲντοι ἐτήληθεν .

6 Ἐρχεται ἦν Σίμων Πέτρος ἀκολουθεῖν αὐτῷ , καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὸ μνημεῖον , ὁ θεωρεῖ τὰ ὀδονία κείμενα ,

7 Καὶ τὸ σκεῦος ὃ ᾧ ὑπὲρ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ , καὶ μετὰ τῷ ὀδονίῳ κείμενον , ἀλλὰ χωρὶς ἐντετυλιγμένον ὡς ἕνα τόπον .

8 Τότε δὲ ἐκινήθη καὶ ὁ ἄλλος μαθητὴς ὁ ἐλθὼν πρῶτος εἰς τὸ μνημεῖον , καὶ εἶδε , καὶ ἐτίσθη .

9 Οὐδέτις γὰρ ἠδυνάσθη τὴν γραφὴν , ὅτι οὐκ αὐτὸς ὁ νεκρὸν ἀνίστασθαι .

10 Ἀπῆλθον ἦν πάλιν πρὸς ἐαυτοῦς οἱ μαθηταί .

11 Μαρία δὲ εἰσῆκει πρὸς τὸ μνημεῖον κλαίσα ἔξω . ὡς ἦν ἐκλαίει , παρέκυψεν εἰς τὸ μνημεῖον .

12 Καὶ θεωρεῖ δύο ἀγγέλους ἐν λευκοῖς καθήμενους , ἕνα πρὸς τὴν κεφαλὴν , ὁ ἕνα πρὸς τοὺς πόσιν , ὅτε ἐκεῖνο τὸ σῶμα τοῦ Ἰησοῦ .

13 Καὶ λέγουσιν αὐτῇ ὁμοῦτοι· Γύναι, τί κλαις; λέγεις αὐτοῖς· Ὅτι ἦν ἄνθρωπος ὃν οὐκ εἶδα τὸν Ἰησοῦν αὐτόν.

14 Καὶ ταῦτα εἰπὼσα, ἐστράφη εἰς τὰ ὀπίσω, ὁ Θεὸς τὸν Ἰησοῦν ἐξώτα· ὃς ἔκρινεν ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐστίν.

15 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Γύναι, τί κλαις; τί ζητᾷς; Ἐκείνη, δοκῶσα ὅτι ὁ κηρὸς ἐστίν, λέγει αὐτῷ· Κύριε, εἰ σὺ ἐβάστασας αὐτόν, εἰτέ μοι πᾶν αὐτὸν ἔδωκας· καὶ γὰρ αὐτὸν ἀρῶ.

16 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μαρία· Στραφύσας ἐκείνη λέγει αὐτῷ· Ῥαββονί, ὃ λέγεται, διδάσκαλε.

17 Λέγει αὐτῇ ὁ Ἰησοῦς· Μὴ με ἀπὸν· ἄνω γὰρ ἀναβέβηκα πρὸς τὸν πατέρα μου· πορεύου ὃ πρὸς τοὺς ἀδελφούς μου, καὶ εἰς ἐμὲ αὐτοίς· ἀναβαίνω πρὸς τὸν Πατέρα μου ὁ Πατήρ μου καὶ Θεός μου ὁ Θεός μου.

18 Ἐρχεται Μαρία ἡ Μαγδαλὴν ἀπαγγέλλουσα τοῖς μαθηταῖς, ὅτι εὗρακε τὸν Κύριον, καὶ ταῦτα εἶπεν αὐτῇ.

19 Οὕτως ἦν ὁμοίως τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ τῇ μιᾷ τῶν Σαββάτων, ὅτι τῶν θυρῶν κεκλεισμένων, ὅτε ἦσαν οἱ μαθηταὶ συνηγμένοι διὰ τὸν φόβον τῶν Ἰουδαίων, ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς, καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον, καὶ λέγει αὐτοῖς· Εἰρήνῃ ὑμῖν.

20 Καὶ τῇτι εἰπὼν, ἔδειξεν αὐτοῖς τὰς χεῖρας καὶ τοὺς πόδας αὐτοῦ· Ἐχάρησαν ἦν εἰ μαθηταὶ ἰδόντες τὸν Κύριον.

21 Εἶπεν ἦν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς πάλιν· Εἰρήνῃ ὑμῖν· καθὼς ἀπέσταλκέ με ὁ Πατήρ, καὶ γὰρ πέμπω ὑμᾶς.

22 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, ἐνέκυσσεν, καὶ λέγει αὐτοῖς· Λάβετε Πνεῦμα Ἅγιον.

23 Ἄν τινων ἀφῆτε τὰς ἁμαρτίας, ἀφίενται αὐτοῖς· ἂν τινὸν κρατῇτε, κενεράτωται.

24 Θωμᾶς δὲ, ὃς καὶ ἐκ τῶν δώδεκα, ὁ λεγόμενος Δίδυμος, ἔκρινεν μετ' αὐτῶν ὅτι ἦλθεν ὁ Ἰησοῦς.

25 Ἐλεγον ἦν αὐτῷ οἱ ἄλλοι μαθηταί· Ἐώρακαμεν τὸν Κύριον· ὁ δὲ ἔειπεν αὐτοῖς· Ἐὰν μὴ ἴδω ἐν ταῖς χειρῶν αὐτοῦ τὸν τύπον τῶν ἡλῶν, καὶ βάλλω τὸν δάκτυλόν μου εἰς τὸν τύπον τῶν ἡλῶν, καὶ βάλλω τὴν χεῖρά μου εἰς τοὺς πόδας αὐτοῦ, οὐ μὴ πιστεύσω.

26 Καὶ μεθ' ἡμέρας ἐνταῦθα πάλιν ἦσαν ἔτι μαθηταὶ αὐτοῦ, καὶ Θωμᾶς μετ' αὐτῶν· ἔρχεται ὁ Ἰησοῦς τῶν θυρῶν κεκλεισμένων, καὶ ἔστη εἰς τὸ μέσον, καὶ εἶπεν· Εἰρήνῃ ὑμῖν.

27 Ἔτι λέγει τῷ Θωμᾷ· Φέρε τὸν δάκτυλό σου ὡς

ἄλλοι, ἔϊδε τὰς χεῖρας μου· καὶ φέρε τίς, χεῖρα σου, βαλεῖ εἰς τὴν πλάτην μου· ἔμη γίγνη ἀπίστος, ἄλλοι πιστοί.

28 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ Θωμᾶς, ἔειπεν αὐτῷ· Οὐ Κύριός μου ἔστι ὁ Θεός μου.

29 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ὅτι ἐώρακάς με, Θωμᾶ, πεπιστώκας· μακάριος οἱ μὴ ἰδόντες, ἔπιστεύοντες.

30 Πολλὰ μὲν ἦν ἡ ἄλλα σημεῖα ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς ἐνώπιον τῶν μαθητῶν αὐτοῦ, ἃ μὴ ἐστὶ γυνγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ.

31 Ταῦτα δὲ γέγραπται, ἵνα πιστεύετε ὅτι ὁ Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ Χριστός ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ἔνα πιστεύοντες ζωὴν ἔχητε ἐν τῷ ἐνόμῳ αὐτοῦ.

Κεφ. κα. 11.

1 Μετὰ ταῦτα ἐφθάρυσεν ἑαυτὸν πάλιν ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς ἐπὶ τῆς θαλάσσης τῆς Τιβεριάδος· ἐφθάρυσεν ὅκτως.

2 Ἦσαν ὁμῶς Σίμων Πέτρος, ἔ Θωμᾶς ὁ λεγόμενος Δίδυμος, ἔ Ναθαναὴλ ὁ ἀπὸ Κανᾶ τῆς Γαλιλαίας, ἔ οἱ τῷ Ζεβεδαίῳ, ἔ ἄλλοι ὅν τῶν μαθητῶν αὐτοῦ δύο.

3 Λέγει αὐτοῖς Σίμων Πέτρος· Ὑπάγω ἀλιεῦν· λέγουσιν αὐτῷ· Ἐσχομαίμεθα ἔ ἡμεῖς σὺν σοι. Ἐξῆλθον, ἔ ἀνέβρασαν εἰς τὰ πλοῖα ὡθεύς, ἔ ἐν ὁκνήνῃ τῇ πυκτῇ ἐπίασαν ὕδεν.

4 Προῖας δὲ ἤδη ὀψομένης ἔση ὁ Ἰησοῦς εἰς τὸν αἰγιαλόν· οἱ μὲντοι ῥέψαν οἱ μαθηταὶ ἐπὶ Ἰησοῦς ἐπὶ.

5 Λέγει ἡν αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Παιδιά, μή τι προσφύγον ἔχητε; Ἀπεκρίθησαν αὐτῷ· Οὐ.

6 Οὐ δὲ εἶπεν αὐτοῖς· Βάλετε εἰς τὰ δεξιὰ μέρη τῶν πλοίων τὸ δίκτυον, καὶ ὠρῆσατε. Ἐβησαν ἡν, καὶ ἡν ἐπὶ αὐτὰ ἰλκῦσαι ἵχυσαν ἀπὸ τῶν πλοίου τῶν ἵχθύνων.

7 Λέγει ἡν ὁ μαθητὴς ὁκνήτος, ὅν ἠγάπα ὁ Ἰησοῦς, τῷ Πέτρῳ· Οὐ Κύριός ἐστι. Σίμων ἡν Πέτρος, ἀκήσας ὅτι ὁ Κύριός ἐστι, τὸν ἐπενδύσαν διελκυσάτο, (ἡν γὰρ γυμνός,) καὶ ἔβαλεν ἑαυτὸν εἰς τὴν θάλασσαν.

8 Οἱ δὲ ἄλλοι μαθηταὶ τῷ ποιορίῳ ἦλθον, (καὶ ὡς ἦσαν μακρὰν ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ ὡς ἦν τὸ πηλὸν ἀλκυσίων,) συρτάς τὸ δίκτυον τῶν ἵχθύνων.

9 Ως

9 Ὡς ἂν ἀπέβησαν εἰς τὴν γῆν, βλέψουσιν ἀνδρακιδιὰ κειμένῳ, καὶ ὄψαντο ὑπαικείμενον, καὶ ἄρτον.

10 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Ἐνέγκατε ἀπὸ τῆς ὑψαιῶν αὐτὴν ὑπαικασατε νῦν.

11 Ἀπέβη Σίμων Πέτρος, ἔθηκεν τὸ δίχτην ἐπὶ τῆς γῆς, μετὰ ἰχθύων μεγάλων ἑκατὸν πεντηκονταετρίων· καὶ τούτων ὄντων ἔκ ἐσχίσθη τὸ δίχτυον.

12 Λέγει αὐτοῖς ὁ Ἰησοῦς· Δεῦτε, ἀρπάξατε· οὐδαμὲν δὲ ἐτόλμα τῷ μαθητῷ ἡμετασαι αὐτὸν· Σὺ τίς εἶ; εἰδότες ὅτι ὁ Κύριός ἐστιν.

13 Ἐρχεται οὖν ὁ Ἰησοῦς, ἔλαμβάνει τὸν ἄρτον, καὶ δίδωσιν, καὶ τὸ ὄψαριον ὁμοίως.

14 Τοῦτο ἤδη τρίτον ἐφανερώθη ὁ Ἰησοῦς τοῖς μαθηταῖς αὐτοῦ, ἐγερθεὶς ἐκ νεκρῶν.

15 Ὅτε οὖν ἤρξθησαν, λέγει τῷ Σίμωνι Πέτρῳ ὁ Ἰησοῦς· Σίμων Ἰωνᾶ, ἀρχαῖός με πλεῖον τούτων; Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε· σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε· Λέγει αὐτῷ· Βόσκει τὰ ἀρνία μου.

16 Λέγει αὐτῷ πάλιν δεύτερον· Σίμων Ἰωνᾶ, ἀρχαῖός με; Λέγει αὐτῷ· Ναὶ Κύριε· σὺ οἶδας ὅτι φιλῶ σε· Λέγει αὐτῷ· Ποίμηνε τὰ πρόβατά μου.

17 Λέγει αὐτῷ τὸ τρίτον· Σίμων Ἰωνᾶ, φιλεῖς με; Ἐκπεσθεὶς ὁ Πέτρος ὅτι εἶπεν αὐτῷ τὸ τρίτον, φιλεῖς με; ἔειπεν αὐτῷ· Κύριε, σὺ πάντα οἶδας· σὺ γινώσκεις ὅτι φιλῶ σε· Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Βόσκει τὰ πρόβατά μου.

18 Ἀπὸ αὐτῶν λέγει αὐτῷ, ὅτε ἡς νεώτερος ἐξῴνηται σεαυτὸν, καὶ περὶ αὐτοῦ ἐπὶ ἡ θέλεις· ὅταν δὲ ῥησῇ, ἔκτενέ· τὰ χεῖράς σου, ἔτε ἄλλος σε ζώσῃ, καὶ οἶσιν ὅτι ἡ θέλεις.

19 Τοῦτο δὲ εἶπε, σημαίνων ποίῳ θανάτῳ δοξάσει τὸν Θεόν· Καὶ τοῦτο εἰπὼν, λέγει αὐτῷ· Ἀκούει μοι.

20 Ἐπιστραφεὶς δὲ ὁ Πέτρος βλέπει τὸν μαθητῶν, καὶ ἤγαπα ὁ Ἰησοῦς, ἀκολουθεῖντα, ὃς ἔμεπεσεν ἐν τῷ δείπνῳ ἐπὶ τὸ τῆδος αὐτοῦ, ἔειπε· Κύριε, τίς ἐστὶν ὁ παραδιδούς σε;

21 Τοῦτον ἰδὼν ὁ Πέτρος λέγει τῷ Ἰησοῦ· Κύριε, οὗτος δὲ τίς;

22 Λέγει αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς· Ἐὰν αὐτὸν θέλω μένειν ἕως ἔρχομαι, τί πρὸς σε; σὺ ἀκολουθεῖ μοι.

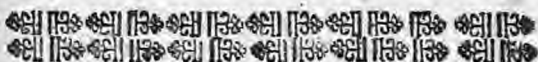
23 Ἐξῆλθεν οὖν ὁ λόγος οὗτος εἰς τοὺς ἀδελφοὺς, ὅτι ὁ μαθητὴς ἐκεῖνος οὐκ ἀποδείχθη· ἔτι οὐκ εἶπεν αὐτῷ.

αὐτῷ ὁ Ἰησοῦς ὅτι ἐκ αἰποθνήσκει· ἀλλ'· Ἐὰν αὐτὸ θέλω μένειν ἕως ἔρχομαι, τί πρὸς σέ;

24 Οὗτός ἐστιν ὁ μαθητὴς ὁ μαρτυρῶν πρὸς τῶν, ὅτι γράψας ταῦτα· ὁ οἶδα μὲν ὅτι ἀληθὴς ἐστὶν ἡ μαρτυρία αὐτοῦ.

25 Ἔτι δὲ ὁ ἄλλος πολλὰ ὅσα ἐποίησεν ὁ Ἰησοῦς, ἅτινα ἐὰν γράφηται καὶ ἐν, κὶ ἐκεῖ αὐτὸν οἶμαί τον κόσμον χωρῆσαι τὰ γραφόμενα βιβλία. Ἀμήν.





Π Ρ Α Ξ Ε Ι Σ
Τ Ω Ν Α Γ Ι Ω Ν
Α' Π Ο Σ Τ Ο Λ Ω Ν.

Κ Ε Φ Α Λ Ι Ο Ν, α'. 1.

1 **Τ**ὸν μὲν πρῶτον λόγον ἐπιεικόμενον περὶ πάντων, ὃ Θεοφιλε, ὃν ἔρεξαι ὁ Ἰησοῦς ποιεῖν τε καὶ διδασκαλεῖν, 2 Ἀρχὴ ἦν ἡμέρας ἐντεταμένους πῶς ἀποστόλοις 243 Πνεύματος Ἀγίου, ὃς διελέξατο, ἀνελέφθῃ.

3 Οἷς ἔπαρέστησαν ἐναντὶ ζῶντα μὲν τὸ παθεῖν αὐτῷ, ἐν πολλοῖς τεκμηρίοις, δι' ἡμερῶν τεωρατούμενα ὁπτασίμοις αὐτοῖς, ἔλεγον τὰ πρὸς τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ.

4 Καὶ συναυλιζόμενος παρήγγελλεν αὐτοῖς ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ μὴ χωρίζεσθαι, ἀλλὰ ἑμμένειν τῷ ἐπαγγελίῳ τοῦ Πατρὸς, ὃν ἠκούσαντέ μιν.

5 Ὅτι Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισεν ὕδατι, ὑμεῖς ὅ βαπτισθήσεσθε ἐν Πνεύματι Ἀγίῳ καὶ μὴ πολλὰς ταύτας ἡμέρας.

6 Οἱ μὲν ὃν συναλεθόντες ἐπαρώτων αὐτῷ, λέγοντες· Κύριε, ἐν ᾧ καὶ χρόνῳ τούτῳ ἀποκαθιστάμενος τῷ βασιλεῖ καὶ τῷ Ἰσραὴλ;

7 Ἔπε δὲ πρὸς αὐτὰς· Οὐχ, ὑμῶν ἐστὶ γνώσις χρόνος ἢ καιρὸς ὃς ὁ Πατὴρ ἔθετο ἐν τῇ ἰδίᾳ ἐκκρίσει.

8 Ἀλλὰ λάβετε δύναμιν ἐπελθόντες τοῦ Ἀγίου Πνεύματος ἐφ' ὑμᾶς· καὶ ἑστέθε μοι μάρτυρες ἐν τῇ Ἱερουσαλὴμ καὶ ἐν πάσῃ τῇ Ἰουδαίᾳ καὶ Σαμαρείᾳ, ἔως ἐρχάμενοι τοῦ γῆς.

9 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, βλέπόντων αὐτῶν ἐπήρθη, καὶ νεφέλη παρέλαβεν αὐτὸν ἀπὸ τῶν ὁφθαλμῶν αὐτῶν.

10 Καὶ ὡς αἰγνίζοντες ἦσαν εἰς τὸ κῆλρον, παραλαμβάνει αὐτοὺς, καὶ ἰδὼν, ἄνδρες δύο παρεστήκεισαν αὐτοῖς ἐν ἰσθμῷ λευκῷ.

11 Οἱ δὲ ἔπον· Ἄνδρες Γερουσιαστοί, ἃ ἐθήκατε ἐμπλέποντες εἰς τὸν νόμον; ἅπε ὁ Ἰησοῦς ὁ ἀνελθὼν ἀφ' ὑμῶν εἰς τὸν ἔρῳν, ὅπως ἐλεύσεται ἐν τῷ τρόπῳ ἐδεάσασθε αὐτὸν πορεύμενον εἰς τὸν οὐρανόν.

12 Τέτε ὑπέστρεψεν εἰς Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ ὅρας τῆ καλῆς Εὐλαίας, ὃ ἐστὶν ἐγγὺς Ἱερουσαλὴμ, Σαββαίτη ἔχον ὁδόν.

13 Καὶ ὅτε ἐσῆλθεν, ἀνέβησαν εἰς τὸ ὑπερώϊον, ἧ ἦσαν καταμένοντες, ὃ, τε Πέτρος ὁ Ἰσκαριώτης, καὶ Ἀνδρέας, Φίλιππος ὁ Θαρινεὺς, Βαρθολομαῖος ὁ Ματθαίος, Ἰσκαριώτης Ἀλφαῖν, ὁ Σίμων ὁ Ζηλωτὴς, καὶ Ἰωάννης Ἰσκαριώτης.

14 Οὗτοι πᾶντες ἦσαν προσκαρτεροῦντες ὁμοθυμῶν τῇ προσώχῃ ὁ τῇ διήσει, σὺν γυναίξί, καὶ Μαρίᾳ τῇ Μητρὶ τοῦ Ἰησοῦ, ὁ σὺν πῖτε ἀδελφοῖς αὐτοῦ.

15 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις ἀνέστης Πέτρος ἐν μέσῳ τῶν μαθητῶν, ἔπεν· (ὡς τε ὁ ὄχλος ὁπαμάτων ἐπὶ τὸ αὐτὸ εἰς ἑκάστην ἡμέραν.)

16 Ἄνδρες ἀδελφοί, ἴδετε πληρωθῆναι τὴν καρδίαν τούτων ὡς προεῖπε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον διὰ στόματος Δαβὶδ, ὅτι Ἰωάννης ὁ ἡμεῖς οὐδὲν ταῖς συλλαβαῖς τοῦ Ἰησοῦ.

17 Ὅτι καταρτιζομένης ὡς σὺν ἡμῖν, ὁ ἐλαχε τὸ κλῆρον τὸ διακονίης ταύτης.

18 Οὗτος μὲν ἦν ἐκτίσασθαι καρδίαν ἐκ τῆ μισθῆς ἀδικίας· ὁ πρῶτος ἡμεῖς ἐλάκησε μέσος, ὁ ἐλαχὺν πάντα τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ.

19 Καὶ γνωστὸν ἐγένετο πᾶσι τοῖς κατηκῶσιν Ἱερουσαλὴμ, ὅτι ἐκτίσθαι τὸν καρδίαν ὁπαῖνον τῇ ἐκτίσῃ διακονίᾳ αὐτοῦ, Ἀνελθὰν, τῷ τῷ, καρδίαν αὐτοῦ.

20 Γέγραπται γὰρ ἐν βίβλῳ ψαλμῶν· Γενηθήτω ἡ ἐπιστολή αὐτοῦ ἔρμος, καὶ μὴ ἐπὶ τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ ὁ σὺν τῇ· Καὶ· Τῷ ὑποσπῶν αὐτοῦ λαβὼν ἱερός.

21 Δὲ ἂν τῶν συνευθύντων ἡμῖν ἀδελφῶν ὁ πρῶτος καρδίᾳ, ἐν ᾧ ἐσῆλθεν ὁ ἐσῆλθεν ἐφ' ἡμῶν ὁ Κύριος Ἰησοῦς,

22 Ἀρξάνθρωπος ἀπὸ τῆ βαπτίσματος Ἰωάννου εἰς τῆς ἡμέρας ἧς ἀνελθὼν ἀφ' ἡμῶν, μαρτυρῶν τῆς ἀμαρτίας αὐτοῦ ἡμεῖς σὺν ἡμῖν ἐν ταῖς ταῖς.

23 Καὶ ἐσῆλθεν δὲ, Ἰωάννης τὸν καλῶμενον Βαρσαβάρ, ὃς ἐπικλήθη Ἰώσος, ὁ Ματθαῖος.

24 Καὶ προσκυόμενοι ἔπεν· Σὺ Κύριε καρδιουργῶν πάντων, ἀνελθὼν ἐκ ταῖς ταῖς τῶν δὲ ἐν ταῖς ἐν ταῖς ταῖς.

25 Λαβὼν τὸν κλῆρον τὸν διακονίας ταύτης καὶ ἀποστὰς

λῆς, ὅς ἦς παρέβη Ἰνδαί, πορεύσασθαι εἰς τὸ τόπον τὸν αὐτόν.

26 Καὶ ἔδωκεν κλήρος αὐτῷ, καὶ ἔπεσεν ὁ κλήρος ὑπὸ Μαρτίδῳ, ὃ συγκατεψήφισθη μετὰ τῷ ἑνδεκάκιστοις αὐτοῦ,

Κεφ. β'. 2.

1 **Κ**αὶ ἐν τῷ συμπληρῆσθαι τῶν ἡμερῶν τῆς Πεντηκοστῆς, ἦσαν πάντες ἐκκοιτημαῖοι ἐπὶ τὸ αὐτό.

2 Καὶ ἐγένετο ἄφνω ἐκ τῶν ἡρώων ἡχος ὥσπερ φεγγαμένης πύλης βιαίας, ὃ ἐπλήρωσεν ὅλον τὸ αἶκον ἡρώων καθήμενοι.

3 Καὶ ἠφθῆσαν αὐτοῖς διφμεριζόμεναι γλώσσαι ὥσπερ πύλεις, ἐκαστὸς ἐτε ἑφ' ἓνα ἑκάστον αὐτῶν.

4 Καὶ ἐπλήσθησαν πάντες Πνεύματος Ἀγίου, καὶ ἠρέματο λαλῆν, ἑτέροις γλώσσαις, καθὼς τὸ Πνεῦμα ἐδίδκ αὐτοῖς ἀποφθέγγεσθαι.

5 Ἦσαν ὅ ἐν Ἱερουσαλὴμ κατοικῶντες Ἰουδαῖοι, ἄνδρες ὀυλαβεῖς, ἀπὸ πάντος ἔθνους τῶν ὑπὸ τὸν οὐρανόν.

6 Γενομένης ὅ τῶ φωνῆς ταύτης, συνῆλθε τὸ πλῆθος, ὃ συνεχύθη. ὅπ ἦκον εἰς ἑκάστον τῇ ἰδίᾳ διφλέκτῳ λαλόντων αὐτῶν.

7 Ἐξίστατο ὅ πάντες ὃ ἐθαύμαζον, λέγοντες πρὸς ἀλλήλους· Οὐκ ἰδὲ πάντες οὗτοί εἰσιν οἱ λαλῶντες Ἰουδαῖοι;

8 Καὶ πῶς ἡμῖς ἀκούομεν ἑκάστον τῇ ἰδίᾳ διφλέκτῳ ἡμῶν ὃ ἡ ἐχονήθημεν;

9 Πάρθοι ὃ Μῆδοι ὃ Ἑλαμίται, καὶ οἱ κατοικῶντες τῶν Μεσοποταμιῶν, Ἰνδαῖν τε ὃ Καππαδοκίᾳ, Πόντῳ ὃ τῶν Ἀσίων,

10 Φρυγίᾳ τε καὶ Παμφυλίᾳ, Αἴγυπτον, καὶ τὰ μερῶ τῆς Λιβύης τῆς κατὰ Κυρήνην, καὶ οἱ ὑποδμηῶντες Ῥωμαῖοι, Ἰουδαῖοί τε καὶ προσήλυτοι,

11 Κρήτες ὃ Ἀραβες, ἀκούομεν λαλόντων αὐτῶ ταῖς ἑμετέροις γλώσσαις τὰ μεγαλῶν τῶ Θεοῦ.

12 Ἐξίστατο ὅ πάντες ὃ διεπόρουν ἄλλος πρὸς ἄλλον λέγοντες· Τί αὐ θέλοι τῆτο εἶναι;

13 Ἐτέροι ὃ χλοῦάζοντες ἔλεγον· Ὅπ γλώσσης μεμερωμένοι εἰσὶ.

14 Στῆθεῖς δὲ Πέτρος σὺν τοῖς ἑνδεκά, ἐπῆρε τῶν φωνῶν αὐτῶ, καὶ ἀπεφθέγγετο αὐτοῖς· Ἄνδρες Ἰουδαῖοι, καὶ οἱ κατοικῶντες Ἱερουσαλὴμ ἀπῆλθες, τῆτο ὁμῶν γνωστὸν ἔστω, ὃ ἐνωτίσασθε τὰ ῥήματα μου.

25 Οὐ γὰρ, ὡς ὑμεῖς ὑπολαμβάνετε, ὅτι μεθ' ὧν
 ἐσὶ γὰρ ὥρα τρίτη τῆς ἡμέρας.

16 Ἀλλὰ τὴν ὥρην τὴν ἐρημικὴν Διὰ τὴν Πρεσβυτέρου
 Γεωργίου.

17 Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἐχάταις ἡμέραις, (λέγει
 ὁ Θεός) ὁ ὅτι ἀπὸ τῆς Πνεύματος μὴ ἔπ' παλαιᾶ
 σάρκα· καὶ τροφισθήσιν οἱ υἱοὶ ὑμῶν καὶ αἱ θυ-
 γατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ νεώτεροι ὑμῶν ἐράτεις ὄψον-
 ται, ὅτι οἱ πρεσβύτεροι ὑμῶν ἐνύπνια ἐνύπνιασθή-
 σονται.

18 Καὶ γε ὅτι τῆς δόξης μὴ ἐν ταῖς δόξαις μὴ
 ἐν ταῖς ἡμέραις ὁπότε ἀπὸ τῆς Πνεύματος μὴ
 καὶ τροφισθήσιν.

19 Καὶ δώσω τέρατα ἐν τῷ ἡρώδῃ Ἀντίῳ, ὅτι ση-
 μεῖα ἔπ' τῆς γῆς κάτω, αἶμα ἐν πύρρῳ ἐν αἰσθήσει
 κατὰ.

20 Ὁ ἥλιος μετατρέφεται εἰς σκότος, ὅτι σιλικὴν
 εἰς αἶμα, πρὶν ἢ εἰσεῖν τὴν ἡμέραν Κυρίου καὶ μετὰ
 ἐν ὑποστάσει.

21 Καὶ ἔσται, πᾶς ὅς ἐν ἐπιταλῇ τῶν ὀνομα-
 Κυρίων, σὺν ἡμέταις.

22 Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, ἀκούσατε τῆς λόγου τῆς
 τῆς Ἰησοῦ τὸν Ναζωραῖον, ἀνδρὸς ἀπὸ τῆς Θεᾶς ἀπο-
 δεειγμένου εἰς ὑμᾶς δυναμεις καὶ τέρασι καὶ σημείοις οἷς
 ἐποίησε δι' αὐτοῦ ὁ Θεός ἐν μέσῳ ὑμῶν, καθὼς καὶ αὐ-
 τοὶ οἴδατε.

23 Τῶν τῆς ὁριζμένη βουλῆς ἐπὶ προγνώσει τῆς Θεᾶς
 ἐκδοτὸν λαβόντες, Διὰ τῶν χειρῶν ἀνθρώπων προσήλθοντες
 ἀκούετε.

24 Οὐ γὰρ ὁ Θεός ἀνέστη, λύσας τὰς ἐνδεύσεις τῆς Θεᾶς
 κατὰ, καθὼς καὶ ὡς δυνατὸν κρατῆσαι αὐτὸν κατὰ
 αὐτοῦ.

25 Δαβὶδ γὰρ λέγει εἰς αὐτόν· Προαιρέσει καὶ Κυ-
 ρίου ἐνώπιόν μου Διὰ πάντας, ὅτι ἐν δεξιῶν μου ἐστίν,
 ἵνα μὴ σαλευθῶ.

26 Διὰ τῶν ἀφραδῶν καὶ καρδίας μου, ὅτι ἐν ὑμῶν
 κατὰ ἡ γλώσσά μου· ἐπὶ ὃ καὶ ἡ σὰρξ μου κατασκηνώσῃ
 ἐν ἡμῖν.

27 Ὅτι καὶ ἐγκαταλείψει τὴν ψυχὴν μου εἰς ὄψιν
 καὶ δώσῃς τὴν ὁρίαν σου εἰς δεξιὰς σου.

28 Ἐγνώρισάς μοι ὁδὸν ζωῆς· πληρώσεις με ἀφρο-
 σύνης μὴ τῆς πρῶτης σου.

29 Ἄνδρες ἀδελφοί, ἔχοντες ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν
 θεῖας πρὸς τὴν Πατριάρχην Δαβὶδ, ὅτι ἐν ἐπιταλῇ
 ἐτάφη, ὅτι τὸ μνημεῖον αὐτοῦ ἐστὶν ἐν ὑμῖν ἀλλὰ τὴν ἡμέ-
 ραν ταύτην.

30 Προφήτης ἦν ὑμῶν, ὅτι εἰδὼς ὅτι ὑμεῖς ὡς
 αὐτὸν αὐτὸν ὁ Θεός, ἐν κατὰ τὴν ὁρίαν αὐτοῦ τὸ κατὰ
 σάρκα ἀνέστη καὶ Χριστός, καθίσταται ὅτι τὴν Θεᾶς
 αὐτοῦ.

31 Προδοὺν ἐλάλησε πρὸς τὴν ἀμαρτίαν καὶ Χριστός
 ὅτι

ἀνθρώπου Κανόνα καὶ ἐν ἡμῖν ὁ Θεός

Κεφ. γ' 3.

1 **Ε**ἰπὶ τὸ αὐτὸ ὁ Πέτρος ὁ Ἰωάννης ἀνέβαινον εἰς τὸ ἱερόν ἐπὶ τὸ ἔσχατον τὸ προσόχης τῶν ἐν-
αύτων.

2 Καὶ περὶ ἀνὰ χαλὸς ὅτι κοιλίας μητρὸς αὐτῶν ὑπάρ-
χον, ἐβαστάζετο· ὃν ἐπίθον καὶ ἡμέραν πρὸς τὸν
θύρον τὸ ἱερὸν τῶν λεγομένων Ὡραίων, καὶ αἰ-
τεῖν ἐλεημοσύνην πρὸς τῶν εἰσπορευομένων εἰς τὸ
ἱερόν.

3 Ὅς ἰδὼν Πέτρον ὁ Ἰωάννης μέλλοντας εἰσελθεῖν
εἰς τὸ ἱερόν, καί τε ἐλεημοσύνην λαβεῖν.

4 Ἀπεκρίθη ὁ Πέτρος εἰς αὐτὸν τῶν Ἰωάννη, ἔ-
πε· Βλέψον εἰς ἡμᾶς.

5 Ὅς ὁ ἐπέχεν αὐτοῖς, προσδοκῶν τι παρ' αὐτῶν
λαβεῖν.

6 Εἶπε δὲ Πέτρος· Ἀργύριον ὁ χρυσίον μή ὑπά-
ρα μοι· ὃ ὃ ἔχω, τούτῳ σοι δίδωμι· Ἐν τῷ ὄνο-
μα τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ καὶ Ναζωραίου ἐγείρω καὶ πᾶν
πατή.

7 Καὶ πιάτας αὐτὸν τῆς δεξιᾶς χειρὸς ἐγχερε·
καὶ ἔσπερεν αὐτὸν αὐτῶν αὐτῶν καὶ τῶν
σφύρα.

8 Καὶ ἐκκαλλέμενος ἔειπεν, ὁ πᾶσι πατή· καὶ εἰσῆλ-
θε σὺν αὐτοῖς εἰς τὸ ἱερόν, πᾶσι τῶν ἐκκαλλέμενος,
καὶ αὐτῶν τὸ Θεόν.

9 Καὶ εἶδεν αὐτὸν πᾶς ὁ λαὸς πᾶσι τῶν ἐκκαλλέμενος
καὶ Θεόν.

10 Ἐπεγίνωσκόν τε αὐτὸν ὅτι ἔστιν ὁ πρὸς τῶν ἐ-
λεημοσύνην καθήμενος ἐπὶ τῇ Ὡραίᾳ πύλῃ τῷ ἱερῷ·
καὶ ἐπλήσθησαν θαύματος καὶ ὁκνησεως ἐπὶ τῇ συμβεβη-
κότι αὐτῶν.

11 Κρατύνοντες δὲ καὶ ἰαθέντες χαλῶ τὸν Πέτρον
καὶ Ἰωάννην, συνέδραμε πρὸς αὐτῶν πᾶς ὁ λαὸς
ἐπὶ τῇ σφῇ τῇ καλυμένῃ Σολομῶντος ἐκδομ-
βοι.

12 Ἰδὼν ὁ Πέτρος ἀπεκρίνατο πρὸς τὸν λαόν· Ἄνδρες
Ἰσραηλῖται, τί θαυμάζετε ἐπὶ τούτῳ, ἢ ἡμῖν τί αἰτε-
νεῖτε, ὡς ἰδίᾳ δυνάμει ἢ συνέσει πεποιημένος καὶ πᾶσι
πατήν αὐτόν;

13 Ὅς Θεός Ἀβραάμ ὁ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακώβ, ὁ Θεὸς
τῶν Πατέρων ἡμῶν ἐδόξασε τὸν παῖδα αὐτοῦ Ἰη-
σοῦν, ὃν ἡμεῖς παρεδώκατε, καὶ ἡγήσασθε καὶ
καὶ πρόσωπον Πιλάτου, κριναντος ὁκνησέν ἀπο-
λύειν.

14 Ὑμεῖς δὲ τὸ ἅγιον καὶ δίκαιον ἡγήσασθε, καὶ ἡ-
γήσασθε ἄνδρα φόνεα χαρισθῆναι ἡμῖν.

15 Τὰ δὲ ἀρχαῖα τῆς ζωῆς ἀτεκνίσθητε, ὃν ὁ Θεὸς ἤμερεν ἐκ νεκρῶν, ὃ ἡμεῖς μάρτυρες ἐσμὲν.

16 Καὶ ὑπὲρ τῆς πίστεως ἡ ἐνέμεντος αὐτῆς, τῶν ὃν θεωρεῖτε ὃ οἶδατε, ἐσερέωσεν τὸ ὄνομα αὐτῆς ὃ ἡ πίστις ἡ δὲ αὐτῆς ἔδωκεν αὐτῷ τὴν ἀληκλήριαν ταύτῃ ἀπεινῶντι πάντων ὑμῶν.

17 Καὶ νῦν, ἀδελφοί, οἶδα ὅτι καὶ ἄγνοιαν ἐτράχευτε, ὡς περ καὶ οἱ ἀρχόντες ὑμῶν.

18 Ὁ δὲ Θεὸς ὁ προκατήγγαλε διὰ σώματος πάντων τῶν Προφητῶν αὐτῶν, ταθεῖν τὸ Χριστόν, ἐπλήρωσεν ἔσω.

19 Μετανοήσατε ἄν ὃ ὑπερέβητε, εἰς τὸ ὅσα ληφθῶσι ὑμῶν τὰς ἁμαρτίας ὅπως ἂν ἔλθωσι καιροὶ ἀναψύξεως ἀπὸ προσώπου τοῦ Κυρίου,

20 Καὶ ἀποστείλῃ τὸ προκεκηρυγμένον ὑμῖν Ἰησοῦν Χριστόν,

21 ὃν δεῖ ἡραρὸν μὲν δεῖξασθαι ἄγει χρίστων ἀποκαταστάσεως πάντων ὃν ἐλάλησεν ὁ Θεὸς διὰ σώματος πάντων ἀγγέλων αὐτοῦ Προφητῶν ἀπ' αἰῶνος.

22 Μωσῆς μὲν γὰρ πρὸς τὰς πατέρας ἔειπεν· Ὁ πρὸς Προφητῶν ὑμῖν ἀναστήσει Κύριος ὁ Θεὸς ὑμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν, ὡς ἐμέ· αὐτὸς ἀκούσεσθε καὶ πάντα ὃσα ἂν λαλήσῃ πρὸς ὑμᾶς.

23 Ἔσαι δὲ πᾶσα ψυχὴ, ἥτις ἂν μὴ ἀκούσῃ τοῦ Προφήτου ἐκείνου, βεβηλωθήσεται ἐκ τοῦ λαοῦ.

24 Καὶ πάντες οἱ προφῆται ἀπὸ Σαμὴλ καὶ τῶν καθεξῆς, ὅσοι ἐλάλησαν, ὃ προκατήγγαλεν τὰς ἡμέρας ταύτας.

25 Ὑμεῖς ἐσεῖς υἱοὶ τῶν Προφητῶν ὃ τὸ διδοίκεται ἡς διέδοτο ὁ Θεὸς πρὸς τὰς Πατέρας ἡμῶν, λέγοντες πρὸς Ἀβραάμ· Καὶ τῷ σπέρματι σου ἐνδύλογηθήσονται πᾶσαι αἱ πατριαὶ τῆς γῆς.

26 Ὑμῖν πρῶτον ὁ Θεὸς, ἀναστήσας τὸν παῖδα αὐτοῦ Ἰησοῦν, ἀπέστειλεν αὐτόν ἀλογυντὰ ὑμᾶς, ἐν τῷ ἀποστέλλειν ἔκτισεν ἀπὸ τῶν ποιητῶν ὑμῶν.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Λ** Αἰνέων οὖν αὐτῷ πρὸς τὸ λαόν, ἐπέστησαν αὐτοῖς οἱ ἱερεῖς ὃ ὁ στρατηγὸς τοῦ ἱεροῦ καὶ οἱ Σαδδουκαῖοι,

2 Διαπονήμενοι διὰ τὸ διδάσκειν αὐτῆς τὸ λαόν, καὶ καταγγέλλειν ἐν τῷ Ἰησοῦ τὴν ἀνάστασιν τὴν ἐκ νεκρῶν.

3 Καὶ ἐπέβαλον αὐτοῖς τὰ χεῖρας, ἔδωκεν αὐτοῖς τὴν δύναμιν καὶ τὸ ὄνομα ᾧ ἐν ᾧ ἔσονται ἡρόδ.

4 Πολλοὶ ὅμως τῶν ἀκησάντων τὸ λόγον ἐπίσταντο· καὶ ἐβλήθη ὁ ἀριθμὸς τῶν ἀνδρῶν οἷσιν χειροῖσιν ἐτίθετο.

5 Ἐγένετο ὅμως ὑπὸ τῆς αὐτοῦ συναγωγῆς αὐτῶν τὰς ἀρχοντας καὶ πρεσβυτέρους καὶ γραμματεῖς εἰς Ἱερουσαλὴμ.

6 Καὶ ἄνδρα τὸν ἀρχιερέα καὶ Καϊάφην καὶ Ἰωάννην καὶ Ἀλεξάνδρον καὶ ἄλλους ἡσάντων ἐν γένει ἀρχιερατικοῦ.

7 Καὶ ἐτάσαντες αὐτοὺς ἐν τῇ μέσῃ, ἐπυνθάνοντο· Ἐν ποίᾳ δυνάμει ἢ ἐν ποίῳ ὀνόματι ἐποιήσατε ταῦτα ἡμεῖς;

8 Τότε Πέτρος πληθεὺς Πνεύματος Ἀγίου εἶπε πρὸς αὐτούς· Ἄρχοντες καὶ λαοί, ἔστω πρεσβύτεροι καὶ ἱσχυροὶ,

9 εἰ ἡμεῖς σήμερον ἀναισθησόμεθα ὑπὸ τῆς ἀνεργείας ἀνθρώπων αἰσθενῆς, ἐν τίνι ἔπος εἰσέσωμα;

10 Γνωστὸν ἐστὶν πᾶσιν ὑμῖν καὶ πάντι τῷ λαῷ Ἰσραὴλ, ὅτι ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Ναζωραίου, ἐν ᾧ ἡμεῖς ἐσωσάμεθα, ἐν ᾧ ὁ Θεὸς ἡγάγετο ἐκ νεκρῶν, ἐν ταύτῃ ἡτοῦς παρέστηκεν ἐνώπιον ὑμῶν ἡ γλῶσση.

11 Οὗτός ἐστιν ὁ λίθος ὃς θεμελιωθεὶς ὑφ' ὑμῶν τῶν οἰκοδομούντων, ὃ θηρυμῆκεν εἰς κεφαλὴν γωνίας.

12 Καὶ οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ οὐδενὶ ἡ σωτηρία· οὔτε γὰρ ὄνομα ἐστὶν ἕτερον ἢ τὸν οὐρανόν τὸ δεδομένον ἐν ἀνθρώποις, ἐν ᾧ δεῖ σωθῆναι ἡμᾶς.

13 Θεοφρονεῖτε ὅτι καὶ Πέτρον παρ' ἡσίδην καὶ Ἰωάννην, καὶ καταλαβόμενοι ὅτι ἀνθρώποι ἀγράμματοί· τί καὶ εἰδῶται, ἐθαύμαζον, ἐπεγίνωσκόν τε αὐτοὺς ὅτι σὺν τῷ Ἰησοῦ ἦσαν.

14 Τὸν δὲ ἀνθρώπον βλέποντες σὺν αὐτοῖς ἐσώτα καὶ τεθαυμασμένον, ἡδὲν ἔχον ἀντικεῖν.

15 Κηρύττοντες δὲ αὐτοὺς ἔξω καὶ συνεδρεῖν ἀπελθόντες, συνέβαλον πρὸς ἀλλήλους,

16 λέγοντες· Τί ποιήσομεν τοῖς ἀνθρώποις ταῖς· ὅτι μὲν γὰρ γνωστὸν σημεῖον γέγονε δι' αὐτῶν, ταῦτι τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ φανερόν, ἔστω δὲ δυνάμεθα ἀρνήσασθαι.

17 Ἀλλ' ἵνα μὴ ὑπὸ πλείονος ληθηνῇ καὶ εἰς τὸ λαόν, ἀπειλή ἀπειλοῦμεθα αὐτοῖς μηδεὶ λαλεῖν ὅτι τῷ ὀνόματι ταῦτα μηδενὶ ἀνθρώπων.

18 Καὶ καλέσαντες αὐτοὺς, παρήγγειλαν αὐτοῖς τὸ καθελεῖν μὴ φθιγγισθαι, μηδὲ διδάσκειν ὅτι τῷ ὀνόματι καὶ Ἰησοῦ.

19 Οἱ δὲ Πέτρος καὶ Ἰωάννης ἀποκριθέντες πρὸς αὐτοὺς

της, ἔπει· Εἰ δὲ κληῖς εἶναι ἐνώπιον τῷ Θεῷ, ὁ μὲν ἀ-
κκην μὴ λανθῇ τῷ Θεῷ, κρινάτε.

20 Οὐ δύναμεθα γὰρ ἡμῖς, ἀ εἰδοὺς ἐκκαταμεν,
μὴ λαλῆν.

21 Οἱ δὲ προσεταιρισάμενοι ἀπέλυσαν αὐτὴς, μη-
δὲν ἀφαισκούτες τὸ πῶς κολάσονται αὐτὰς, διὰ τὸ
λαλῆν· ὅτι πάντες ἐδόξαζον τῷ Θεῷ ὑπὲρ τῷ γε-
γοῆναι.

22 Ἐπὶ γὰρ ὡς πλεόνων τετρακκίοντα ὁ ἀμῖνοντος,
ἐπὶ ὃν ἐγγεγόνει τὸ σημεῖον τῆτο τῷ ἰσχύος.

23 Ἀπολυθέντες δὲ ἦλθον πρὸς τῆς ἰδίας, καὶ ἀπήγ-
γχεσαν ὅσα πρὸς αὐτὰς οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι
ἔπειν.

24 Οἱ δὲ ἀκκασάμετες, ὁμοθυμαδὸν ἤραν φωνὴν πρὸς
τῷ Θεῷ, καὶ ἔπειν· Δεσποτα, σὺ ὁ Θεὸς, ὁ ποιῆσαι τῷ
καρμέν ἐπὶ γὰρ ἐπὶ θαλάσῃ, ἐπὶ πάντα τὰ ἐν κύ-
τοις.

25 Οἱ δὲ δόματος Δαβὶδ τῷ παιδὸς ἐκ εἰπών·
ἵνα πῖ ἐφρυαξῶν ἔσθῃ, καὶ λαοὶ ἐμμελήσῃ
κινῶν.

26 Παρέστασαν οἱ βασιλεῖς τῷ γῆς, καὶ οἱ ἀρχοῖτες
συνήχθησαν ὑπὲρ τοῦ αὐτοῦ κατὰ τῷ Κυρίῳ καὶ κατὰ τῷ Χρε-
στῷ αὐτῷ.

27 Συνήχθησαν γὰρ ἐπὶ ἀληθείας ὑπὲρ τῷ ἁγίῳ πατ-
ρί, καὶ ἰησῶν, ὃν ἐχρισας, Ἡρώδης τε καὶ Ποπίπτος Πι-
λάτος σὺν ἔθνεσι καὶ λαοῖς Ἰσραὴλ.

28 Ποιῆσαι ὅσα ἡ χεὶρ σου ἐπὶ βελή σου προέρισαι
γενέσθαι.

29 Καὶ τὰ νῦν Κύριε ἐπίδε ὑπὲρ τὰς ἀπώλεις αὐ-
τῶν, καὶ δὲς τοῖς ἐσθλοῖς σου μὴ παρρησίας πάτῃ λα-
λῆν τῷ λόγῳ σου.

30 Ἐν τῷ τῷ χεῖρ σου ἐκτείνῃ σε εἰς ἱάσιν, καὶ
σημεῖα καὶ τεράτια γινέσθαι διὰ τῷ ὀνόματος τῷ ἁγίῳ
παιδὸς σου ἰησῶν.

31 Καὶ δεκθέντων αὐτῶν ἐσαλεύθη ὁ τόπος ἐν ᾧ ἡ-
σάν συνηγμένοι· καὶ ἐπλήσθησαν πάντες Πνεύμα-
τος Ἀγίου, καὶ ἐλάλῃ τὸν λόγον τῷ Θεῷ μετὰ παρρη-
σίας.

32 Τῷ δὲ πλῑθι τῶν πιστῶτάμετων ὡς ἡ καρδία ἐ-
πὶ ψυχὴ μία· καὶ ἡδὲ αἱ πῖ τῶν ἀπαρχόντων αὐ-
τῶ ἐλεγεῖν ἴδιον εἶναι, ἀλλὰ ὡς αὐτοῖς ἀπάντα
κοινά.

33 Καὶ μεγάλη δύναμις ἀπεδίδον τὸ μαρτύριον οἱ
ἀπείστοι τῷ ἀναστάσεως τῇ Κυρίῳ ἰησῶν, χάρις τε με-
γάλη ὡς ὑπὲρ πάντας αὐτὰς.

34 Οὐδὲ γὰρ ἐνδεὲς πῖς ἀπῆρχον ἐν αὐτοῖς· ὅσοι γὰρ
πλητοὶ χωρίων ἢ οἰκιῶν ἀπῆρχον, πωλῶντες ἔφερον
τὰς τιμὰς τῶν πιπρασκόμενων.

35 Καὶ ἐτίθον ὅσα τῆς πίδας τῶν ἀποσέ-
λων· διεδίδοντο δὲ ἑκάστῳ καθὼς αὐτῷ πῖς χρεῖαν εἶ-
χαν.

36 Ἰωσὴφ δέ, ὁ ὀππληθὴς Βαρνάβας, κατὰ τῶν ἀποστόλων, (ὁ εἶσι μετερμηνεύμενον, υἱὸς παρηκολούθως,) ἀφώϊται, Κύριος τῷ γενέει,
37 Ὑπαρχόντος αὐτῷ ἀγρῷ, πωλήσας ὡς ἔχε τὸ χρῆμα, & ἔθηκε πρὸς τὰς πόδας τῶν ἀποστόλων.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Α**νὴρ δέ τις Ἀνανίας ὀνόματι, σὺν Σαπφείῃ τῇ γυναικὶ αὐτῆς ἐπώλησε κτῆμα.

2 Καὶ ἐκρυψάμενος ἀπὸ τῆς τιμῆς, συνιδρύας & τῇ γυναικὶ αὐτῇ, & ἐνέγκας μέρος τι, πρὸς τὰς πόδας τῶν ἀποστόλων ἔθηκεν.

3 Εἴτε δὲ Πέτρος Ἀνανία, λέγει τί ἐπλήρωσεν ὁ Σατανᾶς τὴν καρδίαν σου, ψεύσασθαί σε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, & κρυψάσθαι ἀπὸ τῆς τιμῆς τῇ χωρίῳ;

4 Οὐχὶ μένον, σοὶ ἔμεινε, & πρᾶξεν ὅτι τῇ σὴ ψυχῇ κατῆρχε; τί ὅτι ἔδωκεν τῇ καρδίᾳ σου τὸ πρᾶγμα τὸτο; καὶ ἐψεύσω ἀνθρώποις, ἀλλὰ τῷ Θεῷ.

5 Ἀκούων δὲ Ἀνανίας τὰς λέξεις τῆς τῆς, πεσὼν ὑπέψυξε· & ἐγένετο φόβος μέγας ὑπὲρ πάντας τὰς αἰκουσίας ταῦτα.

6 Ἀναστάντες δὲ οἱ νεώτεροι συνέσκησαν αὐτῷ, καὶ ἐκένεγκαντες ἔθαψαν.

7 Ἐγένετο δὲ ὡς ἁρῶν τριῶν διαίτημα, & ἡ γυνὴ αὐτῆς μὴ εἰδυῖα τὸ γεγονός ἐσῆλθεν.

8 Ἀπεκρίθη δὲ αὐτῇ ὁ Πέτρος· Εἶπέ μοι, εἰ τοσούτη τὸ χωρίον, ἀπέδωκε; Ἡ δὲ εἶπε· Ναὶ τοσούτη.

9 Οὗ δὲ Πέτρος εἶπε πρὸς αὐτὴν· Τί ὅτι συνεφανίσθη ὑμῖν παρασαι τὸ Πνεῦμα Κυρίου; ἰδοὺ οἱ πόδες τῶν θαψάντων τὸν ἄνδρά σου ὑπὲρ τῇ θύρᾳ, & ὑποκρίσεσθε.

10 Ἐπίσε δὲ πρὸς τὰς πόδας αὐτῆς, καὶ ὑπέψυξεν. εἰσελθόντες δὲ οἱ νεώτεροι εὗρον αὐτὴν νεκράν, & ἐκένεγκαντες ἔθαψαν πρὸς τὸν ἄνδρα αὐτῆς.

11 Καὶ ἐγένετο φόβος μέγας ἐφ' ὅλην τὴν ἐκκλησίαν, καὶ ὑπὲρ πάντας τὰς αἰκουσίας ταῦτα.

12 Διὰ δὲ τῶν χειρῶν τῶν ἀποστόλων ἐγένετο σημεῖα & τέρατα ἐν τῷ λαῷ πολλά· (ὅτι ἦσαν ὁμοθυμαδὸν ἅπαντες ἐν τῇ σκῇ Σολομῶντος.)

13 Τῶν δὲ λοιπῶν ἀδελφῶν ἐτόλμα πολλᾶσθαι αὐτοῖς· καὶ ἐμειγνύσθαι αὐτοῖς ὁ λαός.

14 Μαλλον ὅτε προσετίθεντο πιστεύοντες τῷ Κυρίῳ ,
πληθὺν ἀνδρῶν τε ἔθνη καὶ γυναῖκες .)

15 Ὡς κατὰ τὰς πλατείας ἐκφέρειν τὸν ἀσθεν-
ῆν , καὶ πρὸς τὴν ἐκκλῆσιαν καὶ κοινότητα , ἵ-
να ἐρχομένου Πέτρου καὶ ἡ σκιά ὑποκρίνηται τὴν
αὐτῷ .

16 Συμῆρχετο δὲ ἡ πλῆθος τῶν πέριξ πόλεως
Ἰερουσαλὴμ , φέροντες ἀσθενεῖς ἔθνη καὶ οὐκ ἐκ
πνεύματος ἀκαθάρτων . οἱ οὖν πρὸς ἐξουσίαν αὐ-
τῶν .

17 Ἀναστὰς δὲ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ πάντες οἱ σὺν αὐτῷ ,
(ἡ ὄψα ἀρεσίς τῃ Σαδδουκαίων ,) ἐπληρώθησαν
ζήλου .

18 Καὶ ἐπέβηλον τὰς χεῖρας αὐτῶν ἐπὶ τοὺς
ἀποστόλους , καὶ ἔθεντο αὐτοὺς ἐν τερήσῃ δεμο-
σίᾳ .

19 Ἀγγέλους δὲ Κυρίου ἐπέστειλε τῆς νυκτὸς ὡοῖζε
τὰς θύρας τῆς φυλακῆς . ὡοῖζαν τε αὐτοὺς ,
ἵνα .

20 Πορεύσθε , καὶ σταθέντες λαλήτε ἐν τῷ ἱερῷ τῷ
λαῷ πάντα τὰ ῥήματα τῆ ζωῆς ταύτης .

21 Ἀκούσαντες δὲ ἐπέβησαν ὑπὸ τῷ ὄρει τῷ ἱε-
ρῷ , ἔτι δὲ διδάσκον . Παραγχομένοις δὲ ὁ ἀρχιερεὺς ἔτι
σὺν αὐτοῖς , συνεκάλεσαν τὸ συνέδριον καὶ πᾶσαν τὴν γι-
ουδαίαν τῇ νύκτι Ἰσραὴλ . ἔτι ἐπέστησαν καὶ τὸ δεσμο-
τήριον , ἀχθόμενοι αὐτοῖς .

22 Οἱ δὲ ὑπηρέται παραγχομένοις ἔχον ὄρον αὐ-
τῶν ἐν τῇ φυλακῇ . ἀναστρέψαντες δὲ ἀπέλ-
θον .

23 Λέγοντες . Ὅτι τὸ μὲν δεσμοτήριον ὄρονται κι-
κλισμένον ἐν πάσῃ ἀσφαλείᾳ , ἔτι τῆς φυλακῆς ἐξω ἵ-
στάς προ τῶν θυρῶν . αὐοῖζαντες δὲ , ἐξω ἵδμεν αὐ-
τοῖς .

24 Ὡς δὲ ἤκουσαν τῆς λόγου τῆς ταύτης , οἱ ἱερεῖς καὶ
ὁ στρατηγὸς τῷ ἱερῷ ἔτι οἱ ἀρχιερεῖς , διητύρουν αὐ-
τῶν , πᾶν γενοίτο τῷτο .

25 Παραγχομένοις δὲ πρὸς ἀπὸ γυναικὸς αὐτοῖς , λέ-
γων . Ὅτι ἴδμεν , οἱ ἄνδρες ὅς ἐθεσθε ἐν τῇ φυλα-
κῇ , εἰσὶν ἐν τῷ ἱερῷ ἐσώτες , ἔτι διδάσκοντες τὸν
λαόν .

26 Τότε ἀπελθὼν ὁ στρατηγὸς σὺν τοῖς ὑπηρέταις ,
ἔλαβεν αὐτοὺς , ἡ μὲν βίαις . (ἐφοβήντο γὰρ τὸ λαὸν ἵνα
μὴ λιθοθώσιν .)

27 Ἀγχοῦντες δὲ αὐτοὺς ἔστησαν ἐν τῷ συνεδρίῳ . ἔτι
ἐπρωτήσαν αὐτοὺς ὁ ἀρχιερεὺς ,

28 Λέγων . Οὐ παραγγελίας παραγγείλαμεν ὑμῖν
μὴ διδάσκειν ἐπὶ τῷ ὀνόματι τῆς ταύτης ; καὶ ἴδμεν , τα-
πληροῖκατε τῇ Ἰερουσαλὴμ τῆς διδαχῆς ὑμῶν , ἔτι ἐβί-
λεσθε ἐπαγγεῖν ἐφ' ἡμᾶς τὸ αἷμα τῷ ἀνθρώπῳ
ταύτῃ .

29 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Πέτρος ἃ οἱ ἀπέστολοι, εἶπον· Πηθαρχειν δὴ Θεῷ μάλλον ἢ ἀνθρώποις.

30 Οὗ Θεοῦ τῷ πατέρει ὑμῶν ἤγειρεν Ἰησοῦν, ὃν ὑμεῖς διεχειρίσασθε κρεμάσαντες ὑπὲρ ξύλων.

31 Τῆτον ὁ Θεὸς ἀρχηγόν· ἃ σωτῆρα ὑψώσε τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, ὅταν μετανοήσῃ τῷ Ἰσραὴλ καὶ ἀφῇσιν ἀμαρτιῶν.

32 Καὶ ὑμεῖς ἐσθλὴν αὐτοῦ μέσσητε τῷ ῥημάτων τήτων, ἃ τὸ Πνεῦμα δὲ τὸ Ἅγιον, ὃ ἐλάλει ὁ Θεὸς τοῖς πηθαρχεῖν αὐτῷ.

33 Οἱ δὲ ἀκούσαντες διεπρίοντο, ἃ ἐβηλοῦντο ἀνελθὼν αὐτῆς.

34 Ἀνιστὰς δὲ πρὸς ἐν τῷ συνεδρίῳ φαρισαῖος, ἐνόμην Γαμμαλιήλ, νομοδιδάσκαλος, τίμιος παντὶ τῷ λαῷ, ἐβηλόυσεν ἐξω βραχὺ τι τῆς ἀποστόλου ποιῆσαι.

35 Εἶπεν τε πρὸς αὐτῆς· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, προσέχετε ἑαυτοὺς ὑπὲρ τοῖς ἀνθρώποις τούτοις, πῶς μελετετε προσεῖν.

36 Πρὸς γὰρ τήτων τῷ ἡμερῶν ἐνέστη Θαδδαῖος, λέγων· ἦναι τινα αὐτοῦ μέγαν, ὃ προσκολληθῇ ἀρεθμοῖς ἀνθρώπων ὡς τετρακισίων· ὃς ἐνῆρέθη καὶ πάντες ὅσοι ἐκείνουτο αὐτῷ, διελύθησαν, καὶ ἐγένοντο εἰς οὐδέν.

37 Μιτὰ τῆτον ἀνέστη Ἰάκωβ ὁ Γαλιλαῖος· ἐν ταῖς ἡμέραις τῇ ἀποσταφῆς ἃ ἀπέστησε καὶ ἰκανὸν ἰπίσω αὐτοῦ· κακῆτος ἀπώλετο, ἃ πάντες ὅσοι ἐκείνουτο αὐτῷ διέσκορπίσθησαν.

38 Καὶ τὰ τῶν λέγων ὑμῖν, ἀπόστητε ἀπὸ τῷ ἀνθρώπων τήτων, καὶ ἐάσατε αὐτῆς· ὅτι ἐὰν ἢ ἢ ἀνθρώπων ἢ βελή αὐτῆ, ἢ τὸ ἔργον τῷτο, καταλυθήσεται.

39 Εἰ δὲ ὁ Θεὸς ἐστίν, οὐ δύνασθε καταλῦσαι αὐτὸ, μήποτε ἃ θεομάχοι εὐρεθῆτε.

40 Ἐπείσθηται δὲ αὐτῷ· ἃ προσκαλεσάμενοι τοὺς ἀποστόλους, διακόντες παρήγγειλαν μὴ λαλεῖν ὑπὲρ τῷ ἐνόματι τοῦ Ἰησοῦ, ἃ ἀπέλυσαν αὐτούς.

41 Οἱ μὲν οὖν ἐπορεύοντο χαίροντες ἀπὸ προσώπου τῷ συνεδρίῳ, ὅτι ὑπὸ τοῦ ἐνόματος αὐτοῦ κατηξιώθασαν ἀπειρασθῆναι.

42 Πᾶσαν τε ἡμέραν ἐν τῷ ἱερῷ ἃ κατ' οἶκον οὐκ ἐπαύοντο διδάσκοντες ἃ ἀγγελιζόμενοι Ἰησοῦν τὸν Χριστόν.

Κεφ. 5. 6.

1 **Ε**Ν ἡ ταῖς ἡμέραις ταύταις πληθύνοντων τῶν μαθητῶν, ἐγένετο γογγυσμός τῶν Ἑλλήνων πρὸς τῆς Ἑβραίων, ὅτι παρεδιδόντο ἐν τῇ διακονίᾳ τῇ καθημερινῇ αἱ χεῖραι αὐτῶν.

2 Προσκαλεσάμενοι ὅ οἱ εὐίδεκα τὸ πλῆθος τῶν μαθητῶν, ἔειπον· Οὐκ ἀρεστὸν ἐστὶν ἡμῖς καταλειφάμεναι τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, διακονεῖν τραπέζαις.

3 Ἐπισκεψάσθε ἑν, ἀδελφοί, ἄνδρας ἐξ ὑμῶν μαρτυρούμενους ἑπτά, πλήρεις Πνεύματος Ἀγίου καὶ σοφίας, ἃς κτερίσωμεν ὑπὲρ τῶν χείρας τούτων.

4 Ἡμεῖς ὅ τῃ προσώχῃ καὶ τῇ διακονίᾳ τὸν λόγον προσκαρτερήσομεν.

5 Καὶ ἔρρεν ὁ λόγος ἐνώπιον πάντων τῶν πλῆθους· καὶ ἐξελέξαντο Στέφανον, ἄνδρα πλήρη πίστεως καὶ Πνεύματος Ἀγίου, καὶ Φίλιππον καὶ Πρόχορον, καὶ Νικάνورا, καὶ Τίμωνα, καὶ Παρμηνῆν, καὶ Νικολαὸν προσήλυτον Ἀντιοχείᾳ.

6 Οὗς ἐστήσαν ἐνώπιον τῶν ἀποστόλων· καὶ προσεύξάμενοι ἐπέθηκαν αὐτοῖς τὰς χεῖρας.

7 Καὶ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ ἠύδα, καὶ ἐπληθύνετο ἡ ἐκκλησία τῶν μαθητῶν ἐν Ἱερουσαλὴμ σφοδρὰ· πολλοὶ τε ὄχλοι τῶν Ἰερέων ὑπήκουον τῇ πίστει.

8 Στέφανος ὁ πλήρης πίστεως καὶ δυναμείως ἐποίει τέματα καὶ σημεῖα μεγάλα ἐν τῷ λαῷ.

9 Ἀνέστησαν ὅ πινεσ τῶν ἐκ τῆς συναγωγῆς τῆ λευκαῖτης Λιβερτίων, καὶ Κυρηναίων, καὶ Ἀλεξανδρέων, καὶ τῶν ἀπὸ Κιλικίας καὶ Ἀσίας, συνιῆντες πρὸς Στέφανον.

10 Καὶ ἔκ τινος ἀνθρώπου ἀντιπάλου τῇ σοφίᾳ καὶ τῷ Πνεύματι καὶ ἐλάλει.

11 Τότε ὑπέβαλον ἄνδρες λέγοντας, ὅτι ἰσχυρόμεν αὐτὸν κληῖντος ῥήματα βλάσφημα εἰς Μωσθεῖ καὶ τὸν Θεόν.

12 Συνεκρίνασάν τε τὸ λαὸν καὶ τῆς πρεσβυτερίας καὶ τῆς γραμματείας· καὶ ὅλπισάντες συνέρτησαν αὐτόν, καὶ ἤγαγον εἰς τὸ συνέδριον.

13 Ἐστήσαν τε μαρτυρὰς ψαύδεις, λέγοντας· Οὗ ἀνδρὸς οὗτος οὐ ποιεῖται ῥήματα βλάσφημα καλῶς ἅπλως· ἀλλὰ τὸν λαὸν τούτον καὶ τὸν τόπον.

14 Ἀκηκόσαμεν γὰρ αὐτὸν λέγοντος, ὅτι Ἰσραὴς ὁ Νεκρωτὴς οὗτος καταλύσει τὸν τόπον τούτον, καὶ ἀλλάξει τὰ ἔθνη· ὃν παρέδωκεν ἡμῖν Μωσθεῖς.

15 Καὶ ἀνενίσταντες εἰς αὐτόν ἅπαντες οἱ καθήμενοι ἐν τῷ συνεδρίῳ, εἶδον τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ἄνθρωπον ἁγγέλου.

Κεφ.

Κεφ. ζ'. 7.

1 **Ε**ἶπε ὁ ἄρχιερός· Εἰ ἄρα ταῦτα οὕτως
 ἔχεται·

2 **Ο**ὗ ἔφη· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐ πατέρες, ἀκούσα-
 τε· Ὁ Θεὸς τῆς δόξης ὤφθη τῷ πατρὶ ἡμῶν Ἀβραάμ
 ὅτι ἐν τῇ Μεσοποταμίᾳ, πρὶν ἢ κατοικῆσαι αὐτὸν ἐν
 Χαρρῶν.

3 Καὶ ἦκε πρὸς αὐτόν· Ἐξελθε ἐκ τῆς γῆς σου
 καὶ ἐκ τῆς συγγενείας σου, ἔ δεῦρο εἰς γῆν ἣν ἀν-
 σι δέξω.

4 Τότε ἤλθον ἐκ γῆς Χαλδαίων, κατήκτισεν ἐν
 Χαρρῶν. Κακῶϊδεν, καὶ τὸ ἀποθανεῖν τὸν πατέρα αὐ-
 τῷ, μετόπισεν αὐτὸν εἰς τὴν γῆν ταύτην εἰς ἣν ὁμοῖς
 τῶν κατοικῶντες.

5 Καὶ ἦν ἔδωκεν αὐτῷ κληρονομίαν ἐν αὐτῇ, καὶ ἐ-
 βῆμα τοῦτος· καὶ ἐπηγγέλατο αὐτῷ δεῦρα εἰς κατά-
 σκευα αὐτῷ, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ μετ' αὐτόν, καὶ
 ὅσους αὐτῷ τέκνη.

6 Ἐλάλησε ὁ ὕψος ὁ Θεός· Ὅτι εἰμι τὸ σπέρμα
 αὐτοῦ παροίκον ἐν γῇ ἀλλοτρίᾳ, ἔ δυνάστησιν αὐτόν, ἔ
 κακώσιν ἐν τετρακόσια.

7 Καὶ τὸ ἔθνος, ὃ ἐὰν δυνάσῃσι, πρὶν ἐγώ, ἐ-
 πὶν ὁ Θεός· ἔ καὶ ταῦτα ἤλθουσιναι, καὶ λατρεύον-
 σί μοι ἐν τῷ τότε ταῦτα.

8 Καὶ ἔδωκεν αὐτῷ διαθήκην πεντηκότης· ἔ ὕψος
 ἐγέννησε ἡ Ἰσαὰκ, ἔ πεντηκότης αὐτὸν τῇ ἡμέρᾳ τῇ
 ἐλθόν· ἔ ὁ Ἰσαὰκ ἡ Ἰακώβ, ἔ ὁ Ἰακώβ τῆς δώδε-
 κα πατριάρχας.

9 Καὶ οἱ πατριάρχαι ἐλθόντες, τῶν Ἰω-
 σήφ ἀπέθαντο εἰς Αἴγυπτον· ἔ καὶ ὁ Θεός μετ'
 αὐτοῦ.

10 Καὶ ἤλθον αὐτὸν ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ·
 ἔ ἔδωκεν αὐτῷ χάριν ἔ σοφίαν ἐναντίον Φαραὼ βασι-
 λέως Αἰγύπτου, ἔ κατέστησεν αὐτὸν ἡγούμενον ἐπ' Αἴ-
 γυπτον ἔ ὅλον τὸ ἔθνος αὐτοῦ.

11 Ἦλθε ὁ λιμός ἐφ' ὅλην τὴν γῆν Αἰγύπτου ἔ
 Καναν, ἔ θλίψις μεγάλη· ἔ καὶ εὗρισκον χορτάσ-
 μετα οἱ πατέρες ἡμῶν.

12 Ἀκούσας δὲ Ἰακώβ ὅτι οἶτα ἐν Αἰγύπτῳ ἤλ-
 πείσθη τῆς πατέρας ἡμῶν πρῶτον.

13 Καὶ ἐν τῷ δούτέρῳ ἀνεγκραίσθη Ἰωσήφ τοῖς
 ἀδελφοῖς αὐτοῦ, ἔ φανερόν ἐγένετο τῷ Φαραὼ τὸ γέ-
 νος ἡ Ἰωσήφ.

14 Ἀποστέλλει ὁ Ἰωσήφ μετακαλέσασθαι τὸν πατέρα
 αὐτοῦ Ἰακώβ, ἔ πᾶσαν τὴν συγγενεὶάν αὐτοῦ, ἐν Ψυ-
 χαὶς ἔδδομήκοντα πέντε.

35 Κε-

15 Κατέβη ὁ Ἀβραάμ εἰς Αἴγυπτον, ὃ ἐτελεύτησεν αὐτὸς ὡς πατέρες ἡμεῖς.

16 Καὶ μετετέθησάν εἰς Συχέμ, ὃ ἐτεθήσθην ἐν τῷ μετὰ τὸ ἀνήστατο Ἀβραάμ πρὸς τὴν ἀρχαίαν τῶν υἱῶν Εἰμὸρ τῷ Συχέμ.

17 Καθὼς ὁ ἡγγίζεν ὁ χρόνος τῆς ἐπαγγελίας ἧς ὁρμεν ὁ Θεὸς τῷ Ἀβραάμ, κήρυξεν ὁ λαὸς ὃ ἐπλοθύθη ἐν Αἰγύπτῳ.

18 Ἀλλ' οὐκ ἀμέτρη βασιλεῖς ἕτεροι ὅς ἐκ ᾗδεα τὸν Ἰωσήφ.

19 Οὗτος καταπορισμῶμος τὸ γένος ἡμεῶν, ἐκάλεισε τὴν πατέρα ἡμεῶν, ᾧ ποιῶν ἐκθίετο τὰ βρέφη αὐτῶν, εἰς τὸ μὴ ζῆσθαι.

20 Ἐν ᾧ καιρῷ ἐγενήθη Μωσῆς, ὃ ὡς αἶνε τῷ Θεῷ, ὅς ἀνετράφη μύνας τρεῖς ἐν τῷ οἴκῳ τῷ πατρὸς αὐτοῦ.

21 Ἐκτεθέντα ὁ αὐτὸν, ἀνέειλετο αὐτὸν ἡ θραύτης φαραὼ ὃ ἀνεθρέψατο αὐτὸν ἐν τῇ εἰς υἱόν.

22 Καὶ ἐπαυδάθη Μωσῆς πάσῃ σοφίᾳ Αἰγυπτίων· ὡς δὲ δυνατὸς ἐν λόγοις καὶ ἐν ἔργῳ.

23 Ὡς ὁ ἐπληρώθη αὐτῷ τριταρχονταετὸς χρόνος, ἀνέβη ὑπὲρ τῶν κερδῶν αὐτῷ ὑποσκέψασθαι τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς τὴν υἱὴν Ἰσραήλ.

24 Καὶ ἰδὼν πικρὰ ἀδικήματα, ἡμίνατο, ὃ ἐποίησιν ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ τὴν καταπονημένην, πατάξας τὸν Αἰγύπτιον.

25 Ἐνόμιζε ὁ συνιέναι τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς, ᾧ ὁ Θεὸς ἰδοὺς χροὸς αὐτῆς δίδωσιν αὐτοῖς σωτηρίαν· οἱ ὁ συνήλκον.

26 Τῇ ὁ ὑποπλοήσῃ ἡμέρᾳ ὠφθη αὐτῇς μεχομέται, ἢ συνήλκον αὐτῆς εἰς ἐρῶν, εἰπὼν· Ἄνδρες, ἀδελφοί ἴτε ὑμεῖς· ἔνα τι ἀδικεῖτε ἀλλήλους;

27 Ὁ δὲ ἀδικῶν τὸν πλησίον, ἀπόσπασεν αὐτὸν, εἰπὼν· Τίς σε κατέστησεν ἀρχοντα ὃ δικαστὴν ἐφ' ἐμοῦ;

28 Μὴ ἀνελάν με σὺ θέλεις, ὃν τρόπον ἀνέλες χροὸν τῷ Αἰγύπτῳ;

29 Ἐφυγε δὲ Μωσῆς ἐν τῷ λόγῳ τούτῳ, καὶ ἐγένετο παροίκος ἐν γῇ Μαδίαν, ὃ ἐγενήσθην υἱὸς δύο.

30 Καὶ πληρωθέντων ἐτῶν τριταρχοντα, ὠφθη αὐτῷ ἐν τῇ ἐρήμῳ τῷ ὄρει Σινᾷ ἀγγεῖλος Κυρίου ἐν φλογὶ πυρὸς βατῆ.

31 Ὁ δὲ Μωσῆς ἰδὼν, ἐθαύμασε τὸ ὄραμα· προσελθὼν δὲ αὐτῷ κατανοῆσαι, ἐγένετο φωνὴ Κυρίου πρὸς αὐτόν·

32 Εἰπὼν ὁ Θεὸς τῷ πατέρῳ σου, ὁ Θεὸς Ἀβραάμ, ὃ ὁ Θεὸς Ἰσαὰκ, ὃ ὁ Θεὸς Ἰακώβ. Ἐντρομος ὁ γέννητος Μωσῆς ἐκ ἐτόλμη κατανοῆσαι.

32 Εἶπε δὲ αὐτῷ ὁ Κύριος· Λύσον τὸ ὑπόδηξόν σου· ὁ γὰρ τόπος ἐν ᾧ ἔστηκας, γῆ ἁγία ἐστίν.

34 Ἰδὼν αὖτοί τινι κακάσιν τοῦ λαοῦ μου τοῦ ἐν Αἴγυπτῳ, ἔτι στεναγμῷ αὐτῷ ἤκουσα, καὶ κατέβηθαι ἐξελέσθαι αὐτὸς· καὶ νῦν δεῦρο, ἀποστείλω σε εἰς Αἴγυπτον.

35 Τῆστιν τὸν Μωϋσῆν ὃν ἠρησάμην, εἰπόντις· Τίς σε κατέσκειν ἄρχοντα ἐ δικασίῳ; τῆστιν ὁ Θεὸς ἄρχοντα ἐ κυριακῇ ἀπέστειλεν ἐν χειρὶ ἀγγέλου ἡ οὐδ' αὖτις αὐτῷ ἐν τῇ βατῳ.

36 Οὗτος ὤφειλεν αὐτοὺς, ποιῆσαι τήματα καὶ σημεῖα ἐν γῇ Αἴγυπτου, καὶ ἐν ἐρημῇ θαλάσῃ, καὶ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐτη τεσσαρῶν.

37 Οὗτος ἐστίν ὁ Μωϋσῆς ὁ εἰπὼν τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ· Προφῆτῳ ὑμῖν ἀναστήσει Κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν ἐκ τῶν ἀδελφῶν ὑμῶν ὡς ἐμέ· αὐτοῦ ἀκούσισθε.

38 Οὗτος ἐστίν ὁ ἡρώδης ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ἡ οὐδ' αὖτις ἡ λαοῦντος αὐτῷ ἐν τῇ ἁγίᾳ Σιναῖ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὅς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.

39 Ὡς ἡ ἐδέξατο ἡ οὐδ' αὖτις ἡ λαοῦντος αὐτῷ ἐν τῇ ἁγίᾳ Σιναῖ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὅς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.

40 Εἰπόντες τῷ Ἀαρὼν· Ποιήσαν ἡμῖν θεός, οἱ προκοφίσονται ἡμῶν· ὁ γὰρ Μωϋσῆς οὗτος ὅς ὤφειλεν ἡμῶν ἐκ γῆς Αἴγυπτου, ἐκ οὐδ' αὖτις πὶ γενοῖται αὐτῷ.

41 Καὶ ἐμοχθοποίησαν ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ἔτι ἡ οὐδ' αὖτις ἡ λαοῦντος αὐτῷ ἐν τῇ ἁγίᾳ Σιναῖ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὅς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.

42 Ἐξέρεψε δὲ ὁ Θεὸς, καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς λαοῦντος τῇ σραπῇ τοῦ οὐράνου, καθὼς γέγραπται ἐν βίβλῳ τῷ προφῆτῳ· Μὴ σφάγια καὶ θυσιὰς προσεγγικατέ μοι ἐτη τεσσαρῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, οἱ καὶ Ἰσραὴλ;

43 Καὶ ἀνελάβετε τινι σημεῖον τοῦ Μωϋσῆ, καὶ τὸ ἄστρον ἡ οὐδ' αὖτις ἡ λαοῦντος αὐτῷ ἐν τῇ ἁγίᾳ Σιναῖ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὅς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.

44 Ἡ σκηνὴ τοῦ μαρτυρίου ἡ οὐδ' αὖτις ἡ λαοῦντος αὐτῷ ἐν τῇ ἁγίᾳ Σιναῖ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὅς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.

45 Ἡ οὐδ' αὖτις ἡ λαοῦντος αὐτῷ ἐν τῇ ἁγίᾳ Σιναῖ, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, ὅς ἐδέξατο λόγια ζῶντα, δοῦναι ἡμῖν.

46 Ὅς εὗρε χάριν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, καὶ ἤτήτατο ἀρῆν
σκληρονομα τοῦ Θεοῦ Ἰσκαβ.

47 Σολομών δὲ ὠκοδόμησεν αὐτῷ οἶκον.

48 Ἀλλ' ἢ καὶ ὁ ὕψιστος ἐν χειροποιήτοις ταῖς κατοι-
καί, καθὼς ὁ προφῆτης λέγει.

49 Ὁ εὐαγγέλιος μοι θρόνος, ἡ δὲ γῆ καταπα-
δίον τοῦ ποδῶν μου. Ποῖον οἶκον εἰκοδομήσετε
μοι, λέγει Κύριος; ἢ τίς τόπος τῆς καταπα-
σεως μου;

50 Οὐχὶ ἡ χάρις μου ἐποίησε ταῦτα πάν-
τα;

51 Σκληροτράχηλοι, καὶ ἀπεράτμητοι τῇ καρ-
δίᾳ ἐ τοῖς λόγοις, ὑμεῖς αἱ τοῦ Πνεύματος τοῦ
Ἀγίου ἀντιπίπτετε, ὡς οἱ πατέρες ὑμῶν καὶ
ὑμεῖς.

52 Τίνα τοῦ προφητοῦ καὶ ἐδίωξαν οἱ πατέρες ὑ-
μῶν; καὶ ἀπέκτειναν τὴν προκαταγγέλαντάς αὐτῶν
τῆς ἐλπίσεως τοῦ δικαίου, ὃ τὸν ὑμεῖς προδίδται ἐ
φανεῖς γεγέννησε.

53 Οἷπνες ἐλάβετε τὸ νόμον ἐς διαταγὰς ἀγγελῶν,
καὶ ἐφυκάξατε.

54 Ἀκρόντες ἐ ταῦτα, διεπρίοντο ταῖς καρδίαις αὐ-
τῶν, ἐ βρυχόν τῆς ἐδόντας ἐπ' αὐτόν.

55 Ὑπάρχοντες πληρεῖς Πνεύματος Ἀγίου, ἀτενίσας
ἐς τὸ ἔργον, εἰς τὴν δόξαν Θεοῦ, ἐ Ἰησοῦν ἐς ὧτα ἐκ δε-
ξιῶν τοῦ Θεοῦ.

56 Καὶ εἶπεν Ἰδοὺ, θεωρεῖ τοὺς εὐαγγέλιους ἀ-
νεργαμένους, καὶ τὸν Υἱόν τοῦ ἀνθρώπου ἐκ δεξιῶν ἐς ὧ-
τα τοῦ Θεοῦ.

57 Κραῖδοντες ἐ φωνῇ μεγάλῃ, συνέχον τὰ ὦτα
αὐτῶν, ἐ ἀρρηστοὶ ὁμοθυμαδὸν ἐπ' αὐτόν.

58 Καὶ ὀκθαλύοντες ἐξω τῆς πόλεως, ἐλι-
θοβόλουν· καὶ οἱ μάρτυρες ἀπέθεντο τὰ ἱμα-
τια αὐτῶν ὑπὸ τοὺς πόδας γεαγίου καλυμμένου
Σαῦλου.

59 Καὶ ἐλιθοβόλουν τὸν Στέφανον, ἐπικα-
λούμενον καὶ λέγοντα· Κύριε Ἰησοῦ, δεξαι τὸ πνεῦ-
μα μου.

60 Οἱ δὲ τὰ γόνατα, ἐκραξε φωνῇ μεγάλῃ· Κύ-
ριε, μὴ κρίνης αὐτοῖς τὴν ἁμαρτίαν ταύτην. Καὶ ἦτο
ἐπὶ τὸν οὐρανόν, ὁκοιμήθη.

Κεφ. η. 8.

1 **Σ** Αὐλος ὃ ὡς συνήδοσαν τῇ ἀναρέσει αὐτῇ·
 ἔγενετο ὃ ἐν σκείῃ τῇ ἡμέρᾳ διωγμῶς με-
 γαλῆς ὅπῃ τῷ σκληροῦ τῷ ἐν Ἱερουσολυμοῖς· πάντες
 τε διασπάρσαν κατὰ τὰς χώρας τῇ Ἰουδαίᾳ ἔ
 Σαμαρείας, πλὴν τῷ ἀποστόλῳ.

2 Συνεκόμισαν ὃ τὸν Στέφανον ἄνδρες δόξαρις, ἔ
 ἵστασαν αὐτὸν κατὰ τὸν μέγαν ἐπὶ αὐτῷ.

3 Σαῦλος δὲ ἐλυμάνετο τῷ σκληροῦ, κατὰ τῆς
 εἰκῆς εἰσπορεύμενος, σύρων τε ἀνδρας ἔ
 γυναῖκας, παρεδίδου ἐς φυλακὴν.

4 Οἱ μὲν ὅν διασπαρέντες διήλθον, διαγγελιζόμενοι
 τὸν λόγον.

5 Φίλιππος ὃ κατελθὼν εἰς πόλιν τὴν Σαμαρείας,
 ὠκνηροῦσεν αὐτοῖς τὸν Χριστόν.

6 Προσέχοντες οἱ ὄχλοι τοῖς λεγομένοις ἀπὸ τοῦ Φι-
 λίππου ὁμοψυμάδων, ἐν τῷ ἀκούειν αὐτῶς ἔ
 βλέπουν τὰ σημεῖα αὐτοῦ ἐποίει.

7 Πολλοὶ γὰρ τῷ ἔχονταν πτόματᾳ ἀκάθαρτα,
 ἐσθντᾶ μεγάλη φωνῇ, ἔκρηχτο· πολλοὶ ὃ πνεύματι
 ἁγίῳ ἔ
 χολοὶ ὁδεραποδιδόναν.

8 Καὶ ἐγένετο χαρὰ μεγάλη ἐν τῇ πόλει σκείῃ.

9 Ἀνὴρ δὲ τις ὀνόματι Σίμων, πρῶτον ἦρχον ἐν τῇ πό-
 λι μεγάλῳ ἔ
 ἔκρηχτο τὸ ἔθνος τὴν Σαμαρείας, λέγων
 αὐτῷ πᾶσι ἐαυτὸν μέγαν.

10 Ὡς προσέχον πάντες ἀπὸ μικρῶ ἕως μεγά-
 λου, λέγοντες· Οὗτός ἐστιν ἡ δύναμις τοῦ Θεοῦ ἡ
 μεγάλη.

11 Προσέχον ὃ αὐτῷ, διὰ τὸ ἰκάνει χρόνῳ ταῖς μα-
 γείαις ἔκρηχεν αὐτῶς.

12 Ὅτε δὲ ἐπίσδον τῷ Φιλίππῳ διαγγε-
 λιζόμενῳ τὰ πρὸς τῆς βασιλείας τοῦ Θεοῦ, καὶ τὸ
 εἰκόματος τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐβαπτίζοντο ἄνδρες τε
 ἔ
 γυναῖκες.

13 Οἱ δὲ Σίμων καὶ αὐτὸς ἐπίσδου, καὶ
 βαπτισθεὶς ὡς προσκαρτερῶν τῷ Φιλίππῳ· θεωροῦ-
 σι σημεῖα καὶ δυνάμεις μεγάλας γινόμενας, ἔκ-
 ρησάτο.

14 Ἀκούσαντες ὃ οἱ ἐν Ἱερουσολυμοῖς ἀπόστολοι ὅπ
 δίδεσται ἡ Σαμαρεία τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ἀπέστειλαν πρὸς
 αὐτοῖς τὸν Πέτρον ἔ
 Ἰωάννην.

15 Οἱ πᾶσι καταβάντες προσήλθον πρὸς αὐτοῖς, ὅ-
 πως λάβωσι πνεῦμα ἁγίον.

16 (Οὕτω γὰρ ὡς ἐπὶ οὐδενὶ αὐτῶν ὑποσημαίνετο·
 μόνον δὲ βεβαπτισμένοι ὑπάρχοντες εἰς τὸ ὄνομα τοῦ Κυ-
 οῦ Ἰησοῦ.)

17 Τό-

17 Τότε ἐπέθηκεν τὰς χεῖρας ἐπ' αὐτὸς, & ἔλαμ-
βανεν Πνεῦμα Ἄγιον.

18 Θεσσαλῶνος ὁ Σίμων ὅτι διὰ τὴν ἐπιθέσειν τῆς
χερὸς τῆς ἀποστόλου δίδεται τὸ Πνεῦμα πρὸς Ἄγιον,
προσέθηκεν αὐτοῖς χημάτα.

19 Λέγων· Δότε κήμοι τῶν ἐξουσιῶν ταύτων,
ἵνα ὡς εἰς ἐπιθεῖν τὰς χεῖρας, λαμβάνη Πνεῦμα
Ἄγιον.

20 Πέτρος ὁ εἶπε πρὸς αὐτόν· Τὸ ἀργυρεῖόν σου σὺν
σοι εἴη εἰς ἀπολαίαν, ἐπὶ τῶν δωρεῶν τοῦ Θεοῦ ἐνδομίας
διὰ χημάτων κτάσθαι.

21 Οὐκ ἔστι σοι μερὶς οὐδὲ κλήρος ἐν τῷ λόγῳ
τούτῳ· ἡ γὰρ καρδίᾳ σου οὐκ εἰσὶν ὁδοὶ ἐνώπιον τοῦ
Θεοῦ.

22 Μετανόησον ὅν ἀπὸ τῆς κακίας σου ταύτης, καὶ
δεήθητι τοῦ Θεοῦ, εἰ ἄρα ἀφεθήσεται σοι ἡ ἐπίκρισις τῆς
καρδίας σου.

23 Εἰς γὰρ πολλὰ πικρίας καὶ σύνδεσμον αἰδεσίης ὁ-
ρᾷ σε ὄντα.

24 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ Σίμων εἶπε· Διαθήκετε μοι
ὥστε ἐμὴ πρὸς τὸ Κύριον, ὅπως μηδὲν ἐπέλθῃ ἐπ' ἐμὸν
ὡς εἰρήκατε.

25 Οἱ μὲν οὖν Σαμαριτανῶντες, καὶ λαλή-
σαντες τὸν λόγον τοῦ Κυρίου, ὑπέστρεψαν εἰς Ἱερου-
σαλήμ, πολλὰς τε κόμας τῆς Σαμαριτικῆς ἀγαγε-
λίσαντες.

26 Ἄγγελος δὲ Κυρίου ἐλάλησε πρὸς Φίλιππον, λέ-
γων· Ἀνάστη & πορεύου κατὰ μεσημβρίαν, ἐπὶ τῶν
ὁδῶν τῶν καταβαίνουσιν ἀπὸ Ἱερουσαλήμ εἰς Γαζάν. αὐ-
τὴ εἰς ἔρημος.

27 Καὶ ἀναστὰς ἐπορεύθη· & ἰδὼν, ἀνὴρ Αἰθίοψ ἀ-
νέχων, δυνάστης βασιλέως τῆς βασιλείας Αἰθιοπίας, ὃς
ἦν ἐπὶ πάσης τῇ γῆς αὐτῆς, ὅς ἐληλύθει προσκυνή-
σαι εἰς Ἱερουσαλήμ.

28 Ἦν τε ὑποστρέφων, καὶ καθήμενος ὅπῃ
τοῦ ὁδοῦ αὐτοῦ, & ἀνεγίνωσκε τὸν προφήτην
Ἠσαΐαν.

29 Ἐπεὶ δὲ τὸ Πνεῦμα τῷ Φιλίππῳ· Πρόσελθε, &
κοληθῇ τῷ ἅρματι τούτῳ.

30 Προσδραμὼν δὲ ὁ Φίλιππος ἤκουσεν αὐτὸν ἀναγινώ-
σκοντος τὸν προφήτην Ἠσαΐαν, & εἶπεν· Ἀράγε γινώ-
σκεις αὐτὸν ἀναγινώσκεις;

31 Οὗ δὲ εἶπε· Πῶς γὰρ ἂν δύναίμην, εἰς ἃς μέγας ἐ-
δηγήσῃ με; Παρακάλεσέ τε τὸν Φίλιππον, ἀναβάντα κα-
θίσαι σὺν αὐτῷ.

32 Ὁ δὲ παθεὶς τὴν γραφὴν αὐτὸν ἀνεγίνωσκεν, ὡς
αὕτη· Ὡς πρόβατον ὅπῃ σφαγῆν ἤχθη· καὶ ὡς ἀμνὸς
ἐκμαρτυρῶν τὸν κείροντος αὐτὸν ἀφ' ὧν, ὅπως οὐκ ἀνέγει το
τόμα αὐτοῦ.

33 Ἐν τῇ ταπεινώσει αὐτοῦ ἡ κρίσις αὐτοῦ ἐρεθίσθη
τῶν

τῶν ὧν ἡρεσθὲν καὶ πῶς διηγήσεται; ὅτι αἰρεται ἀπὸ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτῶν.

34 Ἀποκριθεὶς δὲ ὁ δυνάχος τῷ Φίλιππῳ, ἔειπε· Διδόμαί σοι, πῶς πῶς ὁ προφήτης λέγει τὸ τοῦτο; ὡς εἰ αὐτῇ, ἢ πῶς ἕτερον πῶς;

35 Ἀποκρίσας ὁ Φίλιππος τὸ νόημα αὐτοῦ, καὶ ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς γραφῆς ταύτης, ἀγγεγελίσατο αὐτῷ τὸ Ἰησοῦν.

36 Ὡς δὲ ἐπορεύοντο κατὰ τὴν ὁδὸν, ἦλθον ὑπὲρ πύδαρ· καὶ φησιν ὁ δυνάχος· Ἰδὲ ὕδαρ· τί κολύει με βαπτισθῆναι;

37 Εἶπε δὲ ὁ Φίλιππος· Εἰ πιστεύεις ὅτι ἔχεις τῆς καρδίας, ἔξεσιν. Ἀποκριθεὶς ὁ εἶπε· Πιστεύω· τί τίς;

38 Καὶ ἐκέλευσε τῶναι τὸ ἕρμα· ἔκατέβησαν αμφότεροι εἰς τὸ ὕδαρ, ὃ, τε Φίλιππος ὁ δυνάχος· ἔβαπτισεν αὐτόν.

39 Ὅτε δὲ ἀνέβησαν ἐκ τοῦ ὕδατος, Πνεῦμα Κυρίου ἤρτασε τὸν Φίλιππον, καὶ οὐκ εἶδεν αὐτόν οὐκέτι ὁ δυνάχος· ἐπορεύετο γὰρ τῶν ὁδῶν αὐτῶν χωρὶς.

40 Φίλιππος δὲ ἀνέβη εἰς Ἀζωτον· ἔ διεσκέδατο ἀγγεγελίετο τὰς πόλεις πάσας, ἕως ἥτις ἦλθεν αὐτὸν εἰς Καισάρειαν.

Κεφ. 9. 9.

1 **Ο** Δὲ Σαῦλος ἔπ' ἐμπνέειν ἀπειλῆς καὶ φόρου εἰς τοὺς μαθητάς τῷ Κυρίῳ, προτελῶν τῷ ἀρχιερεῖ.

2 Ἡ τήνατο παρ' αὐτοῦ ἡρεσολογία εἰς Δαμασκὸν πρὸς τὰς συναγωγὰς, ὅπως εἴην πῶς εὐρεθῇ τῆς δυνάμεως, ἄνδρες τε ἔ γυναῖκες, δεδεμένους ἀγάπῃ εἰς Ἰησοῦν Χριστόν.

3 Ἐν δὲ τῷ πορεύεσθαι, ἐγένετο αὐτόν ἐγγίξαι τῇ Δαμασκῷ· ἔκλειψεν πῶς ἐσκέφατο αὐτόν φῶς ἀπὸ τῆς ὁδοῦ.

4 Καὶ περὶν ὑπὲρ τὴν γλῶσσαν, ἤκουσε φωνὴν λέγουσαν αὐτῷ· Σαῦλ, Σαῦλ, τί με διώκεις;

5 Εἶπε δὲ· Τίς εἶ, Κύριε; Ὁ δὲ Κύριος εἶπεν· Ἐγώ εἰμι Ἰησοῦς ὃν σὺ διώκεις· σκληρόν σοι πρός κίνησιν λακτίζειν.

6 Τρέμων τε ἔκτακτον εἶπε· Κύριε, τί με θέλεις ποιῆσαι; Καὶ ὁ Κύριος πρὸς αὐτόν· Ἀνάστηθι, ἔκλειψεν αὐτόν φῶς, ἔκλειψεν αὐτόν φῶς, ἔκλειψεν αὐτόν φῶς.

7 Ὅτε ὁ ἄνθρωπος οὗ συνδράσκοντες αὐτῷ, εἰσῆκισαν ἐν αὐτῷ, αἰσθάνοντες μὲν τὴν φωνήν, μηδὲν δὲ θεωρῶντες.

8 Ἡ γὰρ

8 Ἡ γυνὴ δὲ ὁ Σαῦλος ἀπὸ τῆ γῆς ἰατεργαμένης ὅτε ἐφθαλμῶν αὐτῆς, οὐδὲν ἔβλεπε· χειραγωγούμενος δὲ αὐτὸς, ἀπηχθὼν εἰς Δαμασκόν.

9 Καὶ ὡς ἡμέρας τρεῖς μὴ βλέπων· καὶ ἔκ ἔφαιγεν, οὐδὲ ἔπιεν.

10 Ἡ δὲ περὶ μαθητῆς ἐν Δαμασκῷ ἐνόματι Ἀνδρίας, καὶ ἔτα πρὸς αὐτὸν ὁ Κύριος ἐν ὄραματι· Ἀνάνια· Ὁ δὲ ἔειπεν· Ἰδοὺ ἐγώ, Κύριε.

11 Ὁ δὲ Κύριος πρὸς αὐτὸν· Ἀναστὰς παύσθαι ὑπὸ τῷ ῥυτίῳ τῷ καλυμένῳ Εὐθείῳ, ὃ ζήτησεν ἐν οἰκίᾳ Ἰνδα Σαῦλον ἐνόματι, Ταρσεῖα· ἰδὲ γὰρ προσδύχεται.

12 Καὶ εἶδεν ἐν ὄραματι ἄνδρα ἐνόματι Ἀνδρίῳ ἀπελθόντα, ὃ ὑπιδέοντα αὐτῷ χεῖρα, ὥτως ἀπεβλήθη.

13 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Ἀνδρίας· Κύριε, ἀκήκοα ἀπὸ πολλῶν πᾶσι τῷ Ἀνδρῶς τῆτι, ὅτι κακὰ ἐποίησε τοῖς ἁγίοις σου ἐν Ἱερουσαλὴμ.

14 Καὶ ὡς ἔχει Ἰησοῦν πρὸς τῷ ἀρχιερεῖ, δεῖται πάντας τῆς ὑπικαλυμμένης τοῦ ὄνομα σου.

15 Εἶπε δὲ πρὸς αὐτὸν ὁ Κύριος· Πορεύου, ὃ πικρὸς ἐκλογῆς μοί ἐστιν οὗτος, τοῦ βασιλεῦσαι τοῦ ὀνόματός μου ἐνώπιον ἐθνῶν, ὃ βασιλεύων, ὁρίων τε Ἰσραὴλ.

16 Εἰ γὰρ γὰρ ὑποδείξω αὐτῷ ὅσα δεῖ αὐτῷ ὑπὲρ τῆς ἐνομιμότητος μου παθεῖν.

17 Ἀπῆλθεν ὁ Ἀνάνιας ὃ εἰσῆλθιν εἰς τὴν οἰκίαν· ὃ ὑπιδέας ἐπ' αὐτὸν τὰς χεῖρας, ἔειπεν· Σαῦλ ἀδελφε, ὁ Κύριος ἀπέσταλκέ με (Ἰησοῦς ὃ ἐφθαίης σοι ἐν τῇ ὁδῷ ὃ ἤρχου) ὥπως ἀναβληψῇ, ὃ πλησθῆς Πνεύματος Ἁγίου.

18 Καὶ εὐθείας ἀπέπεσεν ἀπὸ τῷ ἐφθαλμῶν αὐτῆς ὥστε λεπίδες, ἀνέβλεψε τε πάλιν· ὃ δόξα αὐτῆς ἐβασίπεσθαι.

19 Καὶ λαβὼν τροφὴν ἐνίσχυται· Ἐγένετο δὲ ὁ Σαῦλος μετὰ τῷ ἐν Δαμασκῷ μαθητῷ ἡμέρας τινάς.

20 Καὶ εὐθείας ἐν ταῖς συναγωγαῖς ἐκέρυττε τὸν Χριστὸν, ὃπ ἥτός ἐστιν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ.

21 Ἐξέστρεψε δὲ πάντας οἱ ἀκούστας, ὃ ἔλεγον· Οὐχὶ ἥτός ἐστιν ὃ πορεύσας ἐν Ἱερουσαλὴμ τῆς ὑπικαλυμμένης τοῦ ὀνόματός σου; ὃ ὡς εἰς ταῦτα ἐληλύθει ἵνα διδιμῆνης αὐτῷ ἀγάγη ὑπὸ τῆς ἀρχιεραίας.

22 Σαῦλος δὲ μᾶλλον ἐνεδυναμίσθη, καὶ συνέχευε τῆς Ἰουδαίας τῆς κατοικούντας ἐν Δαμασκῷ, συμβιβάζων ὃπ ἥτός ἐστιν ὁ Χριστός.

23 Ὡς δὲ πληρύντο ἡμέραι ἱκαναί, συνεβηδύσαντο οἱ Ἰουδαῖοι ἀρᾶσθαι αὐτόν.

24 Ἐγνώσθη δὲ τῷ Σαύλ καὶ ὑπερουλή αὐτῷ·

πορεύ-

παρατήρουν τε τὰς πόλεις ἡμέρας τε ἔς νυκτός, ὅπως αὐτὸν ἀνέλυσιν.

25 Λαβόντες δὲ αὐτὸν οἱ μαθηταὶ νυκτός, κειθήσαν διὰ τοῦ τείχους, χαλασάντες ἐν σπυρίδι.

26 Παραγυρόμενος δὲ ὁ Σαῦλος εἰς Γερουσίαν, ἐπειράτο πολλῶτα τοῖς μαθηταῖς, καὶ πάντες ἐφάρκυντο αὐτὸν, μὴ πισεύοντες ὅτι ἐστὶ μαθητῆς.

27 Βαρνάβας δὲ ὑπὸ λαβόμενος αὐτὸν, ἤγαγε πρὸς τοὺς ἀποστόλους, καὶ διηγήσατο αὐτοῖς πᾶς ὃν τῇ ὁδῷ εἶδε τὸν Κύριον, ἔτι ἐλάλησεν αὐτῷ, ἔτι πῶς ἐν Δαμασκῷ ἐπὶ ῥησιάζατο ἐν τῇ ὁμιλίᾳ τῇ Γεσῇ.

28 Καὶ ἦν μετ' αὐτοῦ εἰσπαρόμενος καὶ ἑκτοροῦμιμος ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἔτι παρ' ῥησιάζομενος ἐν τῇ ὁμιλίᾳ τῇ Κυρίῳ Ἰησοῦ.

29 Ἐλάλητε ἔτι συζητεῖτε πρὸς τὸν Ἑλλίωνα· οἱ δὲ ἐπεχείρουν αὐτὸν ἀνελύν.

30 Ἐπιγινόντες δὲ οἱ ἀδελφοὶ κατήγαγον αὐτὸν εἰς Καισάρειαν, ἔτι ἀπέστειλαν αὐτὸν εἰς Γαρσόν.

31 Αἱ μὲν οὖν ἐκκλησίαι καθ' ὅλης τῆς Ἰουδαίας ἔτι Γαλιλαίας καὶ Σαμαρείας εἶχον εἰρήνην, οἰκοδομοῦμεναι καὶ προδύομεναι τῷ φόβῳ τοῦ Κυρίου, ἔτι πᾶσα ἡμερία τοῦ Ἀγίου Πνεύματος ἐπληθύνοντο.

32 Ἐγένετο δὲ Πέτρον διερχόμενον διὰ πάντων, κατελθεῖν καὶ πρὸς τοὺς ἁγίους τὰς κατοικούντας Λύδαν.

33 Εὗρε δὲ ἐκεῖ ἄνθρωπὸν τινα Αἰνέαν ὀνόματι, ἔτι ἐκεῖ κατὰ κείμενον ἐπὶ κραββάτῳ, ὅς ἦν πᾶσι λυμμένος.

34 Καὶ ἔπεν αὐτῷ ὁ Πέτρος· Αἰνέε, ἔγχεαι τὴν ἱστίαν ὁ Χρὶςτός· ἀνάστηθι, ἔτι σῶσον σεαυτῷ. Καὶ ὁ ὥσως ἀνέστη.

35 Καὶ εἶδον αὐτὸν πάντες οἱ κατοικοῦντες Λύδαν καὶ τὸν Σάρωνα, οἵτινες ἐπέσπευον ὅτι τὸν Κύριον.

36 Ἐν Ἰόππῃ δὲ τις ἦν μαθητὴς ὀνόματι Ταβίθαν, ἡ διεσπλωμένη λέγεται Δορκάς· αὐτὴ ἦν πλήρης ἀγαθῶν ἔργων καὶ ἐλεημοσυῶν ὧν ἐποίη.

37 Ἐγένετο δὲ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἀσθενήσαν αὐτῇ ἀποθανεῖν· λίσσαντες δὲ αὐτῇ εἶδον ἐν ὑπνῷ.

38 Ἐγὼν δὲ ἦσας Λύδης τῇ Ἰόππῃ, οἱ μαθηταὶ ἀκούσαντες ὅτι Πέτρος ἐστὶν ἐν αὐτῇ, ἀπέστειλαν δύο ἄνδρας πρὸς αὐτὴν, πᾶσαι καλῶντες μὴ ὀκνήσαι διαλθεῖν εἰς αὐτῇ.

39 Ἀναστὰς δὲ Πέτρος συνήλθεν αὐτοῖς· ὃν πᾶσι προσηύχων ἀνέγαγον εἰς τὸ ὑπερῶν· καὶ πε-

ρίστην αὐτῷ πᾶσαι αἱ χεῖροι κλίνεισαι, ἔτι δὲ ὑποδακνύ-
μεναι χιτῶνας καὶ ἱμάτια ὅσα ἐποίησεν μετ' αὐτῷ ὅσα
ἦ Δερκας.

40 Ἐβαλὼν ὃ ἔξω πάντας ὁ Πέτρος, θὰς τὰ γό-
νατα προσκύησεν. Ἐπεσέφην πρὸς τὸ σῶμα, εἶπε·
Ταβιθά, ἀνάστη. Ἡ δὲ ἰωοῖξε τῆς ὀφθαλμῆς αὐτῆς·
ἔτι δὲ ἰδὼσα τὸν Πέτρον, ἀνέκαθισε.

41 Διὲς δὲ αὐτῇ χεῖρα, ἀνέστησεν αὐτῷ· φωνή-
σαι δὲ τὰς αὔγας ἔτι τὰς χεῖρας, παρέστησεν αὐτῷ
ἱστῶν.

42 Γνωστὸν δὲ ἐγένετο καθ' ὅλης τῆς Ἰόπης. Ἐπο-
λεῖ ἐπίστυγμα ὑπὲρ τοῦ Κυρίου.

43 Ἐγένετο δὲ ἡμέρας ἑκάμιας μένειν αὐτὸν ἐν Ἰόπῃ
παραπύ Σίμωνι βυρσαῖ.

Κεφ. ι. 10.

1 **Α**ὐτὸς δὲ πρὸς τὸν Καίσαρα ὀνόματι Κορνή-
λιος, ἑκατοντάρχης ὢν σπείρης τῆς καλοῦ-
μένης Ἰταλικῆς,

2 Εὐσεβὴς ἔτι φοβούμενος τὸ Θεόν, σὺν παντί τῃ οἰ-
κῇ αὐτοῦ, παῖδιν τε ἐλεημοσύνας πολλάς τῃ λαῷ, ἔτι δὲ
μὲν τῷ Θεῷ διακονῶν.

3 Εἶδεν ἐν ὄραματι φανερῶς, ὅτι ὄρνεν ἐννάτιον τὸ
ἔμπροσθεν, ἀγγέλον τὸν Θεὸν ἀποστέλλοντα πρὸς αὐτὸν, ἔτι
πάντα αὐτῷ Κορνήλιε.

4 Ὁ δὲ ἀτενίσας αὐτῷ, ἔτι φόβος γενόμενος, εἶπε·
Τί ἐστὶ Κύριε; εἶπε δὲ αὐτῷ· Αἰ προσκύησαι καὶ αἰ
ἐλεημοσύναι σου ἀνέβησαν εἰς μεμνημένον ἐνώπιον τοῦ
Θεοῦ.

5 Καὶ νῦν μέμφων ἔτι Ἰσὺν ἄνδρας, καὶ
μεταπεινῶν Σίμονα, ὃς ἐπικαλεῖται Πέτρον.

6 Οὗτος ἐκίχεται παρὰ τὴν Σίμωνι βυρσαῖ, ὃ ἐ-
στὶν οἰκία παρὰ θάλασσαν· ὅπως ἀλλήσῃ σοι τί σε δεῖ
ποιεῖν.

7 Ὡς δὲ ἀπεῖλθεν ὁ ἀγγέλος ὁ λαλῶν τῷ Κορνήλιῳ
φωνήσας δύο τῶν οἰκετῶν αὐτοῦ, ἔτι στρατώτῳ εὐσεβῇ τῷ
προσκυοντίνῳ αὐτοῦ,

8 Καὶ ἄλλοις ἑτάμοις αὐτοῖς ἅπαντα, ἀπέστειλεν αὐ-
τοῖς εἰς τὴν Ἰσὺν.

9 Τῇ δὲ ἐπαύριον ὁδοιπορῶντων ὁκείων, ἔτι τῇ πέλει
ἐκκλινόντων, ἀνέβη Πέτρος ἐπὶ τὸ δάμα προσδύξασθαι,
καὶ ὡρᾶν ἔκτιν.

10 Ἐγένετο δὲ πρόσκαιρος, ἔτι ἔβριε γούσασθαι·
καὶ ἐκκλινόντων δὲ ὁκείων, ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτὸν ὁκ-
τασις.

11 Καὶ θωρεῖ τὸν εὐρῆμον ἀνεφυγμένον, καὶ
κατε-

καταβαῖνον ἐπ' αὐτὸν σθευός τι κῆς ὁδόνῳ μεγάλῳ,
ταπεινὸν ἀρχαῖς δεδεμένον, καὶ καθ' ἑαυτὸν ὑπὲρ τῆς
γῆς.

12 Ἐν ᾧ ὑπῆρχε πάντα τὰ τετραπόδα τῆς
γῆς, καὶ τὰ θηρία, καὶ τὰ ἑρπετά, καὶ τὰ πε-
τεινὰ ἦ ἔσαν.

13 Καὶ ἐγένετο φωνὴ πρὸς αὐτόν. Ἀνασᾶς, Πέτρε,
θῦσον ἃ φέρε.

14 Οὗ δὲ Πέτρος εἶπε· Μαθαμῶς, Κύριε· ὅτι ὡς-
ποτε ἔφαγον πᾶν κοινόν ἢ ἀκαθάρτον.

15 Καὶ φωνὴ πάλιν ἔκ δευτέρου αὐτόν· Ἀ· ὁ Θεὸς
ἀκαθάρισε, σὺ μὴ κοίμῃ.

16 Τῷ δὲ ἐγένετο ὑπὲρ τῆς· ἃ πάλιν ἀνελάφθη
τὸ σκεῦος εἰς τὸ ἑράμιον.

17 Ὡς δὲ ἐν ἑαυτῷ διαπόρει ὁ Πέτρος τί ἂν τὸ ὄρα-
μα· ὃ εἶδε, ἃ ἰδὼν, οἱ ἄνδρες οἱ ἀπεσταλμένοι ἀπὸ τῆς
Κορνήλιου, διερατῆσθαι τῷ οἴκῳ Σίμωνος, ἐτέρε-
σάν ὑπὲρ τὴν πυλῶνα.

18 Καὶ φωνήσας ἐπυνθάνοντο εἰ Σίμων ὁ ὑπηκα-
λύμους Πέτρος ἐνθάδε ἐνιζέται.

19 Τῷ δὲ Πέτρῳ ἐνθυμηθέν ὡς τὸ ὄραμα,
εἶπε αὐτοῖς τὸ Πνεῦμα· Ἰδὼν, ἄνδρες τρεῖς ἄν-
θρωποι σέ.

20 Ἀλλὰ ἀνασᾶς κατέβηθι, καὶ πορεύου σὺν
αὐτοῖς, μηδὲν ὑποκρινόμενος· διότι ἐγὼ ἀπέσταλ-
κα αὐτῶν.

21 Κονταῖας δὲ Πέτρος πρὸς τοὺς ἄνδρας τῆς
ἀπεσταλμένους ἀπὸ τοῦ Κορνήλιου πρὸς αὐτὸν, ἔ-
πεν· Ἰδὼν, ἐγὼ εἰμι ὃν ζητεῖτε· τίς δ' αἵτια ὅτι
ἦν πάρεστε;

22 Οἱ δὲ ἔπουν· Κορνήλιος ὀκτωκτάρχης, ἀνὴρ δέ-
καιος ἃ φοβούμενος τὸν Θεόν, μυστηριώμενος τε καὶ
ἐλευθέρῳ τῷ Ἰσραὴλ, ἐχρηματίσθη ὑπὸ ἀγγέλου
ἐγγὺς μὴ πέμψασθαι σε εἰς τὸ οἶκόν αὐτοῦ, ἃ ἀκούσαι
ῥήματα ὧς σὺ.

23 Εἰσκαλεσάμενος ἦν αὐτῶν ἔξενισε. Τῇ δὲ ἐπαύ-
ρειον ὁ Πέτρος ἔξῃλθε σὺν αὐτοῖς, καὶ πῆγε τῷ ἀδελ-
φῷ τῷ ἀπὸ τῆς Ἰσραὴλ συνηλθόν αὐτῷ.

24 Καὶ τῷ ἐπαύρειον εἰσῆλθον εἰς τὸν Καισάρειαν· ὃς
δὲ Κορνήλιος ἦν προσδεχόμενος αὐτῶν, συγκαλεσάμενος τῶν
συγγενῶν αὐτοῦ ἃ τῶν ἀναγκάων φίλων.

25 Ὡς δὲ ἐγένετο εἰσελθεῖν τὸν Πέτρον, συνιδή-
σας αὐτοῖς ὁ Κορνήλιος, πεσὼν ὑπὲρ τοῦ πόδα, προσ-
εκύνησεν.

26 Οὗ δὲ Πέτρος αὐτὸν ἤγειρε, λέγων· Ἀνάστη·
κῆρὸς αὐτὸς ἄνθρωπος εἰμι.

27 Καὶ συνομιλῶν αὐτῷ, εἰσῆλθε, ἃ ὀρίσκει σὺν
ἐλευθέροις πολλῶν.

28 Ἐφ' ἣν τε πρὸς αὐτῶν· Ὑμῶν ἐπίσασθε εἰς αἰθί-
μιτόν ἐστι ἀνδρὶ Ἰσραὴλ κολλησθαι ἢ προσερχεσθαι
αὐτῷ.

λοφίλω· ἔμοι ὁ Θεὸς ἔδωκε μετέτακται πνεῦν καὶ ἀ-
καρτῶν λέγειν ἀνθρώπων.

29 Διὸ καὶ αἰδουπρὸς ἡμῶν ἤλθον μεταπεμφ-
θεὶς· πυνθάνομαι οὖν, πνι λογι μετεπεμφ-
θεῖς.

30 Καὶ ὁ Κορνήλιος ἔφη· Ἀπὸ τετάρτης ἡμέρας μέ-
ρει τούτου καὶ ἄρας ἡμῶν ἡσθίων, ὅτι πλὴν ἐνστάτω ὡ-
ς προσδουχέμενοι ἐν τῷ ὕμῳ μου· ὅτι ἰδὼν, ἀγὰρ ἔσθ
ὡπιδὺν μὴ ἐν ἐσθῇ π λικμῶν,

31 Καὶ φησὶ· Κορνήλιε, εἰσκήσθῃ σου καὶ προσ-
κνή, καὶ αἱ ἐλεημοσύναι σου ἐμνήσθησιν ἐνώπιον
Θεοῦ.

32 Πέμφον ἦν εἰς Γόπλιν, καὶ μετακλήσας Σίμων
καὶ, ὅς ἐπικαλεῖται Πέτρος· ἡπτι ξενίζεται ἐν οἰκίᾳ
Σίμωνος βυσσέως παρὰ θάλασσαν· ὅς πρὸς ἡμῶν
αλλήσῃ σοι.

33 Ἐξωστῆς ἦν ἐπιμύα πρὸς σε· σύ τε καλῶς ἐ-
ποίησας πρὸς ἡμῶν· νῦν ἦν πάντες ἡμεῖς ἐνώπιον
Θεοῦ παρέσμεν, ἀκούσαι πάντα τὰ προτεταγμένα σοι
ὑπὸ Θεοῦ.

34 Ἀποφῆας δὲ Πέτρος τὸ λόγον, εἶπεν· Εἴπ' ἀ-
καρτίας καταλαμβάνομαι ὅτι ἐκ ἐστὶ προσωπελήτης ὁ
Θεός.

35 Ἀλλ' ἐν πλητὶ ἔθνεσι ὁ φοβούμενος αὐτὸν, καὶ ἐρ-
νοζόμενος δικαιοσύνην, δεκτός αὐτῷ ἐστὶ.

36 Τὸν λόγον οὖν ἀπέστειλε τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, ὡς ἡ-
γεμίζόμενος ἀρετῇ καὶ 248 Ἰησοῦ Χριστοῦ· ὅτι ἐστὶ πάν-
των Κύριος.

37 Ἰμῶς οἶδατε τὸ ἡνόμενον ῥῆμα κατ' ὅλης τῆς
Ἰουδαίας, ἀρχαίμενον ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας μετὰ τὸ Βάπτισ-
μα ὃ ἐκέρυξεν Ἰωάννης.

38 Ἰησοῦν δ' ἀπὸ Ναζαρέθ, ὃς ἔχεισιν αὐτὸν ὁ
Θεὸς Πνεῦματι Ἀγίῳ καὶ δυνάμει, ὃς διήλθεν ὡς ἐγγυ-
στὴν καὶ ἰσχυρὸς πᾶσι τῶν καταδυνατούμενων ὑπὸ τοῦ δια-
βολοῦ, ὅτι ὁ Θεὸς ἔσθ μετ' αὐτοῦ.

39 Καὶ ἡμεῖς ἐσμεν μάρτυρες πάντων ὧν εἰποίησεν
ἐν τῇ χεὶρὶ τοῦ Ἰησοῦ ἐν Ἱερουσαλὴμ· ὅτι αὐτοῦ
ἡμεῖς ἀκούσαμεν ὑπὸ τῆς ἑξουσίας.

40 Τούτων ὁ Θεὸς ἡγερε τῇ τρίτῃ ἡμέρᾳ, καὶ ἔδωκεν
αὐτὸν ἐμφανῶς ἡμῶν.

41 Οὐδ' ἐπὶ τῷ λαῷ, ἀλλὰ μάρτυσι τοῖς πρὸς
κεχειροτονημένοις ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπὶ, εἰπότες συνη-
φασμένοι καὶ συνετίσμεν αὐτῷ μετὰ τὸ ἀναστῆναι πρὸς
ὅλον τὸν λαόν.

42 Καὶ κορυγγίλει ἡμεῖς κορυφαί καὶ λαῷ, καὶ δια-
μαρτυρασθαι ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ ὁρισμένος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ
κατὰ τὸ ζῶναι καὶ νεκροῦ.

43 Τούτῳ πάντες οἱ προφῆται μαρτυροῦσιν, ὅτι
ἐμάρτυρον λαβεῖν διὰ τοῦ ὀνόματος κατὰ πάντα τὰ ἐπιστά-
τα ἐς αὐτόν.

44 Ε'π' αλλήλωντος ἡ Πέτρῃ τὰ ῥήματα ταῦτα, ἐπέ-
πεσε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἄγιον ἐπ' αὐτὴν τῆς ἀκρόντας
τ' λόγον.

45 Καὶ ἤξήσαν οἱ ὃν παρταμῆς πῖσσι ὅσοι συνῆλ-
θον πρὸς Πέτρον. ὅτι ἡ ὁπ' τὰ ἔθνη ἡ δωρεὰ τ' Ἄγιον
Πνεύματος ἀκκέχεται.

46 Ἡκούον γὰρ αὐτῷ λαλοῦντων γλώσσαις,
καὶ μεγαλυνόντων τὸν Θεόν. Τότε ἀπεκρίθη ὁ
Πέτρος.

47 Μὴ πὶ τὸ ὕδωρ κωλύται δύναται πῖς τ' μὴ βαπτί-
σθῶναι τῆς, οἵπνες τὸ Πνεῦμα τὸ Ἄγιον ἔλαβον,
καθὼς ἡμεῖς;

48 Προσέταξε τε αὐτῆς βαπτισθῶναι ἐν τῷ ὀνόματι
τῆ Κυρίου. Τότε ἠρώτησάν αὐτὸν ὑπμεῖναι ἡμέρῃ
πνύας.

Κεφ. ια. ιι.

1 **Η**Κκοσάν δὲ οἱ ἀπόστολοι ἡ οἱ ἀδελφοί οἱ ἔν-
τες κατὰ τῷ Ἰερουσαλὴμ, ὅπ' ἡ τὰ ἔθνη εἰ-
ξήντο τ' λόγον τ' Θεῶ.

2 Καὶ ὅτε ἀνέβη Πέτρος εἰς Ἱερουσαλὴμα, διεκρίνον-
το πρὸς αὐτὸν οἱ ὃν παρταμῆς,

3 Λέγοντες. Ὅπ' πρὸς ἄνδρας ἀκροβυστίαν ἔχοντας
εἰσῆλθες, ἡ συνέφαγες αὐτοῖς.

4 Ἀρξάμενος ὁ Πέτρος, ἤξετίθετο αὐτοῖς καθε-
ξῆς, λέγων.

5 Ἐγὼ ἡμῶν ἐν πόλει Ἰόππῃ προσδύχόμενος, ἡ εἰ-
δον ἐν ἐκστάσει ὄραμα, κατὰβαίνον σκευὴς πῶς ὁ θάνατος
μεγάλῃ, τέσσαρσιν ἀρχαῖς καθεμενῶν ὃν τ' ἡράμῃ,
ἡ ἡλθεν ἄχρας ἐμῇ.

6 Εἰς ἡ ἀπενίσσας κατενόη. ἡ εἶδον τὰ τετράπο-
δα τ' γῆς, ἡ τὰ θηρία, ἡ τὰ ἔρκετα, ἡ τὰ πετεινά
τ' ἡράμῃ.

7 Ἡκκοσά ὁ φωνῇ λεγούσης μοι. Ἀναστὰς Πέτρε,
φῶσον ἡ φάγε.

8 Εἶπον ὁ. Μηδὲ μοι Κύριε. ὅπ' πᾶν κοινὸν ἡ ἀκά-
θαρτον ἡδέποτε εἰσῆλθεν εἰς τὸ σῶμα μου.

9 Ἀπεκρίθη δὲ μοι φωνῇ ἐκ θατέρῃ ὃν τ' ἡράμῃ.
Ἄ ὁ Θεὸς ἀκαθάρίσας, σὺ μὴ κοῖνῃ.

10 Τῷτο ὁ ἐγένετο ἐπὶ τῆς. ἡ πάλιν ἀνεπαύσθη
ἡ πᾶντα εἰς τ' ἡράμῃ.

11 Καὶ ἰδὼ. ἤκωτῆς τρεῖς ἄνδρες ἐπίσκατον ἐπὶ
τῷ οἴκῳ ἐν ἡ ἡμῶν, ἀπεσαλμενοὶ ἀπὸ Καισαρείας
πρὸς με.

12 Εἶπε δὲ μοι τὸ Πνεῦμα συνελθεῖν αὐτοῖς μεθ' ἐν
διακρινόμενον. ἡλθον δὲ σὺν ἐμοὶ. ἡ οἱ εἰς ἀδελφοί
ἔτοι, ἡ εἰσῆλθον εἰς τὸ οἶκον τ' ἀνδρός.

13 Αγγελέτε ἡμῖν πῶς ἔδε τ' ἀγγελεῖν ἐν τῷ
ὄντι αὐτῶν σωθέντα & εἰπόντα αὐτῶν· Ἀπόστολος εἰς
Ἰσπύλῳ ἄνδρας, & μετὰπειμφαι Σίμων & Ἰησοῦ
ῥήμον Πέτρον,

14 Ὁς λαλήσει ῥήματα πρὸς σε, ὅσοις σωθήσῃ σὺ
& πᾶς ὁ οἶκος σου.

15 Ἐν δὲ τῷ ἀρξασθαι με καλεῖν, ἐπέτεσε τὸ
Πνεῦμα τὸ Ἀγίον ἐπ' αὐτὸν, ὡς πρὶν & ἐφ' ἡμῶν
ἐκ ἀρχῆς.

16 Ἐμνήσθην ὅτι ῥέματος Κυρίου, ὡς ἔλεγεν·
Ἰωάννης μὲν ἰβαίνοντες ὕδατι, ὑμεῖς δὲ βαπτισθήσε-
σθε ἐν Πνεύματι Ἀγίῳ.

17 Εἰ ἔν τῳ ἰσῶ δορεδὼν ἔδωκεν αὐτοῖς τὸ Θεὸς ὡς
& ἡμῖν, πιστώσασιν ἐπὶ τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦν Χριστῶν, ἐγὼ
ὅτι πρὸς ἡμῶν δυνατὸς κολλησαί τ' Θεόν;

18 Ἀκούσαντες ὅτι ταῦτα εἰσύχασαν, & ἐδόξαντες τῷ
Θεῷ, λέγοντες· Ἀραγε & πῶς ἐδνεσιν ὁ Θεὸς τῷ
μετατόλῳ ἔδοικεν εἰς ζωὴν.

19 Οἱ μὲν ἔν διασπαρέντες ἀπὸ τῷ Θλίψεως τῷ Ἰου-
δαίῳ ἐπὶ Στεφάνῳ, διήλθον ἕως Φοινίκης & Κυπρῶν &
Ἀντιοχείας, μηδενὶ λαλῶντες τῷ λόγῳ εἰ μὴ μόνον
Ἰουδαίοις.

20 Ἡ δὲ σὺν δέ πινες ἔξ αὐτῶν ἄνδρες Κύπριοι & Κυ-
πρινοὶ, οἱ πινες εἰσελθόντες εἰς Ἀντιοχείαν, εὐα-
γγέλιον πρὸς τοὺς Ἑλλήνιστας, διαγγελλίζοντες τῷ Κυρίῳ
Ἰησοῦν.

21 Καὶ ὡς χεῖρ Κυρίου μετ' αὐτῶν· πολὺς τε αἰεθ-
μὸς πιστώσας ἐπέστρεψεν ὑπὸ τῷ Κυρίῳ.

22 Ἡ ἀκούσθη ὅτι ὁ λόγος εἰς τὰ ὅσα τῷ Ἐκκλησίας τῷ
ἐν Ἱεροσολύμοις πρὸς αὐτῶν· ὅς ἔξαπέστειλαν Βαρνάβαν
διελθεῖν ἕως Ἀντιοχείας.

23 Ὁς πρὸς ἡρώδης ἰδὼν τῷ χάριτι τῷ Θεῷ, ἐ-
χάρη, & παρεκάλει πάντας τῇ προδίσσει τῷ καρδίᾳς
προσμένειν τῷ Κυρίῳ.

24 Ὁπὶ ὡς ἀνὴρ ἀγαθὸς & πλήρης Πνεύματος Ἀ-
γίου καὶ πίστεως· καὶ προσετέθη ὄχλος ἰκανὸς τῷ
Κυρίῳ.

25 Ἐξῆλθε δὲ εἰς Ταρσοῦν ὁ Βαρνάβας ἀναζητῶ-
σαι Σωίλον· καὶ εὗρεν αὐτὸν, ἠγάγεन αὐτὸν εἰς
Ἀντιοχείαν.

26 Ἐγένετο δὲ αὐτοῖς ἐν αὐτῶν ὅλον συναχθῆναι
ἐν τῷ ἑκκλησίᾳ, καὶ διδάσκειν ὄχλον ἰκανόν, κα-
τατίσαι τε πρώτον ἐν Ἀντιοχείᾳ τῆς μεθυσίας ἁ-
γιάτης.

27 Ἐν ταῦταις δὲ ταῖς ἡμέραις κατέλθεν ἀπὸ Ἱε-
ροσολύμων προφῆται εἰς Ἀντιοχείαν.

28 Ἀνστήσας ὅς τις ἔξ αὐτῶν ὄνοματι Ἀγαθός, ἐσέ-
μαρτυρεν λέγων· Πνεύματος, ἡμῶν μέγα μὲλλον ἐσι-
σθαι ἐφ' ὅλῳ τῷ οἰκουμενῶν· ὅστις & ἐγένετο ὑπὸ
Κλαυδίου Καίσαρος.

29 Τῶν δὲ μαθητῶν, καθὼς ὑπερεβόησαν, ἔρριψεν ἕκαστος αὐτῶν εἰς διακονίαν περὶ τῶν κατοικούντων ἐν τῇ Ἰερουσαλὴμ ἰουδαίων.

30 Οὗτοί εἰς ἐποίησαν, ἀποσκήλυντες πρὸς τὴν πρεσβυτέρους διὰ χειρὸς Βαρναβᾶ καὶ Σαύλου.

Κεφ. ιβ'. 12.

1 **Κ**ΑΤ' ὅκνητον ὁ καὶ ἐπέβαλεν Ἡρώδης βασιλεὺς τὰς χεῖρας καθύψαι τινὰς τῶν ἀποστόλων.

2 Ἀνέειλε ὁ Γάβριελ τὸν ἀδελφὸν Ἰωάννη μακαρίαν.

3 Καὶ ἰδὼν ὅτι ἄρεσόν ἐστι τοῖς Ἰουδαίοις, προσέειπεν συλλαβεῖν καὶ Πέτρον. (ἥ τε δὲ ἡμέρα τῆς Ἀζυμῆς.)

4 Οὗτοί εἰς πιάσαν ἐδωκεν εἰς φυλακὴν, παραδόντες τὴν σαρδίον τετραδίοις στρατιωτῶν φυλάσσειν αὐτόν. Βουλόμηνος μετὰ τὸ πάσχα ἀναγαγεῖν αὐτόν τῷ λαῷ.

5 Οὗτοί μετ' αὐτὸν Πέτρος ἐταρῆτο ἐν τῇ φυλακῇ προσδοκῶν ὅτι ἔτι γινόμενη ἔσται ἡ ἐκκλήσις πρὸς τὸ θεῖον ὑπὲρ αὐτῶν.

6 Οὗτοί εἰς ἐμελλεν αὐτῶν προῦκιν ὁ Ἡρώδης, τῇ νυκτὶ ὅκνητον ὡς ὁ Πέτρος κοιμώμενος μετὰ δύο στρατιωτῶν, δεδεμένοι αλύσεισι δυοῖς, φύλακές τε πρὸ τῆς θύρας ἐστημένοι τῷ φυλακῇ.

7 Καὶ ἰδὼν, ἀγγελοῦ Κυρίου ἐπέστη, καὶ φῶς ἔλαμψεν ἐν τῷ οἰκήματι. Πατάξας δὲ τὴν πλάγην τῶν Πέτρον, ἤγειρεν αὐτόν, λέγων. Ἀνάστα ἐν τάχει. Καὶ ἔπεισον αὐτὸν αἱ αλύσεις ἐκ τῆς χειρὸς.

8 Ἐπεῖτε ὁ ἀγγελοῦ πρὸς αὐτόν. Περιῖσαι, καὶ ἀποδόσθαι τὰ παρδάλια σου. Ἐποίησε ὁ ἄνθρωπος. Καὶ λέγει αὐτῷ. Περιβαλεῖς τὸ ἱμάτιόν σου, καὶ ἀκολουθήτω μοι.

9 Καὶ ἔλθων ἠκολούθει αὐτῷ, καὶ ἔκ ἡδαι ὅτι ἄλλοι θεοὶ ἐστὶ τὸ γινώσκον διὰ τῆς ἀγγελίας. ἔδοκεν ὁ ὅραμα βλέπειν.

10 Διελαθόντες ὁ πρῶτον φυλακῇ καὶ δευτέρῳ, ἔλθον ἐκ τῆς πύλης τῇ σιδηρᾷ, τῇ φέρσαν ἐκ τῆς πόλεως, ἥτις αὐτομάτη ἰσχυρὰ αὐτοῖς. Καὶ ἔλθοντες προῦκον ῥύμῳ μίᾳ. Καὶ αὐθιγὰς ἀπέστη ὁ ἀγγελοῦ ἀπ' αὐτῶν.

11 Καὶ ὁ Πέτρος ἠλοῦμος ἐν ἑαυτῷ, ἔπει. Νῦν οἶδα ἔλθεις ὅτι ἔλαλθες Κύριος τὸν ἀγγελοῦ αὐτῶν, καὶ ἔλθεις με ἐκ χειρὸς Ἡρώδου, καὶ πάσης ἐκ προσδοκίας τῆς λαοῦ τῆς Ἰουδαίας.

12 Συνιδὼν τε ἔλθεις ἐκ τῆς οἰκίας Μαρίας τῆς Μη-

Ματῆς Ἰωάννη, καὶ ἐπικαλημένον Μάρκον, καὶ Ἰσάκ· οἱ συνηθροισμένοι ἐπὶ προσκυρόμενοι.

13 Κρῖστος ὅτε Πέτρον πλὴν θυρῶν καὶ πυλῶνος, προήλασε παιδείῃ καὶ ἀπακρίσας, ὀνόματι Ῥ' ὀδοῦ.

14 Καὶ ἐπιγινώσκων πλὴν φανῶν καὶ Πέτρον, ἀπὸ καὶ χαρῆς καὶ ἡσυχίας καὶ πυλῶνα, ἐπέδραμυσεν ὅτε ἀπαγγεῖλεν ἵστασθαι καὶ Πέτρον πρὸς τὸν πυλῶνα.

15 Οἱ δὲ πρὸς αὐτῶν ἦσαν· Μαίην· ἡ δὲ δι' ἐχθρὰ ἔλκετο αὐτῶν ἔχων· οἱ δ' ἔλεγον· Ὁ ἀγγελὸς αὐτῶν ἐστίν.

16 Ὁ δὲ Πέτρος ἐπέμεινε κρήνῳ κρήνῳ· ἀνοίξαντες δὲ ἔδωκεν αὐτῶν, ἐπὶ ἑξήσδω.

17 Κατακρίσας δὲ αὐτοῖς τῇ χειρὶ σιγᾶν, διηγήσατο αὐτοῖς, πῶς ὁ Κύριος αὐτὸν ἔξηγαγόν ἐκ τῆ φυλακῆς· εἶπε δὲ· Ἀπαγγεῖλετε ἰακώβῳ καὶ τοῖς ἀδελφοῖς ταῦτα· καὶ ἔλθων ἐπορεύθη εἰς ἕτερον τόπον.

18 Γενομένης δὲ ἡμέρας ἦν τῆραχος καὶ ὀλίγος ἐν τοῖς στρατιώταις, πῶς ἄρα ὁ Πέτρος ἔγενετο.

19 Ἡ' αἰδὼς δὲ ὑπὸ κατήσας αὐτὸν, ἐπὶ μὴ ὄρων, ἀνακρίνας τῆς φυλακῆς, ἐπέλυσεν ἀπαχθῆναι καὶ κατελθὼν ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας εἰς πλὴν Καϊσάρειαν, διέτριβεν.

20 Ἡ' δὲ ὁ Ἡ' αἰδὼς θυμομαχῶν Τυρίοις ἐπὶ Σιδωνίοις· ὁμοθυμαδὸν δὲ παρήσαν πρὸς αὐτὸν, ἐπὶ πείσαντες Βλάσον τὸν ὑπὲρ καὶ καὶ βασιλέως, ἡγῆτο εἰρήνην, καὶ τὸ τρέφειν αὐτῶν χάρις ἀπὸ τῆς βασιλικῆς.

21 Τακτῇ δὲ ἡμέρᾳ ὁ Ἡ' αἰδὼς ἐνδυτάμενος ἐσθῆτα βασιλικῇ, ἐπὶ καθίσας ὑπὲρ βήματος, ἐδήμοχρη πρὸς αὐτὸν.

22 Ὁ δὲ δῆμος ἐπεφώνη· Θεὸς φωνῇ, καὶ ἡ ἀνθρώπου.

23 Περαιεῖται δὲ ἐπαύταξεν αὐτὸν ἀγγελὸς Κυρίου, αὐτὸς οὐκ ἴδων πλὴν δόξαν τῷ Θεῷ· ἐπὶ ὁρῶμενος σκοληκόβρωτος, ἔξωψεν.

24 Ὁ δὲ λόγος τοῦ Θεοῦ ἡυξάνη καὶ ἐπληθύνη.

25 Βαρνάβας δὲ ἐπὶ Σαῦλος ἐπέστρεψαν ἐξ Ἰερουσαλὴμ, πληρώσαντες πλὴν δικαιοσύνην, συμπαραλαβόντες καὶ Ἰωάννην καὶ ὑποκλήδεντον Μάρκον.

Κεφ. 13. 13.

1 **Η** Σάρμ δέ πνευ ἐν Ἀντιόχειᾳ κατὰ τὴν οὐ-
σαν ἐκκλησίαν προφῆται καὶ διδάσκα-
λοι, ὃ, τε Βαρνάβας καὶ Συμεὼν ὁ καλούμενος Νί-
γυρ, ἔ Λήκιος ὁ Κυρηνάιος, Μαννάτε Ἡρώδης τῆ
τρύρχης σύντροφος, ἔ Σαῦλος.

2 Λειτουργούντων δὲ αὐτῶν τῷ Κυρίῳ ἔ νεοφύοντων,
εἶπε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἀγίον· Ἀφορίσαστε δὴ μοι τὸν τε
Βαρνάβαν καὶ τὸν Σαῦλον εἰς τὸ ἔργον ὃ προσκεκλη-
μαι αὐτούς.

3 Τότε νεοφύοντες ἔ προσδυσάμενοι, ἔ ὑποθέτες
ταῖς χεῖρας αὐτοῖς, ἀπέλυτάρ.

4 Οὗτοι μὲν ἦν ἐκτεμψθέντες ὑπὸ τῷ Πνεύματι τῷ
Ἀγίῳ, κατήλθον εἰς τὴν Σελεύκειαν, ἐκείθεν τε ἀπέ-
πλευτάρ εἰς τὴν Κύπρον.

5 Καὶ ἡρώμενοι ἐν Σαλαμῖνι, κατήγγιλλον τῷ λό-
γῳ τῷ Θεῷ ἐν ταῖς συναγωγαῖς τῶν Ἰουδαίων· εἶχον δὲ
ἔ Ἰωάννην ἑσπέρην.

6 Διελθόντες δὲ τῷ νῆσον ἄχει Πάφου, εὗρον
πᾶν μέγαν ψευδοπροφήτην Ἰουδαῖον, ὃ ὄνομα Βα-
ρεμῆς.

7 Οὗτος ὡς σὺν τῷ ἀνδράγατι Σεργίῳ Παύλῳ
ἀνδρὶ συνετώ· οὗτος προσκαλεσάμενος Βαρνάβαν ἔ
Σαῦλον, ἐπιζήτησεν ἀκῆσαι τῷ λόγῳ τῷ Θεῷ.

8 Ἀνδρίζεται ὁ αὐτοῖς ἑλύμας ὁ μέγας, (ἥτοι ῥῆ-
μιδιερμῶνεται τὸ ὄνομα αὐτοῦ,) ζητῶν διατρέψαι τὸν
ἀνδράγατον ἀπὸ τῆ πίστεως.

9 Σαῦλος δὲ (ὁ ἔ Παῦλος) πλησθεὶς Πνεύματος Ἀ-
γίου, ἔ ἀτενίσας εἰς αὐτόν,

10 Εἶπεν· Ὁ πλήρης πλῆτος δόλου καὶ πάσης
ῥηδιουργίας, υἱὲ Δαβὲλ, ἔχθρὸς πάσης δικαιο-
σύνης, οὐ παύσῃ διατρέψαν τὰς ὁδοὺς Κυρίου τὰς
ἀδείας;

11 Καὶ τῶν ἰδὼν, χεῖρ τῷ Κυρίῳ ἐπὶ σε· ἔ ἔση τυ-
φλὸς, μὴ βλέπεν τῷ ἡλίῳ ἄχει καιρῷ. Παραχῆμα
ἔπέπαιεν ἐπ' αὐτὸν ἄχλυσ ἔ σκοτος, ἔ πῶτεγων ἐξή-
τη χειραγωγός.

12 Τότε ἰδὼν ὁ ἀνδράγατος τὸ γεγονός, ἔ
πίστωσεν, ἐκκληττόμενος ἐπὶ τῇ διδαχῇ τοῦ
Κυρίου.

13 Ἀναγθέντες δὲ ἀπὸ τῆς Πάφου εἰς περὶ τὸ
Παῦλον, ἔλθον εἰς Πέργην τῆς Παμφυλίας· Ἰωάν-
νης δὲ ἀποχαρίσας ἀπ' αὐτῶν, ὑπέστρεψεν εἰς Ἱερο-
σόλυμα.

14 Αὐτοὶ δὲ διελθόντες ἀπὸ τῆς Πέργης
παριγένοντο εἰς Ἀντιόχειαν τῆς Πισιδίας, καὶ
ἐκεί-
μνη-
ν

ἔισελθόντες εἰς τὴν συναγωγὴν τῇ ἡμέρᾳ τῷ σαββά-
τῳ, ὡς ἐστὶν ἔθος.

15 Μετὰ δὲ τῶν ἀνάρχων τοῦ νόμου καὶ τῷ
Προφῆτῳ, ἐπέστησαν οἱ Ἀρχισυναγωγοὶ πρὸς
αὐτοὺς, λέγοντες· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐν ἐστὶ λό-
γος ὃν ὑμῖν πρὸς ἀκλήσεως πρὸς τὸν λαόν, λέ-
γετε.

16 Ἀνσῆς δὲ Παῦλος, ἔκασας τῇ χειρὶ,
ἔειπεν· Ἄνδρες Ἰσραηλῖται, ἔοι φοβούμενοι τὸν Θεόν,
ἀκούσατε.

17 Ὁ Θεὸς ᾧ λαῷ τῇτι Ἰσραὴλ. Ἐξελέξατο τὰς
Πατέρας ἡμῶν, ἔκασας τὸν λαόν ὑψωσεν ἐν τῇ παροικίᾳ
ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἔκασας βραχίονος ὑψηλῆς ἐξήγαγεν
αὐτὸς ἐξ αὐτῆς.

18 Καὶ ὡς τετρακονταετὴ χρόνον ἐτροποφόρησεν αὐ-
τὸς ἐν τῇ ἐρήμῳ.

19 Καὶ καθελὼν ἔδωκεν ἐν γῇ Χανάν, κατα-
κληροδότησεν αὐτοῖς τὴν γῆν αὐτῶν.

20 Καὶ μετὰ ταῦτα ὡς ἔτισι τετρακοσίαις
καὶ πενήκοντα εἰδὼκε κριτὰς ἕως Σαμὴλ τοῦ
Προφῆτου.

21 Ἐκείθεν ᾗτήσαντο βασιλέα, ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ
Θεὸς ᾧ Σαὺλ Τίῳ Κίς, ἄνδρα ὡς φυλῆς Βενιαμὴν ἐστὶ
τετρακονταετής.

22 Καὶ μετασχῆς αὐτόν, ἤγειρεν αὐτοῖς ᾧ Δαβὶδ
ὡς βασιλέα· ὃς ἔπειτα μαρτυρήσας· Εὐρον Δαβὶδ ᾧ
ᾧ Γεοργίᾳ, ἄνδρα κατὰ τὴν καρδίαν μου, ὃς ποιῆσαι
πάντα τὰ θελήματά μου.

23 Τῇτι ὁ Θεὸς ἀπὸ ᾧ σπέρματος κατ' ἐπαγγελίαν
ἤγειρε τῷ Ἰσραὴλ σωτῆρα Ἰησοῦν,

24 Προκρουζάντος Ἰωάννου πρὸ προσώπου τῆς εἰσόδου
αὐτοῦ βαπτισμα μετανόιας πάντῃ τῷ λαῷ Ἰσ-
ραὴλ.

25 Ὡς δὲ ἐπλήρου ὁ Ἰωάννης τὸν δρόμον, ἔλε-
γε· Τίνα με ποιῶντες εἶναι; οὐκ εἰμὶ ἐγώ, ἀλλ'
ἰδοὺ, ἔρχεται μετ' ἐμοῦ, ὃς ἦν ἡμῖν ἄξιός το ὡς ποδοῦ
τῷ ποδοῦ λύσαι.

26 Ἄνδρες ἀδελφοί, υἱοὶ γένε Αβραάμ, ἔοι ὃν
ὑμῖν φοβούμενοι ᾧ Θεόν, ὑμῖν ὁ λόγος ἔστω θεράπων ταύ-
της ἀπεσχῆς.

27 Οἱ γὰρ κατοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλὴμ καὶ οἱ ἄλλοι
αὐτῶν, τῇτον ἀγνοήσαντες, ἔκασας φωνῆς τῷ Προ-
φῆτῳ τὰς κατὰ πᾶν σαββάτον ἀναγινωσκόμενης, κεί-
σαντες, ἐπληρώσαν.

28 Καὶ μηδεμίαν αἰτίαν θανάτου ὄντες, ᾗτήσαντο
Πλάτον ἀνακεῖναι αὐτόν.

29 Ὡς δὲ ἐτέλεσαν ἅπαντα τὰ πρὸς αὐτοῦ γε-
γραμμένα, καθελόντες ἀπὸ ᾧ ξύλου ἐθακάν ἐν μα-
κρῇ.

30 Ὁ δὲ Θεὸς ἤγειρεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν.

31 Ὅς εὐφθῇ ἐπὶ ἡμέραν, πλείους τοὺς συναβῶντι
αὐτῷ ἀπὸ τῆς Γαλιλαίας εἰς Ἱερουσαλὴμ, οἳ τίτες εἰσι
μαρτυροῦντες αὐτῷ πρὸς τὸ λαόν.

32 Καὶ ἡμεῖς ὑμῶς καταγγελλόμεθα ᾧ πρὸς τοὺς
Πατέρας καταγγελῖαν ἠνεμενῶν, ὅτι ταύτῃ ὁ Θεὸς
ἐκπεπλήρωκε τοὺς τέκνοις αὐτῷ ἡμῖν, ἀναστήσας
Ἰησοῦν.

33 Ὡς καὶ ἐν τῷ ψαλμῷ τῷ δευτέρῳ γέ-
γραπται· Τίς μὲν ἦ σὺ, ἐγὼ σήμερον γεγέννη-
κά σε.

34 Ὅτε δὲ ἀνέστηεν αὐτὸν ἐκ νεκρῶν, μετὰ μέλ-
λοισι ὑποστρεφόμενος εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἦτοι ἐρχομαι· Ὅτι
ζῶσω ὑμῖν τὰ ὅσα Δαβὶδ τὰ πτεῖα.

35 Διὸ καὶ ἐν ἐτέρῳ λέγει· Οὐ δώσω τῷ ὁσίων ἐν
ἰδίῳ Ἱερουσαλὴμ.

36 Δαβὶδ μὲν γὰρ ἰδίᾳ ἡμεῖς ὑποστρεφόμενος τῷ Θεῷ
ἐβλήθη, ἐκοιμήθη, ἔ προστετέθη πρὸς τοὺς Πατέρας αὐ-
τῷ, ἔστι δὲ δικαιοδοσίᾳ.

37 Ὡς δὲ ὁ Θεὸς ἤγειρεν, οὐκ ἔστι δὲ δικαιο-
δοσίᾳ.

38 Γινέσθον ἔν ἐστὼ ὑμῖν, ἀδελφοί, ὅπως δικαιο-
σύνη ὑμῖν ἀφίσις ἀμνηστῶν καταγγέλλεται.

39 Καὶ ἀπὸ πάντων ἐν οὐκ ἠδυνήθητε ἐν τῇ
τόμῳ Μωσίου δικαιοδοσιῶν, ἐν ταύτῃ πάντες οἱ πι-
στεύοντες δικαιοῦνται.

40 Βλέπετε ἵνα μὴ ἐπέλθῃ ἐφ' ὑμᾶς τὸ κληρόν ἐν
τοῖς προφήταις·

41 Ἰδοὺ οἱ καταφρονεῖσθαι, καὶ θωπεύεσθαι, καὶ
ἀφελείσθαι· ὅπως ἔργον ἐγὼ ἐργάζομαι ἐν ταῖς ἡμέ-
ραις ὑμῶν, ἔργον ᾧ ἢ μὴ πιστεύετε, ἐάν τις ἐκδικη-
γῇται ὑμῖν.

42 Εξείοντες δὲ ἐκ τῆς συναγωγῆς τῶν Ἰουδαίων, πε-
ρικάλῃ τὰ ῥήματα εἰς τὸ μεταξὺ Σαββάτων λαληθῶσι
αὐτοῖς τὰ ῥήματα ταῦτα.

43 Αὐθιγῆς δὲ τῆς συναγωγῆς, ἠκολούθησαν
πολλοὶ τῶν Ἰουδαίων καὶ τῶν σεβομένων προση-
λύτων τῷ Παύλῳ καὶ τῷ Βαρνάβᾳ· οἵτινες προσ-
λαλῶντες αὐτοῖς, ἐπειδὴ αὐτοὺς ἐσημείναν τῇ χά-
ριτι τοῦ Θεοῦ.

44 Τῷ δὲ ἐρχομένῳ Σαββάτῳ σχεδὸν πᾶσα ἡ πόλις
συνήχθη ἀκοῦσαι τοῦ λόγον τοῦ Θεοῦ.

45 Ἰδόντες δὲ οἱ Ἰουδαῖοι τὴν ὄχλην, ἐπλήθυνσαν
ἐξελθόντες, ἔσπεροντες τοὺς ἀπὸ τοῦ Παύλου λεγομένοις
ἐκδικεῖν τοὺς Ἰουδαίους.

46 Παύλος καὶ Βαρνάβας δὲ ὁ Παῦλος καὶ ὁ Βαρ-
νάβας, ἔπεισαν τοὺς Ἰουδαίους ὅτι ἀναγκαῖον πρῶτον λαλε-
θῶσι τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ· ἐπειδὴ δὲ ἀπωθείσθαι αὐτῶν,
καὶ ἡ ἀκρίβεια κρινεῖται ἐκείνης τῆς ἡμέρας, ἰδοὺ σφραγι-
σθήσονται εἰς τὴν ἰδίαν.

47 Οὕτως γὰρ ἐντάσσεται ἡμῖν ὁ Κύριος·
Τίθει.

Τίθηνά σε εἰς φῶς ἰδοῦν, τῷ εἶναί σε εἰς σωτηρίαν ὡς ἔχεται ἡ γῆς.

48 Ἀκούοντα δὲ τὰ ἔθνη ἔχαιρον, ἔδιδάζον ἡ λόγον τοῦ Κυρίου. Ἐπίσταται οἱ ἦσαν τεταγμένοι εἰς ζωὴν αἰώνιον.

49 Διεφέρετο δὲ ὁ λόγος τῷ Κυρίῳ δι' ὅλης τῆς χώρας.

50 Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι παρώξυναν τὰς σεβομένας γυναῖκας καὶ τὰς εὐσχήμονας, καὶ τῆς πρώτης τῆς πόλεως, καὶ ἐπήγειραν διωγμὸν ἐπὶ τὸν Παῦλον καὶ ἡ Βαρνάβαν, καὶ ἔββαλον αὐτὸς ἀπὸ τῆς ὁρείου αὐτῶν.

51 Οἱ δὲ ἐκπνευζόμενοι ἡ κονιστὸν τῆς ποδῶν αὐτῶν ἐπ' αὐτῆς, ἦλθον εἰς Ἰκόνιον.

52 Οἱ δὲ μαθηταὶ ἐπληρῶντο χαρᾶς καὶ Πνεύματος ἁγίου.

Κεφ. ιδ'. 14.

1 **Ε**γένετο δὲ ἐν Ἰκονίῳ, κατὰ τὸ αὐτὸ εἰσ-
ελθὼν αὐτῆς εἰς τὴν συναγωγὴν τῆς Ἰου-
δαίων, ἔλαλσαι ὥτως ὥστε πιστεῦσαι Ἰουδαίων τε ἔ
Ελλήνων πολὺ πλῆθος.

2 Οἱ δὲ ἀπειθοῦντες Ἰουδαῖοι ἐπήγειραν καὶ ἐ-
κκρίναν τὰς ψυχὰς τῶν ἰδόντων κατὰ τῶν ἀδελ-
φῶν.

3 Ἰκόνιον μὲν ἦν χρόνον διέτριψαν παρρησιαζό-
μενοι ὑπὲρ τοῦ Κυρίου τὸ μαρτυρῶντι τὸ λόγῳ τῆς χά-
ριτος αὐτῆς, ἔδιδόντι σημεῖα ἔ τέρατα γίνεσθαι διὰ
τῶν χειρῶν αὐτῶν.

4 Εὐσχίσθη δὲ τὸ πλῆθος τῆς πόλεως, καὶ
εἰ μὲν ἦσαν σὺν τοῖς Ἰουδαίοις, οἱ δὲ σὺν τοῖς ἀ-
ποστόλοις.

5 Ὡς δὲ ἐγένετο ὁρμὴ τῶν ἰδόντων τε ἔ Ἰου-
δαίων σὺν τοῖς ἀρχεσιν αὐτῶν, ὑβρίσαι ἔ λιθοβολῆσαι
αὐτῆς,

6 Συνιδόντες κατέφυγον εἰς τὰς πόλεις τῆς Λυ-
καονίας, Λύστραν καὶ Δέρβην, καὶ τῶν περὶ-
χωρῶν.

7 Καὶ καὶ ὦσαν ἀναγγελιζόμενοι.

8 Καί ποτε ἀγὼρ ἐν Λύστραις ἀδυνάτους τοῖς ποσὶν ἐκεί-
νητο, καλὸς ἐν κοιλίᾳ Μητρός αὐτῆς ὑπάρχων, ὃς
ἐδέετο περὶ πεπατήκει.

9 Οὗτος ἦκε τῷ Παύλῳ λαλῶντος, ὃς ἀνένισας αὐ-
τῷ, ἔ ἰδὼν ὅτι πίσιν ἔχει τῷ σωθῆναι,

10 Εἶπε μεγάλη τῇ φωνῇ· Ἀνάστηθι ἐπὶ τὰς πόδας
ἐν ὀνόματι. Καὶ ἤλλετο, ἔ περιεπάτη.

11 Οἱ δὲ ὅχλοι ἰδόντες ὃ ἐποίησεν ὁ Παῦ-
λος,

12 Ἐπὶ αὐτῶν τῶν φωνῶν αὐτῶν, Λυκαονικὴ λέγου-
ται· Οἱ Σινοὶ ἐμοιῶντες ἀνθρώποις κατέβησαν
εἰς ἡμᾶς.

13 Ἐκάλουντι τὸν μὲν Βαρνάβαν, Δία· τὸν δὲ
Παῦλον, Ἑρμῆν· ἐπεὶ αὐτοὶ ὡς οἱ ἡγούμενοι τῆ
λήξης.

14 Οἱ δὲ ἱερεῖς τοῦ Διὸς τῶν ἐν τῇ πόλει αὐτῶν,
ταύτης ἑστῆσαν ὑπὸ τῆς πυλῶνος ἐνεγκας, σὺν
τοῖς ὄχλοις ἠθέλη θύειν.

15 Αἰκίσαντες δὲ οἱ ἀπόστολοι Βαρνάβαν καὶ Παῦλον,
διὰ τὸ ἔξαιναι τὰ ἱμάτια αὐτῶν ἐσεπλήθυνον εἰς τὸ ὄχ-
λον, κρίζοντες·

16 Καὶ λέγοντες· Ἄνδρες, τί ταῦτα ποιῶ-
τε, ἃ ἡμεῖς ὁμοιοπαθεῖς ἴσμεν ἡμῖν ἀνθρώ-
ποι, διαγγελλόμενοι ὑμῖν ἀπὸ τήτων τῶν ματαίων
ὑπερέβην ὑπὲρ τοῦ Θεοῦ καὶ ζῶντος, ὃς ἐποίησε καὶ οὐ-
ρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν, καὶ πάντα τὰ ἐν
αὐτοῖς.

17 Οἱ ἐν ταῖς παρωχημέναις ἡμεῖς εἶπεν πάντα
τὰ ἐξ ὑμῶν πορεύεσθαι ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν.

18 Καίτοιγε οὐκ ἀμαρτυρῶν ἰωτὸν ἀφῆκιν, ἀ-
γαθοποιῶν, οὐρανόθεν ἡμῖν ὑπέσχετο, διδοῦς, καὶ καρπὸν
καρποφορίας, ἐμπιπλῶν τροφῆς καὶ ὠφροσύνης τὰς καρ-
δίας ὑμῶν.

19 Καὶ ταῦτα λέγοντες, μόλις κατέπαυσαν τῆς ὄχ-
λου καὶ μὴ θύειν αὐτοῖς.

20 Ἐπῆλθον δὲ ἀπὸ Ἀντιόχειας καὶ Ἰκονίου Ἰου-
δαῖοι, καὶ πείσαντες τοὺς ὄχλους, καὶ λιθάσαντες τὸν
Παῦλον, ἔσυρον ἔξω τῆ πόλεως, νομίσαντες αὐτὸν
τεθνῆναι.

21 Κυκλοσάμενον δὲ αὐτὸν τῶν μαθητῶν, ἀνστὰς ἐσήλ-
θεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ τῇ ἐπαύριον ἐξῆλθε σὺν τῇ
Βαρνάβᾳ εἰς Δερβῆν.

22 Εὐαγγελιστάμενοι τε τὴν πόλιν ὁκνήνῃ. καὶ μα-
κρόθεν ἰκάνη, ὑπέσχεσαν εἰς τὴν Λύστραν καὶ
Ἰκόνιον καὶ Ἀντιόχειαν.

23 Ἐπιστρεφόμενοι τὰς ψυχὰς τῶν μαθητῶν, πα-
ρακαλοῦντες ἐμμένειν τῇ πίστει, καὶ ὅτι πολλοὶ
ἐθελῶν δαΐ ἡμῶν ἐσπλάγην εἰς τὴν βα-
σιλείαν τοῦ Θεοῦ.

24 Χειροτονήσαντες δὲ αὐτοῖς πρεσβυτέρους κατ' ὁ-
μολογίαν, προσεύξαμενοι μετὰ νηστειῶν, παρέδωκεν αὐ-
τοῖς τὸν Κύριον εἰς ὃν πεπιστεύκεισαν.

25 Καὶ διελθόντες τὴν Πισιδίαν, ἦλθον εἰς Παμ-
φυλίαν.

26 Καὶ λαλῶντες ἐν Πέργῃ καὶ λόγον, κατέβησαν
εἰς Ἀττάλειαν.

27 Καί ποθεν ἀπὸ ταύτης εἰς Ἀντιόχειαν· ὅθεν καὶ
ἐξῆλθον διδομένοι τῇ χάριτι τοῦ Θεοῦ εἰς τὸ ἔργον
ἐπληρώσει.

27 Παραχρῶμενοι ὃ ἔσυναγαγόντες τῷ ἔκκλησιῳ, ἀγγεῖλαν ὅσα ἐποίησεν ὁ Θεὸς μετ' αὐτῶν, ἃ ἔπαινε τοῖς ἔθνεσι διόκα πίστεως.

28 Διέτριβον δὲ ὁκαὶ χρόνον ἢ καὶ ὀλίγον σὺν τοῖς ἡγεταῖς.

Κεφ. ι ε. 15.

1 **Κ** Αὶ πῖνες κατελθόντες ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας, ἐδίδασκον τοὺς ἀδελφούς. Ὅτι ἐλὼ μὴ πειτεμνησθε τῷ ἔθει Μαυσιέως, οὐ δύνασθε σωθῆναι.

2 Γενομένης ἦν εἴσεως ἃ συζητήσεως ἢ καὶ ὀλίγη τῷ Παύλῳ ἃ τῷ Βαρνάβῃ πρὸς αὐτὰς, ἔταξαν ἀναβαίνειν Παῦλον καὶ Βαρνάβαν καί τινας ἄλλους ἐκ αὐτῶν πρὸς τὴν ἀποστολὴν, ἃ πρεσβύτερος εἰς Ἱερουσαλὴμ, πῶς ἢ ζητήματος τῆς.

3 Οἱ μὲν ἦν προπεμφθέντες ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας, διήρχοντο τῷ Φοινίκῳ ἃ Συμάρειν, ἐκδιηγόμενοι τῷ ὑπερεφύ τῷ ἔθνεσιν. ἃ ἐποίον χαρὰν μεγάλῃ πᾶσι τοῖς ἀδελφοῖς.

4 Παραχρῶμενοι δὲ εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἀπεδέχθησαν ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας καὶ τῷ ἀποστόλῳ καὶ τῷ πρεσβυτέρῳ, ἀγγεῖλαν τε ὅσα ὁ Θεὸς ἐποίησε μετ' αὐτῶν.

5 Ἐξανέστησαν δὲ πῖνες τῷ ἀπὸ τῆς αἰρέσεως τῷ Φαρισαίων πεπιστοκότες, λέγοντες. Ὅτι δὴ πειτεμνησθῆναι αὐτὸν, ὡς ἀγγέλλειν τε τηρεῖν ἢ νόμον Μαυσιέως.

6 Συνήχθησαν ὃ οἱ ἀπόστολοι ἃ οἱ πρεσβύτεροι ἐλὼν πῶς ἢ λόγῳ τῆς.

7 Πολλὰς ὃ συζητήσεως ἡγουμένης, ἀναστὰς Πέτρος ἔειπεν πρὸς αὐτὰς. Ἄνδρες ἀδελφοί, ὑμεῖς ἐπίστασθε ὅτι ἀφ' ἡμερῶν ἀρχαίων ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν ἡμετέροιο διὰ ἢ νόμος καὶ ἀκήσας τὰ ἔθνη ἢ λόγον ἢ ἀγγεῖλαν, ἃ πισεύονται.

8 Καὶ ὁ καρδιογνώστης Θεὸς ἐμαρτύρησεν αὐτοῖς, δὲς αὐτοῖς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἄγιον, καθὼς καὶ ἡμῖν.

9 Καὶ ὁδὸν διέκρινε μεταξὺ ἡμῶν τε ἃ αὐτῶν, τῇ πίστι καὶ χάριτι τὰς καρδίας αὐτῶν.

10 Νῦν οὖν τί παραζητεῖτε τὸν Θεόν, ὑπερβαίνει ζυγὸν ὑπὲρ ἢ τὸ ἄχρον τῷ μαθητῷ, ὅτι ἢ οἱ πατέρες ἡμῶν, ἢ οἱ ἡμεῖς ἰσχύσαμεν βαστάσαι;

11 Ἀλλὰ διὰ τῆς χάριτος Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ πιστεύομεν σωθῆναι, καθ' ὅν τρόπον καὶ ἡμεῖς.

12 Εστύχθη δὲ τὸ πλῆθος, καὶ ἄκρον Βαρνάβαν καὶ Πάῤῥωλιν ἡγεγεμεναὶ ὅσα ἐποίησεν ὁ Θεὸς σημεῖα καὶ τέρατα ἐν τοῖς ἔθνεσι δι' αὐτῶν.

13 Μετὰ δὲ τὸ σιγήσαι αὐτὸς, ἀπεκρίθη Ἰάκωβος, λέγων· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἀκούσατέ μου.

14 Συμείων ἡγεγήταται καθὼς πρῶτον ὁ Θεὸς ἐπέσκεψατο λαβεῖν ἡμῶν ἔθνην λαὸν ὅππῃ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ.

15 Καὶ τῷ συμφωγῶσιν οἱ λόγοι τῷ Προφῆτῳ καθὼς γέγραπται·

16 Μετὰ ταῦτα ἀνοιστέτω, καὶ ἀνοικοδομήσῃ τῷ σκηνῷ Δαβὶδ τῷ πεπτοκυῖδῃ, καὶ τὰ κατεσκαμμένα αὐτοῦ ἀνοικοδομήσῃ, καὶ ἀνορθώσῃ αὐτόν.

17 Ὅπως ἂν ἐκζητήσωσιν οἱ καταλοίποι τῷ ἀνθρώπῳ τὸν Κύριον, καὶ πάντα τὰ ἔθνη ἐφ' ἧς ὑπὲρ κλήνεται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτούς· λέγει Κύριος ὁ ποιῶν ταῦτα πάντα.

18 Γινώσκ᾽ ἀπ' αἰῶνός ἐστι τῷ Θεῷ πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ.

19 Διὸ ἐγὼ κρίνω μὴ παρενοχλεῖν τοῖς ἀπὸ τῶν ἔθνων ὑπερέβησιν ὅππῃ τῷ Θεῷ.

20 Ἀλλὰ ὑπιστάμενοι ὑπὸ τῷ ἀπέχεσθαι ἀπὸ τῶν ἀλισγημάτων τῶν ἐδώλων καὶ τῆς πορνείας καὶ τῆς πνικτῆς καὶ τῆς αἱματός.

21 Μωσῆς γὰρ ἐκ ἡμεῶν ἀρχαίαν κατὰ πόλιν τοὺς κηρύσσοντας αὐτὸν ἔχει, ἐκ τῶν συταγωγῶν κατὰ πᾶν σάββατον ἀναγινωσκόμενος.

22 Τότε ἔδοξε τοῖς ἀποστόλοις καὶ τοῖς πρεσβυτέροις σὺν ὅλῃ τῇ ἐκκλησίᾳ, ἐκλεξαμένους ἄνδρας ἡμῶν σὺν Πάῤῥωλιν καὶ Βαρνάβᾳ, Ἰούδαν δὲ ἐπικαλούμενον Βαρσαβᾶν, καὶ Σίλῳ, ἄνδρας ὡς ἡμεῖς ἐν τοῖς ἀδελφοῖς.

23 Γράψαντες διὰ χειρὸς αὐτῶν τὰδε· Οἱ Ἀπόστολοι καὶ οἱ πρεσβύτεροι καὶ οἱ ἀδελφοί, τοῖς καὶ τῷ Ἀντιόχειαν καὶ Σαρδίαν καὶ Κιλικίαν, ἀδελφοῖς τοῖς ἡμεῖς ἔθνω, χαίρειν.

24 Ἐπειδὴ ἠκούσαμεν ὅτι τινὲς ἡμῶν ἡγερόντες ἐτάραξαν ὑμᾶς λόγοις, ἀνασκοινοῦντες τὰς ψυχὰς ὑμῶν, λέγοντες πωλείμεσθαι καὶ τηρεῖν τὸ νόμον, οἷς ἐδυσχεραίμεθα.

25 Ἐδοξεν ἡμῖν ἡγομένους ὁμοθυμαδὸν, ἐκλεξαμένους ἄνδρας πεμψαι πρὸς ὑμᾶς, σὺν τοῖς ἀρχιερεῶν ἡμῶν Βαρνάβᾳ καὶ Πάῤῥωλιν,

26 Ἀνθρώποις καθαροῖς τὰς ψυχὰς αὐτῶν ὡς ἐπὶ τοῦ ὀνόματος τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

27 Ἀπέστειλαμεν ἔν Ιούδαν καὶ Σίλῳ, καὶ αὐτοῖς διὰ λόγον ἀπαγγέλλοντας τὰ αὐτά.

28 Ἐδοξε γὰρ τοῖς Ἀγίοις Πνεύματι καὶ ἡμῖν, μηδὲν πλέον ὑποτίθεσθαι ὑμῖν βάρος πλὴν τῶν ἐπιτάγας τούτων.

29 Ἀπέχεσθαι εἰδωλοθύτων καὶ αἵματος καὶ πνικτῶ καὶ πόρνειας, ὅς ὢν ἀφ' αὐτῶν ἑαυτοὺς, εὖ πράξετε. Ἐρρώσθε.

30 Οἱ μὲν ἦν ἀπολυθέντες ἦλθον εἰς Ἀντιόχειαν· καὶ συναγαγόντες τὸ πλῆθος, ἐπέδωκαν τῷ ὑποστάτῳ.

31 Ἀναγνόντες δὲ, ἐχάρησαν ὑπὲρ τῆς χάριτος.

32 Ἰνδᾶς δὲ καὶ Σίλας, καὶ αὐτοὶ προφῆται ὄντες, ἀφ' ὧν λόγος πολλὸς παρεκάλεσαν τοὺς ἀδελφούς, καὶ ἐπεσηρεύον.

33 Ποιήσαντες δὲ χρόνον, ἀπελύθησαν μετ' εἰρήνης ἀπὸ τῶν ἀδελφῶν πρὸς τὴν ἀποστόλην.

34 Ἐδοξε δὲ τοῖς Σίλᾳ ὑπομῖναι αὐτὴν.

35 Παῦλος δὲ καὶ Βαρνάβας διέτριβον ἐν Ἀντιοχείᾳ, διδασκόντες καὶ διαγγelizόμενοι καὶ ἑτέρων πολλῶν καὶ λόγον τοῦ Κυρίου.

36 Μετὰ δὲ πικρὰς ἡμέρας ἔπε Παῦλος πρὸς Βαρνάβαν. Ἐπιστρέψαντες δὲ ὑποσκεψάμεθα τοὺς ἀδελφούς, ἡμῶν κατὰ πάσαν πόλιν, ἐν αἷς κατήγγελλαν τὸν λόγον τοῦ Κυρίου, πῶς ἔχουσιν.

37 Βαρνάβας δὲ ἐβηλόσατο συμπαραλαβεῖν τὸν Ἰωάννην καὶ καλέσασθαι Μάρκον.

38 Παῦλος δὲ ἔειπεν καὶ ἀποστέλλειν αὐτὸν ἀπὸ Παμφυλίας, καὶ μὴ συγελθόντα αὐτοῖς εἰς τὸ ἔργον, μὴ συμπαραλαβεῖν τὸν.

39 Ἐγένετο ἦν παροξυσμός, οἷοι ἀποχωρεθῶσι αὐτοὺς ἀπ' ἀλλήλων· τὸν τε Βαρνάβαν παρλαβόντα καὶ Μάρκον ἀπλεύσαι εἰς Κύπρον.

40 Παῦλος δὲ ὑπεξέλειπεν Σίλᾳ, ἧλθον δὲ, ὡς ἐδοθείς τῇ χάριτι τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τῶν ἀδελφῶν.

41 Διήρχετο δὲ καὶ Συρίαν καὶ Κιλικίαν, ὑποσηρίζωντας ἐκκλησίας.

Κιφ. ιγ'. 16.

1 **Κ**ΑΤΙΩΤΗΣΕ ΔΕ ΕΙΣ ΔΕΡΒΙΝ Κ' ΛΥΣΤΡΑΝ · Ε ΙΔΩ ,
 ΜΕΘΗΤΗΣ ΠΙΣ Ω ΟΚΕΙ ΟΥΝΗΜΠ ΤΙΜΟΘΕΟΣ ,
 ΝΙΟΣ ΓΥΝΑΙΚΟΣ ΠΙΝΟΣ ΙΥΔΑΙΩΣ ΠΙΣΗΣ , ΠΑΤΡΟΣ Ξ ΕΛ-
 ΛΩΝ .

2 Ο'Σ ΕΜΒΡΥΡΕΙΤΟ ΑΠΟ ΤΩ ΕΝ ΛΥΣΤΡΟΙΣ Ε ΙΚΟΝΙΩ
 ΑΔΕΛΦΩΝ .

3 ΤΩΤΟΝ ΗΘΕΛΗΣΑΝ Ο ΠΑΥΛΟΣ ΣΥΝ ΑΙΤΩ ΞΕΛΘΕΙΝ ·
 ΚΑΙ ΛΑΒΩΝ ΠΡΟΑΙΤΕΡΗΜ ΑΥΤΟΝ ΔΙΩ' ΤΗΣ ΙΥΔΑΙΩΣ ΤΗΣ
 ΟΥΤΑΣ ΕΝ ΤΟΙΣ ΤΟΠΟΙΣ ΟΚΕΙΝΟΙΣ · ΗΘΕΛΩΝ Ω ΑΠΑΝΤΕΣ Ξ
 ΠΑΤΕΡΑ ΑΥΤΩ ΕΠ ΕΛΛΩ ΑΠΗΡΧΕΥ .

4 Ω'Σ Ξ ΔΙΕΠΟΡΟΥΝΤΟ ΤΑΣ ΠΟΛΕΙΣ , ΠΑΡΕΔΙΔΗΝ ΑΥ-
 ΤΟΙΣ ΦΥΛΑΞΕΙΝ ΤΑ ΔΕΥΜΑΤΑ ΤΑ ΚΕΚΡΑΜΕΝΑ ΑΠΟ
 ΤΩ ΑΠΟΣΟΛΩΝ ΚΑΙ ΤΩ ΠΡΕΣΒΥΤΕΡΩΝ ΤΩ ΕΝ ΙΕ-
 ΡΟΣΑΛΗΜ .

5 ΑΙ ΜΕΝ ΞΝ ΟΚΚΛΗΣΙΑΙ ΕΣΤΕΡΕΥΝΤΟ ΤΗ ΠΙΣΤΙ , Ε Ε-
 ΠΕΡΙΟΔΟΥΝ ΤΩ ΑΣΙΔΩ ΚΑΘ' ΗΜΕΡΑΝ .

6 ΔΙΕΛΘΟΝΤΕΣ Ξ Ξ ΦΡΥΓΙΑΝ Ε Ξ ΓΑΛΑΤΙΚΩΝ ΧΩ-
 ΡΑΝ , ΚΑΛΥΘΕΝΤΕΣ ΑΠΟ Ξ ΑΓΙΩ ΠΝΩΜΑΤΟΣ ΑΛΛΗΛΑΙ Ξ
 ΛΟΓΟΝ Ξ ΤΗ ΑΣΙΩ .

7 ΕΛΘΟΝΤΕΣ ΚΤ Ξ ΜΥΣΙΑΝ , ΕΠΕΙΡΑΖΟΝ ΚΑΤΑ
 ΤΩ ΒΙΘΥΝΙΑΝ ΠΕΡΑΪΣΤΑΙ · Ε ΞΚ ΕΙΠΕΝ ΑΥΤΩΣ ΤΟ
 ΠΝΕΥΜΑ .

8 ΠΑΡΕΛΘΟΝΤΕΣ ΔΕ ΤΩ ΜΥΣΙΑΝ , ΚΑΤΕΒΗΤΑΝ ΕΙΣ
 ΤΡΩΑΔΑ .

9 ΚΑΙ ΟΡΑΜΑ ΔΙΩ' ΤΗΣ ΝΥΚΤΟΣ ΑΦΘΗ ΤΩ ΠΑΥ-
 ΛΩ · ΑΝΩΡ ΠΙΣ Ω ΜΑΚΕΔΩΝ ΙΤΩΣ , ΠΡΟΧΑΛΩΝ ΑΥ-
 ΤΩΝ , Κ' ΛΕΓΩΝ · ΔΙΑΒΑΣ ΕΙΣ ΜΑΚΕΔΟΝΙΑΝ ΒΟΗΘΗΤΟΝ Η-
 ΜΙΝ .

10 Ω'Σ ΔΕ ΤΟ ΟΡΑΜΑ ΕΙΔΕΝ , ΑΙΘΙΩΣ ΕΞΗΤΗΣΑΜΕΝ Ε-
 ΞΕΛΘΕΙΝ ΕΙΣ ΤΩ ΜΑΚΕΔΟΝΙΑΝ , ΣΥΜΒΙΒΑΖΟΝΤΕΣ Ο-
 Π ΠΡΟΣΚΕΚΛΗΤΑΙ ΗΜΑΣ Ο ΚΥΡΙΟΣ ΔΙΑΓΓΕΛΙΣΑΣΘΑΙ
 ΑΥΤΩΣ .

11 ΑΝΑΧΘΕΝΤΕΣ ΞΝ ΑΠΟ ΤΗΣ ΤΡΩΑΔΟΣ , ΑΙΘΥΔΡΟΜΗ-
 ΣΑΜΕΝ ΕΙΣ ΣΑΜΟΘΡΑΚΙΑΝ , ΤΗ ΤΕ ΟΥΝΗΣΗ ΕΙΣ ΝΕΑ-
 ΠΟΛΙΝ .

12 ΕΚΕΘΕΝ ΤΕ ΕΙΣ ΦΙΛΙΠΠΗΣ , ΗΤΙΣ ΕΣΙ ΠΡΩΤΗ
 ΤΗΣ ΜΕΡΙΔΟΣ ΤΗΣ ΜΑΚΕΔΟΝΙΑΣ ΠΟΛΙΣ ΚΟΛΩΝΙΑ · ΗΜΙΤ
 ΔΕ ΕΝ ΤΑΥΤΗ ΤΗ ΠΟΛΙ ΔΙΩΤΕΙΣΤΕΣ ΗΜΕΡΑΣ ΠΙ-
 ΤΑΣ .

13 ΤΗ ΤΕ ΗΜΕΡΑ ΤΩ ΣΑΒΒΑΤΩΝ ΞΕΛΘΟΥΜΕΝ ΕΞΩ Ξ
 ΤΟΛΙΩΣ ΠΡΟΧ ΠΟΤΑΜΟΝ , Η ΕΝΟΜΙΖΕΤΟ ΠΡΟΣΟΧΗ ΕΙ-
 ΤΑΙ · Κ' ΚΑΘΙΣΤΗΤΕΣ ΕΛΑΛΕΜΕΝ ΤΑΙΣ ΣΥΝΕΛΘΟΥΣΑΙΣ ΓΥ-
 ΝΑΙΣ .

14 ΚΑΙ ΠΙΣ ΓΥΝΗ ΟΥΝΗΜΠ ΛΥΔΙΑ , ΠΟΡΦΥΡΟΠΟΛΙΣ ΠΟ-
 ΛΙΩΣ ΘΥΑΤΙΡΩΝ , ΣΕΒΟΜΕΝΗ Ξ ΘΕΩΝ , ΗΚΗΕΝ · ΗΣ Ο ΚΥ-
 ΡΙΟΣ

ρος διώκει τὴν καρδίαν, προσέχων τοὺς λαλῶντας ὑ-
πὸ τῷ Παύλῳ.

15 Ὡς ὅτε ἐδραπτίσθη, ἔδ' οἶκος αὐτῷ, περιπά-
σει, λέγῃσα· Εἰ κερρίκατέ με πείσω τῷ Κυρίῳ εἶναι,
ἐπιλαθόντες εἰς τὸ σῖκόν μου, μένατε. Καὶ παρεβίασα-
το ἡμέας.

16 Ἐγένετο ὅτε πορεύομένων ἡμῶν εἰς προσδελῶν, πα-
ρίσκην πρὸς ἑχθροὺς πνεύματος. Πυθάνος, ἀπαρτῆσαι ἡ-
μῶν, ἵππες ἐργασίαν πολλὰν παρέχευον τοὺς κυρίους αὐτῶν,
μνηστούμενοι.

17 Αὕτη κατακολυθίσκου τῷ Παύλῳ ἔχοντες, ἱ-
κετοί, λέγῃσα· Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι, δῆλοι τῷ Θεῷ ὅτι
ὁπίσθεν εἰσὶν, οἵτινες καταγγέλλουσιν ὑμῖν ὁδὸν σω-
τηρίας.

18 Τῇσι δὲ ἐτοίμα ἔπι πολλὰς ἡμέρας. Δι-
κασθεὶς δὲ ὁ Παῦλος, καὶ ὑπερέβηκεν, τῷ Πρόσμη-
τι ἔπει· Παραγγέλλω σοὶ ἐν τῷ ὀνόματι Ἰησοῦ Χρι-
στοῦ ἔξελθῆναι ἀπ' αὐτῆς. Καὶ ἔξελθεν αὐτῇ τῇ
ᾠρᾳ.

19 Ἰδόντες δὲ οἱ κύριοι αὐτῆς ὅτι ἔξελθεν ἡ ἐλ-
πίς τῆς ἐργασίας αὐτῶν, ὀπληθυσάμενοι τὸν Παῦλον
καὶ τὸν Σίλῳ ἐλκυσάμενοι εἰς τὴν ἀγορὰν ἔπι τῆς ἀρ-
χοῦρας.

20 Καὶ προσπαγόντες αὐτῆς τοὺς στρατηγούς, ἐ-
πον· Οὗτοι οἱ ἄνθρωποι ἐκταράσσουσιν ἡμῶν τὸ πόλιν,
ἰσχυροὶ ἀπαρχόντες.

21 Καὶ καταγγέλλουσιν ἔθνη, ἃ ἔκ ἐξίσιν ἡμῶν πα-
ραδέχεσθαι, καὶ ποιῆναι, Ῥωμαίοις ὅσι.

22 Καὶ συνεπέση ὁ ὄχλος κατ' οὐτῶν, ἔδ' οἱ στρα-
τηγοὶ παρ' ἑξέλεοντες αὐτῶν τὰ ἱμάτια, ἐκέλευον ῥαβ-
δίαν.

23 Πολλὰς τε ὀπληθέντες αὐτοῖς πληγὰς, ἔβαλον εἰς
φυλακὴν, παραγγείλαντες τῷ δεσμοφύλακι ἀσφαλῶς
τηρεῖν αὐτῆς.

24 Ὅτε παραγγελάμεν τιναύτῳ κίλινθον, ἔβαλεν αὐ-
τῆς εἰς τὴν ἐσωτέραν φυλακὴν, ἔδ' τῆς πόδας αὐτῶν
ἠσυχάσασθαι εἰς τὸ ξύλον.

25 Κατὰ δὲ τὸ μεσημέριον Παῦλος ἔδ' Σίλῳ προ-
σώχοντες ὕμνον τῷ Θεῷ· ἐπηκρῶντο δὲ αὐτῶν οἱ
δεσμῖοι.

26 Ἀφ' ὧν δὲ σεισμὸς ἐγένετο μέγας, ὥς ἐν σαλῶ-
θῃ τὰ θεμέλια τῆς δεσμοτηρεῖς· ἀνείχθησαν τε
προαχρήμα αἱ θύραι πάσαι, ἔδ' πάντων τὰ δεσμοὶ ἀ-
νέστη.

27 Ἐξυπνός δὲ γλυκύς ὁ δεσμοφύλαξ, ἔδ' ἰδὼν ἡ-
παγμένους τὰς θύρας τῆς φυλακῆς, σπασάμενος μάχα-
ράν, ἔμελλεν ἑαυτῷ ἀναρῆναι τομίζον ἐκτεφάρεται
τῆς δεσμῖνος.

28 Ἐφύγισθε δὲ φωνῇ μεγάλη ὁ Παῦλος, λέγων·
Μὴδὲν πράξῃς σεαυτῷ κακόν· ἀπάρτες γὰρ εἰμεν ἐν-
θάδε.

29 Αἰτήσας δὲ φῶτα ἤπειρόδωκε, ἔκ τινος μοῦ ἄνθρωπος προσέπεσε πρὸ Παύλου ἔκ τινος Σίλῃ.

30 Καὶ προαγγαγὼν αὐτὴν εἶπε· Κυρεῖν, τί με δὲ ποιεῖν ἵνα σωθῶ;

31 Οἱ δὲ εἶπον· Πίσχυσον ὑπὲρ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἔσωθήσῃ σὺ ἔκ τοῦ οἴκου σου.

32 Καὶ ἐλάλησάν αὐτῇ τὸν λόγον τοῦ Κυρίου, καὶ πᾶσι τοῖς ἐν τῇ οἰκίᾳ αὐτῇ.

33 Καὶ πρὸς λαβὰν αὐτὴν ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ τῆς νυκτός, ἔλασεν ἀπὸ τῆς πληγῶν· ἔβραπτίσθη αὐτὸς ἔκ αὐτῇ πλῆτες παραχρήμα.

34 Ἀναγαγὼν τε αὐτὴν εἰς τὸν οἶκον αὐτῆς, παρέθηκε τράπεζαν, ἔσκατον αὐτὴν πλῆτοις πεπιστωκόις πρὸ Θεοῦ.

35 Ἡμέρας ὅμως ἡγουμένης ἀπέστειλάν οἱ στρατηγοὶ τὰς ῥαβδούχους, λέγοντες· Ἀπολύσον τὴν ἀνθρώπου ἐκείνου.

36 Ἀπεγγαγὼν δὲ ὁ δεσμοφύλαξ τὴν λόγον τούτην πρὸς τὸν Παῦλον· Ὅτι ἀπεσάλκωσιν οἱ στρατηγοὶ ἵνα ἀπολυθῇτε· νῦν ὅν ἔξελεύσονται, πορεύεσθε ἐν εἰρήνῃ.

37 Οἱ δὲ Παῦλος εἶπε πρὸς αὐτὴν· Δείδωμις ἡμᾶς δημοσίᾳ, ἀκατακρίτους, ἀνθρώπου Ῥωμαίου ὑπάρχοντες, ἔβαλον ἡς φυλακῇ, ἔνυν λάθρα ἡμᾶς ἐκβαλλάτε; Οὐ γὰρ· ἀλλὰ ἐλθόντες αὐτοὶ ἡμᾶς ἔξαγγαγέσθω.

38 Ἀπεγγαγὼν δὲ τοῖς στρατηγοῖς οἱ ῥαβδούχοι τὰ ῥήματα ταῦτα· ἔφοβήθησαν ἀκούσαντες ὅτι Ῥωμαῖοί εἰσι.

39 Καὶ ἐλθόντες παρεκάλεσαν αὐτὴν, ἔξαγγαγόντες ἡρώτων ἔξελεσθῆναι τὴν πόλιν.

40 Ἐξελεύσονται ὅτε τὴν φυλακῇ εἰσῆλθον ἡς τῷ Ἀνδρίᾳ· ἔιδόντες τὴν ἀδελφὴν, παρεκάλεσαν αὐτὴν, ἔξελεσθαι.

Κεφ. 17. 17.

1 **Δ**ιοδύσαντες δὲ τῷ Ἀμφίπολει καὶ Ἀπολλωνίᾳ, ἦλθον εἰς Θεσσαλονίκην, ὅτε ἡμεῖς συνειργαγὴ τῷ Ἰνδαίῳ.

2 Κατὰ δὲ τὸ εἰσθῆναι πρὸ Παύλου εἰσῆλθε πρὸς αὐτὴν, ἔκ τινος Σάββατα τρεῖς διελέγετο αὐτοῖς ἀπὸ τῆς χάριτος,

3 Διανοίγων καὶ παρατιθέμενος ὅτι τὸν Χριστὸν ἔδει παθεῖν καὶ ἀνίστασθαι ἐκ νεκρῶν, καὶ ὅτι ἡτοῦτο ἐστὶν ὁ Χριστὸς Ἰησοῦς, ἐν ᾧ καὶ καταγγέλλω ὑμῖν.

4 Καὶ

4 Καὶ τινες ἔκ αὐτῶν ἐπίστανται, καὶ προσκαλεσθέντες τῷ Παύλῳ, ἔτι Σίλας, τῷ τε σεβασμένῳ Ἑλληνῶν πολὺ πλῆθος, γυναικῶν τε τῷ πρώτῳ ἐκ ὧν λίσσεται.

5 Ζηλώσαντες δὲ οἱ ἀπεθνήκοντες Ἰουδαῖοι, ἔπρασσαν λαβόμενοι τῷ ἀγορεύειν τινὰς ἄνδρας πονηροὺς, καὶ ὀχλοποιήσαντες, ἐθอรύβην τῷ πολὺν ὑπαστάμενος τῇ οἰκίᾳ Γάστορος, ἐζήτησεν αὐτοὺς ἀγαγῆναι εἰς τὴν δῆμον.

6 Μὴ ὁρῶντες δὲ αὐτοὺς, ἄστυρ καὶ Γάστορ καὶ τινες ἀδελφοὶ ὑπὲρ τῆς πολιτάρχας, βουλόμενοι· ὅτι οἱ τῷ οἰκισμένῳ ἀνεκτατώσαντες, ἔπει, καὶ ἐσθλάδε τέρμεναι.

7 Οὗτος ὑποδέχεται Γάστον· ἔπει καὶ τινες ἀπείδμεν τῷ δογματῇ Κρίστῳ πράττειν, βασιλείᾳ λέγοντες ἕτερον εἶναι, Ἰησοῦν.

8 Ἐτάραξαν ὅτε ἄχλην ἔτις πολιτάρχας ἀκούσας ταῦτα.

9 Καὶ λαβόντες τὸ ἱκνόμενον παρὰ τῇ Γάστορος καὶ τῷ Κρίστῳ, ἀπέλυσαν αὐτοὺς.

10 Οἱ δὲ ἀδελφοὶ ἐθέλῃ· Σίλας τῆς νυκτός ἔπειτα ψάλλοντες τὸν τε Παῦλον καὶ Σίλαν εἰς Βεροίαν· οἱ τινες παρακαλούμενοι, εἰς τὴν συναγωγὴν τῷ Ἰουδαίῳ ἀπικνέσθαι.

11 Οὗτοι δὲ ἔπειτα ἀγγελοῖσι τῷ ἐν Θεσσαλονίκῃ, εἰπὺς ἐδέξαντο καὶ λόγον μὲν πάσης προθυμίας, τὸ κατ' ἡμέραν ἀνακρίνοντες τὰς γραφάς, εἰ ἔχοι ταῦτα ἡμεῖς.

12 Πολλοὶ μὲν ἔτι ἐκ αὐτῶν ἐπίστανται, καὶ τῷ Ἑλληνιστῶν γυναικῶν τῷ ὀχλημόνῳ, ἔτι ἀνδρῶν ἐκ ὧν λίσσεται.

13 Ὡς δὲ ἐγνίσαντο οἱ ἀπὸ τῆς Θεσσαλονίκης Ἰουδαῖοι, ὅτι ἔτι ἐν τῇ Βεροίᾳ καταγγέλλει ὑπὸ τῷ Παύλῳ ὁ λόγος τῷ Θεῷ, ἦλθον κἀκεῖ, σκαλοῦντες τοὺς ἄχλους.

14 Εὐθέως ὅτε τῷ Παύλῳ Ἰεραπίσταντο οἱ ἀδελφοὶ παρεῖσθαι ὡς ὑπὲρ τῶν θάλακων· ὑπέμενον δὲ ὅτι τε Σίλας καὶ ὁ Τιμόθεος ἐκείνῳ.

15 Οἱ δὲ καθιστῶντες τῷ Παύλῳ, ἤγαγον αὐτὸν εἰς Ἀθῶναι· καὶ λαβόντες ἐπιστολὰν πρὸς τὸν Σίλαν καὶ Τιμόθεον, ἵνα ὡς τάχιστα ἔλθωσι πρὸς αὐτοὺς, ἐξέειπεν.

16 Ἐν δὲ ταῖς Ἀθῶναις ἐκδεχομένη αὐτοὺς τῷ Παύλῳ, παραξύνετο τὸ πνεῦμα αὐτῷ ἐν αὐτῷ, θεωρεῖν κατὰ τὸν νόμον ἡσυχίαν τῇ πόλει.

17 Διελέγετο μὲν ἔτι ἐν τῇ συναγωγῇ τοῖς Ἰουδαίοις καὶ τοῖς σεβασμένοις, ἔτι ἐν τῇ ἀγορᾷ καὶ πᾶσιν ἡμέρας πρὸς τὴν παραπομπήν.

18 Τινες ὅτε τῷ Εὐπικηρίῳ καὶ τῷ Στωϊκῷ φιλοσόφῳ συνεβύλλον αὐτῷ· καὶ τινες ἔλεγον· τί

αὐτὸν θεοὶ ὁ ἀσπερμελὴς ἄνθρωπος λέγειν ; Οἱ δὲ ἔχοντες
δαίμονιόν δοκῶν καταγγελλόντες εἶναι , ὅτι τὸ ἑστῆν καὶ
ἀνέστασιν αὐτοῖς ἀνγγελλίζετο .

19 Ἐπιλαβόμενοι τε αὐτῷ , ἐπὶ τῷ Ἀρείῳ πύγῃ
ῥαγοῖ , λέγοντες· Δυναμίδια γινώσκαι πρὸς ἡμᾶς καὶ κατὰ αὐτὸν
ἢ ὑπὸ σοῦ λαλῶμεθα διδάσκει ;

20 Ἐπιζήτῳ γὰρ πᾶσι ἀποφέρεις εἰς τὰς ἀκοὰς
μῶν . Βαλέμεθα ἂν γινώσκαι τί ἀπὸ θεοῦ ταῦτα
εἶναι .

21 (Ἀθῶναῖοι δὲ πάντες , ἔτι οἱ ὑποδημιῶντες ἔχοντες
εἰς μὲν ἕτερον δικάζοντες ἢ λέγειν πρὸς ἀκρίβειαν καὶ ὁ
σοφ .)

22 Σταθεὶς ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ τῷ Ἀρείῳ πύγῃ
ἔφη· Ἄνδρες Ἀθῶναῖοι , καὶ πάντα ὡς δεισιδαίμονες
μεν ὑμᾶς θεωρῶ .

23 Διερχόμενος γὰρ ἔτι ἀνθεωρῶν τὰ σεβάσματα
μῶν , εὗρον ἔνθα βωμὸν ἐν ᾧ ἐπεγέγραπτο· Ἀγνώσκω
Θεῷ· Ὅτι εἰς ἀγνοῦντες ἀσεβήκατε , τῆτον ἐγὼ καταγγέλλω
γένοιαι ὑμῶν .

24 Ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας τὸν κόσμον καὶ πάντα τὰ ἐν
αὐτῷ , ὅπου οὐρανὸς καὶ γῆ· Κύριος ὑπάρχων , καὶ οὐ
χειροποιήτοις νοοῖς κατεπίκει .

25 Οὐδὲ ὑπὸ χειρῶν ἀνθρώπων θεωρεῖται , προ
διδόμενος τις , αὐτὸς διδὼς πᾶσι ζωὴν καὶ πνεῦμα ἐν
πάντα .

26 Ἐποίησε τε ἡμεῖς εἰς αἵματος πάντων ἔθνων ἀνθρώπων
κατοικῶν ὑπὲρ πάντων τὸ πρόσωπον τῷ γῆ , ὅπως
προτεταγμένους καιρὸς , καὶ τὰς ὁδοθεσίας τῇ κατοικίᾳ
αὐτῶν .

27 Ζητεῖν τὸν Κύριον , εἰ ἄρα γε ἀνιῶμεθα αὐτῷ
καὶ ἀκούειν· καίτοιγε ἡ μακρὰ ἀπὸ ἐνὸς ἑκάστου ἡμῶν
ὑπάρχοντα .

28 Ἐν αὐτῷ γὰρ ζῶμεν , καὶ κινεῖμεθα , καὶ ἐσμεν
ὡς καὶ πᾶσι τῶν κατὰ ὑμᾶς ποιητῶν εἰρηκασί· Τῷ γὰρ
καὶ γένος ἐσμεν .

29 Γένος ἢν ὑπάρχοντες τῷ Θεῷ , καὶ οφείλομεν
μύζην χρυσῷ ἢ ἀργύρῳ ἢ λίθῳ , χαράγματι τῷ
χρυσῷ καὶ ἐνθυμήσεως ἀνθρώπων , τὸ θεῖον εἶναι
ὁμοῖον .

30 Τῆς μὲν ἂν χρόνος τῇ ἀγνοίᾳς ὑπερδὼν ὁ Θεὸς
τὰ νῦν παραγγέλλει τοῖς ἀνθρώποις πᾶσι πάντα
μετανοεῖν .

31 Διότι ἔσχον ἡμέραν ἐν ᾗ μίλλῃ τρεῖς καὶ ὁ
καρμένῳ ἐν δικαιοσύνῃ , ἐν ἀνδρείῳ ὡς ὤρεσε , πρὸς
ραχῶν πᾶσιν , ἀνάστασις αὐτῶν ἐκ νεκρῶν .

32 Ἀκούσατε ὁ ἀνάστασις νεκρῶν , οἱ μὲν ἐχλοῦν
ζοῦν· οἱ δὲ , ἔειπον . Ἀκούμεθα σε πάλιν περὶ
τῆς .

33 Καὶ ὅτε ὁ Παῦλος ἤλθεν ἐκ μέσου αὐτῶν .

34 Τινες δὲ ἄνδρες κατακείμενοι αὐτῷ, ἐπίστανται·
ὡς οἷς καὶ Διονύσιος ὁ Ἀρεοπαγίτης, καὶ θυγατέρα αὐτοῦ
Δάμωρις, καὶ ἕτεροι σὺν αὐτοῖς.

Κεφ. ιη. 18.

1 **Μ**ετά τὰ ταῦτα χειρισθείς ὁ Παῦλος ἐκ τῶν
Ἀθηνῶν, ἦλθεν εἰς Κόρινθον.

2 Καὶ οὖν πρὸς Ἰνδαίον ὀνόματι Ἀκύλῳ, Περ-
νὸν τῷ γένει, προσφύτως ἐληλυθότα ἀπὸ τῆς Ἰταλίας,
καὶ Περικίλλῳ γυναίκα αὐτοῦ, (διὰ τὸ διφρατισταχέ-
ναι Κλαύδιον χειρίζεσθαι πάντας τὰς Ἰνδαίους ἐκ τῆς
Ρώμης,) προσῆλθεν αὐτοῖς.

3 Καὶ διὰ τὸ ἐμώτεχον εἶναι, ἔμενε παρ' αὐ-
τοῖς, καὶ ἐργάζετο· ἥτις γὰρ σκηνωποιοὶ τῶν
τεχνῶν.

4 Διελέγετο δὲ ἐν τῇ συναγωγῇ κατὰ πᾶν σάββατον,
ἐκπαιθεῖν τε Ἰνδαίους καὶ Ἑλλήνας.

5 Ὡς δὲ κατέλθον ἀπὸ τῆς Μακεδονίας ὁ, τὸ Σί-
λας καὶ ὁ Τιμόθεος, συνέχετο τὸ πνεῦμα ὁ Παῦ-
λος, διφρατίζων τοὺς Ἰνδαίους τὸν Χριστὸν
ἰησοῦν.

6 Ἀντιταγομένων δὲ αὐτῷ ἐν βλασφημίᾳ, ἐκ-
παύσας τὰ ῥήματα, εἶπε πρὸς αὐτούς· Τὸ αἷμα ὑ-
μῶν ὑπὲρ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν· καθάρσος ἐγώ, ἀπὸ τῆς νῦν
εἰς τὰ ἔσθῃ πορεύομαι.

7 Καὶ μεταβάς ἐκείθεν, ἦλθεν εἰς οἰκίαν πρὸς ὁ-
νόματι Γέκυ, σεβομένην τὸ Θεόν, ἣ ἡ οἰκία ὡς συ-
νοχὴ τῇ συναγωγῇ.

8 Κρίσπος δὲ ὁ ἀρχισυνάγωγος ἐπίσταντο τῷ Κυρίῳ
σὺν ὅλῳ τῷ οἴκῳ αὐτοῦ· καὶ πολλοὶ τῶν Κορινθίων ἀ-
κροάτες ἐπίσταντο, καὶ ἐβαπτίζοντο.

9 Εἶπε δὲ ὁ Κύριος δι' ὁράματος ἐν νυκτὶ τῷ
Παύλῳ· Μὴ φοβῆ, ἀλλὰ λαλεῖ, καὶ μὴ σιω-
πῆς.

10 Διότι ἐγώ ἰμι μετὰ σοῦ, καὶ οὐδεὶς ὑποβιβασταί σοι
κατανοήσας σε· διότι λαὸς ἐστὶ μοι πολὺς ἐν τῇ πόλει
ταύτῃ.

11 Ἐκείθεν τε ἐνίαντ καὶ μῶναις ἑξ, διδάσκων ἐν
αὐτοῖς κατὰ λόγον τοῦ Θεοῦ.

12 Γαλλίονος δὲ ἀμφοτεπαύοντος τὸν Ἀχάϊον, κα-
τεπέστησαν ὁμοθυμαδὸν οἱ Ἰνδαῖοι τῷ Παύλῳ, καὶ ἤγα-
γον αὐτὸν ὑπὲρ τὸ βῆμα.

13 Λέγοντες· Οὗτος ἀπακρίβει
τῶν ἀνθρώπων σέβεσθαι τὸ Θεόν.

14 Μένοντος δὲ τοῦ Παύλου ἀπορίσκειν τὸ σῶμα, εἶπεν
ὁ Γαλλίον πρὸς τὸς Ἰνδαίους· Εἰ μὲν ἦν ὡς ἀδίκημα
ἢ ἡ βλασφημία πονηρὴν, ὡς Ἰνδαῖοι, κατὰ λόγον ἂν ἡ-
τιχέμεθα ὑμῶν.

15 Εἰ δὲ ζήτημά ἐστι παρὰ λέγειν καὶ ὀνομάτων,
καὶ πρὸς ὑμᾶς, ὁφείσθε αὐτοῖς κρατὸς ᾧ
τήτων ὁ βέλτερος εἶναι.

16 Καὶ ἀπελάσαν αὐτὸς ἀπὸ τοῦ βήματος.

17 Ἐπιλαβόμενοι δὲ πάντες οἱ Ἕλληνες Σουλᾶν
καὶ ἀρχισυνάγωγον, ἔτυπον ἔμπροσθεν τοῦ βήματος
καὶ οὐκ ἔβησαν ἐπὶ τὸν λαόν· ἐμελεῖ.

18 Οὗτος δὲ Παῦλος ἵππ' προσκείμενος ἡμέρας ἱκανὰς
τοῖς ἀδελφοῖς ἀποταξάμενος, ἔβη ἐπὶ τὸν λαόν·
καὶ εἰπὼν αὐτοῖς Ἡρακλῆα καὶ Ἀκύλαν, κεφαλὰς
τοῦ καὶ κεφαλῶν ἐκ Κιλικίας· ἔρχεσθαι ᾧ οὐκ ὀκνῶ.

19 Κατώστησε δὲ εἰς Ἐφεσον, καὶ κειμένης
αὐτοῦ· αὐτὸς δὲ εἰσελθὼν εἰς τὴν συναγωγὴν, διελέ-
θη τοῖς Ἰουδαίοις.

20 Ἐρωτῶντων δὲ αὐτὸν ὑπὲρ πλείονα χρόνον μένειν
παρ' αὐτοῖς, οὐκ ἐπέβηκεν.

21 Ἀλλ' ἀπετάξατο αὐτοῖς, εἰπὼν· Δὲ με πάντας
τοὺς Ἰουδαίους καὶ ἐρχομένους ποιῆσαι εἰς Ἱεροσόλυμα· παρὰ
δὲ ἀνακλῆσαι πρὸς ὑμᾶς, καὶ Θεῷ δεικνύοντες. Καὶ ἀφ' ὧν
οὐκ ἀπὸ τοῦ Ἐφείου.

22 Καὶ κατελθὼν εἰς Καισάρεα, ἀναβὰς, ἐπὶ
σπασάμενος τὴν ἐκκλησίαν, κατέβη εἰς Ἀντιόχειαν.

23 Καὶ ποιήσας χρόνον τινα, ἔβη, διερχόμενος
καθ' ἑαυτὸν καὶ Ἰακωβὸν τὸν ἀδελφόν· καὶ Φρυγίαν, ὑπερῆλθεν
πάντας τὰς μαθητάς.

24 Ἰουδαίους δὲ πρὸς Ἀπολλὸν ὀνόματι, Ἀλεξανδρίους
καὶ γένει, Ἀντιόχειους, κατώστησεν εἰς Ἐφεσον, δυνα-
τὸς ὡς ἐν ταῖς μαθήταις.

25 Οὗτος δὲ κατεχόμενος καὶ ἰδὼν τοὺς Κυρίους, ἐξέβη
ἐκ τῆς συναγωγῆς. ἰσχυρὸς δὲ ἐδίδασκεν ἀκριβῶς τὰ περὶ
τοῦ Κυρίου, ὑπασάμενος μόνον τὸ βάπτισμα Ἰωάννου.

26 Οὗτος τε ἤρξατο παρ' ῥησιάζεσθαι ἐν τῇ συνα-
γωγῇ. Ἀκόντας δὲ αὐτὸν Ἀκύλῃ καὶ Πρίσκιλλῃ
προσελάβοντο αὐτόν, καὶ ἀκριβέστερον αὐτὸν ἐξέδεικνυτο
τοῦ Θεοῦ ὁδόν.

27 Βυλομένη δὲ αὐτὸν διελθὼν εἰς τὴν Ἀχαΐαν,
προτρέψαμενοι οἱ ἀδελφοὶ ἔγραψαν τοῖς μαθηταῖς ἀ-
ποδέξασθαι αὐτόν· ὅς παραχρῆμα, συνεβόλητο πρὸς
αὐτοὺς πεπιστώκοσι διὰ τοῦ Χριστοῦ.

28 Εὐτόμως δὲ τοῖς Ἰουδαίοις διὰ καταλέγχετο δη-
μοσίᾳ, ὑποδικνύς διὰ τὴν μαθῶν, εἶναι καὶ Χρι-
στοῦ Ἰησοῦ.

Κεφ. 13. 19.

1 **Ε**ΓΙΝΕΤΟ ΔΕ ὡς τὸ τὸν Ἀπολλὼ εἶναι ἐν Κε-
ρίνθῳ, Παῦλον διελθόντα τὰ ἑσπέρια
καὶ μέρη, ἐλθεῖν εἰς Ἐφέσον, ὃ Ὄρων πῆγας με-
στῆται.

2 Εἶπε πρὸς αὐτὸς· Εἰ Πνεῦμα Ἀγίον ἐλάβετε τι-
θίσαντες; Οἱ δὲ ἔπον πρὸς αὐτόν· ἀλλ' ἢ ἐὰν τὸ Πνεῦ-
μα Ἀγίον ἔσιν, ἠκούσαμεν.

3 Εἶπε τε πρὸς αὐτὸς· Εἰς τί ἔν ἐβαπτίσθητε;
Οἱ δὲ ἔπον· Εἰς τὸ Ἰωάννη Βάπτισμα.

4 Εἶπε δὲ Παῦλος· Ἰωάννης μὲν ἐβάπτισε βάπτισ-
μα μετανόιας, τῷ λαῷ λέγων, εἰς τὸν ἐρχόμενον
μετ' αὐτὸν ἵνα πισθύνωσι, ταῦτέστιν, εἰς τὸν Χριστὸν
Ἰησοῦν.

5 Ἀκούοντες δὲ ἐβαπτίσθησαν εἰς τὸ ὄνομα τοῦ
Κυρίου Ἰησοῦ.

6 Καὶ ὑποθέμενος αὐτοῖς τὸ Παύλου τὰς χεῖρας, ἦλθε
τὸ Πνεῦμα τὸ Ἀγίον ἐπ' αὐτὸς· ἐλάλην τε γλώσσαις,
καὶ προσφώνων.

7 Ἦσαν δὲ οἱ πάντες ἄνδρες αἰεὶ δεκα-
ἑνός.

8 Εἰσελθὼν δὲ εἰς τὴν συναγωγὴν, ἐπαρρησιάζετο,
ὑπὲρ μῶσαις τοῖς διδασκαλοῖς καὶ πείδων τὰ πρὸς τὸ
ἐκκοιμῆσαι τὸ Θεόν.

9 Ὡς δὲ τινες ἐπιληρούνοντο ἐν ἡταίῃ, κακολο-
ῦντες καὶ ἐδόν ἐντίμιον καὶ πλήθος, ἀποσάς αὐτῶν,
αἰσώρισε τὴν μαθητείαν, καθ' ἡμέραν διδασκαλόμενος ἐν
τῇ σχολῇ Τυράννου τιτος.

10 Τῆτι δὲ ἐγένετο ὑπὲρ ἑτῆ δύο· ὥς ἐ πάντας τὰς
κατοικήσας τῷ Ἀσίᾳ ἀκούσαι καὶ λεγοῖν τὸ Κυρίῳ Ἰη-
σοῦ, Ἰουδαίους τε καὶ Ἑλλήνας.

11 Δυναμὴς τε καὶ τὰς τυχούσας ἐποίησεν ὁ Θεὸς διὰ
τῆς χερῶν Παύλου.

12 Ὡς καὶ ὑπὲρ τῶν ἀσθενούντων ἐπιφέρεισθαι ἀπὸ τῆς
χρῆτος αὐτοῦ σημεῖα, καὶ σημεῖα, καὶ ἀπαλλάσσει-
σθαι αὐτῶν τὰς νόσους, τὰ τε πνεύματα τὰ πονηρὰ
ἐκίχθαι ἀπ' αὐτοῦ.

13 Ἐπιχείρησαν δὲ πινες ἀπὸ τῶν πρὸς ἐρχομένων Ἰου-
δαίων θεορκεῖν ἐνομαζέμεν ὑπὲρ τῶν ἔχοντες τὰ πνεύ-
ματα τὰ πονηρὰ τὸ ὄνομα τὸ Κυρίου Ἰησοῦ, λέγον-
τες· Ὁρκίζομεν ὑμᾶς τὸν Ἰησοῦν ὅτι Παῦλος πε-
ρυνεῖται.

14 Ἦσαν δὲ τινες υἱοὶ Σκώλα Ἰουδαίου ἀρχιερέως
ἐκείνου, οἱ τῆτι ποιῆντες.

15 Ἀπεκρίθην δὲ τὸ πνεῦμα τὸ πονηρὸν, εἶπε·
Τὸν Ἰησοῦν γινώσκω, καὶ τὸ Παῦλον ἐπίσταμαι· ὑμεῖς
δὲ τίνας ἐστέ;

16 Καὶ ἐφελθόμενος ἐπ' αὐτὰς ὁ Ἀνδρῶπις ἐν ᾧ ὡς τὸ πνεῦμα τὸ ποιητὴν, ἔ κατακυριεύσας αὐτῶν, ἔχουσε κατ' αὐτῶν, ὡς θυμῶς ἔ τετραυματισμένους σφυγῶν ὅκ τ' εἰκὼ ὁκείνῃ.

17 Τῷ τὸ δὲ ἐγένετο γινώσκον πᾶσιν Ἰουδαίοις τε καὶ Ἑλλήσι ποῖς κατοικῶσι τ' Ἐφέσοις, ἔ ἐπέπεσε φόβος ὅπῃ πλῆτας αὐτοῖς, ἔ ἐμεγαλύνετο τῇ ἐννομῇ τ' Κυρίου Ἰησοῦ.

18 Πολλοὶ τε τῶν τεπιστάμενων ἔρχοντο, ὁμοθυμαδόν καὶ ἀμυγγύλλοντες τὰς πράξεις αὐτῶν.

19 Ἰκάρσι δ' τῶν τὰ σφίσσοντα πρᾶξιόντων, συνενήκοντες τὰς βίβλους, κατεκρινον ἐνώπιον πάντων, ἔ συνελθόντες τὰς πρᾶξεις αὐτῶν, ἔ εὖρον ἀργυρίῳ μυριάδας πέντε.

20 Οὕτω καὶ κρείτος ὁ λόγος τῷ Κυρίῳ ἤμεινε ἔ ἔχουεν.

21 Ὡς δὲ ἐπληρώθη ταῦτα, ἔθετο ὁ Παῦλος ἐν τῇ πύλματι, διελθὼν πρὸς Μακεδονίαν καὶ Ἀχαΐαν, πορεύσθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, εἰπὼν. Ὅπῃ μὲν τὸ γινέσθαι με ὁκεί, δεῖ με καὶ Γ' ὁμῶν ἔσθαι.

22 Ἀποστείλας δὲ εἰς τ' Μακεδονίαν δύο τῶν Διόσκωντων αὐτῷ, Τιμόθεον ἔ Ἐραστον, αὐτὸς ἐπέχει χρόνον εἰς τ' Ἀσίαν.

23 Ἐγένετο δ' καὶ τ' κωρὸν ὁκείνον τάραχος ἐκ ὀλίγοις πρὸς τ' ὅδον.

24 Δικητεῖσι γὰρ πεδύματι, ἀργυροκόπος, ποιῶν τὰς ἀργυρῆς Ἀρτέμιδος, παρήχεται τοῖς τεχνίταις ἐργασίαν ἐκ ὀλίγων.

25 Οὗς συναθροίσας, ἔ τῆς πρὸς τὰ ποικῆλα ἐργάτας, ἔπιν. Ἄνδρες, ἐπίσκαθε ὅπ' ὁκ ταύτης τ' ἐργασίας ἢ ὀπίσκειν ἡμῶν ἔσιν.

26 Καὶ θρασυτεῖ ἔ ἀκρότε ὅπ' ἡ μόνον Ἐφέσου, ἀλλὰ ὅδεον πάσης τ' Ἀσίας ὁ Παῦλος ἔτος πέντας μετέστησεν ἱκάρων ὄχλον, λέγων ὅπ' ἔκ εἰσὶ θεοὶ οἱ Διὸς ἡμῶν γινόμενοι.

27 Οὐ μόνον δὲ τῷ κινδυνάει ἡμῶν τὸ μέρος εἰς ἀπειλογὸν ἔλθαι, ἀλλὰ καὶ τὸ τῆς μεγάλης θεᾶς Ἀρτέμιδος ἱερὸν εἰς ἡδὲν λογισθῆναι, μέλειν τε ἔ καταδικασθαι τ' μεγαλειότητι αὐτῆς, ὡς ὅλη ἡ Ἀσία ἔ ἡ Οἰκισμένη σίβεται.

28 Ἀκούσαντες δὲ, καὶ ἠρόμενοι πλάσας θυμῷ ἔκραζον λέγοντες. Μεγάλη ἡ Ἀρτέμις Ἐφεσίων.

29 Καὶ ἐπληρώθη ἡ πόλις ὅλη συγχύσας, ὡρμησάν τε ἐμοθυμαδὸν εἰς τὸ θείατρον, συναρπάσαντες Γάϊον καὶ Ἀΐτιαν Ἀρχὸν Μακεδόνα, συνεκδήμους τῷ Παύλῳ.

30 Τῷ δὲ Παύλῳ βυλωμένῳ εἰσελθεῖν εἰς τ' δῆμον, ἔκ ἡμῶν αὐτῷ εἰ μαθηταί.

31 Τινὲς δὲ ἔ τῷ Ἀΐτιαν ὄντες αὐτῷ φίλοι, ἔμεν.

ἐμψύχοντες πρὸς αὐτὸν, παρεκάλουν μὴ δύναι ἑαυτὸν εἰς τὸ θάνατον.

32 Ἄλλοι μὲν ἦν ἄλλο τι ἔκραζον· ἦν γὰρ ἡ ὀκκλησία συγκεχυμένη, καὶ οἱ πλείους ἤκ ἡδυσαν τίνος ἐνεκὸν συνεληλυθίσαντο.

33 Ἐκ δὲ τοῦ ὄχλου προεβίβασαν Ἀλέξανδρον, προσβάλλοντάς αὐτὸν τοῖς Ἰουδαίοις· ὁ δὲ Ἀλέξανδρος κατατίσας τὴν χεῖρα, ἠθέλην ἀπολογεῖσθαι τῷ δήμῳ.

34 Ἐπιγινόντων δὲ ὅτι Ἰουδαῖός ἐστι, φωνὴ ἐγένετο μία ὅκ πάντων, ὡς ὑπὲρ ὧρας δύο κρᾶζόντων. Μεγάλη ἡ Ἀστέμις Ἐφεσίων.

35 Κατατίσας δὲ ὁ γραμματεὺς τὸν ὄχλον, φασίν· Ἄνδρες Ἐφεσίοι, τίς γὰρ ἐστὶν ἄνθρωπος, ὃς ἡ γυνώσκει τὴν Ἐφεσίων πόλιν νεωκόρον ἔσσαν τῇ μεγάλῃ θεᾷ Ἀρτέμιδος, καὶ τῇ Διοπετῆς;

36 Ἀναντιρρήτων ἦν ὄντων τούτων, δέον ἐστὶν ὑμῶς κατεσταλμένους ὑπάρχειν, καὶ μηδὲν προπετὲς πράττειν.

37 Ἡγᾶγετε γὰρ τῆς ἀνδρας τήτης, ἥτε ἱεροσύνης, ἢ τε βλασφημίας τῇ θεῷ ὑμῶν.

38 Εἰ μὲν ἦν Δημήτριος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ τεχνῖται πρὸς τινα λόγον ἔχουσιν, ἀγορεύει ἄγρυτοι, καὶ ἀνθύπατοί εἰσιν, ἐγκαλεῖσθαι ἀλλήλους.

39 Εἰς δὲ πᾶσι ἑτέρων ὑπαίχηται, ἐν τῇ ἐννομῳ ὀκκλησίᾳ ὑπαυθῆσθαι.

40 Καὶ γὰρ κινδυνεύομεν ἐγκαλεῖσθαι τᾶς αἰτίας περὶ τῆς σήμερον, μηδεὶς αἰτίου ὑπάρχοντος παρὲς ἡ διησόμεθα ἀποδύναμι λέγειν τῇ συστροφῇ τούτης. Καὶ ταῦτα εἰπὼν, ἀπέλυσε τὴν ὀκκλησίαν.

Κεφ. κ'. 20.

1 Μετὰ δὲ τὸ παύσασθαι τὸν θόρυβον, προσκαλεσάμενος ὁ Παῦλος τῆς μαθητᾶς καὶ ἀπαρτασάμενος, ἤρξατο πορεύεσθαι εἰς τὴν Μακεδονίαν.

2 Διελθὼν δὲ τὰ μέρη σκεῖνα, καὶ παρεκάλει αὐτὸς λόγῳ πολλῷ, ἦλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα.

3 Ποιήσας τε μῶας τρεῖς, χωρμένης αὐτῷ ὑπερηλῆς ὑπὸ τοῦ Ἰουδαίου μέλλοντι ἀνάγασθαι εἰς τὴν Συρίαν, ἐγένετο γνώμη τοῦ ὑποστρέφειν διὰ Μακεδονίας.

4 Συνέειπτο δὲ αὐτῷ ἄχρι τῆς Ἀσίας Σώπατρος Βεροῖαιος· Θεσσαλονικέων δὲ, Ἀρίσταρχος καὶ Σικκνύδος, καὶ Γάιος Δερβανός, καὶ Τιμόθεος, Ἀσιαῖοι δὲ, Τυχικός καὶ Τρόφιμος.

5 Οὗτοι προελθόντες ἔμεινον ἡμῶς ἐν Τρωάδι.

6 Ἡμῶς

6 Ἡμεῖς δὲ ὑπερῴκησαμεν μὲν τὰς ἡμέρας τῷ ζύμῳ ἀπὸ Φιλιππῶν, καὶ ἔλθομεν πρὸς αὐτὰς εἰς τὴν Τρωάδα ἄχρας ἡμερῶν πέντε, καὶ διετρίψαμεν ἡμέρας ἑπτὰ.

7 Ἐν δὲ τῇ νύκτι τῷ σκισβάτῳ, συνηγμένων τῶν μαθητῶν καὶ κλάσας ἄρτον, ὁ Παῦλος διελέγετο αὐτοῖς, μέλλων ὑξίεσθαι τῇ ἐπαύριον· παρέτεινε τε καὶ ἔργον μέχρι μεσονυκτίου.

8 Ἡσσαν δὲ λαμπάδες ἱκαναὶ ἐν αὐτῷ ὑπερῷ ὅταν κοιμημένοι.

9 Καθήμενος δὲ τις νεανίας ἐνὸς αὐτοῦ Εὐτυχὸς τῆς θουρίδος, καταφερόμενος ὑπὲρ βαθροῦ, ἀψυχρῶς μὲν καὶ Παῦλος ὑπὸ πληγῶν, κατενεχθεὶς ἀπὸ ὕπνου, ἐπίσκει ἀπὸ τοῦ τριτεύοντος κάτω, καὶ ἤρπτε.

10 Κρατοῦν δὲ ὁ Παῦλος ἐπέπεσε αὐτῷ, καὶ συλλαβὼν εἶπε· Μὴ θορυβάζε· ἡ γὰρ ψυχὴ αὐτοῦ αὐτῷ ἐστίν.

11 Ἀναβὰς δὲ, καὶ κλάσας ἄρτον καὶ γαστράμενον ἐφ' ἱκανὸν τε ὁμιλήσας ἄχρας ὡσγῆς, ὥτως ὑξίεσθαι.

12 Ἡγάγον δὲ τὴν καῖδα ζῶντα, καὶ παρεκλήθη αὐτὸν μετρίως.

13 Ἡμεῖς δὲ προελθόντες ἐπὶ τὸ πλοῖον, ἀνήχμεν εἰς τὴν Ἀσίαν, ὁκνεῖν μέλλοντες ἀνταμβάσασθαι τὸν Παῦλον· ὅτι γὰρ ὡς ἀψυχρῶς τεταγμένος, μέλλων αὐτὸν πικρῶν.

14 Ὡς δὲ συνέβηκεν ἡμῶν εἰς τὴν Ἀσίαν ἀνκλάβον αὐτὸν ἔλθομεν εἰς Μιτυλήναιον.

15 Κακῶς δὲ ἀποπλοῦσάντες, τῇ ἐπίσει κατώλισται ἀντικρὺ Χίμ· τῇ δὲ ἑτέρᾳ περιβάλλομεν εἰς Σάμον· καὶ μέναντες ἐν Τρωγυλλίῳ, τῇ ἐχόμενῃ ἔλθομεν εἰς Μίλητον.

16 Ἐκρίτε γὰρ ὁ Παῦλος παραπλευσαι τὴν Ἐφέσον ὅπως μὴ γένεται αὐτῷ χρονοτραβῆσαι ἐν τῇ Ἀσίᾳ· ἐπαύει γὰρ, εἰ δυνατόν ᾧ αὐτῷ, καὶ ἡμέραν τὴν Περικλῆς ὑφίστασθαι εἰς Ἱερουσόλυμα.

17 Ἀπὸ δὲ τῆς Μιλήτης περὶ εἰς Ἐφέσον μετὰ καλεσάτο τῆς πρεσβυτέρης καὶ ὁκλήσεως.

18 Ὡς δὲ παρεγένοντο πρὸς αὐτὸν, εἶπεν αὐτοῖς Ὑμεῖς ἐπίστασθε, ἀπὸ πρώτης ἡμέρας ἀφ' ἧς ἐπέβη εἰς τὴν Ἀσίαν, πῶς μετ' ὑμῶν καὶ πάντα χρόνον ὑψώμην.

19 Διὰ τὸν τοῦ Κυρίου μὲν πάσης ταπεινοφροσύνης καὶ πολλῶν θαυμάτων καὶ σημειῶν, τῷ συμβάντων ἐν ταῖς ἐπιβουλῇ τῶν Ἰουδαίων.

20 Ὡς ὁδὸν ὡς ἐκλήμην τῷ συμφερόντων, καὶ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν καὶ διδάξαι ὑμᾶς δημοσίᾳ καὶ κήρυξαι.

21 Διαμαρτυρούμενος Ἰουδαίοις τε καὶ Ἑλλήσι καὶ εἰς

Θείν μετανοίαν, & πίσιν τ' εἰς τ' Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
χριστόν.

22 Καὶ νῦν ἰδὲ, ἐγὼ δεδεμένος τῷ πνεύματι, το-
ρνώμαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, τὰ ἐν αὐτῇ συνδεδησόντά μοι
μὴ εἶδω.

23 Πλὴν ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον κατὰ πόλιν μαρ-
τυρεῖται, λέγον ὅτι δεσμός με & θλίψεις μέ-
νουν.

24 Ἀλλ' ἡδυνός λόγον ποιῆσαι, ἡδὲ ἔχει τῷ ψυ-
γῶ μὴ πρίν ἐμὸν τῷ, οἷς τελειῶσαι τ' ἔργον μου
τ' χάρις, & τ' μαρτυροῦμαι ὡς ἔλαβον παρὰ τ' Κυρίου
Ἰησοῦ, μαρτυροῦσθαι τὸ εὐαγγέλιον τ' χάριτος τῷ
Θεῷ.

25 Καὶ νῦν ἰδὲ, ἐγὼ οἶδα ὅτι ἐκέπ' ὄψεσθε τὸ
πρόσωπόν μου ὑμεῖς πάντες, ἐν οἷς διήλθον κηρύσσων
τ' βασιλείαν τ' Θεοῦ.

26 Διὸ μαρτύρομαι ὑμῖν ἐν τῇ σήμερον ἡμέρῃ,
ὅτι κωδάρως ἐγὼ ἀπὸ τ' αἵματος πάντων.

27 Οὐ γὰρ ἡπίεσθ' ἀνέμω τ' μὴ ἀνὰ γυνῆ μου
πᾶσαν τ' βαλὼν τ' Θεῷ.

28 Προτέχετε ἑν ἑαυτοῖς, & πλητὶ τῷ ποιρνίῳ,
ἐν ᾧ ὑμεῖς τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον, ὅθεν ὑποσκόπης,
ποιμαίνειν τ' ἐκκλησίαν τ' Θεοῦ, ὡς πεποιήσατο μαρ-
τ' ἰδίῳ αἵματος.

29 Ἐγὼ γὰρ οἶδα τῆτο, ὅτι αἰτελοῦσονται μὲ τῷ
ὑφ' ἐν μὴ λύκοι βαρεῖς εἰς ὑμᾶς, μὴ φειδόμενοι τοῦ
ποιρνίου.

30 Καὶ οὗ ὑμῶν οὐτῷ ἀνὰσῆσονται ἄνδρες καλῶν-
τες διεστραμμένα, τ' ἀποσπῇν τὸς μεθ' ἡμᾶς ὁπίσω
οὐτῷ.

31 Διὸ παραγγέλλω, μνημονεύοντες ὅτι τρετίζω σὺν-
τα & ἡμέραν ἐκ ἐκείνων μὲ δακρύων νυκτερῶ ἔτα
ἐκαστον.

32 Καὶ τῶν παρ' ἐμὲ θέλω εἶναι ὑμᾶς, ἀδελφοί, τῷ
Θεῷ & τῷ λόγῳ τ' χάριτος αὐτοῦ, τῷ δυναμένῳ ἐποι-
καδοῦσθαι, & δύναι ὑμῖν κληρονομίαν ἐν τοῖς ἡγίαι-
στοις πάνσιν.

33 Ἀργυρεῖν ἢ χρυσίον ἢ ἱματισμῷ ἡδυνός ἐπεθύ-
μησα.

34 Αὐτῷ δὲ γινώσκετε, ὅτι ταῖς χροαίαις με & ποῖς
ὅτι μετ' ἐμὲ ἀπερέτῃσαν αἱ χεῖρες αὐταί.

35 Πάντα ἀπέδειξα ὑμῖν, ἐπ' ᾧ ἔτιω κοπιῶντας διὰ
ἀντιλαμβάνεσθαι τῷ ἀποδεκνόντων, μνημονεύειν τε τῷ
λόγῳ τ' Κυρίου Ἰησοῦ, ὅτι αὐτὸς εἶπε· Μακάριοι ἐσὶ
οἱ εὐδοκῶντες ἢ λαμβάνειν.

36 Καὶ ταῦτα εἰπὼν, θίς τὰ γόνατα αὐτῷ, σὺν
πάνσιν αὐτοῖς προσκύησαν.

37 Ἰκάρως δ' ἐγένετο κλισυθμός πάντων· & ἔπιτε-
σόντες ὑπὸ τοῦ τραχήλου τ' Παύλου κατιφύλαγον
αὐτόν.

38 Οἱ θυνώμενοι μάλιστα ὑπὸ τῷ λόγῳ, ὡς εἰρή-
 ὅτι κέει μέλλουσιν τὸ πρόσωπον αὐτῶν θιγέμεν· προσέ-
 τον ὃ αὐτῶν εἰς τὸ πλοῖον.

Κεφ. κα. 21.

1 **Ω**ς δὲ ἐγένετο ἀναχθῶσα ἡμᾶς ἀπο-
 σθέντας ἀπ' αὐτῶν, ἀδυδρυσάμεντες
 δορμὴν εἰς τὴν Κῶν, τῇ δὲ ἑξῆς εἰς τὴν Ρόδον, καὶ κει-
 εἰς Πάτρυν·

2 Καὶ ἀφύρνοντας πλοῖον διὰ περὶν εἰς Φοινίκην, καὶ
 βάντες ἀνέχθημεν.

3 Ἀναφάμεντες ὃ τὴν Κύπρον, καὶ καταλιπόντες
 Λάυνμον, ἐπλεύσαμεν εἰς Συρίαν, καὶ κατήχθημεν
 Τύρον· ὅκειτε γὰρ ὡς τὸ πλοῖον ἀποφορτισθῶμεν
 γόμεν.

4 Καὶ ἀφύρνοντας τῆς μεθυσίας, ἐπιμαίναμεν αὐ-
 τήν· ἡμέρας ἑπτὰ· οἵτινες τῷ Παύλῳ ἔλεγον διὰ τὴν Πι-
 ρυαν, μὴ ἀναβαίνειν εἰς Ἱερουσαλὴμ.

5 Ὅτε ὃ ἐγένετο ἡμᾶς ἑκαρτίσαι τὰς ἡμέρας,
 ἐξελθόντες ἐπορεύμεθα, προπεμπέντων ἡμᾶς π-
 των σὺν γυναῖξί καὶ τέκνοις, ἕως ἔξω τῆς πόλεως
 ἑλθόντες τὰ γόνατα ὑπὸ τὴν αἰγιαλὸν, προσηξ-
 μεθα.

6 Καὶ ἀσπασάμενοι ἀλλήλους, ἐπέβημεν εἰς
 πλοῖον· ὅκεινοι ὃ ἀπέστρεψαν εἰς τὰ ἑσθλὰ.

7 Ἡμεῖς ὃ τὸν πλὴν διὰ νύκτας, ἀπὸ Τ-
 ρου κατήχθημεν εἰς Πτολεμαῖδα· καὶ ἀσπασά-
 μοι τῆς ἀδελφῆς ἐμείναντες ἡμέραν μίαν παρ' αὐ-
 τῆς.

8 Τῇ δὲ ἐπαύριον ἐξελθόντες οἱ παρὶ τὸν Παῦλον
 ἡλθομεν εἰς Καισάρειαν· ἑλθόντες εἰς τὴν οἰκί-
 ας Φιλίππου τὸν ἀναγγελιστῆν, (ὃς αὐτοὶ ὅκ τῷ ἑπτὰ)
 μένοντες παρ' αὐτοῦ.

9 Τῷ ὅτε ἡμεῖς θυγατέρες κυρθῆνοι τίοντες πρὸς
 φεταῖναι.

10 Ἐπιμαίεντων ὃ ἡμεῖς ἡμέρας πλείους, κατὰ
 θεὸς πρὸς τὴν Ἰνδαίαν προφήτης ἐνόματι Ἀγού-
 ρος.

11 Καὶ ἐλθὼν πρὸς ἡμᾶς, καὶ ὥρας τῶν
 ζώων τὸν Παῦλον, δάσας τε αὐτῷ τὰς χεῖρας ἑλθόντος
 δὲ, ἔπει· Τὰδε λέγει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον·
 Τὸν ἄνθρωπον, ὃς ἐστὶν ὁ ζῶν σῶτης, ὑμεῖς δὲ ἴσασιν ὅτι
 Ἱερουσαλὴμ οἱ Ἰνδαῖοι, ἑλθόντες εἰς χεῖρας
 ἑσθλὰς.

12 Ὡς ὃ ἠκούσαμεν ταῦτα, περικαλῶμεν ἡμῖς τι
 ἑλθόντος τοῦτοιοι, καὶ μὴ ἀναβαίνειν αὐτὸν εἰς Ἱερου-
 σαλὴμ.

13 Απεκρίθη δὲ ὁ Πούλος· Τί ποιεῖτε, κλαίοντες καὶ συνθρυπτοντές με τῶν καρδίων; ἐγὼ γὰρ ἐμὸν δεδωκέναι, ἀλλὰ ἔτι ἀποδιδόναι εἰς Ἱερουσαλὴμ ὑπομένω· ἔχω ὑπὲρ τῆς ἐντομῆς τῆς Κυρίου Ἰησοῦ.

14 Μὴ πειθαρχομένη δὲ αὐτῇ, ἐσυχάζαμεν αἰτῶντες· Τὸ θελεῖν τῆς Κυρίου ἠκούσθαι.

15 Μετὰ δὲ ταῖς ἡμέραις ταύταις ἀποτακθῆσάμενοι ἀνεδίαιτομεν εἰς Ἱερουσαλὴμ.

16 Συνελθόν δὲ ἔτι τῶν μεθ' ἡμῶν ἀπὸ Καισαρείας σὺν ἡμῖν, ἄγοντες παρ' ᾧ ξενισθῶμεν, Μινάσωνι τῆς Κυρίου, ἀρχαίῳ μεθ' ἡμῶν.

17 Γενομένων ὅμως αὐτῶν εἰς Ἱερουσαλὴμ, αἰσμένους ἐν εἰρήνῃ ἡμῶς οἱ ἀδελφοί.

18 Τῇ δὲ ἐπιείκῃ εἰσήκει ὁ Πούλος σὺν ἡμῖν πρὸς Ἰάκωβον· πάντες τε παρεγένοντο οἱ πρεσβύτεροι.

19 Καὶ ἀποσπασάμενος αὐτὴς, ἐξηγείτο καθ' ἓν ἕκαστον ὃν ἐποίησεν ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ἔθνεσι διὰ τῆς χάριτος αὐτοῦ.

20 Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐδοξάζον τῇ Κυρίῳ, αἰτῶν τε αὐτῷ· Θεωρεῖτε ἀδελφεῖ, πόσαι μυριάδες ἡσὶν Ἰουδαῖοι τῶν πεπιστωκότων· καὶ πάντες ζυλοῦνται τῷ νόμῳ ὑπακούειν.

21 Κατηχήθησαν ὅμως οὗτοι, ὅτι ἀποστασίᾳ διδάσκουσιν ἀπὸ Μωσέως τῆς κατὰ τὰ ἔθνη πάντα Ἰουδαίῳ, λέγοντες μὴ ὑπακούειν αὐτῷ τὰ τέκνα, μηδὲ τοῖς ἐξουσιάζουσιν.

22 Τί ἢν ἔστι; πάντα δὲ πλῆθος συνελθεῖν· ἀκούσονται γὰρ ὅτι ἐλήλυθας.

23 Τῇ τῷ ἢν ποίησον ὃ σοι λέγομεν· Εἰσὶν ἡμῖν ἄνδρες τέσσαρες ὅχλοι ἔχοντες ἐφ' ἑαυτῶν.

24 Τύτῃς πρῶτος, ἀγνίσθαι σὺν αὐτοῖς, καὶ ἐπαλάσσειν ἐπ' αὐτοῖς, ἵνα ζυγίσκωνται τῷ κεφαλῇ· καὶ γινώσκει πάντες ὅτι ὢν κατηχῶνται ὑπὸ σὺ καὶ ἐσὶν, ἀλλὰ τοῖς καὶ αὐτοὺς τῶν νόμων φυλάττουσιν.

25 Περὶ ὅ τῶν πεπιστωκότων ἔθνων ἡμεῖς ἐπιστάμενοι, κρίναντες μηδὲν τοιοῦτον θεοῦ αὐτῆς, καὶ μὴ φυλάττειν αὐτοὺς τό, τε εὐδοκῶντων, ἔτι τὰς αἰσῶν, ἔτι αἰκνῶν, καὶ πορνείᾳ.

26 Τότε ὁ Πούλος πρῶτος τῶν ἀνδρῶν, τῇ ἐκείνῃ ἡμέρᾳ σὺν αὐτοῖς ἀγαθῶς ἐσκέψατο καὶ τὸ ἴδιον, διὰ τὴν ἡμέραν τῆς ἀποκλήσεως τῶν ἡμερῶν τῆς ἀγνοίας, καὶ ἡ προσλήψεως ὑπὲρ ἐνός ἐκαστοῦ αὐτῶν ὁ προσφύκει.

27 Ὡς δὲ ἐμελλόν αὐτὸν ἑπτὰ ἡμέραι συνταλῆσθαι, καὶ ἀπὸ τῆς Ἀσίας Ἰουδαῖοι θρασυμένους αὐτῷ ἐν τῇ ἑσπέρᾳ, συστρίξαν πάντα τὸ ὄχλον, ἔτι ἐβόλαι τὰς χεῖρας ἐπ' αὐτῷ,

28 Κραζόντες· Ἀνδρες Ἰσραηλῖται, βεβαιώτε·
 πότε εἰν ὁ ἀφθάρτος ὁ καὶ ἡ λαὸς ὁ νόμος τῆς
 πάντα πόρταχ· διδάσκον· ἐπὶ τε καὶ ἑλλήνας ἐ-
 κήρυγεν εἰς τὸ ἱερόν, καὶ νεκροῖσιν τὸν ἁγίον τόπον
 ταύτην.

29 (Ἡ δὲ αὖ καὶ ποσειδωνότις Τρόφιμον καὶ Ἐφείον
 ἐν τῇ πόλει σὺν αὐτῇ, ὃν ἐνομιζον ἐπὶ εἰς τὸ ἱερόν
 ἐκήρυγεν ὁ Παῦλος.)

30 Ἐκινήθη τε ἡ πόλις ἅλη, ὅτε ἐγένετο συνδρο-
 μὴ καὶ λαὸς· ὅτε ὑπελαβόμενοι τῷ Παύλῳ, ἔλκον αὐ-
 τὸν ἔξω τῷ ἱερῷ· ὅτε αὐθιγὸς ἀκλεισθησάναι αὐτὸν
 οὐκ ἔδυναντο.

31 Ζητούντων δὲ αὐτὸν ἀποκτεῖναι, ἀνέβη φάσις πρὸς
 χιλιάρχῳ καὶ σπείρης, ὅτι ὅλη συγκεχυται Ἰερουσα-
 λὴμ.

32 Ὅς δὲ θεωτῆς πρὸς λαβὴν σκοπιώτας ὅτε ἐκατοστή-
 χες, κατέδραμον ἐπ' αὐτῶν· οἱ δὲ ἰδόντες καὶ χιλιάρ-
 χος καὶ τῆς στρατιώτας, ἐπαύσαντο τυπτοντες τὸν Παῦ-
 λον.

33 Τότε ἐγγίσας ὁ χιλιάρχος ἐπελάβετο αὐτὸν, ὅτε
 ἐκέλευσε δεδυνάμει ἀλύσει διούσι· ὅτε ἐπυνθάνηται πρὸς
 αὐτὸν εἶν, καὶ τί εἰσι πεποιηαί.

34 Ἄλλοι δὲ ἄλλοι πρὸς ἐβόην ἐν τῷ ἔχλῳ· καὶ ἐντά-
 μνος δὲ γινώσκων τὸ ἀσφαλὲς διὰ καὶ τὸ ἐρύβον, ἐκέλευ-
 σεν ἀγεσθαι αὐτὸν εἰς τὸ παρεμβολῆν.

35 Ὅτε δὲ ἐγένετο ὑπὲρ τῆς ἀνιμωμένης, συνέβη
 βασταζεσθαι αὐτὸν ἀπὸ τῶν στρατιωτῶν διὰ τὴν βίαν καὶ
 ὅχλῳ.

36 Ἡ κοκχὸς καὶ τὸ πλῆθος καὶ λαὸς κράζον· Αἰνε-
 αὐτόν.

37 Μέλλων τε εἰσάγεσθαι εἰς τὴν παρεμβολὴν
 ὁ Παῦλος, λέγει πρὸς χιλιάρχῳ· Εἰ ἔξει μοι ἐπι-
 πῆν πρὸς σέ; Ὅτε δὲ εἶφη· Ἐλλήνοισι γινώ-
 σκει;

38 Οὐκ ἄρα σὺ εἶ ὁ Αἰγύπτιος ὁ πρὸς τήνδε τὴν
 ἡμερῶν ἀνίσταίσης, ὅτε ὤχλησάντων εἰς τὸ ἔρημον τῆς
 τετρακιχίλις ἀνδρῶν τῶν σικκοίων;

39 Εἶπε δὲ ὁ Παῦλος· Ἐγὼ ἀνδραποδὸς μὲν εἰμι Ἰου-
 δαῖος Ταρασῆς, καὶ Κιλικίας ἐν ἀσσίῃ πόλει πολί-
 της· δεόμεναι δὲ σὺ, ἐπίτρεψόν μοι λαλῆσαι πρὸς τὸν
 λαόν.

40 Ἐπιτρέψαντος δὲ αὐτῷ, ὁ Παῦλος ἐξῆλθεν ὑπὲρ τῶν
 ἀνιμωμένων κατέτεισε τῇ χειρὶ τῷ λαῷ· πολλὰς δὲ
 σιγῆς ἡσυχίας, προσεφώνησε τῷ Ἑβραϊδὶ διὰ τὴν
 τῶν λέγων.

Κεφ. κ β'. 22.

1 **Α** ἄνδρες ἀδελφοί καὶ πατέρες, ἀκούσα-
τέ μου τῆς πρὸς ὑμᾶς νῦν ἀπολο-
γίας.

2 (Ἀκούετε δὲ ὅτι τῇ Εὐαγγελίᾳ ἀφελήτω προσ-
ποιῶν αὐτοῖς, μᾶλλον παρέχον ἡσυχίαν, καὶ φη-
σιν.)

3 Ἐγὼ μὲν εἰμι ἀνὴρ Ἰουδαῖος, γεννημένος ἐν
αὐτῇ τῇ Κιλικίᾳ, ἀνατετραμμένος δὲ ἐν τῇ
πόλει ταύτῃ παρὰ τῆς πόδας Γαμαλιήλ, πεκαλού-
μενος κατὰ ἀκριβείαν τοῦ πατρῷου νόμου, ζήλω-
τῆς ὑπάρχων τοῦ Θεοῦ, καθὼς πάντες ὑμεῖς ἐστέ σὴ-
μιμοι.

4 Ὅς ταύτῃ τ' οὐδὲν ἐδίδωκα ἄχρι θανάτου, δις-
τάλῃ καὶ παραδιδὼς εἰς φυλακὰς ἀνδράσι τε ἔτι γυναί-
και.

5 Ὡς ἔτι ὁ ἀρχιερεὺς μαρτυρᾷ μοι, καὶ πᾶν πρέσ-
βυτέρειον παρ' ὧν ἔτι ὤπισθεν διεκρίθητε πρὸς τῆς
ἐκκλησίας, εἰς Δαμασκὸν ἐπορεύμενος, ἄξιον ἔτι
ἐκείναι ὄντας, δεδεμένους εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἵνα πικρη-
θῶσιν.

6 Ἐγένετο δὲ μοι πορεύμενος καὶ ἐγγιζόντι τῇ Δα-
μασκῇ πρὸς μισσημβρίαν, ἡξαμήνης ὅτι τ' ἤρλυν ὡς ἐκ-
τραῖψαι φῶς ἐκλήρον πρὸς ἐμέ.

7 Ἐπιστὸν τε εἰς τὸ ἔδαφος, καὶ ἤκουσα φωνῆς λεγού-
σης μοι· Σαῦλ, Σαῦλ, τί με διώκεις;

8 Ἐγὼ δὲ ἀπεκρίθην· Τίς εἰ Κύριε; Εἶπέν τε πρὸς
μέ· Ἐγὼ εἰμι Ἰησοῦς ὁ Ναζωρεῖος, ὃν σὺ διώ-
κεις.

9 Οἱ δὲ σὺν ἐμοὶ ὄντες τὸ μὲν φῶς ἐθαύμαζον,
ἔτι φοβοὶ ἐγένοντο· τὼ δὲ φωνῇ ἐκ ἡκαστῶν τοῦ
λαλήσαντός μοι.

10 Εἶπον δὲ· Τί ποιήσῃς, Κύριε; Ὁ δὲ Κύριος
εἶπέν μοι· Ἀνάστη πορεύου εἰς Δαμασκόν· κακῇ
σοι λαληθήσεται πρὸς πάντων ὧν τέτακται σοι ποιῆ-
σαι.

11 Ὡς δὲ ἦν συνέβλεπον ἀπὸ τ' δόξης τ' φωτός ἐ-
κείνου, χειραγωγούμενοι ὑπὸ τῷ συνόπτῳ μοι, ἦλθον
εἰς Δαμασκόν.

12 Ἀνδρίας δέ τις, ἀνὴρ ὡσεβὴς κατὰ τὸν νό-
μον, μαρτυρούμενος ὑπὸ πάντων τῷ κατοικούντων Ἰου-
δαίων.

13 Ἐλθὼν πρὸς με, ἔτι ὥσπερ εἶπέν μοι· Σαῦλ
ἀδελφε, ἀνάβλεψον. Καὶ γὰρ αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἀνέβλεψα
εἰς αὐτόν.

14 Ὁ δὲ εἶπεν· Ὁ Θεὸς τῷ Πατρίῳ ἡμῶν προσ-
χειρίσατό σε γινῶναι τὸ θέλημα αὐτοῦ, καὶ ἰδεῖν τ' εὐ-
χαρίαν, ἔτι ἀκούσαι φωνῇ ὅτι τ' σήμερος αὐτῷ.

15 Ὅπ' ἔσθ' μαρτυροῦντες αὐτῷ πρὸς πάντας ἀνθρώπους, ὅτι ἰσχυρὸς ἔστι καὶ θεὸς.

16 Καὶ νῦν τί μέλλεις; ἀπαστὰς βάπτισαι, καὶ ἀπὸ-
κτεῖναι τὰς ἀμαρτίας σου, κατακαλίσσας τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου.

17 Ἐγένετο δέ μοι ἀποσφύδῃσι εἰς Γερουσίαν, καὶ προσευχόμενῳ μὲν ἐν τῷ ἱερῷ, φωνέσθαι με ἐν ἐκ-
τασίᾳ.

18 Καὶ ἰδὼν καὶ λέγοντά μοι· Στεῦσον, καὶ ἔξα-
λθε ἀπὸ ταύτης τῆς Γερουσίας· διότι ἐπαρδείξοντάς σου τὰς μαρτυρίας σου ἐμὴν.

19 Καὶ ὡς ἔειπον· Κύριε, αὐτοὶ ἰπνίσαντα ὅτι ἐγὼ
ἐκείνῳ φυλακίζον καὶ δέρον καὶ τὰς συναγωγὰς τὰς πε-
τλούσας ὑπὲρ σέ.

20 Καὶ ὅτε ἤρξατο τὸ αἶμα Στεφάνῳ καὶ μαρτυροῦ-
σθαι, καὶ αὐτοὶ ἡμέλῃ ἐφεσῶς, καὶ συνάγουσιν τῇ ἀμαρ-
σίᾳ αὐτῇ, καὶ φυλάσσον τὰ ἱμάτια τῶν ἀμαρτάντων αὐ-
τῶν.

21 Καὶ εἶπε πρὸς με· Περσὲν· ὅτι ἐγὼ εἰς ἔθνη με-
ταρπύσας ἀποστέλλω σε.

22 Ἄνθρωπος ὅμως αὐτῷ ἄλλοι τάττει καὶ λόγῳ, καὶ ἐπὶ ἡμῶν
φασὶν αὐτῷ, λέγοντες· Αἴρε ἀπὸ τοῦ γῆς καὶ ποταμῶν
καὶ καθ' ἡμῶν αὐτῷ ζῆν.

23 Κραυγάζοντων ὅμως αὐτῷ, καὶ ῥιπνύοντων τὰ ἱμάτια,
καὶ κοινοῦ βαλλόντων εἰς τὸ ἄερα.

24 Ἐκείλυσεν αὐτῷ ὁ χιλιάρχος ἀγασθῆναι εἰς τὴν πα-
ριμβολὴν, εἰπὼν μάλιστα ἀρετὰ εἶναι αὐτόν· ἵνα ὑπὸ
γὰρ δι' αὐτὸν αἰτίᾳ ἔσθ' ἐπιφώνων αὐτῷ.

25 Ὡς ὅτε προέτεινεν αὐτῷ τοῖς ἱμασίν, εἶπε πρὸς τὸ
ἑστῶτα ἐκατόνταρχον ὁ Παῦλος· Εἰ ἀνθρώπου Ῥωμαίου
ἐξ ἀκατάκριτον ἔξεις ὑμῖν μάλιστα;

26 Ἀκῆσαι ὅτε ὁ ἐκατόνταρχος, προσελθὼν ἀπήγγε-
λε τῷ χιλιάρχῳ, λέγων· Ὅρα τί μέλλεις ποιεῖν· ὁ γὰρ
ἀνθρώπος ἔσθ' Ῥωμαῖός ἐστι.

27 Προσελθὼν ὅτε ὁ χιλιάρχος ἔειπεν αὐτῷ· Λέγε μοι,
εἰ σὺ Ῥωμαῖός εἱ; Ὁ δὲ ἔφη· Ναί.

28 Ἀπικρίθη τε ὁ χιλιάρχος· Εγὼ πολλὰ κατε-
λαίμην πλὴν πολιτείας ταύτης ἐκτενέμεν. Ὁ δὲ Παῦλος
ἔφη· Εἰ μὴ καὶ ἐγὼ γέννημαί.

29 Εὐθέως ἦν ἀπὸ ἡσυχίας αὐτῷ οἱ μέλλοντες αὐτῷ
ἀρετὰ εἶναι· καὶ ὁ χιλιάρχος δὲ ἐφοβήθη ὑπαγῶν ὅτι
Ῥωμαῖός ἐστι, καὶ ὅτι αὐτῷ διδασκός.

30 Τῇ δὲ ἐπαύριον βολόμενος παῖς τὸ ἀσφαλές,
τὸ, τί κατηγορεῖται παρὰ τῶν Ἰουδαίων, ἔλασεν αὐτῷ
ἀπὸ τῶν δεσμῶν, καὶ ἐκείλυσεν ἐλθεῖν τὸς ἀρχιερεῖς
καὶ ὅλον τὸ συνέδριον αὐτῷ· καὶ καταγωγὴν τοῦ Παύλου
ἔστησεν εἰς αὐτὸς.

Κεφ. κγ' 23.

1 **Α** Τενίσας δὲ ὁ Παῦλος τῷ συνεδρίῳ, κίτην·
 Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐγὼ πάση συνεκδήσει
 ἀγαθῇ πεπολιτόμην τῷ Θεῷ ἄχρι ταύτης τῆς ἡμέ-
 ρας.

2 Ὁ δὲ ἀρχιερεὺς Ἀνδρίαν ἐπέταξε τοῖς παρευῶσιν
 αὐτῷ τύπτεν αὐτὸ τὸ σῶμα.

3 Τότε ὁ Παῦλος πρὸς αὐτὸν εἶπε· Τύπτεν σὲ μέλ-
 λι ὁ Θεός, τοῖς χε κεκοιναμένε· Ἐ σὺ κἀὐτὸ κρίνεις
 με καὶ τὸ νόμον, ἔ παρρησιῶν κηλύεις με τύπτε-
 σθαι;

4 Οἱ δὲ παρευῶντες εἶπον· Τὸν ἀρχιερεῖα τὸ Θεῷ
 λοιδόρει;

5 Εἶφη τε ὁ Παῦλος· Οὐκ ἔδωκ, ἀδελφοί, ἐπὶ
 ἐστὶν ἀρχιερεὺς· γέγραπται γάρ· Ἀρχонта τὸ λαὸν
 οὐκ ἔρεος κακῶς.

6 Γινώσκων δὲ ὁ Παῦλος ὅτι τὸ ἐν μέσῳ ἐστὶ σαδδου-
 καίων, τὸ δὲ ἕτερον φαρισαίων, ἐκράξεν ἐν τῷ συνε-
 δρίῳ· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐγὼ φαρισαῖός εἰμι, υἱὸς
 φαρισαίου· περὶ ἐκπίδος ἔ ἀναστάσεως νεκρῶν ἐγὼ κρί-
 νωμαι.

7 Τῷ τε αὐτῷ λαλήσας, ἐγένετο χάσις τῷ
 φαρισαίῳ ἔ τῷ σαδδουκαίῳ· ἔ ἐκίσθη τὸ πλῆ-
 θος.

8 Σαδδουκαῖοι μὲν γὰρ λέγουσι μὴ εἶναι ἀνάστασιν,
 καὶ ἀγγελον, μήτε Πνεῦμα· φαρισαῖοι δὲ ὁμολογῶ-
 σι τὰ αἰσθητά.

9 Εἰγένετο δὲ κρηγὺ μεγάλη· ἔ ἀναστάντες οἱ
 γραμματεῖς τὸ μέρος τῷ φαρισαίῳ διεμάχοντο, λή-
 γοντες· Οὐδὲν κακὸν αἰσίζομεν ἐν τῷ ἀνδρώπῳ τῷ-
 τῷ· εἰ δὲ πνεῦμα ἐλάλησεν αὐτῷ, ἢ ἀγγελος, μὴ
 διεμαχῶμεν.

10 Παλλὰς δὲ ἡγεμένης σύψεως, βλάβηδεν ὁ
 χιλιάρχος μὴ διασπασθῇ ὁ Παῦλος ἀπὸ αὐ-
 τῷ, ἐκέλευσε τὸ σπράγμα καταβάν ἀρπάσαι
 αὐτὸν ἐκ μέσου αὐτῷ, ἄγειν τε εἰς τὴν παρεμ-
 βολίαν.

11 Τῇ δὲ ὑπαίσῃ νυκτὶ ὑπνίσας αὐτῷ ὁ Κύριος εἶ-
 πε· Θάρσει Παῦλε· ὡς γὰρ διεμαρτύροι τὰ περὶ σοῦ
 ἐν Ἱερουσαλὴμ, ὕτω σε δεῖ καὶ εἰς Ῥώμην μαρτυ-
 ρῆσαι.

12 Γινώσκων δὲ ἡμέρας, ποιήσαντες τινας τῶν ἱε-
 ρέων συστροφίαν, ἀνεθεματίσαν ἐαυτοῖς, λεγοντες
 μήτε φθάνειν, μήτε πίνειν εἰς τὸ ἀτεκνέωσι τὸν
 Παῦλον.

13 Ἡστῶν δὲ πλείους τετραράκοντα οἱ ταῦτῳ τῷ
 συνομωσίδι πεποιηκότες.

14 Οἱ πρὸς προσελθόντες τοῖς ἀρχιερεσὶ καὶ τοῖς πρεσβυτεροῖς, εἶπον· Ἀναθίμεν τι ἀντιδικησάμενον ἰσχυρῶς, μηδενὸς γινώσκειν ἔως ὃ ἀποκτείνωμεν τὸ Παῦλον.

15 Νῦν ἢν ὑμεῖς ἐμφανίσαιτε τῷ χιλιάρχῳ σὺν τῷ συνεδρίῳ ὅπως αὐτοῦ αὐτὸ καταγάγῃ πρὸς ὑμᾶς, ὡς μέλλοντες διαγινώσκειν ἀκριβέστερον τὰ πρὸς αὐτὸν· ἡμεῖς δὲ πρὸς τὸ ἐγγίσιαι αὐτῷ, ἑτοιμοὶ ἐσμεν τὸ ἀνελθεῖν αὐτόν.

16 Ἀκούσας δὲ ὁ υἱὸς τοῦ ἀδελφοῦ Παύλου τὸ εὐδοῦν, παραγγέλλων ἐς εἰσληθῶν εἰς τὸ παρεμβολῶν, ὡς ἐγγίσιαι τῷ Παύλῳ.

17 Προσκαλεσάμενος δὲ ὁ Παῦλος ἕνα τῶν εκατοπτάρχων, εἶπεν· Τὸν κελίαν τῆτον ἀπάγαγε πρὸς τὸν χιλιάρχον· ἔχει γὰρ τι ἀπαγγεῖλαι αὐτῷ.

18 Οἱ μὲν ἢν παραλαβὼν αὐτὸν ἤγαγε πρὸς τὸν χιλιάρχον, καὶ φασιν· Οἱ δέσμιος Παῦλος, προσκαλεσάμενος με ἤρωτησεν τῆτον τὸν νεανίαν ἀπάγειν πρὸς σε, ἔχοντά τι λαλῆσαι σοι.

19 Ἐπιλαβόμενος δὲ τὸν χιρὸς αὐτοῦ ὁ χιλιάρχος, ἐπαχρώσας κατ' ἰδίαν, ἐπυνθάνετο· Τί ἐστὶ τὸ ἔχεις ἀπαγγεῖλαι μοι;

20 Εἶπε δὲ· Ὅτι οἱ Ἰουδαῖοι συνέθιστο τὸ ἐρωτῆσαι σε ὅπως αὐτοῦ εἰς τὸ συνέδριον καταγάγῃς τὸν Παῦλον, ὡς μέλλοντες τι ἀκριβέστερον πυνθάνεσθαι πρὸς αὐτόν.

21 Σὺ ἢν μὴ πεισθῇς αὐτοῖς· ἐπειδὴ οὐκ ἔστιν αὐτῷ ὡς αὐτῷ ἄνδρες, πλείους τρωταρρόκοντα, οἳ πνεύσαντες ἀντιδικήσαντες αὐτῷ μήτε φαγεῖν μήτε πίνειν ἔως ὃ ἀνέλθῃ αὐτόν· καὶ σὺν ἑτοιμοὶ εἰσι, προσδεχόμενοι τὸ ἀπὸ σοῦ ἐπαγγεῖλαι.

22 Οἱ μὲν ἢν χιλιάρχος ἀπέλυσε τὸν νεανίαν, παραγγιλάς μηδενὶ ἐκλαλῆσαι, ὅτι ταῦτα ἐνεφάνισεν πρὸς με.

23 Καὶ προσκαλεσάμενος δύο τινὰς τῶν ἐκπεπονημένων, εἶπεν· Ἐτοιμάσατε στρατιῶται διακοσίους, ὅσοι παραβῶσιν εἰς Καισαρείας, καὶ ἵππεῖς ἰσχυρομένους· καὶ δεξιολάβας διακοσίους, ἀπὸ τρίτης ὥρας τῆς νυκτός.

24 Κτήνῃ τε παραστήσει, ἵνα ὑπεβιβάσωνται τὸν Παῦλον διασώσωσι πρὸς Φήλικα τὸν ἡγεμόνα.

25 Γράψας ὑποσώλων πρὸς ἡγεμόνα τὸν τύπον τοῦτον.

26 Κλαύδιος Αὐτίας τῷ κρατίστῳ ἡγεμόνι Φήλικι χαίρειν.

27 Τὸν ἄνδρα τῆτον συλληφθέντα ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων, καὶ μέλλοντα ἀναιρεῖσθαι ὑπ' αὐτῶν, ὑποσώων σὺν τῷ στρατόματι ὑπειρόμηνω αὐτῷ, μεθ' ὃν ὅτι Ἰουδαῖοι ἐστὶν.

28 Παλιόμενος δὲ γινώται τῶν αἰτίων δι' ἃς ἐδικά-
λυν αὐτὸν, κατήγαγον αὐτὸν εἰς τὸ συναδρᾶν
αὐτῶν.

29 Οὐ εὗρον ἐγκαλέμενον πρὸς ζητημάτων ἢ τόμῳ
αὐτοῦ, μηδὲν δὲ ἄξιον θανάτου ἢ δεσμών ἐγκλημα
ἔχοντα.

30 Μὴνθηθείσης δὲ μοι ὑπεβλήης εἰς ἡμέτερα μέ-
λειν ἐσεσθαι ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων, ἔβρωτ' ἐπέμψα πρὸς
σε, παραγγέλων ἡ τοῖς κατηγόροις λέγειν τὰ πρὸς
αὐτὸν ὅτι σὺ Εὐρώσο.

31 Οἱ μὲν ἄν στρατιῶται καὶ τὸ διατεταγμένον
αὐτοῖς, ἀρπαχθόντες ἢ Παῦλον, ἤγαγον διὰ τὴν νυκ-
τὸς εἰς ἡντιπατρίδα.

32 Τῇ δὲ ἐπιύριον ἐστάμεν τῆς ἡμέρας πε-
ρὶεσθαι σὺν αὐτῷ, ὑπεσφείδω εἰς τὴν παρεμ-
βολήν.

33 Οἵ πινες ἐσελθόντες εἰς ἡ Καيسάρειαν, ἡ ἀνα-
δόντες ἢ ὁπισθὼν τῇ ἡγεμονίᾳ, παρέστησαν ἡ Παῦ-
λῳ αὐτῷ.

34 Ἀναγνὼς δὲ ὁ ἡγεμὼν, ἡ ἐπερωτήσας ὡς τοί-
ως ἐπαρχίας ἐστὶ, ἡ πυθόμενος ὡς ἀπὸ Κιλι-
κίας.

35 Δικαίωμαί σε, ἔφη, ὅταν ἡ οἱ κατήγοροί σε
παραγένοιται. Ἐκέλευσε τε αὐτὸν ὅν τῷ πραιτωρίῳ ἡ
Ἐρώδης φυλάσσειν.

Κεφ. κδ'. 24.

1 **Μ**ετά δὲ πέντε ἡμέρας κατέβη ὁ ἀρχιερεὺς
Ἀνάνιας μὲν τῶν πρεσβυτέρων, ἡ ῥήτο-
ρος Τερτυλλῆς τινὸς, οἵ πινες ἐνεφάρισαν τῷ ἡγεμονί
καὶ τῷ Παύλῳ.

2 Κληθέντος δὲ αὐτοῦ, ἡῤατο κατηγορεῖν ὁ Τέρτυλ-
λος, λέγων.

3 Πολλῆς εἰρήνης τυγχάνοντες διὰ σὺν, ἡ κατορθω-
μάτων ὀφεισμένων τῷ ἔθνει τῷ τῷ διὰ τὴν σῆς προνοίας,
πάντη τε καὶ πάντα καὶ ἀποδεχομεθα. κρατίστε Φηλῆς,
μὲν πάσης εὐχαριστίας.

4 Ἰνὺ δὲ μὴ ὅτι πλείον σε ἐγκόπτω, παρ-
ακαλῶ ἀκοῦσαι σε ἡμῶν συντόμως, τῇ σῇ ὑπο-
κρίσει.

5 Εὐρόντες γὰρ τὸν ἄνδρα σῶτον λοιμὸν, καὶ κη-
ρῶντα τῷ πᾶσι τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς κατὰ τὴν οἰ-
κηνίῳ, πρωτοσυντῶν τε τῆς τῷ Ναζωραίων αἰρέ-
σεως.

ἡ ὁ ὅς ἡ τὸ ἱερὸν ἐπέερατε βεβηλώσαι, ὅν καὶ ὁκρα-
τήσαμεν, ἡ καὶ ἡμῶντον νόμον ἡδελύσκαμεν
κρίσειν.

7 Παρελθὼν δὲ Λυσίας ὁ χιλιάρχος, μὲ πολλῇ
βίαι ἐκ τῶν χειρῶν ἡμῶν ἀπήγαγε.

8 Κελύσις τῆς κατηγορίας αὐτῆς ἔρχομαι ὑπὲρ σε
παρ' ἡ δικασθῆ αὐτὸς ἀνακρίνας πρὸ πάντων τούτων ὑπα-
γνῶμαι, ὡς ἡμεῖς κατηγοροῦμεν αὐτὸν.

9 Συνέθεντο δὲ ἔσσι Ἰνδαῖοι, φάσκοντες ταῦτα
ἕτως ἔχειν.

10 Ἀπεκρίθη δὲ ὁ Παῦλος, νοῦσταυτος αὐτῷ τῷ ἡ-
γαμόνας λέγειν. Ἐκ πολλῶν ἐγὼ ἔντα σε κενῶ τῷ
ἐγὼ τὴν ὑπὸς αὐτοῦ, εὐθυμότερον τὰ πρὸς ἡμῶν
ἀπολογησάμενα.

11 Δυναμὲν σὺ γινώσκαι, ὅτι ἡ πλείη ἐπὶ μοι ἡμέ-
ρι ἡ δεκάδυο, ἀφ' ἧς ἀνέβην προσκυνῆσαι ἐν Ἱερου-
σαλήμ.

12 Καὶ ἔτε ἐν τῷ ἱερῷ αὐτὸν με πρὸς τινα διωλε-
γόμενον, ἡ ὑποπείσασιν ποιῶντα ἔχλη, ἔτε ἐν ταῖς
συμφοραῖς, ἔτε καὶ τὸ πόλιν.

13 Οὐτε παρητήσαι δύναμαι πρὸς ὧν εὖν κατηγοροῦ-
σι με.

14 Οὐ μολογῶ δὲ τῆτό σοι, ὅτι καὶ τὸ δόξ, ὡς λέ-
γεται ἀρεσί, ἔτω λατρεύω τῷ πατρί Θεῷ, πιστεύω
τῷσι τοῖς καὶ τὸ νόμον ἔσσι τοῖς προφῆταις γεγραμ-
μένοις.

15 Ἐλπίδα ἔχων εἰς τὸ Θεόν, ὡς ἔσσι αὐτῷ ἔπι
προσδύχονται, ἀνάστασιν μέλλειν ἔσεσθαι νεκρῶν, δι-
καίων τε ἔσσι ἀδίκων.

16 Ἐν τούτῳ δὲ αὐτὸς ἀσκῶ, ἀπρόσκοπον συνή-
δασιν, ἔχων πρὸς τὸν Θεόν, καὶ τὴν ἀνθρώπου δι-
καιοσύνην.

17 Δι' ἐγὼ δὲ πλεόντων παρεχόμενον εἶμι
μεσύνει ποιῶν ὡς τὸ ἔθνος μου καὶ προσ-
φύει.

18 Ἐν οἷς εὐρὴν με ἡγνισμένον ἐν τῷ ἱερῷ, ἡ μὲν
ἔχλη, ἀλλ' μὲν θορύβῳ, τινὲς ἀπὸ τῆς Ἀσίας Ἰου-
δαῖοι.

19 Οὗς ἔδει ὑπὲρ σὺ παρῆναι, καὶ κατηγορεῖν εἰ τι ἔ-
χειν πρὸς με.

20 Ἡ αὐτῷ ἡτοι ἐνάτωσθαι καὶ τι εὖρον ἐν ἐμοὶ ἂν
ἀδικησά, γὰρ με ὑπὲρ τὸ συνέδριον.

21 Ἡ πρὸς μίαν ταύτης φωνῆς, ἡς ἐκαστὸς ἐπὶ
ἐν αὐτῇ. Ὅτι πρὸς ἀναστάσει νεκρῶν ἐγὼ κρίνομαι
σημεῖον ὑφ' ὧν.

22 Ἀκίστας δὲ ταῦτα ὁ Φῆλιξ ἀνιβάλετο αὐτῷ,
ἀκριβέστερον εἰδὼς τὰ πρὸς τὸ δόξ, ἡμῶν. Ὅτι δὲ ἡ
σφας ὁ χιλιάρχος καταβῆ, διωγνῶσθαι τὸ κατ'
ἐμὲ.

23 Διαταξάμενός τε τῷ ἐπατοντάρχη τηρεῖσθαι
τὸν Παῦλον, ἔχειν τε ἀκίστον, καὶ μηδὲν κωλύει
τῷ εἰδὼς αὐτὸν ἀσφαλεῖς, ἡ προσέρχεται
αὐτῷ.

24 Μετὰ δὲ ἡμέρας πέντε παραχρυσόμενος ὁ Φῆλιξ
σὺν Δρησίλλῃ τῇ γυναικὶ αὐτοῦ ἦσθ Ἰουδαίαι, μετε-
πέμψατο τὸ Παῦλον, ἃ ἤκουσεν αὐτὸν περὶ τῆς Χριστοῦ
πίστεως.

25 Διαλεγόμενον δὲ αὐτὸν περὶ δικαιοσύνης ἃ ἐγκρη-
τικής καὶ τῆς κρίματος τῆς μέλλοντος ἔσεσθαι, ἔμφο-
ρος ἡσόμενος ὁ Φῆλιξ ἀπεκρίθη· Τὸ νῦν ἔχον πορνεῖν
καὶ ὄν μεταλαβὼν μετακαλέσεται σε·

26 Ἄμην δὲ καὶ ἐπιτίζων, ὅτι χρήματα δοθήτι-
ται αὐτῷ ὑπὸ τῆς Παύλου, ὅπως λύσῃ αὐτόν· διό
καὶ πικρότερον αὐτῷ μεταπειπόμενος, ὡμίλει
αὐτῷ.

27 Διετίκας δὲ πληρωθείσης ἔλαβε διάδοχον ὃν Φῆ-
λιξ Πόρκιον Φῆσον· θέλων τε χάριτας καταθέσθαι
τοῖς Ἰουδαίοις ὁ Φῆλιξ, κατέλιπε τὸν Παῦλον δεδε-
μιγόν·

Κεφ. κ.ε. 25.

1 **Φ**ῆσος ὁ ὑπὸ βασιλῆος ἐπαρχίας, μετὰ τρεῖς ἡ-
μέρας ἀνέβη εἰς Ἱερουσόλυμα ἀπὸ Καισα-
ρείας.

2 Ἐνφανίσαν δὲ αὐτῷ ὁ ἀρχιερεὺς καὶ οἱ πρῶτοι
τῶν Ἰουδαίων καὶ τὸ Παῦλον, καὶ παρεκάλουν αὐ-
τόν,

3 Αἰτήμενοι χάριν κατ' αὐτὸν, ὅπως μετακτέμῃται
αὐτὸν εἰς Ἱερουσαλὴμ· συνέδρων ποιῶντες ἀνελεῖν αὐτὸν καὶ
τὸν δόγον.

4 Ὁ μὲν ὅν Φῆσος ἀπεκρίθη τηρεῖσθαι τὸ Παῦλον
ἐν Καισαρείᾳ, αὐτὸν δὲ μέλλειν ἐν τάχει ἀποπεμ-
θεῖν.

5 Οἱ ὅν δυνατοὶ ἐν ἡμῖν, φησὶ, συγκαταβαίν-
τες, εἴ τι ἐστὶν ἐν τῷ ἀνδρὶ τυτῷ, καταγορεύσωμεν
αὐτῷ.

6 Διατρέψας δὲ ἐν αὐτοῖς ἡμέρας πλείους ἢ δέκα,
καταβὰς εἰς Καισαρείαν, τῇ ἐπαύριον καθί-
σας ἐπὶ τοῦ βήματος, ἐκέλευσε τὸν Παῦλον ἀχ-
θῆναι.

7 Παραχρυσόμενον δὲ αὐτὸν, παρέστησαν οἱ ἀπὸ Ἱερο-
σολύμων καταβεβηκότες Ἰουδαῖοι, πολλὰ καὶ βαρεὰ αἰ-
τιώματα φέροντες καὶ τὸ Παῦλον, ὃ ἔκ ἔχον ἀπο-
λῆχει·

8 Αἰτολοζυμένη αὐτῷ· Ὅτι ἢ τε εἰς τὸν νόμον τῶν
Ἰουδαίων, ἢ τε εἰς τὸ ἱερόν, ἢ τε εἰς Καίσαρος τι ἡ-
μαρτον·

9 Ὁ Φῆσος δὲ τοῖς Ἰουδαίοις δίδων χάριν κατα-
θέσθαι, ἀπεκρυσθὲς τῷ Παύλῳ εἶπε· Θέλεις εἰς
Ν 6 Ἱερο-

Γερσόλυμα αἰαθῆς, ὅκῃ πρὸς τῆς κτίσεως ἐν
ἐμῇ;

10 Εἶπε δὲ ὁ Παῦλος· Ἐπὶ τῷ βήματι Καίσαρος
ἐστὼς ἐμὴ, ἢ με δεῖ κρῖνεσθαι· Ἰουδαίως ἔθεν ἡδίκη-
σα, ὅν ἐ σὺ κἀλλίον ὑπεγινώσκεις.

11 Εἰ μὲν γὰρ ἀδικῶ, καὶ ἄξιον θανάτου πέπραχά τι,
ὃ παραίτημαι τὸ ἀποθῆναι· εἰ δὲ ἡδὲν ἐστὶν ὧν ἡτοί
κατηγορεῖσθαι με, ἡδέως με δύνάται αὐτοῖς χαρίσασθαι.
Καίσαρα ὑπεκκλήμαι.

12 Τότε ὁ Φῆτος συλλαλήσας μὲν τῷ συμβουλῇ, ἀ-
πεκρίθη· Καίσαρα ὑπεκλήσασθαι; ὑπὲρ Καίσαρα πο-
ρεύσῃ.

13 Ἡμερῶν δὲ διαχρομένων τινῶν, Ἀγρίππας ὁ
βασίλευς ἐ Βερνίκῃ κατώτησεν εἰς Καισάρειαν, ἀπο-
σπόμενος τῷ Φῆτον.

14 Ὡς ὅτε πλήρης ἡμέρας διέτριβον ὅκῃ, ὁ ἀφ᾽ ἑσπε-
ρας βασιλεὺς ἀνέβητο τὰ κατὰ τὸν Παῦλον, λέγων·
Ἀνὴρ τις ἐστὶ καταλεηλημένος ὑπὸ Φήλικος δίο-
μης;

15 Περὶ ᾧ, γινόμενον με εἰς Γερσόλυμα, ἐνιφαν-
τῶν οἱ ἀρχιερεῖς καὶ οἱ πρεσβύτεροι τῶν Ἰουδαίων, αἰτή-
μενοι κατ' αὐτὸ δίκην.

16 Πρὸς δὲ ἀπεκρίθων, ὅτι ἐκ ἐστὶν ἔθος Ἰου-
δαίοις χαρίζεσθαι τινα ἄνθρωπον εἰς ἀπόλειπον, πρὶν
ἢ ὁ κατηγορούμενος κατὰ πρόσωπον ἔχει τῆς κατηγο-
ρίας, τόπον τε ἀπολογίας λαβεῖν πρὸς τὸν ἐγκλημα-
τος.

17 Συνελθόντων ἡν αὐτῷ ἐπαύριον, ἀναβολῇ μηδε-
μίαν ποιησόμενος, τῇ ἐξῆς καθίστας ἐπὶ τῷ βήματι,
ἐπίλουσά αὐτῶν καὶ ἄνδρα.

18 Περὶ ᾧ τεθνήσκουσιν εἰς κατηγοροὶ ἡδεμίαν αἰτίαν
ἐπέφερον ὧν ὑπενέων ἐγώ.

19 Ζητήματα δὲ πᾶσι πρὸς τῆς ἐδῆς δαυτιδαίμωνος
ἔχον πρὸς αὐτὸν, καὶ περὶ τίνος Ἰησοῦ τεθνηκότος, ὃν
ἐφασκιν ὁ Παῦλος ζῆν.

20 Ἀπορώμενος δὲ ἐγὼ εἰς τὸ πρὸς τὸν ζήτησιν, ἰ-
σχυον εἰ βούλοιο πορεύεσθαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐκ-
κρίνεσθαι πρὸς τὸν.

21 Τῷ δὲ Παύλῳ ἐπικαλεσαμένη τῇ θῆναι αὐ-
τὸν εἰς τὴν τῇ Σεβαστοῦ διαγνώσιν, ἐπέλυσεν
τηρεῖσθαι αὐτὸν, ὥς ὃ περιέβη αὐτὸν πρὸς Καί-
σαρα.

22 Ἀγρίππας δὲ πρὸς τὸν Φῆτον ἔφη· Ἐβουλόμην ἐ-
στὼς αὐτῷ ἄνθρωπον ἀκῆσαι. Ὁ δὲ· Ἀδελφόν, φησὶν
ἐμὴ αὐτῷ.

23 Τῇ ᾗ ἐπαύριον ἐλθόντος τῷ Ἀγρίππᾳ καὶ τῷ Βερ-
νίκῃ μὲν πολλῆς φαντασίας, καὶ ἡσυχάζοντος εἰς τὸ
προσθένον σὺν τε τοῖς χιλιάρχοις, καὶ ἀνδράσι τοῖς
κατὰ Ἱεροσόλυμα καὶ πάλαι· καὶ κελύσαντος τῷ Φῆτι
ἔχθρῃ ὁ Παῦλος.

24 Καὶ φησὶν ὁ Φῆσος· Ἀγρίππα βασιλεῦ, καὶ πάντες οἱ συμπρόντες ἡμῖν ἄνδρες, θεωρεῖτε τοῦτον περὶ οὗ πᾶν τὸ πλῆθος τῶν Ἰουδαίων ἐν τῇ Ἱερουσαλὺμοις καὶ ἐνθάδε, ὑπεβούδυντες μὴ δαῖν ζῆν αὐτὸν μενέει.

25 Ἐγὼ δὲ καταληβόμενος μηδὲν ἄξιον θλόατο αὐτῷ πετραχέαι, & αὐτῷ ὃ τότε ὑπικαλεσαμένη τὴ Σιβαῖον, ἔκρινα πέμπην αὐτῷ.

26 Περὶ οὗ ἀσφαλές τι γράψαι τῷ Κυρίῳ οὐκ ἔχω· διὸ προηγάγον αὐτὸν ἐφ' ὑμῶν, & μάλιστα ὑπὸ σοῦ, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ὅπως τῆς ἀνακρίσεως ἡγομένης καὶ τι γράψαι.

27 Ἀλλ' ἄρ' οὐ γὰρ μοι δοκῇ, πέμποντα δέσμιον, καὶ ἐταί· κατ' αὐτῇ αἰτίας σκαῖναι.

Κεφ. κγ'. 16.

1 ἈΓρίππας δὲ πρὸς τὸν Ροῦλον ἔφη· Ἐπιτρέπεται τοι ὥστε σεαυτοῦ ἀγγεῖν. Τότε ὁ Παῦλος ἀπελογεῖτο, ὁκτείνας τὴν αἰτίαν.

2 Περὶ πάντων ὧν ἐγκληῖμαι ὑπὸ Ἰουδαίων, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ἡγήμαι ἐμαυτὸν μακάριον μέλλον ἀπολογεῖσθαι ὑπὸ σῇ σήμερον.

3 Μάλιστα γνωρίζω ὅντα σε πάντων τῶν κατὰ Ἰουδαίαν ἐθῶν τε & ζητημάτων· διὸ δύναιμι σε, μακροθύμως ἀκούσαι με.

4 Τὴν μὲν ὥν βίωσίν με τὴν ἐκ νεότητος, τὴν ἀπ' ἀρχῆς ἡγομένην ἐν τῷ ἔθνεϊ με ἐν Ἱερουσαλὺμοις, ἵσασι πάντες οἱ Ἰουδαῖοι.

5 Προγινώσκοντές με ἀπ' αὐθι, (ἐὰν θέλωσι μαρτυρεῖν,) ὅτι κατὰ τὴν ἀκριβεστάτην ἀρετὴν τὴν ἡμετέραν θρησκείαν ἔζησα φεικταίως.

6 Καὶ νῦν ἐπ' ἐλπίδι τῆς τιμῆς τῶν πατέρων ἀγγελίας ἡγομένης ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, ἔζηκα κατὰ νόμον.

7 Εἰς τὴν τὸ δωδεκάφυλλον ὑμῶν ἐν ὀκταετία νόμιμα & ἡμέραν λατρεύων ἐλπίζω κατὰ τῆς τιμῆς. ὅτι ἐλπίδος ἐγκληῖμαι, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων.

8 Τί ἄπιστον κρίνεται παρ' ὑμῶν εἰ ὁ Θεὸς τεκνὸς ἐκείνου;

9 Ἐγὼ μὲν ὥν ἔδοξα ἐμαυτῷ πρὸς τὸ σὺν Ἰησοῦ τῷ Ναζωραῖῳ δαῖν πολλὰ σπουδήν ποιῆσαι.

10 Ὅτι & ἐποίησα ἐν Ἱερουσαλὺμοις & πολλὰς τῶν εὐχάρις ἐν ὧν φυλακῇ κατέκλεισα, τὴν παρὰ τῶν ἡγετῶν ἡγεσίῳ καβατ' ἀμαρτωλῶν τε αὐτῶν κατὰ νόμον νόμον.

11 Καὶ κατὰ πάντας τὰς συναγωγὰς πολλάκις
πρωτὶν αὐτῆς, ἠνέγκαζεν βλασφημίαν. περιπατῶν
τε ἐκμακρόμηνος αὐτοῖς, ἐδίδασκεν ἕως & εἰς τὰς ἑξὶ
πόδας.

12 Ἐν οἷς καὶ πορδύμηνος εἰς τὴν Δαμα-
σκὸν μετ' Ἰεουσίας καὶ ἑπιτροπῆς τῆς πόλεως τῶν
ἀρχιερέων.

13 Ἡμέρας μέσης, κατὰ τὴν ὁδὸν εἶδον, βασιλῆν,
ἀντιόχον ὑπὲρ τὴν λαμπρότητα τῆς ἡλίου, περιλάμπον
μι φῶς & τῆς σὺν ἐμοὶ πορδύμηνος.

14 Πρώτων ὃ καταπεσόντων ἑκὼς εἰς τὴν γῆν, ἡ-
κιστα φωνῶν λαλῶν πρός με, & λέγονσαν τῇ Ἑβραϊδὶ
διαλέκτῳ· Σαῦλ, Σαῦλ, τί με διώκεις; σκληρὸν σοὶ
πρὸς κέντρον λακτίζειν.

15 Ἐγὼ ὃ ἔειπον· Τίς εἰς Κύριε; Οὗ δὲ ἔειπεν· Ἐγὼ
εἰμι Ἰησοῦς ὃν σὺ διώκεις.

16 Ἀλλὰ ἀνάστηθι, & εἰσελθὲ ἐπὶ τὰς πόδας σου· εἰς
τοῦτο γὰρ ὤφθην σοι, προκρίσασθαι σε ὑπὲρ τῶν &
μάρτυρα ὧν τε εἶδες, ὧν τε ὤφθῃσόμεθα σοι.

17 Ἐξαρρήμενός σε ἐκ τοῦ λαοῦ & τῶν ἰδόντων, εἰς ἃς
γὺν σε ἀποσέλλω.

18 Ἀποῖμαι ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, τῇ ὑπερέφαι ἀπὸ
σπῆτος εἰς φῶς, & τῆς Ἰουδαίας τῆς Σατανῆς ὑπὲρ τῆς
Θεοῦ, & λαβεῖν αὐτὸς ἀφίστη ἀμφοτέρων, & κληρὸν ἵ-
στῆς ἡγιασμένοις, πῖσι τῇ εἰς ἐμέ.

19 Οὕτως, βασιλεῦ Ἀγρίππα, ἔκ ἐγνόμενον ἀπὸ τῆς
τῇ ἀρμίας ὀπτιμίας.

20 Ἀλλὰ ποῖς ὃν Δαμασκὸς πρώτῃ καὶ Ἱεροσ-
λύμοις, εἰς πᾶσαν τε τὴν χώραν τῆς Ἰουδαίας,
καὶ ποῖς ἔθνεσιν, ἀπάγγελλοι μετανοεῖν, καὶ
ὑπερίβναι ὑπὲρ τὸν Θεόν, ἀξία τῆς μετδροῖας ἔργα
πράσσοντας.

21 Ἐνέκα τούτων με εἰ Ἰουδαῖοι συλλαβόμενοι ἐν τῇ
ἱερᾷ, ἐπαράντη ὡς κρινέσασθαι.

22 Ἐπικρίνας ὃν τυχὸν τῆς κατὰ τὸ Θεὸν, ἄχρι τῆς
ἡμέρας ταύτης ἔστακα, μαρτυρούμενος μικρὰ τε καὶ μεγά-
λα, μὴδὲ ὁκτὸς λέγων ὧν τε οἱ προφῆται ἐλάλησαν
μελλόντων γίνεσθαι, καὶ Μωσῆς.

23 Εἰ παθόντος ὁ Χριστός, καὶ πρώτης ἡ ἀνάστα-
σιν παρὰν φῶς μέλλει καταγγέλλειν σὺ λαὸς & τοῖς
ἔθνεσι.

24 Ταῦτα ὃ αὐτῷ ἀπολογουμένῳ, ὁ θεὸς μεγάλῃ
τῇ φωνῇ εἶπε· Μάνθη Παῦλι· τὰ πολλά σε γραμμάτα
εἰς μέριμναις περιτρέχει.

25 Οὗ δὲ· Οὐ μαινόμεαι, φησι, κρῖναι θεοῦ, ἀλλ'
ἀληθείας & σωφροσύνης ὁμῶς ἀποφθίγγουμαι.

26 Ἐπίσταται γὰρ καὶ ταῦτα ὁ βασιλεὺς πρὸς ὃν &
παρόρηται ἑλπίς λαοῦ· ἀλμυρῶν γὰρ αὐτῶν σι τῶν
καὶ τῶνδε καὶ ὁδῶν· ἡ γὰρ εἶναι ἐν γυνίκα πεπελεγμένον
ταῦτα.

17 Πιστεύεις βασιλεῦ Ἀγρίππα τοῖς προφήταις; οἷ δα ὅτι πιστεύεις.

18 Ὁ δ' Ἀγρίππας πρὸς τὸ Παῦλον εἶπεν· Εἴς ὅλγω με πείθεις Χριστιανὸν γινέσθαι.

19 Ὁ δὲ Παῦλος εἶπεν· Εὐξαίμην ἂν τῷ Θεῷ, καὶ ἐν ὁλίῳ καὶ ἐν πολλῷ ἢ μένον σέ, ἀλλὰ καὶ πάντας τὺς ἀκρόντας μὴ σήμερον, ἤμεσθα ποιῶτες, ὅποιος καὶ γὰρ ἐγώ, παρεκτός τῳ δεσμῶν τῶν.

20 Καὶ τῶντα αἰπύντος αὐτῷ, ἀνέστη ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ ἡγεμῶν, ἦτε Βερνίκη, καὶ οἱ συγκαθηήμενοι αὐτοῖς.

21 Καὶ ἀναχωρήσαντες ἐλάλουν πρὸς ἀλλήλους, λέγοντες· Ὅτι ἡδὲν θανάτῳ ἄξιον, ἢ δεσμῶν πράττει ὁ ἄνθρωπος ὅτις.

22 Ἀγρίππας δὲ τῷ Φίλῳ εἶπεν· Ἀπολεῖσθαι ἐδύνατο ὁ ἄνθρωπος ὅτος, εἰ μὴ ἐπεκέκλητο Κεῖσαρ.

Κεφ. κζ'. 27.

1 **Ω**ς δ' ἐκρίθη τὸ ἀποπλεῖν ἡμᾶς εἰς τὴν Ἰταλίαν, παρεδίδον τὸν Παῦλον καί πρὸς εἰς δεσμῶντας ἑκατόνταρχον, ὀνόματι Ἰούλιον, σωῆρος Σεβαστοῦ.

2 Ἐπιβάντες δὲ πλοίῳ Ἀδριαντινῷ, μέλαινες πλεῖν τῆς κατὰ τὴν Ἀσίαν τόπης, ἀνέλθον, ὅντος σὺν ἡμῖν Ἀριστάρχης Μακεδόνας Θεσσαλονικεύς.

3 Τῇ τε εἰρήρᾳ κατήχθημεν εἰς Σιδεῶνα· φιλοφρονήσας τε ὁ Ἰούλιος τῷ Παύλῳ χρησάμενος, ἐπέτρεψε πρὸς τῆς φίλους πορεύεσθαι ὑπὸ μελαίκοις τυχῆν.

4 Καὶ καὶ θέν ἀναχθέντες ἐπεπλοῦσαμεν τὴν Κύπρον, ὅτι τὸ τῆς ἀνέμους εἶναι ἐναντίον.

5 Τῷ τε πέλαγος τὸ κατὰ τὴν Κιλικίαν καὶ Παμφυλίαν ἐπεπλοῦσάντες, κατήλθομεν εἰς Μύρα τῆς Λυκίας.

6 Καὶ καὶ ὄρων ὁ ἑκατόνταρχος πλοῖον Ἀλεξανδρινόν πλεόν εἰς τὴν Ἰταλίαν, ἐκεβίβασεν ἡμᾶς εἰς αὐτό.

7 Ἐν Ἰκάρῳ δὲ ἡμέραις βραδυπλοοῦντες, καὶ μέλλοις ἡνίομοι κατὰ τὴν Κνίδον, μὴ προστιόντες ἡμῶς τὸν ἀνέμου, ἐπεπλοῦσαμεν τὴν Κρήνην καὶ Σαλμῶνα.

8 Μόλις τε ἀφυλεγομένη αὐτῶν, ἤλθομεν εἰς τὸν πρὸς καλῶμενον Κάλυπτον Λιμένας, ὃ ἐγγὺς ὡς πόλις Λευκάς.

9 Ἰκανὸν ἔχοντα διαχυσμένον, ὃ ὅντος ἤδη ὑπὸ Φαλῆς τῷ πλοῖ, διὰ τὸ ὅτι τῷ κατεῖχε ἤδη παρελκεσθῆναι, παρήγει ὁ Παῦλος.

10 Λέγων αὐτοῖς· Ἀδελφοί, θεωρεῖτε ὅτι μετὰ ὕβρεως καὶ πολλῆς ζημίας εὐμόνον τοῦ φορτηγίου ἔστι τὸ πλοῖον, ἀλλὰ καὶ τῇ ψυχῇ ἡμῶν μέλει ἐστὶν εἶναι τὸν πλην.

11 Οἱ δὲ ἐκαστοῦ τυχόντος τῇ κυβερνήτῃ καὶ τῷ τακτῇ ἐπέθετο μέλλον, ὃ τοῖς ἅπλοις τοῦ Παύλου λεγόμενοι.

12 Ἀνελθόντες δὲ τοῦ λιμένος ἀπάρχοντες πρὸς Φασσημασίην, οἱ πλείους ἔθεντο βελῶν ἀναχθῆναι καὶ κείθεν, ὥπως δύναιτο ταπεινότεροι εἰς Φοίνικα παρὰ Φασσημασίαν, λιμένα τῆς Κρήτης βλέποντα κατὰ λίβα ἔκαστος ἑαυτὸν.

13 Ὑποβύσσοντες δὲ Νότου, δόξαντες τῆς προδείξεως κεκρατηκῆναι, ἄρματα ἅλιν παρελέγοντο τῷ Κρήτῃ.

14 Μὲν γὰρ πολὺ δὲ ἔβαλε κατ' αὐτῆς ἄνεμος τυφονικός, ὃ καλύμενος Εὐροκλύδων.

15 Συναρπασθέντες δὲ τοῦ πλοίου, καὶ μὴ δυνάμενοι ἀντοφθαλμῶν τῷ ἀνέμῳ, ὑποδύντες ἐφερόμεθα.

16 Νησίῳ δὲ πρὸς ὑποδραμόντες καλούμενον Κλαυδίον, μέλις ἰχθύσαμεν πακράτους γενέσθαι τῆς σκάφης.

17 Ἦν ἄρματα, βοηθείαις ἐχόντες, ὑποδυνόντες τὸ πλοῖον· φοβήμενοι τε μὴ εἰς τὴν Σύρτιν ὁπτέωσι, χαλάζοντες τὸ σκαῖον, ὥπως ἐφέροντο.

18 Σφιδρῶς δὲ χαμαζομένων ἡμῶν, τῇ ἐξῆς ἐκείλῳ ἐποίησαν.

19 Καὶ τῇ τρίτῃ αὐτόχαιρες τῷ σκάδῳ καὶ πλοῖον ἐρρίψαμεν.

20 Μῆτε δὲ ἥλιον, μῆτε ἄστρον ὑποφαιρόσαν ὑπὸ πλείονος ἡμέρας, χαμῶνός τε οὐκ ὀλίγου εἶναι κειμένη, λοιπὸν ἀναρείτο πᾶσα ἑλπίς καὶ σωθῆναι ἡμᾶς.

21 Πολλῆς δὲ ἀσπίδος ἀπαρχήσας, τότε εὐχαρίσας ὁ Παῦλος ἐν μέσῳ αὐτῶν, εἶπεν· Εἶδε μέν, ὦ ἄνδρες, πειθαρχήσαντάς μοι, μὴ ἀνάγεσθαι ἀπὸ τῆς Κρήτης, κερδήσαι τε τῷ ὕβρει ταύτῃ καὶ τῷ ζημίῳ.

22 Καὶ ταῦν παραινῶ ὑμῶς ἀδελφοί· ἀποβαλὼν ἕκαστος ψυχῆς οὐδεμίαν εἶναι δεῖ ὑμῶν, πλὴν καὶ πλοίου.

23 Παρέστη γὰρ μοι τῇ νυκτὶ ταύτῃ ἄγγελος καὶ Θεὸς ἐμὸς, ὃς ἐλάτρευν.

24 Λέγων· Μὴ φοβῆ· Παῦλε· καί σοι δεῖ παρασῆναι· ἐγὼ ἰδὼν, κεκαίρισά σοι ὁ Θεὸς πάντας τὸν πληθύνοντάς μετὰ σοῦ.

25 Διὸ εὐθυμεῖτε ἄνδρες· πιστεύει γὰρ τῷ Θεῷ ἐπ' οὕτως εἶναι καὶ ὅτι τρόπον λεηλατῶμαι.

26 Εἰς τῆσιν δὲ πικρὰ δὲ ἡμᾶς ὀπτεῖται.

27 Ὡς δὲ τεσσαρεσκαίδεκάτῃ νύξ ἐγένετο, ἀφ' ἐφερομένων ἡμῶν ἐν τῷ Ἀδρίᾳ, κατὰ μέτρον τῆς νυκτὸς ὑπενόησεν εἰ καὶ ταῦτα προσάγων πρὸς αὐτοὺς χάρις.

28 Καὶ βολεύσартες, εὗρον ὄργυιαν ἑκάστη· βραχὺ δὲ ἀφ' ἡσάρτες, ἔτι πάλιν βολεύσартες, εὗρον ὄργυιαν ἑκαπέντη.

29 Φοβούμενοί τε μή τις εἰς τραχεῖς τόποις ὀπτεῖται, ἐκ πρὸς ῥίψαντες ἀγκύρας τέσσαρας, εὐχόμενοι ἡμέραν γλυεσθαι.

30 Τῶν δὲ ναυτῶν ζητούντων φυγῆν ἐκ τοῦ πλοίου, καὶ χαλασάντων τῷ σκάφει εἰς τὴν θάλασσαν, προφασίᾳ ὅτι ἐκ πρῶτας μελλόντων ἀγκύρας ἐκτείνειν.

31 Εἰπεὶ δὲ Παῦλος τῇ ἑκατοντάρχῃ καὶ τοῖς στρατιώταις· Εἰ μὴ ἔσται μείωσις ἐν τῷ πλοίῳ, ὑμεῖς σωθήσασθε ἢ δύνασθε.

32 Τότε οἱ στρατιῶται ἀπέκοψαν τὰ χειρῶν τῆς σκαφῆς, καὶ εἰσάντων αὐτῶν ἐκπεσεῖν.

33 Ἀχρὶ δὲ ὅτε ἐμελλεν ἡμέρα γίνεσθαι, παρκαλεῖ ὁ Παῦλος πάντας μεταλαμβάνειν τροφῆς, λέγων· Τεσσαρεσκαίδεκάτῃ σήμερον ἡμέραν προσδικῶντες, ἅσιτοι διατελεῖτε, μηδὲν προσλαβόμενοι.

34 Διὸ παρακαλῶ ὑμᾶς προσλαβεῖν τροφῆς. τὸ γὰρ πρὸς τῆς ὑμετέρας σαιτερίας ὑπάρχει· ἡμεῖς γὰρ ὑμῶν ὄρεξ ἐκ τῆς κεφαλῆς πετιῖται.

35 Εἰπὼν δὲ ταῦτα, ἔλαβον ἄρτον, εὐχαρίσασαι τῷ Θεῷ ἐνώπιον πάντων, καὶ κλάσας ἤρξατο εἰσθίειν.

36 Εὐθυμοὶ δὲ γενόμενοι πάντες, καὶ αὐτοὶ προσελόντο τροφῆς.

37 Ἡ μὲν δὲ ἐν τῷ πλοίῳ αἱ πᾶσαι ψυχαί, διακρίσας ἐβδόμηκοντα ἑξ.

38 Κορεσθέντες δὲ τροφῆς, ἐκίφισον τὸ πλοῖον, ἐκβαλλόμενοι ὅσον εἰς τὴν θάλασσαν.

39 Ὅτε δὲ ἡμέρα ἐγένετο, τῷ γῆν οὐκ ἐπεγίνωσκον· κῶλον δὲ πικρὸν κατενόησεν ἔχοντα ἀγριαλόν, εἰς ὃν ἐβηλοῦσартο, καὶ δύναιντο, ἔξασαι τὸ πλοῖον.

40 Καὶ τὰς ἀγκύρας παρκαλόντες εἰς τὴν θάλασσαν, ἅμα ἄρπεντες τὰς ζεύκτηρίας τῇ πηδαλίῳ, καὶ ἐπάραντες τὸν ἄρτέμονα τῇ πνέσῃ, κατέχοντες αὐτὸν ὑγιαλόν.

41 Περιβυσόντες δὲ εἰς τόπον διθάλασσαν, ἐπὶ-

ἐπαίκαλον τὸν γαῖον. Ἐν δὲ μὲν πρῶτα ἐμίστατα ἔμενον ἀπαλότης, ἡ δὲ πρῶτα ἐλύετο κατὰ τῆς βίης τῆς κυματῶν.

42 Τῶν δὲ στρατιωτῶν βολὴ ἐγένετο, ἵνα τοὺς δεσμώτας ἀποκτείνωσι, μή τις ἐκκοιμβήτας διαφύγοι.

43 Οἱ δὲ ἐκπυόνταρχοι, βολόμενοι διαφύσαι τὸν Παῦλον, ἐκώλυον αὐτὸς τὴ βολήν, ἐκέλευσέ τε τὸς δεσφόμενους κοιμῆσαι, ἀπορρίψαντας πρῶτος ἐπὶ τὸν γαῖον ὀφείναι.

44 Καὶ τῶν λοιπῶν, ὅς μὲν ὅπῃ σάνισιν, ὅς δὲ ἐκίππων τῶν ἀπὸ τῆς πλοῆς. Ἐν τῷ ὅντι ἐγένετο πάντας διασωθῆναι ὅπῃ τὸν γαῖον.

Κεφ. κβ. 28.

1 **Κ**Αὶ διωσθέντες, τότε ἐπέγνωσαν ὅτι Μελίτη ἡ νῆσος καλεῖται.

2 Οἱ δὲ βάρβαροι παρῆγον ἡ τὸν τυχεύσαν φιλαστρατίδην ἡμῶν. ἀνάψαντες γὰρ πυρὰν, προσελάβοντι πάντας ἡμῶν, διὰ τὸ ὑπὸν τὴν ἐφεσθῆτα, Ἐν δὲ τὸ ψύχος.

3 Συστρέψαντες δὲ τὸν Παῦλον φρυγάνων πλῆθος, Ἐν τῷ πυρὶ, ἐχίδνα ἐπὶ τὴν δέρας ὀφείναι.

4 Ὡς δὲ εἶδον οἱ βάρβαροι κρεμύμενον τὸ θεῖον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, ἔλεγον πρὸς ἀλλήλους. Πάντως φοβὸς ἐστὶν ὁ ἄνθρωπος ἡμῶν, ὃν διαφύγοντα ἐν τῇ θαλάσῃ ἡ δίκη ἦν ἡμῶν.

5 Οἱ μὲν οὖν, ἀποπτάζας τὸ θεῖον εἰς τὸ πῦρ, ἐπαθεν ἑδὲν κακόν.

6 Οἱ δὲ προσεδόκον αὐτὸν μέλλειν τίμνωσθαι, ἡ καταπίπτειν ὀφθαλμοῦν. Ἐπὶ πολὺ δὲ αὐτῷ προσδοκῶντων, Ἐν τῷ πυρὶ μὲν αὐτοῦ εἰς αὐτὸν γινόμενον, μεταβαλλόμενοι ἔλεγον Θεὸν αὐτὸν εἶναι.

7 Ἐν δὲ τοῖς ἡμέραις τὸν τόπον ἐκῆνον ὀφθαλμοῦν χρεῖα τῇ πρώτῃ τῆς νήσου, ὀνόματι Παπλίω, ὃς ἀναδεχόμενος ἡμῶν, τρεῖς ἡμέρας φιλοφρόνως ὀφείναι.

8 Ἐγένετο δὲ τὸν Πατέρα τῇ Παπλίῳ πυρετοῖς Ἐν τῷ πυρὶ συνεχόμενον κατακτείναι, πρὸς ὃν ὁ Παῦλος εἰσελθὼν, ἡ προσεύχόμενος, ὀφθαλμοῦν τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ἰάσατο αὐτόν.

9 Ταύτου οὖν ἡγομένου, καὶ οἱ λοιποὶ αἱ ἔχοντες ἀσθενείας ἐν τῇ νήσῳ, προσέρχοντο Ἐν τῷ πυρὶ.

10 Οἱ Ἐ πολλὰς τιμαῖς ἐπὶ τῇ νήσῳ, Ἐν τῷ πυρὶ ἐπέθεντο τὰ πρὸς τὸν γαῖον.

11 Μι-

π. Μετὰ δὲ τρεῖς μῆνας ἀνέχουσιν ἐν πλοίῳ ποτα-
μικημακότε ἐκ τῆ γῆς, Ἀλεξανδρίῳ, παρασέμψ
Διοσκυρίῳ.

12 Καὶ μεταχθέντες εἰς Συρίαν, ἐπεμύσαντες
ἐμὲν τῶν.

13 Οὕτως ἐπειδοῦντες κατέλυσάμεν αἱ Ρ' ὁρίον·
καὶ μετὰ ταῦτα ἐπὶ τὴν ἐκκλησίαν ἐβλήθησαν τότε, ἀποτιναῖν ἡ-
δομένης εἰς Πεποιήτης.

14. Οὗ ἀφύπνους ἀδελφοί, παρεκλήθημεν ἐκ' αὐτῆς
ἐπιστολῆς ἡμέρας ἑπτὰ καὶ ἕξ ἕως τῆς 1' ὁμοῦ ἡ-
δμεν.

15 Κρίκειν οὖν οἱ ἀδελφοὶ ἀκούσαντες τὰ ῥηθῆς ἡγοῦνται,
 ἤλθον εἰς ἀπάντησιν ἡμῶν ἄλλοις Ἀππὶν φρονεῖν καὶ
 Τριῶν πατρῶν· οἱ ἰδὼν δὲ Προῦλος, εὐχαριστήσαντες τῷ
 Θεῷ, ἔλαβε θύρατος.

16 Οὔτε δὲ ἤλθοντες ἐκ Ρώμης, ὁ ἑκατόνταρχος
παρίδωκε τὸς δεσμώτας τῷ στρατοπεδάρχῃ· τῷ δὲ Παύλῳ
ἐπιτάγη μένειν κατ' ἐσώτων, σὺν πλείονι φυλακισεντι αὐ-
τὸν στρατῷ.

17 Ἐγένετο δὲ μετὰ ἡμέρας τρεῖς συγκαλέσασθαι
τὸ Παῦλον τῆς οὔτης τῆς Ἰουδαίας πρῶτος· συλλεθόντων
δὲ πάντων, ἔλεγεν πρὸς αὐτούς· Ἄνδρες ἀδελφοί, ἐγὼ
κἀν ἐναγκασίῳ ποιήσας τὴν λαῶν, ἢ τοῖς ἔθνεσι τῆς
πατρίδος, δέσμιος ἔμ Γερουσίῳ παρεδόθην εἰς τὰς
χεῖρας τῆς Ῥωμαίων·

18 Οἱ πῖνες ἀμακρίνοντάς με ἐβόλουν ἀπολύτῃ,
διὰ τὸ καθεμίαν αἰτίαν θανάτου ὑπάρχουσαν ἐν ἐμοί.

19 Αἰτιλεγόμεται δὲ τῷ Ἰσδαίων, ἐπιγινώσκων ἐπι-
κολισκοῦμαι Καίσαρα· ἢ χ' ὡς τῷ ἔθνει μὴ ἔχειν π
κατηγοροῦσαι.

20 Διὰ ταύτην ἦν τῶν αἰτίων παρεκάλεσα ὑμᾶς ἰδεῖν
ἐπὶ προσκυλῆται· ἵνα κεν γὰρ ἐλπίδοι τῇ ἰσχυρῇ τῶν
ἀλλοτρῶν ταύτῃ περὶνικται.

21 Οἱ δὲ πρὸς αὐτὸν ἔκον· Ἡμεῖς ἔτι γράμματα
πρὸς σὺν ἰδεῖσθαι θὰ ἀνὰ τὴν Ἰερουσαλὴμ, ἵνα ὁ
πρὸς τῇ ἀδελφῇ ἀπογγυαλὴν τὴν ἐκκλησίαν πρὸς σοῦ
ποιήσῃ.

22 Αὐτῶν δὲ πρὸς τοὺς ἀκούοντας ἡ φωνή· καὶ
 αὐτοὶ δὲ τὸ ἀκούσαντες ταῦτα ὑποσέβοντο ὅτι πάλιν
 τοῦτο εἶπεν αὐτοῖς.

23 Ταξάμενοι ἔκαστὸν ἡμέραν, ἦγον πρὸς αὐτὸν καὶ τοὺς ἐνὶ τῷ παλάτιῳ· οἱ δὲ ἔκταλιντο διαμαρτυρούμενοι τῷ βασιλεῖ καὶ τῷ θείῳ, πείθον τε αὐτοὺς τὰ πρὸς τὸ ἴσθαι, ἀπὸ τοῦ νόμου Μωσέως καὶ τῶν προφητῶν, ἀπὸ πατρὸς εἰς υἱόν.

24 Καὶ οἱ μὲν ἐπέθοντο τοῖς λεγομένοις, οἱ δ' ἔ
ἤπισκον.

25 Αὐτοὶ φωνοὶ δὲ ὄντες πρὸς ἀλλήλους, ἀπελύοντο, ἰσχυρὸς ᾤ Παῦλος ῥῆμα· ἐν, ἐπὶ καλῶς τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐλάλησε 26 Ἡ σὺν ᾤ Προφῆτι πρὸς τῆς πα-

26 Δέχον· Ποσειδίδη πρὸς τὸ λαὸν τούτου, ὃς εἰπὼν
Ἀκοῇ ἀκέσσετε, καὶ οὐ μὴ συνῆτε· καὶ βλέποντες βλέψετε,
καὶ οὐ μὴ ἴδῃτε.

27 Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου· καὶ ποί-
σιν βαρέως ἤκησαν, καὶ τῆς ὀφθαλμικῆς αὐτῶν ἐκάρμυν-
σαν· μήποτε ἴδωσι τίς ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὠσὶν ἀκου-
σῶσι, καὶ τῇ καρδίᾳ συναῶσι, καὶ ὑπερέψωσι, καὶ ἰάσω-
μαι αὐτούς.

28 Γνωσὼν οὖτ' ἔσω ὑμῖν, ὅτι τοῖς ἔθνεσιν ἀπεσώ-
λη τὸ σωτήριον τοῦ Θεοῦ, αὐτοῖς καὶ ἀκησονται.

29 Καὶ ταῦτα αὐτῷ εἰπόντος, ἀπῆλθον οἱ Ἰουδαῖοι,
πολλὰ ἔχοντες ἐν ἑαυτοῖς συζητήτιν.

30 Ἐμείνε δὲ ὁ Παῦλος διεπάρ' ὅλην ἐν ἰδίῳ με-
σσηματι· καὶ ἀπεδέχετο πάντας τοὺς ἐπισκεπόμενους
πρὸς αὐτόν,

31 Κρούσων τὴν βασιλείαν τοῦ Θεοῦ, καὶ διδάσκων
τὰ περὶ τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάσης παύσε-
ως, ἀκωλύτως.

Τ Ε Λ Ο Σ.



ΠΑΥΛΟΥ

ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

Η' ΠΡΟΣ ΡΩΜΑΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

Κεφ. α' Ι.

- 1 **Π**αῦλος δούλος Ἰησοῦ Χριστοῦ, κλητὸς
ἀπόστολος, ἀφορισμένος εἰς εὐαγγέλιον
2 (Ὁ^ς προεπηγγέλατο διὰ τῆς Προφητῆς αὐτοῦ ὡς
3 Περὶ τῆς γίνεσθαι, (τῆς γνησίμης ἐκ σπέρματος
4 τοῦ εὐσεβεστάτου Ἰησοῦ Θεοῦ ἐν δυνάμει, κατα
5 (Δι' οὗ ἐλάβομεν χάριν καὶ ἀποστολὴν εἰς τὴν
6 Εἰς οὓς ἔστε καὶ ὑμεῖς, κλητοὶ Ἰησοῦ Χρι
7 Πᾶσι τοῖς ἔσιν ἐν Ρώμῃ, ἀγαπητοῖς Θεῷ, κλη
8 Πρῶτον μὲν εὐχαριστοῦν τῷ Θεῷ μετὰ Ἰησοῦ Χρι
9 Μαρτυρῶ γὰρ με ἐπὶ τῷ Θεῷ, ὃ λατρεύω ἐν τῷ
10 Πᾶντοτε ὑπὲρ τῆς προσδοκίης με δεόμενος, ἵνα
11 Ἐπιπαθεὶς γὰρ ἰδεῖν ὑμᾶς, ἵνα τι μετα

12 Τὸτο δὲ ἐστὶ, συμπορευθέντων ὡς ἑμῶν διδῶν
 ἢ ὡς ἀλλήλοις πίστις, ὑμῶν τε καὶ ἐμῶν.

13 Οὐ θέλω δὲ ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί, ὅτι πολλὰ
 κίς προσέμενον ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς, (ὡς ὁμιλοῦσθαι ἅ-
 χει καὶ ἑνὸς,) ἵνα καρπὸν πῶς χάριτος ὑμῶν, κα-
 θὼς καὶ ὡς τοῖς λοιποῖς ἐδίδετο.

14 Ἐλλοσὶ τε καὶ βαρβαροῖς, σοφοῖς τε καὶ ἀνόητοις
 ἐφελκόμενοι εἰσὶν.

15 Οὕτω τὸ κατ' ἐμὲ πρόθυμον καὶ ὑμῖν τοῖς ὡς
 ῥῶμα ἀγγελλίσασθαι.

16 Οὐ γὰρ ἐπαυχόμεμαι τὸ ἀγγελλεῖν τῇ Χριστῷ
 δυνάμει γὰρ Θεῷ ἐστὶν εἰς στήθεσιν πλήρη τῇ πίστει
 π, Ἰουδαίῳ τε πρώτῳ καὶ Ἑλλήνι.

17 Δικαιοσύνη γὰρ Θεῷ ἐν αὐτῷ ἀποκαλύπτεται ὡς
 πίστις εἰς πίσιν· καθὼς γέγραπται· Ὁ δὲ δίκαιος
 ὡς πίστις ζήσεται.

18 Ἀποκαλύπτεται γὰρ ὁργὴ Θεοῦ ἀπ' ἡρώων τῶν πα-
 σῶν ἀσέβειαν καὶ ἀδικίαν ἀνθρώπων τῶν καὶ ἀληθεῖς ἐν
 ἀδικίᾳ κατεχόντων.

19 Διότι τὸ γνωστὸν τῇ Θεῷ, φανερόν ἐστιν ἐν ὑ-
 ποταγῇ· ὡς γὰρ Θεὸς αὐτοῖς ἐφανερώσεται.

20 Τὰ γὰρ ἀόρατα αὐτῷ ἀπὸ κτίσεως κόσμου,
 τοῖς ποιήμασι φανερά· καθαράται, ἥτε ἀέριος αὐτῇ
 δυνάμει καὶ σοφίᾳ· εἰς τὸ εἶναι αὐτῶν ἀκατα-
 γήγνητος.

21 Διότι γνώστες καὶ Θεῷ, καὶ ὡς Θεὸν ἐδόξαζαν,
 ἢ ἀχαριστάσαν· ἀλλ' ἐκαταιώθησαν ἐν τοῖς διδου-
 γισμοῖς αὐτῶν, καὶ ἐσκοτίσθη ἡ αὐτίμος αὐτῶν
 καρδία.

22 Παύκοντες εἶναι σοφοί, ἐμωράνθησαν.

23 Καὶ ἡλλαξάντες ὁδοὺς τῇ ἀφάρτη Θεῷ ἐν ὁμιλί-
 ματι εἰκονος φθαρτῇ ἀνθρώπου, καὶ πετηνῶν καὶ τετρα-
 πύδων καὶ ἐρπετῶν.

24 Διὸ καὶ παρέδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς ἐν ταῖς ὑποθυ-
 μίαις τῶν καρδιῶν αὐτῶν εἰς ἀκαθαρσίαν, τὸ ἀπει-
 λίσθαι τὰ σώματα αὐτῶν ἐν ἑαυτοῖς.

25 Οἵτινες μετήλλαξαν καὶ ἀληθείαν τῇ Θεῷ ἐν τῷ
 ψαύειν, καὶ ἐσεβάσθησαν καὶ ἐλάτρευσαν τὴν κτίσιν πα-
 ρὰ καὶ κτίσαντα, ὃς ἐστὶν βύλογητος εἰς τὴν αἰῶνα.
 ἀμήν.

26 Διὸ τὸτο παρέδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς εἰς πᾶσαν ἀπει-
 μίαν· αἵτε γὰρ θήλειαι αὐτῶν μετήλλαξαν καὶ φυσικῶν
 χηρῶν εἰς καὶ παρά φύσιν.

27 Οἱ μὲν τε καὶ οἱ ἄρτενες ἀφέντες τὴν φυσι-
 κὴν χρῆσιν τῆς θηλείας, ἠξεκαίωθησαν ἐν τῇ ἐρί-
 ῃ αὐτῶν εἰς ἀλλήλους, ἄρτενες ἐν ἀρσεσὶ τὴν ἀν-
 μισυλὴν κατεργαζέμενοι, καὶ τὴν ἀντιστάσιν
 ἡμῶν εἶναι, τῆς πλάτης αὐτῶν ἐν ἑαυτοῖς ἀποκαμ-
 βάσας.

28 Καὶ καθὼς καὶ ἐδοκίμασαν τὸν Θεὸν ἔχον ἐν
 ὑπ-

ἡπαίσι, παρέδωκεν αὐτὸς ὁ Θεὸς εἰς ἀδόκιμον ἔργον, ποιεῖν τὰ μὴ καθήκοντα·

29 Πεπληρωμένους πάσῃ ἀδικίᾳ, πορνείᾳ, πονηρίᾳ, πλεονεξίᾳ, κακίᾳ· μεσὺς φθόνου, φόνου, ἐριδος, δόλου, κακοῦδεως·

30 Ψευδιστὰς, καταλάλους, θεοσυγῆς, ὑβριστὰς, ὑπερφύλους, ἀλαζόνους, ἐφάρετὰς κακῶν, γοιτῶσιν ἀπειθεῖς,

31 Ἀσυνέτους, ἀσυνθέτους, ἀσύργους, ἀπεινούς, ἀνελεήμονας.

32 Οἵτινες τὸ δικαίωμα τοῦ Θεοῦ ὑπνύνοντες, (ὅτι εἰ τὰ τοιαῦτα πράσσοντες ἄξιοι θανάτου εἰσιν) ὅμως οὐκ αὐτὰ ποιεῖσιν, ἀλλὰ καὶ συνώδευκός τοις πράσσουσιν.

Κεφ. β'. 2.

1 **Δ**ιὸ ἀναπολόγητος εἰ, ὃ ἄνθρωπε καὶ ὁ κρείων ἢ οὐκ ἢ κρείνεις τὸν ἕτερον, τισι τὸν κατακρίνεις· τὰ γὰρ αὐτὰ πράσσεις ὁ κρείων.

2 Οἷδα μὲν ὅτι ἐπὶ τὸ κρῖναι τοῦ Θεοῦ ἐστὶ καὶ ἀλήθεια, ὅτι τὸς τὰ τοιαῦτα πράσσοντας.

3 Δογίζω δὲ τὸτο, ὃ ἄνθρωπε, ὁ κρείων τῆς τῶν τοιούτων πράσσοντας, ἐ ποιῶν αὐτὰ, ἐπὶ σὺ ἐκφύξῃς τὸ κρῖναι τοῦ Θεοῦ;

4 Ἡ δὲ πλὴν τῆ χρηστότητος αὐτοῦ, ἐ τὸ ἀνοχῆς ἐ κακρεθυρίας καταφρονεῖς, ἀγνοῶν ὅτι τὸ χρῆσθαι τοῦ Θεοῦ εἰς μετανοίαν σε ἄγει;

5 Κατὰ ὅτι τῶν σκληρότητά σου καὶ ἀμετανόητος καρδίᾳ. θηταιρίζεις σεαυτῷ ὀργὴν ἐν ἡμέραις ὀργῆς καὶ ἀποκαλύψεως δικαιοκρισίας τοῦ Θεοῦ.

6 Οὗτος ἀποδώσει ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.

7 Τοῖς μὲν κατὰ ἡσυχίαν ἔργου ἀγαθοῦ ἔργῳ ἐ τιμῶν καὶ ἀφθαρσίᾳ ζητήσιν, ζωὴν αἰώνιον.

8 Τοῖς δὲ ὅτι ἐριθείας, καὶ ἀπειθεῖς μὲν τῷ αὐτοῦ, παιδισμένοις δὲ τῇ ἀδικίᾳ, θυμὸς καὶ ὀργή.

9 Θλίψις ἐ στενοχωρία ἐπὶ πάντων ψυχῶν ἀνθρώπων κατεργαζομένη τὸ κακόν, Ἰουδαίῳ τε πρώτῳ καὶ Ἑλλήνῳ.

10 Δόξα δὲ καὶ τιμὴ καὶ ἐκδόσις παντί τῷ ἡμιζομένῳ τὸ ἀγαθόν, Ἰουδαίῳ τε πρώτῳ καὶ Ἑλλήνῳ.

11 Οὐ γὰρ ἐστὶ προσωποληψία παρὰ τοῦ Θεοῦ.

12 Οἱ σοὶ γὰρ νόμοις ἡμαρτον, ἀνόμιος ἐκπολεῖται·
 ὅσοι ἐν νόμῳ ἡμαρτον, διὰ νόμον κριθῆσονται.

13 (Οὐ γὰρ οἱ ἀκροαταὶ τῷ νόμῳ δίκαιοι ὡς τῷ Θεῷ· ἀλλ' οὗτοι ποιῶσι τὸν νόμον δικαιοῦσθαι.)

14 Οὔταν γὰρ ἔδῃ τὰ μὴ νόμον ἔχοντα, φύσει τῷ νόμῳ ποιῇ, οὗτοι νόμον μὴ ἔχοντες, εἰς αὐτοὺς εἰσὶ νόμοι.

15 Οἷτινες ἐνδείκνυνται τὸ ἔργον τοῦ νόμου γραπτὸν ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, συμμαρτυροῦσθαι αὐτοῖς τὴν συνειδήσεως, καὶ μεταξὺ ἀλλήλων τῷ λογισμῷ κατηγερμένων, ἢ ἐκπολεωμένων.)

16 Ἐν ἡμέρᾳ ὅτε κρινῇ ὁ Θεὸς τὰ κρυπτά τῶν ἀνθρώπων, κατὰ τὸ δόγματιόν μου, διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

17 Ἰδὲ, σὺ Ἰουδαῖος ἐπισημῶν, καὶ ἐπιταπαύῃ τῷ νόμῳ, ἐκκαυχῶσαι ἐν Θεῷ,

18 Καὶ γινώσκεις τὸ θέλημα, καὶ δοκιμάζεις τὰ διαφύροντα, κατηχούμενος ἐκ τοῦ νόμου.

19 Πεποιθὼς τε σεαυτὸν ὁδηγὸν εἶναι τυφλῶν, φῶς τῶν ἐν σκίτει,

20 Παιδευτὴν ἀφρόνων, διδάσκαλον νηπίων, ἔχοντα τὴν μορφωσὴν τῆς γνώσεως καὶ τῆς ἀληθείας ἐν τῷ νόμῳ.

21 Οἷ σὺν διδάσκων ἕτερον, σεαυτὸν οὐκ ἐκείνους; ὁ κηρύσσων μὴ κλέπτειν, κλέπτει;

22 Οἷ λέγων μὴ μοιχεύειν, μοιχεύεις; ὁ βδελυσόμενος τὰ εἰδωλά, εἰσεσπύλεις;

23 Οἷ ἐν νόμῳ καυχῶσαι, διὰ τῆς παραβάσεως τῆς νόμου τῷ Θεῷ ἀτιμάζεις;

24 Τὸ γὰρ ὄνομα τοῦ Θεοῦ δι' ὧν βλασφημεῖται ἐν τοῖς ἔθνεσι, καθὼς γέγραπται.

25 Περιτομή μὲν γὰρ ὡφελῆ, ἐὰν νόμον πράσῃ· ἐὰν δὲ ὡς ἀβάρτης τῷ νόμῳ ᾖ, ἡ περιτομή σὺν ἀκροβυστίᾳ γέγονεν.

26 Ἐὰν οὖν ἡ ἀκροβυστία τὰ δικαιώματα τοῦ νόμου φυλάσῃ, οὐκ ἡ ἀκροβυστία αὐτοῦ εἰς περιστομὴν λογισθῆσεται;

27 Καὶ κρινῇ ἡ ἐκ φύσεως ἀκροβυστία τῷ νόμῳ τελευτῶσα, σὲ δὲ διὰ γράμματος καὶ περιστομῆς ὡς ἀβάρτης νόμου.

28 Οὐ γὰρ ὁ ἐν τῷ φάρμακῳ, Ἰουδαῖός ἐστιν· οὐδὲ ὁ ἐν τῷ φανερῷ, ἐν τῷ σκί, περιστομῆ.

29 Ἀλλ' ὁ ἐν τῷ κρυπτῷ Ἰουδαῖος, καὶ περιστομῇ κατ' εἰδος, ἐν πνόματι, οὐ γράμματι· οὐ δ' ἔπαινος οὐδ' ὁ ἀνθρώπων, ἀλλ' ὁ τοῦ Θεοῦ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Τ**ί ἦν τὸ πεινῶν π Γουδάν, ἡπὶς ἡ ὀφέλιμα
τῆς πεινῶμενης;

2 Πολύ κατὰ πάντα τρόπον. Πρῶτον μὲν γὰρ ὅτι
ὑπερβύθησαν τὰ λόγια π Θεῷ.

3 Τί γὰρ, εἰ ὑπερβύθη πνεύς; μὴ ἡ ἀπιστία αὐτῶν
τῶν πείσιν π Θεῷ καταργήσεται;

4 Μὴ γένοιτο· γινέσθαι δὲ ὁ Θεὸς ἀληθής,
πᾶς δὲ ἄνθρωπος ψεύς· καθὼς γέγραπται· Ο-
ὗτος ἀν δεικνύμενος ἐν τοῖς λόγοις σου, ὁ νικῶν ἐν τῷ
κρίνωσθαί σε.

5 Εἰ ὅ ἡ ἀδικία ἡμῶν Θεῷ δικαιοσύνην σπείσῃ,
π ἐρῶμεν; μὴ ἀδικος ὁ Θεὸς ὁ ὑπερβαίνων τῶν ὀργῶν;
(κατὰ ἄνθρωπον λέγων.)

6 Μὴ γένοιτο· ἐπεὶ πῶς κρινεῖ ὁ Θεὸς τὸν
κόσμον;

7 Εἰ γὰρ ἡ ἀλήθεια π Θεῷ ἐν τῷ ἐμῷ ψεύσματι ἐ-
περῶσεν, ὡς τῶν δόξων αὐτῶν, π ἐπὶ καὶ γὰρ ὡς ἀμάρ-
τωλός κρινομαι;

8 Καὶ μὴ (καθὼς βλασφημώμεθα, καὶ κα-
θὼς φασι πνεύς ἡμεῖς λέγειν) ὅτι ποιήσομεν τὰ
κακὰ, ἵνα ἔλθῃ τὰ ἀγαθὰ; ὡν τὸ κρῖμα ἐν-
δίκον ἐστὶ.

9 Τί ἦν προεχόμεθα; Οὐ πάντας· προεπα-
σάμεθα γὰρ Γουδάν τε καὶ Ἑλλήνας πάντας ὑφ' ἁ-
μαρτίαν εἶναι.

10 Καθὼς γέγραπται· Οὗτοι ἔκ ἐστὶ δίκαιος ἡδὲ
ἄς.

11 Οὐκ ἐστὶν ὁ συνιών, ἢ ἐστὶν ὁ ὀκνητῶν τὸν
Θεόν.

12 Πάντες ὑπέκλιναν, ἅμα ἡ χρεώθησαν· ἢ ἐστὶ
ποιῶν χρηστότητα, ἢ ἐστὶν ἕως ἐνός.

13 Ταφὸς ἀνεφυγμένος ὁ λαύρυξ αὐτῶν· ταῖς γλώσ-
σαις αὐτῶν ἐδόλιχσαν· ἵος ἀσπίδων ὑπὸ τὰ χεῖλη
αὐτῶν.

14 Ὡς τὸ σῶμα ἀρᾶς ὁ πικρίας γέμει·

15 Ὡς οἱ πόδες αὐτῶν ὀκνητοὶ αἰμα.

16 Σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς
αὐτῶν.

17 Καὶ ὁδὸν εἰρήνης ἢ ἐγνωσαν.

18 Οὐκ ἐστὶ φόβος Θεοῦ ἀπέστη τῶν ὀφθαλμῶν
αὐτῶν.

19 Οἶδμεν ὅτι ὅσα ὁ κόσμος λέγει, τοῖς ἐν τῷ
κόσμῳ λαλεῖ· ἵνα πᾶν σῶμα φραγῇ, ὁ ὑποδίκος γένη-
ται πᾶς ὁ κόσμος τῷ Θεῷ.

20 Διὸ π ἡ ἐργὴν νόμος ὁ δικαιοδοῦνται
πᾶσα

Ο

πάντα σὰρξ σῶπτον αὐτῷ. Διὰ τὸ νόμον ἐπίγνωσ
αἰμαρτίας.

21 Νυνὶ δὲ χορεῖ νόμον, δικαιοσύνη Θεοῦ πα
φανερωται, μαρτυρουμένη ὑπὸ τοῦ νόμου καὶ τῷ προ
φητῷ.

22 Δικαιοσύνη δὲ Θεὸς διὰ πίστεως Ἰησοῦ Χριστοῦ
εἰς πάντας ὁ ὑπὲρ πάντας τοὺς πιστεύοντας. ἢ γὰρ ἐν
δικαιοσύνῃ.

23 Πάντες γὰρ ἡμαρτον, καὶ ὑπεροῦνται τῇ δόξῃ
τοῦ Θεοῦ.

24 Δικαιώματα δωρεὰν τῇ αὐτῇ χάριτι, διὰ τῆς ἀπο
καρπώσεως τῆς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

25 Οὐκ ἐπὶ νόμῳ ὁ Θεὸς ἐλεήσει, διὰ τῆς πί
στεως ὡς τῷ αὐτῷ αἵματι, εἰς ἐνδοξὴν τῆς δικαιοσύ
νης αὐτοῦ, διὰ παρέσιν τῷ προγεγονότων αἰμαρτημά
των.

26 Ἐν τῇ ἀνοχῇ τοῦ Θεοῦ, πρὸς ἐνδοξί
αν δικαιοσύνης αὐτοῦ, ἐν τῷ νῦν καιρῷ. εἰς τὴν
ἐκείνη αὐτὸν δίκαιον, καὶ δικαιούντα τὸν ὅτι πίστεως
Ἰησοῦ.

27 Πᾶς ὃν ἡ καύχησις; Ὁμολογία. Διὰ ποί
ον νόμον; τῷ ἔργῳ; Οὐχί. ἀλλὰ διὰ νόμον
πίστεως.

28 Λογίζομεθα ἔν, πίστεν δικαιῶσθαι ἄνθρωπον,
χορεῖ ἔργον νόμον.

29 Ἡ Ἰουδαίων ὁ Θεὸς μόνον, ἔχει ὅτι ἐθελῶν; Ναί
καὶ ἐθελῶν.

30 Ἐκάπερ ἡς ὁ Θεὸς, ὅς δικαιώσει πᾶν
τὸν ὅτι πίστεως, καὶ ἀκροβυστῶν διὰ τῆς πί
στεως.

31 Νόμον ἢ καταργημένον διὰ τῆς πίστεως; Μὴ γέ
νοιτο. ἀλλὰ νόμον ἰσχυρόν.

Κεφ. δ'. 4.

1 Τὸ ἢ ἔρῃμεν Ἀβραὰμ τὸ πατέρα ἡμῶν ὡς
κένον κατὰ σάρκα;

2 Εἰ γὰρ Ἀβραὰμ ὅς ἔργῳ ἐδικαιώθη, ἔχει καύ
χημα, ἀλλ' ἢ πρὸς τὸν Θεόν.

3 Τί γὰρ ἡ γραφὴ λέγει; Ἐπίστευσε δὲ
Ἀβραὰμ τῷ Θεῷ, καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιο
σύνην.

4 Τὸ ὅτι ἐργαζομένῳ ὁ μισθὸς ἢ λογίζεται κατὰ
κάρκιν, ἀλλὰ κατὰ τὸ ὀφείλημα.

5 Τῷ δὲ μὴ ἐργαζομένῳ, πισθόντι δὲ ὑπὲρ τοῦ
δικαιῶντα τὸν ἀσεβῆ, λογίζεται ἡ πίστις αὐτοῦ εἰς δι
καιοσύνην.

6 Κα-

6 Καθάπερ ἔδεδειξεν ὁ Θεὸς τὸν μακαρισμὸν τῷ ἀνθρώπῳ, ὃς ὁ Θεὸς λογίζεται δικαιοσύνην χάριτι ἔργων.

7 Μακάριοι οὖν ὁφείδουσιν αἱ ἀνομίαι, ἃ ὧν ἐπεκαλύφθησαν αἱ ἀμαρτίαι.

8 Μακάριος αὐτὸς ὃς ἢ μὴ λογίσχεται Κύριος ἀμαρτιῶν.

9 Ὁ μακαρισμὸς ἦν ὅτι, ὑπὲρ τῶν περιουσιῶν, ἃ ἔστιν ὑπὲρ τῶν ἀκροβυσίων; Λέγουμεν γὰρ ἐπὶ ἐλογίσθη τῷ Ἀβραάμ ἡ πίστις εἰς δικαιοσύνην.

10 Πῶς ἦν ἐλογίσθη; ὅτι πεποιτμῇ ὄντι, ἢ ὅτι ἀκροβυσία; Οὐκ ὅτι πεποιτμῇ, ἀλλ' ὅτι ἀκροβυσία.

11 Καὶ σκεῖται ἔλαβε πεποιτμῆς, σφραγίσαντες τὴν δικαιοσύνης τῆς πίστεως τῆς ἐν τῇ ἀκροβυσίᾳ, εἰς τὸ εἶναι αὐτὸν πατέρα πάντων τῶν πισθύντων δι' ἀκροβυσίας, εἰς τὸ λογισθῶμαι ὡς αὐτοὶ τῶν δικαιοσύνων.

12 Καὶ πατέρα πεποιτμῆς, τοῖς ἢ ὅτι ἐκ πεποιτμῆς μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς εὐχρηστοῖς τοῖς ἔχουσιν τῆς ἐν τῇ ἀκροβυσίᾳ πίστεως τῇ πατρὶς ἡμῶν Ἀβραάμ.

13 Οὐ γὰρ διὰ νόμον ἡ ἐπαγγελία τῷ Ἀβραάμ, ἢ τῷ σπέρματι αὐτοῦ, τὸ κληρονομεῖν αὐτὸν εἶναι τοῦ κόσμου, ἀλλὰ διὰ δικαιοσύνης πίστεως.

14 Εἰ γὰρ οἱ ἐκ νόμου, κληρονόμοι, κεκένωται ἡ πίστις, κατεργάζεται ἡ ἐπαγγελία.

15 Ὁ γὰρ νόμος ὀργῶν κατεργάζεται. ὃ γὰρ ἢ ἐστὶ νόμος, ἢ ἐκράβασις.

16 Διὰ τούτο ἐκ πίστεως, ἵνα κατὰ χάριν, εἰς τὸ εἶναι βεβαίω τῶν ἐπαγγελιῶν παντὶ τῷ σπέρματι, ὃ τῷ ἐκ νόμου μόνον, ἀλλὰ ὡς ἐκ πίστεως Ἀβραάμ, εἰς εἶναι πατέρα πάντων ἡμῶν.

17 (Καθὼς γέγραπται· Ὁ πᾶν πατέρα πολλῶν ἐθνῶν τέθεικά σε) κατένευεν ὃ ἐπίστευσε Θεῷ, τῇ ζωοποιῶντι τῆς νεκρῶν, καὶ καλεῖται τὰ μη ὄντα ὡς ὄντα.

18 Ὅς παρ' ἐλπίδα ἐπ' ἐλπίδι ἐπίστανται, ὡς τὸ ὕμνεσθαι αὐτὸν πατέρα πολλῶν ἐθνῶν, κατὰ τὸ εὐαγγέλιον. Οὗτοι εἰσι τὸ σπέρμα σου.

19 Καὶ μὴ ἀσθενήσαντες τῇ πίστει, οὐ κατένευσαν τὸ ἐκείνου σῶμα, ἡδὴ νεκρωμένον, ἐκ πεποιτμῆς πρὸς τὸν ἑαυτοῦ, καὶ τῶν νεκρῶν τῆς μετὰ τῆς Σάρρα.

20 Εἰς δὲ τῶν ἐπαγγελιῶν τῇ Θεῷ οὐ διακρίθη τῇ ἀπιστίᾳ, ἀλλ' ἐνδυναμώθη τῇ πίστει, διὰ τὸ εἶναι τῷ Θεῷ.

21 Καὶ πληροφορηθεὶς ὅτι ὃ ἐπαγγελῆται, δυνατὸς εἶσι ὡς ποιῆσαι.

22 Διὸς Ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην.

23 Οὐκ ἐγράφη δὲ δι' αὐτὸν μόνον, ὅτι ἐλογίσθη αὐτῷ.

24 Ἀλλὰ Ἐ δι' ἡμῶν, οἷς μέλλει λογιέσθαι * τοῖς πιστεύουσιν ὑπὲρ τὸν ἐνείκελτον Ἰησοῦν τὸν Κυρίου ἡμῶν ὁ νεκρὸν.

25 Ὅς παρεδόθη διὰ τὰ παραπτώματα ἡμῶν, καὶ ὑπὲρ ἡμῶν διὰ τὴν δικαιοσύνην ἡμῶν.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Δ**ικαιωθέντες οὖν ὡς πίστεως, εἰρήνην ἔχομεν πρὸς τὸν Θεὸν διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

2 Διὸς Ἐ τὴν προσμετρίαν ἔχθηκαμεν τῇ πίστει εἰς τὴν χάριν ταύτην ἐν ᾗ ἐσθῆκαμεν, Ἐ κωχούμεθα ἐπὶ ἐκπιδί τ' δόξης τῷ Θεῷ.

3 Οὐ μόνον ὧ, ἀλλὰ Ἐ κωχούμεθα ἐν ταῖς θλίψεσι, εἰδόντες ὅτι ἡ θλίψις ὑπομονὴν κατεργάζεται.

4 Ἡ δὲ ὑπομονὴ δοκιμὴν, ἡ δὲ δοκιμὴ ἐλπίδα.

5 Ἡ δὲ ἐλπίς ὅ καταικύνει, ὅτι ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ ὁκλήματα ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν διὰ Πνεύματος Ἀγίου τοῦ δοθέντος ἡμῖν.

6 Ἐτι γὰρ Χριστὸς ὄντων ἡμῶν ἀσθενῶν, κατὰ καιρὸν ὑπὲρ ἁμαρτιῶν ἀπέθανε.

7 Μόλις γὰρ ὑπὲρ δικαίῳ τις ἀποθνήσκει· ὑπὲρ γὰρ ἁμαρτιῶν τάχα τις ἢ πληρὸν ἀπεθάνειν.

8 Συνίσχῃ δὲ τὴν ἐσθῆ ἀγάπην εἰς ἡμῶν ὁ Θεός, ὅτι ἔτι ἀμωρτωμένων ὄντων ἡμῶν Χριστὸς ὑπὲρ ἡμῶν ἀπέθανε.

9 Πολλῷ ἢ μᾶλλον, δικαιωθέντες νῦν ἐν τῇ αἵματι αὐτοῦ, σώζεσθαι δὲ αὐτὸ ἀπὸ τῆς ὀργῆς.

10 Εἰ γὰρ ἐχθροὶ ὄντες καταλλάγαμεν τῷ Θεῷ διὰ τῆς θανάτου τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ, πολλῷ μᾶλλον καταλλαγέμενοι σωθήσεμεθα ἐν τῇ ζωῇ αὐτοῦ.

11 Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ κωχούμενοι ἐν τῷ Θεῷ διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, δι' ὃ νῦν τὴν καταλλαγὴν ἐλάβομεν.

12 Διὰ τὸ ὅσπερ δι' ἐνὸς ἀνθρώπου ἡ ἁμαρτία εἰς τὸν κόσμον εἰσῆλθε, Ἐ διὰ τῆς ἁμαρτίας ὁ θάνατος, Ἐ οὕτως εἰς πάντας ἀνθρώπους ὁ θάνατος διῆλθεν, ἐφ' ᾧ πάντες ἥμαρτον.

13 Ἀχρὶ γὰρ νόμος ἁμαρτία ὡς ἐν κόσμῳ· ἁμαρτία δὲ οὐκ ἐλογεῖται μὴ ὅτις νόμος.

14 Ἀλλ' ἐβασίλευσεν ὁ θάνατος ἀπὸ Ἀδὰμ μέχρι Μωσέως, Ἐ ἐπὶ τοῖς μὴ ἁμαρτήσαντας ὑπὲρ τῷ ὅτι ἠοκλήματι τῆς πειραστικῆς Ἀδὰμ, ὅς ἐστι τύπος τοῦ μέλλοντος.

15 Ἀλλ' ἔχ' ὡς τὸ παράπτωμα, ἔτω & τὸ χάρισμα. εἰ γὰρ τῷ ᾧ ἑνὸς ᾧ ἡμαρτήματα οἱ πολλοὶ ἀπέθανον, πολλῷ μᾶλλον ἢ χάρις τῷ Θεῷ & ἡ δωρεὰ ἐν χάριτι τῇ ᾧ ἑνὸς ἀνθρώπου Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς τὰς πολλὰς ὑπερβαίνει.

16 Καὶ ἔχ' ὡς δι' ἑνὸς ἡμαρτήματος, τὸ ὄνομα. τὸ μὲν γὰρ κρίμα ἦν ἑνὸς εἰς κατάκριμα, τὸ δὲ χάρισμα ὅτι πολλὰς ἡμαρτημάτων εἰς δικαιώματα.

17 Εἰ γὰρ τῷ τοῦ ἑνὸς ᾧ ἡμαρτήματα ὁ θάνατος ἐβασίλευσε διὰ τοῦ ἑνὸς, πολλῷ μᾶλλον οἱ τῷ ᾧ ἡμαρτήματα τῆς χάριτος & τῆς δωρεᾶς τῆς δικαιοσύνης λαμβάνοντες, ἐν ζωῇ βασιλεύσονται διὰ τοῦ ἑνὸς Ἰησοῦ Χριστοῦ.

18 Ἀρα ἔν ὡς δι' ἑνὸς ᾧ ἡμαρτήματος, εἰς πάντας ἀνθρώπους, εἰς κατάκριμα. ἔτω & δι' ἑνὸς δικαιοσύνης, εἰς πάντας ἀνθρώπους, εἰς δικαιοσύνην ζωῆς.

19 Ὡς περ γὰρ διὰ τῆς παρακοῆς τοῦ ἑνὸς ἀνθρώπου ἡμαρτάνοντες κατεσθάνθησαν οἱ πολλοί, οὕτως & διὰ τῆς ἡμετέρας παρακοῆς τοῦ ἑνὸς δικαιοὶ κατασθάνονται οἱ πολλοί.

20 Νῦν οὖν ὅτι παρεσῆλθεν ἵνα πλεονέσῃ τὸ παράπτωμα, οὐ δὲ ἐπλεόνασεν ἡ ἁμαρτία, ὑπερπεριεσθάνει ἡ χάρις.

21 ἵνα ὥσπερ ἐβασίλευσεν ἡ ἁμαρτία ἐν τῷ θανάτῳ, οὕτως καὶ ἡ χάρις βασιλεύσῃ διὰ δικαιοσύνης εἰς ζωὴν αἰώνιον, διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν.

Κεφ. 5. 6.

1 **Τ**Ι ἔν ἐρεῖμεν; ἐπιμενοῦμεν τῇ ἁμαρτίᾳ, ἵνα ἡ χάρις ἐπλεονέσῃ;

2 Μη γένοιτο. οἵτινες ἀπεθάνομεν τῇ ἁμαρτίᾳ, πῶς ἐπ' ἐλπίσμεν ἐν αὐτῇ;

3 Ἡ ἀγνοοῖτε, ὅτι ὅσοι ἐβαπτίσθημεν εἰς Χριστὸν Ἰησοῦν, εἰς τὸν θάνατον αὐτοῦ ἐβαπτίσθημεν;

4 Συνετάφημεν ἔν αὐτῷ διὰ τῆς βαπτίσματος εἰς τὸν θάνατον. ἵνα ὥσπερ ἡ γὰρ ἡ χάρις ὅτι νεκρῶν διὰ τὴν ἐλπίδα τοῦ πατρὸς, οὕτως & ἡμεῖς ἐν καὶνότητι ζωῆς περιεσθάνομεν.

5 Εἰ γὰρ σύμφυτοι γεγόνημεν τῷ ὁμοιώματι τοῦ θανάτου αὐτοῦ, ἀλλὰ & τῇ ἀναστάσει ἐσόμεθα.

6 Τῆς γινώσκοντες, ὅτι ὁ παλαιὸς ἡμῶν ἄνθρωπος συνεσθάνθη, ἵνα καταργηθῇ τὸ σῶμα τῆς ἁμαρτίας, τῇ μηκέτι δουλεύειν ἡμῶς τῇ ἁμαρτίᾳ.

7 Ὅ γὰρ ἀποθάνων δεικαίωται ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας.

8 Εἰ ὃ ἀπεθανόμεν σὺν Χριστῷ, πίστευομεν ὅτι καὶ
 συζήτομεν αὐτῷ.

9 Εἰδότες ὅτι Χριστὸς ἐγερθεὶς ἐκ νεκρῶν, ἠκέτι ἀ-
 ποθνήσκει· θάνατος αὐτῇ ἡκέτι κυριεύει.

10 Ὅ· ὃ ἀπέθανε, τῇ ἁμαρτίᾳ ἀπέθανεν ἐφ' ἡμᾶς·
 ὃ ὃ ζῇ, ζῇ τῷ Θεῷ.

11 Οὕτω ὃ ὑμεῖς λογίζεσθε, ἐνωτὴς νεκρῶν μὲν
 εἶναι τῇ ἁμαρτίᾳ, ζῶντας δὲ τῷ Θεῷ ὡς Χριστῷ τῷ
 Κυρίῳ ἡμῶν.

12 Μὴ ὡς βασιλεύετε ἡ ἁμαρτία ἐν τῷ θνήσκῳ
 ὑμῶν σώματι, ὡς τὰ ὑπακούεν αὐτῇ ὡς ταῖς ὑποθυ-
 μίαις αὐτῇ.

13 Μὴ δὲ περιστέετε τὰ μέλη ὑμῶν ὅπλα ἀδικίας
 τῇ ἁμαρτίᾳ· ἀλλὰ ὡς θνήσκετε ἑαυτοὺς τῷ Θεῷ
 ὡς ὃ νεκρῶν ζῶντας, καὶ τὰ μέλη ὑμῶν ὅπλα δι-
 καιοσύνης τῷ Θεῷ.

14 Ἁμαρτία ὃ ὑμῶν ἢ κυριεύσει· ἢ γὰρ ἔτε ὑπὸ
 νόμον, ἀλλ' ὑπὸ χάριν.

15 Τί ἔτι; ἁμαρτολογούμεν, ὅτι ἢ ἐσμὲν ὑπὸ νόμον,
 ἀλλ' ὑπὸ χάριν; Μὴ γίνωτο.

16 Οὐκ οἶδατε ἐπ' ᾧ περιστέετε ἑαυτοὺς ὁμολογῶν
 ὑπακούω, ὁμολογῶ ὅτι ὃ ὑπακούετε, ἢτοι ἁμαρτίας ἢ
 θάνατος, ὃ ὑπακούετε εἰς δικαιοσύνην;

17 Χάριν ὃ τῷ Θεῷ ὅτι ἢτε ὁμολογῶ ὃ ἁμαρτίας, ὃ-
 πηκτάτε ὃ ἐκ καρδίας εἰς ὃν παρεδόθητε τὸ πᾶν διδασκαλίας.

18 Ἐλευθερωθέντες ὃ ἀπὸ τῇ ἁμαρτίας, ἐδουλώθητε
 τῇ δικαιοσύνῃ.

19 Ἀνθρώπινον λέγω, διὰ τὴν ἀσθένειαν τῇ σαρκὸς
 ἡμῶν· ὥστε ὃ περιτέετε τὰ μέλη ὑμῶν ὁμολογῶ τῇ
 ἁκαθαρσίᾳ ὃ τῇ ἀνομίᾳ εἰς τὴν ἀνομίαν, ὥτοι νῦν
 ὡς θνήσκετε τὰ μέλη ὑμῶν ὁμολογῶ τῇ δικαιοσύνῃ εἰς ἁ-
 γιασμόν.

20 Ὅτε ὃ ὁμολογῶ ἢτε τῇ ἁμαρτίας, ἐλευθεροὶ ἢτε
 τῇ δικαιοσύνῃ.

21 Τίνα ἔτι καρπὸν ἔχετε τότε, ἐφ' οἷς νῦν ἐπαι-
 χύεσθε; τα ὃ τέλος ὁκείνων, θάνατος.

22 Νυνὶ ὃ ἐλευθερωθέντες ἀπὸ τῇ ἁμαρτίας, δου-
 λώθητε ὃ τῷ Θεῷ, ἔχετε τῇ καρπὸν ὑμῶν εἰς ἁγιασ-
 μόν· τὸ ὃ τέλος, ζωὴ αἰώνιος.

23 Τα ὃ ὁμολογῶ τῇ ἁμαρτίας, θάνατος· τὸ δὲ
 χάρισμα τῷ Θεῷ, ζωὴ αἰώνιος ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ
 Κυρίῳ ἡμῶν.

Κεφ. ζ'. 7.

1 **Η** Α'γνοῦτε, ἀδελφοί, (γινώσκου-
σι γὰρ νόμον λαλῶ) ὅτι ὁ νό-
μος κυριεύει τοῦ ἀνθρώπου ἐφ' ὅσον χρόνον

2 **Η** γὰρ ὑπάρχοντος τοῦ ζῶντος ἀνδρὶ δίδεται νό-
μος· εἰ δὲ ἀποθάνῃ ὁ ἀνὴρ, κατήργηται ἀπὸ τοῦ νό-
μου ὁ ἀνδρὸς.

3 Ἀρα οὖν ζῶντος τοῦ ἀνδρὸς μοιχαλὶς χρη-
σασθαι, εἰς τὸ γενῆται ἀνδρὶ ἑτέρῳ· εἰ δὲ ἀ-
ποθάνῃ ὁ ἀνὴρ, ἐλευθέρῳ ἐστὶν ἀπὸ τοῦ νό-
μου, τὸ μὴ εἶναι οὕτως μοιχαλίδας ἡγομένους ἀν-
δρὶ ἑτέρῳ.

4 Ὡς, ἀδελφοί μου, ὅς ὑμῖν ἐδιδρακτώθητε τῷ
νόμῳ διὰ τὴν σῶματός τ' Χριστοῦ, εἰς τὸ ἡγιασθῆναι
ὑμῖν ἑτέρῳ τῷ νόμῳ νεκρῶν ἐγεργασθῆναι, ἵνα καρποφορήτω-
μεν τῷ Θεῷ.

5 Ὅτε γὰρ ἡμεῖς ἐν τῇ σαρκί, τὰ παθή-
ματα τοῦ σώματος ἡμετέρου τῷ νόμῳ ἐπληρώθη-
μεν τοῖς μέλεσιν ἡμῶν, εἰς τὸ καρποφορῆσαι τῷ
Θεῷ.

6 Νυνὶ δὲ κατηργήθημεν ἀπὸ τοῦ νόμου, ἀ-
παλλαγέντες ἐν ᾧ κατεχόμεθα· ὥς, δουλεύειν ἡ-
μῖν ἐν καινότητι πνεύματος, ὅς ἡ παλαιότης
τοῦ σώματος.

7 Τί ὅν ἐρῶμεν; Ὁ νόμος ἁμαρτία; Μὴ γένοιτο·
ἀλλὰ τὸ ἁμαρτάνειν ἐγὼν εἰ μὴ διὰ νόμον· τὴν τε
ἐπιθυμίαν ἡμετέραν ἡδυνῶν εἰ μὴ ὁ νόμος ἐλεγεν· Οὐκ
ἐπιθυμῶμαι.

8 Ἀφορμὴν ὅμως λαβῶσα ἡ ἁμαρτία, διὰ τὴν ἐντολὴν
κατεργάσατο ἐν ἐμοὶ πᾶσαν ἐπιθυμίαν· καὶ οὕτως ὁ
νόμος ἁμαρτία νεκρά.

9 Ἐγὼ δὲ ἔζων χωρίς νόμου ποτέ· ἐλθέσσης δὲ τῆς ἐν-
τολῆς, ἡ ἁμαρτία ἀνέζησεν.

10 Ἐγὼ δὲ ἀπέθανον· ὅς ἐρέθη μοι ἡ ἐντολή ἡ εἰς
ὧν, οὕτως εἰς θάνατον.

11 **Η** γὰρ ἁμαρτία ἀφορμὴν λαβοῦσα, διὰ τὴν
ἐντολὴν ἐξηπάτησέν με, καὶ δι' αὐτῆς ἀπέ-
τενον.

12 Ὡς, ὁ μὲν νόμος ἅγιος, ὅς ἡ ἐντολή ἀγία καὶ
καλὴ ὁ ἀγαθός.

13 Τὸ ὅν ἀγαθόν, ἐμοὶ γέγονε θάνατος·
ἀλλὰ ἡ ἁμαρτία, ἵνα φανῇ ἁμαρ-
τία διὰ τὴν ἐντολὴν μοι κατεργαζομένη θάνατον, ἵνα
ἐκτελέσῃ κατὰ τὴν ἐπιθυμίαν ἁμαρτωλοῦ ἡ ἁμαρτία διὰ τὴν
ἐντολὴν.

14 Οἶδα μὲν γὰρ ὅτι ὁ νόμος πνευματικὸς ἐστίν· ἐγὼ δὲ σαρκικὸς εἰμι, πεπραμένος ὑπὸ τῷ ἁμαρτίῳ.

15 Οὐ γὰρ κατεργάζομαι, οὐ γινώσκω· οὐ γὰρ ὁ θέλω, τοῦτο πράττειν, ἀλλ' ὁ μισῶ, τοῦτο ποιεῖν.

16 Εἰ δέ ὁ οὐ θέλω, τοῦτο ποιεῖν, σύμφωνα τῷ νόμῳ ὅτι καλὸς.

17 Νυνὶ ὅμως ἔτι ἐγὼ κατεργάζομαι αὐτὸ, ἀλλ' ἡ εἰκὼς ἐν ἐμοὶ ἁμαρτία.

18 Οἶδα γὰρ ὅτι οὐκ εἰκὴ ἐν ἐμοὶ (τινέστιν ὅτι τῇ σαρκὶ μου) ἀγαθόν· τὸ γὰρ θέλουν παράκειται μοι, τὸ δὲ κατεργάζεσθαι τὸ καλόν, ἔχω ἐρείσκω.

19 Οὐ γὰρ ὁ θέλω, ποιεῖν ἀγαθόν· ἀλλ' ὁ ὁ θέλω κακόν, τὴν τοῦτο ποιεῖν.

20 Εἰ δέ ὁ οὐ θέλω ἐγὼ τοῦτο ποιεῖν, οὐκ ἐπ' ἐγὼ κατεργάζομαι αὐτὸ, ἀλλ' ἡ οἰκονομία ἐν ἐμοὶ ἁμαρτία.

21 Εὐρίσκω ἄρα τὸν νόμον τῷ θέλοντι ἐμοὶ ποιεῖν τὸ καλόν, ὅτι ἐμοὶ τὸ καλὸν παράκειται.

22 Συνήδομαι γὰρ τῷ νόμῳ τοῦ Θεοῦ κατὰ τὸ ἔσθ' ἀνθρώπου.

23 Βλέπω δὲ ἕτερον νόμον ἐν τοῖς μέλεσί μου ἀντιπαρατίθεμενον τῷ νόμῳ τοῦ νοῦς μου, καὶ ἀντιμαχόμενον τὸν νόμον τῆς ἀμαρτίας τῷ ὅτι ἐν τοῖς μέλεσί μου.

24 Τελείωσθε ἐγὼ ἄνθρωπος· τίς με ῥύσεται ὅτι τοῦ σώματος τοῦ θανάτου τῆτι;

25 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν. Ἄρα ἔτι κατὰ ἐγὼ τῷ μὲν νοῖ δουλεύω νόμῳ Θεοῦ· τῇ δὲ σαρκὶ νόμῳ ἁμαρτίας.

Κεφ. ἡ. β.

1 Οὐδὲν ἄρα νῦν κατάκριμα τοῖς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, μὴ κατὰ σάρκα πῶτα τοῦτον, ἀλλὰ κατὰ πνεῦμα.

2 Οὐ γὰρ νόμος τοῦ πνεύματος τὸ ζῆν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἀλλ' ὁ νόμος τοῦ πνεύματος τὸν νόμον τῆς ἀμαρτίας καὶ τοῦ θανάτου.

3 Τὸ γὰρ ἀδύνατον τοῦ νόμου, ἐν ᾧ ἡσθένει διὰ τὴν σαρκὸς, ὁ Θεὸς τὸν ἑαυτοῦ Υἱὸν πέμψας ἐν ὁμοιωματι σαρκὸς ἁμαρτίας, ὁ πᾶσι ἁμαρτίας, κατέκρινε τὸν ἁμαρτίαν ἐν τῇ σαρκί.

4 ἵνα τὸ δικαίωμα τοῦ νόμου πληρωθῇ ἐν ἡμῖν τοῖς μὴ κατὰ σάρκα πῶτα τοῦτον, ἀλλὰ κατὰ πνεῦμα.

5 Οἱ γὰρ καὶ σὰρκα ὄντες, τὰ τ' σαρκὸς φρονέουσιν· οἱ
 3 καὶ πνεῦμα, τὰ τ' πνεύματος.

6 Τὸ γὰρ φρόνημα τ' σαρκὸς, θάνατος· τὸ δὲ φρο-
 νημα τ' πνεύματος, ζωὴ καὶ εἰρήνη.

7 Διότι τὸ φρόνημα τ' σαρκὸς, ἔχθρα εἰς Θεόν·
 τὸ γὰρ νόμῳ τ' Θεῷ ἄχ· ὑποτάσσεται· ὡδὲ γὰρ δύ-
 νηται.

8 Οἱ δὲ ἐν σαρκὶ ὄντες, Θεῷ ἀρέσαι οὐ δύναμ-
 ται.

9 Ὑμεῖς δὲ ἐκ ἐσέ ἐν σαρκὶ, ἀλλ' ἐν πνεύματι,
 ἢτε πνεῦμα Θεοῦ οἰκᾷ ἐν ὑμῖν· εἰ δὲ πε πνεῦμα Χρι-
 στὸ ἢ ἔχει, ὅτος ἢ ἐστὶν αὐτῷ.

10 Εἰ δὲ Χριστὸς ἐν ὑμῖν, τὸ μὲν σῶμα νε-
 κρὸν δι' ἁμαρτίαν· τὸ δὲ πνεῦμα, ζωὴ καὶ δικαιο-
 συνή.

11 Εἰ δὲ τὸ πνεῦμα τ' ἐνέχοντος Ἰησοῦ ἐν νεκρῷ
 οἰκᾷ ἐν ὑμῖν, ὃ ἐνέχοντος τ' Χριστοῦ ἐν ἐκ νεκρῶν, ζωο-
 ποιῆται ἡ τὰ θνητὰ σώματα ὑμῶν, διὰ τ' ἐνοικητοῦ
 αὐτ' πνεύματος ἐν ὑμῖν.

12 Ἀρα ἦν, ἀδελφοί, ἐφηλέται ἐσμέν ὃ τῇ σαρ-
 κὶ, καὶ σὰρκα ζῆν.

13 Εἰ γὰρ καὶ σὰρκα ζῆτε, μέλλετε ἀποθνήσκειν·
 εἰ δὲ πνεύματι τὰς πράξεις τ' σώματος θάψατέ τε, ζο-
 οισθε.

14 Ὅσοι γὰρ πνεύματι Θεοῦ ἄγονται, ὅτοί εἰσιν
 υἱοὶ Θεοῦ.

15 Οὐ γὰρ ἐλάβετε πνεῦμα δουλείας πάλιν εἰς φόβον,
 ἀλλ' ἐλάβετε πνεῦμα υἱοθεσίας, ἐν ᾧ κράζομεν, Ἀβ-
 ῶά ὁ πατήρ.

16 Αὐτὸ τὸ πνεῦμα συμμαρτυρεῖ τῷ πνεύματι ἡμῶν,
 ὅτι ἐσμέν τέκνα Θεοῦ.

17 Εἰ δὲ τέκνα, ἡ κληρονόμοι· κληρονομοὶ μὲν
 οὖν, συκληρονόμοι δὲ Χριστοῦ· ἢτερ συμπάσχοντες
 ἡ καὶ συνδοξασθῶμεν.

18 Λογίζομαι γὰρ ὅτι ἡ ἀξία τὰ παθήματα τ' τῶν
 κοίτης πρὸς τὴν μέλλουσαν δόξαν ἀποκαλυφθῶσι εἰς
 ἡμᾶς.

19 Ἡ γὰρ ἀποκαρδοκία τ' κτίσεως τ' ἀποκάλυψις
 τῆς υἱότητος τ' Θεοῦ ἀπεκδέχεται.

20 Τῇ γὰρ ματαιότητι ἡ κτίσις ὑπετάγη, ἢ καὶ ἡ-
 γῆσα, ἀλλὰ διὰ τ' ὑποτάξαι.

21 Ἐπὶ ἐκπίδει, ὅτι καὶ αὐτὴ ἡ κτίσις ἐλευθερω-
 θήσεται ἀπὸ τῆς δουλείας τῆς φθορᾶς εἰς τὴν ἐλευθε-
 ρίαν τῆς δόξης τῆς τέκνων τῷ Θεῷ.

22 Οἶδαμεν γὰρ ὅτι πάντα ἡ κτίσις συσπένεται ἡ
 συνωδίνει ἄχρι τῆς νῦν.

23 Οὐ μοις δὲ, ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ τῷ ἀρχῇ τῇ
 πνεύματος ἔχοντες, καὶ ἡμεῖς αὐτοὶ ἐν αὐτοῖς στενά-
 ζομεν, ὅπως ἵσθαι ἀπεκδέχεται τὴν ἀπολύτρωσιν τοῦ
 σώματος ἡμῶν.

24 Τῇ γὰρ ἐλπίδι ἐσώθμεν· ἐλπίς δὲ βλέπο-
μένη, οὐκ ἔστιν ἐλπίς· ὁ γὰρ βλέπει τις, τί ἐ-
λπίζει;

25 Εἰ δὲ ὃ ἢ βλέπομεν, ἐλπίζομεν, δι' ὑπομονῆς
ἀπεκδεχόμεθα.

26 Ὡς αὐτως δὲ ἔστι τὸ Πνεῦμα συνκαταλαμβανέται
ταῖς ἀσθενείαις ἡμῶν· τὸ γὰρ τί προσδύομεθα κα-
θ' ὃ δὲ, ἢ οἶδαμεν, ἀλλ' αὐτὸ τὸ Πνεῦμα ὑπερ-
νυγχάνει ὑπὲρ ἡμῶν στεναγμοῖς ἀλαλήτοις.

27 Ὅς δὲ ἐρδύνει τὰς καρδίας, οἷδε· τί τὸ φρόνημα
τῷ Πνεύματι, ὅτι κατὰ Θεὸν ἐντυγχάνει ὑπὲρ ἀγίου.

28 Οἶδαμεν δὲ ὅτι ταῖς ἀγαπαῖς τῷ Θεῷ, πάντα
συνεργῶν εἰς ἀγαθόν, τοῖς κατὰ πρόθεσιν κλητοῖς ἔσιν.

29 Ὅτι ἡς προέγνω, ἔτι προέβλεπε συμμόρφως τῷ ἐν-
δόξῳ τῷ Υἱῷ αὐτοῦ, εἰς τὸ εἶναι αὐτῶν πρωτότοκον ἐν
πολλοῖς ἀδελφοῖς.

30 Οὗς δὲ προέβλεπε, τέτυκτο καὶ ἐκάλεισε· καὶ ἡς
ἐκάλεισε, τέτυκτο καὶ ἐδικαίωσεν· ἡς δὲ ἐδικαίωσε, τέ-
τυκτο καὶ ἐδόξασε.

31 Τίς ἦν ἐρῶμεν πρὸς ταῦτα; εἰ ὁ Θεὸς ὑπὲρ ἡμῶν,
τίς καθ' ἡμῶν;

32 Ὅς γε τῷ ἰδίῳ Υἱῷ ἢ ἐφείσατο, ἀλλ' ὑπὲρ ἡ-
μῶν πάντων παρέδωκεν αὐτόν, πῶς ἔτι ἔστιν αὐτῶν
πάντα ἡμῖν χρεῖσται;

33 Τίς ἐγκαλέσει κατὰ ἐκλεκτῶν Θεῷ; Θεὸς ὁ
δικαίων.

34 Τίς ὁ κατακρίνων; Χρεῖστος ὁ ἀποθανών, καλ-
λον δὲ ἔγερθεὶς, ὅς καὶ ἔστιν ἐν δεξιᾷ τῷ Θεῷ, ὅς ἔστι
ἐντυγχάνει ὑπὲρ ἡμῶν.

35 Τίς ἡμᾶς χρεῖσται ἀπὸ τῆς ἀγάπης τῷ Χριστῷ;
Θλίψις, ἢ στενοχωρία, ἢ διωγμός, ἢ λιμός, ἢ γο-
νία, ἢ κίνδυνος, ἢ μάχαιρα;

36 (Καθὼς γέγραπται· Ὅτι ἐνεκά σου θανάτωμε-
θα ὅλην τὴν ἡμέραν· ἐλογίσθημεν ὡς πρόβατα
σφαγῆς.)

37 Ἀλλ' ἐν ταῖς πᾶσι ὑπερνικῶμεν διὰ τῆς ἀγα-
πῆς αὐτοῦ ἡμῶν.

38 Πείσονται γὰρ ὅτι ἢ τε θάνατος, ἢ τε ζωὴ, ἢ τε
ἄγγελοι, ἢ τε ἀρχαί, ἢ τε δυνάμεις, ἢ τε ἐνεσώματα, ἢ
τε μέλλοντα,

39 Οὐτε ὕψωμα, ἢ τε βάθος, ἢ τε τις κτίσις ἑτέ-
ρα ἡμᾶς χρεῖσται ἀπὸ τῆς ἀγάπης τῷ Θεῷ, τῷ
Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.

Κεφ. Σ'. 9.

1 **Α** 'Αθήναιον λέγων ἐν Χριστῷ, ἢ ψεύδομαι (συνμαρτυρήσῃς μοι ἡ συνειδήσειός μου ἐν Πνεύματι ἁγίῳ,)

2 Ὅτι λυπή μοι ἐστὶ μεγάλη, ἔτι ἀδικήματος οὐδὲν ἐν καρδίᾳ μου.

3 Ἡχούμιον γὰρ οὗτος ἐγὼ ἀνέθεμα εἶναι ἀπὸ τοῦ Χριστοῦ ὑπὲρ τῆς ἀδελφῶν μου τῆς συγχυμῶν με κατὰ σάρκα.

4 Οἱ πῆρες εἰσιν Ἰσραηλῖται, ὧν ἡ υἱοθεσία, ἔτι δόξα, ἔτι ἀλ' διαθήκαι, ἔτι ἡ νομοθεσία, ἔτι ἡ λατρεία, ἔτι ἡ ἐπαγγελία.

5 Ὡς οἱ πατέρες, καὶ ἔτι ὧν ὁ Χριστὸς τὸ κατὰ σάρκα, ὃ ὧν ὅτι πάντων Θεὸς εὐλογητὸς εἰς τὰς αἰῶνας αἰώνων.

6 Οὐχ οἷον δὲ ὅτι ἐκπέτωκεν ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ, ἢ ὅτι πάντες οἱ ἔτι Ἰσραὴλ, ἥτοι Ἰσραὴλ.

7 Οὐδ' ὅτι εἰς σπέρμα Ἀβραάμ, πάντες τέκνα· ἀλλ' ἐν Ἰσραὴλ κληθήσεται σοὶ σπέρμα.

8 Τητέσιν, ἢ τὰ τέκνα τῆς σαρκὸς, ταῦτα τέκνα τοῦ Θεοῦ· ἀλλὰ τὰ τέκνα τῆς ἐπαγγελίας λογίζονται εἰς σπέρμα.

9 Ἐπαγγελίας γὰρ ὁ λόγος ἦτο· Κατὰ τὸν κερὸν τῆτον ἐλθούσμαι, καὶ εἶσαι τῇ Σάρρι ἡ υἱός.

10 Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ ἔτι Ῥεβέκκα, ἔτι ἐνός κοίτης ἔχουσα, Ἰσαὰκ τοῦ πατρὸς ἡμῶν.

11 Μήτοι καὶ ἡμνηθέντων, μηδὲ πραξάντων πᾶσαν ἢ κακίαν, ἵνα ἡ κατ' ἐκλογὴν τοῦ Θεοῦ πρόθεσις μὴν, ἢ καὶ ἔτι ἔργων, ἀλλ' ὅτι καλῶντος.

12 Ἐρρήθη αὐτῇ· Ὅτι ὁ μέζων θαλάσση τῷ ἐλάσσονι.

13 Καθὼς γέγραπται· Τὸν Ἰακώβ ἠγάπησα, τῷ δὲ Ἠσαὺ ἐμίσησα.

14 Τί ἔτι ἐρῶμεν; μὴ ἀδικία παρὰ τῷ Θεῷ; Μὴ γένοιτο.

15 Τῷ καὶ Μωσῇ λέγει· Ἐλέησω ὃν ἂν ἐλεῶ, καὶ οἰκτείρῃσω ὃν ἂν οἰκτείρω.

16 Ἀρα ἔτι ἢ τοῦ θέλοντος, ἢ δὲ τοῦ τρέχοντος, ἀλλὰ τῷ ἐλεούτι τοῦ Θεοῦ.

17 Λέγει γὰρ ἡ γραφὴ τῷ Φαραὼ· Ὅτι εἰς αὐτὸ τοῦτο ἐξήγηρα σε, ὅπως ἐνδειξώμαι ἐν σοὶ τῷ δυνάμει μου, καὶ ὅπως διαγγεληῖ τὸ ὄνομά μου ἐν πάσῃ τῇ γῇ.

18 Ἀρα οὐκ ὃν θέλει, ἐλεῖ· ὃν δὲ θέλει, σκληρύνει.

19 Ἐρεῖς ἢ μοι . Τί ἐπ' ἐμέμεται ; τῷ βαλῆματι οὐκ ἔστι ἀνδραγαθία ;

20 Μεμνηθεὶς , ὃ ἀνέδραπε , σὺ τίς εἶ ὁ ἀνταποκρινόμενος τῷ Θεῷ ; Μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα τῷ πλάσῳ . Τί με ἐποίησας ὅτως ;

21 Ἡ' ἢ ἐχὼ ἔξωσίαν ὁ κεραμὴς τῷ πλῆθι , ὅς τ' αὐτῷ φουρέματος ποιῇσαι , ὃ μὲν εἰς τιμὴν σκευὸς , ὃ δὲ εἰς ἀτιμίαν ;

22 Εἰ δ' θέλων ὁ Θεὸς ἐνδείκασθαι τῷ ὄργῳ , ὅτι γνωρίσαι τὸ δυνατόν αὐτῇ , ὡς γινώσκῃ πολλὰ μακροθυμία σκόδι ὄργης κατηρτισμένα εἰς ἀπώλειαν ;

23 Καὶ ἵνα γνωρίσῃ τῷ πλῆθει τὴν δέξιν αὐτῇ ὅτι σκόδι ἔλεος , ὃ προητοίμασεν εἰς δοξάν ;

24 Οὐκ ὅτι ἐκάλεσεν ἡμᾶς , ἢ μόνον θεῖ Ἰσραὴλ , ἀλλὰ ὅτι ἐδόξεν .

25 Ὡς καὶ ἐν τῷ Ὁσέ λέγει . Καλέσω τὸν οὐρανόν μου , καὶ τὸν γῆν . καὶ τῷ οὐκ ἠγαπήμενόν , ἠγαπήμενόν .

26 Καὶ ἔσαι , ἐν τῷ τόπῳ ᾧ ἐρρήθη καὶ τοῖς . Οὐ καὶ τοῦ οὐρανοῦ , ὅπως κληθήσονται οἱ οὐνοὶ Θεοῦ ζῶντος .

27 Ἡ' σαίνας δ' καὶ ἐπὶ Ἰσραὴλ . Ἐὰν ἢ ὁ ἀγαθὸς τῷ οὐρανῷ ὡς ἡ ἀμμος τῷ θαλάσσῃ , τὸ κατάλειμμα σωθήσεται .

28 Λόγον γὰρ συντελεῖν καὶ συντέμνειν ἐν δικαιοσύνῃ , ὅτι λόγον συντετελεμένον ποιήσει Κύριος ἐπὶ τῆς γῆς .

29 Καὶ καθὼς προέφηκεν Ἡ' σαίνας . Εἰ μὴ Κύριος Σοβαῶν ἐγκατέλειπεν ἡμῖν σπέρμα , εἰς Σοδομα ἢ ἐνλῆθηθαμεν , καὶ ὡς Γομορρᾶ ἢ ἐν ὠμοῖς ἡμεῖς .

30 Τί ἢν ἐρῶμεν ; ὅτι ἔθνη τὰ μὴ δικάοντα δικαιοσύνην , κατέλαβε δικαιοσύνην . δικαιοσύνην δὲ τῷ ἐκ πίστεως .

31 Ἰσραὴλ δὲ δικάων νόμον δικαιοσύνης , εἰς νόμον δικαιοσύνης ἢ ἐφθασεν .

32 Διὰ τί ; ὅτι ἢ ἐκ πίστεως , ἀλλ' ὡς ἢ ἔργον νόμου . προσέκοψαν γὰρ τῷ λίθῳ τῷ προσκόμματος .

33 Καθὼς γέγραπται . Ἰδὲ , τίθει ἐν Σιών λίθον προσκόμματος , ὅτι πέτρῃ σκάνδαλου ὅτι πᾶς ὁ πιστεύων ἐπ' αὐτῇ , ὃν κατακλυνθήσεται .

Κεφ. ι' 10.

1 **Α** Δεσφοί, ἡ μὲν δύσκολία τῆς ἐμῆς καρδίας, καὶ ἡ ἐλπίς ἡ πρὸς τὸ Θεόν, ὡς ἔστιν ἐν σωτηρίᾳ.

2 Μαρτυρῶ γὰρ αὐτοῖς ὅτι ζῆλον Θεοῦ ἔχουσιν, ἀλλ' οὐ κατ' ἐπίγνωσιν.

3 Ἀγνοοῦντες γὰρ τὸ Θεοῦ δικαιοσύνην, ἡ τὸ ἰδίαν δικαιοσύνην ζητῶντες γῆσθαι, τῇ δικαιοσύνῃ τῇ Θεοῦ οὐκ ὑπετάσσονται.

4 Τέλος γὰρ νόμος Χριστός, εἰς δικαιοσύνην πάντες τῷ πισθύνοντι.

5 Μοισῆς γὰρ γράφει τὴν δικαιοσύνην τῷ ὅκ τῷ νόμῳ. Ὅτι ὁ ποιήσας αὐτὰ ἀνθρώπος ζήσεται ἐν αἰσιν.

6 Ἡ δὲ ὅκ πίστεως δικαιοσύνη ὅτω λέγει. Μὴ εἴπῃς ἐν καρδίᾳ σου. Τίς ἀντιβήσεται εἰς τὸ ἔλεον; Τὸ ἐστὶν Χριστὸν καταγαγεῖν.

7 Ἡ τὴν καταβήσεται εἰς τὸ ἄβυσσον; Τητέσι Χριστὸν ἐκ νεκρῶν ἀναγαγεῖν.

8 Ἀλλὰ τί λέγει; Ἐγγύς σου τὸ ῥῆμα ἐστὶ ἐν τῷ σώματι σου καὶ ἐν τῇ καρδίᾳ σου. Τὸ ἐστὶν τὸ ῥῆμα τὸ πίστεως ὁ κηρύσσων.

9 Ὅτι ἐὰν ὁμολογήσας ἐν τῷ σώματι σου Κύριον Ἰησοῦν, ἡ πισθῇς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, ὅτι ὁ Θεὸς αὐτὸν ἡγειρεν ἐκ νεκρῶν, σωθήσῃς.

10 Καρδίᾳ γὰρ πισθύνεται εἰς δικαιοσύνην. Σώματι δὲ ὁμολογεῖται εἰς σωτηρίαν.

11 Λέγει γὰρ ἡ γραφή. Πᾶς ὁ πισθύνων ἐπ' αὐτῷ, οὐ καταδικάζεται.

12 Οὐ γὰρ ἐστὶ διαβολὴ Ἰουδαίων τε ἡ Εὐλαῖος. Ἰδὲ γὰρ αὐτὸς Κύριος πάντων, πλεονεξῶν εἰς πάντας τὰς ἡπικαλέμεναι αὐτόν.

13 Πᾶς γὰρ ὅς ἀν' ἡπικαλέσεται τὸ ὄνομα Κυρίου, σωθήσεται.

14 Πῶς δὲ ἡπικαλέσονται εἰς ὃν οὐκ ἐπίστανται; Πῶς δὲ πισθύνουσιν ὃ οὐκ ἠκούσαν; Πῶς δὲ ἀκούσονται χωρὶς κηρύσσοντος;

15 Πῶς δὲ κηρύξουσιν ἐὰν μὴ ἀποσταλῶσι; Καθὼς γέγραπται. Ὡς ὡραῖον οἱ πόδες τῶν ἀγγελοῦντων εὐαγγελιστῶν, τῶν ἀγγελοῦντων τὰ ἀγαθὰ.

16 Ἀλλ' οὐ πάντες ἀπέπεσαν τῇ ἀγγελίᾳ. Ἡ σαρὰς γὰρ λέγει. Κύριε, τίς ἐπίστανται τῇ ἀκοῇ ἡμῶν;

17 Ἀρα ἡ πίστις ἔξ ἀκοῆς ἡ δὲ ἀκοὴ διὰ ῥήματος Θεοῦ.

18 Ἀλλὰ λέγω ἡμεῖς ἡκούσαμεν; Μετῴνυσεν εἰς πάντας τὸν γλῶσσαν ἔξῃθεν ὁ φθόγγος αὐτῶν, καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς οἰκουμένης τὰ ῥήματα αὐτῶν.

19 Ἀλλὰ λέγω ἡμεῖς ἔγνω Ἰσραὴλ; Πρῶτος Μωϋσῆς λέγει ἡμεῖς ἔγνωμεν ὑμᾶς ἐπὶ οὐκ ἔδυνεν, ὑπὲρ ἔδυνεν ἀσυνέτω παραργισμῷ ὑμᾶς.

20 Ἡσαΐας δὲ αἰτοπολιμῶς, καὶ λέγει ἡμεῖς. Εὐρέθω τοῖς ἐμὲ μὴ ζητήσιν, ἐμφάνης ἐγνώριον τοῖς ἐμὲ μὴ ἐπιρωτῶσι.

21 Πρὸς ὃ ἡ Ἰσραὴλ λέγει ἡμεῖς. Ὅλως τὸν ἡμέτερον ἡγερέταται τὰς χεῖρας μὴ πρὸς λαὸν ἀπειθέοντα καὶ ἀντιλέγοντα.

Κεφ. ια. ιι.

1 **Λ**έγω οὖν ἡμεῖς ἀπίσταντο ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ; Μὴ γένοιτο ἡμεῖς ἔγνω Ἰσραηλῆτις εἰμὶ, ὅς ἐκ σπέρματος Ἀβραάμ, φυλῆς Βενιαμίν.

2 Οὐκ ἀπίσταντο ὁ Θεὸς τὸν λαὸν αὐτῶν ὅν προέγνω ἡμεῖς οὐκ οἶδατε ὅτι Ἡλίας τί λέγει ἡ γραφή, ὡς ἐστυγχεῖται τῷ Θεῷ κατὰ τοῦ Ἰσραὴλ, λέγων.

3 Κύριε, τῆς προφῆτας σὺ ἀπέκτεινεν, καὶ τὰ θυσιάζοντα σὺ κατέσκαψεν ἡμεῖς καὶ ἐπελείφθω μόνος, καὶ ζητήσιν τὸν ψυχῶν μου.

4 Ἀλλὰ τί λέγει αὐτῶν ὁ χρηματισμὸς; Κατέλιπον ἡμεῖς ἐταπεινωμένους ἀνδράς, οἵτινες ἡμεῖς ἐκαμψάμεν γένου τῇ Βαβυλῶν.

5 Οὕτως ἡμεῖς ἐσὶν τῷ νῦν καιρῷ λείμμα κατὰ ὅλον γλῶσσαν χάριτος γέγονεν.

6 Εἰ δὲ χάρις, ἡμεῖς ἐπὶ ἔξῃ ἐργον ἡμεῖς χάρις οὐκ ἐπὶ γίνεταί χάρις ἡμεῖς δὲ ἐπὶ ἔξῃ ἐργον, ἡμεῖς ἐπὶ ἐστὶ χάρις ἡμεῖς ἐπὶ τὸ ἐργον, ἡμεῖς ἐπὶ ἐστὶ ἐργον.

7 Τί ἡμεῖς; ὅς ἐπὶ ἔξῃ Ἰσραὴλ, τῆτις ἡμεῖς ἐπέτυχον ἡμεῖς δὲ ὁλοκλήρως ἐπέτυχον, οἱ δὲ λοιποὶ ἐπὶ ἔξῃ ἔσταν.

8 (Καθὼς γέγραπται ἡμεῖς. Ἐδωκεν αὐτοῖς ὁ Θεὸς πνεῦμα κατανύξεως, ὁφθαλμοὺς τοῦ μὴ βλέπειν, καὶ ὅσα τῷ μὴ ἀκούειν) ἕως τῆς σήμερον ἡμεῖς.

9 Καὶ Δαβὶδ λέγει ἡμεῖς. Γενεθήτω ἡ τράπεζα αὐτῶν ἡμεῖς πα-

παγίδα, & εἰς θῆραν, & εἰς σκαμνάλον, & εἰς ἀποδόμῃ αὐτοῖς.

10 Σκοτισθήτωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν τοῦ μὴ βλέπειν· καὶ τὸν νῶτον αὐτῶν διεσπάρτος σύγκαμψον.

11 Λέγω ἦν· μὴ ἐπταίσαν ἵνα πέσωσι; Μὴ γένοιτο· ἀλλὰ τῷ αὐτῶν ὀφθαλμῷ, ἡ σωτηρία τοῖς ἔθνεσιν. εἰς τὸ φωτίζειν αὐτοὺς.

12 Εἰ δὲ τὸ παραπτώμα αὐτῶν πλητὸς κόσμος, & τὸ ἥττημα αὐτῶν πλητὸς ἔθνων, πόσω μάλλον τὸ πληροῦν αὐτῶν;

13 Ὑμῖν γὰρ λέγω τοῖς ἔθνεσιν, ἐφ' ὅσους μὲν ἐμὶ ἐγὼ ἔθνων ἀπόστολος, τῷ Σίμωνίδῳ μου ἐξέζω.

14 Εἶπας φωτίζηλαίω μὴ τῷ σάρκα, & σώσω πάντα ἔξ αὐτῶν.

15 Εἰ γὰρ ἡ ἀποβολὴ αὐτῶν, καταλλήλῃ κόσμου, τίς ἡ πρόσληψις, εἰ μὴ ζοὴ ὅσα γενέσονται;

16 Εἰ δὲ ἀπάρχη ἀγία, & τὸ φύραμα· & εἰ ἡ ῥίζα ἀγία, & οἱ κλάδοι.

17 Εἰ δὲ πῦρις τῶν κλάδων ἑξεκλάσθησαν, σὺ δὲ ἀγγελίατος ὧν ἐνεκέντρισθης ἢ αὐτοῖς, καὶ συγκοινωνῶς τῆς ῥίζης καὶ τῆς πύκνους τῆς ἑλίας ἵγνη.

18 Μὴ κατακυρῶ τῶν κλάδων, εἰ δὲ κατακυρῶσαι, ἢ σὺ τῷ ῥίζῳ βασίζεις, ἀλλ' ἡ ῥίζα σέ.

19 Εἶπες ἦν· ἑξεκλάσθησαν οἱ κλάδοι, ἵνα ἐγὼ ἐγκεντρισθῶ.

20 Κελεύεις τῇ ἀπιστίᾳ ἑξεκλάσθωσαν, σὺ δὲ τῇ πίστει ἐσθλαίῃ· μὴ ὑψηλοφρονεῖς, ἀλλὰ φοβῇ.

21 Εἰ γὰρ ὁ Θεὸς τῶν κατὰ φύσιν κλάδων ἢ ἐφύσισται, μήπως καὶ σὺ φείσῃται.

22 Ἰδε ἦν χρηστότητα & ἀποπημίδαν Θεοῦ· ἡ γὰρ μὲν τῆς πιστεύουσας, ἀποπημίδαν· ἡ δὲ σε χρηστότητα, ἐδὴ ὑπεμείνης τῇ χρηστότητι· ἐπεὶ & σὺ ἐκκοπήσῃ.

23 Καὶ οὐκ ἔστιν ἡ, ἐδὴ μὴ ὑπεμείνωσι τῇ ἀπιστίᾳ, ἐγκεντρισθῶσιν· δυνατὸς γάρ ἐστιν ὁ Θεὸς πάλιν ἐγκεντρίσαι αὐτοὺς.

24 Εἰ γὰρ σὺ ὅτι κατὰ φύσιν ἑξέκλεψας ἀγγελίαν, & ὅτι κατὰ φύσιν ἐνεκέντρισθης εἰς καθλιέλαιον, πόσω μάλλον ἔσται οἱ κατὰ φύσιν, ἐγκεντρισθῶσιν τῇ ἰδίᾳ ἑλπίδι;

25 Οὐ γὰρ θέλω ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί, εὖ κελεύειν ταῦτα, (ἵνα μὴ ᾗτε παρ' ἑαυτοῖς φρονήσοι,) ὅτι παύσασθε ἀπὸ μέριμναις τοῦ Ἰσραὴλ γενέσθαι, ἀλλὰ εἰ τὸ πλῆθος τῶν ἔθνων ἐσέλθῃ.

26 Καὶ ὅτε καὶ Ἰσραὴλ σωθήσεται, καθὼς γέγρα-

γραφται· Ἦνεν ὁ Σιών ὁ ρυόμενος, ἔ αποσρέψη
ἀσεβείας ἀπὸ Ἰουδαίᾳ.

27 Καὶ αὕτη αἰτοῖς ἡ παρ' ἐμῷ Σιγῇ, ὅταν
ἀφελῶμαι τὰς ἀμαρτίας αὐτῶν.

28 Κατὰ μὲν τὸ διαγγέλιον, ἐχθροὶ δὲ ὑμῶν,
κατὰ δὲ τῷ ἐκλογῇ, ἀγαπητοὶ διὰ τῆς πατέ-
ρας.

29 Ἀμεταμέλητα γὰρ τὰ χαρίσματα, ἔ ἡ κλῆσις
τῆ Θεῷ.

30 Ὡς περ γὰρ ἔ ὑμῖν ποτε ἠπειθήσατε τῷ Θεῷ,
νῦν ὃ κλέηθετε τῇ τήτῳ ἀπειθείᾳ.

31 Οὕτω ἔ πῶς νῦν ἠπειθήσατε τῷ ὑμετέρῳ ἐλέει,
ἵνα ἔ αὐτοὶ ἐλεηθῶσι.

32 Συνέκλεισε γὰρ ὁ Θεὸς τὰς πόρτας εἰς ἀπί-
θειαν, ἵνα τῆς πόρτας ἐλθέτω.

33 Ὡς βάθος πλάτης ἡ σοφίας ἔ γνώσεως Θεῷ· οἷς
ἀνεξερεύνητα τὰ κρίματα αὐτοῦ, ἔ ἀνεξιχνίαστοι αἱ ὁ-
δοὶ αὐτοῦ.

34 Τίς γὰρ ἔγνω τὸν Κυρίον; ἡ τίς σύμβουλος αὐτοῦ
ἔγενετο;

35 Ἦ τίς προέδωκεν αὐτῷ, ἔ ἀνταποδοθήσεται
αὐτῷ;

36 Ὅτι πᾶς αὐτοῦ, καὶ δι' αὐτοῦ, ἔ εἰς αὐ-
τὸν τὰ πάντα· αὐτῷ δ' ἔδοξα εἰς τὴν αἰῶνα.
Ἀμήν.

Κεφ. 12.

1 ΠΑΡΑΚΑΛΩ ἔν ὑμῶν, ἀδελφοί, διὰ τῶν εἰς
πρώτων τῆ Θεῷ, παραστήσαι τὰ σώματα ὑ-
μῶν θυσιᾷ ζῶσαν, ἁγίαν, διάρρεον τῷ Θεῷ, τῇ λο-
γικῇ λατρείᾳ ὑμῶν.

2 Καὶ μὴ συχηματίζεσθε τῷ αἵματι τῆτῳ· ἀλλὰ
μεταμορφῶσθε τῇ ἀνακαινώσει τῆ νοῦς ὑμῶν, εἰς τὸ
δοκιμαῖεν ὑμῶν τί τὸ θέλημα τῆ Θεῷ τὸ ἀγαθὸν ἔ
διάρρεον ἔ τελειον.

3 Λέγω γὰρ διὰ τῆ χάριτος τῆ δοθείσης μοι, παντὶ
τῷ ὅτι ἐν ὑμῖν, μὴ ὑπερφορεῖν παρ' ὃ δεῖ φρονεῖν·
ἀλλὰ φρονεῖν εἰς τὸ σωφρονεῖν, ἐκάστῳ ὡς ὁ Θεὸς ἐ-
μέρισεν μέτρον πίστεως.

4 Καθάπερ γὰρ ἐν ἑνὶ σώματι μέλη πολλὰ ἔ-
χοντα, τὰ δὲ μέλη πάντα ἔ ἑνὶ αὐτῷ ἔχει πρᾶ-
ξιν.

5 Οὕτως οἱ πολλοὶ ἐν σώμα ἔσμεν ἐν Χριστῷ, ὃ
δὲ καὶ εἰς ἀλλήλων μέλη.

6 Ἐχόντες δὲ χαρίσματα κατὰ τῷ χάριτι τῷ
ἐνδοσθῶν ἡμῖν διάφορα, εἴτε προφητείαν· κατὰ
τῷ

τῶ ἀνταγορεύει τῆς πίστεως.

7 Εἴτε διακονίαν, ἐν τῇ διακονίᾳ· εἴτε ὁ διδάσκων, ἐν τῇ διδασκαλίᾳ.

8 Εἴτε ὁ παρακλητὴς, ἐν τῇ παρακλησίᾳ· ὁ μεταδίδως, ἐν ἀπλότῃ· ὁ προϊστάμενος, ἐν ἀσκησίᾳ· ὁ ἐλεῶν, ἐν ἰλαρότητι.

9 Ἡ ἀγάπη, ὀνηπότερος. Ἀπεσυγῶντες τὰ ποιηρὸν, κολλώμενοι τῷ ἀγαθῷ.

10 Τῇ φιλαδελφίᾳ εἰς ἀλλήλους φιλόδοργοι. Τῇ μὴ ἀλλήλους περιγυμνοῦντες.

11 Τῇ ἀσκησίᾳ μὴ ὀκνηροί. Τῷ πλούμῳ ζέοντες. Τῷ Κυρίῳ δουλοῦντες.

12 Τῇ ἐλπίδι χαίροντες. Τῇ θλίψει ὑπομένοντες. Τῇ προσδοκίᾳ προσκαρτεροῦντες.

13 Ταῖς χρείαις τῶν ἁγίων κοινωνοῦντες. Τῷ φιλοξενίᾳ δίδοντες.

14 Εὐλογεῖτε τῆς δίδουσας ὑμᾶς· εὐλογεῖτε, ἃ μὴ καταρᾶσθε.

15 Χαίρειν μὲν χαυρότων, ἃ κλαίειν μὲν κλαύοντες.

16 Τὸ αὐτὸ εἰς ἀλλήλους φρονεῖτε. Μὴ τὰ ὕψη φρονεῖτε, ἀλλὰ τοῖς ταπεινοῖς συναπαγομένοι. Μὴ γίνεσθε φρόνιμοι παρ' ἑαυτοῖς.

17 Μηδενὶ κακὸν αὐτὶ κακῶ ἀποδίδοντες· Προνοήμενοι καλῶ ἐνώπιον πάντων ἀνθρώπων.

18 Εἰ δοκᾷ, τὸ ὅτι ὑμεῖς, μὲν πάντας ἀνθρώπων ἀγαπᾶντες.

19 Μὴ ἐαυτοὺς ἐκδικεῖτε, ἀρχεσθαι· ἀλλὰ ὅτε τίς τῶν τῇ οὐγῇ γεγραπται γάρ· Ἐμοὶ ἐκδίκασιν· ἐγὼ ἀνταποδώσω, λέγει Κύριος.

20 Ἐὰν ἔν πεινᾷ ὁ ἐχθρὸς σου, ψέμιζε αὐτόν· ἔὰν διψᾷ, πότιζε αὐτόν· τῷτο γὰρ ποιῶν, ἀνδρακας πυρὸς σαρῶσαις ὑπὲρ τῶν κεφαλῶν αὐτοῦ.

21 Μὴ τινὰ ὑπὸ τῷ κακῷ· ἀλλὰ τινὰ ἐν τῷ ἀγαθῷ, τὸ κακόν.

Κεφ. ιγ'. 13.

1 Πᾶσα ψυχὴ θεστίαις ὑπερχέταις ὑποτασσέσθω· ἡ γὰρ ἐστὶν θεσμία εἰ μὴ ἀπὸ Θεοῦ· αἱ δὲ ἵσαι θεσμίαι, ὑπὸ τοῦ Θεοῦ τεταγμέναι εἰσιν.

2 Ὡς ὁ ἀντιταγορόμενος τῇ θεσμίᾳ, τῇ τοῦ Θεοῦ διαταγῇ ἀνδρακας· οἱ δὲ ἀνδρακας, ἐαυτοῖς κριμα λήφονται.

3 Οἱ γὰρ ἀρχόντες θεοὶ εἰσὶ φόβος τῷ ἀγαθῷ ἐν-

τόγων, ἀλλὰ τῶν κακῶν. Θέλεις δὲ μὴ φανεῖσθαι τῶν ὕψιστον; τὸ ἀγαθὸν ποίη· καὶ ἔξεις ἐπαινον αὐτοῦ.

4 Θεὸς γὰρ διάκονός ἐστι σοι εἰς τὸ ἀγαθόν. Ἐὰν τὸ κακὸν ποιῇς, φοβῆ· ἢ γὰρ κίχη ἢ μάχαράν ποιεῖς. Θεὸς γὰρ διάκονός ἐστιν, ἐκδικὸς εἰς ὄργην τῷ κακῷ πράσσοντι.

5 Διὸ ἀνάγκη ὑποτάσσασθαι, ἢ μόνον διὰ τὸ ὄργην, ἀλλὰ ἔτι διὰ τὸ συνείδησιν.

6 Διὰ τούτου γὰρ καὶ φόβος τελεῖται· λειτουργεῖτε γὰρ Θεοῦ εἰς αὐτὸ τοῦτο προσκαρτεροῦντες.

7 Ἀπόδοτε ὡς πάνσι τὰς ὀφειλάς· τῷ ἢ φόβον, τῷ φόβον· τῷ τὸ τέλος, τὸ τέλος· τῷ ἢ φόβον, ἢ φόβον· τῷ ἢ τιμὴν, ἢ τιμὴν.

8 Μηδενὶ μηδὲν ὀφείλετε, εἰ μὴ τὸ ἀγαθὸν ἐκλήλυσεν· ὁ γὰρ ἀγαπῶν τὸν ἕτερον, νόμον πεπλήρωκε.

9 Τὸ γὰρ· Οὐ μοιχάσεις· Οὐ φονεύσεις· Οὐ κλέψεις· Οὐ ψεύδομαρτυρήσεις· Οὐ ὕψιθυμήσεις· ἔτι περὶ ἑτέρα ἐπολή, ἐν ταῖς τῷ λόγῳ ἀνακεφαλαιώται, ἐν τῷ· Ἀγαπήσεις τὸν πλησίον σου ὡς σεαυτὸν.

10 Ἡ ἀγάπη τῷ πλησίον κακὸν ἐκ ἐργάζεται· πληρωμα ἢ νόμος ἢ ἀγάπη.

11 Καὶ τούτου, εἰδότες ἢ καιρὸν, ὅτι ὥρα ἡμῶν ἢ· εἰς τὴν ὕπνιν ἐγερθῆναι· νῦν γὰρ ἡγγύτερον ἡμῶν ἢ τῆς θείας ἢ ὅτι ὑποτάσσασθαι.

12 Ἡ γὰρ προέκοψεν, ἢ δὲ ἡμέρα ἡγγικεν· ἀποδώμεθα ὡς τὰ ἔργα ἢ σκότους, ἔτι σπουδάζομεθα τῷ ἔργῳ ἢ φωτός.

13 Ὡς ἐν ἡμέρᾳ, διωχόμενοι περὶ ἀπαθείας· μὴ κώμοις καὶ μέθαις, μὴ κρίταις ἔτι ἀσελγείαις· μὴ ἐκείνῃ καὶ ζήλῳ.

14 Ἀλλ' ἐσθύνετε τὸν Κύριον Ἰησοῦν Χριστόν, καὶ τῆς σαρκὸς πρόνοιαν μὴ ποιῶσθε εἰς ὑπθυμίας.

Κεφ. 12. 14.

1 ΤΟῦ δὲ ἀσθενήντα τῇ πίστει, προσληφθέντων αὐτοῦ, μὴ εἰς ἀσθενείαν ἀσθενήσῃς.

2 Ὅτι μὴ πεινάει φαγεῖν πάντα, ὁ δὲ ἀσθενῶν ἀνάγκη ἐσθίει.

3 Ὅτι ἐσθίοντα, ἢ μὴ ἐσθίοντα μὴ ὑπερβαίνει· ἔτι ὁ μὴ ἐσθίοντα, ἢ ἐσθίοντα μὴ κρινέτω· ὁ Θεὸς γὰρ αὐτὸν προτελεσέτω.

9 Σὺ

4 Σὺ τίς εἶ ὁ κρίνων ἄλλοτερον οἰκέτην; Τῷ ἰδίῳ κυρίῳ σέκει, ἢ πίπτει· σαθίζεται δὲ ὁ δυνατὸς γὰρ εἶναι ὁ Θεὸς τῆσαι αὐτόν.

5 Ὅς μὲν κρίνει ἡμέραν παρ' ἡμέραν, ὅς δὲ κρίνει πᾶσαν ἡμέραν· ἕκαστος ἐν τῇ ἰδίᾳ νοὶ πληροφρείθω.

6 Ὁ φρονῶν τὴν ἡμέραν, Κυρίῳ φρονεῖ· καὶ ὁ μὴ φρονῶν τὴν ἡμέραν, Κυρίῳ οὐ φρονεῖ. ὁ ἐσθίων, Κυρίῳ ἐσθίει· ὁ χάριται γὰρ τῷ Θεῷ, καὶ ὁ μὴ ἐσθίων, Κυρίῳ οὐκ ἐσθίει, ὁ χάριται γὰρ Θεῷ.

7 Οὐδεὶς γὰρ ἑμῶν ἑαυτῷ ζῇ, ὁ οὐδεὶς ἑαυτῷ ἀπαυθίσκει.

8 Ἐὰν τε γὰρ ζῶμεν, τῷ Κυρίῳ ζῶμεν· ἐὰν τε ἀποθνήσκωμεν, τῷ Κυρίῳ ἀποθνήσκωμεν· ἐὰν τε ὢν ζῶμεν, ἐὰν τε ἀποθνήσκωμεν, τῷ Κυρίῳ ἐσμεν.

9 Εἰς τὴν γὰρ Χριστὸς καὶ ἀπέθανε καὶ ἀνίσταται καὶ ἀνίσταται, ἵνα καὶ νεκρῶν καὶ ζώντων κυριεύσῃ.

10 Σὺ δὲ τί κρίνεις τῷ ἀδελφῷ σου; ἢ καὶ σὺ τί κρινόμενος τῷ ἀδελφῷ σου; πάντες γὰρ παραστήσομεθα τῷ θρόνῳ τοῦ Χριστοῦ.

11 Ἰεχέσθαι γὰρ· Ζῶ ἐγὼ, λέγει Κύριος· ἐπ' ἐμοὶ κάμψει πᾶν γένος, καὶ πᾶσα γλῶσσα ἰξομολογήσεται τῷ Θεῷ.

12 Ἄρα ὢν ἕκαστος ἑμῶν ποιεῖ ἑαυτοῦ λόγον εἰς τὴν τῷ Θεῷ.

13 Μὴκέτι ὢν ἀλλήλους κρίνωμεν· ἀλλὰ τὴν κρίναι μᾶλλον, τὸ μὴ πιδέναι πρόσκομην τῷ ἀδελφῷ, ἢ σκάνδαλον.

14 Οἶδα ὅτι πέπεισμαι ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, ὅτι ἔδωκε κοινόν δι' ἑαυτοῦ· εἰ μὴ τῷ λογιζομένῳ πὶ κοινόν εἶναι, ἐκείνῳ κοινόν.

15 Εἰ δὲ βροῦμαι ὁ ἀδελφός σου λυτάται, καὶ ἐπ' αὐτῷ ἀγάπῃ ποιεῖται· μὴ τῷ βροῦματι σου σκάνδαλον ἀπόλλυε, ὡς περ ὁ Χριστὸς ἀπέθανε.

16 Μὴ βλασφημείθω ὢν ὑμῶν τὸ ἀγαθόν.

17 Οὐ γὰρ εἰσι ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ βρώσις καὶ πόσις, ἀλλὰ δικαιοσύνη, ὁ εἰρήνη ὁ χάρις ἐν Παύλῳ ἀγίῳ.

18 Ὁ γὰρ ἐν τῇ τῆς δουλείας τῷ Χριστῷ, ὁ ἄριστος τῷ Θεῷ, καὶ δέκimos τοῦ ἀνθρώπου.

19 Ἄρα ὢν τὸ τῷ εἰρήνης διακρίνω, ὁ καὶ τῷ οἰκεδμενῷ τῷ ἀλλήλῳ.

20 Μὴ ὅτι ἐκείνῳ βρώματος κατάλοιπος τὸ ἔργον τοῦ Θεοῦ· πάντα μὲν καθαρά· ἀλλὰ κακὸν τῷ ἀνθρώπῳ τῷ βρώματι προσκομῆται ἐσθίοντι.

21 Καλὸν τὸ μὴ φερεῖν κρίμα, μηδὲ πιεῖν οἶνον, μηδὲ ἐν ᾧ ὁ ἀδελφὸς σκηνώσῃ, ἢ σκοταλέυῃται, ἢ ἀσθενῇ.

22 Σὺ πῶς ἔχεις; καὶ σεωπὸν ἔχει ἐνώπιόν σου. Μακάριος ὁ μὴ κρίναν ἐαυτὸν ἐν ᾧ δοκιμαῖται.

23 Οὗ δὲ διακρινόμενος, εἰς φάγην, κατακρίνεται, ὅτι ἢ ὡς πείσῃς. πάντες ὅτι ἢ ὡς πείσῃς, ἀμνηστία ἐστίν.

Κεφ. 1 ε. 25.

1 **Ο**φείλομεν δὲ ἡμῖς οἱ δυνατοὶ τὰ ἀδελφώματα τῶν ἀδυνατῶν βασάζειν, ἵνα μὴ ἐάν τις ἀρεσκῇ.

2 Ἐκαστος γὰρ ἡμῶν τὰ πλησίον ἀρεσκέτω εἰς τὸ ἀγαθὸν πρὸς οἰκοδομῇ.

3 Καὶ γὰρ ὁ Χριστὸς ἑαυτὴν ἠρέσει, ἀλλὰ, καθὼς γέγραπται. Οἱ οὐκ ἐπίδοτοι τῶν ἐπειδελόντων σέ ἐπέπισον ἐπ' ἐμέ.

4 Ὅσα γὰρ προεμάχη, εἰς τὴν ἡμετέραν διδασκαλίαν προεμάχη. Ἰνα διὰ τῆς ὑπομονῆς καὶ τῆς παρακλήσεως τῶν γραφῶν, τὴν ἐλπίδα ἔχωμεν.

5 Οὗ δὲ Θεὸς τῆς ὑπομονῆς ἔστιν ἡ παρακλήσις, ὡς ἡμεῖς τὸ αὐτὸ φρονεῖν ἐν ἀλλήλοις κατὰ Χριστὸν ἴησῃ.

6 Ἰνα ἐμοθυμαδὸν ἐν ἑνὶ στόματι δοξάζετε τὸν Θεὸν ἑ Πατέρα τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

7 Διὸ προσλαμβάνεσθε ἀλλήλους, καθὼς καὶ ὁ Χριστὸς προσελάβετο ἡμᾶς εἰς δόξαν Θεοῦ.

8 Λέγω δὲ, Ἰησοῦ Χριστὸν διάκονον γεννησθῆαι πειρασμοῦ ὑπὲρ ἀληθείας Θεοῦ, εἰς τὸ βεβαιῶσαι τὴν ἐπαγγελίαν τῆς Πατρὸς.

9 Τὰ δὲ ἔθνη ὑπὲρ ἐλπίος δοξάζουσι τὸν Θεόν, καθὼς γέγραπται. Διὰ τὸτο ὁμολογήσομαι σοὶ ἐν ἔθνεσι, ἑ τῷ ὀνόματί σου ψαλῶ.

10 Καὶ πάλιν λέγει. Εὐφρανθήτε ἔθνη μὲν τὸν λαόν σου.

11 Καὶ πάλιν. Αἰνεῖτε τὸν Κύριον πάντα τὰ ἔθνη, ἑ ἐπαινεῖσατε αὐτὸν πάντες οἱ λαοί.

12 Καὶ πάλιν Ἡσαΐας λέγει. Ἐσται ἡ ῥίζα καὶ ἡ γενεὰ, ἑ ὁ ἀνιστάμενος ἄρχων ἐθνῶν, ἐπ' αὐτῷ ἔθνη ἐλπίουσιν.

13 Οὗ ὁ Θεὸς τῆς ἐλπίδος πληρῶσαι ἡμᾶς πνεύματι χαρᾶς ἑ εἰρήνης ἐν τῷ πισθεύειν, εἰς τὸ πνεύματι

ἐμῶν ὁμῶς ἐν τῇ ἐλπίδι, ὡς δυνάμει Πνεύματος Ἀγίου.

14 Πέποισμαι ὅ, ἀδελφοί μου, καὶ αὐτοὶ ἐγὼ περὶ ὑμῶν, ὅτι καὶ αὐτοὶ μετὰ ἐς ἀγαθωσύνης, πεπληρωμένοι πάσης γνώσεως, δυνάμει καὶ ἀληθῶς τιμωμένοι.

15 Τολμηρότερον δὲ ἔγραψα ὑμῖν, ἀδελφοί, ἀπὸ μέρους, ὡς ἐπαρκιμιστικῶς ὑμῶς 249· τίω χάρις τίω δοθῆσά μοι ὑπὸ Θεοῦ.

16 Εἰς τὸ εἶναι με λειτουργὸν Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς τὰ ἔθνη, ἱερουργῶντα τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Θεοῦ, ἵνα γένηται ἡ προσφορὴ τῶν ἔθνων ἀπρόσδεκτος, ἡγιασμένη ἐν Πνεύματι Ἀγίῳ.

17 Ἐχὼ ἔν καύχησιν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τὰ πρὸς Θεόν.

18 Οὐ γὰρ πλημύσει λαλῶν πᾶν ἢ κατεργάσασθαι Χριστὸς δι' ἐμῆ, εἰς ὑπακοὴν ἔθνων, λόγῳ καὶ ἔργῳ.

19 Ἐν δυνάμει σημείων καὶ τεράτων, ἐν δυνάμει Πνεύματος ἁγίου· ὅσα μοι ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ καὶ κύκλι περιέχει τοῦ Ἰουδαίου πεπληραίνεται τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ.

20 Οὕτω δὲ φιλοτιμύμενον εὐαγγελίζεσθαι, ἵνα ὅτι ἀνενόμασθαι Χριστὸς, ἵνα μὴ ἐπ' ἀλλότριον θυμέλιον οἰκοδομῶ.

21 Ἀλλὰ, καθὼς γέγραπται· Οἷς ἐκ ἀγγέλου καὶ πατρὸς αὐτοῦ, ὁφίονται· καὶ οἱ ἐκ ἀκηκίας, συνήσκησι.

22 Διὸ καὶ ἀνεκοπτόμην τὰ πολλὰ τοῦ εἰσεῖν πρὸς ὑμᾶς.

23 Νυνὶ ὅ μνηκίτι τόπον ἔχων ἐν τοῖς κλίμασι τούτοις, ὑποποδίην ὅ ἔχων τοῦ εἰσεῖν πρὸς ὑμᾶς ἀπὸ πολλῶν ἐτόν.

24 Ὡς ἐὰν πορεύομαι εἰς Σπληνίδην, ἐλεύσομαι πρὸς ὑμᾶς· ἐλπίζω γὰρ 249 πορεύομενος θεάσασθαι ὑμᾶς, καὶ ὑφ' ὑμῶν προπεμφθῆναι ὅκα· ἐὰν οὖν πρῶτον ἀπὸ μέρος ἐμπλησθῶ.

25 Νυνὶ ὅ πορεύομαι εἰς Ἱερουσαλὴμ, 249 κοιτῶν τοῖς ἁγίοις.

26 Εὐδόκησάν γὰρ Μακεδονίαν καὶ Ἀχαΐαν ποιανίην τινὰ ποιήσασθαι εἰς τῆς πτωχῆς τῆς ἁγίας τῆς Ἱερουσαλὴμ.

27 Εὐδόκησάν γὰρ, καὶ ὀφείλεται οὐτῶν εἶναι· καὶ γὰρ τοῖς πνευματικοῖς οὕτω ὁκοινώσασθαι τὰ ἔθνη, ὀφείλει καὶ ἐν τοῖς σαρκικοῖς λειτουργῆσαι αὐτοῖς.

28 Τῆτο ἔν ὑπετέλειαν, καὶ σφραγισάμενος οὐτοῖς τοῦ καρπὸν τῆτο, ἀπελεύσομαι δι' ὑμῶν εἰς τὴν Σπληνίδην.

29 Οἶδα ὅτι ἐρχόμενοι πρὸς ὑμᾶς, ἐν πληρώματι λόγιας τοῦ εὐαγγελίου τοῦ Χριστοῦ ἐλεύσεμαι.

30 Παρακαλῶ ὑμᾶς, ἀδελφοί, διὰ τὸ Κυρίον ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστόν, ἡ διὰ τὴν ἀγάπην τοῦ Πνεύματος, συγκατανοήσαί μοι ἐν ταῖς προσεύχαις ὑπὲρ ἐμοῦ πρὸς τὸ Θεόν.

31 Ἴνα ῥυθθῶ ἀπὸ τῶν αἰτιθέντων ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, καὶ ἵνα ἡ διθκονία μὴ ᾖ εἰς Ἱερουσαλήμ ἀπρόσδεκτος γένηται τοῖς ἁγίοις.

32 Ἴνα ἐν χαρᾷ ἔλθω πρὸς ὑμᾶς διὰ θελήματος Θεοῦ, ἡ συνάναπαύσασθαι ὑμῖν.

33 Οὗ δὲ Θεοῦ τῆς εἰρήνης μετὰ πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

Κεφ. 15. 16.

1 **Σ**υνίστημι δὲ ὑμῖν Φοίβην τὴν ἀδελφὴν ἡμῶν, ἡσὰν διάκονον τῆς ἐκκλησίας τῆς ἐν Κερχεραῖς.

2 Ἴνα αὐτὴ προσδέξησθε ἐν Κυρίῳ ἀξίως τῆς ἁγίας, ἡ παραστήτε αὐτῇ ἐν ᾗ ἂν ὑμεῖς χρήζητε πνεύματος, καὶ ὅτι αὕτη προσέτις πολλῶν ἐκλήθηται, καὶ αὐτὴ ἡμῶν.

3 Ἀσπάζεταιτε Πρίσκιλλαν καὶ Ἀκύλαν τὴς συνεργίς μου ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

4 (Οἵπνεες ὑπὲρ τῆς ψυχῆς μου τὸν ἐν τῷ τράχηλῳ ἐπέθηκαν· οἷς ἡ ἐγὼ μόνος δύχαριστῶ, ἀλλὰ καὶ πᾶσαι αἱ ἐκκλησίαι τῆς ἐσθῶν.)

5 Καὶ τὴν κατ' οἶκον αὐτῶν ἐκκλησίαν. Ἀσπάζεταιτε Ἐπαῖναντον τὴν ἀγαπητὴν μου, ὅς ἐστιν ἀπαρχὴ τῆς χάριτος ἐν Χριστῷ.

6 Ἀσπάζεταιτε Μαρτίαν, ἥτις πολλὰ ἐκοπίησεν ἐν ὑμῖν.

7 Ἀσπάζεταιτε Ἀδρόνικον ἡ Ἰωνίδα τὴς συγγενεῖς μου, ἡ συναἰχμαλίτης μου· οἵπνεες εἰσιν ἐπίσημοι ἐν ταῖς ἀποστολαῖς, οἱ ἡ πρό ἐμὴ γενένησιν ἐν Χριστῷ.

8 Ἀσπάζεταιτε Ἀμπλίαν τὴν ἀγαπητὴν μου ἐν Κυρίῳ.

9 Ἀσπάζεταιτε Οὐρβανὸν τὸν συνεργὸν ἡμῶν ἐν Χριστῷ, καὶ Στάχυν τὴν ἀγαπητὴν μου.

10 Ἀσπάζεταιτε Ἀπελλῶν, τὸν δέκιμον ἐν Χριστῷ. Ἀσπάζεταιτε τινα ἐκ τῶν Ἀλκινοβούλων.

11 Α'σπασαθε Η'ρωδιανὰ τὸν συγγενὴ μὲν. Α'σπασαθε τὴς ἐκ τῆς Ναρκίσου, τὴς ὄντας ἐν Κυρίῳ.

12 Α'σπασαθε Τρύφαντον καὶ Τριφῶδον τὰς καπνίσας ἐν Κυρίῳ. Α'σπασαθε Περσίδα τὴν ἀγαπῆν, ἥτις πολλὰ ἐκοπίασεν ἐν Κυρίῳ.

13 Α'σπασαθε Γ'εφον τὴν ἐκλεκτὴν ἐν Κυρίῳ, καὶ τὴν μητέρα αὐτῆς ἑμῆ.

14 Α'σπασαθε Α'σύγκριτον, Φλέγοντα, Ἐρμῶν, Πατροβῶν, Ἐρμῶν, ἑ τὴς σὺν αὐτοῖς ἀδελφῆς.

15 Α'σπασαθε Φιλόλογον καὶ Ἰαλίαν, Νηρέα, ἑ τὴν ἀδελφὴν αὐτῆς, ἑ Ο'λυμπῶν, ἑ τὴς σὺν αὐτοῖς παύτας ἀγίας.

16 Α'σπασαθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἀγίῳ. Α'σπάζονται ὑμᾶς αἱ ἐκκλησίαι τῆς Χερσῆς.

17 Παρακαλῶ ἡ ὑμᾶς, ἀδελφοί, σκεπῆν τὴς τὰς διχουσίας ἑ τὰ σκάνδαλα, παρὰ τῷ διδασκῶν ὑμῖν ἐμῶν, πεινῶνται. ἑ ἐκκλίνετε ἀπ' αὐτῶν.

18 Οἱ γὰρ τοῦτοι τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ ἠδ' ἀλλήλοις, ἀλλὰ τῇ ἐαυτῶν κοιλίᾳ. ἑ τῆς τῆς διχουσίας ἑ διλογίας ὑπαπαύσιν τὰς καρδίας τῶν ἀκακῶν.

19 Ἡ γὰρ ὑμῶν ὑπακοὴ εἰς πλῆθος ἀφίκεται. Χαίρει οὖν τὸ ἐφ' ὑμῖν. Θέλω δὲ ὑμᾶς σέβειν μὲν εἶναι εἰς τὸ ἀγαθόν, ἀπειραῖς δὲ εἰς τὸ κακόν.

20 Ο' δὲ Θεὸς τῆς ἐρήνης συντρίψει τὸν Σατάναν ὑπὸ τοὺς πόδας ὑμῶν ἐν τάχει. Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετ' ὑμῶν. Ἀμήν.

21 Α'σπάζονται ὑμᾶς Τιμόθεος, ὁ συνεργὸς μου, ἑ Δέκιος ἑ Ἰάσων ἑ Σωσίπατρος, οἱ συγγενεῖς μου.

22 Α'σπάζομαι ὑμᾶς ἐγὼ Τέρπος ὁ χάψας τὴν ὀπίσθιον ἐν Κυρίῳ.

23 Α'σπάζεται ὑμᾶς Γάιος ὁ ξένος μου καὶ τῆς ἐκκλησίας ἑλης. Α'σπάζεται ὑμᾶς Ἐρστος ὁ οἰκονόμος τῆς πόλεως, ἑ Κῆαρτος ὁ ἀδελφός.

24 Ἡ χάρις τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ μετ' πάντων ὑμῶν. Ἀμήν.

25 Τῷ δὲ δυναμένῳ ὑμᾶς ἐπρίξαι κατὰ τὸ εὐαγγέλιόν μου, καὶ τὸ κήρυγμα Ἰησοῦ Χριστοῦ, κατὰ ἀποκάλυψιν μυσηρίου χρόνους αἰανίσις σιςσημένου.

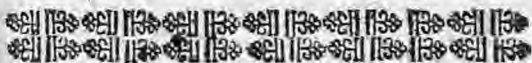
26 Φάμερθεύοντος δὲ νῦν διὰ τε γραφῶν προφητικῶν, κατ' ἐπιταγὴν τοῦ αἰανίου Θεοῦ, εἰς ὑμᾶς.

Ἐπακοῦν κρίσεις, εἰς πάντα τὰ ἔθνη γνωρισθέν-
τος.

27 Μόνῳ σοφῷ Θεῷ, διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ᾧ ἡ δόξα
εἰς τὰς αἰῶνας. Ἀμήν.

28 Πρὸς Ῥωμαίους ἐγράφη ἀπὸ Κορίνθου Ἀφ' Ἀφείβης τῆς Ἀφκάνου τῆς ἐν Κεγχρεαῖς Ὀκκλη-
σίας.





ΠΑΥΛΟΥ

ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

Η΄ ΠΡΟΣ ΚΟΡΙΝΘΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ α.

Κεφ. α' 1.

- 1 ΠΑΥΛΟΣ ΚΛΗΤΟΣ ΑΠΟΣΤΟΛΟΣ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ, ΔΙΕΥ-
 ΔΕΛΕΜΕΝΟΣ ΘΕΟΥ, ΚΑΙ ΣΩΣΘΕΝΗΣ Ο ΑΔΕΛ-
 ΦΟΣ,
- 2 Τῇ ΕΚΚΛΗΣΙΑΙᾳ Τῆς ΘΕΟΥ, Τῇ ἔσῃ ἐν ΚΟΡΙΝΘΩ,
 ἡγιασμένοι ἐν ΧΡΙΣΤῷ ΙΗΣΟΥ, ΚΛΗΤΟΙΣ ΑΓΙΟΙΣ, ΣΥΝ
 ΠΑΣΙ ΤΙΣΙ ΕΥΑΓΓΕΛΙΖΟΜΕΝΟΙΣ ΤΟ ΟΝΟΜΑ ΤΟΥ ΚΥΡΙΟΥ ἡ-
 ΜΩ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤῷ ἐν παντί τόπῳ, ΩΤΩΝ ΤΕ ΚΑΙ ἡ-
 ΜΩΝ.
- 3 ΧΑΡΙΣ ὑμῖν ἔκ ἐκλήσεως ἀπὸ ΘΕΟΥ, ΠΑΤΡΟΣ ἡΜΩΝ,
 ἘΚ ΚΥΡΙΟΥ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ.
- 4 ΕΥΧΑΡΙΣΤΩ Τῷ ΘΕῷ ΜΗ ΠΑΥΜΕΤΕ ΠΟΤΕ ὑμῶν, ὅτι
 τῇ χάριτι Τῆς ΘΕΟΥ Τῇ ΔΟΘΕΙΣᾶ ὑμῖν ἐν ΧΡΙΣΤῷ ΙΗΣΟΥ.
- 5 Ὅτι ἐν παντί ἐπλητίσθηται ἐν αὐτῷ, ἐν παντί
 λόγῳ ἔστι πάση γνώσει.
- 6 ΚΑΘΩΣ Τὸ ΜΥΣΤΗΡΙΟΝ Τῆς ΧΡΙΣΤΟΥ ΕΒΕΒΛΩΘΗ ἐν
 ὑμῖν.
- 7 Ὅτε ὑμᾶς μὴ ὑπερεῖδῃ ἐν μηδενὶ χαρίσματος,
 ἀπειδεχομένους τὴν ἀποκάλυψιν Τῆς ΚΥΡΙΟΥ ἡΜΩΝ ΙΗΣΟΥ
 ΧΡΙΣΤΟΥ.
- 8 Ὅς ἔβελωσεν ὑμᾶς ἕως τέλους ἀνεγκλήτους ἐν
 τῇ ἡμέρᾳ Τῆς ΚΥΡΙΟΥ ἡΜΩΝ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ.
- 9 ΠΙΣΤΟΣ ὁ ΘΕΟΣ, ὅς ἂν ὁμολογήτε ἐς κοινωνίαν Τῆς
 ΓΛΩΣΣΗΣ Τῆς ΚΥΡΙΟΥ ἡΜΩΝ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ Τῆς ΚΥΡΙΟΥ ἡΜΩΝ.
- 10 ΠΑΡΑΚΑΛΩ ὅμως, ἀδελφοί, ΔΙΕΥ Τῆς ΟΝΟΜΑΤΟΣ
 Τῆς ΚΥΡΙΟΥ ἡΜΩΝ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ, ἵνα τὸ αὐτὸ λεγῇτε πάν-
 τες, ἔκ μη ἢ ἐν ὑμῖν ὁρισματα, ἥτε ὅς καταρτισμέ-
 ντοι ἐν τῷ αὐτῷ νοί, ἔκ ἐν τῇ αὐτῇ γνώμῃ.
- 11 Εὐχαρίσθω γὰρ μοι ποτὶ ὑμῶν, ἀδελφοί μου, ὑπὸ
 τῷ ΧΛΩΕ, ὅτι εἶδες ἐν ὑμῖν ἐπί.

P

12 Λέ-

12 Λέγει δὲ ταῦτα, ὅτι ἔκαστος ὑμῶν λέγει· Ἐγώ μιν ἡμὶ Παῦλον, ἐγὼ δὲ Ἀπολλῶν, ἐγὼ δὲ Κεῖρα, ἐγὼ δὲ Κρίστος.

13 Μνημονεύει ὁ Χριστός· Μὴ Παῦλος ἑταίρός σου ὑπὲρ ὑμῶν, ἢ ἐκ τῶ ὀνόματος Παύλου ἐβαπτίσθητε;

14 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ, ὅτι ἑδέξατο ὑμῶν ἐβαπτίσαι, καὶ μὴ Κρίστος ὁ Ἰαῖος.

15 Ἵνα μὴ τις εἴπῃ, ὅτι ἐκ τῶ ὀνόματος ἐβαπτίσθη.

16 Ἐβαπτίσθη δὲ καὶ ὁ Στεφάνος ὁ ἰσχυρὸς· λοιπὸν οὐκ εἶδα καὶ τίνα ἄλλους ἐβαπτίσαι.

17 Οὐ γὰρ ἀπέβηκεν ἐκ Χριστοῦ βαπτίζων, ἀλλ' ἐπὶ ἐκείνῳ ἐλπίσθαι· καὶ ἐν σοφίᾳ λόγου, Ἵνα μὴ καυχήσῃ ὁ σαρκὸς ὁ Χριστός.

18 Ὁ λόγος γὰρ ὁ ὅτι σαρκὸς τοῖς μὲν ἀπολλυμένοις μορία ἐστίν, τοῖς δὲ σωζομένοις ἡμῖν δύναμις Θεοῦ ἐστίν.

19 Γέγραπται γάρ· Ἀπολλῶν σοφίαν τῷ σοφῶν, καὶ ὁ σύνισιν τῷ συνετῷ αἰσθησάμενος.

20 Πῶ σοφός; Πῶ χρηματιστής; Πῶ συζητής; Πῶ αἰσθητής τέτης; Οὐχὶ ἐμώρυνεν ὁ Θεὸς ὁ σοφίαν ὁ κόσμου ταύτην;

21 Ἐπειδὴ γὰρ ἐν τῇ σοφίᾳ ὁ Θεὸς οὐκ ἔγνω ὁ κόσμος, καὶ ὁ Θεὸς ὁ σοφός, καὶ ὁ Θεὸς ὁ ἐκείνῳ, ἐδέξατο ὁ Θεὸς καὶ ὁ Θεὸς ὁ μακρὰς ὁ κηρύγματα σωσάτω τῶν πιστευόντων.

22 Ἐπειδὴ καὶ Ἰουδαῖοι σημαῖον αὐτοῖς, ὅτι ἔλθῃ σοφίαν ζητήσιν.

23 Ἡμεῖς ὅτι κηρύττομεν Χριστὸν ἑταίρον ὑμῶν, ἵνα δαίσις μὴ πνεῦμα ἁγίου, καὶ ὁ Θεὸς ὁ μακρὰς.

24 Αὐτοῖς δὲ τοῖς κλητοῖς Ἰουδαίοις τε καὶ Ἑλλήσι Χριστὸν Θεὸν δυνάμει καὶ Θεῷ σοφίαν.

25 Ὅτι τὸ παρὲς ὁ Θεός, σοφώτερον τῷ ἀνθρώπῳ, καὶ τὸ ἀσθενές ὁ Θεός, ἰσχυρότερον τῷ ἀνθρώπῳ ἐστίν.

26 Πληρεστερεῖ γὰρ ὁ κλητὸν ὑμῶν, ἀδελφοί, ὅτι οὐ πολλοὶ σοφοὶ καὶ σαρκῶς, καὶ πολλοὶ δυνατοί, καὶ πολλοὶ ἰσχυροί.

27 Ἀλλὰ τὰ μυστήρια τοῦ κόσμου ἠεὶ ἐκείνῳ ὁ Θεός, ἵνα τοὺς σοφούς κατενισχύῃ, καὶ τὰ ἀσθενῆ τοῦ κόσμου ἠεὶ ἐκείνῳ ὁ Θεός, ἵνα κατενισχύῃ τὰ ἰσχυρά.

28 Καὶ τὰ ἰσχυρά ὁ Θεός καὶ τὰ ἰσχυρὰ ἠεὶ ἐκείνῳ ὁ Θεός, καὶ τὰ μὴ ὄντα, ἵνα τὰ ὄντα κατενισχύῃ.

29 Ὅπως μὴ καυχῶνται πᾶσα σὰρξ ἐνώπιον αὐτοῦ.

30 Ἐξ αὐτοῦ δὲ ὑμεῖς ἴτε ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὅς ἐστιν ἡμῶν σοφία ἀπὸ Θεοῦ, ἐκκατενισχύει καὶ ἡμῶν καὶ ἐκκατενισχύει.

31 Ἰνα, καθὼς γέγραπται · Ὁ καυχώμενος, ἐν Κυρίῳ καυχέσθω.

Κεφ. Β'. 2.

1 **Κ** Αἰεὶ ἐλθὼν πρὸς ὑμᾶς, ἀδελφοί, ἤλθον καὶ καθ' ὑπεροχὴν λόγῳ ἢ σοφίας, καταγγέλλον ὑμῖν τὸ μυστήριον τοῦ Θεοῦ.

2 Οὐ γὰρ ἔκρινα τοῦτο ἐν ὑμῖν, εἰ μὴ ἵνα τὸν Χριστὸν καὶ τὰς ἐκκεκρυμμένους.

3 Καὶ ἐγὼ ἐν αἰσθητικῇ, ἐν φόβῳ καὶ ἐν τρόμφῳ πολλῷ ἐξηκολούησα πρὸς ὑμᾶς.

4 Καὶ ὁ λόγος μου ἐν τῷ κήρυγματι μου ἢ ἐν πηδοῖς ἀνθρώπων σοφίας λόγοις, ἀλλ' ἐν ἀποδείξει Πνεύματος ἐδυναμείω.

5 Ἰνα ἡ πίστις ὑμῶν μὴ ᾖ ἐν σοφίᾳ ἀνθρώπων, ἀλλ' ἐν δυνάμει Θεοῦ.

6 Σοφίαν ὅμως λαλῶμεν ἐν τοῖς τελείοις · σοφίαν ὅμως ἢ πρὸς αἰῶνα τῆτι, ἢ πρὸς αἰῶνα τῆτι τῶν ἀρχόντων τοῦ αἰῶνος τῆτι τῶν κατοικούντων.

7 Ἀλλὰ λαλῶμεν σοφίαν Θεοῦ ἐν μυστηρίῳ, τὴν ἀποκρυφισμένην, ἣν προώρτειν ὁ Θεὸς πρὸ τῶν αἰώνων ἐν δόξῃ ἡμῶν.

8 Ἡν ἡμεῖς τῶν ἀρχόντων τοῦ αἰῶνος τῆτι ἔγνωκεν · ἡ γὰρ ἔγνωσεν, ἢ πρὸ τῶν Κυρίων τῆς δόξης ἐσαύρουσάν.

9 Ἀλλὰ καθὼς γέγραπται · Ἀφ' οὐρανόθεν ἢ ἐκεῖ, ἐκ ἧς ἢ ἤκουσε, ἐκ ὑπὲρ καρδίαν ἀνθρώπου ἢ ἀνέβη, ἢ ἡτοίμασεν ὁ Θεὸς τοῖς ἀγκυλώσιν αὐτῶν.

10 Ἡμεῖς ὅμως ὁ Θεὸς ἀπεκάλυψε ἡμῖν τοῦ Πνεύματος ἀποκάλυψε ἡμῖν · τὸ γὰρ Πνεῦμα πάντα ἐρῶν, καὶ τὰ βράδια τῶν αἰώνων.

11 Τὸ γὰρ οὐδὲν ἀνθρώπου τὰ τοῦ ἀνθρώπου, εἰ μὴ τὸ πνεῦμα τοῦ ἀνθρώπου τὸ ἐν αὐτῷ · Οὕτως καὶ τὰ τοῦ Θεοῦ ἡμεῖς οὐδὲν οὐδὲν · εἰ μὴ τὸ Πνεῦμα τοῦ Θεοῦ.

12 Ἡμεῖς δὲ ἢ τὸ Πνεῦμα τῶν κόσμων ἐλάβομεν, ἀλλὰ τὸ Πνεῦμα τὸ ἐκ τοῦ Θεοῦ, ἵνα ἐδώμεν τὰ ἡμῖν τοῦ Θεοῦ γινώσκοντα ἡμῖν.

13 Ἀλλὰ ἐκ λαλῶμεν, ἢ ἐν διδακτοῖς ἀνθρώπων σοφίας λόγοις, ἀλλὰ ἐν διδακτοῖς Πνεύματος ἁγίου, πνευματικοῖς πνευματικῶς συγκρίνοντες.

14 Φυγίοντες δὲ ἀνθρώπου ἢ δέχεται τὰ τοῦ Πνεύματος τοῦ Θεοῦ · μαρτυρεῖται αὐτῷ ἐν ἡμῖν, ἐν δυνάμει γινώσκου, ὅτι πνευματικῶς ἀναισθητοῦται.

15 Ὁ δὲ πνευματικῶς ἀναισθητοῦται μὲν πάντα, αὐτὸς ὅμως ὡς ἡμεῖς ἀναισθητοῦται.

16 Τίς γὰρ ἐργαζὼν Κυρίῳ, ὃς συμβιβάζει αὐτὸν
 ἡμῖς δὲ τῶν Χριστῶν ἐχομῶν.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Κ**Αὶ ἐγὼ, ἀδελφοί, ἢ ἡδυνήθην ἀλλή-
 ῶν ὡς πνευματικοῖς, ἀλλ' ὡς σαρκικοῖς
 ὡς νεκροῖς ἐν Χριστῷ.

2 Γάλα ὑμῶν ἐπότισα, καὶ ἡ βρώμη· ἔπειτα γὰρ ἡδυνή-
 σθε· ἀλλ' ἢτε ἐπὶ τῶν δυνάσθε.

3 Ἐπὶ γὰρ σαρκικοὶ ἐστέ· ὅτι γὰρ ἐν ὑμῖν ζῆλος
 ἐκείνῃ ἐδιδόξαται, ἢ καὶ σαρκικοὶ ἐστέ, ὅτι καὶ ἀνδρῶν
 πονοῦντες ἐστέ;

4 Ὅταν γὰρ λέγητε· Εὐχόμενος εἰμι Παύλῳ· ἔτε-
 ρος δέ· Εὐχόμενος εἰμι Ἀπολλῷ· ἢ καὶ σαρκικοὶ ἐστέ;

5 Τίς ἢν ἐστὶ Παῦλος, τίς δὲ Ἀπολλῶς, ἀλλ' ἢ
 διακονοῖ δι' ὧν ἐπηρεάζεσθε, καὶ ἐκάς ὡς ὁ Κύριος ἐ-
 δόξαται;

6 Εὐχόμενος εἰμι Ἀπολλῷ· ὅτι ἐπότισεν· ἀλλ' ὁ Θεὸς
 ἡμῶν.

7 Ὡς ἢτε ὁ φυτεύων ἐστὶ τι, ἢτε ὁ ποτίζων,
 ἀλλ' ὁ αὐξάνων Θεός.

8 Ὁ φυτεύων καὶ ὁ ποτίζων ἐν εἰσίν· ἕκα-
 στος δὲ τὴν ἰδίαν μισθὸν λήψεται κατὰ τὸν ἰδίον κό-
 πον.

9 Θεὸς γὰρ ἐσμεν συνεργοί· Θεὸς γεώργιον, Θεὸς
 οἰκοδομή ἐστε.

10 Κατὰ τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ τὴν δοθεῖσάν μοι,
 ὡς σοφὸς ἀρχιτέκτων θεμέλιον τέθεικα, ἄλλον δὲ
 οἰκοδομῶ· ἕκαστος δὲ βλέπετω πῶς οἰκοδο-
 μῇ.

11 Θεμέλιον γὰρ ἄλλον ἢ οὗτος δύναται θεῖναι πλὴν
 κίμων, ὅς ἐστιν Ἰησοῦς ὁ Χριστός.

12 Εἰ δέ τις οἰκοδομῇ ἐπὶ τῷ θεμέλιον τῆτον,
 χρυσόν, ἀργυρὸν, λίθους τιμίους, ξύλα, κάρπην, κα-
 λῆμιν.

13 Ἐκείνῃ τὸ ἔργον φανερόν γινώσκεται· ἢ γὰρ ἡμέρα
 ἀποκάλυψις, ὅτι ἐν πυρὶ ἀποκαλύπτεται· ὅτι ἐκείνῃ τὸ ἔρ-
 γον ὁποῖον ἐστὶ, τὸ πῦρ δοκιμάσῃ.

14 Εἴ τις πρὸς τὸ ἔργον μένει ὁ οἰκοδομῇ, μισθὸν
 λήψεται.

15 Εἴ τις πρὸς τὸ ἔργον κατακρήσεται, ζημιωθή-
 σεται· αὐτὸς δὲ σωθήσεται, ἕτος δὲ ὡς ὁ Θεὸς πυ-
 ρός.

16 Οὐκ οἶδατε ὅτι καὶ Θεὸς ἐστὶ, ὁ τὸ Πνεῦμα τοῦ
 Θεοῦ οἰκῇ ἐν ὑμῖν;

17 Εἴ τις πρὸς τὸν κατὰ τὸν Θεὸν φθείρει, φθερεῖ τῆτον
 ὁ Θεός· ὁ γὰρ κατὰ τὸν Θεὸν ἁγίος ἐστὶν· οἱ πρὸς ἐστε ὑ-
 μῖν.

18 Μηδὲς ἑαυτὸν ὑψατατάτω· ἢ περὶ δοκεῖ σοφὸς εἶ-
ναι ἐν ὑμῖν ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ, μικρὸς ὑμείσθω, ἵνα
γένηται σοφός.

19 Ἡ γὰρ σοφία τῆς κόσμου τήτης, μαρτυρεῖται ὑμῖν
ὅτι ἐστὶν ἄφρονη· γινώσκονται γάρ· Ὁ δὲ δραστόμηνος τῆς σοφίας
ἐν τῇ πᾶνουργίᾳ αὐτοῦ.

20 Καὶ πάλιν· Κύριος γινώσκει τῆς ἀφρολογισμῆς
τῶν σοφῶν, ὅτι εἰσὶ ματαῖοι.

21 Ὡς τε μηδὲς καυχᾶσθω ἐν ἀνθρώποις· πάντα γὰρ
ὑμῶν ἐστίν·

22 Εἴτε Παῦλος, ἢ τε Ἀπολλῶς, ἢ τε Κηφᾶς,
ἢ τε Κόσμος, ἢ τε Ζωὴ, ἢ τε Θάνατος, ἢ τε ἐνε-
στάς, ἢ τε μέλλοντες, πάντα ὑμῶν ἐστίν·

23 Ὡς ἡμεῖς ὅς Χριστῷ, Χριστὸς ὅς Θεῷ.

Κεφ. β'. 4.

1 Ὡς ἡμεῖς λογιζέσθω ἀνθρώποις, ὡς ὅταν
ῥέτας Χριστῷ, ὁ οἰκονόμος μυστηρίων
Θεοῦ.

2 Ὡς λοιπὸν, ζητεῖται ἐν τοῖς οἰκονόμοις, ἵνα
πιστὸς τις ᾖ ἐν ὑμῖν.

3 Ἐμοὶ δὲ ὡς ἐλάχιστον ἐστίν ἵνα ὑφ' ὑμῶν ἀπα-
κριθῶ, ἢ ὑπὸ ἀνθρώπινης ἡμέρας· ἀλλ' ὅδε ἑμὲ αὐτὸν
ἀπακρίνω.

4 Οὐδὲν γὰρ ἑμὲ αὐτὸν σύνοῖδα· ἀλλ' ἡ ἐν τοῦ-
του διδουμένη· ὅς δὲ ἀπακρίνων με, Κύριός
ἐστίν.

5 Ὡς μὴ πρὸ καιρῷ τι κρίνετε, ἕως ἃν ἔλθῃ ὁ
Κύριος· ὅς ἐστιν ὁ φωτίζων τὰ κρυπτά τῆς σκοτίας, καὶ φα-
γεύσας τὰς βελίας τῶν καρδιῶν· ὁ τότε ὁ ἴππιος
ὑψηλὸς ἐκείνῳ ἀπὸ τῆς Θεοῦ.

6 Ταῦτα ὅς, ἀδελφοί, μεταχρημάσσω εἰς ἑμὲ αὐτὸν
Ἀπολλῶ δὲ ὑμᾶς· ἵνα ἐν ἡμῖν κηρύττεται τὸ μὴ ὑπὲρ
ὅς γίνεται φρονῖν, ἵνα μὴ εἰς ὑπὲρ τῆς ἐνός φροσύ-
νης κατὰ τῆς ἑτέρας.

7 Τίτ γὰρ σε ἀπακρίνει; Τί δὲ ἔχεις ὃ οὐκ ἔ-
λαβες. Εἰ δὲ καὶ ἔλαβες, τί καυχᾶσαι ὡς μὴ λα-
βών;

8 Ἡ δὲ κοροεσμένοι ἐστέ, ἤδη ἐπλητήσατε, χαίρετε
ἡμῶν ἐμβασιλεύσατε· καὶ ὅφελον γὰρ ἐμβασιλεύσατε· ἵνα
ὁ ἡμεῖς ὑμῖν συμβασιλεύσωμεν.

9 Δοκῶ γὰρ ὅτι ἐστὶν Θεὸς ἡμεῖς τῆς ἀποστόλης ἐχάτης
ἀποδείξειν ὡς ὅτι ἀδελφότης, ὅτι θείατρον ἐν ἡμεῖς
τῷ κόσμῳ καὶ ἀγγέλοις ὁ ἀνθρώποις.

10 Ἡμεῖς μὲν μοι ἀπὸ Χριστοῦ, ὑμεῖς ὅς φρόνιμοι
ἐν Χριστῷ· ἡμεῖς ἀποδείξειν, ὑμεῖς ὅς ἰσχυροί· ὑμεῖς
ἐνδοκοί, ἡμεῖς ὅς ἄνθρωποι.

11 Ἀνὰ τῆς ἀρετῆς ὁρᾶς ἔπαινώμεθα, ἔδιψώμεθα, ἔγυμνάζομεθα, ἔκολαφιζόμεθα, ἔαυτῶν μὴ.

12 Καὶ κοπιῶμεν, ἐργαζόμενοι τὰς ἰδίαις χερσὶ· λοιδοροῦμεθα, βλοσυροί· διωκόμεθα, ἀνεχόμεθα.

13 Βλασφημῶμεθα, πειθαρχοῦμεν, ὡς πειθαρχήματα τοῦ κυρίου ἐν ᾧ ὁ Χριστὸς ἠτοίμασε ἑαυτὸν ὑμῶν ὑποτάσσας ἑαυτὸν ὑμῶν.

14 Οὐκ ἐντρέπων ὑμᾶς χάρις ταῦτα, ἀλλ' ὡς τέκνα μη ἀγαπᾶται νουθετοῦ.

15 Ἐάν γὰρ μυρίας παιδαγωγίας ἔχητε ἐν Χριστῷ, ἀλλ' ὡς πολλὰς πατέρας· ἐν γὰρ Χριστῷ Ἰησοῦ τοῦ ἀγαθοῦ ἐγὼ ὑμᾶς ἐγέννησα.

16 Παρακαλῶ οὖν ὑμᾶς, μιμηταί μου γίνεσθε.

17 Διὰ τοῦτο ἔπεμψα ὑμῖν Τιμόθεον, ὃς ἐστὶ τέκνον μου ἀγαπητὸν καὶ πιστὸν ἐν κυρίῳ, ὃς ὑμᾶς ἀναμνήσει τὰς ἐπαγγελίας μου τὰς ἐν Χριστῷ, καθὼς πόρταχ' ἐν πάσῃ ἐκκλησίᾳ διδάσκων.

18 Ὡς μὴ ἐρχομένη δέ μιν πρὸς ὑμᾶς ἐφυσιάζω πάντες.

19 Ἐλεύσομαι ἡ ταχέως πρὸς ὑμᾶς ἐάν ὁ Κύριος θελήσῃ, ἔλθωσιν ὡς ἔλθωσιν τῶν πεφυσισμένων, ἀλλὰ τῶν εὐταμίῳ.

20 Οὐ γὰρ ἐν λόγῳ ἡ βασιλεία τοῦ Θεοῦ, ἀλλ' ἐν εὐταμίᾳ.

21 Τί θέλετε; Ἐν ῥάβδῳ ἔλθω πρὸς ὑμᾶς, ἡ ἐν ἀγάπῃ, πνύματί τε πρεσβύτερος.

Κεφ. ε'. 5.

1 Ὅτι ἀκούεται ἐν ὑμῖν πονηρία, ἡ πονηρία, ἥτις ὡς ἐν τοῖς ἔθνεσιν ὀνομαζέται, ὥς ἐν γυναικὶ τινὶ τοῦ Πατρὸς ἔχον.

2 Καὶ ὑμᾶς πεφυσισμένοι ἐστέ, ἔχοντες μὲν πολλὰς ἐπιθυμίας, ἵνα ἁρπαγῇ ἐκ μέσων ὑμῶν ὁ πᾶς ἐργὴν τοῦτο ποιήσας.

3 Ἐγὼ μὲν γὰρ ὡς ἀπὸν τῷ σώματι, παρὼν δὲ τῷ πνύματι, ἤδη κειμένα ὡς παρὼν τοῦ πᾶτος τοῦτο κατεργασάμενος.

4 Ἐν τῷ ὀνόματι τοῦ Κυρίου ὑμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, συναχθέντων ὑμῶν καὶ τοῦ ἐμοῦ πνύματος, σὺν τῇ δυνάμει τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

5 Παραδῆναι τὸ ποιεῖν τὴν ἐκείνῃ εἰς ὀφειλὴν τῆς
 ὁκός, ἵνα τὸ πνεῦμα σωθῇ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τοῦ Κυρίου

6 Οὐ καλὸν τὸ κωχῆσαι ὑμῶν· ἢ οὐδατε ὅτι με-
 λὸς ὅλον τὸ φύσκει ζῆλοι;

7 Εκκαθάρατε οὖν τὴν παλαιὰν ζύμην, ἥ-
 ῃτε νέον φύραμα, καθὼς ἐσε αἵμοι· καὶ
 τὸ πάσχει ἡμῶν ὑπὲρ ἡμῶν ἰδοῦθαι, Χρῆ-

8 Ὡς ἐορτάζωμεν, μὴ ἐν ζύμῃ παλαιᾷ, μηδὲ ἐν
 κακίᾳ καὶ πενησίᾳ, ἀλλ' ἐν αἰζύμοις εὐκλειᾶς
 ἀληθείας.

9 Ἐρχομαι ὑμῖν ἐν τῇ ὁπισθῇ, μὴ συνλειτουργῶν
 πόρνοις.

10 Καὶ ἡ πάντας τῆς πόρνοις καὶ πόρνη τῆτι, ἢ
 πλεονέκτησι, ἢ ἄρπαξιν, ἢ εἰδωλοχάτραις· ἐπεὶ
 ἐλάτε ὅρα ὅτι καὶ κόσμῳ ἔξελεθαι.

11 Νυνὶ δ' ἐρχομαι ὑμῖν μὴ συνλειτουργῶν, εἰς
 ἀδελφὸς ὀνειδισμένους, ἢ πόρνος, ἢ πλεονέκτης,
 εἰδωλοχάτρης, ἢ λοιδορὸς, ἢ μέθυσοις, ἢ ἄρπας,
 πικρῶ μηδὲ συνεστῆεν.

12 Τί γάρ μοι καὶ τὴς ἐξω κρίναι; Οὐχὶ τὴς ἐσω
 εἰς κρίνεται;

13 Τὴς δὲ ἐξω ὁ Θεὸς κρίνει. Καὶ ἡγαρήτε τὸ πο-
 ῖν ὑμῶν ὡς τῷ.

Κεφ. ε'. β.

1 **Τ**ΟΙΟΥΤΙΣ ὑμῶν, πρῶτον ἔχον πρὸς τὸ ἔτε-
 ρον, κρίνεσθαι ἐπὶ τῷ ἀδίκῳ, καὶ ἡχί
 τῷ ἁγίῳ;

2 Οὐκ οὐδατε ὅτι οἱ ἅγιοι τὸν κόσμον κρινῶσι; Καὶ
 ἐν ὑμῖν κρίνεται ὁ κόσμος, ἀνάξιοι ἐσε κριτηρίων
 κρίναι;

3 Οὐκ οὐδατε ὅτι ἀγγέλους κρινῶμεν; μή τιγε
 ἴσκει;

4 Βιωτικά μὲν ἦν κριτήρια, εἰς ἔχαι, τὴς ὕψους
 ἡμεῖς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ, τῆτι καὶ ἴσκει.

5 Πρὸς ἐντροπῇ ὑμῖν λέγω ἥτις ἡ ἐστὶν ἐν τῇ
 τοφῇ καὶ ἐκ, ὅς δυνατὸς εἶναι ἀποκρίναι ἀπὸ μέ-
 τοις ἀδελφῶν ὡς;

6 Ἀλλὰ ἀδελφός μὲν ἀδελφῇ κρίνεται, καὶ τῇ το ὅτι
 ἴσκει;

7 Ἡ δὲ μὲν οὖν ὅλοις ἡττημα ἐν ὑμῖν ἐ-
 ῃ, ὅτι κρίματα ἔχετε μετ' ἐαυτῶν. Ὡς τῇ
 μᾶλλον ἀδικήσθαι; διὰ τὴν ἡχί μᾶλλον ἀποστῆ-
 θαι;

8 Ἀλλὰ ὑμεῖς ἀδικεῖτε καὶ ἀποσερεῖτε, ἐ ταῦτα ἀ-
γαπᾶτε.

9 Ἡ ἢ οἶδατε ὅτι ἀδικοὶ βασιλεύει Θεὸς ἢ κληρο-
νομήσῃσι; Μὴ πλανάσθε, ἥτε πόρνοι, ἥτε εἰδωλο-
λάτραι, ἥτε μοιχοί, ἥτε μελακοί, ἥτε ἀρσενοκοί-
ται.

10 Οὔτε κλέπται, ἥτε πλεονέκται, ἥτε μέθυται,
ἢ λοῖδοροι, ἢ ἄρπαγες, βασιλεύει Θεὸς ἢ κληρονο-
μήσῃσι.

11 Καὶ ταῦτά πῃς ἦτε· ἀλλὰ ἀπὸλύσασθε, ἀλ-
λὰ ἡγιασθήτε, ἀλλ' ἐδικαιώθητε ἐν τῷ ὀνόματι
τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ, καὶ ἐν τῷ Πνεύματι τοῦ Θεοῦ
ἡμῶν.

12 Πάντα μοι ἔξοισιν, ἀλλ' ἡ πάντα συμφέρει·
πάντα μοι ἔξοισιν, ἀλλ' ἢ ἐγὼ ὑπετασσάσομαι ὑπὸ
πῃς.

13 Τὰ βρώματα τῇ κοιλίᾳ, καὶ ἡ κοιλία τοῖς βρώ-
μασιν· ὁ δὲ Θεὸς ἐ ταύτῃ καὶ ταῦτα καταργήσῃ, τὸ
δὲ σῶμα καὶ τῇ πορνείᾳ, ἀλλὰ τῷ Κυρίῳ, ἐ ὁ Κύριος
τῷ σώματι.

14 Ο' ὃ Θεὸς ἐ τῷ Κυρίῳ ἡγήρε, καὶ ὑμᾶς ὑπεγί-
ρη διὰ τῆ δουλείας αὐτοῦ.

15 Οὐκ εἶδατε, ὅτι τὰ σώματα ὑμῶν, μέλη Χρι-
στοῦ ἐσιν; Ἄρα ἢ τὰ μέλη τῷ Χριστῷ, ποιῶσα πόρνης
μέλη; Μὴ γένοιτο.

16 Ἡ ἢ οἶδατε ὅτι ὁ κολλώμενος τῇ πόρνῃ, ἐν
σῶμα ἐσιν; Ἔσονται γάρ, φησὶν, οἱ δύο εἰς σάρκα
μίαν.

17 Ο' δὲ κολλώμενος τῷ Κυρίῳ, ἐν πνεύματι
ἐσιν.

18 Φεύγετε τὴν πορνείαν· πᾶν ἁμαρτήμα
ὃ ἐστὶν κοινήσῃ ἀνθρώπου, ὅσας τὰ σώματός
ἐσιν· ὁ δὲ πορνείᾳ, εἰς τὸ ἴδιον σῶμα ἁ-
μαρτάνει.

19 Ἡ ἢ οἶδατε, ὅτι τὸ σῶμα ὑμῶν, ναὸς τῷ
ὑμῖν Ἀγίῳ Πνεύματός ἐσιν, ὃ ἔχετε ἀπὸ Θεοῦ, ἐ
ἢ ἐς ἐαυτοῦ.

20 Ἡγοράσθητε τὸ τιμῆς· δοξάσατε δὴ τῷ Θεῷ
ἐν τῷ σώματι ὑμῶν, ἐ ἐν τῷ πνεύματι ὑμῶν, ὅτι τὰ
ἐσιν τῷ Θεῷ.

Κεφ. ζ'. 7.

- 1 **Π**ΕΡΙ ΔΕ ὧΝ ΕΓΡΑΨΑΤΕ ΜΟΙ, ΚΑΛὸν ἄνδράπερ
 γυναικὸς μὴ ἄπτειν.
- 2 ΔΙΑ ΔΕ ΤΑΣ ΠΟΡΝΕΙΑΣ ἕκαστος τῷ ἑαυτοῦ γυναικί ε-
 χέτω, ὥς ἕκαστος τῷ ἰδίῳ ἄνδρι εἴχεται.
- 3 Τῇ γυναικί ὡς ὁ κύριος τῷ ὀφειλομένῳ ὡσεὶ ἑαυτοῦ
 σώματος ὅτι ἡ γυνὴ τῷ κυρίῳ.
- 4 Ὁ κύριος ἑαυτοῦ σώματος ὡς ὁ ἑαυτοῦ σώματος ὡς ὁ
 ἑαυτοῦ σώματος ὡς ὁ ἑαυτοῦ σώματος ὡς ὁ ἑαυτοῦ σώματος.
- 5 Μὴ ἀποσερεῖτε ἀλλήλους, εἰ μὴ τι ὡς συμφώ-
 νη πρὸς κύριον, ἵνα ὁλοκαύσητε τῇ καθείμῃ καὶ τῇ προ-
 φησίᾳ καὶ πάντῃ ὅτι τὸ αὐτὸ συνέρχεται, ἵνα
 μὴ πειράξη ὑμᾶς ὁ Σατάνης ἡγεῖται τῶν ἀκρατίων ὑ-
 μῶν.
- 6 Τὸτο δὲ λέγω καὶ συγγνώμην, ὡς κατ' ἐπι-
 τυχῶν.
- 7 Θέλω γὰρ πάντας ἄνδράπερ εἶναι ὡς ὁ ἑαυτοῦ.
 ἀλλ' ἕκαστος ἰδίῳ χάρισμα ἔχει ὡς ὁ Θεός, ὅς μὲν ὡ-
 τως, ὅς δὲ ὡτως.
- 8 Λέγω δὲ πῶς ἀγάμοις καὶ ταῖς χήραις, καλὸν
 αὐτοῖς εἶναι ἐὰν μείνωσιν ὡς πρῶτον.
- 9 Εἰ δὲ ἔκτε ἐγκρατεύονται, γαμήτωσιν καὶ κρείσ-
 σον γὰρ εἶς γαμήσαι ἢ πολλοὺς.
- 10 Τοῖς δὲ γεγαμηκόσι ἐγγυγέλλω ὡς ἐγὼ, καὶ
 ὡς ὁ κύριος, γυναῖκα ἀπὸ ἑαυτοῦ μὴ χωρι-
 σθῶναι.
- 11 Ἐὰν δὲ καὶ χωρισθῇ, ὡς ἔστι ἀγάμος, ὡς
 τῷ ἀνδρὶ καταλλαγήτω. ὡς ἄνδρα γυναῖκα μὴ ἀ-
 φίσταται.
- 12 Τοῖς δὲ λοιποῖς ἐγὼ λέγω, ὡς ὁ κύριος. Εἰ
 τις ἀδελφὸς γυναῖκα ἔχει ἄπιστον, καὶ αὐτὴ συνδύα-
 κη οἰκεῖν μετ' αὐτῷ, μὴ ἀφίσταται αὐτῷ.
- 13 Καὶ γυνὴ ἥτις ἔχει ἄνδρα ἄπιστον, ὡς αὐτὸς συ-
 νδύακην οἰκεῖν μετ' αὐτῷ, μὴ ἀφίσταται αὐτόν.
- 14 Ἡ γίγασται γὰρ ὁ κύριος ὁ ἄπιστος ὡς τῇ γυναι-
 κί, ὡς ἡ γίγασται ἡ γυνὴ ὁ ἄπιστος ὡς τῷ ἀνδρὶ, ὡς
 τῷ ἀνδρὶ τὰ τέκνα ὑμῶν ἀκάθαρτά ἐσιν. νῦν δὲ ἁγιά-
 σθαι.
- 15 Εἰ δὲ ὁ ἄπιστος χωρίζεται, χωρίζεσθαι. ὡς δὲ
 ἐκέλευται ὁ ἀδελφός, ὡς ὁ ἀδελφὴ ὡς τοῖς τοιαῖς.
 ὡς δὲ ἐκέλευται ἐκέλευται ἡμᾶς ὁ Θεός.
- 16 Τὸ γὰρ οἶδας, γυναῖκα, εἰ τὸς ἀνδρα σώ-
 σεις; Ἡ τί οἶδας, ἀνδρ, εἰ τὴν γυναῖκα σώ-
 σεις;
- 17 Εἰ μὴ ἕκαστος ὡς ἐμίσησιν ὁ Θεός, ἕκαστος ὡς
 ὡς ὡς

ἐκκλησίου ὁ Κύριος, ὅτι παρρησιάζομαι, ὥς ἔως ἐν ταῖς ἐκκλησίαις πάσαις διατασσόμεαι.

18 Περιτετευχέναι τις ἐκλήθη; μὴ ὑποσχόμεθαι. ἐν ἀκρεβυσίᾳ τις ἐκλήθη; μὴ παρρησιάζομαι.

19 Ἡ παρρησία μὴ ἔστιν ἔτι, καὶ ἡ ἀκρεβυσία μὴ ἐστὶν ἔτι, ἀλλὰ τήρησις ἐντολῶν Θεοῦ.

20 Ἐκαστος ἐν τῇ κλήσει ἣ ἐκλήθη, ἐν ταύτῃ μείντω.

21 Ἄλλος ἐκλήθη; μὴ σοι μελέτω· ἀλλ' ἢ καὶ δυνασθαι ἐλάττωτος ἢ αὐτοῦ, μάλλον χρεῖσται.

22 Οὗ γὰρ ἐν Κυρίῳ κληθεὶς ἄλλος, ἀπεικονίζομαι Κυρίῳ ἐστί· ὁμοίως καὶ ὁ ἐλάττωτος κληθεὶς, ἄλλος ἐστὶ Χριστός.

23 Τιμῆς ὑπακούσατε· μὴ γίνεσθε ὡς οἱ ἄνθρωποι.

24 Ἐκαστος ἐν ᾧ ἐκλήθη, ἀδελφοί, ἐν τούτῳ μελέτω ὡς τῷ Θεῷ.

25 Περὶ ὧν τῶν παρθένων ὑπαταχέναι Κυρίῳ ὡς ἔχουσιν ἡμεῖς, δίδομι ὡς ἡλεημένος ὑπὸ Κυρίου πιστεύουσιν.

26 Νομίζω ὅτι, τῷ καλῷ ὑπαρχέναι διαφ' οὗ τῶν ἐν τοῖς ὡσὶν ἀναγκῶν, ὅτι καλὸν ἀνθρώπῳ τὸ οὕτως εἶναι.

27 Δίδομαι γυναῖκί· Μὴ ζήτε λύσιν, κέλευσαι ὡς τὸ γυναικός· Μὴ ζήτε γυναῖκα.

28 Ἐάν τις ἐν γήμῃ, ὡς ἡμεῖς· Ὁ δὲ ἐάν τις παρθένος, ὡς ἡμεῖς, θλίψιν δὲ τῇ σαρκὶ ἐξουσι οἱ πικρῆται· ἐγὼ δὲ ὑμῶν φείδομαι.

29 Τῷ δὲ φημι, ἀδελφοί, ὅτι ὁ καιρὸς συνταχέναι τὸ λοιπὸν ἐστίν· ἵνα ὡς οἱ ἔχοντες γυναῖκας, ὡς μὴ ἔχοντες ὦσι.

30 Καὶ οἱ κλαίοντες, ὡς μὴ κλαίοντες· Ὁ δὲ οἱ χαίροντες, ὡς μὴ χαίροντες· Ὁ δὲ ἀγαλλιάζοντες, ὡς μὴ ἀγαλλιάζοντες.

31 Καὶ οἱ χαροῦντες τῷ κόσμῳ τούτῳ, ὡς μὴ χαροῦντες· παράγω γὰρ τὸ σχῆμα τοῦ κόσμου τούτου.

32 Θελοῦ δὲ ἡμεῖς ἀμερίμνη εἶναι· ὁ δὲ ἄγαλλοι μερίμνη τὰ τοῦ Κυρίου, πῶς ἀρέσκει τῷ Κυρίῳ.

33 Οὗ γὰρ χαμήλας μερίμνη τὰ τοῦ κόσμου, πῶς ἀρέσκει τῇ γυναίκί.

34 Μιμεσθῆναι ἡ γυνὴ ὡς ἡ παρθένα· ὡς ἡ ἀγαλλοι μερίμνη τὰ τοῦ Κυρίου, ἵνα ὡς ἡ ἀγαλλοι σώματι καὶ πνεύματι· ἡ δὲ χαμήλας μερίμνη τὰ τοῦ κόσμου, πῶς ἀρέσκει τῷ ἀνδρί.

35 Τοῦτο δὲ πρὸς τὸ ὑμῶν αὐτῶν συμφέρον λέγω· οὐχ ἵνα βράχον ὑμῖν ἐμβαλῶ, ἀλλὰ πρὸς τὸ

τὸ εὐσχημον καὶ ἀπρόσεδρον τῷ Κυρίῳ ἀπεκρίνα-
σθαι.

36 Εἰ δέ τις ἀζημονεῖν ὅπῃ τῶν παρθένων αὐτῷ νό-
μιζει, εἴη ἢ ὑπέρβατος (ἢ ὅπως ὀφείλει γίνεσθαι) ὃ
θέλει ποιεῖται, οὐχ ἀμαρτάνει· γαμήτωται.

37 Ὅς ὅ ἐστις ἐν καρδίᾳ, μὴ ἔχων
ἀσχημῶς, ἔξηστίαρ δὲ ἔχει παρὰ τὸ ἰδίον θελήματος,
ἢ τὴν τοῦ κέραιου ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῷ, τὸ τρεῖν τὸ εὐστῶς
παρθένον, καλῶς ποιεῖ.

38 Ὡς ἢ ὁ ἐκγαμίζων, καλῶς ποιεῖ· ὁ δὲ μὴ
ἐκγαμίζων, κρείσσον ποιεῖ.

39 Γυνὴ δέδεται νόμῳ ἰφ' ὅσον χρόνον ζῇ ὁ ἀνὴρ
αὐτῇ· εἴη δὲ κοιμηθῇ ὁ ἀνὴρ αὐτῇ, ἐλευθέρῃ ἐστὶν ὡς
θέλει γαμήσθαι· μόνον ἐν Κυρίῳ.

40 Μακαριώτερά δὲ ἐστὶν εἴη ἢ ἡ μείνη, καὶ τῶν
ἐμῶν γνώμων· δοκῶ δὲ καὶ γὰρ Πνεῦμα Θεοῦ ἔχειν.

Κεφ. γ. 8.

1 Περὶ δὲ τῶν εἰδωλοθύτων, οἵδαμεν ὅτι πάν-
τες γνωστὴν ἔχομεν· ἡ γνώσις φουσιεῖ, καὶ
δὲ ἀγαπᾷ οἰκοδομεῖ.

2 Εἰ δέ τις δοκῇ εἰδέναι τι, οὐδέπω οὐδὲν ἔγνωκε
καθῶς δεῖ γινώσκει.

3 Εἰ δέ τις ἀγαπᾷ τὸ Θεόν, ὅπως ἔγνωκε αὐτῷ
αὐτῷ.

4 Περὶ τῆς βρώσεως οὖν τῶν εἰδωλοθύτων, οἵδαμεν
ὅτι οὐδὲν εἰδωλὸν ἐν κόσμῳ, ἢ ὅτι οὐδὲν Θεός· ἔπει-
τος καὶ μὴ εἶς.

5 Καὶ γὰρ ἅπερ εἰς λέγομενοι θεοὶ εἴτε ἐν οὐρανῷ,
εἴτε ἐπὶ τῇ γῆς· (ὡς περ εἰς θεοὶ πολλοί, ἢ κυριοὶ
πολλοί.)

6 Ἀλλ' ἡμῖν εἰς Θεός· ὁ Πατήρ, ὃς οὗ τὰ πάντα,
ἢ ἡμῖν εἰς αὐτὸν· ἢ ὁ κύριος Ἰησοῦς Χριστός, ὃς
οὗ τὰ πάντα, ἢ ἡμῖν δὲ αὐτός.

7 Ἀλλ' οὐκ ἐν πάντιν ἡ γνώσις· τίτεις δὲ τῇ συ-
νείδει τοῦ εἰδωλοῦ ἕως ἄρτι ὡς εἰδωλοθύτον ἐσθίει-
σι, καὶ ἡ συνείδεισις αὐτῶν ἀσθενὴς οὕσα μελυνε-
ται.

8 Βρῶμα δὲ ἡμῖν οὐ παρίσκει τῷ Θεῷ· οὐτε γὰρ
αὐτῷ φάγομεν, ὡς φαγοῦμεν· ἢτε εἴη μὴ φάγομεν καὶ
ὀφειλούμεθα.

9 Βλέπετε δὲ μήπως ἡ ἔξηστία ὑμῶν σιτή προσκαί-
μα γίνηται τοῖς ἀσθενούσιν.

10 Εἴη γὰρ τις ἰδὼν σε, τὸν ἔχοντα γνώσιν, ὡς
εἰδωλὸν κατακείμενον, οὐχὶ ἡ συνείδεισις αὐτοῦ ἀσθε-
νοῦς ὄντος οἰκοδομηθήσεται ὡς τὸ τὰ εἰδωλοθύτα
ἐσθίει;

11 Καὶ ἀγγεῖται ὁ ἀσθενὴς ἀδελφός ὑπὸ τῇ σὺ
γνώσει, δι' ἧν Χριστὸς ἀπέθλην.

12 Οὗτοι δὲ ἀμαρτάνοντες εἰς τῆς ἀδελφῆς, ὅτι τύ-
πτουτες αὐτῷ ἢ συνῆλθαι ἀσθενῶσιν, εἰς Χριστὸν ἀ-
μαρτάνετε.

13 Διόπερ ἐν βρώσῃ σκληραλίζω ἢ ἀδελφόν μου, ἢ
μὴ φαγεῖν κρεῖν εἰς ἢ αἰῶνα, ἵνα μὴ ἢ ἀδελφόν μου
σκληραλίσω.

Κεφ. 9. 9.

1 **Ο**ὗν εἰμὶ ἀπόστολος; Οὐκ εἰμὶ ἐλεύθε-
ρος; Οὐχὶ Ἰησοῦν Χριστὸν τὸν Κύριον
ἡμῶν ἑώρακα; Οὐ τὰ ἔργον μου ὑμῖς ἐσε ἐν Κυ-
ρίῳ;

2 Εἰ ἄλλοις ἢ εἰμὶ ἀπόστολος, ἀλλὰ γε ὑμῖν εἰμὶ
ὁ γὰρ σφραγὶς τῆς ἐμῆς ἀποστολῆς ἡμῖς ἐσε ἐν Κυ-
ρίῳ.

3 Ἡ ἐμὴ ἀπολογία τοῖς ἐμὲ ἀναγκάουσι, αἰ-
τεῖται ἐσε.

4 Μὴ ἢ ἐχούμεν θεοσίαν φαγεῖν ὅτι;

5 Μὴ ἢ ἐχομεν θεοσίαν ἀδελφῶν γυναῖκα πλεόν-
τα, ὡς ὅτι λαῖποι Ἀπάστολοι, ὅτι οἱ ἀδελφοὶ ἢ Κυ-
ρίῳ, ὅτι Κηφᾶς;

6 Ἡ ἢ μέτος ἐγὼ ἢ Βαρνάβας ἢ ἐχομεν θεοσίαν ἢ
μὴ ἐργάζομαι;

7 Τίς σφραγίζεται ἰδίῳις, ὁ ψυχῆις ποτέ; Τίς φυ-
λάει ἀρτελῶνα, ἢ ἐν ἢ καρπῷ αὐτῷ ἢ ἐσθίει; Ἡ
τίς κοιμᾶται παρμόνῳ, ὅτι ἐν ἢ γάλακτος ἢ παρμόνῳ
ἢ ἐσθίει;

8 Μὴ ἢ ἄνθρωποι ταῦτα λαλῶ; Ἡ ἢ ἢ ἐν νό-
μοι ταῦτα λέγει;

9 Εἰ γὰρ τῷ Μωσέως νόμῳ γέγραπται· Οὐ φημί-
σαι· βῆν· αἰλουῦντα· Μὴ τῷ βοῶν μέλει τῷ
Θεῷ;

10 Ἡ δὲ ἡμῖς πάντως λέγει; Δι' ἡμῖς γὰρ ἐξέ-
φα, ὅτι ἐπ' ἐλπίδι ὀφείλει ὁ ἀρετῶν ἀρετῶν· καὶ
ἐν ἐλπίδι, τῆς ἐλπίδος αὐτοῦ μετέχειν ἐπ' ἐλ-
πίδι.

11 Εἰ ἡμῖς ὑμῖν τὰ πνευματικὰ ἐσπείραμεν, μή-
νε, ἢ ἡμῖς ὑμῖν τὰ σαρκικά θηρίομεν;

12 Εἰ ἄλλοι ἢ θεοσίαις ὑμῶν μετεχόντες, ἢ μάλ-
λον ἡμῖς; Ἀλλ' ἢ ἐχρησάμεθα τῇ θεοσίᾳ ταύτῃ
ἀλλὰ πάντα ἐγόμοι, ἵνα μὴ ἐχρησάμεθα τινὰ δώμεν τῷ
ἀγγελίῳ ἢ Χριστῷ.

13 Οὐκ οἶδατε ὅτι οἱ τὰ ἱερὰ ἔργα ἐργαζόμενοι
ἐπ' ἐγὼ ἐσθίουσιν; Οἱ τῷ θυσιᾶσθῳ πρεσβυτέρους
τες, τῷ θυσιᾶσθῳ συμμερίζονται;

14 Οὕτω καὶ ὁ Κύριος διέταξε τοῖς τοῦ διαγγελίου καταγγέλλουσιν, ὥστε τοῦ διαγγελίου ζῆν.

15 Ἐγὼ δὲ ἡδενὶ ἐχρησάμην τήτων. Οὐκ ἐγραψα δὲ ταῦτα, ἵνα οὕτω γένηται ἐν ἐμοί· καλὸν γὰρ μοι μᾶλλον ἀποθανεῖν ἢ τὸ καύχημά μου ἵνα περνεύσῃ.

16 Ἐγὼ γὰρ διαγγελλίζομαι, ὅτι ἔστι μοι καύχημα· ἀνάγκη γὰρ μοι ἐπικηται· καὶ δέ μοι ἐστὶν ἐδὴ μὴ διαγγελλίζομαι.

17 Εἰ γὰρ ἐκὼν τῇτι πράττω, μισθὸν ἔχω· εἰ δὲ ἀκὼν, οἰκονομίᾳ πεπείσθωμαι.

18 Τίς ἔν μοι ἐστὶν ὁ μισθός; ἵνα διαγγελλίζομενος ἀδαπάνῃ θήσω τὸ διαγγελίον τοῦ Χριστοῦ, εἰς τὸ μὴ καταχρησασθαι τῇ ἐξουσίᾳ μου ἐν τῷ διαγγελίῳ.

19 Ἐλεύθερος γὰρ ὢν ὅτι πάντων, πάντων ἑμαυτὸν ἐδούλωτα, ἵνα τοὺς πλείονας κερδήσω.

20 Καὶ ἐχθρόμην τοῖς Ἰουδαίοις ὡς Ἰουδαῖος, ἵνα Ἰουδαίους κερδήσω· τοῖς ὑπὸ νόμον ὡς ὑπὸ νόμον, ἵνα τοὺς ὑπὸ νόμον κερδήσω.

21 Τοῖς ἀνόμοις ὡς ἀνόμος, (μὴ ὢν ἀνόμος Θεός, ἀλλ' ἐνόμος Χριστός) ἵνα κερδήσω ἀνόμους.

22 Ἐχθρόμην τοῖς ἀσθενέσιν ὡς ἀσθενής, ἵνα τοὺς ἀσθενεῖς κερδήσω· τοῖς πάνσι γέγονα τὰ πάντα, ἵνα πάντως πρὸς σῶσω.

23 Τέτοιο δὲ ποιεῖς διὰ τὸ διαγγελίον, ἵνα συγκοινωνῶς αὐτῷ γένημαι.

24 Οὐκ αἰδᾷτε, ὅτι εἰ ἐν σταδίῳ τρέχετε, πάντες μὲν τρεχουσιν, ὡς δὲ λαμβάνει τὸ βραβεῖον; Οὕτω τρέχετε, ἵνα καταλάβητε.

25 Πᾶς δὲ ὁ ἀγωνιζόμενος, πάντα ἐγκρατεύεται, ὅτι οἱ μὲν οὖν ἵνα φθαρτὸν σέφλων λάβωσιν, ἡμεῖς δὲ, ἀφθαρτον.

26 Ἐγὼ τοίνυν οὕτω τρέχω, ὡς οὐκ ἀδήλιος· οὕτω πυκνῶμαι, ὡς οὐκ αἶρα δέραν.

27 Ἀλλ' ὑποπιᾶζω μου τὸ σῆμα καὶ δουλαγωγῶ, μήπως ἄλλοις κερύξας, αὐτὸς ἀδόκιμος γένημαι.

Κεφ. ι. 10.

1 **Ο**Υ' θέλω δὲ ὑμῶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί, ὅτι οἱ πατέρες καθ' ὅλους πάντες ὑπὸ τῇ νεφέλῃ ἡσάν, καὶ πάντες διὰ τῆς θαλάσσης ὁμιλοῦντο.

2 Καὶ πάντες εἰς τὸν Μωϋσῆν ἐβαπτίσαντο ἐν τῇ νεφέλῃ ἢ ἐν τῇ θαλάσσῃ.

3 Καὶ πάντες τὸ αὐτὸ βρῶμα πνευματικὸν ἔφαγον.

4 Καὶ πάντες τὸ αὐτὸ πόμα πνευματικὸν ἔπιον· ἐπιπὶον γὰρ ὅκ πνευματικῆς ἀκολουθήσεως πέτρης· ἥ δὲ πέτρα ἦν ὁ Χριστός.

5 Ἀλλ' ὅτε ἐν τοῖς πλείοσιν αὐτῶν διδόκησεν ὁ Θεός· κατεσφύθησαν γὰρ ἐν τῇ ἐρήμῳ.

6 Ταῦτα δὲ τύποι ἡμῶν ἐγενήθησαν, εἰς τὸ μὴ εἶναι ἡμᾶς ὑπαθρηναῖα κακῶν, καθὼς κακῆνοι ἐπιθύμησάν.

7 Μηδὲ εἰδωλολάτραι γίνεσθε, καθὼς τινες αὐτῶν ὡς γέγραπται· Ἐκάθισεν ὁ λαὸς φαγεῖν ἢ πιεῖν, ἢ ἀνεστηλὼν παίξιν.

8 Μηδὲ πορνεύομεν, καθὼς τινες αὐτῶν ἐκπόρευον, καὶ ἔτετον ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ ἑκοστὰς χιλιάδας.

9 Μηδὲ ἐκπράττομεν τὸν Χριστὸν, καθὼς καὶ τινες αὐτῶν ἐκείρασάν, καὶ ἀπὸ τῆς ὀφείτης ἀπώλοντο.

10 Μηδὲ γογγύζετε, καθὼς καὶ τινες αὐτῶν ἐγόγγυσαν, καὶ ἀπώλοντο ὑπὸ τῷ ἐλεοδρότῳ.

11 Ταῦτα δὲ πάντα τύποι συνέβαινον ἐκείνοις· ἐγράφη δὲ πρὸς νουθεσίαν ἡμῶν, εἰς ὅς τὰ τέλη τῶν αἰώνων κατέντηται.

12 Ὡς ὁ δακὼν ἐς ἄνθρωπον, βλέπω μὴ πείσῃ.

13 Πειρασμός ὑμῶν οὐκ ἔληφεν εἰ μὴ ἀνθρώπινος· πιστὸς δὲ ὁ Θεός, ὅς ἂν ἑάσῃ ὑμᾶς πειρασθῆναι ὑπὲρ ὃ δύνασθε, ἀλλὰ ποιῇται σὺν τῇ πειρασμῷ ἢ τὴν ἐκβάσιν, τοῦ δύνασθαι ὑμᾶς ὑπερβαίνειν.

14 Διόπερ, ἀγαπητοί μου, φύγετε ἀπὸ τῆς εἰδωλολατρίας.

15 Ὡς φρονίμοις λέγω· κρίνατε ὑμᾶς ὁ φημι.

16 Τὸ ποτήριον τῆς ἀλογίας ὃ ἀλογούμεν, σὺν καὶ κοινωνία τοῦ αἵματος τοῦ Χριστοῦ ἐστίν· Τὸν ἄρτον ὃν κλύμεν, ἢ καὶ κοινωνία τοῦ σώματος τοῦ Χριστοῦ ἐστίν.

17 Ὅτι εἰς ἄρτος, εἰς σῶμα, οἱ πολλοὶ ἐσμεν.

μιν . οἱ γὰρ πάντες ἐκ τοῦ ἐνὸς ἁρτον μετέ-
χουμεν .

18 Βλέπετε τὸν Ἰσραὴλ κατὰ σάρκα · οὐχὲ
οἱ ἐσθιόντες τὰς θυσίας , κοινωνοὶ τοῦ θυσιαστηρίου
ἡσὶ ;

19 Τί ἔν φημι ; ὅτι εἰδῶλον ἢ ἐσιν ; ἢ ἔτι εἰδωλό-
δοτον τί ἐσιν ;

20 Ἀλλ' ὅτι ἂ θύει τὰ ἔθνη , δαίμονις
θύει , & ἡ Θεὸς · ὃ θέλω ὅ ὑμεῖς κοινωνήσῃ τῷ δαίμο-
νίῳ γίνεσθαι .

21 Οὐ δύνασθε ποτήριον Κυρίου πίνειν & ποτήριον
δαίμονιων . ἢ δύνασθε τραπέζης Κυρίου μετέχειν , καὶ
τραπέζης δαιμονίων .

22 Ἡ ὡς ἐζηλῶμεν τὸν Κύριον ; Μὴ ἰχυρότεροι αὐ-
τῷ ἴσμεν ;

23 Πάντά μοι ἔξοισιν , ἀλλ' ἢ πάντα συμφέρει
πάντα μοι ἔξοισιν , ἀλλ' ἢ πάντα οἰκοδομεῖ .

24 Μηδαὶς τὸ ἐναντὶ ζητείτω , ἀλλὰ τὸ τῷ ὀτέρῳ
ἔκαστος .

25 Πᾶν τὸ ἐν συγκλήτῳ παλλόμενον ἐσθίετε , μηδὲν
ἀναικρίνοντας διὰ τῷ συνεῖδῃσιν .

26 Τῷ γὰρ Κυρίῳ ἡ γῆ & τὸ πλήρωμα αὐτῆς .

27 Εἰ δέ τις καλῶ ὑμῶς τῷ ἀπίστων , & θέλετε
τερεύεσθαι , πᾶν τὸ παραπιδέσμενον ὑμῖν ἐσθίετε , μη-
δὲν ἀναικρίνοντας διὰ τῷ συνεῖδῃσιν .

28 Ἐὰν δέ τις ὑμῖν εἴπῃ · Τὴν εἰδωλόθυ-
τὸν ἐσθί , μὴ ἐσθίετε , δι' ὅτινον τὸν μὲνυσάμε-
ν , & τῷ συνεῖδῃσιν τῷ γὰρ Κυρίῳ ἡ γῆ & τὸ πλή-
ρωμα αὐτῆς .

29 Συνείδητιν δὲ λέγω , ὥχι τῷ ἑαυτοῦ , ἀλλὰ τῷ
τοῦ ἱεροῦ . ἵνα τί γὰρ ἡ ἐλευθερία μου κρείσσεται ὡς ὁ
ἄλλος συνεῖδησις ;

30 Εἰ ὃ ἐγὼ χάριτι μετέχω , ἢ βλασφημῶμαι ὑ-
πὲρ ἢ ἐγὼ ὡς χρεῖσθαι ;

31 Εἴτε ἢ ἐσθίετε , εἴτε πίνετε , εἴτε τι ποιῇτε ,
πάντα εἰς δόξαν Θεοῦ ποιεῖτε .

32 Ἀ' προσκοκοί γίνεσθε & Ἰουδαίσις & Ἑλλήσι &
τῇ ἐκκλησίᾳ τῇ Θεῷ .

33 Καθεὶς καὶ ὡς πάντα πᾶσιν ἀρέσκω , μὴ ζη-
τῶ τὸ ἑαυτοῦ συμφέρον , ἀλλὰ τὸ τῷ πολλῶν
ἢ σωθῶσι .

Κιφ. ια. 11.

1 **Μ**ιμηταί με γίνεσθε, καθὼς καὶ γὰρ Χρ^ς σου.

2 Ἐπειὼν δὲ ὑμῶς, ἀδελφοί, ὅτι πάντα μου μέμνησθε, καὶ καθὼς παρέδωκα ὑμῖν, τὰς παρὰ πόδας κατεχέτε.

3 Θέλω δὲ ὑμῶς εἰδέναι ὅτι πάντος ἀνδρὸς ἡ κεφαλὴ ὁ Χρ^ς ἐστὶ· κεφαλὴ δὲ γυναικὸς, ὁ ἀνὴρ· κεφαλὴ δὲ Χρ^ς, ὁ Θεός.

4 Πᾶς ἀνὴρ προσώχουλος ἢ προφητεύων, κατὰ κεφαλῆς ἔχων, καταισχύνη τὴν κεφαλὴν αὐτῆς.

5 Πᾶσα δὲ γυνὴ προσώχομένη ἢ προφητεύουσα ἀκατακαλύπτῃ τὴν κεφαλὴν, καταισχύνη τὴν κεφαλὴν αὐτῆς· ἐν γὰρ ἐστὶ καὶ τὸ αὐτὸ τῇ ὑπερημέρῃ.

6 Εἰ γὰρ ἡ κατακαλύπτεται γυνὴ, καὶ κειράσθω· καὶ δὲ αἰσχροὺς γυναικὶ τὸ κειράσθαι ἢ ξυρᾶσθαι, κατακαλύπτεσθω.

7 Ὁ ἀνὴρ μὲν γὰρ ὡς ὁφείλει κατακαλύπτεσθαι τὴν κεφαλὴν, οἷον καὶ ὁ Θεὸς ὑπάρχων· γυνὴ δὲ ὡς ἀνδρὸς ἐστίν.

8 Οὐ γὰρ ἐστὶν ἀνὴρ ἐκ γυναικὸς, ἀλλὰ γυνὴ ὡς ἀνδρὸς.

9 Καὶ γὰρ ὡς ἐκτίσθη ἀνὴρ διὰ τὴν γυναῖκα· ἀλλὰ γυνὴ διὰ τὸν ἀνδρα.

10 Διὰ τὸ ὅφειλε ἡ γυνὴ ὑπερεῖν ἔχων ὑπὲρ τῆς κεφαλῆς, ὡς καὶ τῆς ἀγγελίας.

11 Πάλιν ὡς ἀνὴρ χεῖρας γυναικὸς, ὡς γυνὴ χεῖρας ἀνδρὸς, ὡς Κυρίου.

12 Ὡς περὶ γὰρ ἡ γυνὴ ὡς ὁ ἀνδρὸς, ὡς καὶ ὁ Θεὸς ὡς ὁ ἀνὴρ, ὡς ἡ γυναικὸς· τὰ δὲ πάντα ὡς ὁ Θεός.

13 Ἐν ὑμῖν αὐτοῖς κρίνατε· πρέπον ἐστὶ γυναικὶ ἀκατακαλύπτῃ τῷ Θεῷ προσώχεσθαι.

14 Ἡ δὲ αὐτὴ ἡ φύσις διδάσκει ὑμῶς, ὅτι ἀνὴρ μὲν ἐάν κομᾷ, ἀπειρία οὐκ ἐστὶ.

15 Γυνὴ δὲ ἐάν κομᾷ, ὡς αὐτῇ ἐστίν, ὅτι ἡ κόμη αὐτῇ παρὰβολαὶν δέδοται αὐτῇ.

16 Εἰ δὲ τις δοκῇ φιλόνηκος εἶναι, καὶ ἡμῶς τοιοῦτῳ συνήθειαν ὡς ἔχομεν, ἐν δὲ αἱ ἐκκλησίαι ὡς Θεός.

17 Τὸ ὅτι ὡς ἀγγέλλων ὡς ἐπαινῶ, ὅτι ὡς εἰς τὸ κρείττον, ἀλλ' εἰς τὸ ἥττον συνέρχεσθε.

18 Πρῶτον μὲν γὰρ συνερχομένων ὑμῶν ὡς τῇ ἐκκλησίᾳ, ἀλλὰ σχίσματα ὡς ὑμῖν ὑπάρχουσιν· ὡς μέρες τι πεινάω.

19 Δεῖ

19 Δὲ γὰρ ἡ ἀρέσκεις ἐν ὑμῖν εἶναι, ἵνα οἱ δοκιμασθέντες γενῶνται ἐν ὑμῖν.

20 Συνερχομένων δὲ ὑμῶν ὅτι τὸ αὐτὸ, ἢ ἔστι Κυριακὴν δαῖπνον φαγεῖν.

21 Ἐκαστος γὰρ τὸ ἴδιον δαῖπνον προλαμβάνει ἐν τῇ φαγῇ, ἡ δὲ μὲν πτωχὸς, ὅς δὲ μεθύει.

22 Μὴ γὰρ οἰκίας ἢ ἐχέτε εἰς τὸ ἐσθίειν ἢ πίνειν; ἢ τῆς ἐκκλησίας ᾧ Θεῷ καταφρονεῖτε, καὶ κατασχυρνεύετε τὴν μὴ ἔχοντα; Τί ὑμῖν εἶπω; ἐπαινέσω ὑμᾶς; Ἐν τῷ τῷ ἢ ἐπαινῶ.

23 Ἐγὼ γὰρ παρέλαβον ἀπὸ τοῦ Κυρίου ὃ ἡ παρέδωκα ὑμῖν, ὅτι ὁ Κύριος Ἰησοῦς ἐν τῇ νυκτὶ ἣ παρέδίδοτο, ἔλαβεν ἄρτον.

24 Καὶ οὐχαριστήσας ἔκλασε, ἡ εἶπε· Λάβετε, φάγετε· τὸ τοῦτο ἐστὶ τὸ σῶμα τὸ ὑπὲρ ὑμῶν κλωμῶν· τὸ τοῦτο ποιεῖτε εἰς τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν.

25 Ὡς οὖτως ἡ ποτήριον, μετὰ τὸ εὐχαριστῆσαι, λέγων· Τὸ τοῦτο ποτήριον, ἡ κατὰ τὴν ἀποθήκην ἐστὶν ἐν τῇ ἐμῇ αἱματι· τὸ τοῦτο ποιεῖτε ὡς ἂν πίνετε, εἰς τὴν ἐμὴν ἀνάμνησιν.

26 Ὡς ἂν ἐσθίητε τὸν ἄρτον τῷτον, ἡ τὸ ποτήριον τὸ πίνετε, τὸν θάνατον τοῦ Κυρίου καταγγέλλετε, ἢ ἄλλως ἢ ἂν ἔλθῃ.

27 Ὡς ὅς ἂν ἐσθίῃ τὸν ἄρτον τῷτον, ἡ πίνῃ τὸ ποτήριον τοῦ Κυρίου ἀναξίως, ἐνοχος ἔσται τοῦ σώματος ἢ αἵματος τοῦ Κυρίου.

28 Δοκιμαζέτω δὲ ἄνθρωπος ἑαυτὸν, ἡ ἕτως ἐν τῷ ἄρτι ἐσθιέτω, ἡ ἐν τῷ ποτηρίῳ πινέτω.

29 Ὡς γὰρ ἐσθιὼν ἡ πίνων ἀναξίως, κείνη ἑαυτὸν ἐσθίει καὶ πίνει, μὴ διακρίνων τὸ σῶμα τοῦ Κυρίου.

30 Διὰ τοῦτο ἐν ὑμῖν πολλοὶ ασθενεῖς καὶ ἀρρώστοι, ἡ κοιμῶνται ἰκανοί.

31 Εἰ γὰρ ἑαυτοὺς διακρίνομεν, οὐκ ἂν ἐκθρονομεθα.

32 Κεῖνόμενοι δὲ, ὑπὸ Κυρίου παιδισκόμεθα, ἵνα μὴ σὺν τῷ κόσμῳ κατακριθώμεν.

33 Ὡς, ἀδελφοί μου, συνερχόμενοι εἰς τὸ φαγεῖν, ἀλλήλους ἐκδέχεσθε.

34 Εἰ δὲ τις πτωχὸς, ἐν οἴκῳ ἐσθιέτω, ἵνα μὴ εἰς κείνην συνέρχῃ. Ταῦτα δὲ λοιπὰ, ὡς ἂν ἔλθῃ, καταξομαι.

Κεφ. ιβ'. 12.

- 1 **Π**ερὶ δὲ τῶ πνευματικῶν, ἀδελφοί, ἡ θεία
 ὑμῶν ἀγάπη·
- 2 Οἴδατε ὅτι ἐστὶν ἡ τέ, πρὸς τὰ εἰδωλὰ τὰ ἄφωνα,
 ὅς ἂν ἡγήσθῃ, ἀπηρξάντοι.
- 3 Διὸ γνωρίζω ὑμῖν, ὅτι οὐδαὶς ἐν Πνεύ-
 ματι Θεοῦ λαλεῖν, λέγει ἀνάθεμα Ἰησοῦν, καὶ
 οὐδαὶς δυνατὸν εἶπαι Κύριον Ἰησοῦν, εἰ μὴ ἐν Πνεύ-
 ματι Ἀγίῳ.
- 4 Διακρίσεις δὲ χειρισμάτων εἰσὶ, τὸ δὲ αὐτὸ
 Πνεῦμα·
- 5 Καὶ διακρίσεις διακονιῶν εἰσὶ, καὶ ὁ αὐτὸς
 Κύριος·
- 6 Καὶ διακρίσεις ἐνεργημάτων εἰσὶν, ὁ δὲ αὐτὸς ἐστὶ
 Θεός, ὁ ἐνεργῶν τὰ πάντα ἐν πᾶσιν.
- 7 ἕκαστος ὃ δίδεται ἢ φθάνουσιν τῷ Πνεύματι πρὸς
 τὸ συμφέρον.
- 8 Ὁ δὲ μὲν γὰρ διὰ τοῦ Πνεύματος δίδεται λό-
 γος σοφίας, ἄλλω δὲ λόγος γνώσεως, κατὰ τὸ
 αὐτὸ Πνεῦμα·
- 9 ἑτέρος δὲ πίσις, ἐν τῷ αὐτῷ Πνεύματι·
 ἄλλω δὲ χαρίσματα ἰσχυρίων, ἐν τῷ αὐτῷ Πνεύ-
 ματι·
- 10 Ἄλλω δὲ ἐνεργήματα δυνάμεων, ἄλλω δὲ
 προφητεία, ἄλλω δὲ διακρίσεις πνευμάτων, ἑτέ-
 ρω δὲ γένη γλωσσῶν, ἄλλω δὲ ἐρμηνεία γλωσ-
 σῶν.
- 11 Πάντα δὲ ταῦτα ἐνεργεῖ τὸ ἐν ἡμῖν αὐτὸ Πνεῦ-
 μα, διακρινὺν ἰδίᾳ ἕκαστον καθὼς βληταί.
- 12 Καθάπερ γὰρ τὸ σῶμα ἐστὶ ἐν ἐμῇ, ὥς μέλη ἔχον
 πολλὰ, πάντα ὃ τὰ μέλη τῷ σώματι τῷ ὅντι, πολλὰ
 ὄντα, ἐν ἐστὶ σῶμα, ἢ τὸ ὅς ὁ Χριστός.
- 13 Καὶ γὰρ ἐν ἐνὶ Πνεύματι ἡμεῖς πάντες εἰς
 ὃν σῶμα ἐβαπτισθήμεν, εἴτε Ἰουδαῖοι, εἴτε Ἑλλήνες,
 εἴτε δούλοι, εἴτε ἐλεύθεροι· καὶ πάντες εἰς ἓν Πνεῦμα
 ἐποτίσθήμεν.
- 14 Καὶ γὰρ τὸ σῶμα οὐκ ἐστὶν ἐν μέλος, ἀλλὰ
 πᾶν.
- 15 Ἐὰν εἴπῃ ὁ ποῦς· Ὅτι οὐκ εἰμὶ χεὶρ,
 οὐκ εἰμὶ ὅτι τῷ σώματι· οὐ παρὰ τούτο οὐκ ἐστὶ
 ὅτι τῷ σώματι;
- 16 Καὶ ἰὰν εἴπῃ τὸ ὄσ· Ὅτι ἐκ εἰμὶ ὀφθαλ-
 μός, οὐκ εἰμὶ ὅτι τῷ σώματι· οὐ παρὰ τούτο οὐκ ἐστὶ
 ὅτι τῷ σώματι;
- 17 Εἰ ὅλον τὸ σῶμα ὀφθαλμός, πᾶ ἡ ἀκοή· Εἰ
 ὅλον ἀκοή, πᾶ ἡ ὀσφρησὶς;

13 Nov

¶ 18 Νυν δὲ ὁ Θεὸς ἔδωκε τὰ μέλη, ἐν ἑκάστῳ αὐ-
τῷ ἐν τῷ σώματι, καθὼς ἠθέλησεν.

19 Εἰ δὲ ὡς τὰ πάντα ἐν μέλῳ, πᾶν τὸ σῶμα;

20 Νυν δὲ πολλὰ αἶν μέλη, ἐν δὲ σῶμα.

21 Οὐ δύναται ὅ ὁφθαλμοί· εἰπεῖν τῇ χερὶ·
Χρεῖάμ σὴ ἢ ἐχὼ· ἢ πάλιν ἡ κεφαλὴ τοῖς πο-
σὶ· Χρεῖάμ ὑμῶν ἢ ἐχὼ.

22 Ἀλλὰ πολλὰ ὑπὸ τὰ δοκῆντα μέλη τῷ σώματι
ἀσθενέστερα ὑπάρχουσιν, ἀναγκαστὰ ἐστὶ.

23 Καὶ ἃ δοκῆμεν ἀπρότερα εἶναι τοῦ σώ-
ματος, τῆτοις πρὶν περισσώτερον ὡφεύδμεν·
καὶ τὰ ἀσχήμονα ἡμῶν ὑπὸ τῆς κατὰ φύσιν ὡφελότη-
τος ἔχει.

24 Τὰ δὲ ὑπὸ τῆς κατὰ φύσιν οὐ χρεῖάμ ἔχει· ἀλλ'
ὁ Θεὸς συνεκέρασε τὸ σῶμα, τῷ ὑπεροῦντι ὡφελότη-
τι δοῦν πρὶν.

25 Ἵνα μὴ ὁ χρίσμα ἐν τῷ σώματι, ἀλλὰ τὸ αὐτὸ
ὑπὲρ ἀλλήλων μεριμνῶσι τὰ μέλη.

26 Καὶ εἴτε πάχει ἐν μέλῳ, συμπάχει πάντα
τὰ μέλη· εἴτε δοξάζεται ἐν μέλῳ, συγχάριται πάντα
τὰ μέλη.

27 Ὑμεῖς δὲ ἐστε σῶμα Χριστοῦ, ὁ μέλη ὡς
μέμους.

28 Καὶ οὗς μὲν ἔδωκε ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἐκ-
κλησίᾳ πᾶντον ἀποστόλους, δεύτερον προφήτας, τρί-
τον διδασκάλους, ἑπτα δυνάμεις, εἴτα χάρι-
ματα ἰαμάτων, ἀντιλήψεις, κυβερνήσεις, γένη
γλωσσῶν.

29 Μὴ πάντες, ἀπόστολοι; μὴ πάντες, προ-
φῆται; μὴ πάντες, διδασκαλοί; μὴ πάντες, δυ-
νάμεις;

30 Μὴ πάντες, χάρισματὰ ἔχουσιν ἰαμάτων;
μὴ πάντες, γλώσσαις λαλοῦσι; μὴ πάντες, διερ-
μηνεύουσιν;

31 Ζηλοῦτε ὅ τὰ χάρισματὰ τὰ κρείττονα, ὡς εἴτε
καὶ ὑπερβολῶν ὁδὸν ὑμῖν δείκνυμι.

Κιφ. ιγ'. 13.

1 **Ε**ἴαν τῶς γλώσσαις τῷ ἀνθρώπῳ λα-
λῶ καὶ τῷ ἀγγέλῳ, ἀγάπῃ δὲ
μὴ ἔχω, γέγονα χαλκὸς ἢ ἄνθραξ, ἢ κύμβαλον
αἰκλιζόν.

2 Καὶ εἴαν ἔχω προφητείαν, καὶ εἰδῶ τὰ μυστήρια
πάντων καὶ πάσαν τὴν γνῶσιν, καὶ εἴαν ἔχω πᾶσαν
τὴν πίσιν, ὥστε ὅρη μεθιστάμεν, ἀγάπῃ δὲ μὴ ἔ-
χω, οὐδὲν εἰμι.

3 Καὶ εἴαν ψαμίσω πάντα τὰ ὑπάρχοντά μου, ὡς

δὲ παραδῶ τὸ σῶμά μου ἵνα κληθῶμαι, ἀγάπη
δὲ μὴ ἔχω, ὅθεν ὠφελημαι.

4 Ἡ ἀγάπη μακροθυμεῖ, χρηστεύεται· ἡ ἀγάπη
ζηλοῖ· ἡ ἀγάπη ἡ περπερεύεται, ἡ φυσικῶς,

5 Οὐκ αἰχμηοῦν, ἡ ζητᾷ τὰ ἑαυτῆς, ἡ παραξύνει
ται, ἡ λογιζέται τὸ κακόν,

6 Οὐ χαίρει ὑπὲρ τῆς ἀδικίας, συγχαίρει δὲ τῇ
ἀληθείᾳ·

7 Πάντα σέβει, πάντα πιστεύει, πάντα ἐλπίζει
πάντα ὑπομένει·

8 Ἡ ἀγάπη ἡδέποτε ἐκπίπτει· εἴτε δὲ προφηταὶ
καταργηθῶσιν, εἴτε γλώσσαι παύσονται, εἴτε γνώ-
σεις καταργηθήσονται·

9 Ἐκ μέρους γὰρ γινώσκομεν, & ὁκ μέρους προφη-
τεύομεν·

10 Ὅταν ὅ ἐλθῇ τὸ τέλειον, τότε τὸ ὁκ μέρους κα-
ταργηθήσεται·

11 Ὅτε ἡμῶν νήπιος, ὡς νήπιος ἐλάλην, ὡς νή-
πιος ἐφρόνῃ, ὡς νήπιος ἐλογιζομένη· ὅτε δὲ γένηται
ἀνήρ, κατηργησάτω τὰ νήπιον·

12 Βλέπομεν γὰρ ἄρτι δι' ἰσότητος ἐν αἰτίγματι,
τότε δὲ πρόσωπον πρὸς πρόσωπον· ἄρτι γινώ-
σκω ὁκ μέρους, τότε δὲ ὅπι γνωσκάμιν καθὼς & ἐπι-
γνώσκω.

13 Νυνὶ δὲ μένει πίστις, ἐλπίς, ἀγάπη, τὰ τρία
ταῦτα· μέζων ὅ τῶν ἡ ἀγάπη.

Κεφ. 15. 14.

1 **Δ**ΙΔΩΚΕΤΕ ἡ ἀγάπῃ, ζηλεῖτε δὲ τὰ πνευμα-
τικά· μάλλον δὲ ἵνα προφητεύητε.

2 Ὅ γὰρ λαλῶν γλώσσῃ, ἢ ἀνθρώποις λαλεῖ, ἢ
ἀλ τῷ Θεῷ· ὅθεν γὰρ αἰνεῖ, πνευματικῇ δὲ λαλεῖ μὴ
ἐν σοφίᾳ·

3 Ὅ ὅ προφητεύων, ἀνθρώποις λαλεῖ οἰκοδομῶν &
παρακλήσιν & παραμυθίαν·

4 Ὅ λαλῶν γλώσσῃ, ἑαυτὸ οἰκοδομεῖ· ὁ ὅ προφη-
τεύων, ἐκκλησίαν οἰκοδομεῖ.

5 Θέλω δὲ πάντας ὑμᾶς λαλῶν γλώσσῃς, μάλλον
δὲ ἵνα προφητεύητε· μέζων γὰρ ὁ προφητεύων ἢ ὁ λα-
λῶν γλώσσῃς, ἐκτός ἐστι μὴ διερωτηθῇ, ἵνα ἡ ἐκκλη-
σία οἰκοδομηθῇ λάβῃ.

6 Νυνὶ δὲ, ἀδελφοί, εἰν ἔλθῃ πρὸς ὑμᾶς γλώσ-
σαι λαλῶν, τί ὑμᾶς ὠφελήσω, εἰν μὴ ὑμεῖν λαλήσω
ἢ ἐν ἀποκαλύψει, ἢ ἐν γνώσει, ἢ ἐν προφητείᾳ, ἢ
ἐν διδασχῇ;

7 Ὅμως τὰ ἄφωνα φωνῶν διδόντω, εἴτε ἐν
λόγῳ, εἴτε κινῶν, εἰν διατελῇ τοῖς φθόγγοις μὴ
δρῶν.

δὲ, πῶς γνωσθήσεται τὸ καλῶμενον ἢ τὸ κηρυχόμενον.

8 Καὶ ὃ ἐὰν ἀδελφὸν φωνῇ σάλπιγγι δὲ, τίς παρασκιάζεται εἰς πόλεμον;

9 Οὕτω ἔ ὑμεῖς ἀλλήλους ὡς γλώσσης ἐὰν μὴ εὐσημοὶ ᾖτε, πῶς γνωσθήσεται τὸ καλῶμενον; ἔσεσθε ὡς αἰέρα λαλοῦντες.

10 Τοιοῦτοι, εἰ τύχοι, γένη φωνῶν ἐσιν ἐν κόσμῳ, ἔ ἡδὲν αὐτῶν ἀφῆκον.

11 Ἐὰν ὢν μὴ εἰδῷ τὸ εὐαγγέλιον τὸ φωνῇ, ἔσονται τῷ λαλῶντι βάρβαρος· καὶ ὁ λαλῶν, ἐν ἐμοὶ βάρβαρος.

12 Οὕτω ἔ ὑμεῖς, ἐπὶ ζήλωτά ἐσε πνεύματων, πρὸς τὸ οἰκοδομῆναι τὴν ἐκκλησίαν ζητῶντες εἰς πᾶσι.

13 Διόπερ ὁ λαλῶν γλώσση, προσδύχεσθω ἵνα διερμυνῇ.

14 Ἐὰν ὃ προσδύχομαι γλώσση, τὸ πνεῦμά μου προσδύγεται· ὁ δὲ ἦν μὴ ἀκροῖται ἐστίν.

15 Τί ὢν ἐστίν; προσδύξομαι τῷ πνεύματι, προσδύξομαι ὃ καὶ τῷ νοῖ· ψαλῶ τῷ πνεύματι, ψαλῶ ὃ καὶ τῷ νοῖ.

16 Ἐπεὶ εἰς εὐλογίᾳ τῷ πνεύματι, ὁ ἀναπληροῦν τὸν ἰδιώτη, πῶς εἰπὶ τὸ αἰνῶν ὑπὲρ τῆς ἐν χάριτι;

17 Σὺ μὲν ὃ καλῶς εὐχαρισεῖς, ἀλλ' ὁ ἕτερος οὐκ οἰκοδομεῖται.

18 Εὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου, πάντων ὑμῶν μάλλον γλωσσῶν καλῶν.

19 Ἀλλ' ἐν ἐκκλησίᾳ θέλω πέντε λόγους ἀλλήλους μὴ λαλῆσαι, ἵνα ἔ ἄλλος κατηχήσῃ, ἢ μυρίαις ἐν γλώσσῃ.

20 Ἀδελφοί, μὴ παιδεία γίνεσθε ταῖς φρεσίν· ἀλλὰ τῇ κακίᾳ ηὑαίεσθαι, ταῖς δὲ φρεσίν τίλειται γίνεσθαι.

21 Ἐν τῷ νόμῳ γίνεσθαι· ὅτι ἐν ἑτερογλώσσῃς, ἔ ἐν χαίλεισιν ἑτέροις, λαλήσω τῷ λαῷ τέτοις, ἔ ὡς ἡτοῖς ἀσαρκήσονται μὴ, λέγει Κύριος.

22 Ὡς αἱ γλώσσαι εἰς σημεῖον εἰσιν, ἢ τῷ πιστεύουσιν, ἀλλὰ τοῖς ἀπίστοις· ἢ δὲ προφητεῖα ἢ τῷ πιστεύουσιν, ἀλλὰ τοῖς πιστεύουσιν.

23 Ἐὰν ὢν συνέλθῃ ἡ ἐκκλησία ὅλη ὑπὲρ τὸ αὐτὸ, ἔ πάντες γλωσσῶν λαλῶσιν, εἰτέλθωσι δὲ ἰδιῶται, ἢ ἀπίστοι, ἢ ἐκῶσιν ὅτι μαινέσθαι;

24 Ἐὰν δὲ πάντες προφητεύωσιν, εἰτέλθῃ δὲ τις ἀπίστος, ἢ ἰδιώτης, ἐλεγχεται ὑπὸ ταύτων, ἀσκήνεται ὑπὸ πάντων.

25 Καὶ ἔτσι τὰ κρυπτά τῆς καρδίας αὐτῶν φανεροῦνται· καὶ ἔτσι πιστῶν ὑπὲρ προσώπων, προσκυνῶνται τῷ Θεῷ, ἀπαγγέλλων ὅτι ὁ Θεὸς ὥτως ἐν ὑμῖν

6 Ἐπειτα ὡφθῇ ἐπ' αὐτῶν πεντακοσίοις ἀδελφοῖς ἐφάπαξ, ὥς ἂν οἱ πλείους μάνωσιν ἕως ἄρτι, τινες δὲ καὶ σκοιμῇσθαι.

7 Ἐπειτα ὡφθῇ Ἰακώβῳ· εἶτα τοῖς ἀποστόλοις πάνσιν.

8 Ἐρχοντο δὲ πάντων, ὡςπερὶ τῷ ἐκτραίματι, ὡφθῇ καμῶι.

9 Ἐγὼ γάρ εἰμι ὁ ἐλάχιστος τῶν ἀποστόλων· ὃς ἢ καὶ ἡμὶ ἐλάττω καλεῖται ἀπόστολος, διότι ἐδίωξα τὴν ἐκκλησίαν τῷ Θεῷ.

10 Ἡ χάρις δὲ Θεοῦ εἰμι ὃς εἰμι· ἡ χάρις αὐτῷ εἰς ἐμὲ, ἡ κενὴ ἐγχορηθῇ, ἀλλὰ πλεονότερον αὐτῷ πλείων σκοτισμα· ἢ ἐγὼ δὲ, ἀλλ' ἡ χάρις τῷ Θεῷ ἡ συνηγορία.

11 Εἴτε ἢν ἐγὼ, εἴτε σκεῖνοι, ἔτω κηρύσσομεν, ὡς ὅπως ὑποτάσσεται.

12 Εἰ δὲ Χριστὸς κηρύσσεται ὅτι ὡς νεκρῶν ἐγέγερται, πῶς λέγῃσι τινες ἐν ὑμῖν, ὅτι ἀνόσιτος νεκρῶν ἢ ἐσιν;

13 Εἰ δὲ ἀνόσιτος νεκρῶν ἢ ἐσιν, ἢ δὲ Χριστὸς ἐγήγερται.

14 Εἰ δὲ Χριστὸς ἢ ἐγήγερται, καὶ οὐκ ἄρα τὸ κήρυγμα ἡμῶν, κενὴ δὲ ἢ ἡ πίστις ὑμῶν.

15 Ἐβεβαίωκεθα δὲ καὶ ψευδομαρτυροῦμεν τῷ Θεῷ· ὅτι μαρτυρήσαμεν ὅτι τοῦ Θεοῦ ὅτι ἡμεῖς τὸν Χριστὸν ἐν ἢ ἡμεῖς, εἴπερ ἄρα νεκροὶ ἢ ἐβίβηται.

16 Εἰ γὰρ νεκροὶ ἢ ἐγείρονται, ἢ δὲ Χριστὸς ἐγήγερται.

17 Εἰ δὲ Χριστὸς ἢ ἐγήγερται, ματαίᾳ ἢ πίστις ὑμῶν, ὅτι ἐσὶ ἐν ταῖς ἀμαρτίαις ὑμῶν.

18 Ἀρα ἡμεῖς οἱ κοιμηθέντες ἐν Χριστῷ, ἀπολλοίμεθα.

19 Εἰ ἐν τῇ ζωῇ ταύτῃ ἡλπιότες ἐσμεν ἐν Χριστῷ μέλλον, ἐλαττωτέρου πάντων ἀνθρώπων ἐσμεν.

20 Νυνὶ δὲ Χριστὸς ἐγήγερται ὡς νεκρῶν· ἀπαρχὴ τῶν κοιμημένων ἐγένετο.

21 Ἐπειδὴ γὰρ δι' ἀνθρώπου ὁ θάνατος, ἡμεῖς δι' ἀνθρώπου ἀνάστασις νεκρῶν.

22 Ὅσοι γὰρ ἐν τῷ Ἀδάμ πάντες ἀποθνήσκουσιν, ὅσοι καὶ ἐν τῷ Χριστῷ πάντες ζωοποιήσονται.

23 Ἐκτος δὲ ἐν τῷ ἰδίῳ τάγματι· ἀπαρχὴ Χριστοῦ, ἔπειτα οἱ τῷ Χριστῷ, ἐν τῇ παρουσίᾳ αὐτοῦ.

24 Εἶτα τὸ τέλος, ὅταν ὡς ὁ Θεὸς βασιλεύῃ τῷ Θεῷ καὶ πατρί· ὅταν καταργήσῃ πᾶσαν ἀρχὴν καὶ πᾶσαν ἐξουσίαν ὡς δυνάμιν.

25 Δεῖ γὰρ αὐτῷ βασιλεύειν ἄχρι οὗ ἂν θῇ πάντας τῶν ἐχθρῶν ὑπὸ τοῦ πόδαυ αὐτοῦ.

26 Ἐσχάτος ἐχθρὸς καταργεῖται ὁ θάνατος.

27 Πάντα γὰρ ὑποτάσσονται ὑπὸ τῆς ποδῆς αὐτοῦ. Ὁ-
τὼν δὲ κτῆ ἐστι πάντα ὑποτέτακται, ὁ δὲλον ὅτι ὁκ-
τοὶ γὰρ ὑποτάσσονται αὐτῷ τὰ πάντα.

28 Ὁ τὰρ ὁ ὑποταγῇ αὐτῷ τὰ πάντα, τότε καὶ
αὐτῶν ὁ Τίος ὑποταγέσθαι τῷ ὑποτάσσοντι αὐ-
τῷ τὰ πάντα, ἵνα ἡ ὁ Θεὸς τὰ πάντα ἐν
πᾶσι.

29 Εἴτε τί ποιήσωσιν οἱ βαπτίζοντες ὑπὲρ τοῦ νε-
κρῶν, εἰ ὅπως νεκροὶ ἢ ἐγείρονται; τί καὶ βαπτίζον-
ται ὑπὲρ τοῦ νεκρῶν;

30 Τί καὶ ἐμεῖς κινδυνεύομεν πᾶσαν ὁδὸν;

31 Καὶ ἡμεῖς ἀποθνήσκω, καὶ τῷ ὑμετέρῳ
κινδυνεύω, ὡς ἔχω ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡ-
μῶν.

32 Εἰ κατὰ ἀνθρώπου ἐθελονμάχησα ἐν Ε-
φέσῳ, τί μοι τὸ ὄφελος, οἱ νεκροὶ ἢ ἐγεί-
ρονται; Φάγομεν καὶ πίνομεν. αἰῶνον γὰρ ἀποθνή-
σκομεν.

33 Μὴ πλῆμᾶσθε. Φθείρασιν ἡδὴ χρητὰ ἐμιλίαι
κακῶν.

34 Ἐκνήψατε δικαίως, καὶ μὴ ἁμαρτάνετε. ἀγνη-
σίῳ γὰρ οἱ οἱ τινες ἔχουσιν. πρὸς ἐντροπὴν ὑμῶν
λέγω.

35 Ἀλλ' ἐρεῖ τις. Πῶς ἐγείρονται οἱ νεκροὶ; ποίῳ
δὲ σώματι ἔρχονται;

36 Ἀφρον, σὺ ὁ ἀπείρις ἢ ζωοποιεῖται, εἰ μὴ
ἀποθάνῃ.

37 Καὶ ὁ ἀπείρις, ἢ τὸ σῶμα τὸ γηιστόν ἐστιν ἀπεί-
ρις, ἀλλὰ γυμνὸν κόκκον, καὶ τύχον, σίτην, ἢ τινος
τοῦ λοιποῦ.

38 Ὁ δὲ Θεὸς αὐτοῦ δίδωσι σῶμα, καθὼς ἡ-
θέλησεν, καὶ ἐκάστῳ τῷ ἀκριμάτων τὸ ἴδιον σῶ-
μα.

39 Οὐ πάντα σὰρξ ἡ αὐτὴ σὰρξ, ἀλλὰ ἄλλη μὲν
σὰρξ ἀνθρώπων, ἄλλη δὲ σὰρξ κτηνῶν, ἄλλη δὲ ἰχ-
θύων, ἄλλη δὲ πτερυγίων.

40 Καὶ σώματα ἐπουράνια, καὶ σώματα ἐπίγεια.
ἄλλ' ἑτέρα μὲν ἢ τῶν ἐπουρανίων δόξα, ἑτέρα δὲ ἢ
τῶν ἐπιγείων.

41 Ἀλλ' ἄλλη δόξα ἡλίου, καὶ ἄλλη δόξα σελήνης, καὶ
ἄλλη δόξα ἀστέρων. ἀστὴρ γὰρ ἀστὴρος λαφύρει ἐν
δόξῃ.

42 Οὕτως καὶ ἡ ἀνίστασιν τῶν νεκρῶν. ἀπείρεται ἐν
φθορᾷ, ἐγείρεται ἐν ἀφθαρσίᾳ.

43 Σπείρεται ἐν ἀτιμίᾳ, ἐγείρεται ἐν δό-
ξῃ. σπείρεται ἐν ἀσθενείᾳ, ἐγείρεται ἐν δυν-
αμεί.

44 Σπείρεται σῶμα ψυχικόν, ἐγείρεται σῶμα
πνευματικόν. ἐστὶ σῶμα ψυχικόν, καὶ ἐστὶ σῶμα πνευ-
ματικόν.

45 Οὕτω ἔ γέγραπται· Ἐγένετο ὁ πρῶτος ἄνθρωπος Ἀδάμ εἰς ψυχῇν ζῶσαν· ὁ ἔχωντος Ἀδάμ εἰς πνεῦμα ζωοποιῶν.

46 Ἀλλ' ὁ πρῶτον τὸ πνευματικόν, ἀλλὰ τὸ ψυχικόν, ἔπειτα τὸ πνευματικόν.

47 Ὁ πρῶτος ἄνθρωπος ὥς γῆς, χοϊκός· ὁ δῶτεν τοῦ ἄνθρωπος, ὁ εὖβιος ὥς ἥρανον.

48 Οἷος ὁ χοϊκός, τοιοῦτοι ἔσθ' χοϊκοί· ἔσθ' οἷος ὁ ἐπυράνιος, τοιοῦτοι ἔσθ' ἐπυράνιοι.

49 Καὶ καθὼς ἐφορέσαμεν τῷ εἰκόνα τοῦ χοϊκοῦ, φορέσομεν καὶ τῷ εἰκόνα τοῦ ἐπουρανίου.

50 Τοῦτο δὲ φημι, ἀδελφοί, ὅτι σὰρξ καὶ αἷμα βασιλείαν Θεοῦ κληρονομήσαι οὐ δυνατόν, οὐδὲ ἡ φθορά τῷ ἀφθαρσίᾳ κληρονομήσει.

51 Ἰδοὺ, μυστήριον ὑμῖν λέγω· Πάντες μὲν οὐ κοιμηθήσόμεθα, πάντες δὲ ἀλλαγησόμεθα.

52 Ἐν ᾧτόμῳ, ἐν ῥίπῃ ὀφθαλμοῦ, ἐν τῇ ἐπαύσει, σάλπιγγι, (σάλπιξι γάρ) καὶ οἱ νεκροὶ ἐγερθήσονται ἀφθαρτοί, καὶ ἡμεῖς ἀλλαγησόμεθα.

53 Δεῖ γάρ τὸ φθαρτὸν τοῦτο ἐνδύσασθαι ἀφθαρσίᾳ, καὶ τὸ θνητὸν τοῦτο ἐνδύσασθαι ἀθάνατον.

54 Ὅταν δὲ τὸ φθαρτὸν τοῦτο ἐνδύσῃται ἀφθαρσίᾳ, καὶ τὸ θνητὸν τοῦτο ἐνδύσῃται ἀθανασίᾳ, τότε γινήσεται ὁ λόγος ὁ γεγραμμένος· Κτεπόδη ὁ θάνατος εἰς νίκην.

55 Ποῦ σου, θάνατε, τὸ κέντρον; Ποῦ σου, ῥῆμα, τὸ νίκης;

56 Τὸ δὲ κέντρον τῇ θανάτῃ, ἡ ἁμαρτία· ἡ δὲ δύναμις τῇ ἁμαρτίας, ὁ νόμος.

57 Τῷ δὲ Θεῷ χάρις πᾶσι δίδόντι ἡμῖν τὸ νίκης διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

58 Ὡς τε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί, ἰδού οἱ γίνεσθαι, ἀμετακίνητοι, ῥητορεύοντες ἐν τῷ ῥήματι τοῦ Κυρίου πάντοτε, εἰδότες ὅτι ὁ κύριος ὡμῶν ἐκ ἑστῆς κείνης ἐν Κυρίῳ.

Κιφ. 15'. 16.

1 **Π**ερὶ δὲ τῆς λεγίης τῆς εἰς τὴς ἀγίης, ὅσπ
διέταξα ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Γαλατίας
ἔστω καὶ ὑμεῖς ποιήσατε.

2 Κατὰ μίαν σταθράτον ἑκάστος ὑμῶν παρ' ἐαυτοῦ
πιδέτω, θρασυεῖων δ', οἳ εἰς οὐδοῦνται· ἵνα μὴ ὅταν
ἔλθω, τότε λογισαί γέινωται.

3 Ὅταν ὅμως ᾤκησιν, ὥς εἰς δοκιμασίᾳ ἐν
ῥησολῶν, τῆς πέμψω ἀπενεγκῶν τῶν χάριν οὐμ
εἰς Ἱερουσαλὴμ.

4 Εἰς δὲ ἡ ἀξίον ᾤ καὶ πορεύεσθαι, σὺν ἐμοὶ
πορεύονται.

5 Εὐλόσομαι δὲ πρὸς ὑμᾶς ὅταν Μακεδονίαν διέλ
θω· (Μακεδονίαν γὰρ διέρχομαι.)

6 Πρὸς ὑμᾶς δὲ τυχὸν ᾤκημεν, ἢ καὶ
ᾤκησιν, ἵνα ὑμεῖς με προπέμψετε ὥς εἰς ἐν
πόρῳμαι.

7 Οὐ θέλω γὰρ ὑμᾶς ἄρτι ἐν παρόδῳ ἰδεῖν· ἐλπί
ζω δὲ χρόνον πρὸς ὑμᾶς, εἰς ὃν Κύν
ειος ὑπάρτη.

8 Ἐπιμῶν δὲ ἐν ἑφέσω ἕως τῆς πεντηκ
στής.

9 Θύρα γὰρ μοι ἀνέφυγε μεγάλη ἐν ἐνεργῆς, ἐν
πικνύου πολλοί.

10 Εἰς δὲ ἔλθω Τιμόθεος, βλέπετε ἵνα ἀφάβῃ
γένηται πρὸς ὑμᾶς· τὸ γὰρ ἔργον Κυρίου ἐργάζεται
ὡς ἐν ἐν.

11 Μὴ τις ὅμως αὐτὸν ᾤκησιν· προπέμψετε ἐν
αὐτὸν ἐν ἐν, ἵνα ἔλθω πρὸς με· ἐκδέχομαι γὰρ
αὐτὸν καὶ τῶν ἀδελφῶν.

12 Περὶ δὲ Ἀπολλῶ τοῦ ἀδελφεοῦ, πολλὰ πα
ρεκάλισα αὐτὸν, ἵνα ἔλθω πρὸς ὑμᾶς μετὰ τῶν ἀδελ
φῶν· καὶ πάντως ἔκ ἐν θέλημα ἵνα νῦν ἔλθω· ἐλεύσι
ται δὲ ὅταν εὐκαιρήσῃ.

13 Γρηγορεῖτε, στήκετε ἐν τῇ πίσει, ἀνδρίζεσθε,
κραταίρεσθε.

14 Πάντα ὑμῶν ἐν ἀγάπῃ γινέσθω.

15 Παρακαλῶ δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί· οἶδατε ᾤ ἀντί
Στεφᾶνον, ὅτι ἐστὶν ἀπαρχὴ τῆς Ἀχάϊας, ἐν εἰς διακ
νίαν τοῖς ἀγίοις ἐταξάμην αὐτοῦ.

16 ἵνα καὶ ὑμεῖς ἀποτάσσῃτε τοῖς τοιαῖτοις, καὶ
πάντῃ τῷ συνεργῶντι, καὶ κοπιῶντι.

17 Καίρω δὲ ἐν τῇ παροῇ Στεφᾶνον καὶ δού
κων καὶ Ἀχάϊαν, ὅτι τὸ ὑμῶν ὑστέρημα ὅτι αὐ
τὸν ἀλλήλων.

18 Ἀνέπαυσαν γὰρ τὸ ἐμὸν πνεῦμα ἐν τῷ ὑμῶν
ἐν.

ὑπαγινώσκετε ἕν τῆς τοιούτης.

19 Ἀσπάζονται ὑμεῖς αἱ ἐκκλησίαι τῆς Ἀσίας. Ἀσπάζονται ὑμεῖς ἐν Κυρίῳ πολλὰ Ἀκύλῃς καὶ Πρίσκιλλᾳ, σὺν τῇ κατ' οἶκον αὐτῶν ἐκκλησίᾳ.

20 Ἀσπάζονται ὑμεῖς οἱ ἀδελφοὶ πάντες. Ἀσπάζεσθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἀγίῳ.

21 Ὁ ἀσπασμὸς τῇ ἐμῇ χεεὶ Παύλου.

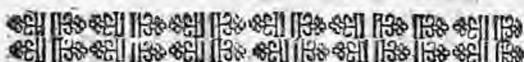
22 Εἴ τις ἢ φιλεῖ τὸν Κύριον Ἰησοῦν Χριστόν, ἢ τὸ ἀνάθεμα, μαρὰν αἰῶνά.

23 Ἡ χεὶς τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ μεθ' ὑμῶν.

24 Ἡ ἀγάπη μου μετὰ πάντων ὑμῶν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ. Ἀμήν.

Πρὸς Κορινθίους πρώτη ἐγράφη ἀπὸ Φιλίππου καὶ Στεφάνου ὁ ἑυρυπρόσθετος, καὶ Ἀχάικου καὶ Τιμοθέου.





ΠΑΥΛΟΥ

τῷ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΝΕ ΠΡΟΣ ΚΟΡΙΝΘΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

Κεφ. α'. ι.

1 ΠΑΥΛΟΣ ΑΠΟΣΤΟΛΟΣ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ, ΔΙΑ
ΘΕΛΗΜΑΤΟΣ ΘΕΟΥ, ΚΑΙ ΤΙΜΟΘΕΟΥ
ΑΔΕΛΦΟΥ, Τῇ ΕΚΚΛΗΣΙΑ ΤΟΥ ΘΕΟΥ Τῇ
ᾗ ΕΣΤΙΝ ΕΝ ΚΟΡΙΝΘΩ, ΣΥΝ ΤΟΙΣ ΑΓΙΟΙΣ ΠΑΣΙ ΤΟΙΣ ὄντιν ἐν
τῇ Α'ΧΑΪΑ.

2 ΧΑΡΙΣ ὑμῖν Ἑ ἀνάμνησιν ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς ἡμῶν, Ἑ
Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς Ἑ πατὴρ ὁ Κύριός ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστοῦ, ὁ πατὴρ τῶν οἰκτιρῶν, Ἑ Θεὸς πάσης πα-
ρακλήσεως.

4 Ὁ ὡς ἀκαλῶν ἡμᾶς ὅπῃ πάτη τῇ θλίψει ἡ-
μῶν, εἰς τὸ δύνανθαι ἡμᾶς παρακαλεῖν τοὺς ἐν πα-
σῇ θλίψει, διὰ τὴν παρακλήσεως ἧς παρακληθήμεθα
αὐτοὶ ἀπὸ ὁ Θεοῦ.

5 Ὅτι καθὼς ὡς ἐλογίσθη τὰ παθήματα τοῦ Χριστοῦ
εἰς ἡμᾶς, οὕτω διὰ Χριστοῦ ὡς ἐλογίσθη καὶ ἡ παρακλήσις
ἡμῶν.

6 Εἴτε δὲ θλιβόμεθα, ὑπὲρ τῆς ὑμῶν παρακλή-
σεως Ἑ σωτηρίας, τῆς ἐντεταγμένης ἐν ὑπομονῇ τῇ
τῶν παθημάτων ὅν Ἑ ἡμᾶς πάσχει· εἴτε παρακαλε-
μεθα, ὑπὲρ τὴν ὑμῶν παρακλήσεως Ἑ σωτηρίας, καὶ
ἐλπίς ἡμῶν βεβαία ὑπὲρ ὑμῶν.

7 Εἰδότες ὅτι ὡς ὅτι κοιτῶντο εἰς τῷ παθημάτων
ἡμῶν Ἑ τὴν παρακλήσεως.

8 Οὐ γὰρ θέλομεν ὑμᾶς ἀγνοεῖν, ἀδελφοί,
ὑπὲρ τῆς θλίψεως ἡμῶν τῆς ὑπομένης ἡμῶν
ἐν τῇ Α'σίᾳ, ὅτι καθὼς ὑπερβολῶς ἐβαρύνθημεν
ὑπὲρ δύναμιν, ὥστε ὡς ἀπορηθῆναι ἡμᾶς καὶ τοὺς
ἄλλους.

9 Αὐτὰ αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς τὸ ἀπόκρυμα ὁ Θεοῦ
καὶ

αὐτὴ ἐχρήκαμεν, ἵνα μὴ πεποιθότες ᾖμεν ἐφ' ἑαυτοῖς, ἀλλ' ὅτι τῷ Θεῷ τῷ ἐγκρίνοντι τὰς νεκρὰς.

10 Ὅς ὡς ἡλικίᾳ τῆς ἀφ' ἧς ἐρρύτατο ἡμεῖς, καὶ οὕτως εἰς ὃν ἡλικίαν, ὅτι ὁ ἐπ' ὕσταται.

11 Συνυπεργηγαντοὶ ἔσμην ὑπὲρ ἡμῶν τῇ δέήσει, ἵνα ὡς πολλῶν προσώπων τὸ εἰς ἡμῶν χάρισμα διὰ τῶν ὁυχομένων ὑπὲρ ἡμῶν.

12 Ἡ δὲ καὶ καύχησις ἡμῶν αὕτη ἐστὶ, τὸ μαρτυρεῖν τὴν συνέκδοσιν ἡμῶν, ὅτι ἐν ἀπλήτῃ ἔειλημεν χάριν Θεοῦ, καὶ ὡς σφίσι παρρησίᾳ, ἀλλ' ἐν χάριτι Θεοῦ ἀντιτάξασθαι ἐν τῷ κόσμῳ, ὡς ἀποστόλοις δὲ πρὸς ὑμᾶς.

13 Οὐ γὰρ ἄλλο εὐφραυνόμεθα, ἀλλ' ἡ ἡ ἀναγινώσκετε, ἡ ἔμπιπτεσθε. ἐλπίζω δὲ ὅτι ὁ εἰς τὴν ἡμετέραν καὶ σφίσι.

14 Καθὼς δὲ ἐπέγνωτε ἡμεῖς ἀπὸ μέρους, ὅτι καὶ καύχημα ἡμῶν ἐσμεν, καθάπερ ἔσμην ἡμῶν, ἐν τῇ ἡμετέρῃ τῇ Κυρίᾳ Ἰησοῦ.

15 Καὶ ταύτη τῇ πεποιθήσει ἐκλήμην πρὸς ὑμᾶς ἐλθὼν πρῶτον, ἵνα δώτεράν ὑμῖν χάριν ἔχητε.

16 Καὶ δι' ὑμῶν διελθεῖν εἰς Μακεδονίαν, ἔπειτα πάλιν εἰς Μακεδονίαν ἐλθὼν πρὸς ὑμᾶς, ἔπειτα ὑμῶν προτιμωθῆναι εἰς τὴν Ἰνδοίαν.

17 Τὸ ἐν βουλόμην, μή τι ἄρα τῇ ἐλαφείᾳ ἐχρησάμην; ἡ ὁ βουλόμην, κατὰ σάρκα βουλόμην; ἵνα ἡ περ ἐμοὶ τὸ καὶ ναὶ, ἔπειτα τὸ ἡ ἡ.

18 Πιστὸς ὁ Θεός, ὅτι ὁ λόγος ἡμῶν ὁ πρὸς ὑμᾶς ἐκ ἐγίνετο καὶ ἡ ἡ.

19 Ὁ γὰρ Θεὸς Ἰησοῦς Χριστός ὁ ἐν ὑμῖν δι' ἡμῶν κερυχθεὶς, δι' ἐμῶν ἔειπεν ἔπειτα τῇ Τιμοθέῃ, καὶ ἐγένετο καὶ ἔπειτα, ἀλλὰ καὶ ἐν αὐτῷ γέγονεν.

20 (Ὅσα γὰρ ἐπαγγελίαι Θεοῦ, ἐν αὐτῷ τὸ καὶ, ἔπειτα ἐν αὐτῷ τὸ ἀμὲν) τῷ Θεῷ πρὸς δίκην δι' ἡμῶν.

21 Ὁ δὲ βεβαιὸν ἡμῶν σὺν ὑμῖν εἰς Χριστόν, ἔπειτα ἡμῶν, Θεός.

22 Ὁ δὲ σφραγισάμενος ἡμᾶς, ἔπειτα ὁ ἀρ' ἡμῶν τῇ Πνεύματος ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν.

23 Ἐγὼ δὲ μάρτυρα Θεῶν ὑποκαλῶμαι ὅτι τῷ ὑμῶν ψυχῷ, ὑπὸ φειδόμενος ὑμῶν, ἡκέτι ἡλθον εἰς Κερυνθόν.

24 Οὐχ ὅτι κυριεύομεν ὑμῶν τῆς πίστεως, ἀλλὰ συνεργοὶ ἐσμεν τῆς χάριτος ὑμῶν. τῇ γὰρ πίστις ἐσῆκατε.

Κεφ. γ'. 3.

2 **Α**Ψχόμεθα πάλιν ἑαυτὺς συνιστάνην· Εἰ μὴ
 ψεύθεμεν, ὡς τινες, συσταπκὸν ὑπιστολῶν
 πρὸς ὑμᾶς, ἢ ἢ ὑμῶν συσταπκὸν;

3 **Η** ὑπιστολὴ ἡμῶν ὑμῖς ἐστὶ, ἐγγεγραμμένη ἐν
 ταῖς καρδίαις ἡμῶν, γινωσκομένη ὡς ἀναγινωσκομένη
 ὑπὸ πάντων ἀνθρώπων.

4 **Θ**ἀμερήμενοι ὅτι ἐς τὴν ὑπιστολὴν Χριστοῦ ἀφαιροῦμεν
 οὐδὲν ὑμῶν, ἐγγεγραμμένη ἢ μέλανι, ἀλλὰ Πνεύ-
 ματι Θεοῦ ζῶντος, οὐκ ἐν πλαξὶ λιθίνῃ, ἀλλὰ ἐν πλα-
 ξὶ καρδίας σαρκίνας.

5 **Π**εποίθησις δὲ τοιαύτην ἔχομεν **Δ**εῖ **τ** Χριστοῦ
 πρὸς τὸν Θεόν.

6 **Ο**ὐκ ὅτι ἱκανοὶ ἐσμεν ὡς ἑαυτῶν λογισά-
 σθαι τι, ὡς ἢ ἑαυτῶν, ἀλλ' ὅτι ἱκανότης ἡμῶν ἐκ
 τοῦ Θεοῦ.

7 **Ο**ς ὡς ἱκανώτερον ἡμᾶς διακόντες καὶ ἡς διαθήκης,
 ἢ γράμματος, ἀλλὰ πνεύματος· τὸ γὰρ γράμμα ἀπο-
 κτείνει, τὸ δὲ πνεῦμα ζωοποιεῖ.

8 **Εἰ** δὲ ἡ ἀφαιροῖς **τ** θανάτου ἐν γράμματι,
 ὡς τετυπωμένη ἐν λίθοις, ἐλύθη ἐν δόξῃ, ὥστε μὴ
 εἶναι ἀτενίσαι τοὺς γίους Ἰσραὴλ εἰς τὸ πρί-
 στωτον Μωσέως, **Δ**εῖ **τ** τὴν δόξαν **τ** προσώπου αὐτοῦ,
 τῷ καταργημένη.

9 **Π**οῦς ὡς ἡμῶν ἢ ἀφαιροῖς **τ** πνεύματος ἐστὶ
 ἐν δόξῃ.

10 **Εἰ** γὰρ ἡ ἀφαιροῖς τῆς κατακρίσεως, δόξα,
 πολλὰ ἡμῶν ὡς ἐκείνου ἢ ἀφαιροῖς **τ** δικαιοσύνης
 ἐν δόξῃ.

11 **Καὶ** γὰρ οὐδὲ διδοῖται τὸ δεδοσμένον,
 ἐν τούτῳ τῷ μέτῃ, ἕνεκεν τῆς υπερβαλλούσης
 δόξης.

12 **Εἰ** γὰρ τὸ καταργούμενον διὰ δόξης, πολλὰ ἡμῶν
 τὸ μένον, ἐν δόξῃ.

13 **Ε**χόντες ὡν τοιούτων ἐλπίδα, πολλῇ παρρησίᾳ
 ψάμεθα.

14 **Καὶ** ὡς καθάπερ Μωσὴς ἐτίθει κάλυμμα ὑπὲρ
 τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, πρὸς τὸ μὴ ἀτενίσαι τὴν δόξαν
 Ἰσραὴλ εἰς τὸ τέλος τῆς καταργημένης.

15 **Α**λλ' ἐπαρώθη τὰ νοήματα αὐτοῦ· ἔχει γὰρ τῆς
 σήμερον τὸ αὐτὸ κάλυμμα ὑπὲρ τῆς ἀναγνώσεως τῆς πα-
 λαίας ἀφαιροῖς μένει, μὴ ἀνακαλυπτόμενον, ὅ, π
 ἐκ Χριστοῦ καταργεῖται.

16 **Α**λλ' ὡς σήμερον, ὡς ἀναγνώσκε-
 ται Μωσέως, κάλυμμα ὑπὲρ τῆς καρδίας αὐτοῦ
 κεῖται.

16 Ἡμεῖς δ' ἂν ὑπερέψῃ πρὸς Κύριον, ὡς ἀκριβέστερον τὸ κἀλημμεν.

17 Ὁ δὲ Κύριος τὸ Πνεῦμά ἐστιν· ὃ δὲ τὸ Πνεῦμα Κυρίου, ὅκμ' ἐλάβομεν.

18 Ἡμεῖς δὲ πάντες ἀνακαλυμμένοι προσώπου τῷ δοξᾷ Κυρίου κατωπτριζόμενοι τῷ ὡπλίῳ εἰκόνι μεταρροφίμεθα ἀπὸ δόξης εἰς δόξαν, καθάπερ ἀπὸ Κυρίου Πλάμματος.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Δ**ὶα τῶτο ἔχοντες τῷ διακονίᾳ ταύτῃ, κατὰ τὸν ὅτι ἡλεήθημεν, ἢ ὁκακῶμεν.

2 Ἀλλ' ἀπειπάμεθα τὰ κρυπτὰ τῆς αἰσχύνης, μὴ ὡς ταπεινότεροι ἐν πάροργίᾳ, μηδὲ δοκῶντες τὸ λαλῶν τοῦ Θεοῦ, ἀλλὰ τῇ φανερωθῇ τῆς ἀληθείας συνισδόντες ἐνώπιον πρὸς πάντων συνείδησιν ἀνθρώπων καὶ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

3 Εἰ δὲ ἐστὶ κεκαλυμμένον τὸ ἀναγγέλιον ἡμῶν, ἐν τοῖς ἀπολλυμένοις ἐστὶ κεκαλυμμένον.

4 Ἐν οἷς ὁ Θεὸς καὶ ἀδελφοὶ τῆς ἐτύφλωσε τὰ νεκρά τῷ αἵματι, εἰς τὸ μὴ αἰγιάσαι αὐτοῖς τὸν φωτισμὸν τοῦ ἀναγγελίῳ τοῦ δόξης τοῦ Χριστοῦ, ὅς ἐστιν εἰκὼν τοῦ Θεοῦ.

5 Οὐ γὰρ ἐνώπιον κηρύσσομεν, ἀλλὰ Χριστὸν Ἰησοῦν Κύριον· ἐκείνης δὲ, ἔθηκε ἡμῶν διὰ Ἰησοῦν.

6 Ὅτι ὁ Θεὸς ἐκείνους ἐκ σκοτίας φωτὶ λάμψαι, ὅς ἔλαμπεν ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν, πρὸς φωτισμὸν τῆς γνώσεως τῆς δόξης τοῦ Θεοῦ ἐν προσώπῳ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

7 Ἐχόμεν δὲ τὸν θαυμαστὸν τῆτον ἐν ὁρακίῳ σκοδίσιν, ἵνα ἡ ὑπερβολὴ τοῦ δυναμείῳ τοῦ Θεοῦ, ὅς μὴ ἔσται ἡμῶν.

8 Ἐν πάπῃ θλιβόμενοι, ἀλλ' ὃς σενοχωρήμενοι· ἀπερήμενοι, ἀλλ' ὃς ἔξαπορήμενοι.

9 Διανόμενοι, ἀλλ' ὃς ἐγκαταλειπόμενοι· καταλειπόμενοι, ἀλλ' ὃς ἀπολλύμενοι.

10 Πρώτῃ τῷ τέκρῳσι καὶ Κυρίῳ Ἰησοῦ ἐν τῇ σωτηρίᾳ παρὰφέροντες, ἵνα καὶ ἡ ζωὴ τοῦ Ἰησοῦ ἐν τῇ σώματι ἡμῶν φανερωθῇ.

11 Αἱ δὲ ἡμεῖς οἱ ζῶντες, εἰς θάνατον παραδιδόμεθα διὰ Ἰησοῦν, ἵνα ὁ Θεὸς ἡ ζωὴ τοῦ Ἰησοῦ φανερωθῇ ἐν τῇ θνητῇ σαρκὶ ἡμῶν.

12 Ὅτι ὁ μὲν θάνατος ἐν ἡμῖν ἐνεργεῖται, ὃ δὲ ζωὴ ἐν ἡμῖν.

13 Ἐχοντες δὲ τὸ αὐτὸ Πνεῦμα καὶ πίστεως, καὶ τὸ γέγραμμενον. Ἐπίτρυπα, διὸ ἐλάλητα· καὶ ἡμεῖς πιστεύομεν, διὸ ἐλάληται.

14 Εἰ-

14 Εἰδότες ὅτι ὁ ἐνέργειαν τὸ Κύριον Ἰησοῦν καὶ ἡμεῖς διὰ Ἰησοῦ ἐνέργειαν καὶ παραστήτη συν-
υμῖν.

15 Τὰ γὰρ πάντα δι' ὑμῶν, ἵνα ἡ χάρις πλεονάσῃ, διὰ τοῦ πληρόντων τῶν ἀχαριστῶν παρελθούσῃ εἰς τὴν δόξαν τοῦ Θεοῦ.

16 Διὸ οὐκ ὀκνηκώμεν, ἀλλ' ἐκ τῶν ἔξω ἡμῶν ἀνθρώπων ἀφαιρέται, ἀλλ' ὁ ἐσωθεν ἀνακαινύεται ἡμεῖς ὡς ἡμέρα.

17 Τὸ γὰρ προσωπικὸν ἐλαφρὸν τῶν θαλίφρων ἡμῶν, καὶ ὑπερβολὴν εἰς ὑπερβολὴν, αἰώνιον βάρος δόξης κατεργάζεται ἡμῖν.

18 Μὴ σκοπῆτε τῶν ἡμῶν τὰ βλεπόμενα, ἀλλὰ τὰ μὴ βλεπόμενα· τὰ γὰρ βλεπόμενα, πρόσκαιρα· τὰ δὲ μὴ βλεπόμενα, αἰώνια.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Ο**ἶδαμεν γὰρ, ὅτι, ἐὰν ἡ ἐπίγειος ἡμῶν οἰκία τῶν σκηνῶν καταλυθῇ, οἰκοδομηθῇ ὅτι Θεὸς ἔχομεν, οἰκίδω ἀχειροποίητον αἰώνιον ὃν τοῖς ἄνθρωποις.

2 Καὶ γὰρ ὅτι τὴν σανατόμεν, τὸ οἰκητήριον ἡμῶν τὸ ὅτι ἡμῶν ἐπεδύσασθαι ὑποπαθόντες.

3 Εἰ γὰρ ὡς ἀνδύσασμενοι, ὡς γυνεὶ ἀνδρὶ ἀνδρὶ.

4 Καὶ γὰρ οἱ ὄντες ὃν τῶν σκηνῶν σανατόμεν βαρύνονται· ἐφ' ὃ ὡς θέλομεν ἐκδύσασθαι, ἀλλ' ἐπενδύσασθαι, ἵνα καταποθῇ τὸ θνητὸν ὑπὸ τῆς ζωῆς.

5 Ὁ δὲ κατεργασμένος ἡμᾶς εἰς αὐτὸ τῆς τοῦ Θεοῦ· ὁ ὡς ἡμῖν τὸν ἀρραβῶνα τῶν Προ-
μυσιῶν.

6 Θαρρύντες ὡς πάντοτε, ὡς εἰδότες ὅτι ἐνδυνάμυν-
ται ἐν τῷ σώματι, ἐνδυνάμυνται ἀπὸ τοῦ Κυρίου.

7 (Διὰ πίστεως γὰρ περιπατοῦμεν, οὐ διὰ ὁ-
ρᾶς.)

8 Θαρρύνμεν δὲ, καὶ εὐδοκῶμεν μᾶλλον ἐκδη-
μῆσαι ἐκ τοῦ σώματος, καὶ ἐκδημῆσαι πρὸς τὸν Κύ-
ριον.

9 Διὸ ὡς φιλοτιμώμεθα, ἢ ἐνδυνάμυντες, ἢ ἐκ-
δυνάμυντες, ὡς αὐτοὶ αὐτῶν ἔσονται.

10 Τὸ γὰρ πάντα ἡμᾶς φαντασθῶμεν δὲ ἐμπρο-
σθεν τοῦ βήματος τοῦ Χριστοῦ, ἵνα κομίσῃται ἕκαστος τὸ διὰ τοῦ σώματος, πρὸς ὃ ἐπράξεν, ἢ ἀγαθόν, ἢ κακόν.

11 Εἰδότες ὡς τὸν φόβον τοῦ Κυρίου, ἀνθρώπου πεί-
θωμεν, Θεῷ δὲ πεφανερῶμεθα· ἐλπίζω δὲ ὡς ἐν ταῖς
συναθήσεσιν ὑμῶν πεφανερῶσθαι.

12 Οὐ γὰρ πάλιν ἐαυτὴς συνιστάμεν ὑμῖν, ἀλλὰ ὑποφωτισθὲν διδόντες ὑμῖν καυχήματος ὑπὲρ ἡμῶν· ἵνα ἔχῃτε πρὸς τοὺς ἐν προσώπῳ καυχώμενους, καὶ οὐ καρδίᾳ.

13 Εἴτε γὰρ ᾔδεσκαμεν, Θεοῦ· εἴτε σφραγίσαι, ὑμῖν.

14 Ἡ γὰρ ἀγάπη τοῦ Χριστοῦ συνέχει ἡμᾶς·

15 Κρείσσοντος τούτου, ὅτι εἰ μὴς ὑπὲρ πάντων ἀπέθανεν, ἅρα οἱ πάντες ἀπέθανον· Ἐπὶ πάντων ἀπέθανεν, ἵνα οἱ ζῶντες μηκέτι ἐαυτοὺς ζώσιν, ἀλλὰ τῷ ὑπὲρ πάντων ἀποθνήσκοντι Ἐγερθέντι.

16 Ὡς ἡμῖς ἀπὸ τοῦ νῦν ἐδέξαμεν οἰδομεν κατὰ σέβαν· ἡ δὲ ἐξ ἐγκωκαμεν καὶ σάρκα Χριστοῦ, ἀλλὰ νῦν οὐκ ἐστὶ γινώσκμεν.

17 Ὡς εἰ τις ἐν Χριστῷ, καλὴ κτίσις· τὰ ἀρχαῖα παρῆλθεν, ἰδοὺ γέγονε καλὴ τὰ πάντα.

18 Τὰ δὲ πάντα ἐν τοῦ Θεοῦ καταλλάξεως ἡμῶν· ἐαυτοῦ διὰ τῆς Χριστοῦ, Ἐδόκτος ἡμῖν τὴν διακονίαν τοῦ καταλλαγῆς.

19 Ὡς ὅτι Θεὸς ἦν ἐν Χριστῷ κόσμον καταλλάσσειν ἑαυτοῦ, μὴ λογιζόμενος αὐτοῖς τὰ ὀφειλόμενα αὐτῶν, καὶ θέμενος ἐν ἡμῖν τὸ λόγον τῆς καταλλαγῆς.

20 Ὡς ἐν Χριστῷ ἦν προσβόουμεν, ὡς τοῦ Θεοῦ πατρὸς καλῶντος δι' ἡμῶν, δειμάδα ὑπὲρ Χριστοῦ, καταλλάττεται τῷ Θεῷ.

21 Τὴν γὰρ μὴ γιόντα ἁμαρτίᾳ, ὑπὲρ ἡμῶν ἁμαρτίαν ἐποίησεν, ἵνα ἡμῖς γινώμιθα δικαιοσύνην Θεοῦ ἐν αὐτῷ.

Κεφ. ε'. β.

Συνεργούντες δὲ καὶ ὀφειλοῦμεν μὴ ὥς εἰς κενὸν τὴν χάριν τοῦ Θεοῦ δεξασθαι ὁρῶντες.

1 Λέγει γὰρ· Καὶρὸς δεκτῷ ἐπήκουσά σου, Ἐν ἡμέρᾳ σωτηρίας ἐβοήθησά σοι· ἰδοὺ νῦν καιρὸς δεπρόδεκτος, ἰδοὺ νῦν ἡμέρα σωτηρίας.

2 Μηδεμίαν ἐν μηδενὶ διδόντες προσκοπῶν, ἵνα μὴ μαινεθῇ ἡ διακονία.

3 Ἀλλ' ἐν πᾶσι συνιστάντες ἑαυτοὺς ὡς Θεοῦ διάκονοι, ὡς ὑπομονῇ πολλῇ, ἐν θλίψεσιν, ἐν ἀνάγκαις, ἐν στενοχωρίαις.

4 Ἐν πληγαῖς, ἐν φυλακαῖς, ἐν ἀκαταστασίαις, ἐν ἐξέποις, ἐν ἀγρυπνίαις, ἐν νηστείαις.

5 Ἐν ἀγνοήτῃ, ἐν γνώσει, ἐν μακροθυμίᾳ, ἐν χρηστότητι, ἐν Πνεύματι Ἀγίῳ, ἐν ἀγάπῃ ἀνυποκρίτως.

7 Ἐν λόγῳ ἀληθείας, ἐν δυνάμει Θεοῦ, διὰ τῆς ὁ-
πλῆς τῆς δικαιοσύνης τῆς δεξιᾶς ἡ ἀρετῆς.

8 Διὰ δόξης ἡ ἀτιμίας, διὰ δυσφημίας ἡ ὀφη-
μίας ὡς πλάσι, ἡ ἀληθείας.

9 Ὡς ἀγνοούμενοι, ἡ ὑπεργινώσκόμενοι ὡς ἀπο-
θνήσκοντες, ἡ ἰδὲ ζῶμεν ὡς παιδευόμενοι, ἡ μὴ
θλῆναι.

10 Ὡς λυπώμενοι, αἱ δὲ χαίροντες ὡς πτωχοί,
πολλὰς δὲ πλητίζοντες ὡς μηδὲν ἔχοντες, ἡ πάντα
κατέχοντες.

11 Τὸ εὖ ἡμῶν ἀνέφυγε πρὸς ὑμᾶς, Κορίνθιοι,
ἡ καρδία ἡμῶν πεπλάτυνται.

12 Οὐ στενοχωρήσθε ἐν ἡμῖν· στενοχωρήσθε ὅτι ἐν τοῖς
σπλάγχνοις ἡμῶν.

13 Τῷ δὲ αὐτῷ ἀντιμισθίᾳ ὡς τέκνοις λέγω·
Πλατύνθητε ἡμεῖς.

14 Μὴ γίνεσθε ἐτεροζυγῆτες ἀπίστοις. Τίς γὰρ με-
τοχὴ δικαιοσύνης ἡ ἀνομία; Τίς δὲ κοινωνία φωτὸς
πρὸς σκότος;

15 Τίς δὲ συμφώνησις Χριστοῦ πρὸς Βελίαρ; ἢ τίς
μερίς πιστῶ μετ' ἀπίστου;

16 Τίς δὲ συγκατάθεσις γὰρ Θεοῦ μετ' εἰδω-
λῶν; ὑμεῖς γὰρ γὰρ γὰρ Θεοῦ ἐσε ζῶντος, καθὼς
ἦν ὁ Θεός. Ὅτι ἐνοικήσω ἐν αὐτοῖς, καὶ
ἐμπεριπατήσω· ἡ ἔσομαι αὐτῷ Θεός, ἡ αὐτοὶ ἔσονται
ταῖς μοι λαός.

17 Διὸ ἐξέλθετε ἐκ μέτη αὐτῶν, ἡ ἀφορίσθητε,
λέγει Κύριος. ἡ ἀκαθάρτη μὴ ἀπτεσθε· καὶ γὰρ εἰς-
δέξομαι ὑμᾶς.

18 Καὶ ἔσομαι ὑμῖν εἰς πατέρα, καὶ ὑμεῖς ἔ-
σισθε μοι εἰς υἱὸς καὶ θυγατέρας, λέγει Κύριος
τῶν τεκνῶν.

Κιφ. ζ' 7.

1 **Τ**Αῦται οὖν ἔχοντες τὰς ἐπαγγελίας, ἀ-
γαπήτε, καθυρίσασιν ἑαυτοὺς ἀπὸ παν-
τὸς μόλυσμα σαρκὸς ἡ πλούματος, ὑπεταλόντες ἀγίω-
σύνῃ ἐν φόβῳ Θεοῦ.

2 Χαρήσατε ἡμῖν ἡδὲνα ἡδικήσαμεν, ἡδὲνα ἐφεί-
νημιν, οὐδὲνα ἐπλειονεκτήσαμεν.

3 Οὐ πρὸς κατάκριτον λέγω· προέφηκε γὰρ
ὅτι ἐν ταῖς καρδίαις ἡμῶν ἔσε εἰς τὸ συναπο-
θῆναι ἡ συζῆναι.

4 Πολλὰ μοι παρρησία πρὸς ὑμᾶς, πολλὰ
μοι κνώστις ὑπὲρ ὑμῶν· πεπλήρωμαι τῇ ἐλπί-
σει, ὑπερπεριοσθόμεναι τῇ χαρᾷ ὑπὲρ πάντων τῶν
θλίψεων ἡμῶν.

5 Καὶ γὰρ ἐλθοῦτων ἡμῶν εἰς Μακεδονίαν, ἡμεῖς ἔχομεν ἀνέσις ἢ σαρξ ἡμῶν, ἀλλ' ἐν πατρὶ θαμβούμενοι· ἔξωθεν μὴ καὶ, ἐσωθεν φόβοι.

6 Ἀλλ' ὁ παρακαλῶν τῆς ταπηνότης, παρεκάλισεν ἡμᾶς ὁ Θεός, ἐν τῇ παρησίᾳ Τίτου.

7 Οὐ μόνον δὲ ἐν παρησίᾳ αὐτῷ, ἀλλὰ καὶ ἐν τῇ παρακλήσει ἢ παρεκλήθῃ ἐφ' ὑμῖν, ἀναγγελλών ἡμῖν τὴν ὑμῶν ἐπιπεθεσίαν, τὸν ὑμῶν ὀδυρμόν, τὸν ὑμῶν ζῆλον ὑπὲρ ἡμῶν· ὥστε μετὰ πολλὸν χαρῆται.

8 Ὅτι εἰ καὶ ἐλύτῃσθε ὑμᾶς ἐν τῇ ὑπεροχῇ, οὐ μεταμελομαι, εἰ καὶ μετεμελήσω· βλέπω γὰρ ὅτι ἡ ὑπεροχὴ σκάνει, καὶ ἔτι πρὸς ὄρθον, ἐλύτῃσεν ὑμᾶς.

9 Νῦν χαίρω, ὅτι ἐλύτῃσθε, ἀλλ' ὅτι ἐλυπῆσθε εἰς μετανοίαν· ἐλυπῆσθε γὰρ κατὰ Θεόν, ἵνα οὐ μηδεὶς ζημιωθῇτε ἐξ ἡμῶν.

10 Ἡ γὰρ κατὰ Θεὸν λύπη μετάνοια εἰς σωτηρίαν ἀμεταμέλητον κατεργάζεται· ἡ δὲ τῷ κόσμῳ λύπη θανάτον κατεργάζεται.

11 Ἰδοὺ γὰρ αὐτὸ τοῦτο τὸ κατὰ Θεὸν λυπεσθῆναι ὑμᾶς, πόσῳ κατεργάσασθαι ὑμῖν σπουδαίον· ἀλλὰ ἀπολογίαν, ἀλλὰ ἀγανάκτησιν, ἀλλὰ φόβον, ἀλλὰ ὑποπόδην, ἀλλὰ ζῆλον, ἀλλὰ ἐλπίδα· ἐν παντί συνεστήσατε ἑαυτοὺς ἀγνούς εἶναι ἐν τῷ πρῶγυμνῳ.

12 Ἄρα καὶ ἔργασα ὑμῖν, ὅτι ἔνεκεν τῷ ἀδικήσας, καὶ ἔνεκεν τῷ ἀδικηθέντος· ἀλλ' ἔνεκεν τῇ φανερωθῆναι τὴν σπουδὴν ἡμῶν τὴν ὑπὲρ ὑμῶν πρὸς ὑμᾶς, ἐν ὁποίῳ τῷ Θεῷ.

13 Διὰ τὸ τοῦτο παρεκλήμεθα ἐπὶ τῇ παρακλήσει ὑμῶν περισσotέρας δὲ πολλὸν ἐχάρημεν ἐπὶ τῇ χαρᾷ Τίτου, ὅτι ἀναπέταυται τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἀπὸ πάντων ὑμῶν.

14 Ὅτι εἴ τι αὐτῷ ὑπὲρ ὑμῶν κεκμήχηται, ἢ κατηχῇσθαι· ἀλλ' ὥς πάντα ἐν ἀληθείᾳ ἐκαλήσμεν ὑμῖν, οὕτω ἔτι καὶ καύχησις ἡμῶν ἢ ἐπὶ Τίτῳ, ἀλλήθως ἐγενήθη.

15 Καὶ τὰ σπλάγχνα αὐτοῦ περισσotέρας εἰς ὑμᾶς εἰσιν, ἀναμιμνησκόμεν τὴν πάντων ὑμῶν ὑπακοήν· ὥς μετὰ φόβου ἔτι τρόμῳ ἐδέξασθε αὐτόν.

16 Χαίρω οὖν ὅτι ἐκ πατρὸς θαρρῶ ἐν ὑμῖν.

Κεφ. γ. 8.

1 **Γ**Νορίζετε ὅτι ὑμῖν, ἀδελφοί, ἢ χάριν ἔχει ὁ θεὸς ἡ δεδομένη ἐν ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Μακεδονίας.

2 Ὅτι ἐν πολλῇ δοκιμῇ θλίψεως ἢ πτωχείᾳ ἢ γένῳ αὐτῶν, καὶ ἢ κατὰ βάθος πτωχείᾳ αὐτῶν ἐπερίσσωστον εἰς τὴν πληθυντὴν ἀπολόγησιν αὐτῶν.

3 Ὅτι κατὰ δύναμιν (μαρτυρῶ) καὶ ὑπερδύναμιν κωδαιρετοί.

4 Μετὰ πολλῆς πειραστικῆς δοκιμῆς ἡμεῖς, τῶν χάριν καὶ τὴν κοινωνίαν τὴν διακονίας, ἢ εἰς τὰς ἀγίας, ἐξουσίας ἡμῶν.

5 Καὶ ἡ καθὼς ἡλικισμὸς, ἀλλ' ἐκ τῆς ἐδωκῆς πρώτου τῷ Κυρίῳ καὶ ἡμῖν, διακονίας Θεῷ.

6 Εἰς τὸ πειραστικῆς ἡμῶν Τίτον, ἵνα καθὼς προεβόητο, ἔτω καὶ ὑπετελέσῃ εἰς ὑμᾶς καὶ τὴν χάριν ταύτην.

7 Ἀλλ' ὥστε ἐν παντί πειρασθῆτε τίς ἐστι, καὶ λόγος, καὶ γνώσις, καὶ πίστις ἀποδοῇ, καὶ τῇ ἡμεῶν ἐν ἡμῖν ἀγάπῃ, ἵνα καὶ ἐν ταύτῃ τῇ χάριτι πειρασθῆτε.

8 Οὐ κατὰ ὑπεταγὴν λέγω, ἀλλὰ διακονίας τῆς ἐτέρου ἀποδοῇ, καὶ τὸ τῆς ὑμετέρας ἀγάπης γνώσις δοκιμάζον.

9 Γινώσκετε ὅτι ἡ χάρις τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ, ὅτι δι' ὑμᾶς ἐπώχουσε, πλουσιώων ἵνα ὑμᾶς τῇ ἐκείνῃ πτωχείᾳ πληκτῆσθαι.

10 Καὶ γνωρίζετε ἐν ταύτῃ δίδωμι· ταῦτα ὅτι ὑμῖν συμφέρει, οἷον πᾶς ἢ μόνον τὸ παίσσειν, ἀλλὰ καὶ τὸ θέλῃ προεβόησθε ἀπὸ πένης.

11 Νυνὶ ὅτι καὶ τὸ παίσσειν ὑπετελέσχετε ὅπως καὶ ὑπερῷ ἢ προθυμίᾳ ἢ θέλῃ, ἔτω καὶ τὸ ὑπετελέσαι καὶ ἔχει.

12 Εἰ ὅτι ἡ προθυμία πρόκειται, καθὼς ἐὰν ἔχη τις, ἀποδόσδεας, ἢ καθὼς ἔχει.

13 Οὐ ὅτι ἵνα ἄλλοις ἀνεῖς· ὑμῖν δὲ θλίψις· ἀλλ' ἵνα ἰσότης, ἐν τῷ νῦν καιρῷ τὸ ὑμῶν πειραστικῆς εἰς τὸ ἐκείνων ὑσέρημα.

14 ἵνα καὶ τὸ ἐκείνων πειραστικῆς γένηται εἰς τὸ ὑμῶν ὑσέρημα, ὅπως γένηται ἰσότης.

15 Καθὼς γένηται· ὅτι τὸ πολὺ, ἢ ἐπλεονέχει· καὶ ὅτι τὸ ολίγον, ἢ ἐλαττωμένον.

16 Χάρις ὅτι τῷ Θεῷ πᾶσι δίδοντι ἢ αὐτὸ ἀποδοῦναι ὑμῶν ἐν τῇ καρδίᾳ Τίτῳ.

17 Ὅτι τῷ μὲν παράκλησιν ἐδίδετο· ἀποδοῦναι τῷ δὲ ὑπαρχῶν, κωδαιρετος θεήλῃ πρὸς ὑμᾶς.

18 Συνεπέμφαμεν δὲ μετ' αὐτῶν τὸν ἀδελφὸν, ὃς ἔπαιτος ἐν τῇ εὐαγγελίῳ διὰ πάντων τῶν ἐκκλησιῶν.

19 (Οὐ μόνον δὲ, ἀλλὰ ἔχειροτονηθεὶς ὑπὸ τῶν ἐκκλησιῶν συνέκδημος ἡμεῶν, σὺν τῇ χάριτι ταύτῃ τῇ διδοκνυμένῃ ὑφ' ἡμεῶν πρὸς τὸ αὐτὸ ἔστι Κυρίῳ δοῦλον ἔργοις προθυμίᾳ ὑμῶν.)

20 Στελλόμενοι ταῦτα, μὴ τις ὑμᾶς κομίσῃται ἐν τῇ ἀδρότητι ταύτῃ τῇ διδοκνυμένῃ ὑφ' ἡμεῶν.

21 Προνομήσοι καλὰ ὁ μόνον ἐνώπιον Κυρίου, ἀλλὰ ἔνώπιον ἀνθρώπων.

22 Συνεπέμφαμεν δὲ αὐτοῖς τὸν ἀδελφὸν ἡμεῶν, ὃς ἐδοκιμάσαμεν ἐν πολλοῖς πολλὰκις σπουδαῖον ὄντα ἄνθρωπον· πολὺ σπουδαιότερον, πεποιθότες πολλῇ τῇ ἐν ὑμᾶς.

23 Εἴτε ὑπὲρ Τίτη, κοινωνὸς ἐμὸς ἔστι εἰς ὑμᾶς συνεργός· ἢ τε ἀδελφοὶ ἡμεῶν, ἀπόστολοι ἐκκλησιῶν, δοῦλοι Χριστοῦ.

24 Τῷ ὅν ἐνδοξέιν τὴν ἀγάπην ὑμῶν, καὶ ἡμεῶν καυχέσθω ὑπὲρ ὑμῶν, εἰς οὗτους ἐνδείξασθε, ἔστι πρόσωπον τῶν ἐκκλησιῶν.

Κεφ. 9. 9.

1 Περὶ μὲν γὰρ τῆς διδοκνύμενης τῆς ἐν τῷ ἁγίῳ πνεύματι μοι ἐστὶ τὸ χάρισμα ὑμῶν.

2 Οἶδα γὰρ τὸν προθυμὸν ὑμῶν, ὡς ὑπὲρ ὑμῶν καυχώμενος Μακεδόσιν, ὅτι Ἀρχαῖα παρεσκόναται ὑποπέρουσι· ἔστι δὲ ὁ Ἰησοῦς ἡμεῶν ζῆλος ἡρέδισε τὰς πληυρίας.

3 Ἐπεμψα δὲ τῆς ἀδελφῆς, ἵνα μὴ τὸ καύχημα ἡμεῶν τὸ ὑπὲρ ὑμῶν κενωθῇ ἐν τῷ μέρει τούτῳ· ἵνα (καθὼς ἔλεγον) παρεσκόνασθαι ἔτε.

4 Μήπως ἐλθὼν ἔλθωσι σὺν ἐμοὶ Μακεδόνες, ἔστι δὲ ὁ πνεῦμα ὑμῶν ἀπαρσκόναται, καταλυθῶμεν, ἡμεῖς (ἵνα μὴ λέγωμεν ὑμῶν) ἐν τῇ ὑποστάσει ταύτῃ τῆς καυχήσεως.

5 Ἀναγκαῖον ὡν ἡγησάμεθα φθασκῆσαι τὰς αἰτίας φῆς, ἵνα πρέσθωσι εἰς ὑμᾶς, καὶ προκαταρτίσωσι τὸν προκαταγγελλένον λόγον ὑμῶν, ταῦτα ἔστι μὲν αἶτις ὅπως ὡς λόγον, ἔστι μὴ ὡς πλεονεξία.

6 Ταῦτα δὲ, ἐστὶν ἀπείρη φειδομένης, φειδομένης καὶ διερίσει· ἔστι δὲ ἀπείρη ἐπ' ἀλογίας, ἐπ' ἀλογίας ἔστι διερίσει.

7 Ἐκα-

7 Ἐκείνος καθὼς προαιρεῖται τῇ καρδίᾳ· μὴ ὅτι αὐτοῦ, ἢ ὅτι ἀνάγκη· ἰλαρόν γὰρ δόξαν ἀγαπᾷ ὁ Θεός.

8 Δυνατός δὲ ὁ Θεὸς πᾶσιν χάρις ποιῶν ὑμᾶς εἰς ἅμας· ἵνα ὅτι πάντῃ πάντοτε πᾶσιν αὐτοῖς χάρις ἔχουσιν, ὡς ἐκείνους εἰς πᾶν ἔργον ἀγαθόν.

9 (Καθὼς γέγραπται· Ἐσκόρπισεν, ἔδωκε τῷ πνεύματι· ἡ δικαιοσύνη αὐτῇ μένει εἰς τὸν αἰῶνα.)

10 Ὁ δὲ ὑποχωροῦν σπέρμα τῷ σπείροντι, ὁ ἄρτι εἰς βρώσιν χορηγήσει, ὁ πληθύνει τὸν σπείρον ὑμῶν, καὶ αὐξήσει τὰ φωνήματα τῆς δικαιοσύνης ὑμῶν.)

11 Ἐν παντὶ πλητίζομενοι εἰς τὰς χάρις ἀπλότηται, ἥτις κατεργάζεται δι' ἡμῶν δόχαις ἡμῶν τῷ Θεῷ.

12 Ὅτι ἡ ἀσκησις τῆς λειτουργίας ταύτης ἡ μόνον εἰς προσημαπληρῆσαι τὰ ὑπερήματα τῷ ἀγέῳ, ἀλλὰ καὶ ὡς ἐκείνους ἀσκήσας ἀπὸ πλῶν δόχαις ἡμῶν τῷ Θεῷ.

13 (Διὰ τὴν δοκιμὴν τῆς ἀσκήσεως ταύτης δοξάζονται τῷ Θεῷ ὑπὸ τῇ ὑποταγῇ τῆς ἐμολογίας ὑμῶν εἰς τὸ εὐαγγέλιον τῆς Χριστοῦ, καὶ ἀπλότηται τὴν κοινωνίαν εἰς αὐτὸν ὡς εἰς πᾶντα.)

14 Καὶ αὐτῷ διήσκη ὑπὲρ ὑμῶν, ὑποταγάντων ὑμῶν ἀπὸ τῆς ὑπερβαλλούσης χάρις τῷ Θεῷ ἐφ' ὑμῶν.

15 Χάρις ὅτι τῷ Θεῷ ὑπὸ τῇ ἀνιδικαγῆτι αὐτῇ ὑμῶν.

Κεφ. ι. 10.

1 Ἀλλ' ἵνα ἵνα ἐγὼ Παῦλος σπουδαῖον ὑμᾶς ἀπὸ τῆς πραότητος ὁ ὑποταγῆς τῆς Χριστοῦ, ὅς ἐστιν ὑμῶν μὲν ταπεινὸς ὡς ὑμῖν, ἀπὸν δὲ θαρρῶν ὡς ὑμῶν.

2 Δέξαι ὅτι μὴ παρὼν θαρρῶσαι τῇ πεποιθῆσαι ἐλπίσειν πληρῆσαι ἐπὶ τινος τῶν λογισμῶν ὑμῶν ὡς καὶ σῶμα ὑποταγῆς.

3 Ἐν σαρκὶ γὰρ ὡς ἐκείνους, ὡς καὶ σῶμα ὑποταγῆς.

4 (Τὰ γὰρ ὅπλα τῆς σαρκαῖας ὑμῶν ὡς σαρκικά, ἀλλὰ δυνατὰ τῷ Θεῷ πρὸς καθαίρεσιν ὀχυρωμάτων.)

5 Λογισμῶν καθαλοῦντες, καὶ πᾶν ὕψος ὑπερβαλλόντων κατὰ τῆς γνώσεως τοῦ Θεοῦ, καὶ αἰχμαλωτίζοντες πᾶν νόμον ὡς πᾶν ὑποταγῆς τοῦ Χριστοῦ.

6 Καὶ

6 Καὶ ἐν ἐπαύματι ἔχοντες ἀνδίκησαι πάντας παρα-
ποῶν, ὅταν πληρωθῇ ἡμῶν ἡ ὑπακοή.

7 Τὰ κατὰ πρόσωπον βλέπετε; Εἴ τις πέποιθεν εἶναι
τὴν Χριστὸν ἴναί, τῆτο λογιζέσθω πάλιν ἀφ' ἐαυ-
τοῦ, ὅτι καθὼς αὐτὸς Χριστὸς, ἔτω καὶ ἡμεῖς
Χριστὸν.

8 Ἐὰν τε γὰρ ἔσθε κατὰ τὸν πόντον καυχώμενοι περὶ
τῆς ὑμετέρας ἡμῶν, ἥς ἐδόκεν ὁ Κύριος ἡμῖν εἰς οἰκο-
δομίαν, ἔσθε καὶ ἐκ αἰσχυρίσεων ὑμῶν, ἢ καὶ αἰσχυρίσθη-
σθαι.

9 Ἰνα μὴ δοξῶ ὡς ἂν ἀφοβεῖν ὑμῶς διὰ τῆς ὑπε-
ροχῆς.

10 Ὅτι αἱ μὲν ὑπεροχαί, φρεσὶ, βαρεῖαι καὶ ἰσχυ-
ραί· ἡ δὲ παρεστὶς τῷ σώματι ἀσθενής, καὶ ὁ λόγος
ἐξηθεννημένος.

11 Τῆτο λογιζέσθω ὁ τοιοῦτος, ὅτι αἱ οἱ εἰσὶν πρὸς
λόγῳ δι' ὑπεροχῶν ἀπόντες, τοιοῦτοι καὶ παρόντες πρὸς
ἔργῳ.

12 Οὐ γὰρ τολμῶμεν ἐγκρατεῖν ἢ συγκρατεῖν ἑαυτὸς
πρὸς τῷ ἑαυτοῦ συνιστάμενος· ἀλλὰ αὐτοὶ ἐν ἑαυ-
τοῖς ἑαυτὸς μετρήντες, καὶ συγκρίνοντες ἑαυτὸς ἑαυ-
τοῖς καὶ συνίστην.

13 Ἡμεῖς δὲ ὡς καὶ εἰς τὰ ἀμετρεῖα καυχώμεσθαι, ἀλ-
λά κατὰ τὸ μέτρον τῷ κλήρῳ ἢ ἐμέρας ἡμῖν ὁ Θεὸς
κέκτην, ἐφικέμεθα ἄχρι ἔσθαι ὑμῶν.

14 Οὐ γὰρ ὡς μὴ ἐφικνύμενοι εἰς ὑμῶς, ὑπερεκτά-
νομεν ἑαυτοῦς· ἀλλὰ γὰρ καὶ ὑμῶν ἐφθάταμεν ἐν τῇ
ἀνυπακοῇ τῷ Χριστῷ.

15 Οὐκ εἰς τὰ ἀμετρεῖα καυχώμενοι ἐν ἀλλοτριότητι
κατοῖς, ἐλπίζοντες ἔχοντες, αἰσχυρομένης τῆς πίστεως ὑ-
μῶν, ἐν ὑμῖν μεγαλυνθῆναι κατὰ τὸ κλῆρον ὑμῶν ἢ
πρὸς τὸν Θεόν.

16 Εἰς τὰ ὑπερέκτα ὑμῶν ἀνυπακοῇσασθαι·
εἴη ἐν ἀλλοτρῴῳ κλήρῳ εἰς τὰ ἔτοιμα καυχώ-
σασθαι.

17 Ὁ δὲ καυχώμενος, ἐν Κυρίῳ καυχώ-
σθω.

18 Οὐ γὰρ ὁ ἑαυτὸν συνιστῶν, ὁποιῶς ἐστὶ δοκίμος·
ἀλλ' ὅν ἐκ Κυρίου συνίστηται.

Κεφ. ι α. ιι.

- 1 **Ο** "θέλον ἀνέχεσθαι μὴ μικρὸν τι τ' ἀφορμῆς· ἀλλὰ καὶ ἀνέχεσθαι με.
- 2 Ζηλώ γὰρ ὑμᾶς Θεὸς ζηλώ· ἡμεσάμην γὰρ ὑμᾶς ἐνὶ ἀνδρείᾳ παρθένον ἀγνῶ παραστήσαι τῷ Χριστῷ.
- 3 φοβῆμαι ὅ μήπως ὥς ὁ ὄφις Εὐάμ ὀφθαλμὸν ἐν τῇ παρυργίᾳ οὐτοῦ, οὕτως φθαρῇ τὰ νοήματα ὑμῶν ἀπὸ τῆς ἀπλότητος τῆς ἐν τῷ Δεῖσιν.
- 4 Εἰ μὲν γὰρ ὁ ἐρχόμενος ἄλλον Ἰησοῦν κηρύσσει ὃν ἡμεὶ κηρύσσομεν, ἢ Πνεῦμα ἕτερον λαμβάνετε ὃ ἡμεῖς ἐλάβετε, ἢ εὐαγγέλιον ἕτερον ὃ ἡμεῖς ἐδέξασθε, καλῶς ὠνέχεσθε.
- 5 Δοχιζομαι γὰρ μηδὲν ὑπερηκέναι τῷ ὑπὲρ πάντων ἀποστόλων.
- 6 Εἰ δὲ καὶ ἰδιώτης τῷ λόγῳ, ἀλλ' ἢ τῇ γνώσει· ἀλλ' ἐν παντί φανερωθέντες ἐν πάνσιν εἰς ὑμᾶς.
- 7 Ἡ ἀμαρτίαν ἐποίησα ἑμυῦν ταπεινῶν, ἵνα ὑμεῖς ὑψωθῆτε· ὅτι δωρεὰν τὸ τῷ Θεῷ εὐαγγέλιον ἐκκηρύξαμεν ὑμῖν.
- 8 Ἄλλας ὀκνησάμενοι ἐπύλησα, λαβοὶν ὀφείοντες, καὶ τῷ ὑμῶν διακονῆσαι· καὶ παρὼν πρὸς ὑμᾶς ὡς ὑπερβείας, καὶ ταπεινῶν καὶ ἡδυνός.
- 9 Τὸ γὰρ ὑπέρηκα μὴ προσάρεπλῆσαι οἱ ἀδελφοὶ ἰδόντες ἀπὸ Μακεδονίας· καὶ ἐν παντί ἀβαρὴ ὑμῖν ἑμυῦν ἐτήρησα, ὥς τηρῆσαι.
- 10 Ἐστὶν ἀλήθεια Χρυσῇ ἐν ἐμοί, ὅτι ἡ καύχησις οὐτὴ ἢ φραγῆσεται εἰς ἐμὲ ἐν ταῖς κλίμασι τῆς Ἀχαΐας.
- 11 Διὰ τί· ὅτι ἢ ἀγαπῶ ὑμᾶς· Ὁ Θεὸς οἶδεν.
- 12 Ὁ δὲ ποιῶ, ὡς ποιῶ, ἵνα ὀκνῶ τῷ ἀφορμῇ τῷ θελούντων ἀφορμῇ, ἵνα ἐν ᾧ κυχῶνται, ἀρεθῶσι καὶ ὡς ὡς ἡμεῖς.
- 13 Οἱ γὰρ τοιοῦτοι ψευδᾶπόσοι, ἐργάται δόλιοι, μεταχηματιζόμενοι εἰς ἀποστόλους Χρυσῇ.
- 14 Καὶ ἡ θαυμαστόν· αὐτοὶ γὰρ ὁ Σατὰν μεταχηματίζεται εἰς ἀγγέλον φωτός.
- 15 Οὐ μέγα ἦν ἢ ὡς οἱ διάκονοι αὐτοῦ μεταχηματίζονται ὡς διάκονοι δικαιοσύνης· ὡς τὸ τέλος ἔσται ὡς τὰ ἔργα αὐτῶν.
- 16 Πάλιν λέγω, μή τίς με δόξη ἀφρονα εἶναι· ὅτι μή γε, καὶ ὡς ἀφρονα δέξασθε με, ἵνα μικρὸν τι καυχῶμαι.

17 Οὐ λαλῶ, οὐ λαλῶ κατὰ Κυρίον, ἀλλ' ὡς ἐν ἀφροσύνῃ, ἐν ταύτῃ τῇ ἀποστολῇ τῇ κωχάσει.

18 Ἐπεὶ πολλοὶ κωχῶνται κατὰ τὴν σάρκα, καὶ ἐγὼ κωχῶμαι.

19 Ἡδέως γὰρ ἀνέχεσθε τῷ ἀφρόνῳ, φρόνιμοι ὄντες.

20 Ἀνέχεσθε γὰρ. ἢ τις ὑμῶς καταδικάζει, ἢ τις κατεσθίει, ἢ τις λαμβάνει, ἢ τις ἐπαίρεται, ἢ τις ὑμᾶς εἰς πρόσωπον δέρει.

21 Κατὰ ἀτιμίαν λέγω, ὡς ἔτι ὑμῶς ἡσθενησάμεν. ἐν ᾧ δ' αὖτις τοιμαῦ, (ἐν ἀφροσύνῃ λέγω) τοιμαῦ καὶ ἐγὼ.

22 Ἐβραῖοι εἰσι; καὶ ἐγὼ. Ἰσραηλιταὶ εἰσι; καὶ ἐγὼ. σπέρμα Ἀβραάμ εἰσι; καὶ ἐγὼ.

23 Διακονοὶ Χριστοῦ εἰσι; (ὡς ἀφροσύνη λαλῶ.) ὑπὲρ ἐγὼ. ἐν κόποις πλεονοτέρας, ἐν πληγαῖς ὑπερβαλλόντας, ἐν φυλακαῖς πλεονοτέρας, ἐν θανάτοις πολλάκις.

24 Ὑπὸ Ἰουδαίων πεντάκις τεταράκοντα ὥς μὲν ἔλαβον.

25 Τρεῖς ἔρ' ἐκβρίσθην, ἅπασι ἐλιδάσθην, τρεῖς ἐνωάγησα, νυχθήμερον ἐν τῷ βυθῷ ποιοῦνκα.

26 Οὐδαιοποιῖαι πολλάκις, κινδύνοις ποταμῶν, κινδύνοις ληστῶν, κινδύνοις ἐκ γένους, κινδύνοις ἔξ ἑθνῶν, κινδύνοις ἐκ πόλεως, κινδύνοις ἐκ ἐρημίας, κινδύνοις ἐκ θαλάσσης, κινδύνοις ἐκ ψεύδαδελφῶν.

27 Ἐν κόπῳ καὶ μόχθῳ, ἐν ἀνευθυνταῖς πολλάκις, ἐν λιμῇ καὶ δίψει, ἐν νηστεῖαις πολλάκις, ἐν ψυχῇ καὶ γυμνότητι.

28 Χωρὶς τῷ παρεκτός, ἢ ὑποσύμφορος μοι ἢ κατ' ἐμέω, ἢ μέριμνα πατῶν τῷ ἐκκλησιῶν.

29 Τίς ἀδυνατεῖ, καὶ ἐκ ἀδυνατῶ; Τίς σκαμνολίγεται, καὶ ἐκ ἐγὼ πυρῶμαι;

30 Εἰ κωχᾶσθαι δεῖ, τὰ τ' ἀσθενέως με κωχῶμαι.

31 Οὐ Θεὸς ἐκ Πατρὸς καὶ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ εἶδεν, ὁ ὢν ἀλογητὸς εἰς τὴν αἰῶνα, ὅτι ἐκ ψάωμαι.

32 Ἐν Δαμασκῷ δ' ἐθνάρχης Ἀρέτα καὶ βασιλεὺς ἐφρούρει τὴν Δαμασκηνῶν πόλιν, πιάσαι με θέλον.

33 Καὶ διὰ τοῦ θυεῖδος ἐν σαργάνῃ ἐκαλύφθην διὰ τοῦ τείχεως, καὶ ἔξέφυγον αἱ χεῖρας αὐτοῦ.

$K_{12} = 18.12$

Κ Αὐχῶν δὲ ἡ συμφέρει μοι : ἐλπίτομαι
 ὅτι ἐν ὀπτασίᾳ ᾧ ἀποκαλύψῃς Κυρίῳ.

2 Οὐδὲ ἀνέστητον ἐν Χριστῷ πρὸ ἐγὼ θεοποιηθή-
σαν (ἢ ἢ ἐν σῶματι, ἢ οὐκ ἔστιν ἢ ἐν σῶματι ἢ σῶμα-
τος, ἢ οὐδὲν ἢ θεὸς οὐδὲν) ἀπαυγίζοντα τὸ πνεῦμα
ὡς τριτὴν πράξιν.

3 Καὶ οἶδα τὸν ποιῆσαν ἀνθρώπου, (εἴτε ἐν σά-
ματι, εἴτε ἐκ τῆς σαρκὸς, ἢ οἶδα ὁ Θεὸς οἶ-
δεν.)

4. Ὅτι ἡρπάγη εἰς τὴν παραδοίαν, καὶ ἔκτισεν αὐτῇ ῥήματα, ἃ ἡμεῖς ἐν ἀνθρώπῳ λαλήσαμεν.

5 ὅτι περ τοῦτο καυχώσθαι· ὅτι ὁ ἐμὸν καὶ
καυχώσθαι, εἰ μὴ ἐν ταῖς ἀσθενείαις μὴ.

6 Εἰ δὲ γὰρ φιλήται κοινῆς σαυτοῦ, ὡς ἔφομαι ἄφρων·
ἀλήθειαν γὰρ ἐρῶ, φηδόμεν δ', μὴ τις εἰς ἐμὲ λογι-
σται ὑπὲρ ὃ βλέπει με, ἢ ἀκρεβέτις ἐμῇ.

7 Καὶ τῇ ὑπερβολῇ τῆς ἀποκαλύψεως ἵνα μὴ ὑπερφρονῶμαι, ἐδόξα μοι σκόλοψ τῇ σαρκί, ἄγγελος Σατάν, ἵνα με καλεφίξῃ, ἵνα μὴ ὑπερφρονῶμαι.

8 ὁ πῖρ τῆς τελευτῆς τοῦ Κυρίου παρακαλεῖται, ἵνα ἀποστῇ ἀπ' ἐμῶν.

9 Καὶ εἰρήνη μοι. Ἀρκεῖ σοι ἡ χάρις μου. ἡ δὲ δύναμις μου ἐν ἀσθενείᾳ τελεῖται. Ἡ δὲ ἰσχύς μου πολλὸν κραυχῶσά με ἐν ταῖς ἀσθενείαις μου, ἵνα ὑπακούωσιν αἱ ἐν ἐμοὶ ἡ δύναμις τοῦ Χριστοῦ.

το διὸ ἀδελφεῖ ἐν ἀσθενείᾳ, ἐν ὕβρει, ἐν
πλάνῃ, ἐν διαγμοῖς, ἐν τρυφεραῖς ὑπὲρ Χριστοῦ.
ὅταν γὰρ ἀσθενῶ, τότε δυνατός εἰμι.

11 Γεγραθα ὁφροῖν καυχοίμην· ὑμεῖς με λυγροπέπ-
τε· ἐγὼ δὲ ἀφελαν ὑφ' ὑμῶν συνίσταμαι· ἡ δὲ
δὲ ὑστέρησε τῇ ὑπὲρ λείμῃ ἀποσθάν, εἰ καὶ εὐδεν
ἡμῖν.

12. Τὰ μὲν σημεῖα ᾗ ἀποδείξαι κατεργάσθαι ἐν ἡμῖν ἐν πάσῃ ὑπομονῇ, ἐν σημείοις δὲ τέλει δὲ δυναμίσει.

13. Τί γάρ ἐσιν ὃ ἡττήθητε ὑπὲρ ταῖς λοιπαῖς ἐκ-
κλησίας, εἰ μὴ ὅτι αὐτὸς ἐγὼ ἠ' κατενάρκησω ὑμῶν,
χαρίσματός ἐστι καὶ ὁ ἰσχυρὸς πάντων.

14 188, τρίτον ἐπέμνω ἔχω ἰλθαῖν πρὸς ὑμῶν
ἐκ καταμαρτυρίας ὑμῶν· ἢ ὅτι ζήτω τὰ ὑμῶν, ἀλλ
ἢ ὅτι ἐφείλαται τὰ τέκνα τῆς γονιμῆς θεσμοῦ
ζῆν, ἀλλ' οἱ γενοὶ τῶν τέκνων.

17 Εὐὼ ὅτι ἔδωκεν ὑμῶν τὰς ψυχὰς ὑμῶν ἵνα ὑμεῖς ἀγαπᾶτε τὸν υἱὸν τοῦ Θεοῦ ὃν ἔπεμψε ὁ Πατήρ ἵνα ὁ κόσμος σωθῇ δι' αὐτοῦ. ὁ ὢν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ ὁ ὢν ὁ ἀγαπῶν τὸν κόσμον ὃν ἔπεμψε ὁ Πατήρ ἵνα ὁ κόσμος σωθῇ δι' αὐτοῦ. ὁ ὢν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ ὁ ὢν ὁ ἀγαπῶν τὸν κόσμον ὃν ἔπεμψε ὁ Πατήρ ἵνα ὁ κόσμος σωθῇ δι' αὐτοῦ.

16 Ἐγὼ δὲ, ἐγὼ ἡ κατεβάρισα ὑμᾶς· ἀλλ' ὅταν-
των πλυνθῶς, δόλω ὑμᾶς ἐλάβον.

17 Μὴ πρὸς ὧν ἀπέσταλκα πρὸς ὑμᾶς, δι' αὐτῶν ἰ-
πλεονέκτησα ὑμᾶς;

18 Παρακάλισα Τίτον, ἵνα συγκέσμαια τῶν ἀδελ-
φῶν· μὴ τι ἐπλεονέκτησεν ὑμᾶς Τίτος; οὐ τὸ
αὐτῷ πλούμην παροπατήσαμεν; ἢ τοῖς αὐτοῖς ἰχ-
τεσι;

19 Πάλιν δοκεῖτε ὅτι ὑμῖν ἀπολογούμεθα; κατενί-
πιον τῷ Θεῷ, ἐν Χριστῷ λαλῶμεν· τὰ δὲ πάντα, ἀ-
γαπήτοι, ὑπὲρ τῶν ὑμῶν οἰκουμενῶς.

20 Φεβήμαι γὰρ, μήπως ἐλθὼν ἢ οἷος θέλω δοῦν
ὑμᾶς, καὶ εὐρεθῶ ὑμῖν οἷον ἢ θελετε· μὴ ποιε-
ρῆς, ζῆλοι, θυμοί, ἐριθῆαι, καταλαλιά, ψιθυ-
ρισμοί, φθοῖσθαι, ἀκαταστασία·

21 Μὴ πάλιν ἐλθόντα με ταπεινώσῃ ὁ Θεός μου
πρὸς ὑμᾶς, ἵνα πενθήσω πολλὰς τῶν προσηματηκότων,
ἵνα μὴ μετακησάμετον ὑπὲρ τῆς ἀκαταστασίας, ἵνα ποιεῖται
ἡ ἀσπιγία ἢ ἔπραξαι.

Κεφ. 13. 13.

1 ΤΡΙΤΟΝ ΤΑΥΤΟ ἔρχομαι πρὸς ὑμᾶς. ὑπὲρ ἐξ-
ματος δύο μαρτύρων ἡ τριῶν σαθήσεται
πρὸς ῥῆμα.

2 Προκρίθην ἡ προέβην, ὡς παρὼν τὸ δεύτερον,
ἵνα ἀπὸν ὑμῶν γράψω τοῖς προσηματηκόσι καὶ τοῖς λοι-
ποῖς πᾶσιν, ὅτι ἐὰν ἐλθῶ εἰς τὸ πάλιν, ἢ φείσο-
μαι.

3 Ἐπεὶ δοκιμῶ ζητεῖτε τῷ ἐν ἐμοὶ λαλῶντος Χρι-
στῷ, ὅς εἰς ὑμᾶς ἢ ἀσθενῶ, ἀλλὰ δυνατὴ ἐστὶ ὑ-
μῶν.

4 Καὶ γὰρ εἰ ἰσαυρώθην ἢ ἀσθενείας, ἀλλὰ ζῆ ὅτι
δυναμῶς Θεῷ· ἡ δὲ ἡμῶς ἀσθενῶμεν ἐν αὐτῷ,
ἀλλὰ ζησομεθα σὺν αὐτῷ ὅτι δυναμῶς Θεοῦ εἰς ἡ-
μᾶς.

5 Ἐαυτοὺς πειράζετε· εἰ ἐστὶ ἐν τῇ πίστει, ἑα-
τοὺς δοκιμάζετε, ἢ οὐκ ὑπογινώσκετε ἑαυτοὺς, ἵ-
να ἰησοὺς Χριστὸς ἐν ὑμῖν ἐστίν; εἰ μήτι ἀδόκιμοι
ἐστέ.

6 Ἐλπίζω δὲ ὅτι γνώσεσθε, ὅτι ἡμῶς οὐκ ἐσμέν
ἀδόκιμοι.

7 Εὐχομαι δὲ πρὸς τὸν Θεόν μὴ ποιῆσαι ὑμᾶς
κακὸν μηδέν· οὐχ' ἵνα ἡμῶς δοκιμοὶ φανώμεν, ἀλλ'
ἵνα ὑμεῖς τὸ καλὸν ποιῆτε, ἡμῶς δὲ ὡς ἀδόκιμοι
ᾄμεν.

8 Οὐ γὰρ δυναμέμεθα τι κατὰ τὴν ἀληθείαν, ἀλλ' ὑπὲρ
τῆς ἀληθείας.

9 Χαί-

9 Χαίρομεν γὰρ ὅτι ὑμεῖς ἀσθενῶμεν, ὑμεῖς ὅ-
δυνάτοί ἤτε. τοῦτο δὲ εὐχόμεθα, τὴν ὑμῶν κα-
τάρτισιν.

10 Διὰ τοῦτο ταῦτα ἀπὸν γράφω, ἵνα παρὼν μὴ
ἀποτόμως χρήσῃμαι, καὶ τὴν ἐξουσίαν, ἣν ἔδω-
κε μοι ὁ Κύριος εἰς οἰκοδομὴν, καὶ οὐκ εἰς κηδαί-
ρισιν.

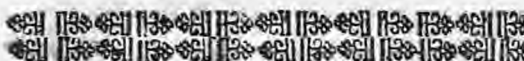
11 Λοιπὸν, ἀδελφοί, χαίρετε, καταρτίζεσθε,
παρακαλεῖσθε, τὸ αὐτὸ φροεῖτε, εἰρνεύετε·
καὶ ὁ Θεὸς τῆς ἀγάπης καὶ εἰρήνης ἔσται καθ' ὑ-
μῶν.

12 Ἀσπάζεσθε ἀλλήλους ἐν ἀγίῳ φιλήματι· ἀσπά-
ζονται ὑμᾶς οἱ ἅγιοι πάντες.

13 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ ἡ ἀγάπη
τοῦ Θεοῦ, καὶ ἡ κοινωνία τοῦ ἁγίου Πνεύματος μετὰ πάν-
των ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Κορινθίους δεύτερα ἐγράφη ἀπὸ Φιλίππων καὶ
Μακεδονίας, διὰ Τίτου ἐς Ἀγκῶν.





ΠΑΥΛΟΥ

ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΗΣ ΠΡΟΣ ΓΑΛΑΤΑΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

Κεφ. α. ι.

1 ΠΑΥΛΟΣ ΑΠΟΣΤΟΛΟΣ (ἢ κ' ἀπ' ἀνθρώπων , ἢ δι' ἀνθρώπου , ἀλλὰ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ , καὶ Θεοῦ Πατρὸς , τοῦ ἐγείραντος αὐτὸν ἐκ νεκρῶν ,)

2 Καὶ οἱ σὺν ἐμοὶ πάντες ἀδελφοί , ταῖς ἐκκλησίαις τῆς Γαλατίας .

3 Χάρις ὑμῖν ἔκ μέρους ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἔκ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ ,

4 Τῷ δόντος ἐαυτὸν ὑπὲρ ἡμῶν ἁμαρτιῶν , ὅπως ᾧ ἑλένηται ἡμᾶς ἐκ τῆς ἐνεσώτητος αἰῶνος πονηρῆς , καὶ τῆς θανάτου . Θεοῦ ἔκ Πατρὸς ἡμῶν .

5 Ὡς ἡ δόξα εἰς τὴν αἰῶνα τῷ αἰῶνι . ἀμήν .

6 Θαυμάζω ὅτι ἔτι ταχέως μετατίθεσθε ἀπὸ τῆς ἐκκλησίας ὑμῶν ἐν χάριτι Χριστοῦ , εἰς ἕτερον εὐαγγέλιον .

7 Ὅτι ἢ ἔστιν ἄλλο . εἰ μὴ τινὲς εἰσι οἱ ταρασσόντες ὑμᾶς , καὶ θέλοντες μεταστρέψαι τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Χριστοῦ .

8 Ἀλλὰ ἔκ ἐμὲ ἡμεῖς ὁ ἄγγελος οὗτος ἡρᾶν εὐαγγελίζεσθαι ὑμῖν παρ' ὁ εὐαγγελιστάμεθα ὑμῖν , ἀναδέμα εἶναι .

9 Ὡς προειρήκαμεν , ἔκ ἄρτι πάλιν λέγω , εἰ πῶς ὑμᾶς εὐαγγελίζεται παρ' ὁ παρελάβετε , ἀναδέμα εἶναι .

10 Ἄρτι γὰρ ἀνθρώπου πείθω ἢ τὸ Θεόν ; ἢ ζητῶ ἀνθρώποις ἀρέσκην ; εἰ γὰρ ἐπ' ἀνθρώποις ἡρεσκον , Χριστὸς δούλος ἢκ ἀπὸ ἡμῶν .

11 Τηροῖζω ὅτι ὑμῖν , ἀδελφοί , τὸ εὐαγγέλιον τὸ εὐαγγελισθῆναι ὑπὸ ἐμῶν , ὅτι ἢ ἔστι καὶ ἀνθρώπου .

12 Οὐδὲ γὰρ ἐγὼ ὡς ἀνθρώπου παρέλαβον αὐτόν, ὅτι ἐδιδάχθην· ἀλλὰ διὰ ἀποκαλύψεως Ἰησοῦ Χριστοῦ.

13 Ἡκούσατε γὰρ τὴν ἐμὴν ἀγαπῶν ποτε ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, ὅτι καὶ ὑπερβολῶς ἐδίωκον τὴν ἐκκλησίαν· καὶ ἐπόρθον αὐτήν.

14 Καὶ πρόεκοπτον ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ὑπὲρ πολλὰς ὑψηλότητας ἐν τῇ γενεῇ μου, πλεονοτέρως ζηλωτῆς ὑπάρχον τῷ πατριᾷ μου παραδόσεως.

15 Ὅτε ὅμως ἠδούκηται ὁ Θεὸς ὁ ἀφορίσας με ὡς αἰσχροῦς μητρός μου, καὶ καλέσας διὰ τῆς χάριτος αὐτοῦ.

16 Ἀποκαλύψαι μοι τίθον αὐτὸ ἐν ἐμοί, ἵνα ἀναγγελλομαι αὐτὸ ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὡς ὅπως ἐπροσέλαβέ με σαρκὶ καὶ αἵματι.

17 Οὐδὲ ἀπῆλθον εἰς Ἱερουσόλυσιν πρὸς τὴν πρὸ ἐμοῦ ἀποστόλην· ἀλλὰ ἀπῆλθον εἰς Ἀραβίαν, καὶ πάλιν ὑπέστρεψα εἰς Δαμασκόν.

18 Ἐπειτα μὲν ἔτη τρεῖς ἀπῆλθον εἰς Ἱερουσόλυσιν ἵστασθαι Πέτρον· καὶ ἐπέμεινα πρὸς αὐτὸν ἡμέρας δεκάτεντες.

19 Ἐτέρον δὲ τῷ ἀποστόλῃ καὶ αἶδον καὶ μὴ ἱάκωβον καὶ ἀδελφὸν τὸν Κυρίον.

20 Ἀλλὰ ὅμως ἡμέρῃ ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, ὅτι ἐβούλομαι.

21 Ἐπειτα ἦλθον εἰς τὰ κλίμματα τῆς Συρίας καὶ τῆς Κιλικίας.

22 Ἡμεῖς δὲ ἀγαπήμεθα τῷ προσώτῳ ταῖς ἐκκλησίαις Ἰουδαίας ταῖς ἐν Χερσὺ.

23 Μόνον δὲ ἀκρόντες ἦσαν· ὅτι ὁ διώκων ἡμᾶς ποτε, τὸν ἀναγγελλέται τῷ πρίν ὡς ποτε ἐπόρθη.

24 Καὶ ἐδόξαζον ἐν ἐμοί τὸ Θεόν.

Κεφ. β'. 2.

1 Ἐπειτα διὰ δεκατεσσάρων ἐτῶν πάλιν ἀνέβην εἰς Ἱερουσόλυσιν μετὰ Βαρνάβαν, συμπαραβὰς καὶ Τίτον.

2 Ἀνέβην δὲ καὶ ἀποκάληψιν· καὶ ἀνεδίεμν αὐτοῖς τὸ ἀναγγέλιον ὅτι κηρύσσεται ἐν τοῖς ἔθνεσιν· κατὰ τὸν ἵδον δὲ τοῖς δοκῶσι, μήπως εἰς κενὸν τρέχω, ἢ ἰσχυρόν.

3 Ἀλλὰ ὡς Τίτος ὁ σὺν ἐμοί, ἕτερος ὢν, ἀναγγελλέται μετὰ ἐμῶν.

4 Διὰ δὲ τῆς παρεστάτης ψευδαδέλφους, οἵτινες ἀπῆλθον κατασκοπεῖν τὸν ἐλθόντα ἡμᾶς εἰς Ἰερουσόλυσιν ἐν Χερσὺ Ἰησοῦ, ἵνα ἡμᾶς καταδικάσονται.

5 Οἷς καὶ πρὸς ὅλην ἔβλεπεν τὴν ἑσπορίαν, ἵνα ἡ ἀληθεία τοῦ εὐαγγελίου ἀφανεύηται πρὸς πάντας.

6 Ἀλλὰ ἐν τῇ δοκίμῃ αὐταῖς, ὅσοι ποτε ἤσκησαν, καὶ ἐν μοι διέφερον· πρόσωτον Θεὸς ἀνθρώπων ἐλαμβάνει· ἐμοὶ γὰρ οἱ δοκῦντες, καὶ ἐν προσλήσει.

7 Ἀλλὰ τὴν αὐτίαν, ἰδόντες ὅτι πεπίστευμαι τοῦ εὐαγγελίου τῇ ἀκροβυστίαι, καθὼς Πέτρος τῆς πειρασμῆς.

8 (Ὁ γὰρ συνέχευσε Πέτρου εἰς ἀποσταλῶν τῇ περιουσίᾳ, συνέχευσε ἔμοι εἰς τὰ ἔθνη.)

9 Καὶ γένετες τῇ χάριτι τῇ δοθείσῃ μοι Ἰάκωβος ὁ Κεφαῖς καὶ Γαλιλαῖος, οἱ δοκῦντες σύλοι εἶναι, διεξῆλθον ἐμοὶ ὡς βαρύνει κοινωνίας· ἵνα ἡμεῖς εἰς τὰ ἔθνη, αὐτοὶ δὲ εἰς τὴν περιουσίαν.

10 Μένον τῷ πτωχῷ ἵνα μεμημονεύωμεν· ὅτι ἔσονται αὐτὸς πάντες ποιῆσαι.

11 Ὅτε δὲ ἦλθε Πέτρος εἰς Ἀντιόχειαν, καὶ πρὸς αὐτὸν ἦν ἡμεῖς, ὅτι κατεγνωσμένος ὤν.

12 Πρὸ τῇ γὰρ ἔλθῃν τινὰ ἀπὸ Ἰακώβου, μετὰ τῶν ἔθνων συνησθίεν· ὅτε ὁ ἦλθον, ὑπέσχετο ὡς ἀφύσταζεν ἑαυτὸν, φοβούμετος τὴν ἐκ περιστομῆς.

13 Καὶ συνεκρίθησαν αὐτοὶ καὶ οἱ λοιποὶ Ἰουδαῖοι· ὥστε καὶ Βαρνάβας συνεκρίθη ὡς τῷ τῇ ᾧ πείσει.

14 Ἀλλ' ὅτε εἶδον ὅτι καὶ ὀρθοποδοῦσι πρὸς τὴν ἀλήθειαν τῇ εὐαγγελίᾳ, εἶπον τῷ Πέτρῳ ἐμπροσθεν πάντων· Εἰ σὺ Ἰουδαῖος ὑπάρχων, ἔθνη καὶ ἑθνη καὶ καὶ Ἰουδαῖος, τί τὰ ἔθνη ἀπαρακαλεῖς ἑθνη;

15 Ἡμεῖς φύσει Ἰουδαῖοι, καὶ καὶ ἔθνη ἔθνη ἀμαρτωλοί.

16 Εἰδότες ὅτι καὶ δικαιοῦται ἄνθρωπος διὰ ἔργων νόμου, ἐὰν μὴ διὰ πίστεως Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ ἡμεῖς καὶ Χριστὸν Ἰησοῦν ὁπσοῦσαμεν, ἵνα δικαιωθῶμεν ἐκ πίστεως Χριστοῦ, καὶ καὶ διὰ ἔργων νόμου· διότι ἐὰν δικαιοῦται διὰ ἔργων νόμου, πᾶσι σαφές.

17 Εἰ δὲ ζητῶντες δικαιωθῶμεν ἐκ Χριστοῦ, ὀφείλομεν ὡς αὐτοὶ ἀμαρτωλοί, ἅπα Χριστὸς ἀμαρτίας δικαίος; Μὴ γένοιτο.

18 Εἰ γὰρ ὁ κατέλυσεν, ταῦτα πάλιν οἰκοδομῇ, πειρασθῶμεν ἑαυτοὺς συνίστημι.

19 Εἰ γὰρ διὰ νόμου νόμος ἀπέθανον ἵνα Θεὸς ζῇ.

20 Χριστὸς συνεσταύρωται· ζῶν γὰρ, καὶ ἐτι ἐγὼ, καὶ ἐὰν ἐν ἐμοὶ Χριστός· ὁ δὲ τὸν ζῶν ἐν σαρκί, ἐκ πίστεως ζῶν τῇ τῇ γὰρ τῇ σαρκί, καὶ ἀγαπήτητες με, καὶ παραδόντες ἑαυτοὺς ὡς ἐν ἐμῇ.

21 Οὐχ ἀφετὰ τῇ χάριτι τῇ Θεῷ· ἀλλὰ γὰρ διὰ νόμου δικαιοσύνη, ἅπα Χριστὸς δωρεὰν ἀπέθανον.

Καθ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Ω** γάρτοι Γαλάται, τίς ὑμῶς ἐβάσκαυε τῇ ἀληθείᾳ μὴ πείθεσθαι; οἷς κατ' ἐπαγγελίαν Ἰησοῦ Χριστοῦ προερχαμένη, ἐν ὑμῖν ἐστρωμένη.

2 Τὸτο μόνον θέλω μαθεῖν ἀφ' ὑμῶν· ἔξε ἔργων νόμου τὸ Πνεῦμα ἐλάβετε, ἢ ἔξε ἀκοῆς πίστεως;

3 Οὗτοις ἀνέητοί ἐστε; ἐναρξάμενοι Πνοῦματι, τὴν σαρκὶ ὑπερῃσθε;

4 Τοσαῦτα ἐπαθετε εἰκῇ, εἴ γε & εἰκῇ.

5 Ο' ἂν ὑποχωροῦν ὑμῖν τὸ Πνεῦμα, & ἐνεργῶν ἐν ὑμῖν, ἔξε ἔργων νόμου ἢ ἔξε ἀκοῆς πίστεως;

6 Ἰαθῶς Ἀβραάμ ἐπίστωσε τῷ Θεῷ, & ἐλογίσθη ὑπὸ εἰς δικαιοσύνην.

7 Γινώσκετε ἄρα ὅτι οἱ & πείσως, ἔτοί εἰσιν τοῖς Ἀβραάμ.

8 Προῖδ' ὅσα δὲ ἡ γραφὴ ὅτι ἐκ πίστεως δίκαιοι τὰ ἔθνη ὁ Θεός, προσήγγελίσκατο τῷ Ἀβραάμ· ὅτι ἀλογηθήσονται ἐν σοὶ πάντα τὰ ἔθνη.

9 Ὡς οἱ & πείσως, ἀλογηῖται σὺν τῷ πιστῷ Ἀβραάμ.

10 Ὅσοι γὰρ ἔξε ἔργων νόμου εἰσὶν, ὑπὸ κατάραμ ὄντι· γέγραπται γάρ· Ἐπικατάρατος πᾶς ὃς ἐκ ἐμμένων ἐν πᾶσι τοῖς γεγραμμένοις ἐν τῷ βιβλίῳ τῷ νόμου, ἢ ποιῇται αὐτά.

11 Ὅτι δὲ ἐν νόμῳ οὐδεὶς δικαιοῦται παρὰ τῷ Θεῷ, ὁκλον, ὅτι ὁ δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται.

12 Ο' δὲ νόμος οὐκ εἰσὶν ἐκ πίστεως· ἀλλ' ὁ ποιήσας αὐτὰ ἄνθρωπος, ζήσεται ἐν αὐτοῖς.

13 Χριστὸς ἡμᾶς ὑπεγράψεν ἐκ τῆς καταράς τοῦ νόμου, ὑμῶν ὑπὲρ ἡμῶν κατάρα· γέγραπται γάρ· Ἐπικατάρατος πᾶς ὁ κρεμάμενος ὑπὸ ξύλου.

14 Ἰνα εἰς τὰ ἔθνη ἀλογία τοῦ Ἀβραάμ ἴνηται ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἵνα τῶν ἐπαγγελιῶν τοῦ Πνοῦματος λάβωμεν διὰ τῆς πίστεως.

15 Ἀδελφοί, κατ' ἄνθρωπον λέγω· ἡμῖν ἀνθρώπου κεκυρωμένῳ διαθήκῃ οὐδεὶς ἀθετεῖ ἢ ὑπερδιατάσσεται.

R

16 Τῷ

16 Τῷ δὲ Ἀβραάμ ἐρρήθησαν αἱ ἐπαγγελίαι πρὸ σπέρματος αὐτοῦ· ἢ λέγει· Καὶ τοῖς σπέρματι, ὑπὲρ πολλῶν, ἀλλ' ὡς ἐφ' ἑνός· Καὶ τῷ σπέρματι ὅς ἐστι Χριστός.

17 Τὸτο δὲ λέγω διὰ τὴν προκεκυρωμένην ὑπὸ Θεοῦ εἰς Χριστόν, ὃ μὲν ἔτη τετρακίσια ἔτελει νόμος ὡς νόμος ἐκ ἀκυροῦ, εἰς τὸ καταργῆσαι τὴν παρρησίαν.

18 Εἰ γὰρ ἐκ νόμου ἡ κληρονομία, ἢ ἐτι δεῖ ἐπαγγελίας· τῷ δὲ Ἀβραάμ δι' ἐπαγγελίας κεχρησάμενος Θεός.

19 Τί οὖν ὁ νόμος; Τῶν φθυβάσεων γὰρ εἶναι προτετέθη, ἄχρις οὗ ἔλθῃ τὸ σπέρμα, ὃ ἐπαγγέλλεται, διὰ τῶν ἀγγέλων, ἐν Χρυστῷ.

20 Οὗ δὲ μεσίτης, ἑνός ἢ ἑσιν; ὁ δὲ Θεός, ὅς ἐστιν.

21 Οὗ οὖν νόμος κατὰ τῶν ἐπαγγελιῶν τοῦ Θεοῦ; μὴ γένοιτο· εἰ γὰρ ἐδόθη νόμος ὁ δὲ νόμος ζωοποιῆσαι, ὅντως ἀρ' ἐκ νόμου ὡς ἡ δὲ χάρις καὶ αἰσίνη.

22 Ἀλλὰ συνέκλεισεν ἡ γραφὴ τὰ πάντα ὑπὸ μαρτίαν, ἵνα ἡ ἐπαγγελία ἐκ πίστεως Ἰησοῦ Χριστοῦ δοθῇ τοῖς πιστεύουσιν.

23 Πρὸ τῆς ἐλθούσης τῆς πίστεως, ὑπὸ νόμον ἐφθάρθησαν, συγκεκλησμένοι εἰς τὴν μέλλουσαν πίσιν ἀποκαλύφθωσι.

24 Ὡς δὲ νόμος παιδαγωγὸς ἡμῶν γέγονεν εἰς Χριστόν, ἵνα ἐκ πίστεως δικαιωθῶμεν.

25 Ἐλθούσης δὲ τῆς πίστεως, ἢ ἐτι ὑπὸ παιδαγωγόν ἐσμεν.

26 Πάντες γὰρ υἱοὶ Θεοῦ ἐστε διὰ τῆς πίστεως ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

27 Ὅσοι γὰρ εἰς Χριστόν ἐβαπτίσθητε, Χριστὸν ἐνεδύσασθε.

28 Οὐκ ἐστὶν Ἰουδαῖος, ἢ δὲ Ἕλληνας· ἢ ἐνὶ δούλοισιν, ἢ δὲ ἐλεύθερος· ἢ ἐν ἄρσει, ἢ θήλυ· πάντες γὰρ ὑμεῖς εἰς ἑστὸς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

29 Εἰ δὲ ὑμεῖς Χριστοῦ, ἄρα τοῦ Ἀβραάμ σπέρμα ἐστέ, καὶ κατ' ἐπαγγελίαν κληρονόμοι.

Κεφ. V. 4.

- 1 **Λ** Εγώ ὦ, ἐφ' ὅσον χρόνον ὁ κληρονόμος νή-
πιός ἐστιν, ἡδὲν ~~ἀφ' ἑαυτοῦ~~ δὴλν, κύριος
πάντων ὢν.
- 2 Ἀλλὰ ὑπὸ ὑπαιρέσεως ἐσὶ ὁ οὐκονόμος ἀχρὶ τῆ
προθεσμίας τῆ Πατρὸς.
- 3 Οὗτοι ὁ ἑμεῖς, ὅτε ἤμεν νήπιοι, ὑπὸ τὰ στοι-
χεῖα τῆ κόσμῃ ἤμεν δεδουλωμένοι.
- 4 Ὅτε δὲ ἤλθε τὸ πλήρωμα τῆ χρόνῃ, ἡξαπέστα-
κεν ὁ Θεὸς τὴ γένον αὐτῆς ἡσώμῃον ἐκ γυναικὸς, ἡσώ-
μῃον ὑπὸ νόμον.
- 5 Ἰνα τῆς ὑπὸ νόμον ἡξαγοράσῃ, ἡνι τῆ υἱοθεσίᾳ
ἀπολαύσῃ.
- 6 Ὅτι δὲ ἐσε υἱοί, ἡξαπέστακεν ὁ Θεὸς τὸ Πνεῦ-
μα τῆ γένῃ αὐτῆς εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν, κρίζον, Ἀδ-
βα, ὁ Πατὴρ.
- 7 Ὡς ἐκ ἐτι εἰ δὴλοι, ἀλλ' υἱός· εἰ δὲ υἱός,
ὁ κληρονόμος Θεῷ. ~~ἀφ' ἑαυτοῦ~~ Χριστῷ.
- 8 Ἀλλὰ τότε μὲν ἐκ εἰδότες Θεόν, ἐδουλούσατε
τοῖς μὴ φύσει ὡς θεοῖς.
- 9 Νῦν ὦ, γινόντες Θεόν, μᾶλλον δὲ γνωσθέντες
ὑπὸ Θεῷ, πῶς ὑπεσρεφετε πάλιν ὑπὸ τὰ ἀσθενῆ ὁ
πτωχὰ στοιχεῖα, οἷς πάλιν ἀνωθεν δουλοῦναι θέ-
λετε.
- 10 Ἡμέρας ~~ἡμετέρας~~ ὑπηρεῖσθε, ὁ μῶας, ὁ καιρὸς,
ὁ σῴαυτής.
- 11 φοβῆμαι ὑμᾶς, μήπως εἰκὴ κεκοπίκακα εἰς ὑ-
μᾶς.
- 12 Γίνεσθε ὡς ἐγώ, ὅτι κἀγὼ ὡς ὑμᾶς· ἀδελ-
φοί, δεομαι ὑμῶν. ἡδὲν με ἡδίκητατε.
- 13 Οἶδατε δὲ ὅτι δι' ἀσθενείᾳ τῆ σαρκὸς ἀγγελ-
ησάμην ὑμῖν τὸ πρότερον.
- 14 Καὶ τὸν πειρασμόν μου τὸν ἐν τῇ σαρ-
κί μου οὐκ ἡκουσθήσατε, ἡδὲ ἡξεπτύσατε,
ἀλλ' ὡς ἄγγελον Θεῷ ἐδέξασθέ με, ὡς Χριστὸν Ἰη-
σοῦν.
- 15 Τίς ἦν ὁ ὁ μακαρισμός ὑμῶν; μαρτυρῶ ὅτι ὁ
μῖν, ὅτι, εἰ δυνατὸν, τῆς ὁφθαλμῆς ὑμῶν ἡσούζαντες
ἂν ἐδώκατέ μοι.
- 16 Ὡς ἐχθρὸς ὑμῶν γέγονα ἀληθείᾳ ὑμῖν;
- 17 Ζηλοῦσιν ὑμᾶς ὁ καλῶς, ἀλλὰ ἐκκληῖσαι ἡμᾶς
θέλωσιν, ἵνα αὐτῆς ζηλῶτε.
- 18 Καλὸν δὲ τὸ ζηλοῦν ἐν καλῷ πάντοτε, ὁ μὴ
μόνον ἐν τῷ παρῆναι με πρὸς ὑμᾶς.
- 19 Τεκνία μὴ, ὅς πάλιν ὡδίνω, ἀχρὶς ὁ μορφωθῆ
Χριστὸς ἐν ὑμῖν.

20 Ἡ θύλην δὲ παρῖναι πρὸς ὑμᾶς ἄρτι, καὶ ἀλλάξαι τὴν φωνὴν μου ὅτι ἀπορῶμαι ἐν ὑμῖν.

21 Λέγετε μοι οἱ ὑπὸ νόμον θέλοντες εἶναι, νόμον ἔκ ακήετε;

22 Γέγραπται γὰρ, ὅτι Ἀβραάμ δύο υἱὸς ἔσχεν· ἓνα ἐκ τῆς παιδείκης, καὶ ἓνα ἐκ τῆς ἐλευθέρου.

23 Ἀλλ' ὁ μὲν ἐκ τῆς παιδείκης, καὶ σάρκα γεννησέναι· ὁ δὲ ἐκ τῆς ἐλευθέρου, ἀπὸ τῆς ἐπαγγελίας.

24 Ἀτίνα εἰσιν ἀλληγορήματα· οὗτοι γὰρ εἰσιν αἱ δύο ἀφ' ὧν· μία μὲν ἀπὸ ἑκαστοῦ Σινᾶ, εἰς δουλείαν φωνῶσα, ἡτις ἐστὶν Ἀγάρ.

25 Τὸ γὰρ Ἀγάρ Σινᾶ ὄρος εἰσὶν ἐν τῇ Ἀραβίᾳ· οὗτοι γὰρ δὲ τῇ νῦν Ἱερουσαλὴμ, δαλῶναι ὅτι καὶ τῇ τεκνῶν αὐτῆς.

26 Ἡ δὲ ἄρα Ἱερουσαλὴμ, ἐλευθέρου εἰσὶν, ἡτις ἐστὶ μήτηρ πάντων ἡμῶν.

27 Γέγραπται γὰρ· Εὐφράδῃσι σῆρα ἡ ἡ τίκτουσα· ῥῆξεν καὶ βόησεν ἡ οὐκ οἰδίνουσα, ὅτι πολλὰ τὰ τέκνα τῆς ἐρήμου μάλλον ἢ τῆς ἐχρύσης τῶν ἀνδρῶν.

28 Ἡμεῖς δὲ, ἀδελφοί, καὶ Ἰσαὰκ, ἐπαγγελίας τέκνα ἐσμέν.

29 Ἀλλ' οἵσπερ τότε ὁ καὶ σάρκα φωνηθεὶς, ἐδίδακε τὴν καὶ πνεῦμα, ὅτι ἐστὶν τῶν.

30 Ἀλλὰ τί λέγει ἡ γραφή; Ἐκβαλε τὴν παιδείκην καὶ τὸν υἱὸν αὐτῆς· οὐ γὰρ καὶ κληρονομήσῃ, ὁ υἱὸς τῆς παιδείκης καὶ τοῦ υἱοῦ τῆς ἐλευθέρου.

31 Ὁ γὰρ, ἀδελφοί, ἔκ ἐσμέν παιδείκης τέκνα, ἀλλὰ τῆς ἐλευθέρου.

Κεφ. 6. 3.

1 Τῇ ἐλευθέρᾳ ἡν ὁ Χριστὸς ἡμᾶς ἐλευθέρωται, στήκετε, καὶ μὴ πάλιν ζυγῷ δουλείας ἐν χεσθε.

2 Ἰδὲ, ἐγὼ Παῦλος λέγω ὑμῖν, ὅτι ἐὰν πεισμένῃσθε, Χριστὸς ὑμᾶς οὐδὲν ὀφείλει.

3 Μαρτύρομαι δὲ πάλιν πάντι ἀνθρώπῳ πεισμένῳ, ὅτι σφικέτης ἐστὶν ὅλον τὸν νόμον ποιῆσαι.

4 Κατηργήθητε ἀπὸ τοῦ Χριστοῦ οἵτινες ἐν νόμῳ δικαιώσθε, τῆς χάριτος ὀφείεσθε.

5 Ἡμεῖς γὰρ Πιστεύομεν ὅτι πίστεως ἐλπίδα δικαιοσύνης ἀπεκδεχόμεθα.

6 Ἐγὼ δὲ Χριστῷ Ἰησοῦ ἔτι πεποιημένη π' ἰχθύα, οἷ τε ἀκροβυστία, ἀλλὰ πίσις δι' ἀγάπης συντηρουμένη.

7 Ἐτρέχετε καλῶς· τίς ὑμᾶς ἀνέκοψε τῇ ἀληθείᾳ μὴ πεποιθεῖ;

8 Ἡ πεισμονὴ ἣκ' ἐν τῷ καλῶντος ὑμᾶς.

9 Μικρὰ ζυμὴ ὅλον τὸ φύραμα ζυμοῖ.

10 Ἐγὼ πέποιθα εἰς ὑμᾶς ἐν Κυρίῳ, ὅτι καὶ ἐν ἄλλο φρονηστέ· ὃ δὲ ταπεινῶν ὑμᾶς βασιλεὺς τῶ θεοῦ, ὅστις ἀπ' ἡμῶν.

11 Ἐγὼ δὲ, ἀδελφοί, ἐπεσημύην ἔτι κηρύσσω, τί ἐτι διώκομαι; ἀρα κατήργηται τὸ σκῆδραλον τῶν σαρκῶν.

12 Ὅφειλον ὃ ἀποκόψονται οἱ ἀμαρτανούντες ἡμῶν.

13 Ὑμῖν δὲ ἐπ' ἐλευθερίᾳ ἐκλήθητε, ἀδελφοί· μόνον μὴ τῶν ἐλευθεριῶν εἰς ἀφορμὴν τῇ σαρκί, ἀλλὰ διὰ τῆς ἀγάπης δουλοῦτε ἀλλήλοις.

14 Ὅς δὲ πᾶς νόμος ἐν ἐνὶ λόγῳ πληροῦται, ἐν τῷ, Ἀγαπήτε τὸν πλησίον σου ὡς ἐαυτὸν.

15 Εἰ δὲ ἀλλήλους δάκνετε καὶ κατεσθίετε, βλέπετε μὴ ἐπὶ ἀλλήλων ἀναλωθῆτε.

16 Λέγω δέ· πνεύματι περπατεῖτε, καὶ ὑποθυμῶν σαρκὸς ἢ μὴ τελήσητε.

17 Ἡ δὲ σὰρξ ὑποθυμῶν κατὰ τοῦ πνεύματος· τὸ δὲ πνεῦμα κατὰ τῆς σαρκὸς· ταῦτα δὲ ἀντίκειται ἀλλήλοις, ἵνα μὴ ἂν ἀν' ἀλλήλων ποιήτε.

18 Εἰ δὲ πνεύματι ἄγισθε, οὐκ ἐστέ ἐπὶ νόμον.

19 Φθμερὰ δέ ἐσι τὰ ἔργα τῆς σαρκὸς· ἀπὴν ἐστὶ, μοιχεία, πόρνεια, ἀκαθαρσία, ἀσέλγεια,

20 Εἰδωλολατρεία, φαρμακεία, ἐχθραί, ἐρις, ζῆλοι, θυμοί, ἐριθνῆαι, διχοσασίαι, αἰρίσεις.

21 Ὅθεν, φόβοι, μέδαι, κῶμοι, καὶ τὰ ὅμοια τέτοις, ἃ προλέγω ὑμῖν, καθὼς ὃ προέπον, ὅτι οἱ τὰ ποιῶντα προκούντες βασιλεῖν θεοῦ ἢ κληρονομήσουσι.

22 Ὅς δὲ καρπὸς τοῦ πνεύματος, ἐστὶν ἀγάπη, χαρὰ, εἰρήνη, μακροθυμία, χρηστότης, ἀγαθοσύνη, πίσις, πραότης, ἐγκράτειαι.

23 Κατὰ τῶν ποιούντων ἡ ἐστὶ νόμος.

24 Οἱ δὲ τοῦ Χριστοῦ, τῶν σάρκα ἐκείνην σὺν τοῖς παθήμασι καὶ ταῖς ὑποθυμίαις.

25 Εἰ ζῶμεν πνεύματι, πνεύματι καὶ εὐφρανόμεθα.

26 Μὴ γινώμεθα πενέδοξοι, ἀλλήλους προκαλούμε-
νοι, ἀλλήλοις φθονῶντες.

Κιφ. 5. 6.

1 **Α**δελφοί, ἐὰν καὶ προληφθῇ ἀνθρώ-
πος ἐν τινὶ πνεύματι, ὑμεῖς οἱ
πνευματικοὶ καταρτίζετε τὸν ποιῶντα ἐν γνώ-
μῃ προσηλύτου· σκοπῶν σεαυτὸν, μὴ καὶ συ-
πειρασθῇς.

2 Ἀλλήλων τὰ βάρη βαρύνετε, & ὕτως ἀναπληρώ-
σατε τὸ νόμον τοῦ Χριστοῦ.

3 Εἰ γὰρ δοκῇ τις εἶναι τι, μηδὲν ὦν, ἐνωτὶ φρι-
γυπατῶ.

4 Τὸ δὲ ἔργον ἑαυτοῦ δοκιμάζετε ἑκαστος, & τί-
τε εἰς ἐνωτὸν μόνον τὸ καύχημα ἔχη, & οὐκ εἰς τὸ
ἕτερον.

5 ἑκαστος γὰρ τὸ ἴδιον φορτίον βαρύνει.

6 Κοινωνεῖτω δὲ ὁ κατηχούμενος τὸν λόγον τῷ κατη-
χῶντι ἐν πάσιν ἀγαθοῖς.

7 Μὴ πλημύσθῃ· Θεὸς οὐ μνηστειρίζεται·
ὁ γὰρ ἐὰν σπείρῃ ἀνθρώπος, τοῦτο καὶ θι-
ρεῖται.

8 Ὅτι ὁ σπείραν εἰς τὴν σάρκα ἑαυτοῦ,
ὅκ τῆς σαρκὸς θερίσει φθαρὰ· ὁ δὲ σπείρων
εἰς τὸ πνεῦμα, ἐν τῷ πνεύματι θερίσει ζωὴν
αἰώνιον.

9 Τὸ δὲ καλὸν ποιοῦντες μὴ ἐκκακώ-
μεν· καιρῷ γὰρ ἰδίῳ θερίσομεν, μὴ ὀκλύ-
μενοι.

10 Ἄρα ἦν ὡς καιρὸν ἔχημεν, ἐργαζόμεθα τὸ ὀ-
φειλόμενον πρὸς πάντας, μάλιστα δὲ πρὸς τοὺς οἰκείους τῆς
πίστεως.

11 Ἰδότε πηλίκους ὑμῖν γράμμασιν ἔγραψα τῇ ἰ-
μῇ χειρί.

12 Ὅσοι θέλουσιν ἀπροσωπῆσαι ἐν σαρκί,
οὗτοι ἀναγκάζουσιν ὑμᾶς πειρατεῖσθαι,
μόνον ἵνα μὴ τῷ σωρῷ τοῦ Χριστοῦ διώκω-
νται.

13 Οὐδὲ γὰρ οἱ πειρατεμνόμενοι ὑπὸ νό-
μον φυλάσσουσιν· ἀλλὰ θέλουσιν ὑμῶς πειρατε-
μνέσθαι, ἵνα ἐν τῇ ὑμετέρᾳ σαρκὶ καυχῶνται.

14 Ἐμοὶ δὲ μὴ γένοιτο καυχᾶσθαι ἐν τῷ σω-
ρῷ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, δι' ἃ ἔμοι κόσμος
παίρωται, καὶ γὰρ τῷ κόσμῳ.

15 Ἐν ᾧ Χριστῷ Ἰησοῦ ἔτε πωλομένη τι ἰσχύει, ἢ τε ἀκροβυστία, ἀλλὰ καινὴ κτίσις.

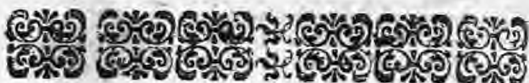
16 Καὶ ὅσοι τῷ κλήρονι τούτῳ σοιχήσουσιν, εὐρίων ἐπ' αὐτοὺς καὶ ἔλεος, καὶ ἔπι τὸν Ἰσραὴλ τῷ Θεῷ.

17 Τῷ λοιπῷ, κόπης μοι μηδὲς παρεχέτω· ἐγὼ δὲ τὰ ἱσχύματα τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦ ἐν τῷ σώματί μου βασάζω.

18 Ἡ χάρις τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ μετὰ τὸ πνέματος ἡμῶν, ἀδελφοί. Ἀμήν.

Πρὸς Γαλάτας ἐγράφη ἀπὸ Ρώμης.





ΠΑΤΛΟΥ

Τῷ Α' ΠΟΣΤΟΛΟΥ

Η' ΠΡΟΣ ΕΦΕΣΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

Κεφ. α'. ι.

1 **Π**ΑΥΛΟΣ Α' ΠΟΣΤΟΛΟΣ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ ΔΙΕΥ-
ματος Θεῷ, τοῖς ἁγίοις τοῖς ὕσιν ἐν Ε-
 ΦΕΣΩ, καὶ πιστοῖς ἐν Χριστῷ ΙΗΣΟΥ.

2 Χάρις ὑμῖν ἐκ ἐκλήκης ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἡμῶν, ἐκ
 Κυρίου ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ.

3 Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς ἐκ Πατρὸς καὶ Κυρίου ἡμῶν ΙΗΣΟΥ
 ΧΡΙΣΤΟΥ, ὁ ἀλογήτως ἡμᾶς ἐν πάσῃ ἀλογίᾳ πνευ-
 ματικῇ ἐν τοῖς ἀκράτοις ἐν Χριστῷ.

4 Καθὼς ἐξελέξατο ἡμᾶς ἐν αὐτῷ πρὸ καταβολῆς
 κόσμου, εἶναι ἡμᾶς ἁγίους ἐ ἀμώμους κατενώπιον αὐτοῦ
 ἐν ἀγάπῃ.

5 Προορίσας ἡμᾶς εἰς υἱοθεσίαν διὰ τοῦ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙ-
 ΣΤΟΥ εἰς αὐτὸν, κατὰ τὴν εὐδοκίαν τοῦ θελήματος
 αὐτοῦ.

6 Εἰς ἐπαινον δόξης τῆς χάριτος αὐτοῦ, ἐν ᾗ ἔχα-
 ρίτωσεν ἡμᾶς ἐν τῷ ἀγαπημένῳ.

7 Ἐν ᾧ ἔχομεν τὴν ἀπολύτρωσιν διὰ τοῦ καὶ αἵματος
 αὐτοῦ, καὶ ἡ ἀφεσις τῶν ὀφθαλμάτων, καὶ τὸ πλῆτος τῆς
 χάριτος αὐτοῦ.

8 Ἡ δὲ ἐπαράκλησις εἰς ἡμᾶς ἐν πάσῃ σοφίᾳ καὶ
 φρονήσει.

9 Γνωρίσας ἡμῖν τὸ μυστήριον τοῦ θελήματος αὐ-
 τοῦ κατὰ τὴν εὐδοκίαν αὐτοῦ, ᾧ πρόεδρο ἐν
 αὐτῷ.

10 Εἰς οἰκονομίαν τῆς πληρώματος τῶν καιρῶν, ἀνακε-
 φαλιώσαντα τὰ πάντα ἐν τῷ Χριστῷ, τὰ τε ἐν τοῖς
 ἀράτοις καὶ τὰ ἐν τῇ γῇ.

11 Ἐν αὐτῷ, ἐν ᾧ καὶ ἐκλήρωθημεν, προερισθέντες
 καὶ

καὶ πρόθεσιν τῶν πάντων ἐνεργούντος καὶ τὸ βαλὼν τὸ
θελήματος αὐτοῦ.

12 Εἰς τὸ εἶναι ἡμᾶς εἰς ἔπαινον τῆς δόξης αὐτοῦ,
τῆς προηλαπτότας ἐν τῷ Χριστῷ.

13 Ἐν ᾧ καὶ ὑμεῖς, ἀκούσαντες τὸ λόγον τῆς ἀλη-
θείας, τὸ εὐαγγέλιον τῆς σωτηρίας ὑμῶν· ἐν ᾧ ἐπι-
στούσαντες ἐσφραγίσθητε τῷ Πνεύματι τῆς ἐπαγγελίας
τῆς Ἀγίας.

14 Ὅς ἐστιν ἀρ' ὁράων τῆς κληρονομίας ἡμῶν, εἰς
ἀπολύτρωσιν τῆς καθαριοῦσεως, εἰς ἔπαινον τῆς δό-
ξης αὐτοῦ.

15 Διὰ τοῦτο καὶ νῦν, ἀκούσας καὶ καθ' ὑμᾶς πείσιν
ἐν τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦ, ᾧ τὸ ἀγάπῃ τῶν εἰς πάντας
τῆς ἀγίας.

16 Οὐ πώσωμαι δι' ἁμαρτιῶν ὑπὲρ ὑμῶν,
μειδῶν ὑμῶν ποιούμηνος ὅτι τῷ προσόχῳ
μου.

17 ἵνα ὁ Θεὸς τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστοῦ, ὁ Πατὴρ τῆς δόξης, δὲξῃ ὑμῖν
Πνεῦμα σοφίας καὶ ἀποκαλύψεως, ἐν ὁποίᾳ
ὠπτοῦ.

18 Πεφωτισμένους τῆς ὀφθαλμικῆς καὶ διανοίας ὑ-
μῶν, εἰς τὸ εἰδέναι ὑμᾶς τίς ἐστὶν ἡ ἐλπίς καὶ κλη-
ρονομία αὐτοῦ, ᾧ τίς ὁ πλοῦτος τῆς δόξης καὶ κληρονομίας
αὐτοῦ ἐν τοῖς ἁγίοις.

19 Καὶ τί τὸ ὑπερβάλλον μέγεθος καὶ δυνάμεως
αὐτοῦ εἰς ἡμᾶς τῆς πιστεύοντας καὶ ἐνεργούντων κατὰ
τῆς ἰσχύος αὐτοῦ.

20 Ἦν ἐνήργησεν ἐν τῷ Χριστῷ, ἐγκείρας αὐτὸν
ἐν νεκρῶν, καὶ ἐκάθισεν ἐν δεξιᾷ αὐτοῦ ἐν τοῖς ἐπυ-
ρανίοις.

21 Ὑπεράνω πάσης ἀρχῆς καὶ ἐξουσίας καὶ δυνά-
μεως καὶ κυριότητος, ᾧ πάντος ὀνόματος ὀνομαζομέ-
νου οὐ μόνον ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ, ἀλλὰ καὶ ἐν τῷ
μέλλοντι.

22 Καὶ πάντα ὑπέταξεν ὑποὺς τοὺς πόδας αὐ-
τοῦ, καὶ αὐτὸν ἔδωκε κεφαλὴν ὑπὲρ πάντα τῇ ἐκ-
κλησίᾳ.

23 Ἡ ᾧ τις ἐστὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ, τὸ πλήρωμα τῷ πᾶσι
ταῖς ἐκ παλαιῶν πληρουμένον.

Κεφ. Β'. 2.

1 **Κ**ΑΙ ὁμῶς ὄντας νεκροὺς τοῖς πλεονήμασι
 ἐν ταῖς ἁμαρτίαις.

2 ΕΝ ᾧς ποτε ~~παραπατήσατε~~ ἅτ' ἢ αἰῶνα ἢ κόσμῳ
 τούτῳ, ἅτ' ἢ ἀρχόντα ἢ θεοὺς ἢ αἶρας, τοῦ πύ-
 λωτος τοῦ τὸν σφεργῆντος ἐν τοῖς υἱοῖς τῆς ἀπει-
 ρίας.

3 Εἰς οἷς ἔ ἡμεῖς πάντες ἀμετράφημέν ποτε ἐν ταῖς
 ὑποθυμίαις τ' σαρκὸς ἡμῶν, ποιῶντες τὰ θελήματα τ' σαρκὸς
 καὶ τῷ διανοῶν. ἔ ἡμεῖς τέκνα φύται ὀργῆς,
 ᾧς ἔ οἱ λοιποί.

4 Οἱ ὅ Θεός, πλήστος ὢν ἐν ἐλέει, διὰ τὴν πολ-
 λὴν ἀγαπῶν ἡμᾶς ἡγάπησεν ἡμᾶς,

5 Καὶ ὄντας ἡμᾶς νεκροὺς τοῖς πλεονήμασι,
 συνεζωοποίησε πρὸ Χριστοῦ. (χάριτι ἐσε σεσω-
 μένοι.)

6 Καὶ συνέγειρε, ἔ συνεκάθισεν ἐν τοῖς ἐπου-
 ραίοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

7 ἵνα συνδείξηται ἐν τοῖς αἰῶσι τοῖς ἐπερχομένοις
 τὴν υπερβάλλοντα πλῆσιν τὴν χάριτος αὐτοῦ, ἐν χρηστό-
 τι ἐφ' ἡμᾶς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

8 Τῇ γὰρ χάριτι ἐσε σεσωσμένοι διὰ τὴν πίσυνον
 ἐν τούτῳ καὶ ἡμεῖς ὡς ἡμῶν. Θεὸν τὸ δῶρον.

9 Οὐκ ἔ ἐργον, ἵνα μὴ τις κωχῆσθαι.

10 Αὐτῷ γὰρ ἐσμεν ποίημα, κτισθέντες ἐν Χριστῷ
 Ἰησοῦ ὑπὸ ἐργοῖς ἀγαθοῖς, οἷς προητοίμασεν ὁ Θεός,
 ἵνα ἐν αὐτοῖς ~~παραπατήσωμεν~~.

11 Διὸ ~~κηρύσσετε~~, ὅτι ὁμῶς ποτε τὰ ἔθνη ἐν
 σαρκί, οἱ λεγόμενοι ἀκροβυστία ὑπὸ τὴν λεγομένην πε-
 ριομένη ἐν σαρκὶ κηροποιήθη.

12 Οἱ ἦτε ἐν τῷ καιρῷ ὀκνῶν χερεῖ Χριστοῦ, ἀ-
 παλαιοποιημένοι τ' πολιτικῆς ἢ Ἰσραὴλ, ἔ ξένοι τῷ
 δικαίῳ καὶ ἐπαγγελίᾳ, ἐλπίδα μὴ ἔχοντες, ἔ
 ἄθεοι ἐν τῷ κόσμῳ.

13 Νυνὶ ὅ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὁμῶς οἱ ποτε ἐν τῇ
 μακρότῃ, ἔγγυς ἐγγήθητε ἐν τῷ αἵματι τοῦ Χρι-
 στοῦ.

14 Αὐτοὶ γὰρ εἰν ἡ ἐρήνη ἡμῶν, ὁ ποιήσας
 τὰ ἀμφοτέρω ἐν, καὶ τὸ μεσότητον ἢ φραγμὸν
 λύσας.

15 Τῷ ἔχθρῳ ἐν τῇ σαρκὶ αὐτῇ, τὸν νόμον
 τῶν ἐντολῶν ἐν δόγμασι καταργήσας. ἵνα τῆς δυο
 κτίσῃ ἐν ἑαυτῷ εἰς ἓνα καὶ ἐν ἀφ' ἑαυτοῦ, ποιῶν κα-
 ρικῶν.

16 Καὶ ἀποκαταλλάξῃ τῆς ἀμφοτέρω ἐν ἐνὶ σώματι
 τῷ Θεῷ διὰ τὴν σάρκα, ἀποκτανῶν τὸ ἔχθρῳ ἐν
 αὐτῇ.

17 Καὶ ἐλθὼν ἀγγεγέλισατο ἐν ῥήματι ὑμῶν τοῖς μακράν, ὡς τοῖς ἐγγύς.

18 Ὅτι δι' αὐτὸ ἔχομεν τὴν προσαγωγὴν οἱ ἀμφοτέρωθεν ἐν ἑνὶ Πνεύματι πρὸς τὸ Πατέρα.

19 Ἄρα ἦν ἡκέτι ἐς ἐξένοι ὡς παροικοὶ, ἀλλὰ συμπολιταὶ τῷ ἁγίῳ ὡς οἰκῶσι τὸ Θεῷ.

20 Ἐποικοδομηθέντες ὅτι τῷ θεμελίῳ τῷ ἀπεστόλῳ καὶ προφήτῳ, ὅντος ἀκρογωνιαίῳ αὐτῷ Ἰησοῦ Χριστῷ.

21 Ἐν ᾧ πᾶσα ἡ οἰκοδομὴ συναρμολογούμενη οὕτως ὡς ναὸν ἁγίον ἐν Κυρίῳ.

22 Ἐν ᾧ ὡς ὑμεῖς συνοικοδομεῖσθε εἰς κατοικήτηριον τοῦ Θεοῦ ἐν Πνεύματι.

Κεφ. γ'. 3.

1 Τούτῃ χάριν ἐγὼ Παῦλος ὁ δέσμιος τοῦ Χριστοῦ Ἰησοῦ ὑπὲρ ὑμῶν τῷ ἐθνῶν.

2 Εἴγε ἤκουσατε τὴν οἰκονομίαν τὴν χάριτος τοῦ Θεοῦ καὶ δοθείσης μοι εἰς ὑμᾶς.

3 Ὅτι καὶ ἀποκαλύψιν ἐγνώρισέ μοι τὸ μυστήριον, (καθὼς προέγραψα ἐν ὀλίγῳ.)

4 Πρὸς ὃ δύνασθε ἀναγινώσκοντες νοῆσαι τὴν συνέσιν μου ἐν τῷ μυστηρίῳ τοῦ Χριστοῦ.

5 Ὅτι ἐν ἑτέρας ἡμέραις ἠκέγυωρίσθη τοῖς υἱοῖς τοῦ ἀδελφωτοῦ, ὡς νῦν ἀπεκαλύφθη τοῖς ἁγίοις ἀποστόλοις καὶ ἐν προφήταις ἐν πνεύματι.

6 Εἶναι τὰ ἔθνη συγκληρονόμα ὡς σὺναιμα, καὶ συμμετοχα τῆς ἐπαγγελίας αὐτῆς ἐν τῷ Χριστῷ, διὰ τὴν ἀγγελίαν.

7 Οὗ ἐξουσίῳ διάκονος καὶ τὸ δαυδαὶ καὶ χάριτος τοῦ Θεοῦ καὶ δοθείσα μοι καὶ τὴν ἐνέργειαν τῆς δυνάμεως αὐτῆς.

8 Ἐμοὶ τῷ ἐλαχιστοτέρῳ πάντων τῷ ἁγίῳ ἐδόθη ἡ χάρις αὕτη, ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἀγγεγέλισαδι καὶ ἀνέστηρικται πάντες τοῦ Χριστοῦ.

9 Καὶ φωτίσαι πάντας τίς ἡ κοινωνία τοῦ μυστηρίου τοῦ ἀποκεκρυμμένου ἀπὸ τῶν αἰώνων ἐν τῷ Θεῷ τῷ τῶν πάντων κτίσῳ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

10 ἵνα γνωρισθῇ τῶν ταῖς ἀρχαῖς ὡς ταῖς θεοῖαις ἐν τοῖς ἐπουρανίοις, διὰ τὴν ὀκνησίαν, ἡ πολυτροκίας σοφίας τοῦ Θεοῦ.

11 Κατὰ πρόθεσιν τῶν αἰώνων, ἡ ἐποίησεν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.

12 Ἐν ᾧ ἔχομεν τὴν παροχήν ὡς τῷ προσαγωγῇ ἐν πεποιθήσει, διὰ τὴν πίστιν αὐτῆς.

13 Διὸ αἰτῶμαι μὴ ὀκνηεῖν ἐν ταῖς θλίψεσί μου ὑπὲρ ὑμῶν, ἡ τις ἐστὶ δόξα ὑμῶν.

14 Τὰ τε χάριν κἀμπω τὰ γόνατα μὲ πρὸς τὸ Πα-
τέρα τὸ Κυρίον ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ.

15 Ἐξ ἧς πᾶσα πατέρα ἐν ἡράμοις ἐν ἡμῖν γῆς ὁρ-
μίζεται.

16 Ἰνα δὲ ἡμεῖς αὐτοὶ τὸ πλῆθυν τὸ δέξασθαι αὐτῆς, δι-
νῆμι κραταωδυνῶν διὰ τὸ Πνεύματος αὐτοῦ εἰς τὸ ἔ-
σω ἀνδρωποῦ.

17 Κατοικῆσαι τὸ Χριστὸν διὰ τὸ πίστεως ἐν ταῖς
καρδίαις ὑμῶν.

18 Ἐν ἀγάπῃ ἐρριζωμένοι ἐν τε θεμελιωμέ-
νοι. Ἰνα ῥιζώσῃτε καταλαβέσθαι σὺν πᾶσι
τοῖς ἁγίοις, τί τὸ πλάτος ἐν μήκος, ἐν βάθος καὶ
ὑψος.

19 Γινώσκειτε τὸ ὑπερβάλλον τῆς γνώσεως ἀγα-
πῶν τὸ Χριστῷ. Ἰνα πληρωθῇτε εἰς πᾶν τὸ πλήρη
τὸ Θεοῦ.

20 Τὸ δὲ δυναμένοι ὑπερ πάντα ποιῆσαι ὑπερ ὅ-
σων ἂν αἰτήμεθα ἢ νοήσωμεν, αὐτὸ τὸ δύναμιν τὴν ἐν-
εργουμένην ἐν ἡμῖν.

21 Αὐτῷ ἡ δόξα ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ἐν Χριστῷ Ἰη-
σοῦ, εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας τοῦ αἰῶνος τῶν αἰ-
ώνων. Ἀμήν.

Εἰς β. 4.

1 **Π**αρακλητὴν ἡν ἡμεῖς ἐν ᾧ ὁ δεσμός ἐν Κυ-
ρίῳ, ἀξίως πεπαιδευμένοι τῆς κλήσεως ἡ
ἐκλήθητε.

2 Μετὰ πάσης ταπνηφροσύνης καὶ προσηλύτης
μετὰ μακροθυμίας, ἀνεχόμενοι ἀλλήλων ἐν ἀ-
γάπῃ.

3 Σπληνίζοντες τοῖς ἀδελφοῖς τὸ Πνεῦμα ἐν
τῷ συνδέσμῳ τῷ ἁγίῳ.

4 Ἐν σώματι ἐν Πνεύματι, καθὼς ἐκλήθητε ἐν
μῇ ἐλπίδι τῇ κλήσει ὑμῶν.

5 Εἰς Κύριον, εἰς πίστιν, ἐν βάπτισματι.

6 Εἰς Θεόν ἐν Πατρὶ πάντων, ὁ ἐν πάντων, ἐν
διὰ πάντων, ἐν πᾶσι ὑμῖν.

7 Ἐν ᾧ ἐκάστω ἡμῶν ἐδόθη ἡ χάρις κατὰ τὸ μέ-
τρον τῆς δωρεᾶς τῆς χάριτος.

8 Διὸ λέγει. Ἀναβάς εἰς ὕψος, ἡχηματώσα
σιν αἰχμαλωσίᾳ, καὶ ἔδωκε δόματα τοῖς ἀνδρω-
ποῖς.

9 Τὸ δὲ, ἀνέβη, τί ἐστίν, εἰ μὴ ὅτι ἐκ αὐτοῦ
πρώτον εἰς τὰ κατώτερα μέρη τῆς γῆς.

10 Ὁ καταβάς, οὗτος ἐστὶν ἐν ᾧ ἀναβάς ὑπερέτα
πάντων τῶν ἡράδων, ἵνα πληρώσῃ τὰ πάντα.

11 Καὶ αὐτὸς ἔδωκε, τῶς μὲν αἰσθητοῦς, τῶς δὲ
ἀνο-
πρ-

προφύται, τὴν δὲ διαγωγὴν αὐτῆς τὴν δὲ ποιμένην
ἐκ δὲ ἀσκαλῶν.

12 Πρὸς τὴν καταρτισμὸν τῶν ἁγίων, εἰς ἔργον διακο-
νίας, ὡς οἰκοδομῶν τὴν σῶμα τοῦ Χριστοῦ.

13 Μέχρι καταστήσωμεν οἱ πάντες εἰς τὴν εἰσότη-
τα τῆς πίστεως, καὶ τῆς ἐπιγνώσεως τοῦ Τριτοῦ τῆ
Θεοῦ, εἰς ἀνέρα τελειόν, εἰς μετρον ἡλικίας τὴν πλη-
ρούμετος τὸν Χριστόν.

14 ἵνα μηκέτι ὡμῶν ὑπῶσι, κλυδωνιζόμενοι καὶ πει-
σισμένοι πάμπαν ἀνέμῳ τῇ διδασκαλίᾳ, ἐν τῇ κυ-
βιστῇ τῶν ἀνθρώπων, ἐν πανουργίᾳ πρὸς τὴν μέθο-
δον τῆς πλάνης.

15 Ἀληθεύοντες δὲ ἐν ἀγάπῃ ἀξίωμεν εἰς αὐτὸν
τὰ πάντα, ὅς ἐστιν ἡ κεφαλὴ, ὁ Χριστός.

16 Ἐξ οὗ πάντῃ τὸ σῶμα συναρμολογούμενον ἐκ
συμβιβάζομενον διὰ πάσης ἀφ᾽ ἑκαστῆς ἐπιχορηγίας,
κατ' ἐνέργειαν ἐν μέτρῳ ἑνὸς ἑκάστου μέρους τὴν
ὡξισιν τοῦ σώματος ποιῆται, εἰς οἰκοδομὴν ἑαυ-
τοῦ ἐν ἀγάπῃ.

17 Τὴντοῦ ἐν λέγειν, ἐκ μαρτύρομαι ἐν Κιχείῳ, μηκέτι
ὡμῶς πεισπατεῖν, καθὼς ἐκ τὰ λοιπὰ ἔθνη πεισπατεῖ,
ἐν μεταιοτήτῃ τὸν νοῦν αὐτῶν.

18 Ἐσκοπόμενοι τῇ διανοίᾳ, ὅπως ἀπηλλοτριωμένοι
τῇ ζωῇ τοῦ Θεοῦ, διὰ τὴν ἀγνοίαν τὴν ἥσαν ἐν αὐτοῖς
διὰ τὴν πώρωσιν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν.

19 Οἵτινες ἀπηλλοτριώθησαν ἑαυτοὺς πρὸς τὸν
ἀστέγαν, εἰς ἐργασίαν ἀκαθαρσίας πάσης ἐν
πλεονεξίᾳ.

20 Ὅμοιως ὅτι καὶ ὅπως ἐργάζεσθε τὸν Χριστόν.

21 Εἶχε αὐτὸν ἠκούσατε, ἐκ ἐν αὐτῷ ἐδιδάχθητε,
καθὼς ἐστιν ἀλήθεια ἐν τῷ Ἰησῷ.

22 Ἀποδέσθαι ὑμᾶς, καὶ τὴν προτέρην ἀφαιρέσθαι,
τὸν παλαιὸν ἄνθρωπον τὸν φθειρόμενον κατὰ τὰς ἐπι-
θυμίας τῇ ἀπάτῃ.

23 Ἀναβῆσθαι ὅτι τὸ Πνεῦμα τὸ νοῦς ὑμῶν,

24 Καὶ ἐδύνασθαι τὸν κατὰν ἄνθρωπον, τὸν
κατὰ Θεὸν κτισθέντα ἐν δικαιοσύνῃ καὶ ὁσιότη-
τι τῇ ἀληθείᾳ.

25 Διὸ ἀποδέμενοι τὸ ψεῦδος, λαλεῖτε ἀλή-
θειαν, ὡς καὶ μετὰ τοῦ πλησίον αὐτῶν ὅτι ἐσ-
μὲν ἀλλήλων μέλη.

26 Ὁρῶντες, ἐκ μὴ ὁμωρτάνετε ὅτι ὁ ἥλιος καὶ ἡ
σελήνη καὶ τὰ πνεύματα ὑμῶν.

27 Μὴτε δίδετε τόποι τῇ διαβόλῃ.

28 Ὅτι κλέπτει μηκέτι κλεπτεῖν, ἀλλὰ ὅτι κοπιᾷ
τοῖς ἐργασίαις τοῦ ἀγαθοῦ ταῖς χερσίν, ἵνα ἔχη με-
ταδιδόναι τῇ χερί. ἵνα ἔχη.

29 Πῶς λόγος σαπρὸς ἐκ τῆς σέματος ὑμῶν καὶ ἐκ
τορώσεσθαι ἄλλῃ ἢ τῇ ἀγαθῇ πρὸς οἰκοδομὴν τῆς
ἐκείνης, ἵνα διὰ χάριτος τοῖς ἀκούσιν.

30 Καὶ μὴ λυπεῖτε τὸ Πνεῦμα τὸ Ἀγαθὸν τῷ Θεῷ, ὃν ὡς ἐσφραγίσθητε εἰς ἡμέραν ἀπολο-
τρώσεως.

31 Πᾶσα πικρία, καὶ θυμὸς, καὶ ὀργή,
καὶ κρούγη, καὶ βλασφημία, ἀρδήτω ἀφ' ὑμῶν,
σὺν πάσῃ κακίᾳ.

32 Γίνεσθε δὲ εἰς ἀλλήλους χρηστοί, εὐσπλαγ-
χνοί, χαριζόμενοι ἑαυτοῖς, καθὼς ὁ Θεὸς ἐν Χρισ-
τῷ ἐχαρίσατο ὑμῖν.

Κεφ. ε. 5.

1 Γίνεσθε οὖν μιμηταὶ τοῦ Θεοῦ, ὡς τέκνα
ἀγαπῆται.

2 Καὶ περιπατεῖτε ἐν ἀγάπῃ, καθὼς καὶ
ὁ Χριστὸς ἠγαπήτεν ἡμᾶς, καὶ παρέδωκεν ἑαυ-
τὸν ὑπὲρ ἡμῶν προσφοράν καὶ θυσίαν τῷ Θεῷ, ἡ
ὁσμὴν ὁσμῆς.

3 Πορνεία δὲ καὶ πᾶσα ἀκαθαρσία ἢ πλε-
νεξία μηδὲ ὀνομαζέσθω ἐν ὑμῖν, καθὼς πρε-
πει ἁγίοις.

4 Καὶ αἰσχροτήτης, καὶ μωρολογίας, ἢ ἀν-
τραπείας, τὰ οὐκ ἀνήκοντα· ἀλλὰ μᾶλλον ὡ-
χαρισία.

5 Τοῦτο γὰρ ἐσε γινώσκοντες, ὅτι πᾶς τίμ-
νος, ἢ ἀκάθαρτος, ἢ πλεονέκτης, ὅς ἐστιν ὁ-
δωλεατὴρ, οὐκ ἔχει κληρονομίαν ἐν τῇ βασι-
λείᾳ τοῦ Χριστοῦ ὁ Θεός.

6 Μηδεὶς ὑμᾶς ἀπατάτω κενοῖς λόγοις. Ὡς τοῦ-
τα γὰρ ἔρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τῶν υἱῶν τῆς
ἀπειθείας.

7 Μὴ ὅτι γίνεσθε συμμετοχοὶ αὐτῶν.

8 Ὡς τε γὰρ ποτε σκότος, νῦν δὲ φῶς ἐν Κυρίῳ·
ὡς τέκνα φωτός περιπατεῖτε.

9 (Ὅτι ὁ καρπὸς τοῦ Πνεύματος ἐν πάντῃ ἀγαθῶν
τῇ ἐ δικαιοσύνῃ ὁ ἀληθεία.)

10 Δοκιμάζοντες τί ἐστὶν διαρέσει τῷ Κυρίῳ.

11 Καὶ μὴ συγκοινωνεῖτε τοῖς ἔργοις τοῖς ἀκαίροις
τοῦ σκότους, μᾶλλον δὲ ἐλέγχετε.

12 Τὰ γὰρ κρυφῇ γινόμενα ὑπ' αὐτῶν, ἀιχρὸν
ἐστὶ καὶ λέγειν.

13 Τὰ δὲ πάντα ἐλεγχόμενα, ὑπὸ τοῦ φω-
τός φανεροῦνται. πᾶν γὰρ τὸ φανερούμενον, φῶς
ἐστὶ.

14 Διὸ λέγει. Ἐγείρω ὁ καθάριον, ὁ ἀνάστα ὁ
τῷ νεκρῷ, ὁ ὁδηγῶν σοι ὁ Χριστός.

15 Βλέπετε ὅτι πῶς ἀκριβῶς περιπατεῖτε· μὴ ὡς
ἄσφατοι, ἀλλ' ὡς σφαίρι.

16 Ἐξά-

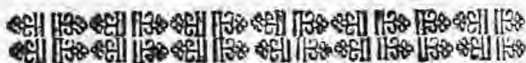
Κεφ. 5'. 6.

- 1 **Τ**Α τέκνα ὑπακούετε τοῖς κυρίοις ὡς ὁ κύριος ἡμεῶν· τὸ το γὰρ ἐστὶ δίκαιον·
- 2 Τίμα τὸν πατέρα σου καὶ τὴν μητέρα· (ἥτις ἐστὶ ἐντολὴ πρώτη ἐν ἐπαγγελίᾳ·)
- 3 ἵνα εὖ σοι γένηται, καὶ ἔσῃ μακροχρόνιος ὡς τὸς γὰρ·
- 4 Καὶ οἱ πατέρες μὴ παροργίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν, ἀλλ' ἐκτρέφετε αὐτὰ ἐν κυρίῳ καὶ ἐν διδαχαῖς κυρίου·
- 5 Οἱ ὅνλοι ὑπακούετε τοῖς κυρίοις κατὰ σάρκα, μετὰ φόβου καὶ τρόμου, ἐν ἀληθείᾳ τῆς καρδίας ὑμῶν, ὡς τῷ Χριστῷ·
- 6 Μὴ κατ' ὀφθαλμοδοσίᾳ ὡς ἀνθρωπάρεσκοι, ἀλλ' ὡς ὅνλοι τῷ Χριστῷ, ποιοῦντες τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ ἐκ ψυχῆς,
- 7 Μετ' ἀνυσίας δουλοῦντες τῷ κυρίῳ, ὡς ἀνθρώποις·
- 8 Εἰδότες ὅτι ὁ ἐάν τι ἔκαστος ποιήσῃ ἀγαθόν, τοῦτο κομιᾶται τοῦ κυρίου, ἢτε ὁ ὅνλος, ἢτε ἐλπίδης·
- 9 Καὶ οἱ κύριοι τὰ αὐτὰ ποιεῖτε πρὸς αὐτοὺς ἀπέναντες τῷ ἀπειλῶν, εἰδότες ὅτι καὶ ὑμῶν αὐτῶν ὁ κύριος ἐστὶν ἐν ὕμνοις, καὶ προσωποληψίας καὶ ἐν πνεύματι·
- 10 Τὸ λοιπὸν, ἀδελφοί μου, ἐνδυναμῶσθε ἐν κυρίῳ καὶ ἐν τῇ κτίσει τῆς ἰσχύος αὐτοῦ·
- 11 Ἐνδύσασθε τῷ πανοπλίῳ τοῦ Θεοῦ, πρὸς τὸ δύνασθαι ὑμᾶς στήναι πρὸς τὴν μεθοδεσίᾳ τῆς διαβολῆς·
- 12 Ὅτι ἡ ἐστὶν ἡμῖν ἡ πάλη πρὸς αἵμα καὶ σάρκα, ἀλλὰ πρὸς τὰς ἀρχάς, πρὸς τὰς ἐξουσίας, πρὸς τὴν κοσμοκράτιν καὶ τοῦ σκοτοῦ καὶ αἰσθητοῦ τῶν τῶν, πρὸς τὰ πνευματικὰ τῆς ποιηρίας ὡς τοῖς ἐκρημίοις·
- 13 Διὰ τῆτο ἀναλάβετε τὸν πανοπλίον τοῦ Θεοῦ, ἵνα δυναθῇτε ἀντιστῆναι ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ πανηγύρι, καὶ ἀπὸ τῶν κατεργασμένων τῶν·
- 14 Στήτε ὡς ἀρμυροὶ τῶν ἐσφύων ὑμῶν ἐν ἀληθείᾳ, καὶ ἐνδυσάμενοι τὸν θώρακα τῆς δικαιοσύνης,
- 15 Καὶ ὑποδησάμενοι τὴν πέδιλον ἐν ἐτοιμασίᾳ τοῦ εὐαγγελίου τοῦ εὐαγγελίου·
- 16 Ἐπὶ πάντων ἀναλαμβάνοντες τὸν θυρεὸν τῆς πίστεως ἐν ᾧ δυναθῆσθε πάντα τὰ βέλη τοῦ ποτηρῶ τὰ πεποιημένα σβέσθαι·

17 Καὶ

- 17 Καὶ τὴν πνευματικὴν τὴν σωτηρίαν δεξασθε, ἣν χάρις αὐτῆς τῷ πνεύματι, ὃ ἐστὶ ῥῆμα Θεοῦ.
- 18 Διὰ πάσης προσδύτης ἡ δεήσεως προσδύχομενοι παντὶ καιρῷ ἐν Πνεύματι, καὶ εἰς αὐτὸ τὸ ἄρτυντες ἐν πάσῃ προσκατερίσῃ ἡ δεήσει πρὸς πάντων τῶν ἁγίων,
- 19 Καὶ ὡς ἐρ ἐμῇ, ἵνα μοι δοθῇ λόγος ἐν ἀποτίσει σώματός μου ἐν πρῆξίᾳ, γνωρίσαι τὸ μυστήριον τῆς εὐαγγελίας,
- 20 Ὡς ἐρ ἡ προσβολὴ ἐν ἀλύσει, ἵνα ἐν αὐτῇ πρῆξωμαι, ὡς δεῖ με λαλῆσαι.
- 21 ἵνα ἡ εὐδοκία ἡ εὐδοκία ἡ εὐδοκία τὰ κατ' ἐμὲ, τί πράξω, πάντα ὑμῖν γνωρίσει Τυχικὸς ὁ ἀγαπητὸς ἀδελφός καὶ ἰσὸς διάκονος ἐν Κυρίῳ.
- 22 Ὁν ἐπεμψα πρὸς ὑμᾶς εἰς αὐτὸ τὸ, ἵνα ἴδωτε τὰ ὡς ἐμῶν, καὶ πρὸς καλέσῃ τὰς καρδίας ὑμῶν.
- 23 Εἰρήνη τοῖς ἀδελφοῖς καὶ ἀγάπη μετὰ πίστεως ἀπὸ Θεοῦ πατρὸς, καὶ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 24 Ἡ χάρις μετὰ πάντων τῶν ἀγαπώντων τὸν Κτῆν ἡμῶν Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν ἀφθαρσία. Ἀμήν.
- Πρὸς Ἐφεσίους ἐγράφη ἀπὸ Ῥώμης διὰ Τυχικῶ.





ΠΑΥΛΟΥ

Τῆς ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

Η' ΠΡΟΣ ΦΙΛΙΠΠΗΣΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

Κεφ. α'. ι.

Π Αὔλος καὶ Τιμόθεος δούλοι Ἰησοῦ Χριστοῦ,
πᾶσι τοῖς ἁγίοις ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, τοῖς
οὖσιν ἐν Φιλίπποις, σὺν ὑποσκόποις καὶ
Διακόνοις.

Ἡ χάρις ὑμῶν ἐκ εἰρήνης ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἡμῶν, ὁ
Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

Ἐὐχαριστῶ τῷ Θεῷ μου ὑπὲρ πάντων τῆς ἐλπίδος ὑ-
μῶν.

Ἐν πάσῃ δεήσει με ὑπὲρ πάντων ὑμῶν
μετὰ χαρᾶς τὴν δέξασιν ποιῶμενος,

Ἐπὶ τῇ κοινωνίᾳ ὑμῶν εἰς τὸ εὐαγγέλιον, ἀπὸ
πρώτης ἡμέρας ἄχρι ᾗ νῦν.

Πεποιθὼς αὐτὸ τοῦτο, ὅτι ὁ ἐναρξάμενος
ἐν ὑμῖν ἔργον ἀγαθόν, ὑπετελέσει ἄχρις ἡμερᾶς
Ἰησοῦ Χριστοῦ.

Καθὼς ἐστὶ δίκαιον ἐμοὶ τοῦτο φρονεῖν περὶ
πάντων ὑμῶν, διότι τὸ ἔχειν με ἐν τῇ καρδίᾳ
ὑμῶν, ἐν τε τοῖς δεσμοῖς μου, ἐν τῇ ἀπολογίᾳ, καὶ
βεβαιώσει τῆς εὐαγγελίας, συγκατανοοῦς με τῇ χάριτι
πάντας ὑμᾶς ὄντας.

Μάρτυς γάρ μου ἐστὶν ὁ Θεὸς ὡς ὑποποθῶ πάντας
ὑμᾶς ἐν σπλάγχνοις Ἰησοῦ Χριστοῦ.

Καὶ τοῦτο προσδύχομαι, ἵνα ἡ ἀγάπη ὑμῶν
ἐπὶ μᾶλλον καὶ μᾶλλον περισσάσῃ ἐν ἐπηγγελίᾳ καὶ
πάσῃ αἰσθήσει.

Εἰς τὸ δοκιμάζειν ὑμᾶς τὰς ἀποφάσεις
ταύτας, ἵνα ᾗτε εὐκρινεῖς καὶ ἀπρόσκοποι εἰς ἡμέραν
Χριστοῦ.

Πεπληρωμένοι καρπῷ δικαιοσύνης τῷ διὰ Ἰησοῦ
Χριστοῦ, εἰς ὅξαν ἐκπαῖνον Θεοῦ.

12 Γ-

12 Γινώσκεις δὲ ὑμᾶς βύλεται, ἀδελφεοί, ὅτι τὰ κη' ἐμὲ μᾶλλον εἰς προκοπὴν ἢ εὐαγγελίου ἐλάττωσιν.

13 Ὡς τὸν δεσμὸν μου φάμερον· ἐν Χριστῷ γινώσκειν ἐν ὅλῳ τῷ πραγματικῷ, καὶ τοῖς λοιποῖς τοῖσι.

14 Καὶ τοὺς πλείους τῶν ἀδελφῶν ἐν Κυρίῳ, ποιῶντας τοῖς δεσμοῖς μου, πλεονομέω· τοῖς μὲν ἀφ' ἑαυτῶν λόγον λαλεῖν.

15 Τινὲς μὲν ἐ' διὰ φθόνον ἐ' εἶναι· τινὲς δὲ ἐ' δι' ὀδοκίαν ἢ Χριστὸν κηρύσσουσιν.

16 Οἱ μὲν οὖν ἐ' ἐριθείας, ἢ Χριστὸν καταγγέλλουσιν ὅχι ἀγνοῶντες, οἰόμενοι θλίψιν ὑπφέρειν τοῖς δεσμοῖς μου.

17 Οἱ δὲ, ὅτι ἀγάπης, εἰδότες ὅτι εἰς ἀποκομίαν ἢ εὐαγγελίου καίμην.

18 Τί γάρ; πᾶσι πάντῃ τρόπῳ, εἴτε προφίται, εἴτε ἀληθεῖς, Χριστὸς καταγγέλλεται· ἐ' ἐν τούτῳ χαίρω, ἀλλὰ ἐ' χαρήσομαι.

19 Οἶδαι γάρ, ὅτι τοῦτο μοι ἀπρηξίται· οἷς σωτηρίαν διὰ τῶν ὑμῶν δεήσεως, καὶ ὑπακοῆς ἢ πνεύματος Ἰησοῦ Χριστοῦ.

20 Κατὰ τὴν ἀποκομιδα καὶ ἐλπίδα μου, ἐ' ἐν αὐτῇ ἀίσχυνθῆσθαι, ἀλλ' ἐν πάσῃ παύσασθαι, οἷς πάντες, καὶ νῦν μεγαλυνθῆται Χριστὸς ἐν τῷ σώματι μου, εἴτε διὰ ζωῆς, εἴτε διὰ θανάτου.

21 Ἐμοὶ γάρ τὸ ζῆν, Χριστός· ἐ' τὸ ἀποθάναι, κέρδος.

22 Εἰ δὲ τὸ ζῆν ἐν σαρκί, τοῦτο μοι κέρδος ἔσται· ἐ' τί ἀιρήσομαι, οὐ γνωρίζω.

23 Συνέχομαι γάρ ἐκ τῶν δύο, ἢ ὑπακούω ἢ ἔχω· οἷς τὸ ἀναλυσθαι, ἐ' σὺν Χριστῷ εἶναι· πολλῶν γάρ μάλ·λον κέρδος.

24 Τὸ ὅτι ὑπακούω ἐν τῇ σαρκί, ἀναγκαιότερον δι' ὑμᾶς.

25 Καὶ τοῦτο πεποιθώς οἶδα, ὅτι μενᾶ ἐ' συμπεριλαμβανῶ πάντιν ὑμῖν, εἰς τὴν ὑμῶν προκοπὴν ἐ' χάριν τῆς πίστεως.

26 Ἰνὰ τὸ καύχημα ὑμῶν πλεονεύῃ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ ἐν ἐμοί, διὰ τῆς ἐμῆς παρητείας πάλιν πρὸς ὑμᾶς.

27 Μόνον ἀξίας ἢ εὐαγγελίου τοῦ Χριστοῦ πολιτεύομαι, ἵνα εἴτε ἐλθὼν καὶ ἰδὼν ὑμᾶς, εἴτε ἀπὸς, ἀκούσῃ τὰ πρὸς ὑμῶν, ὅτι σῆκετε ἐν ἐνὶ πνεύματι, μὴ ψυχῇ συναδουντες τῇ πίσει ἢ εὐαγγελίῳ.

28 Καὶ μὴ πειρομένοι ἐν μαδινὶ ὑπὸ τῶν ἀντικειμένων· ἥτις οἱ τοῖς μὲν ἐστὶν ἐνδοξία ἀπωλείας, οἷς σωτηρίας, ἐ' τοῦτο ἀπὸ Θεοῦ.

29 Ὁ π ὑμῖν εὐχαρίσθη τὸ ὑπὲρ Χρυσῶ, ἐν μ
την τὸ εἰς αὐτὸν πιστεύειν, ἀλλὰ καὶ τὸ ὑπὲρ αὐ
τῶ πάσχειν.

30 Τὸν αὐτὸν ἀγγέλου ἔχοντες ὅτον ἴδετε ἐν ἐμοί.
 Ὁ γὰρ ἀκούετε ἐν ἐμοί.

КфФ. 8. 2.

1 Εἰ¹ τις ἦν παράκλησις ἐν Χριστῷ, ἢ ἐν πνεύματι
 ἁγίῳ ἀγάπης, ἢ ἐν κοινωνίᾳ πνεύματος, ἢ
 τινι συμπάσχει καὶ οἰκτιρμοί,

2 Πληρώσατέ με τῇ χαρᾷ, ἵνα τὸ αὐτὸ φρονή-
τε, τῇ αὐτῇ ἀγάπῃ ἔχοντες, σύμφυχοι, τὸ
φρονήτες.

3 Μῆδ' ἴν' κατὰ ἐρίθμῳ, ἢ κενοδοξίαν, ἢ
λατῇ τῇ ταπηνοφροσύνῃ ἀλλήλους ἡγούμενοι ὑπερί-
τας ἑαυτῶν.

4 Μὴ τὰ ἑαυτῶν ἕκαστος σκοπεῖτε, ἀλλὰ ἐν τῷ ἑαυτοῦ ἕκαστος.

5 Τὴν γὰρ φρονέσθω ἐν ὑμῖν, ὃ καὶ ἐν Χρ
 5 ὧ Ἰησῷ.

6 Ὅς ἐν μορφῇ Θεοῦ ὑπάρχων, ἔχ' ἀπαγμιὸν ἐν
 αὐτῷ τὸ εἶναι ἴσα Θεῷ.

7 Ἀλλ' εὐτόν ὅς ἐστιν, μορφῇ δούλου λαβὼν, ἐν ἡμῶν ἀνθρώπων νόσος.

8 Καὶ χήματι εὐρεθεὶς ὡς ἄνθρωπος, ἐταπείνω-
σαυτὸν, καὶ ὀνόματος ὑπὸ φόβου μέχρι θανάτου, θανάτου
ἵταυρῆ.

9 Διὸ καὶ ὁ Θεὸς αὐτὸν ὑπερύψωτε, ἐν ἡχαρίσταις
αὐτοῦ ὄνομα τὸ ὑπὲρ πάντων ὀνομάτων.

[illegible]

11 Καὶ πάντα γλῶσσα ὁμολογήσεται ὅτι Κύριος Ἰη-
σοῦς Χριστός, εἰς δόξαν Θεοῦ Πατρὸς.

12 Ὡς, ἀγαπῆτοί μιν, καθὼς πάντοτε ὑπῆχοντες,
ὡς ἐν τῇ παρουσίᾳ μιν μένου, ἀλλὰ νῦν πολλὰ μέλλου
ἐν τῇ ἀπυσίᾳ μιν, μὴ φόβη εἰς τρέμν τῶ ἐαυτοῦ
σωτηρίαν κατεργάζεσθε.

13 Ὁ Θεὸς γὰρ ἐστὶν ὁ ἐνεργῶν ἐν ὑμῖν ἐπὶ τὸ δοῦν
ἐπὶ τὸ ἐνεργεῖν, ὑπὲρ πάντων εὐδοκίας.

14 Πάντα ποιεῖτε χωρὶς γογγυσμῶν καὶ διαλογισμῶν·

35 ἵνα γένησθε ἄμεμπτοι & ἀκέραιοι, τέκνα τοῦ
ἀγαθοῦ ἐν μέσῳ ὧν ἡ ἀγάπη συνδιατείνεται & διεσπασμένη
ἐν οἷς φαίνεσθε ὡς φωστῆρες ἐν κόσμῳ,

16 Λόγον ζωῆς ἐπέχοντες, εἰς καὶ ἄλλοις ἡμῶν
ἀμέλειν Χρὶστῷ, ὅτι καὶ εἰς πατὸν Ἰδραμον, καὶ
ἀλλοῖς ἐκδοίμεθα.

37 $\Lambda^{\circ}\lambda\lambda^{\circ}$

17 Αλλ' ἐ καὶ ἀπένδομαι ὑπὲρ τῆς θυσίας ἕνεκα
ἐργίας τῆς πίστεως ὑμῶν, χαίρω καὶ συγχαίρω περὶ
ὑμῶν.

18 Τὸ δ' αὐτὸ ἔ ὑμεῖς χαίρετε, ἔ συγχαίρε-
τε μοι.

19 Ἐλπίζω ἔ ἐν Κυρίῳ Ἰησοῦ, Τιμέθεον τα-
χύως πέμψαι ὑμῖν, ἵνα καὶ γὰρ ἀψυχῶς, γνέσ τὰ
ὑμῶν.

20 Οὐδεὶς γὰρ ἔχω ἰσόψυχον, ὅστις γνησίως τὰ πρὸς
ὑμῶν μεριμνήσει.

21 Οἱ πάντες γὰρ τὰ ἑαυτῶν ζητοῦσιν, ὡς τὰ τοῦ Χρισ-
τοῦ Ἰησοῦ.

22 Τίω ἔ δοκιμῶν αὐτῶν γινώσκετε, ὅτι ὡς πατερί-
σκον, σὺν ἐμοὶ ἐκλόυσεν εἰς τὸ εὐαγγέλιον.

23 Τοῦτον μὲν οὖν ἐλπίζω πέμψαι, ὅς ἂν ἀπὶ τοῦ
πρὸς ἐμε, ἔσται.

24 Πέποιθα ἔ ἐν Κυρίῳ, ὅτι ἔ αὐτὸς ταχύως
ἐλεύσεται.

25 Ἀναγκαῖον δὲ ἡγησάμην ἑταφρόδιτον τὸν
ἐλθεῖν καὶ συνεργὸν καὶ συσρατιώτην μου, ὑμῶν
ἐκπέμπων, ἔ λειτουργῶν τῆς χάριτος μου, πέμ-
ψαι πρὸς ὑμῶς.

26 Ἐπειδὴ ἔπιποθῶν ἦν πάντας ὑμῶς, ἔ ἀδμοναῖν,
ἵνα ἡκούσῃτε ὅτι ἔσθ' ἐθέλησε.

27 Καὶ γὰρ ἔσθ' ἐθέλησε παραπλήσιον θανάτῳ· ἀλλ' ὁ
κύριος αὐτὸν ἔλῃσεν· οὐκ αὐτῶν δὲ μόνον, ἀλλὰ ἔ ἐμὲ,
ὡς μὲν λύπῳ ὑπὲρ λύπῃ καὶ.

28 Σπένδαιοτέρως οὖν ἐπέμψα αὐτῶν, ἵνα ἰδόντες αὐ-
τῶν, χαρῆτε, καὶ γὰρ ἀλυπότερος ὢ.

29 Προσδέχεσθε οὖν αὐτὸν ἐν Κυρίῳ μὲν πάσης χα-
ρίτος ἔ τοὺς ποιούτας ἐντίμους ἔχετε.

30 Ὅτι διὰ τὸ ἔργον τοῦ Χριστοῦ μέχρι θανάτου ἔγ-
γενηται, παραβλαβόμενος τῇ ψυχῇ, ἵνα ἀναπληρώσῃ τὸ
ὑμῶν ὑστέρημα τοῦ πρὸς με λειτουργίας.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Τ**Ο λοιπὸν, ἀδελφοί μου, χαίρετε ἐν Κυ-
ρίῳ· τὰ αὐτὰ γράφειν ὑμῖν ἐμοὶ μὲν οὐκ
ἐστιν, ὑμῖν δὲ ἀσφαλές.

2 Βλέπετε τοὺς κύνας, βλέπετε τοὺς κακοὺς ἐργά-
τας, βλέπετε τῶν κατατομῶν.

3 Ἡμεῖς γὰρ ἐσμεν ἡ πειρασμοῦ, οἱ πλούματι Θεῷ
ἐκτιμώμενοι, ἔ καυχώμενοι ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ ἔ ἐν
ἐκτῇ σαρκὶ πεποιθότες.

4 Καίτερ ἐγὼ ἔχων πεποιθήσιν ἔ ἐν σαρκί. Εἴ τις
ἄλλος πεποιθέναι ἐν σαρκί, ἐγὼ μὴ ἔχω.

5 Πειρασμοῦ ὀκταήμερος, ὡς γενεὴ Ἰσραὴλ,
φυλῆς

φωλῆς Βενιαμίν, Ἐβραῖος ὃς Ἐβραίων, κατὰ νόμον
φαισκάας.

6 Κατὰ ζῆλον διώκων τὴν ἐκκλησίαν, καὶ δικαιοσύ-
νην τὴν ἐν νόμῳ ὑμώμενος ἀμεμπτος.

7 Ἀλλ' ἄτινα ᾧ μοι κέρδη, τούτῳ ἡγῆμαι διὰ τοῦ
Χριστοῦ ζημίαν.

8 Ἀλλὰ μενοῦνγε ἔῃ ἡγῆμαι πάντα ζημίαν ἡν
διὰ τὸ ὑπερέχον τὴν γνώσεως Χριστοῦ Ἰησοῦ καὶ Κυρίου
μου, δι' ὃν τὰ πάντα ἐζημιώθην, ἔῃ ἡγῆμαι σκοτα-
λα εἶναι, ἵνα Χριστὸν κερδήσω,

9 Καὶ εὐρέθω ἐν αὐτῷ, μὴ ἔχων ἐμὴν δικαιοσύνην
τὴν ἐκ νόμου, ἀλλὰ τὴν διὰ πίστεως Χριστοῦ, τὴν ἐκ
Θεοῦ δικαιοσύνην ἥτις ἐστὶν ἡ πίστις.

10 Τὴν γινώσκαι αὐτόν, ἔῃ τὴν δύναμιν τὴν ἀναστήσει
αὐτόν, ἔῃ τὴν κοινωνίαν τῇ παθημάτων αὐτοῦ, συμ-
μορφούμενος τῷ θανάτῳ αὐτοῦ.

11 Εἴπως καταρτίσω εἰς τὴν ἡδυστάσιον τῷ νεκρῷ.

12 Οὐχ ὅτι ἤδη ἔλαβον, ἢ ἤδη τετελείωμαι· δι-
καιὸν ἔτι ἔκ καταλάβω, ἐφ' ᾧ καὶ κατελήφθην ὑπὸ τοῦ
Χριστοῦ Ἰησοῦ.

13 Ἀδελφοί, ἐγὼ ἐμαυτὸν ἐλογίζομαι κατη-
φέναι.

14 Ἐν ᾧ, τὰ μὲν ὀπίσω ὑπερβανθαιόμην, τοῖς
ἔμπροσθεν ἐτεκταινόμενος κατὰ σκοπὸν διώκων εἰς
τὸ βραβεῖον τὴν ἀνω κλήσεως τοῦ Θεοῦ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

15 Ὅσοι ἐν τέλει, ἥτο φρονόμεν· ἔῃ ἡτι ἐτίμω
φροῦντε, καὶ τούτῳ ὁ Θεὸς ὑμῖν ἀποκαλύψῃ.

16 Πάλιν εἰς ὃ ἐφθάσαμεν, τῷ αὐτῷ σοιχεῖν κατε-
ν, τὸ αὐτὸ φρονεῖν.

17 Συμμιμηταὶ μοι γίνεσθε, ἀδελφοί, ἔῃ σκοποῦ-
τοὺς οὕτω περὶ ταπεινότητας, καθὼς ἔχετε τύπον ἡμῶν.

18 Πολλοὶ γὰρ περὶ ταπεινότητος, οὗς πολλάκις ἐλέγη
ὑμῖν, τῶν ἔκ κλαίων λέγω, τοὺς ἐχθροὺς τοῦ ταπεινοῦ
τοῦ Χριστοῦ.

19 Ὡς τὸ τέλος ἀπώλεια, ὡς ὁ Θεὸς ἡ κοιλία, ἔῃ
ἡ δόξα ἐν τῇ αἰσχύνῃ αὐτοῦ, οἱ τὰ ἐπίγεια φρο-
νούντες.

20 Ἡμεῖς γὰρ τὸ πολίτευμα ἐν οὐρανοῖς ὑπάρχομεν,
ὃς οὐ καὶ σωτὴρα ἀπεδεχόμεθα Κυρίον Ἰησοῦν
Χριστόν.

21 Ὅς μετασχηματίσῃ τὸ σῶμα τὴν ταπεινότητος ἡ-
μῶν, εἰς τὸ ἡμεῖς αὐτὸ σύμμορφον τῷ σώματι
τοῦ θέντος αὐτόν, κατὰ τὴν ἐνέργειαν καὶ δύνασθαι αὐτόν
ὑπετάξαι ἑαυτῷ τὰ πάντα.

Κεφ. δ' 4.

1 Ω "Στε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί καὶ ὑπηρέθι-
τοι, χαρὰ ἔσται ὑμῶν, ὅτι ἔτι σήμερον
ἐν Κυρίῳ, ἀγαπητοί.

2 Ευαδίζω πάντας, καὶ συντύχλω παρακαλῶ τὸ
αὐτὸ φρονεῖν ἐν Κυρίῳ.

3 Καὶ ἐρωτῶ καὶ σε σύζυγε γνήσιε, συλλαμβάνει
ὑμᾶς, αὐτίνες ἐν τῷ εὐαγγελίῳ συνήδησαν μοι, καὶ
ὁ Κλήμεντος καὶ τῶν λοιπῶν συνεργῶν μου, ὧν τὰ ὀνό-
ματα ἐν βίβλῳ ζῶσι.

4 Χαίρετε ἐν Κυρίῳ πάντοτε * πάλιν ἐρᾶτε,
χαίρετε.

5 Τὸ ὑπηρετῆσαι ὑμῶν γνωσθήτω πᾶσιν ἀνθρώποις *
ὁ Κύριος ἡμῶν.

6 Μὴ δει μεριμνᾶτε. ἀλλ' ἐν παντί τῇ προσδοκίᾳ καὶ
τῷ δεῖται κατὰ εὐχαριστίας τὰ αἰτήματα ὑμῶν γνωρίζε-
σθαι πρὸς τὸν Θεόν.

7 Καὶ ἡ εἰρήνη τοῦ Θεοῦ ἡ ὑπερέχουσα πάντα νοῦν,
κατασπασθῆσαι τὰς καρδίας ὑμῶν καὶ τὰ νοήματα ὑμῶν ἐν
Χριστῇ Ἰησοῦ.

8 Τὰ λοιπὰ, ἀδελφοί, ὅσα ἐσὶν ἀληθῆ, ὅσα
γεννά, ὅσα δίκαια, ὅσα ἀγαθὰ, ὅσα προσφιλή, ὅσα
ἐνδοκίμα, ἢ τις ἀρετὴ καὶ ἢ τις ἐπαινος, ταῦτα
λογίζεσθε.

9 Ἄ καὶ ἐμύθετε καὶ παρελάβετε, καὶ ἠκούσατε, καὶ
ἡκούσατε ἐν ἐμοί, ταῦτα πράττετε, καὶ ὁ Θεὸς τοῦ
εἰρήνης μετὰ ὑμῶν.

10 Εὐχαρίσω δὲ ἐν Κυρίῳ μεγάλως, ὅτι ἤδη ποτὲ
ἀνεδάτε τὸ ὑπὲρ ἐμοῦ φρονεῖν * ἐφ' ᾧ καὶ ἐφροσύνετε,
καταμνησθῆτε δέ.

11 Οὐχ ὅτι κατὰ ὑσέρησιν λέγω * ἐγὼ γὰρ ἐμαυτὸν,
ἐν ᾧ καὶ ἐμὴ, αὐτάρκης εἶναι.

12 Οἶδα δὲ ταπεινωθῆναι, οἶδα καὶ περιστεύειν * ἐν
παντί καὶ ἐν πᾶσι μεμυῖσθαι καὶ χορτάζεσθαι καὶ πεινᾶν,
καὶ περιστεύειν καὶ ὑσέρησθαι.

13 Πάντα ἰσχύω ἐν τῷ ἐνδυναμοῦντί με Χριστῷ.

14 Πλὴν καλῶς ἐποίησατε, συγκοινωνήσατέ με
τῷ θλίψει.

15 Οἶδατε δὲ καὶ ὑμεῖς, Φιλιππησίαι, ὅ-
τι ἐν ἀρχῇ τοῦ εὐαγγελίου, ὅτε ἤλθον εἰς
τὴν Μακεδονίαν, οὐδεμία μοι ἀσπασία ἐκοινώ-
νησεν εἰς λόγον δούτιος καὶ λήψεως, εἰ μὴ ὁ
κύριός μου.

16 Ὅτι καὶ ἐν Θεσσαλονίκῃ καὶ ἄπαξ καὶ δις καὶ τῶν
ἄλλων μοι ἐπέμψατε.

17 Οὐχ ὅτι ἐπιζητῶ τὸ δόγμα, ἀλλ' ἐπι-
ζητῶ

ζητῶ τὸν καρπὸν τὸν πλεονάζοντα εἰς λόγον ἡμῶν.

18 Ἀπέχω δὲ πάντα, καὶ περιούσιω· πε-
πληρωμαι, δεξιῆς ἡδὲ ἑπαφροδίτου τὰ παρ'
ὑμῶν, ὅσμιω διαδίας, θυσιῇ δεκτικῇ, δύναν-
τον πρὸ Θεοῦ.

19 Ὁ δὲ Θεὸς μου πληρώσει πάντων χρειῶν
ὑμῶν κατὰ τὸν πλοῦτον ἰσχύος, ὃν δέξη, ὃν Χρισ-
τῷ Ἰησοῦ.

20 Τῷ ὅ Θεῷ ὁ πατὴρ ἡμῶν ἡ δόξα εἰς τὰς αἰ-
ῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.

21 Ἀσπάσασθε πάντα ἅγιον ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ. ἀ-
σπάζονται ὑμεῖς οἱ σὺν ἐμοὶ ἀδελφοί.

22 Ἀσπάζονται ὑμεῖς πάντες οἱ ἅγιοι, καί τις δὲ
οἷ ὅτι ὁ Καίσαρος οἰκίας.

23 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μὴ πάν-
των ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Φιλιππησίους ἐγράφη ἀπὸ Ρώμης δι' ἑ-
παφροδίτου.



ΠΑΥ.

ΠΑΥΛΟΥ

τῷ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

Ν ΠΡΟΣ ΚΟΛΑΣΣΑΒΙΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

Κεφ. α'. ι.

- 1 **Π** Αὐλὸς Ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ, διὰ
 θελήματος Θεοῦ, καὶ Τιμοθέου ὁ
 ἀδελφός,
- 2 Τοῖς ἐν Κολοσσαῖς ἁγίοις ἔ πιστοῖς ἀδελφοῖς ἐν
 Χριστῷ. Χάρις ὑμῖν ἔ εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἡμῶν,
 καὶ Κυρίου Ἰησοῦ.
- 3 Εὐχαριστῶ μὲν τῷ Θεῷ ἔ Πατρὶ ᾧ Κυρίῳ ἡμῶν
 Ἰησοῦ Χριστῷ, πάντοτε ὡς ὑμῶν προσδύχομενοι.
- 4 Ἀκῆσάρτες τῷ πρίν ὑμῶν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ἔ
 τῷ ἀγάπῃ τῷ εἰς πάντας τὰς ἁγίας,
- 5 Διὰ τῷ ἐλπίδα τῷ ἀποκειμένῳ ὑμῖν ἐν τοῖς
 αἰῶσι, ὡς προηέστατε ἐν τῷ λόγῳ τῷ ἀληθείας τοῦ
 εὐαγγελίου,
- 6 Τῷ παρόντος εἰς ὑμᾶς, καθὼς ἔ ἐν παντί τῷ
 κόσμῳ, ἔ ἐστὶ καρποφορούμενον, καθὼς ἔ ἐν ὑμῖν,
 ὡς ἡμέρας ἠέσασατε ἔ ἐπέγνωτε τῷ χάριν τοῦ
 Θεοῦ ἐν ἀληθείᾳ.
- 7 Καθὼς ἔ ἐμείδετε ἀπὸ Ἐπαφροῦ τῷ ἀγαπητοῦ
 τοῦ ὄντος ἡμῶν, ὅς ἐστὶ πιστὸς ὑπὲρ ὑμῶν διακονοῦς τῷ
 εὐαγγελίῳ.
- 8 Ὁ καὶ δηλώσας ἡμῖν τῷ ὑμῶν ἀγάπῃ ἐν
 τῷ κόσμῳ.
- 9 Διὰ τῷ τῷ ἡμῖν, ἀφ' ἧς ἡμέρας ἠέσασαμεν, ἡ
 πρῶτα ὑμῶν προσδύχομενοι, ἔ αἰτήρηται ἵνα
 πληροφοῆτε τῷ ἐπίγνωσιν τῷ θελήματος αὐτοῦ ἐν πίστι
 τῷ εὐαγγελίῳ ἔ συνέσει πνευματικῇ.
- 10 Περιπατῆσαι ὑμᾶς ἀξίως τῷ Κυρίῳ εἰς πᾶσαν ἀ-
 ντιστοιχίαν, ἐν παντί ἔργῳ ἀγαθῷ καρποφορεῖτες ἔ αἰ-
 σιμαίνοντες εἰς τῷ ἐπίγνωσιν τῷ Θεῷ.

Σ

11 Εἰ

11 Εἰς πάσα δυνάμει δυνάμεισιν καὶ τὸ κράτος
τὸ δόξης αὐτῆς, εἰς πάσας ὑπομοναίς & μακροθυμίαις
καὶ χαρῶν.

12 Εὐχαριστοῦντες τῷ Πατρὶ τῷ ἰκανώσαντι ἡμᾶς
τῷ μέλει δὲ καὶ πληρῶν τῷ ἁγίῳ ἐν τῷ φωτί.

13 Ὅς ἐξ ὧν ὕστατον ἡμᾶς ἐκ τῆς ἁκαθαρσίας τῆς σαρκὸς
καὶ μετέστην εἰς τὴν βασιλείαν καὶ τῆς ἀγαθότητος
αὐτῆς.

14 Εἰς ᾧ ἔχαμεν τὴν ἀπολύτρωσιν διὰ τοῦ αἵματος
αὐτῆς, τῷ ἁφέσει τῶν ἀμαρτιῶν.

15 Ὅς ἐστὶν ἐκείνῳ καὶ Θεῷ καὶ ἀοράτῳ, πρωτότοκος
πάντος κτίσεως.

16 Ὅτι ἐν αὐτῷ ἐκτίσθη τὰ πάντα τὰ ἐν τοῖς
οὐρανοῖς & τὰ ἐπὶ τῆς γῆς, τὰ ὁρατὰ & τὰ ἀόρατα,
ἢτε θρόνοι, ἢτε κυριότητες, ἢτε ἀρχαί, ἢτε ἡγεμονίαι·
τὰ πάντα δι' αὐτῆς & εἰς αὐτὴν ἐκτίσθη.

17 Καὶ αὐτὸς ἐστὶ πρὸ πάντων, καὶ τὰ πάντα ἐν αὐτῷ
τῷ συνέστηκε.

18 Καὶ αὐτὸς ἐστὶν ἡ κεφαλὴ καὶ σώματος τοῦ ἐκκλη-
σίας, ὅς ἐστιν ἀρχὴ πρωτότοκος ἐκ τῶν νεκρῶν, ὃν
γενέται ἐν πάσιν αὐτὸς πρωτόγονος.

19 Ὅτι ἐν αὐτῇ ἀνέθεκε πᾶσι τὸ πλήρωμα κατὰ
τὴν χάριν.

20 Καὶ δι' αὐτῆς ἀποκαταλλάξαι τὰ πάντα εἰς αὐτὴν,
ἐξομολογήσας διὰ τῆς ἀμαρτίας καὶ σαυρῶν αὐτῆς, δι' αὐτῆς,
ἢτε τὰ ἐπὶ τῆς γῆς, ἢτε τὰ ἐν τοῖς οὐρανοῖς.

21 Καὶ ὑμεῖς ποτε ὄντες ἀπηλλοτριωμένοι & ἐξ-
θρόνοι τῆς διαγωγῆς ἐν τοῖς ἐργοῖς τοῖς πονηροῖς, οὐκ
ἀποκαταλλάξετε.

22 Ἐν τῷ σώματι τῷ σαρκὶ αὐτῇ, διὰ τοῦ θανάτου,
ἐκρυσθῆναι ὑμᾶς ἁγίους & ἀμώμους & ἀπερὶ καλῆς κα-
τασκευῆς αὐτῆς.

23 Εἴγε ὑπομείνετε τῇ πίσει τῆς ἐπιθυμίας
καὶ ἰδρύοι, καὶ μὴ μετακινουμένοι ἀπὸ τῆς ἐπι-
πίσεως τοῦ ἀγγελίου ἡ ἀκρόασις, καὶ κενυθῆναι
τοὺς ἐν πάσῃ τῇ κτίσει τῇ ὑπὸ τὸν οὐρανόν· ἡ ἐγὼ
μὲν ἐγὼ Παῦλος διάκονος.

24 Νῦν χαίρω ἐν τοῖς παθήμασι μου ὑπὲρ ὑμῶν,
καὶ ἀνταναπληρῶ τὰ ὑστερήματα τῶν θλίψεων καὶ Χρυσ-
τοῦ ἐν τῇ σαρκί μου, ὑπὲρ τοῦ σώματος αὐτοῦ, ὃ ἐστὶν
ἡ ἐκκλησία.

25 Ἡ ἐγὼ ἐν ὅλῳ ἐγὼ διάκονος κατὰ τὴν εὐαγγελί-
ον καὶ Θεῷ, τῷ δοθῆσά μοι εἰς ὑμᾶς, πληρῶσαι
τὸν λόγον καὶ Θεῷ.

26 Τὸ μυστήριον τὸ ἀποκρυφθέν ἀπὸ τῶν αἰώνων
καὶ ἀπὸ τῶν ἡγετῶν, οὐκ ἐφανερώθη τοῖς ἀ-
γίοις αὐτῆς.

27 Ὅτις ἠθέλησαν οἱ Θεοὶ γνωρίσαι τοῖς ὁ πᾶσι
ἐξ ὧν καὶ μυστήριον πάντων ἐν τοῖς αἰῶσι, ὅς ἐστι Χρυσ-
τὸς ἐν ὑμῖν, ὃς ἐλπίζει ἐξ ὧν.

18 Ὅν ἡμεῖς καταγγέλλομεν, καθεστῶτες πάντα
 θρόνον, & διδάσκοντες πάντα ἄνθρωπον ἐν πάσῃ
 φιλίᾳ, ἵνα ᾤψασθῶμεν πάντα ἄνθρωπον τέλειον ἐν
 ἑαυτῷ Ἰησοῦ.

29 Εἰς ὃ & κατὰ, ἀγωνιζόμενος κατὰ τὴν ἐν-
 ἐργασίᾳ καὶ ἐνεργείᾳ ἐν ἐμοὶ ἐν δυνάμει.

Κεφ. β' 2

1 Εἰς τὸν ὅτι ὑμεῖς εἰδέναι ἠέλικον ἀγ-
 νικ ἐχὼ περὶ ὑμῶν, καὶ τῶν αὐ-
 τοδικῶν, καὶ ὅσοι οὐχ ἐώρακασι τὸ πρόσωπόν μου
 σαρκί.

2 ἵνα ᾤψασθῶσιν αἱ καρδίαι αὐτῶν, συμβιβασθέν-
 ται ἐν ἀγάπῃ, & εἰς πάντα πλῆτον & πληροφορίας &
 οὐκ ἐν ἐπίγνωσιν & μυστηρίῳ τοῦ Θεοῦ & Πα-
 τρός & τοῦ Χριστοῦ.

3 Ἐν ᾧ εἴσι πάντες οἱ θησαυροὶ & σοφίας & &
 ἡσυχίας ἀποκρυφοί.

4 Τὴν ὅτι λέγω ἵνα μή τις ὑμῶν παραλογίζεται ἐν
 ἡδονολογίᾳ.

5 Εἰ γὰρ & τῇ σαρκὶ ὤπαμι, ἀλλὰ τὴν πειρασ-
 τὴν ὑμῶν ἐμὴ, χαίρων & βλέπων ὑμῶν τῶν τάξιν, &
 ἐρεῖν καὶ ἐν Χριστῷ πίστεως ὑμῶν.

6 Ὡς ἂν παρελάβετε & Χριστὸν Ἰησοῦν & Κύριον,
 αὐτὸν ᾤψασθε.

7 Ἐρριζομένοι καὶ ἐποικοδομημένοι ἐν αὐτῷ, & θε-
 μιῶν ἐν τῇ πίστει, καθὼς ἐδιδάχθητε, ᾠκισμένοι
 ἐν αὐτῇ ἐν ὀψιμασίᾳ.

8 Βλέπετε μή τις ὑμῶν ἔσται ὁ συναγωγῶν διὰ
 φιλοσοφίας καὶ κενῆς ἀπάτης, κατὰ τὴν παράδο-
 σιν τοῦ ἀνθρώπου, κατὰ τὰ τοιχῆα τοῦ κόσμου, &
 τοῦ Χριστοῦ.

9 Ὅτι ἐν αὐτῷ κατοικῇ πᾶν τὸ πλήρωμα τοῦ Θεοῦ
 συμπληρῶς.

10 Καὶ ἐστὶ ἐν αὐτῷ πεπληρωμένοι, ὅς ἐστιν ἡ κεφα-
 λὴ τοῦ σώματος & ἡσυχίας.

11 Ἐν ᾧ & ᾠκισμένοι καὶ ᾠκισμένη ἀχειροποιήται,
 ἐν τῇ ἀπεικονιστῇ τοῦ σώματος τῶν ἀμικρῶν & σαρκός,
 ἐν τῇ ᾠκιστῇ τοῦ Χριστοῦ.

12 Συνταφύετε αὐτῷ ἐν τῇ βαπτίσματι, ἐν ᾧ καὶ συ-
 νεσταύθητε διὰ τῆς πίστεως & ἐνεργείας τοῦ Θεοῦ & ἐν-
 ἑργίας αὐτοῦ ὅς ἐστιν τῶν νεκρῶν.

13 Καὶ ὑμῶν νεκρῶν ἔσται ἐν τοῖς παραπτώ-
 μεσι καὶ τῇ ἀκροβυσσίᾳ τῆς σαρκὸς ὑμῶν, συνε-
 σταύθητε σὺν αὐτῷ, χαλεπόμενος ὑμῶν πάντα τὰ πα-
 ραπτώματα.

14 Ἐξαλείψας τὸ κατ' ἡμῶν χειρόγραφον τοῦ
 S 2 δόγμα-

δύματα, ὃ ἡμετέρας ἡμῶν, ὃ αὐτὸ ἦρκεν
μετὰ, προσηλώσας αὐτὸ τῷ σωρῶ.

15 Ἀπεκδυσάμενος τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς ἐξου-
σίαις ἐδουμάτισεν ἐν παρρησίᾳ, θριαμβώσας αὐτὸς
αὐτῷ.

16 Μὴ ὦν τις ὑμᾶς κρινέτω ἐν βρώσει, ἢ ἐν πο-
τῇ ἐν μέρει ἐορτῆς, ἢ κυμνίας, ἢ σαββάτων.

17 Ἀ' ἐστὶ σκία τῆς μελλόντων, τὸ ὅτι
τῷ Χριστῷ.

18 Μηδεὶς ὑμᾶς καταβραβάετω θύλων ἐν
πεινοφροσύνῃ καὶ θρησκείᾳ τῆς ἀγγέλων, ἃ μὴ
ῥηκεν ἐμβολύων, ἐκῆ φυσίμυρος ὑπὸ τῷ πνεύματι
σαρκὸς αὐτοῦ.

19 Καὶ ἡ κρατὶς τῷ κεφαλῇ, ὡς ἡ πλὴν τοῦ
μα διὰ τῆς ἀφ᾽ ἑαυτοῦ συνδέσμων ἐπιχορηγούμενον
ἐμβαλόμενον, ὡς τῷ αὐξήσει τῷ Θεῷ.

20 Εἰ ὦν ἀπεθάρτυτε σὺν τῷ Χριστῷ ἀπὸ τῆς
χάριος τῷ κόσμῳ, ἢ ὡς ζῶντες ἐν κόσμῳ δο-
τεῖσθε.

21 Μὴ ἄψυχοι, μηδὲ γεύση μηδὲ θύγης.

22 Ἀ' ἐστὶ πάντα εἰς φθορὰν τῇ ἀποχῇ σῆς, καὶ
ἐπτάματα ὡς διδασκαλίας τῆς ἀνθρώπων.

23 Ἀ' τίτλα ἐστὶ λόγον μὲν ἔχοντα σοφίαν
ἐφελοθρησκείᾳ καὶ ταπεινοφροσύνῃ καὶ ἀφειδίᾳ
μυκτοῦ, οὐκ ἐν τιμῇ τινι πρὸς πλησμονῇ
σαρκός.

Κεφ. γ'. 3.

1 Εἰ ὦν συνηγέρθητε τῷ Χριστῷ, τὰ ἄνω
καίτε, ὡς ὁ Χριστὸς ἐστὶν ἐν δεξιᾷ τοῦ
πατρὸς.

2 Τὰ ἄνω φρονεῖτε, μὴ τὰ ὑπὲρ τῆ γῆς.

3 Ἀπεθάρτυτε γὰρ, ὡς ἡ ζωὴ ὑμῶν κέκρυπται σὺν
τοῦ Χριστοῦ ἐν τῷ Θεῷ.

4 Ὅταν ὁ Χριστὸς φανερωθῇ, ἡ ζωὴ ὑμῶν,
ὡς ὑμεῖς σὺν αὐτῷ φανερωθήσεθε ἐν δόξῃ.

5 Νεκρώσατε ὡν τὰ μέλη ὑμῶν τὰ ὑπὲρ τῆ γῆς,
καὶ τὰς ἀκαθαρσιῶν, πάθος, ὑπιδουρίων κακῶν, ὡς
πλεονεξίαν, ἣτις ἐστὶν εἰδωλολατρεία.

6 Δι' ἃ ἔρχεται ἡ ὀργὴ τοῦ Θεοῦ ὑπὲρ τῆς υἱᾶς
ἀπειθείας.

7 Ἐν οἷς καὶ ὑμεῖς πελατηθήσατέ ποτε, ὅτι ἐξ
ἐν αὐτοῖς.

8 Νυνὶ ὅμως ἀποθεσθε ὡς ὑμεῖς τὰ πάντα, ἰδού
θυμὸν, κακίαν, βλασφημίαν, αἰσχρολογίαν ἐκ τῆς
μυκτοῦ ὑμῶν.

9 Μὴ ψεύδεσθε εἰς ἀλλήλους, ἀπεκδυσάμενοι

τὸν πελαγὸν ἀνδραπον σὺν ταῖς πράξεσιν αὐτοῦ.

10 Καὶ ἐνδυσάμενος ἡ γέννησις, ἡ ἀνακατασκευασμένη ἐκ
ἐπιθυνοῦ καὶ ἐκείνου ἡ κτίσις αὐτοῦ.

11 Ὅτι ἐκ ἑνὸς Ἑλλῶς ἡ Ἰουδαία· παλαιὰ ἡ ἀπο-
βυστία· Βαβυλωνίαν, Σκύθη· ὄμιλον, ἑλάνθερον· ἀλλὰ
τά πάντα ἐν πᾶσι Χριστός.

12 Ἐνδύσασθε ἐν, ὡς ὀπλεκτοὶ τῷ Θεῷ ἁγίοι ἐν ἀγαπημένῳ, ἀπαύχων σίνπικων, χρηστότητα, ταπεινοφροσύνην, πραότητα, μακροθυμίαν·

13 ἄνεχόμενοι ἀλλήλων, ὡς καὶ ὁ Χριστὸς ἐᾷ ἑαυτὸν
πρὸς τὴν ἐκκλησίαν, ἣν ὁ σώζων τοὺς ἑαυτοῦ ἑσθλαίῃ·
καὶ ὅπως ὁ Χριστὸς ἑαυτὸν ὑποτάσσῃ τῇ ἐκκλησίᾳ,
ἥτις ἡ σὰν ἡ ἐκκλησία τὸ σώμα τοῦ σώματος αὐτοῦ, ἡ ἁγία
ἐκκλησία, ἧς ὁ Χριστὸς ἡ κεφαλή, ὁ σώζων τὴν ἐκκλησίαν
ἑαυτοῦ ἑσθλαίῃ, ἥτις ἡ ἐκκλησία τὸ σώμα τοῦ σώματος
αὐτοῦ, ἡ ἁγία ἐκκλησία, ἧς ὁ Χριστὸς ἡ κεφαλή, ὁ
σώζων τὴν ἐκκλησίαν ἑαυτοῦ ἑσθλαίῃ.

14 Ἐπὶ πάνσι δὲ ταῖσι τὴν ἀγάπην, ἥτις ἐστὶ σὺν-
δύναμις καὶ τελειότης.

15 Καὶ ἡ εἰρήνη τοῦ Θεοῦ βραβεύεται ἐν ταῖς καρδίαις
υμῶν, εἰς ᾧ ἔσκληθήτε ἐν ἐνὶ σώματι, ἔσχη-
ριστοι γίνεσθε.

16. Ο λόγος τῆς Χρυσῆς ἐντολῆς ἐν ὑμῶν παντί, ἐν πάτῃ σφίσι, διδασκόντες ἑ καὶ νουθετοῦντες ἑαυτοὺς, ψαλμοῖς καὶ ὕμνοις ἑ ᾠδαῖς πνευματικαῖς ἐν καρδίᾳ ᾠ-
 ῶντες ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τῷ κυρίῳ.

17 Καὶ πάλιν αὖ, πᾶν ποιῆτε, ἐν λόγῳ, ᾧ ἐπ' ἔργῳ,
πάντα ἐν ὀνόματι Κυρίου Ἰησοῦ, ὡς χάριτες ὑντες πρὸς Θεοῦ
καὶ Πατρὸς δι' αὐτοῦ.

18 Αἱ χυδαίαι, ἐποτάμεσθε τῆς ἰδίῃς ἀνδρεί-
ας, ὡς ἀνέκεν ἐν Κυρίῳ.

19 Οἱ ἄνδρες, ἀγαπάτε τὰς γυναῖκας, ὥς μὴ πι-
κτικνεσθε πρὸς αὐτάς.

20 Τὰ τέκνα, ἀπακούετε τῆς γραφῆς κατὰ πάντα
τὴν γὰρ ἐστὶν διάκρισις τοῦ Κυρίου.

21 Οἱ πατέρες, μὴ ἐρεθίζετε τὰ τέκνα ὑμῶν, ἵνα
καὶ ὀδυνησθῇ.

22 Οἱ δὲ ἄλλοι, ὑπακούετε καὶ πάντα τοῖς καὶ σῶκα
κυραίοις, μὴ ἐν ὀφθαλμοδουλείαις ὡς ἀνθρώποις ἀρεσκοί,
ἀλλ' ἐν ἀπολαύσει καὶ φόβῳ τοῦ Κυρίου.

23 Καὶ πᾶν ὃ, π ἐὰν τοιῆτε, ὅκ ψυχῆς ἐργαζέσθῃ,
ὡς πὶ Κυρίῳ ἔσθ' ἀνταρτίαι.

24 Εἰδότες ὅτι ἀπὸ Κυρίου ἀπολύσεσθε τὰς ἀντικρίσεις τῆς κληρονομίας· τῷ γὰρ Κυρίῳ Χριστῷ δουλοῦσθε.

25 Οὐ δὲ ἁπλῶς κοιμήσεται ὁ ἠδίκητης * οὐκ ἔστι προσωποληψία.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Ο**ἱ κύριοι, τὸ δίκαιον ἔστω ἰσότης τοῖς δούλοις παρέχουσι, εἰδότες ὅτι ἡ ὑμῶν ἔχετε Κυρίον ἐν οὐρανοῖς.

2 Τῇ προσδύχῃ προσκαρτερῆτε, γρηγορῦντες ἐν αὐτῇ ἐν ὡχαρίᾳ.

3 Προσδύχομενοι ἅμα καὶ πρὸς ἡμᾶς, ἵνα ὁ Θεὸς ἀνοίξῃ ἡμῖν θύραν τοῦ λόγου, λαλῆσαι τὸ μυστήριον τοῦ Χριστοῦ, δι' ὃ καὶ δέδοται.

4 ἵνα φανερώσῃ αὐτὸ, ὡς δεῖ με λαλῆσαι.

5 Ἐν σοφίᾳ συνεπατήτε πρὸς τὸν ἕξω, τὸν κυρίον δευρολογούμενοι.

6 Ὁ λόγος ὑμῶν πάντοτε ἐν χάριτι, ἀλατῇ ἡρτυμένος, εἰδέναι πῶς δεῖ ὑμᾶς ἐν ἑκάστῳ ἀποκρίνεσθαι.

7 Τὰ κατ' ἐμὲ πάντα γνωρίσει ὑμῖν Τυχικός ὁ ἀγαπητὸς ἀδελφός, ὁ πιστὸς διάκονος, ὁ συνδουλὸς ἐν Κυρίῳ.

8 Ὁν ἐπέμψα πρὸς ὑμᾶς εἰς αὐτὸ τοῦτο, ἵνα γνῷ τὰ περὶ ὑμῶν, ἡ παρακαλῇ τὰς καρδίας ὑμῶν.

9 Σὺν Οἰησίμῳ τῷ πιστῷ καὶ ἀγαπητῷ ἀδελφῷ, ὅς ἐστιν ὅς ὑμῶν πάντα ὑμῖν γνωρίσει τὰ ὧδε.

10 Ἀσπάζεταιται ὑμᾶς Ἀρίσταρχος ὁ συναϊκὸς υἱός μου, καὶ Μάρκος ὁ ἀνεψιὸς Βαρνάβη, περὶ οὗ ἐλάβετε ἐντολὰς· εἰάν ἐλθῇ πρὸς ὑμᾶς, δεξασθε αὐτόν.

11 Καὶ Ἰσίδωρος ὁ λεγόμενος Ἰῆσος, οἱ ὅντις ἐκ περιτομῆς· οὗτοι μένοι συνεργοὶ ἐν τῷ βασιλείῳ τοῦ Θεοῦ, οἱ τινες ἐγκρίθησάν μοι παρηγορίᾳ.

12 Ἀσπάζεταιται ὑμᾶς Ἐπαφρόδιτος ὁ ὅς ὑμῶν δούλος Χριστοῦ, πάντοτε αγωνιζόμενος ὑπὲρ ὑμῶν ἐν ταῖς προσδύχαῖς, ἵνα στήτε τελεῖς καὶ πεπληρωμένοι ἐν πλοπῇ θελήματι τοῦ Θεοῦ.

13 Μαρτυρῶ γὰρ αὐτῷ, ὅτι ἔχει ἕλκον πρὸς τὸν ὑπὲρ ὑμῶν, καὶ τῷ ἐν Λαοδικείᾳ, καὶ τῷ ἐν Ἰερουσόλῃ.

14 Ἀσπάζεταιται ὑμᾶς Λυκάς ὁ ἰατρός ὁ ἀγαπητὸς ὁ ὁ Διμήτριος.

15 Ἀσπασάσθε τοὺς ἐν Λαοδικείᾳ ἀδελφούς, καὶ Νυμφᾶν, καὶ τῷ κατ' οἶκον αὐτοῦ οὐκ ἀλλοτρίῳ.

16 Καὶ

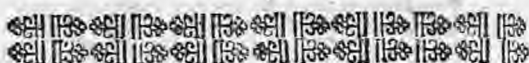
6 Καὶ ὅταν ἀναγνωσθῇ παρ' ὑμῖν ἡ ὑψο-
 ποιήσατε ἵνα καὶ ἐν τῇ Λαοδικέῳ ἐκκλη-
 ἀναγνωσθῇ· καὶ τῶν ἐκ Λαοδικείας ἵνα ἔ-
 ἀναγνώστε.

7 Καὶ εἶπατε Ἀρχιεπιστῶ· Βλέπε τῶν Διδ-
 αν ὡς παρέλαβες ἐν Κυρίῳ ἵνα αὐτῶν πλη-

8 Ὁ δὲ ἀσπασμὸς τῇ ἐμῇ χειρὶ Παύλου·
 μοιδοῖέτε μου τῶν δεσμῶν· Ἡ χάρις μεθ' ὑ-
 . Ἀμήν.

πρὸς Κολασσαῖς ἐγράφη ἀπὸ Ρώμης Διδ' Τυ-
 οῦ ἔ. Οὐσιμου.





ΠΑΥΛΟΥ

τῷ Α΄ΠΟΣΤΟΛΟΥ

Β΄ ΠΡΟΣ ΘΕΣΣΑΛΟΝΙΚΕΙΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ,

Κεφ. α. Ι.

Ι ΠΑΥΛΟΣ ΚΑΙ ΣΙΛΟΥΑΡΟΣ ΚΑΙ ΤΙΜΟΘΕΟΣ
 ΑΠΟΛΟΓΟΥΜΕΝΟΙ ΕΝ ΘΕΩ ΠΑ-
 ΤΕΡΙ, ΚΑΙ ΚΥΡΙΩ ΙΗΣΩ ΧΡΙΣΤΩ, ΚΑΙ
 ΕΙΣ ΥΜΙΝ ΚΑΙ ΕΡΧΟΜΕΝΟΙ ΑΠΟ ΘΕΟΥ ΠΑΤΡΟΣ ΗΜΩΝ, ΚΑΙ
 ΚΥΡΙΟΥ ΙΗΣΩ ΧΡΙΣΤΟΥ.

2 ΕΥΧΑΡΙΣΤΟΥΜΕΝ ΤΩ ΘΕΩ ΠΑΝΤΟΤΕ ΠΕΡΙ πάντων ὑμῶν,
 ΜΕΓΑΛΗ ὑμῶν ποιούμεναι ὅτι τῇ ΠΡΟΣΕΛΥΧΩΝ ἡμῶν.

3 Α΄ΔΙΑΛΕΙΠΤΩΣ ΜΗΤΗΡΟΔΟΥΝΤΕΣ ὑμῶν ἢ ἔργα ἢ τι-
 σεις, ἢ ἢ ΚΑΙΝ ἢ ΑΓΑΠΗΣ, ἢ ἢ ΑΠΟΜΟΝΗΣ ἢ ΕΛΠΙ-
 ΔΟΣ Τῷ ΚΥΡΙΩ ἡμῶν ΙΗΣΩ ΧΡΙΣΤῷ ἘΜΠΡΟΣΘΕΝ Τῷ ΘΕῷ
 ΠΑΤΡΙ ΔΕ ἡμῶν.

4 ΕΙΔΟΤΕΣ, ΑΔΕΛΦΟΙ ΑΓΑΠΗΜΕΝΟΙ, ὑπὸ ΘΕΟΥ Τῷ
 ΚΛΟΥΩ ὑμῶν.

5 Ὅτι τὸ Εὐαγγέλιον ἡμῶν οὐκ ἔζητήθη εἰς ὑμᾶς
 ΛΟΓΩ ΜΟΝΟΝ, ΑΛΛΑ ἢ ἢ ΔΥΝΑΜΕΙ, ἢ ἢ ΠΙΣΤΕΙ, ἢ ἢ
 ΑΓΑΠῃ, ἢ ἢ ΠΛΗΡΟΦΟΡΙΑ ΠΟΛΛῇ, ΚΑΘΩΣ ΟΪΔΑΤΕ ΟΤΙ ΕΥ-
 ΤΗΘΗΜΕΝ ΕΝ ὑμῖν ΔΙ ὑμῶν.

6 ΚΑΙ ὑμεῖς ΜΙΜΗΤΑΙ ἡμῶν ΕΖΗΤΗΣΑΤΕ ἢ ἢ ΚΥΡΙΩ
 ΔΕΞΑΜΕΝΟΙ ἢ ΛΟΓΟΝ ΕΝ ΘΛΪΨΙ ΠΟΛΛῇ, ΜΕΤΑ ΧΑΡΑΙΣ ΠΙΣ-
 ΤΕΙ ΑΓΑΠῃ.

7 ὩΣΤΕ ὙΠΕΡΒΑΙΝΕΙ ὑμᾶς ΤΥΠΟΣ ΠᾶΣΙ ΤΟΙΣ ΠΙΣΤΕΥΟΥΣΙ
 Τῇ ΜΑΚΕΔΟΝΙΑ ἢ Τῇ Α΄ΧΑΙΑ.

8 Α΄Φ΄ ὑμῶν γὰρ ὁ ἔχεται ὁ ΛΟΓΟΣ Τῷ ΚΥΡΙΩ ἢ ΜΟΝΟΝ
 ΕΝ Τῇ ΜΑΚΕΔΟΝΙΑ ἢ Α΄ΧΑΙΑ, ΑΛΛΑ ἢ ἢ ΠΛΗΡΗ ΤΟΤΕ
 ἢ ΠΙΣΤΙΣ ὑμῶν ἢ ΠΡΟΣ ἢ ΘΕΟΝ ΕΞΕΛΗΛΥΘΕΝ, ὥΣΤΕ ΜΕ-
 ΚΕΙΝ ἡμῶν ἔχειν λαλῆν τι.

9 ΑΥΤΟΙ ΓΑΡ ΠΕΡΙ ὑμῶν ΑΠΑΓΓΕΛΛΑΣΙΝ ΕΠΟΙ-
 ΗΣΑΝ ΕΧΟΜΕΝ ΠΡΟΣ ὑμᾶς, ΚΑΙ ΠΩΣ ΕΠΙΣΤΡΕΨΑ-
 ΤΕ ΠΡΟΣ Τὸν ΘΕΟΝ ΑΠὸ Τῆς ΕΙΔΩΛΩΝ, ΘΕΛΟΥΜΕΝ ΟΙ-
 ΖΩΝΤΙ ἢ ΑΛΗΘΙΝῃ,

10 ΚΑΙ

το καὶ ἀναμένειν τὸ τίον αὐτῶν ἐν τῷ ἁγίῳ, ὅτι
ἔχοντες ἐν νεκρῶν, Ἰησοῦν τὸν ῥυόμενον ἡμᾶς ἀπὸ τῆς
ἐργασίας τῆς ἐρχομένης.

Κεφ. β'. 2.

1 **Α** Ὑποταγῆς οἶδατε, ἀδελφοί, τῷ κυρίῳ ὡς
τοῦ κυρίου, ὅτι ἡ κεφαλὴ τὸ σώμα.

2 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

3 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

4 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

5 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

6 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

7 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

8 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

9 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

10 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

11 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

12 ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ
ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

13 Διὰ τοῦτο καὶ ἡμεῖς ἀναμένομεν τῇ Θεῷ ἀπα-
νάσσειν, ὅτι ὡς ὁ Χριστὸς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ
σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ
σώματός τοῦ ἐκκλησίας, ὡς ὁ σώματός τοῦ ἐκκλησίας.

14 Ὑμῖν γὰρ μιμήται ἐχρησθήτε, ἀδελφοί, τῷ ἐκκλησίᾳ τοῦ Θεοῦ τῷ ᾧ καὶ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὅπῃ τὰ πάντα ἰσχυροῦσθε καὶ ὑμεῖς ὑπὸ τῷ ἰδίῳ συμφυλετῷ, καθὼς ἔσται ὑποὺς τοῦ Ἰουδαίου.

15 Τοῖς ἑὶ Κύριον ἀποκτενούντων Ἰησοῦν, ἔστιν ἰδὲς προφῆτας, ἔστιν ἡμᾶς ἐκδιωξάντων, ἔστιν Θεῷ μὴ ἀρεσκόντων, ἔστιν πᾶσιν ἀνθρώποις ἐναντίων.

16 Καλυπνύοντες ἡμᾶς τοῖς ἔθνεσι κηλῆται ἐν σαρκὶ σιν, εἰς τὸ ἀναπληρῶσαι κατὰ τὰς ἀμαρτίας πάντες· ἰφθαίτε δὲ ἐπὶ αὐτῆς ἡ ἀργὴ εἰς τέλος.

17 Ἡμεῖς δὲ, ἀδελφοί, ἀπορροισθέντες ἀφ' ὑμῶν πρὸς κοίτην ὕπνου, προσώπῳ, ἢ καρδίᾳ, πλεονεξίας ἐσυνδάσασμεν τὸ πρὸς ὅπου ὑμῶν ἰδὲν ἐν πολλῇ ὑποθυμία.

18 Διὸ ἠδελήσασμεν ἐλθεῖν πρὸς ὑμᾶς (ἰσχυρὸν Παῦλος) καὶ ἅπασι καὶ δις, ἔτι ἐνκοφέντες ἡμᾶς ὁ Σατὰν.

19 Τίς γὰρ ἡμῶν ἐλπίς, ἡ χαρὰ, ἡ σφόδρος κοίτης; ἡ ἡμεῖς καὶ ὑμεῖς ἐμπροσθεν τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐν τῇ αὐτῇ παρυσίᾳ;

20 Ὑμῖν γὰρ ἔστι ἡ δοξα ἡμῶν καὶ ἡ χαρὰ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Δ**ιὸ μὲν ἐγὼ καὶ οἱ συνάγοντες, διδοκῆσμεν καταλιπεῖν τὴν οἰκίαν ἐν Ἀθήναις μόνοι,

2 καὶ ἐπέμψαμεν Τιμόθεον καὶ ἀδελφὸν ἡμῶν καὶ διάκονον τοῦ Θεοῦ καὶ συνεργὸν ἡμῶν ἐν τῷ εὐαγγελίῳ τοῦ Χριστοῦ, εἰς τὸ σπεῖλαι ὑμᾶς καὶ παρακαλεῖσθαι ὑμᾶς περὶ τῆς πίστεως ἡμῶν.

3 Τῷ μὴδεὶ ἐπιτρέψαι ἐν ταῖς θλίψεσι ταύταις αὐτοῖς γὰρ οἶδατε ὅτι εἰς τὴν καίμαδα.

4 Καὶ γὰρ ὅτε πρὸς ὑμᾶς ἦμεν, προεβίβημεν ὑμῖν ὅτι μέλλομεν θλίβεσθαι, καθὼς ἐγένετο, ἔτι οἶδατε.

5 Διὰ τὴν καίμαδα μὲν ἐγὼ καὶ οἱ συνάγοντες, ἐπέμψαμεν εἰς τὴν γινώσκειν τῶν πίστεων ὑμῶν· μήπως ἐπείρασεν ὑμᾶς ὁ πειρασμὸς, καὶ εἰς κινδὸν γένηται ὁ κόπος ἡμῶν.

6 Ἀρτι δὲ ἐλθόντος Τιμοθέου πρὸς ὑμᾶς ἀφ' ὑμῶν, καὶ εὐαγγελισαμένου ὑμῖν τῶν πρὶν καὶ τῶν ἀγαπῶν ὑμᾶς, καὶ ὅτι ἔχετε μονίαν ἡμῶν ἀγαθὴν πάντες, ὑποδοῦντες ἡμᾶς ἰδὲν, καθάσκει ἡμεῖς ὑμᾶς.

7 Διὸ τὸ πρὸς παρακαλεῖσθαι, ἀδελφοί, ἐφ' ὑμῶν ἐπὶ πάσῃ τῇ θλίψει καὶ ἀνάγκῃ ἡμῶν, ἀλλὰ τῇ ὑμῶν πίστει.

8 Ὅτι τῶν ζῶντων, ἰδὲν ὑμῶν στήκατε ἐν Κυρίῳ.

9 Τίνω ὃ ὡχαριστῶν δύναμεθα τῷ Θεῷ ἁνταπο-
δοῦναι ὑμῶν, ὅτι πᾶσι τῇ χαρᾷ ἡ χαίρομεν δι'
ὑμῶν ἐμπροσθεν ᾧ Θεῷ ἡμῶν.

10 Νυκτὸς ἔ ἡμέρας ὑπερεκπερισσῷ δεόμενοι εἰς τὸ
ἰδεῖν ὑμῶν τὸ πρόσωπον, ἔ καταρτίσαι τὰ ὑστερήματα
τῆ πίστεως ὑμῶν.

11 Αὐτὸς δὲ ὁ Θεός, ἔ Πατὴρ ἡμῶν, καὶ ὁ Κύ-
ριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστὸς κατέδωκεν τῷ ὁδὸν ἡμῶν
πρὸς ὑμᾶς.

12 Ὑμεῖς ὅ ὁ Κύριος τελοῦσθαι ἔ περιστάσαι τῇ
ἀγάτῃ εἰς ἀλλήλους ἔ εἰς πάντας, καθάπερ ἔ ἡμῖς
με ὑμῶν.

13 Εἰς τὸ τηρεῖν ὑμῶν τὰς καρδίας ἀρέμτους ἐν
ἁγιασμῷ, ἐμπροσθεν ᾧ Θεῷ ἔ Πατρὸς ἡμῶν, ἐν τῇ
παρρησίᾳ ᾧ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ ᾧ πάντων τῷ
ἁγίῳ αὐτοῦ.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Τ**Ο λοιπὸν ἔν, ἀδελφοί, ἐρωτῶμεν ὑμᾶς ἔ
παρακαλοῦμεν ὡ Κυρίῳ Ἰησοῦ, καθὼς πα-
ράλαβετε παρ' ἡμῶν τὸ πᾶς διὰ ὑμῶν περὶπατεῖν ἔ
ἀρεσκῆν Θεῷ, ἵνα περὶπατεῖτε μᾶλλον.

2 Οἴδατε ὃ πῶς παραγγελίας ἐδώκαμεν ὑμῖν
διὰ ᾧ Κυρίῳ Ἰησοῦ.

3 Τὸ τοῦτο γάρ ἐστι θέλημα τῷ Θεῷ, ὁ ἁγιασμός ὑ-
μῶν, ἀπέχουσαι ὑμῶν ἀπὸ τῆ πορνείας.

4 Εἰδέναι ἕκαστον ὑμῖν τὸ ἑαυτῷ σκευὸς κτᾶσθαι
ἐν ἁγιασμῷ ἔ πνεύ.

5 Μὴ ἐν παθεῖν ὑποθυμίας, καθάπερ ἔ τὰ ἔθνη
τὰ μὴ εἰδότα ᾧ Θεόν.

6 Τὸ μὴ καταβραβεῖν ἔ πλεονεκτεῖν ἐν τῷ πράγ-
ματι τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν. διότι ἕκδικος ὁ Κύριος πε-
ρὶ πάντων τούτων, καθὼς ἔ προέταμεν ὑμῖν, ἔ διε-
μαρτυράμεθα.

7 Οὐ ὃ ὁκαλίσεν ἡμῶς ὁ Θεός ὑπὸ ἀκαθαρσία,
ἀλλ' ἐν ἁγιασμῷ.

8 Τοιγαρὶν ὁ ἀδικῶν, ἢ ἄνθρωπον ἀδικῶν, ἀλ-
λὰ τὸν Θεόν τὸν ἔ δόντα τὸ Πνεῦμα αὐτῷ τὸ Ἅγιον
με ἡμῶς.

9 Περὶ ὃ τῇ φιλαδελφίᾳ ἡ χάρις ἔχετε γράφειν
ὑμῖν. αὐτῇ γὰρ ὑμεῖς διεδίδακτοί ἐστε εἰς τὸ ἀγα-
πῆν ἀλλήλους.

10 Καὶ ὃ ποιῶτε αὐτὸ εἰς πάντας τῆς ἀδελφίης
ἐν ὅλῃ τῇ Μακεδονίᾳ. παρακαλοῦμεν ὃ ὑμᾶς, ἀδελ-
φοί, περιστάειν μᾶλλον.

11 Καὶ φιλοπνεῦσθαι ἡσυχάζειν, ἔ πράσσειν τὰ
ἔντα, ἔ ἐργάζεσθαι ταῖς ἰδίαις χερσὶν ὑμῶν, καθὼς
παραγγέλλομεν.

12 ἵνα πειρατῆτε εὐχρημόνως πρὸς τῆς ἐξω, καὶ μηδεὶς χειρὶν ἔχητε.

13 Οὐ θέλω ὅ υμᾶς ἀγνοῖν, ἀδελφοί, πρὸ τῆς κοιμηθῆναι, ἵνα μὴ λυπῶσθε, καθὼς ἔοι λοιποὶ οἱ μὴ ἔχοντες ἐλπίδα.

14 Εἰ γὰρ πιστεύομεν ὅτι Ἰησοῦς ἀπέθανε, ἔτι ζῶν, ὅς ὁ Θεὸς τῆς κοιμηθέντος διὰ τοῦ Ἰησοῦ ἄξει σὺν αὐτῷ.

15 Τὸ τοῦτο ὃ ὑμῖν λέγομεν ἐν λόγῳ Κυρίου, ὅτι ἡμεῖς οἱ ζῶντες οἱ παλιγγενόμενοι εἰς τὴν παρουσίαν τοῦ Κυρίου, καὶ μὴ φθάσωμεν τὴν κοιμηθέντας.

16 Ὅτι αὐτός ὁ Κύριος ἐν κελεύσματι, ἐν φωνῇ ἀρχαγγέλου, καὶ ἐν σάλπιγγι Θεοῦ καταβήσεται ἀπ' οὐρανοῦ, καὶ οἱ νεκροὶ ἐν Χριστῷ ἀναστήσονται πρῶτον.

17 Ἐπειτα ἡμεῖς οἱ ζῶντες οἱ παλιγγενόμενοι, ὅμοιον αὐτοῖς ἀρπαγησόμεθα ἐν νεφέλαις εἰς ἀπάντησιν τοῦ Κυρίου εἰς αἴρα, καὶ ὅτω πάντοτε σὺν Κυρίῳ ἔσόμεθα.

18 Ὡς ἐπεὶ καλεῖτε ἀλλήλους ἐν τοῖς λόγοις τούτοις.

Κεφ. ε. 3.

1 Περὶ τοῦ χρόνου ἔτι καὶ τῶν καιρῶν, ἀδελφοί, καὶ ἡ χειρὶς ἔχετε ὑμῖν γραφῆσθαι.

2 Αὐτοὶ γὰρ ἀκριβῶς οἶδατε ὅτι ἡ ἡμέρα Κυρίου οὕτως ἔρχεται, ὡς κλέπτης ἐν νυκτὶ, ὅπως ἔρχεται.

3 Ὅταν γὰρ λέγουσιν· Εἰρήνη ἔστι καὶ ἀσφάλεια, τότε αὐτοῖς ἐφίσταται ὁλεθρὸς, ὥστε ἡ πόλις τῆς ἡμετέρας ἐχθρῶν, ἡ μὴ σφύγῃ.

4 Ὑμεῖς δὲ, ἀδελφοί, ὅς ἐστέ ἐν σκέτει, ἵνα ἡ ἡμέρα ὑμᾶς ὡς κλέπτης καταλάβῃ.

5 Πάντες ἡμεῖς υἱοὶ φωτός ἐστέ, καὶ υἱοὶ ἡμέρας, καὶ ὅς ἐσμέν νυκτός, οὐδὲ σκοτίας.

6 Ἄρα οὖν μὴ καθεύδωμεν ὡς ἔοι λοιποὶ, ἀλλὰ γρηγοροῦμεν καὶ νήφωμεν.

7 Οἱ γὰρ καθεύδοντες, νυκτός καθεύδουσιν, ἔοι μὴ συνιόντες, νυκτός μεθύουσιν.

8 Ὑμεῖς δὲ ἡμέρας ὄντες, νήφωμεν, ἐνδυσάμενοι ἰσχυρὰ ὡς ἐπὶ τοῦ σιδήρου, καὶ ὡς ἐπὶ τοῦ σιδήρου, ἐπὶ τοῦ σιδήρου.

9 Ὅτι ὅς ἐστι ἡμεῖς ὁ Θεὸς εἰς ὄργην, καὶ εἰς ἀποκρίσιν σωτηρίας διὰ τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

10 Τοῦ ἀποδιδόντος ὑπὲρ ἡμῶν, ἵνα εἴτε γρηγοροῦμεν, εἴτε καθεύδωμεν, ἅμα σὺν αὐτῷ ἔσμεν.

15 Διὰ

ΠΡΟΣ ΘΕΣΣΑΛ. Α.

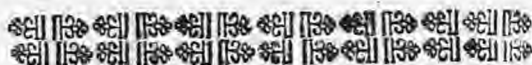
421

- 11 Δὲ παρακαλεῖτε ἀλλήλους, ὡς οἰκοδομεῖτε ἑς τὴν
 12 ἑαυτῶν ὅς ὑμᾶς, ἀδελφοί, εἰδέναι τῆς κο-
 13 ρυψίας ἐν ὑμῖν, ὡς προῖτα μένους ὑμῶν ἐν Κυρίῳ, καὶ
 14 καὶ ἡγεῖσθαι αὐτοὺς οὐκ ἐλαττωθῆναι ἐν ἀγάπῃ, διὰ τὸ
 15 ἔργον αὐτῶν. εἰρηνεύετε ἐν ἑσποτοῖς.
 16 Παρακαλῶμεν δὲ ὑμᾶς, ἀδελφοί, καθέσθαι τῆς
 17 ἀτάκτης, παραμυθεῖσθαι τῆς ἐλπιούσης, ἀντέχε-
 18 σθαι τῷ ἁσθενεῖν, μακροθυμεῖτε πρὸς πάντας.
 19 Ὅρατε μὴ τις κακὸν ἀντὶ κακοῦ ποιῇ ἀποδοῦναι.
 20 ἀλλὰ πάντοτε τὸ ἀγαθὸν διώκετε ὡς εἰς ἀλλήλους, ὡς
 21 εἰς πάντας.
 22 Πάντοτε χαίrete.
 23 Ἀλλήλους ὡς προῖτα χεσθε, ὡς
 24 ἐν παντὶ οὐχαρισεῖτε τῷ κυρίῳ θεῷ
 25 ἡμεῖς ἰησοῦ ἐν ὑμῖν.
 26 Τὸ πνεῦμα μὴ σβέννυτε.
 27 Προφητείας μὴ ὑπερβαίνετε.
 28 Πάντα δοκιμάζετε τὸ καλὸν κατέχετε.
 29 Ἀπὸ πάντος λόγου ποιητῶν ἀπέχεσθε.
 30 Αὐτοὶ δὲ ὁ θεὸς τὴν εἰρήνην ἀγαπάει ὑμᾶς ἐλο-
 31 γισαί, ὡς ὁλόκληρον ὑμῶν τὸ πνεῦμα, ὡς ἡ ψυχὴ,
 32 ὡς τὸ σῶμα ἀμέμπτως ἐν τῇ παρτίστῃ Κυρίῳ ἡμῶν
 33 ἰησοῦ Χριστῷ τηρηθεῖν.
 34 Πισὸς ὁ καλὸν ὑμᾶς, ὅς καὶ ποιήσει.
 35 Ἀδελφοί, προσεύχεσθε ὡς ἡμεῖς.
 36 Ἀσπασασθε τῆς ἀδελφῆς πάντας ἐν φιλήματι
 37 ἀγίῳ.
 38 Ὅρατε ὅτι ὑμᾶς τὸ κυρίον, ἀναγνωθῆναι τὸ ὑπὸ
 39 πολλοῖς ποῖσι τοῖς ἁγίοις ἀδελφοῖς.
 40 Ἡ χάρις τοῦ κυρίου ἡμῶν ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ ὑ-
 41 μῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Θεσσαλονικεὺς πρώτη ἐπιστολή ἀπὸ Α' θλωῶν.



ΠΑΤ.



ΠΑΥΛΟΥ ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ ΤΗΣ ΠΡΟΣ ΘΕΣΣΑΛΟΝΙΚΕΪΣ ΕΠΙΣΤΟΛΗΣ,

Κεφ. α. ι.

1 ΠΑΥΛΟΣ & ΣΙΛΒΑΝΟΣ & ΤΙΜΟΘΕΟΣ Τῇ ἐκκλησίᾳ Θεσσαλονικέων ἐν Θεῷ Πατρὶ ἡμῶν, & Κυρίῳ Ἰησοῦ Χριστῷ.

2 Χάρις ὑμῖν & εἰρήνῃ ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἡμῶν, & Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

3 Εὐχαριστοῦμεν ὀφειλομένῳ τῷ Θεῷ πάντοτε κατὰ ὑμῶν, ἀδελφοί, καθὼς ἀξιόν ἐστιν, ὅτι ὑπερῴκαμεν ἡμῖν ὑμῶν, & πλειονάζει ἡ ἀγάπη ἐν ὅς ἡγάγαμεν πάντας ὑμῶν εἰς ἀλήθειαν.

4 Ὡς ἡμᾶς αὐτοὺς ἐν ὑμῖν κοινῶς ἐν ταῖς ἐκκλησίαις τῷ Θεῷ ὑπὲρ τῆς ὑπομονῆς ὑμῶν & πίστεως ἐν παντί τοῖς διωγμοῖς ὑμῶν, & ταῖς θλίψεσι αἵς ἀνέχεσθε.

5 Ἐνδειγμα τῆ δικαίας κρίσεως τῷ Θεῷ εἰς τὸ καταξιώθῃαι ὑμᾶς τῆ βασιλείας τῷ Θεῷ, ὑπὲρ ἧς καὶ πάσχετε.

6 Εἴπερ δίκαιον ὅτι Θεὸς ἀνταποδῇται τοῖς θλίβουσιν ὑμᾶς θλίψιν.

7 Καὶ ὑμῖν τοῖς θλιβομένοις ἄνεσιν μετ' ὑμῶν ἐν τῇ ἀποκαλύψει τῷ Κυρίῳ Ἰησοῦ ἀπ' οὐρανοῦ μετ' ἀγγέλων δυνάμεως αὐτοῦ.

8 Ἐν πυρὶ φλογός, διδόντος ἐκδίκησιν τοῖς μὴ ᾔδουσι Θεόν, & τοῖς μὴ ὑπακούουσιν τῇ διαγγελίᾳ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ.

9 Οἱ πῦνες δίκην τίσασιν, ὅλεθρον αἰώνιον, ἀπὸ προσώπου τῷ Κυρίῳ, & ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ.

10 Ὅτι ἅνθρωποι ἔλθου ἐνδοξασθῆναι ἐν τοῖς ἁγίοις καὶ ὁ Θεὸς θαυμάσθῃναι ἐν παντί τοῖς πιστεύουσιν, (ὅτι ὡς εἶπα τὸ μαρτύριον ὑμῶν ἐφ' ὑμᾶς) ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.

11 Εἰς

11 Εἰς ὃ ἐπροσδύχμεθα πάντοτε περὶ ὑμῶν, ἵνα ὑμεῖς ἀξιώσῃ τῇ κλησίᾳ ὁ Θεὸς ἡμῶν, ἡ πληρω-
τὴν πάντων εὐδοκίᾳ ἀγαθωσύνης, ἡ ἔργον πίστεως ἐν
ὑμῖν.

12 Ὅπως ἐνδοξασθῇ τὸ ὄνομα τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ
Χριστοῦ ἐν ὑμῖν, ἡ ὑμεῖς ἐν αὐτῷ, ἡ τὸ χάρις τοῦ
Θεοῦ ἡμῶν, ἡ Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

Κιθ. β. 2.

1 Εὐχαριστοῦμεν ὑμᾶς, ἀδελφοί, ὑπὲρ τῆς χάρι-
σος τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἡ ὑμῶν
ἐπαγναγωγῆς ἐπ' αὐτῷ,

2 Εἰ τὸ μὴ ταχέως σαλευθῶμεν ὑμᾶς ἀπὸ τοῦ κυρίου,
ἡτε θροῦν, ἡτε διψῶν πνεύματος, ἡτε διψῶν λο-
γῶν, ἡτε δι' ὑπηρεσίας ὡς δι' ἡμῶν, ὡς ὅτι ἐνέστακιν
ἡ ἡμερὰ τοῦ Κυρίου.

3 Μὴ τις ὑμᾶς ὑπαπατήσῃ κατὰ μηδέν τῶν τρόπων· ὅ-
τι εἰ μὴ ἔλθῃ ἡ ἀποστασία πρῶτον, ἡ ἀποκαλυφ-
θῇ ὁ ἄνθρωπος τῆς ἀμαρτίας, ὁ υἱὸς τῆς ἀπο-
στασίας,

4 Ὁ ἀντικείμενος ἡ ὑπερηφάνος ὑπὲρ πάντα λι-
γυῖμον Θεὸν ἡ σέβασμα· ὡς καὶ αὐτὸς ἡ καὶ τὸν
Θεὸν ὡς Θεὸν καθίσαι, ἀποδεδειγμένα ἐαυτῷ ὅτι ἐστὶ
Θεός.

5 Οὐ μνημονεύετε ὅτι ἐπ' ὡς πρὸς ὑμᾶς, ταῦτα ἐ-
λήγον ὑμῖν;

6 Καὶ νῦν τὸ κατέχον οἴδατε, εἰς τὸ ἀποκαλυφθῆ-
ναι καὶ ἐν τῷ ἐαυτῷ καιρῷ.

7 Τὸ ὃ μυστήριον ἤδη ἐνεργεῖται τῇ αἰσθησίᾳ, μόνον
ἡ κατέχον ἀρτὶ εἰς ὅσον ἐν μέσῳ γένηται.

8 Καὶ τότε ἀποκαλυφθήσεται ὁ ἄνομος, ὃν ὁ Κο-
ρίνθιος ἀνολώσῃ τῷ Πνεύματι ἡ σώματος αὐτοῦ, ἡ κα-
ταργητὴ τῇ ὑποφάνειᾳ τῇ παρυσίας αὐτοῦ.

9 Οὐ εἰς ἡ παρυσία κατ' ἐνέργειαν τοῦ Σατα-
νᾶ ἐν πάσῃ δυνάμει, ἡ σημείοις, ἡ τέρασι ψεύ-
δους,

10 Καὶ ἐν πάσῃ ἀπάτῃ τῇ ἀδικίας ἐν τοῖς ἀπολυ-
μείοις· ὡς ὅτι ἡ ἀγάπῃ τῇ ἀληθείας ἡκ ἐδέξαντο
ἐν τῷ σωθῶναι αὐτοῖς.

11 Καὶ διὰ τὴν ἐπίμψιν αὐτοῖς ὁ Θεὸς ἐνέργειαν
ἐλάτης, εἰς τὸ πιστεῦσαι αὐτοῖς. τῇ ψεύδει.

12 ἵνα κερθῶσι πάντες οἱ μὴ πιστεύοντες τῇ ἀ-
ληθείᾳ, ἀλλ' εὐδοκίᾳ ἐν τῇ ἀδικίᾳ.

13 Ἡμεῖς δὲ ἐφείλουμεν διχαρισθῆναι τῷ Θεῷ πάν-
τες περὶ ὑμῶν, ἀδελφοί ἡγαπημένοι ὑπὸ Κυ-
ρίου, ἵνα ἔλθοι ὑμᾶς ὁ Θεὸς ἀπ' ἀρχῆς εἰς σωτηρίαν
ἡ ἀγιασμοῦ Πνεύματος, ἡ πέσει ἀληθείας.

14 Εἰς ὃ ἐκάλεισεν ὑμᾶς Δεῦρ ἢ ἀπαγγεῖν ἡμῶν, εἰς ὁρατοῦσιν δοξῇ ἢ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ.

15 Ἀρᾶ ἔν, ἀδελφοί, στήκετε, ἔκρατῆτε τὰς παραδόσεις, αἷς ἐδίδαχθητε ἢτε Δεῦρ λόγῳ, ἢτε ὑποστολῇ ἡμῶν.

16 Αὐτός ὁ Κύριος ἡμῶν Ἰησοῦς Χριστός, καὶ Θεός καὶ Πατὴρ ἡμῶν ὁ ἀγαπήσας ἡμᾶς, καὶ ὁὗς παράκλησιν αἰσίδαμ ἔκπιδά ἀγαθῶν ἐν χαρίτι.

17 Παρακαλέσαι ὑμᾶς τὰς καρδίας, ἔσχηξαι ἡμᾶς ἐν παντὶ λόγῳ ἔργῳ ἀγαθῷ.

Κεφ. γ'. 3.

1 ΤΟ λοιπὸν προσάχεσθε, ἀδελφοί, καὶ ἡμῶν, ἵνα ὁ λόγος ἢ Κυρίῳ τρέχη, ἔκζηται καθὼς ἔπρος ὑμᾶς.

2 Καὶ ἵνα ῥησθαίμεν ἀπὸ τῶν ἀτόπων καὶ πονηρῶν ἀνδραίων, ἢ ῥε πάντων ἡ πίσις.

3 Πιστός δὲ ἐστὶν ὁ Κύριος, ὃς ἐσχηξαι ὑμᾶς καὶ φιλᾶται ἀπὸ ἢ πονηρῶν.

4 Πεποιθαμέν δὲ ἐν Κυρίῳ ἐφ' ὅμᾶς, ὅτι ἂν ταρναγγέλλομεν ὑμῖν, ἔποιετέ, ἔποιήσετε.

5 Ὁ δὲ Κύριος κατέβηναί ὑμῶν τὰς καρδίας εἰς τὴν ἀγάπην τῷ Θεῷ, ἔεἰς ὑπομονὴν τοῦ Χριστοῦ.

6 Παραγγέλλομεν δὲ ὑμῖν, ἀδελφοί, ἐν αἰνῳματι τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, σέλλομεν ὑμᾶς ἀπὸ παντὸς ἀδελφῶ ἀτάκτως πεισασθῆναι, καὶ μὴ κατὰ τὴν παραδοσιν ἡμῶν παρεκλῆτε παρ' ἡμῶν.

7 Αὐτοὶ γὰρ οἶδατε πῶς δεῖ μιμεῖσθαι ἡμᾶς, ὅτι ἡτακτήσαμεν ἐν ὑμῖν.

8 Οὐδὲ διαρεῖν ἄρτον ἐφέρομεν παρὰ τίνος, ἀλλ' ἐν κότῳ ἔμειθα, νύκτα καὶ ἡμέραν ἐργαζόμενοι, ἵνα τοῖς ὑμῶν δώσωμεν πᾶσι ὑμῶν.

9 Οὐχ ὅτι ἡμεῖς ἔχομεν ἡξισίαν, ἀλλ' ἵνα εἰς αὐτὸν τύπον δώσωμεν ὑμῖν εἰς τὸ μιμεῖσθαι ἡμᾶς.

10 Καὶ γὰρ ὅτε ἡμεῖς πρὸς ὑμᾶς, τὰτο παραγγέλλομεν ὑμῖν, ὅτι ἡμεῖς ἔμεθα ἐργαζόμενοι, καὶ οὐκ ἐπιδόμεν.

11 Ἀκούομεν γὰρ πᾶσι πεισασθῆναι ἐν ὑμῖν ἀτάκτως, καὶ ἐν ἐργαζομένοις, ἀλλὰ πεισασθῆναι μετὰ.

12 Τοῖς δὲ τοιούτοις παραγγέλλομεν, καὶ ταρναγγέλλομεν Δεῦρ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ, καὶ ὅτι ἡμεῖς ἡσυχίᾳ ἐργαζόμενοι, τὸν εἰσὶν ἄρτον ἐφίωσιν.

13 Ὑμεῖς δὲ, ἀδελφοὶ, μὴ ἐκκακήσητε καλο-
νούνους.

14 Εἰ δέ τις ἔχῃ ὑπακῆν τῷ λόγῳ ἡμῶν, διὰ τῆς
ἐπιστολῆς, τὴν τιμὴν ποιήσθε, ὥστε μὴ συναναμίγνυσθε
αὐτῷ, ἵνα ἐντραπῇ.

15 Καὶ μὴ ὡς ἐχθρὸν ἠγαῖσθε, ἀλλὰ ὡς ἀδελφόν.

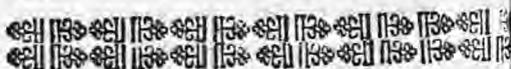
16 Αὐτὸς δὲ ὁ Κύριος ἡμῶν δώη ὑμῖν τὴν ἐ-
κτίμωσιν διὰ παντὸς ἐν παντὶ τρόπῳ. ὁ Κύριος μὲν πάν-
των ὑμῶν.

17 Ὁ ἀπασμὸς τῇ ἐμῇ χειρὶ Παύλου, ὃ ἐστὶ ση-
μεῖον ἐν πάσῃ ἐπιστολῇ· ἔτσι χάρις.

18 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μὲν πάν-
των ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Θεσσαλονικεῖς δεύτερα ἐγράφη ἀπὸ Ἀθή-
νῶν.





ΠΑΥΛΟΥ

ΤΩ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

Η' ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘΕΟΝ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

Κεφ. α. ι.

1 ΠΑΥΛΟΣ ΑΠΟΣΤΟΛΟΣ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ ΚΑΤ' ΕΠΙΤΡΑΧΗΝ ΘΕΟΥ ΣΩΤΗΡΟΣ ΗΜΩΝ ΚΑΙ ΚΥΡΙΩ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ, Τ' ΕΛΠΙΔΟΣ ΗΜΩΝ,

2 ΤΙΜΟΘΕΕ ΓΥΗΣΙΩ ΤΕΚΝΩ ΕΝ ΠΙΣΤΙ, ΧΑΙΡΙΣ, ΕΛΕΟΣ ΑΙΡΛΩΗ ΑΠΟ ΘΕΟΥ ΠΑΤΡΟΣ ΗΜΩΝ, ΚΑΙ ΧΡΙΣΤΟΥ ΙΗΣΟΥ Τ' ΚΥΡΙΟΥ ΗΜΩΝ.

3 ΚΑΘΩΣ ΠΑΡΕΚΑΛΕΣΑΙ ΣΕ ΠΡΩΤΗΝΑΙ ΕΝ ΕΦΕΣΩ ΠΕΡΟΔΥΜΕΝΟΣ ΕΙΣ ΜΑΚΕΔΟΝΙΑΝ, ΙΝΑ ΩΦΘΥΓΕΛΙΑΣ ΠΟΤΙ ΜΕ ΕΤΕΡΟΔΙΔΑΣΚΑΛΕΙΝ.

4 ΜΗΔΕ ΠΡΟΣΕΧΩΝ ΜΥΘΟΙΣ ΚΑΙ ΨΥΧΑΛΟΓΙΑΙΣ ΑΠΕΡΑΝΤΟΙΣ, ΑΙΤΙΝΕΣ ΖΗΤΗΣΕΙΣ ΠΑΡΕΧΟΥΣΙ ΜΕΛΛΟΝ Η ΟΙΚΟΝΟΜΙΑΝ ΘΕΟΥ Τ' ΕΝ ΠΙΣΤΙ.

5 ΤΟ ΔΕ ΤΕΛΟΣ Τ' ΩΦΘΥΓΕΛΙΑΣ ΕΣΤΙΝ ΑΓΑΠΗ ΟΗ ΚΑΘΑΡΩΣ ΚΑΡΔΙΑΣ, ΚΑΙ ΣΥΝΕΙΔΗΣΕΩΣ ΑΓΑΘΗΣ, ΚΑΙ ΠΙΣΤΕΩΣ ΑΝΥΠΟΚΡΙΤΗ.

6 ΟΥ ΤΙΝΕΣ ΑΣΟΧΗΣΑΝΤΕΣ, ΞΕΤΡΑΠΗΤΑΡ ΕΙΣ ΜΑΤΙΑΙΝ ΛΟΓΙΩΝ,

7 ΘΕΛΟΝΤΕΣ ΕΙΝΑΙ ΝΟΜΟΔΙΔΑΣΚΑΛΟΙ, ΜΗ ΝΟΩΝΤΕΣ ΜΗΤΕ ΑΛΕΓΧΕΙΝ, ΜΗΤΕ ΣΦΙΣΤΕΙΝ ΤΙΝΩΝ ΣΗΦΒΕΒΑΙΩΝΤΑΙ.

8 ΟΪΔΑΜΕΝ ΔΕ ΟΤΙ ΚΑΛΩΣ Ο ΝΟΜΟΣ, ΕΑΝ ΤΩ ΑΥΤΩ ΝΟΜΙΜΩΣ ΧΡΗΤΑΙ.

9 ΕΙΔΩΣ ΤΥΤΟ, ΟΤΙ ΔΙΚΑΙΩ ΝΟΜΟΣ Η ΚΑΙΤΑΙ, ΑΝΕΜΟΙΣ ΔΕ ΚΑΙ ΑΝΥΠΟΚΑΚΤΟΙΣ, ΑΣΕΒΕΣΙ ΚΑΙ ΑΜΑΡΤΑΛΟΙΣ, ΑΝΗΣΙΟΙΣ ΚΑΙ ΒΕΒΗΛΟΙΣ, ΠΑΤΡΑΛΦΑΙΣ ΚΑΙ ΜΗΤΡΑΛΦΑΙΣ, ΑΝΔΡΟΦΟΝΟΙΣ,

10 ΠΟΡΝΟΙΣ, ΑΡΣΕΝΟΚΟΙΤΑΙΣ, ΑΝΔΡΑΠΟΔΙΣΤΑΙΣ, ΨΕΥΔΕΙΣ, ΕΠΙΟΡΚΟΙΣ, ΚΑΙ ΕΙ Π ΕΤΕΡΟΝ ΤΩ ΨΥΧΑΝΗΣΗ ΔΙΔΑΣΚΑΛΙΑ ΑΝΤΙΣΤΗΝΑΙ.

11 ΚΑΤΑ ΤΩ ΕΥΑΓΓΕΛΙΩ Τ' ΔΕΞΗΣ Τ' ΜΑΚΑΡΙΩ ΘΕΩ, Ο ΕΠΙΣΤΕΥΘΗ ΕΓΩ.

12 Καί

12 Καὶ χάριν ἔχω πρὸς σὺνδυκνωσάντί με Χριστῷ Ἰησοῦ Κυρίῳ ἡμῶν, ὅτι πισὸν με ἠγήσατο, θερμοῦς διδασκαλῶν.

13 Τὸν πρότερον ὄντα βλάσφημον καὶ διώκτην καὶ βλάσφημον· ἀλλ' ἠλεήθην, ὅτι ἀγνῶν ἐποίησα ἐν ἀπιστίᾳ.

14 Ὑπερεπλεόνασε ὁ ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν μὴ τίμιος ἐν ἀγαθῇ, ὅτι ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

15 Πιστὸς ὁ λόγος, ὅτι πάσης ἀπαρχῆς ἄξιος, ὅτι ἡμεῖς Ἰησοῦς ἦλθεν εἰς τὸν κόσμον ἀμαρτωλοῦς σῶσαι, οἳ πρῶτος εἰμι ἐγώ.

16 Ἀλλὰ διὰ τὴν ἠλεήθην, ἵνα ἐν ἐμοὶ πρώτος ἠδικῆται Ἰησοῦς. Χριστὸς ὁ πᾶσαν μακροθυμίαν, ἵνα ὑποτάσσῃ τῶν μελλόντων πισθεῖν ἐπ' αὐτῷ εἰς αἰῶνα αἰῶνιον.

17 Τῷ ὅτι βασιλεὺς τῶν αἰώνων ἀφθάτως, ἀόρατος, ἀφ' αἰῶνος Θεὸς τιμὴ ὡς δόξα εἰς τὸν αἰῶνα τῶν αἰώνων, ἀμήν.

18 Ταύτην τὴν παρρησίαν φυλάττειν καὶ φυλάττειν σοι, ἵνα τὴν Τιμόθεε, καὶ τὰς προαγασίας ἐπὶ σφραγίσας, ἵνα κρατῶν ἐν αὐταῖς τὴν καλὴν καταστάσιν.

19 Ἐχὼν πίσιν ὡς ἀγαθῶν συνείδησιν, ὡς τινες ἀπειθήνοισι, πρὸς τὴν πίσιν ἐκνεύρησαν.

20 Ὡς ἐσιν Ὑμέναιος καὶ Ἀλέξανδρος, οἳ πᾶσι βλάσφημοι τοῦ Σατοῦρᾶ, ἵνα παιδευθῶσι μὴ βλάσφημοι.

Κεφ. β'. 2.

1 ΠΑΡΑΚΑΛΩ ὡς πρώτην πάντων ποιῶν δέησαι, προσεύχαις, ἐντεύξεις, ὀυχαριστίας ὑπὲρ πάντων ἀνθρώπων.

2 Ὑπὲρ βασιλείων ὡς πάντων τῶν ἐν ὑπεροχῇ ὄντων, ἵνα ἡρεμον ὡς ἡσυχίαν βίον διαγῶμεν ἐν ταπεινότητι καὶ σεμνότητι.

3 Τῇτι καλὸν ὡς ἀπόδεκτον ἐνώπιον τοῦ Σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ.

4 Ὅς πάντας ἀνθρώπους θέλει σωθῆναι, ὡς εἰς ἐκτασιν ἀληθείας ἐλθεῖν.

5 Εἰς τὸν Θεόν, εἰς ὃν μεσίτης Θεὸς ὡς ἀνθρώπων, ὡς Χριστὸς Ἰησοῦς.

6 Ὅς ὁ δὲς ἑαυτὸν ἀτίμωτον ὑπὲρ πάντων, τὸ μαρτυρεῖν καὶ τοῖς ἰδίοις.

7 Εἰς ὃν ἐτέθην ἐγὼ κήρυξ ὡς ἀπόστολος, (ἀληθῶς λέγω ἐν Χριστῷ, ὃν ὑμῶν) διδάσκαλος ἐν τῇ ἐκτασιν ὡς ἀληθεία.

8 Βέλομαι ὡς προσέχεις τὸν ἀνδρα ἐν παντί τῷ τῷ,

τόν· ἐπαίροντας ὅτις χάρις χάρις ὀργῆς ἔστιν ἡ
γίσιμ·

9 Ὡσαύτως ἔστι τὰς γυναῖκας ἐν καταβολῇ κοσμί-
μῳ αἰδοῦν ὡς σωφροσύνης κοσμεῖν ἑαυτάς, μὴ ἐν πλε-
μασί, ἢ χρυσῷ, ἢ μαργαρίταις, ἢ ἱματισμῷ πε-
τεῖν.

10 Ἀλλ' (ὅς πρέπει γυναιξὶν ἐπαγγελιομέναις)
σεβειαν) δι' ἔργων ἀγαθῶν.

11 Γυνὴ ἐν ἡσυχίᾳ μακροχρόνως ἐν πάσῃ ὁ-
ταγῇ.

12 Γυναικὶ ὅς διδάσκειν ἢ ἐπιτρέπω, ἡδὲ αὐτῇ
τῶν ἀνδρῶν, ἀλλ' ἔτι ἐν ἡσυχίᾳ.

13 Ἀδὰμ ὡς πρῶτος ἐπλάσθη, ἕτα Εὐα.

14 Καὶ Ἀδὰμ ἢ ἡπατήρ, ἢ ὁ γυνὴ ἀπατά-
σα, ἐν παραβάσει γέγονε.

15 Σωθήσεται ὅς διὰ τῆς τεκνογονίας, εἰς ἡ-
μῶν ἐν πίστι καὶ ἀγάπῃ ἡ ἀγιασμὸς μῶν συ-
νήκ.

Κεφ. γ'. 3.

1 ΠΙΣΤΟΣ ὁ λόγος· Εἴτις ἐπίσκοπος ἐρέγει
καλῶ ἔργα ἐπιθυμῇ.

2 Δὲ ὅς ἐπίσκοπος ἀντιλήπτοι εἶναι, μίαν
γαίαν ἀνδρῶν, ἡφάλιον, σωφρονα, κόσμιον, φιλέ-
τον, διδακτικόν,

3 Μὴ πάροικον, μὴ πλήκτω, μὴ αἰχροκερδῆ,
ἐπεικῇ, ἀμαχῶν, ἀφιλαργυρον.

4 Τῷ ἰδίῳ οἴκῳ καλῶς προϊστάμενον, τέκνα ἔχον
ἐν ὑποταγῇ μῶν πάσης σεμνότητος.

5 (Εἰ δέ τις ἰδίῳ οἴκῳ πρὸς ἡμῶν ἢ αὐτῶν
ἐκκλησίᾳ Θεῷ ἐπιμελήσεται·)

6 Μὴ νεόφυτον· ἵνα μὴ τυφωθεῖς, εἰς κρῖμα
πίστι καὶ διαβολῇ.

7 Δεῖ ὅς αὐτῷ καὶ μαρτυρίαν καλῶν ἔχειν ἀπὸ
ἐξωθεν, ἵνα μὴ εἰς ὀνειδισμὸν ἐμπίσῃ ἡ παγίς
διαβολῇ.

8 Διακόνες ὡσαύτως σεμνὸς, μὴ διλόγος, μὴ
πολλῶς προσέχοντας, μὴ αἰχροκερδεῖς.

9 Ἐχοντας τὸ μυστήριον τῆς πίστεως ἐν καθαρό-
τητι.

10 Καὶ ὅς δι' δοκιμαζέσθωσαν πρῶτον, εἴτα
κοιτίσων, ἀνέγκλητοι ὄντες.

11 Γυναῖκας ὡσαύτως σεμνὰς, μὴ διαβόλους, ἢ
λίαν, πιστὰς ἐν παντί.

12 Διακονοὶ ἔστωσαν μίαν γυναῖκα ὡς ἄνδρες, τῇ
καλῶς προϊστάμενοι ὡς τῷ ἰδίῳ οἴκῳ.

13 Οἱ ὡς καλῶς διακονήσαντες, βαθμὸν ἑαυ-
τὸν καλὸν ἀποποιῶνται, ὡς πολλῶν παρρησίαν ἐν πίστι
ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

14 Ταῦτά σοι γράψω, ἐλπίζων ἐλθεῖν πρὸς σε
 15 Εἰς τὸν δὲ βραδύνω, ἵνα εἰδῇς πᾶς δεῖ ἐν οἴκῳ
 ἀναστρέφειν, ἥτις ἐστὶν ἐκκλησία Θεοῦ ζῶντος,
 ἡ ὁδοῦ αἱ ἀληθείαι.

16 Καὶ ὁμολογημένοις μέγα ἐστὶ τὸ ἴδιον
 ἐν σαρκί, ἐδικαίω-
 ῃ ἐν πνεύματι, ὡς φθὴ ἀγγέλοις, ἐκηρύχθη ἐν
 ἀνθρώποις, ἐπιστεύθη ἐν κόσμῳ, ἀνεγέρθη ἐν δό-

Κεφ. δ'. 4.

1 ΤΟ ὁ Πνεῦμα ῥητῶς λέγει, ὅτι ἐν ὑσέρεσι
 καιροῖς ἀποστήσονται πνεῖς ἡ πίστεως, προ-
 σκυπτοὶ πνεύματι πλάτοις, ὡς διδασκαλίαις διαι-
 κτικοῖς.

2 Ἐν τῷ περικύτῳ ψεύδους, κεκοιτηρασμένων ἡ
 ἐν συνειδήσει,

3 Κωλυόντων γαμῖν, ἀπέχεσθαι βραυμάτων ὡς ὁ Θεός
 ἡτοίμασεν εἰς μετάληψιν μὴ ὀχυρασίας τοῖς κισσῶν
 ὡς ἀληθείαν.

4 Ὅτι πᾶν κτίσμα Θεοῦ καλόν, ὡς ἂν ἀπόβλη-
 τόν, μὴ ὀχυρασίας λαμβανόμενον.

5 Ἀγιάζεται γὰρ διὰ λόγον Θεοῦ καὶ ἐντολέων.

6 Ταῦτα ὑποτιθέμενος τοῖς ἀδελφοῖς, καλὸς ἔσθ
 ὁ ἴδιος Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐντρέφόμενος πᾶσι λόγοις ἡ
 πίστεως, καὶ τῇ καλῇ διδασκαλίᾳ, ἡ παρηγοροῦσα

7 Τῆς ὁ βεβήλας καὶ μακάριος μύθος παρὰ τὸν γού-
 ρον ὁ σιωπῇ πρὸς δύσεβαν.

8 Ἡ γὰρ σωματικὴ γυμνασία πρὸς ὀλίγον ἐστὶν
 ὀφελίμος, ἡ δὲ δύσεβαν πρὸς πάντα ὀφέλι-
 μος ἐστὶν, ἐπαγγελίαν ἔχουσα ζωῆς ἡ τῶν ὡς τῇ μελ-

9 Πιστὴς ὁ λόγος ὡς πάσης ἀποδοχῆς ἄξιος.

10 Εἰς τὸ γὰρ καὶ κοπιῶμεν καὶ ἐνεδιζόμεθα, ὅτι
 ἡτοίμασεν ἡμεῖς Θεοῦ ζῶντος, ὅς ἐστι σωτὴρ πάντων ἀν-
 θρώπων, μέγιστος πιστῶν.

11 Παραγγέλλει ταῦτα ὡς διδάσκει.

12 Μὴδὲ σὺ τῇ νεότητι καταφρονεῖς, ἀλλὰ τῷ
 γίνῃ τῶν πιστῶν ὡς λόγῳ, ὡς ἀντιστροφῇ, ὡς ἀγά-
 πῃ, ὡς πνοῇ, ἐν πίστει, ἐν ἀγνείᾳ.

13 Ὅτις ἐρχομαι πρόσθε τῇ ἀμαρτωσίᾳ, τῇ παρα-
 λητῇ, τῇ διδασκαλίᾳ.

14 Μὴ ἀμέλει ἡ ἐν σοὶ χρησμοσύνη, ὡς ἐδόθη σοι
 προφητείας, μὴ ὑποτιθέσθαι τῶν χειρῶν ἡ πρεσ-

15 Τούτῃ μελέτῃ, ὥς τύποις ἴσθι· ἵνα σὺ ἢ τῇ
νοτῇ φάμερ' ἢ ὡς πᾶσιν.

16 Εἴπεχε σεαυτῷ, ὡς τῇ διδασκαλίᾳ· ἐπίωρ
σῶταίς, τὸτο γὰρ πειῶν, ὡς σεαυτ' σώσεις ὡς τῇ
κρίσεως σου.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Π**ρεσβυτέρω μὴ ὑπεπλήξῃς, ἀλλὰ ὡς
πατέρα ὡς πατέρα· νεωτέρως, ὡς
δελφῆς.

2 Πρεσβυτέρως, ὡς μητέρας, νεωτέρως. ὡς αὐτῶν
φῶς, ὡς πάση ἀγνείᾳ.

3 Χήρας τίμη τὰς ὄντας χήρας.

4 Εἰ δέ τις χήρα τέκνα ἢ ἐκγονα ἔχει, μὴ δὲ
τῶν αὐτῶν πρῶτον ἢ ἰδίον οἶκον διδόντων, ὡς ἀμοιβὰς αὐτῶν
διδόναι τοῖς προγόνοις. τὸτο γὰρ ἐστὶ καλόν, ὡς αὐτῶν
δεκτὸν ἐκείνους τῷ Θεῷ.

5 Ἡ δέ τις ὄντως χήρα ὡς μεμονωμένη ἡλπίσκειν ἐπὶ
Θεῷ, ὡς προσμενῇ ταῖς δεήσεσι ὡς ταῖς προσδοκίαις
τυκτοῖς ὡς ἡμέρας.

6 Ἡ δέ τις σπυταλέσα, ζῶσα τέθνηκε.

7 Καὶ ταῦτα παράγγελλε, ἵνα ἀρεπίληστοι
σιν.

8 Εἰ δέ τις τῶν ἰδίων καὶ μάλιστα τῶν οἰκίων
πρῶτος, ἢ πῖσιν ἡρηται, ὡς ἔστιν ἀπίστη χήραν.

9 Χήρα καταλεγέσθω μὴ ἐλαττον ἐτῶν ἐξήκοντα
γεννητῆρα ἐνὸς ἀνδρὸς γυνή.

10 Ἐν ἔργοις καλοῖς μαρτυρημένη, εἰ ἐτεκνοτόρη-
σιν, εἰ ὁξετοδέχηται, εἰ ἀγίων πόδας ἐνέδιν, εἰ δὲ
βομένοις ἐπῆρκεται, εἰ πᾶσι ἔργῳ ἀγαθῷ ἐπῆρκεται
ἴσθι.

11 Νεωτέρως δέ χήρας ὡς χήρας· ἔτῳ γὰρ κατα-
τάσσῃ τῷ Χριστῷ, γαμῶν δέλησιν.

12 Ἐχυσαι κρίμα, ὅτι τῷ πρώτῳ πῖσιν ἡδὲ
τῷ αὐτῷ.

13 Ἀλλ' ὅτι καὶ ἀργαὶ μὴ δάμνησι πλεονεχέμεναι τῇ
οἰκίᾳ· καὶ μὲν δὲ ἀργαί, ἀλλὰ ὡς φησὶν ὡς
εἰρηνοί, λαλῆσαι τὰ μὴ δέοντα.

14 Βύλομαι ὡς νεωτέρως γαμῶν, τεκνογονῶν, ὡς
καθίσταται, μὴ δὲ μὴ ἀφορμῶν διδόναι τῷ αὐτῷ
μέτῳ λοιδόσεως χάριν.

15 Ἡ δὲ γὰρ τινες ὁξετοδέχηται ὅπισθεν τῷ Σατάνῃ.

16 Εἴ τις πῖσος, ἢ πῖσιν ἔχει χήρας, ἐπαρκῶς
αὐταῖς, ὡς μὴ βαρεῖσθω ἢ ἐκκλησία, ἵνα ταῖς ὄν-
τως χήραις ἐπαρκέσῃ.

17 Οἱ καλῶς προεσώτες πρεσβύτεροι διπλῶς τιμῶν
ἀξιοῦσθωσαν· μάλιστα οἱ κοπιῶντες ἐν λόγῳ καὶ δι-
σκαλίᾳ.

- 18 Λέγει γὰρ ἡ γραφή· Ὁὖν ἀκούοντα εὐφραίνονται·
 19 Κατὰ πρεσβυτερίαν καταγορεύει μὴ φοβηδέναι·
 20 Τὸς ἀμάρτανοντας ἐνώπιον πάντων ἐλέγχει, ἵνα
 21 Διαμαρτυρομαι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, ὅτι Κυρίῳ Ἰησοῦ
 22 Χριστῷ ταχέως μηδὲν ὑποτίθαι, μηδὲ κοινῶσαι
 23 Μηκετι ὑδροπότοι, ἀλλ' εἴπω εὐλογίᾳ χρωσάμενος
 24 Τῶν ἀνθρώπων αἱ ἁμαρτίαι πρόδηλοί εἰσι,
 25 Ὡσαύτως ὅτι καλὰ ἔργα πρόδηλά εἰσι· καὶ τὰ
 26 ἅλα ἔχοντα, κρυβύδαι ἢ ὕδατα.

Κεφ. 5. 6.

- 1 Ὅσοι εἰσὶν ὑπὸ ζυγὸν δόλου, τὰς ἰδέας
 2 Οἱ δὲ πιστοὶ ἔχοντες διωπτότας, μὴ κατοφρονεί-
 3 ῃσι, ὅτι ἀδελφοὶ εἰσιν, ἀλλὰ μάλλον δηλοῦνται
 4 ὅτι πιστοὶ εἰσι καὶ ἀγαπῆτοι, οἱ δὲ ἀπειθείας
 5 Εἰς τὴν ἐπεροδιδασκαλίαν, ὅτι μὴ προσέρχεται ἡ
 6 Τετύφωται, μηδὲν ὑπεραίμενος, ἀλλὰ νοσήν πε-
 7 ῃσι, βλασφημία, ὑπόνοιαι πανουργίαι,
 8 Παραδιδεσθῆναι διεφθαρμένων ἀνθρώπων τοῖς ἔργοις,
 9 Εἰς τὸν πορισμὸν μέγα ἢ ἀσέβεια μὲν αὐτῶν
 10 Οὐδὲν γὰρ εἰσδιδέγκαντες εἰς τὸν κόσμον, ὅτι
 11 ἔχοντες δὲ διδασκαλίαν ὅτι σκεπάζονται, τῆς
 12 Οἱ δὲ βελούδοι πλητεῖν, ἐμπίπτουσιν εἰς πειρασ-
 13 ῃσι, αἱτινες βυθίζουσιν τὸν ἀνθρώπου εἰς ὁλεθρὸν
 14 ὅτι τινες ὀργισμένοι ἀπεπληρώθησαν ἀπὸ τῆς
 15 πείρας

πίστεως, καὶ ἑαυτὸς παρ' ἐπ' αὐτῶν ἐδύναται πολλὰς.

11 Σὺ δ', ὦ ἀνθρώπε τῷ Θεῷ, ταῦτα φεύγε· δύναι δὲ δικαιοσύνην, δόσεβειαν, πίσιν, ἀγάπην, ὑπομονὴν, πραότητα.

12 Ἀγωνίζου τὸ καλὸν ἀγῶνα τῇ πίστει, ὑπὸ λαβῇ τῆς αἰωνίου ζωῆς, εἰς ἣν ἔσκηθης, καὶ ὁμολόγησας τῷ καλῷ ὁμολογῶντα σωπίον πολλῶν μαρτύρων.

13 Παραγγέλλει σοι σωπίον τῷ Θεῷ τῷ ζωοποιῶντι τὰ πάντα, ὁ Χριστὸς Ἰησοῦς τῷ μαρτυρήσαντος ὑπὲρ Παντὸς Παλάτιν τῷ καλῷ ὁμολογῶντι.

14 Τηρῶσαί σε τῷ ἐν πλὴν ἁσπίον, ἀρεπίασιν, μέλει τῷ ὑποφάνειαι τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστῷ.

15 Ἡ γὰρ καιρὸς ἰδίῳ δέξει ὁ μακάριος ὁ κύριος ὁ βασιλεὺς τῶν βασιλευσάντων, ὁ κύριος τῶν κυριουσάντων,

16 ὁ κύριος ἔχων ἀθανασία, φῶς οἰκῶν ἀτρίστον, ὃ εἶδεν ὑδαίς ἀνθρώπων, ὑδὲ ἰδῶν δύναται τῷ τιμῇ ὁ κράτος αἰώνιον. ἀμήν.

17 Τοῖς πλεστοῖς ἐν τῷ νῦν αἰῶνι παράγγελλε μὴ ὑποφρονεῖν, μηδὲ ἀπαικέναι ὑπὲρ πλῆτος ἀδελότητι· ἀλλ' ἐν τῷ Θεῷ τῷ ζῶντι, τῷ παρέχοντι ἡμῖν πλεστοῖς πάντα εἰς ἀπόλαυσιν.

18 Ἀγαθοεργεῖν, πλετῆν ἐν ἔργοις καλοῖς, ἀμειψόμενοι εἶναι, κοιτανικῶς.

19 Ἀποθησαυρίζοντας ἑαυτοῖς θεμέλιον καλὸν ἐπὶ τῷ μέλλον, ἵνα ὑπὸ λαβῶνται τῇ αἰωνίᾳ ζωῇ.

20 Ὁ Τιμόθεε, τῷ παρακαταθήκῃ φύλαξον, ἀποπέμπομενος τὰς βεβήλους κενοφωνίας, καὶ ἀντιθέσεις τῷ ψεύδω τῇ γνώσει.

21 Ἡ γὰρ τινες ἐπαγγελνόμενοι, πρὸς τῇ πίστει ἡσυχάζουσιν. Ἡ χάρις τοῦ κυρίου σου. ἀμήν.

Πρὸς Τιμόθεον πρώτη ἐχάφη ἀπὸ Λαοδικείας, ὑπὲρ ἐστὶ μητρόπολις Φρυγίας τῇ Πακατιανῇ.

ΠΑΥΛΟΥ

ΤΟΥ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΝΟΥ ΠΡΟΣ ΤΙΜΟΘΕΟΝ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ, Β.

Κεφ. α'. ι.

1 ΠΑΥΛΟΣ ΑΠΟΣΤΟΛΟΣ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ ΔΙΑ ΘΕΛΗΜΑΤΟΣ ΘΕΟΥ, ΚΑΤ' ΕΠΑΓΓΕΛΙΑΝ ΖΩΗΣ ΤΗΣ ΕΝ ΧΡΙΣΤΩ ΙΗΣΟΥ.

2 ΤΙΜΟΘΕΕ ΑΓΑΠΗΤΗ ΤΕΚΝΙ, ΧΑΡΙΣ, ΕΛΕΟΣ, ΕΙΡΗΝΗ ΑΠΟ ΘΕΟΥ ΠΑΤΡΟΣ, Ε ΧΡΙΣΤΟΥ ΙΗΣΟΥ ΤΟΥ ΚΥΡΙΟΥ ΗΜΩΝ.

3 ΧΑΡΙΝ ΕΧΩ ΤΩ ΘΕΩ, Ο ΚΑΤΡΩΣ ΑΠΟ ΠΡΟΓΕΝΟΝ ΕΣΤΙΝ ΚΑΘΑΡΩ ΣΥΝΕΙΔΗΤΙ, ΩΣ ΑΔΙΑΛΕΠΤΗΝ ΕΧΩ ΤΗ ΠΙΣΤΙ ΣΕ ΜΕΤΑ ΕΝ ΤΑΙΣ ΔΕΗΣΕΣΙ ΜΗ ΝΥΚΤΟΣ ΚΑΙ ΗΜΕΡΑΣ.

4 ΕΠΙΠΟΘΩΝ ΣΕ ΙΔΕΩ, ΜΕΜΗΜΕΝΟΣ ΣΕ ΤΩ ΔΑΚΡΥΣΙΝ, ΟΤΙ ΧΑΡΑΣ ΠΛΗΡΩΘΩ.

5 ΥΠΟΜΝΗΣΙΝ ΚΑΜΒΑΛΩΝ ΤΗΣ ΕΝ ΣΟΙ ΔΥΝΑΜΕΙΣ ΠΙΣΤΕΙΣ, ΗΠΙΣ ΣΤΑΘΗΣΕ ΠΡΩΤΟΝ ΕΝ ΤΗ ΚΑΙΝΗ ΣΕ ΛΟΙΔΕΙ ΕΝ ΤΗ ΜΗΤΡΙ ΤΗΣ ΕΒΡΕΙΑ, ΠΕΠΕΙΣΜΑΙ ΔΕ ΟΤΙ ΚΑΙ ΕΝ ΣΟΙ.

6 ΔΙ' ΩΝ ΑΙΤΙΩΝ ΑΝΑΜΕΝΗΤΙΚΟΝ ΣΕ ΔΥΝΑΤΕΥΣΑΙ ΤΟ ΧΑΡΙΣΜΑ ΤΟΥ ΘΕΟΥ, Ο ΕΣΤΙΝ ΕΝ ΣΟΙ ΔΙΑ ΤΗΣ ΑΠΟΔΕΙΞΕΩΣ ΤΗΣ ΧΑΡΙΤΟΣ ΜΗ.

7 ΟΥ ΧΩ ΕΔΩΚΕΝ ΗΜΙΝ Ο ΘΕΟΣ ΠΝΕΥΜΑ ΔΕΛΙΣΙΑΣ, ΑΛΛΑ ΔΥΝΑΜΕΩΣ Ε ΑΓΑΠΗΣ ΚΑΙ ΣΦΡΟΝΗΣΙΜΟΥ.

8 ΜΗ ΕΝ ΕΠΑΛΛΗΛΗΣ ΤΟ ΜΑΡΤΥΡΙΟΝ ΤΟΥ ΚΥΡΙΟΥ ΗΜΩΝ, ΜΕΤΕ ΜΕ ΤΗΣ ΔΕΣΜΙΟΝ ΑΝΤΙ, ΑΛΛΑ ΣΥΚΑΚΟΠΑΘΗΣΟΙ ΤΩ ΕΠΑΓΓΕΛΙΩ ΚΑΙ ΔΥΝΑΜΙΝ ΘΕΟΥ.

9 ΤΩ ΤΑΙΣΤΟΙΣ ΗΜΑΣ, ΚΑΙ ΚΑΛΕΣΤΕΡΟΙΣ ΚΛΗΤΑΙ ΑΓΙΑ, ΚΑΙ ΤΑ ΕΡΓΑ ΗΜΩΝ, ΑΛΛΑ ΚΑΤ' ΙΔΙΩΝ ΠΡΟΘΕΣΙΝ, Ε ΧΑΡΙΝ ΤΗΣ ΔΟΘΕΙΣΑΣ ΗΜΙΝ ΕΝ ΧΡΙΣΤΩ ΙΗΣΩ ΠΡΟ ΧΡΟΝΟΥ ΑΙΩΝΙΟΥ.

10 ΠΑΡΕΡΩΘΗΣΑΙ ΔΕ ΝΥΝ ΔΙΑ ΤΗΣ ΥΠΟΦΡΑΓΙΣ ΤΗΣ ΣΩΤΗΡΟΣ ΗΜΩΝ ΙΗΣΟΥ ΧΡΙΣΤΟΥ, ΚΑΤΑΡΓΗΣΑΝΤΟΣ ΜΕΝ ΤΟΝ ΘΑΝΑΤΟΝ, ΦΑΝΙΣΑΝΤΟΣ ΔΕ ΖΩΩΝ ΚΑΙ ΑΦΘΑΡΣΙΑΝ ΔΙΑ ΤΗΣ ΕΠΑΓΓΕΛΙΑΣ.

11 ΕΙΣ ΔΕ ΕΤΕΘΛΩ ΕΓΩ ΚΗΡΥΞ Ε ΑΠΟΣΤΟΛΟΣ, Ε ΔΙΔΑΚΤΙΚΟΣ ΕΘΩΝ.

12 ΔΙ' ΩΝ ΑΙΤΙΩΝ Ε ΤΑΥΤΑ ΠΑΘΩ, ΑΛΛ' ΗΝ ΕΠΙΧΥΣΜΑ, ΟΤΙ ΔΕ ΕΝ ΤΗ ΠΕΠΕΙΣΜΑΙ, ΚΑΙ ΠΕΠΕΙΣΜΑΙ ΟΤΙ ΔΥΝΑΤΟΣ ΕΣΙΝ ΤΗ ΠΑΡΑΘΗΛΩ ΜΗ ΦΥΛΑΞΟΙ ΕΙΣ ΕΚΕΙΝΩ ΤΗ ΗΜΕΡΑΝ.

13 ΥΠΟΜΝΗΣΙΝ ΕΧΕ ΥΓΙΜΟΝΤΩΝ ΛΟΓΩΝ, ΟΝ ΠΑΡ' ΕΜΕ ΗΚΟΥΣΑΣ ΕΝ ΠΙΣΤΙ Ε ΑΓΑΠΗ ΤΗ ΕΝ ΧΡΙΣΤΩ ΙΗΣΩ.

14 Τῷ καλῷ ᾠγκρατῆρῳ φύλαξον Διὰ Πά-
ντος Ἀγίου καὶ Σοικυῆτος ἐν ἡμῖν.

15 Οἶδας τὴν, ὅτι ἀπεσφραγίσθαι με πάντες οἱ ἐν
τῇ Ἀσίᾳ, οὗ ἐστὶ φύλαξος καὶ Εὐμογέτης.

16 Δὴν ἔλεος ὁ Κύριος τῷ Οἰησιφόρῳ οἴκῳ· ὅτι
πολλοὶς με ἀνέβουξε, ἐ τῷ ἀλυτῇ μὴ ἔκ-
χύνθῃ.

17 Ἀλλὰ ἡρόδοτος ἐν Γ' αἰμῇ, σπυδαϊότερον ἐξή-
κε με εὖρε.

18 Δὴν αὐτῷ ὁ Κύριος ἀρεῖν ἔλεος πρὸς Κύριον ἐν
ὁκείῃ τῇ ἡμέρᾳ· ἐ ὅσα ἐν Εὐφράτῃ διηκόνησε, βέλ-
τιον σὺ γινώσκεις.

Κεφ. Β'. 2.

1 Σὺ ἂν, τέκνον μὴ, ἐνδυναμῇ ἐν τῇ χάριτι
τῇ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ.

2 Καὶ ἡ ἡλικίας παρ' ἐμὴν Διὰ πολλῶν μαρτύρων,
ταῦτα πρὸς πίστεος ἀνθρώποις, οἵτινες ἰσχυροὶ ἐσύν-
ται ἐν ἐτέρῃ διδασκαλίᾳ.

3 Σὺ ἂν κακοπαθήσῃς ὡς καλὸς στρατιώτης Ἰησοῦ
Χριστοῦ.

4 Οὐδὲν στρατιωτικὸν ἐμπλέκεται ταῖς καὶ βίᾳ πραγ-
μασίαις, ἵνα πρὸς στρατολογησάμῃ ἀρέσῃ.

5 Ἐὰν ὅ ἐ ἀθλήσῃς, ἡ στεφάνηται ἐν μὴ νομί-
μῳ ἀθλήσῃ.

6 Τὸν κοπιῶντα γεωργὸν δεῖ πρῶτον τῷ καρπῷ με-
ταλαμβάνειν.

7 Νόμι ἂν λέγω· δὴν γὰρ σοὶ ὁ Κύριος συνέστιν ἐν
κάσῃ.

8 Μημένους Ἰησοῦν Χριστὸν ἐξηγερμένον ὡς νεκρῶν,
ἐν σπέρματι Δαβὶδ, καὶ τὸ ἀναγγέλλειν με.

9 Ἐν ᾧ κακοπαθῶ μέχρι θανάτου, ὡς κακῆτος
ἀλλ' ὁ λόγος καὶ Θεὸς ἡ δέεται.

10 Διὰ τὸν πάντα ὑπομένει Διὰ τῆς ἐκκλησίας,
ἵνα ἐ αὐτοῖς σωτηρίας τύχῃς καὶ ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ
μὴ δόξης αἰωνίᾳ.

11 Πιστὸς ὁ λόγος· εἰ γὰρ συναπεθάρμομαι, ἐ συ-
ζήσομαι.

12 Εἰ ὑπομένω, ἐ συμβασιλεύσω· εἰ ἀρνήμε-
θα, κακῆτος ἀρνήσεται ἡμᾶς.

13 Εἰ ἀπιστῶ, ἐκείνος πιστὸς μένει· ἀρνήσεται
ἐσὺ καὶ ἡ δύναμις.

14 Ταῦτα ὑπομίμησθε, Διὰ μαρτυρόμενος ἐν πίστι
καὶ Κυρία μὴ λογομαχεῖν ἢ ἕδῃ χρησίμῳ, ὅπῃ κα-
τασφάτῃ τῷ ἀκούοντι.

15 Σπύδασον σιωπῇ δόκιμον πρὸς τὸν Θεόν,
ἐργάτῃ ἀμεταίχνητον, ἐρδομῆντα καὶ λόγον καὶ ἀ-
ληθείας.

16 Τὰς δὲ βεβήλας κενοφώνους παροϊσμοῦ ὅτι
τῶν γὰρ προκόψουσιν ἀσεβείας.

17 Καὶ ὁ λόγος αὐτῷ ὡς γὰγγραινα νομῶ ἔξω· ὡς
εἰν Ἰσχυροὺς καὶ φιλάτους.

18 Οἱ πῦνες παρὶ τῆ ἀληθείας ἡσυχάζουσιν, λέγοντες
τὸ ἀνίστασθαι ἤδη γεγενῆσθαι· ὁ ἀνιστρέψῃσι τὴν τινὴν
πίστιν.

19 Ὁ μέντοι Σερεὺς Θεμέλιος τῷ Θεῷ ἔσκηεν, ἔχων
τὴν σφραγίδα τῆς ἀληθείας· ἔγνω Κύριος τῆς ἕκτας αὐτοῦ
καὶ· Ἀποστόλων ἀπὸ ἀδικίας πᾶς ὁ ἐνομαζόμενος τὸ ὄνομα
Χριστοῦ.

20 Ἐν μεγάλῃ ἡ οἰκία ἧς ἐστὶ μόνον ἰσχυροῦ χρυσῶ
ὁ σφραγισμὸς, ἀλλὰ ὁ ξύλινος ὁ σφραγισμὸς· ὁ δὲ μὲν εἰς
τιμὴν, ὁ δὲ εἰς ἀτιμίαν.

21 Ἐὰν τις ὀκκαθάρῃ ἑαυτὸν ἀπὸ τούτων, ἔσται
σκεπτός εἰς τιμὴν, ἡγιασμένον ὁ εὐχρηστον τῷ δεσπο-
τῇ· εἰς πλὴν ἔργον ὡς ἀπὸ τῆς ἡτοιμασμένης.

22 Τὰς δὲ νεωτερικὰς ὑπεθυμίας φεύγε· δίδουκε ἡ
δικαιοσύνην, πίστιν, ἀγάπην, ἐιρήνην καὶ ἀγα-
πημένην τῷ Κυρίῳ ὡς καὶ πατρὶς καρδίας.

23 Τὰς δὲ μακάρας καὶ ἀπαιδούτους ζητήσεις παύσασθαι, εἰ-
δὼς ὅτι ἡμεῖς μάχης.

24 Δίδουκε ἡ Κυρία καὶ δὲ μάχης, ἀλλὰ ἡμεῖς εἶναι
πρὸς πάντας, διδασκτικὸν, ἀνεξίτητον.

25 Ἐν περικύβητι παιδευόμενα τῆς ἀντιδυσχερῆς·
καὶ τότε δὴ αὐτοὺς ὁ Θεὸς μεταποιᾷ εἰς ἐπίγνωσιν
ἀληθείας.

26 Καὶ ἀνδρώμενοι ὡς τῇ τῇ ἀνδρείᾳ παύσας, ἐ-
κφυγμένοι ὡς αὐτοὶ εἰς τὸ ὅκνην θέλημα.

Κεφ. γ'. 3.

1 Τοῦτο δὲ γίνωσκε, ὅτι ὁ εὐχάριστος ἡμῶν
ἐνέσονται καιροὶ χολεροί.

2 Ἐσονται γὰρ οἱ ἄνθρωποι φιλαυτοὶ, φιλαργυροί,
ἐκζητοῦντες, ὑπερηφάνοι, βλάσφημοι, γονεύσιν ἀπει-
θεῖς, ἀχάριστοι, ἀπίστοι,

3 Ἀτόργοι, ἄσπονδοι, διαβόλοι, ἄκρατοι, ἀνήμε-
ροι, ὑφιλάτοι.

4 Προδόται, τροπικοί, τετυφωμένοι, φιλήδονοι
καὶ οἱ φιλόδοξοι.

5 Ἐχόντες μόρφωσιν ἀσεβείας τὴν δὲ δύναμιν αὐτῆς
ἠρημένοι· ὁ γὰρ ἀποτρέψῃ.

6 Ἐκ τούτων γὰρ εἰσιν οἱ ἐκδύνοντες εἰς τὰς οἰκίας,
καὶ αἰχμηλοῦντες τὰ γυναικάρια σεσωρεύμενα ἀμάρ-
τίας, ὡς οὐκ ἔστιν ὑπεθυμίας ποικίλαις.

7 Πᾶσι μὲν ἀνδράσιν, ὁ μὲν εἰς ἐπίγνωσιν
ἀληθείας ἐλθὼν δυνάμενα.

8 Ὁν τρόπον δὲ ἰδούμενος ὁ ἰαμβρὺς ἀνιέστησαν
Μωυ-

Μουσῇ, ἢ τω ἑστίῳ ἀνδρίζανται τῇ ἀληθείᾳ, ἀνδρω-
ποι κατεφθαρμένοι τῶν, ἀδίκων καὶ τῶν τῶν.

9 Ἀλλ' ἢ προκόψουσιν ὑπὲρ πάντων· ἡ γὰρ αἰτία αὐτῶν
ἐκδόλος ἔσται πᾶσιν, ὡς ἔχει οὐρανὸν ἡ γένεσις.

10 Σὺ ὅμως παρεκώλυθης μὴ τῇ διδασκαλίᾳ, τῇ ἀ-
γαθῇ, τῇ προέσει, τῇ πίστι, τῇ μακροθυμίᾳ,
τῇ ἀγάπῃ, τῇ ὑπομονῇ.

11 Τοῖς διαγμοῖς, τοῖς ταθήμασιν, οἷά μοι ἐγί-
νετο ἐν Ἀντιοχείᾳ, ἐν Ἰκονίῳ, ἐν Λύστρῃ· οἷς διαγ-
μὸς ὑπὸ πᾶσι, ἔσται πάντων με ἐρρύσασθαι ὁ Κύριος.

12 Καὶ πάντες δὲ οἱ θέλοντες ἀσεβῶς ζῆν ἐν Χρ-
στῷ Ἰησῷ, διωχθήσονται.

13 Πονηροὶ ὅμως ἀνδρες οἱ γόητες προκόψουσιν ὑπὲρ
τῶν καίων, πλανῶντες, καὶ πλανώμενοι.

14 Σὺ δὲ μένε ἐν οἷς ἑμαυτὸς ἔσθω, εἰδὼς
παρὰ τίνος ἑμαυτὸς.

15 Καὶ ὅτι ἀπὸ βρέφους τὰ ἱερὰ γράμματα οἶδας,
τὰ διδάσκοντά σε σωθῆναι ὡς σωτηρίαν διὰ πίστεως τῇ
ἐν Χρστῷ Ἰησῷ.

16 Πᾶσα γὰρ φη, θρόνος, καὶ ὁφείλω πρὸς δι-
δασκαλίαν, πρὸς ἑλεγχον, πρὸς ἐπανόρθωσιν, πρὸς
καταβολὴν τῇ ἐν δικαιοσυνῇ.

17 Ἴνα ἄριστος ἢ ὁ τῷ Θεῷ ἄνθρωπος, πρὸς πᾶν ἔρ-
γος ἀκατὸν ὑπερηφάνος.

Κεφ. δ'. 4.

1 Διημερτύρομαι ἢ ἐγὼ ἐν ὧν τῷ Θεῷ, καὶ
τῷ Κυρίῳ Ἰησῷ Χρστῷ τῷ μέλλοντος κρίναι
ζώτας καὶ νεκρῶν καὶ τῷ ὑποφάρμακον αὐτῶν, ἔσθω βασι-
λεὺς αὐτῶν.

2 Κήρυξεν τὸν λόγον, ἐπίσημι, δίκαιως, ἀκαίρως·
ἑλεγχον, ὑποτίμησιν, παρακάλεισιν ἐν ταύτῃ μακρο-
θυμίᾳ καὶ διδαχῇ.

3 Ἔσθω γὰρ καὶ οἱ ὅτι τῇ ὑγιαίνουσιν διδασκαλίᾳ
ἢ ἀνέξονται· ἀλλὰ καὶ τὰς ὑποθυμίας τὰς ἰδίους
ἐκποῖς ἐπισυνάγουσι διδασκάλους, κηθόμενοι τῇ
καλῇ.

4 Καὶ ἀπὸ μὲν τῇ ἀληθείᾳ τῇ ἀκολῇ ἀποστρέψουσιν,
ἐπὶ τῇ τῆς μύθου ἐκπαθήσονται.

5 Σὺ ὅμως ἤφε ἐν πᾶσι, κακοπαθήσων, ἔργον ποιῶ-
σιν διαγγελίᾳ, τῇ δικονομίᾳ σε πληροφορήσων.

6 Ἐγὼ γὰρ ἤδη σπένδομαι, καὶ ὁ καιρὸς τῇ ἐμῇ ἀ-
ναλήσει ἐφύγη.

7 Τὸν ἀγῶνα τὸν καλὸν ἡγώνισμαι, τὸν δρόμον τετί-
λεκα, τῇ πίστεϊ τετέρηκα.

8 Λαίπν, ἀπεκταί μοι ὁ τῇ δικαιοσύνῃ σέφους,
ὁ ἀπεδείξαι μοι ὁ Κύριος ἐν ὁμίᾳ τῇ ἡμέρᾳ, ὁ ἐν-
καίριος κρητὴν· ἢ μόνον δὲ ἐμοί, ἀλλὰ καὶ πᾶσι τοῖς
ἐκπαθήσονται τῇ ἐπιφύγειν αὐτῶν.

9 Στάθωσιν ἐλπίαν πρὸς με ταχέως.

10 Δημῶς γὰρ με ἐγκατέλειπεν, ἀγαπήσας ἡ σὺν αὐτοῖς, ἔσπευσεν εἰς Θεσσαλονίκην, Κρήσκης εἰς Γαλατίαν, Τίτος εἰς Δαλματίαν.

11 Δημῶς ἐστὶ μόνος μετ' ἐμῶν. Μάρκον ἀναλαβὼν, ἄγε μὲν σεαυτῷ· ἐστὶ γὰρ μοι εὐχρηστὸς εἰς διακονίαν.

12 Τυχικὸν δὲ ἀπέστειλα εἰς Ἔφεσον.

13 Τὸν Φελαίνην, ὃν ἀπέλιπον ἐν Τρωάδι παρὰ Κάρπῳ, ἐρχόμενος φέρε, καὶ τὰ βιβλία, μάλιστα τὰς μεμβράνας.

14 Ἀλέξανδρος ὁ χαλκῶς πολλά μοι κακὰ ἐνεδείκνυτο· ἀποδώσῃ αὐτῷ ὁ Κύριος κατὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.

15 Οὐδ' ἐσὺ φυλάσσω· λίαν γὰρ ἀνθέστηκε τοῖς ἡμετέροις λόγοις.

16 Ἐν τῇ πρώτῃ μὲν ἀπολογίᾳ, ἠδὲ μοι συμπαραγέμετο, ἀλλὰ πάντες με ἐγκατέλιπον. (μὴ αὐτοῖς λογισθῇ.)

17 Οὐδ' ἐπὶ Κυρίου μοι παρέστη, ἔνεδυνάμυσέ με, καὶ ἐν τῇ ἐμῇ τῷ κήρυγματι πληροφορηθῇ, ἔσπευσεν πάντα τὰ ἔθνη· ἔρρυσθὼν ὡς σώματος λεοντός.

18 Καὶ ῥύσεται με ὁ Κύριος ἀπὸ πάντων ἔργων πονηροῦ, ἔσώσεται εἰς ἡμῶν βασιλείαν αὐτοῦ καὶ ἐπαράσιον· ὃν δόξα εἰς τὴν αἰῶνα τῶν αἰώνων, ἀμήν.

19 Ἀσπασαί Πρόσκηνον καὶ Ἀκύλην, καὶ τὸν Οὐνησιφάνην οἶκόν.

20 Ἐραστος ἔμεινεν ἐν Κορίνθῳ. Τρόφιμον δὲ ἀπέλιπον ἐν Μιλήτῳ ἀσθενῆντα.

21 Σπυδάσον πρὸ χειμῶνος ἐλθῶν. Ἀσπάζεται σε Εὐβύλος, καὶ Πύθος, καὶ Λῆτος, καὶ Κλαυδία, καὶ οἱ ἀδελφοί πάντες.

22 Οὐ Κύριος Ἰησοῦς Χριστὸς μὲν καὶ πνεύματός σου. Ἡ χάρις μετὰ ὑμῶν. ἀμήν.

Πρὸς Τιμόθεον δεύτερον καὶ Ἐφεσίων Ἐκκλησίαν
πρωτὸν Ἐπίσκοπον χειροτονηθέντα, ἐγράφη ἀπὸ Ρώμης, ὅτε ὡς δούτερον παρέστη Παῦλος τῷ Καίσαρι Νέρωνι.

K. P. 3. I.

13 Ἡ μαρτυρία αὕτη ἐστὶν ἀληθὴς· διὸ ὡς αὐτῶν
ἀνταρξήσαντες ἀποτόμως, ἵνα ὑγιαίνουσιν ἐν τῇ πίστει.

14 Μὴ προσέχοντες Ἰουδαίκοις μύθοις, & ἐντολαῖς ἀνθρώπων ἀποστροφόμενων τῷ ἀλήθειᾳ.

15 Πάντα μὲν καθαρὰ τοῖς καθαροῖς· τοῖς ὅμως μεμιασμένοις & ἀπίστοις ἡδὲν καθαρὸν, ἀλλὰ μεμίδνται αὐτῷ & ὁ νόμος & ἡ συνείδησις.

16 Θεὸν ὁμολογῶσι εἰδέναι, τοῖς ὅμως ἔργοις ἀντιτίθεται· βδελυκτοὶ ὄντες & ἀπειθεῖς, & πρὸς πατρὶ ἔργον ἐγκαθὸν ἀδόκιμοι.

Κεφ. β'. 1.

1 Σὺ γὰρ ἡ ἀλήθεια ἧς πρῶτον τῇ ὑγιαινύσῃ διδασκαλίᾳ.

2 Πρεσβύτες ἡγαγίνο ἔναι, σεμνὸς, σώφρωνας, ὑμαιοῦντας τῇ πίσει, τῇ ἀγάπῃ, τῇ ὑποταγῇ.

3 Πρεσβύτες ὡς αὐτοὶ ἐστὶν καταστήματι ἱεροπρεπέως, μὴ διφθόροις, μὴ οἶνῳ πολλῷ δεδουλωμένους, παλαδιδασκαλούς,

4 ἵνα σώφρονίζωσι τοὺς νέους, φιλάδελφους ἔναι, φιλοτέκνους.

5 Σώφρονες, ἀγνῆς, οἰκνοῖς, ἀγαθοῖς, ὑποτασσόμενοι τοῖς ἰδίῳις ἀνδράσιν, ἵνα μὴ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ βλασφημηθῇ.

6 Τὸς νεωτέρους ὡς αὐτοὶς ὁμοκαλῶν σώφρονῶν.

7 Περὶ πάντα σεσωτὸν παρεχόμενος τύπον καλῶν ἔργων, ἐν τῇ διδασκαλίᾳ ἀδιφθορίᾳ, σεμνότητι.

8 Λέγον ὑμῖν, ἀκατάγνωστον, ἵνα ὁ Θεὸς ἐνδοξίας ἐντραπῇ, μηδὲν ἔχων πᾶσι ἡμῶν λεγὲν φῶλον.

9 Δόξα ἰδίῳις δεσποταῖς ὑποτάσσεται, ἐν πᾶσιν ἀνδράσιν ἔναι, μὴ ἀντιλέγοντας.

10 Μὴ νοσφίζομενος, ἀλλὰ πίσιν πᾶσιν ἐνδοκνύμενος ἀγαθῶν· ἵνα ἡ διδασκαλίᾳ τοῦ σωτῆρος ἡμῶν Θεοῦ κοσμοῦσιν ἐν πᾶσιν.

11 Ἐπεφάνη γὰρ ἡ χάρις τοῦ Θεοῦ ἡ σωτήριος πᾶσιν ἀνθρώποις,

12 Παιδευτὰ ἡμῶς, ἵνα ἀρησάμενοι τοῦ ἀσεβείν & τοῖς κοσμικοῖς ὑποθυμίας, σώφρονες & δικαῖοι & ἐνσεβῶς ζήσωμεν ἐν τῷ τῶν αἰῶνι.

13 Προσδεχόμενοι τοῦ μακαρίου ἐλπίδα, & ὑπακούοντες τῇ δόξῃ τοῦ μεγάλου Θεοῦ & σωτῆρος ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.

14 Ὃς ἔδωκεν ἑαυτὸν ὑπὲρ ὑμῶν, ἵνα αὐτρώσῃται ἡμᾶς ἀπὸ πάσης ἀτομίας, & καθάρσῃ ἑαυτὸν ἑαυτῷ λαὸν ἁγίον, ζηλοῦν καλὸν ἔργων.

15 Τῶντα ἀλήθεια, & πᾶσα ἀλήθεια, & ἐλεγχε μὲν πᾶσης ὑπαταγῆς. μηδεὶς σε πειθομένητω.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Υ**πομίμησθε αὐτὰς ἀρχαίς, & θεσφαίς ὑποτασσέσθαι, πειθαρχεῖν, πρὸς τὰν ἔργον ἀγαθὸν ἐτοίμως εἶναι.

2 Μηδεὶς βλασφημεῖν, ἀμάχως εἶναι, ἐπισηκῶν, πᾶσαν ἐνδοκνημίαν προσηκόντα πρὸς πάντας ἀνδράποιν.

3 Ἡμεῖς γὰρ ποτε & ἡμεῖς ἀνέστη, ἀπειθεῖς, πλανώμενοι, δουλοῦντες ἐπιθυμίαις & ἡδοναῖς ποικίλαις, ἐν κοκίᾳ & φθόρῳ διάγοντες, συγκατοί, μεσῶντες ἀλλήλους.

4 Ὅτε δὲ ἡ χάρις & ἡ φιλοφροσύνη ἐπεφάνη ᾧ σωτήρος ἡμῶν Θεῷ,

5 Οὐκ ἔργον τῷ ἐν δικαιοσύνῃ ὅν ἐποίησαμεν ἡμῖς, ἀλλὰ κατὰ τὴν αὐτῆς ἔλεον ἔσωσεν ἡμῖς, διὰ λόγον παλιγγνησίας, & ἀνακρινώσεως Πνεύματος Ἀγίου.

6 Οὗ ἔλαχεν ἐφ' ἡμῶν πλησίον, διὰ τῆς χάριτος τοῦ σωτήρος ἡμῶν.

7 Ἵνα δικαιωθέντες τῇ ἐκείνῃ χάριτι, κληρονομήσωμεν κατὰ ἐπίδοξιν αἰνίου.

8 Πισὸς ὁ λόγος. & περὶ τούτων βούλομαι σε διαβεβαιούσθαι, ἵνα φροντίζωσι καλὸν ἔργον προϊταῖς οἱ πεπισθόκετες τῷ Θεῷ. τῶντα ἐστὶ τὰ καλὰ & ὠφέλιμα τοῖς ἀνθρώποις.

9 Μόρας δὲ ζητήσεως, & ὀνειδισμοῦ, & ἔριδος, & μάχας νομικὰς πελάισας. ἐστὶ γὰρ ἀνοφελὲς & μνηστειοί.

10 Αἰρετικὸν ὡς ἄρκετον καὶ ἰσχυρὸν & δούτεραν νηδύνειν παραιτῶ.

11 Εἰδὼς ὅτι θέεραπται ὁ τοιοῦτος, & ἁμαρτάνει, ὡν αὐτοκατάκριτος.

12 Ὅταν πέμψω Ἀρτιμῶν πρὸς σε, ἡ Τυχικὸν, σπύδασον ἐλθεῖν πρὸς με εἰς Νικόπολιν. ὅκα γὰρ κεκριμένα παραχρημάσαι.

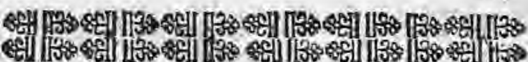
13 Ζῶαν τὸ νομικόν & Ἀπολλῶ σπυδαίως πρότεμψον, ἵνα μηδὲν αὐτοῖς λείπῃ.

14 Μνησάμετάσαν δὲ & οἱ ἡμέτεροι καλὸν ἔργον προϊταῖς εἰς τὰς ἀναγκαίας χρεῖας, ἵνα μὴ ὦσιν ἄκαρτοι.

15 Ἀσπάζονται σε οἱ μετ' ἐμοῦ πάντες. ἀσπάζονται τοὺς φιλοῦντας ἡμῖς ἐν πίστει. Ἡ χάρις μετὰ πάντων ἡμῶν, ἀμήν.

Πρὸς Τίτον τὸν Κρητῶ ὀκνησίας πρῶτον ἐπίσκοπον χειροτονηθέντα, ἐγράφη ἀπὸ Νικόπολιν τὸν Μακεδονίας.

ΠΑΥ.



ΠΑΥΛΟΥ

ΤΩ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΝΩ ΠΡΟΣ ΦΙΛΗΜΟΝΑ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

Κεφ. α. ι.

1 ΠΑΥΛΟΣ ΔΕΣΜΙΟΣ ΧΡΙΣΤΟΥ ΙΗΣΟΥ, & ΤΙΜΟΘΕΟΣ
 ὁ ἀδελφεός, Φιλημονι τῷ ἀγαπητῷ & συνι-
 γνῶσιν ὑμῶν,

2 Καὶ Ἀπφίᾳ τῇ ἀγαπητῇ, & Ἀρχίππῳ τῷ συ-
 γγατριῷ τῇ ἡμῶν, & τῇ κατ' οἶκόν σου Οὐκκλησίᾳ.

3 Χάρις ὑμῖν & εἰρήνη ἀπὸ Θεοῦ Πατρὸς ἡμῶν καὶ
 Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Εὐχαριστῶ τὸ Θεὸν μὲν, πάντοτε μετὰ σου ποιῶ-
 ντος ὑπὲρ τῶν προσούχων μου.

5 Ἀκούων σου τὴν ἀγάπην, & τὴν πίσιν ἣν ἔχεις πρὸς
 τὸν Κύριον Ἰησοῦν, & εἰς πάντας τὰς ἀγίας.

6 Ὅπως ἡ κοινονία τὴν πίσεώς σου ἐνεργῆς γένηται
 ἐν ὑπαγωγῇ πάντος ἀγαθοῦ τὸ ἐν ὑμῖν εἰς Χριστὸν
 Ἰησοῦν.

7 Χαρὰν γὰρ ἔχομεν πολλὴν & παρακλήσιν ὑπὲρ τῇ
 ἀγάπῃ σου, ὅτι τὰ σπλάγχνα τῶν ἁγίων ἀναπέταν-
 ται διὰ σοῦ, ἀδελφέ.

8 Διὸ πολλὴν ἐν Χριστῷ παρρησίαν ἔχω ὑπειπάζειν
 σοι τὸ ἄμῃ σου.

9 Διὰ τὴν ἀγάπην μάλλον ὡς φωνῶν, ποιῆτης εἶναι,
 ὡς Παῦλος πρεσβυτής, νυνὶ & ἐγὼ δέσμιος Ἰησοῦ Χρι-
 στοῦ.

10 Παρακαλῶ σε πάλιν τὸ ἐμὸν τέκνον, ὃν ἐγέννησα
 ἐν τοῖς δεσμοῖς μου, Οὐκασίμου.

11 Ἦν ποτὲ σοὶ ἄχρηστος, νυνὶ δέ σοι & ἐμοὶ ὠ-
 χηρος, ὃν ἀνέπεμψα.

12 Σὺ γὰρ αὐτὸν, τέτρεψι, τὰ ἐμὰ σπλάγχνα, προσ-
 λαβὼν.

13 Ὅτι ἐγὼ ἐβηλόμην πρὸς ἐραυτὸν κατέχειν, ἵνα
 ὑπὲρ σοῦ ἀδικουήμι ἐν τοῖς δεσμοῖς τὸ ἀγαγγεῖν.

14 Χωρὶς ὃ τ' σῆς γνώμης ἡδὲν ἠθέλητα ποιῆσαι ἵνα μὴ ὡς κτ' ἀναγκάσω τὸ ἀγαθόν σε ἢ, ἀλλὰ κτ' ἐκύσισι.

15 Τάχα γὰρ διὰ τὴν ἐχούσθη πρὸς ὧράμ, ἵνα αἰώνιον αὐτ' ἀπέχης.

16 Οὐκέτι ὡς δὴ λον, ἀλλ' ὑπὲρ δὴ λον, ἀδελφόν, ἀγαπήτ', μελίσσα ἐμοί, πόσω ὅ μᾶλλον σοι ἢ ἐν σαρκὶ ἢ ἐν Κυρίῳ.

17 Εἰ ἔτι ἐμὲ ἔχεις κοινωνόν, προσλαβὲ αὐτόν ὡς ἐμὲ.

18 Εἰ δέ τι ἠδίκησέ σε, ἢ ὀφείλει, τὴν ἐμὴν ἐλλόγη.

19 Εἰ γὰρ Παῦλος ἐγράψα τῇ ἐμῇ χειρὶ, ἐγὼ ἀπέτισα ἵνα μὴ λέγω σοι, ὅτι ἢ σεαυτὸν μοι προσφείλεις.

20 Ναὶ, ἀδελφε, ἐγὼ σε ὀνείμι ἐν Κυρίῳ ἡγάπασόν με τὰ σπλάγχνα ἐν Κυρίῳ.

21 Πεποιθὼς τῇ ὑπακοῇ σου ἐγράψα σοι, εἰδὼς ὅτι ἢ ὑπὲρ ὃ λέγω ποιήσεις.

22 Ἀλλὰ ὅτι ἐπὶ μελέ μοι ξενίαν ἐλπίζω γὰρ ὅτι διὰ τὴν τροσάχων ὑμῶν χερεισθήσομαι ὑμῖν.

23 Ἀσπάζονται σε, Ἐπαφραίς, (ὁ συταρχμαλὸς τὸς με ἐν Χερειῶ Ἰησὺ) Μάρκος,

24 Ἀρίσταρχος, Δημάς, Ληκάς, οἱ συνεργοί μου.

25 Ἡ χάρις ἡ Κυρίη ἡμῶν Ἰησοῦ Χερειῶ μὲν πρὸς πάντας ὑμῶν. ἀμήν.

Πρὸς Φιλήμονα ἐγράφη ἀπὸ Ρώμης διὰ Ὀνησίμου ἐπέτη.



ΠΑΥΛΟΥ

Τῷ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΝΩ ΠΡΟΣ ΕΒΡΑΙΟΥΣ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

Κεφ. α. ι.

1 ΠΟλυμέρως & πολυτρόπως πάλαι ὁ Θεὸς λαλήσας τοῖς πατράσιν ἐν τοῖς προφήταις, ἐπ' ἑκατὸν τῶν ἡμερῶν τούτων ἐλάλησεν ἡμῖν ἐν Υἱῷ,

2 ὃν ἔθηκε κληρονόμον πάντων, δι' οὗ & τῆς αἰῶνις ἐποίησεν.

3 Ὁς ὢν ἀπαύγασμα τῆς δόξης, & χαρακτὴρ τῆς ὑποστάσεως αὐτοῦ, φέρων τε τὰ πάντα τῷ ρήματι & δυνάμει αὐτοῦ, δι' ἑαυτοῦ καθαρισμὸν ποιησάμενος τῶν ἁμαρτιῶν ἡμῶν, ὁμολογεῖται ἐν δόξῃ & μεγαλωσύνῃ ἐν ὕψελος.

4 Τούτῳ κρείττω ὑπομένοντες τῶν ἀγγέλων, ὅσω διαφωρότερον παρ' αὐτῶν κεκληρονόμηκεν ὄνομα.

5 Τίνι γὰρ εἶπε ποτε τῶν ἀγγέλων· Τίς μὲν εἶ σὺ, ἢ ὡς σήμερον γενηθήσῃ σε; Καὶ πάλιν· Ἐγὼ ἔσονται αὐτῷ εἰς πατέρα, & οὗτος ἔσται μοι εἰς υἱόν;

6 Ὅτι αὐτῷ πάλιν εἰσαγάγῃ & πρωτότοκον εἰς τοὺς κημέριον, λέγει. Καὶ προσκυνήσάτωσαν αὐτῷ πάντες ἄγγελοι Θεοῦ.

7 Καὶ πρὸς μὲν τῶν ἀγγέλων λέγει· Ὅ ποιῶν τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ πνύματα, & τῶν λειτουργῶν αὐτοῦ πυλῶς φλόγα.

8 Πρὸς δὲ & υἱόν· Ὅ θρόνος σου ὁ Θεός, εἰς & αἰῶνα & αἰῶνος· ῥάβδος δυνάμεως ἢ ῥάβδος & βασιλείας σου.

9 Ἡ γὰρ ἀληθὴς δικαιοσύνη, καὶ ἐμίσσηται ἀνομίαν· διὰ τούτου ἔχρισέ σε ὁ Θεός, ὁ Θεός σου ἐλαίον ἀγαλλιάσεως ὡς τῶν μετόχων σου.

10 Καὶ· Σὺ κατ' ἀρχάς, Κύριε, & γὰρ ἐθεμελίωσας, & ἔργα τῶν χειρῶν σου εἰσὶν οἱ ὕψιστοι.

11 Αὐτοὶ ἀποκίβνται, σὺ δὲ διαμένεις· & πάντες ὡς ἱμῖον πολυαισθησονται.

12 Καὶ ὡς αἰὶν ὡς ἐλαίον ἐλίξας αὐτῆς, & ἀλλαγῇσονται· σὺ δὲ ὁ αὐτὸς αἰ, & τὰ ἔτη σου ἕκ ὁμοιωθήσονται.

Τ 6

13

13 Πρὸς ἅπαν τῶν ἀγγέλων εἶρα καὶ ποτε. Καὶ ὁ οὐ
δεξιὸν μου, ἐπὶ τῷ θῷ τῶν ἐχθρῶν σου ὑποπόδιον τῶν
ποδῶν σου.

14 Οὐχὶ πάντες εἰσὶ λαιμαυγὶκὰ πόδια, εἰς δὲ
κοιτὴν ἀποσελόμενα διὰ τῶν μέλλουσας κληρονομίαν
ἐπιτελεῖν;

Κεφ. β'. 2.

1 Δὶα τῆς δὲ πλεονεξίας ἡμῶν προσέχων τοῖς
ἀκούουσιν, μὴ ποτε παρρησιάζωμαι.

2 Εἰ γὰρ ὁ δὲ ἀγγέλων καλαθεὶς λόγος ἐγένετο βί-
βλιος, καὶ πάντα παραβάσις ἐκείνη ἐλαβὲν ἐνδοκί-
μισθον ἀποδοσίδι.

3 Πῶς ἡμεῖς ἐκφοβούμεθα τελειώτης ἀμειψάντης
σωτηρίας, ἥτις ἀρχὴν λαβὼσα καλῶς διὰ τῆς Κε-
φαλαίας, ἀπὸ τῶν ἀκούστων εἰς ἡμᾶς ἐβεβαιώθη.

4 Συμπληρωματικὸς τῷ Θεῷ σημεῖσι τε καὶ τέρασιν,
καὶ ποικίλαις δυνάμεσιν, καὶ Πλάματος Ἀγίου μερι-
μοῖς, καὶ τῷ αὐτῷ Θεῷ.

5 Οὐ γὰρ ἀγγέλοις ἐπέταξε τὸ οἰκεμένῳ τῷ μέλλου-
σιν, πᾶσι ἡς καλῶν.

6 Διαμαρτυρῶν δὲ περὶ τῆς, λέγων· Τί ἐστιν ἀνθρώ-
πος, ὅτι μιμησάμενος αὐτῷ, ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι ἐκ-
κρίπτῃ αὐτόν;

7 Ἡ κατὰ τὴν αὐτῇ βραχύ τι παρ' ἀγγέλου· ὅτι καὶ
τιμὴν ἐσεφάρμοσας αὐτῷ, καὶ κατέστησας αὐτῷ ὅτι
ἐργα τῶν χειρῶν σου.

8 Πάντα ἐπέταξας ὑποκάτω τῶν ποδῶν αὐτῷ. Εἴ γὰρ
καὶ ὑποτάξαι αὐτῷ τὰ πάντα, ἔθεν ἀφῆκεν αὐτῷ ἀ-
νυκατάκτον· νῦν δὲ ὅπου ὁρῶμεν αὐτῷ τὰ πάντα ὑπο-
ταγμένα.

9 Τὸν δὲ βραχύ τι παρ' ἀγγέλου ἡκατωμένον βλε-
πομένην Ἰησοῦν, διὰ τὸ πάθος τῷ θανάτῳ, δόξαν καὶ
τιμὴν ἐσεφάρμοσεν· ὅπως χάριτι Θεοῦ ὑπὲρ πάντων
χρίσται θανάτου.

10 Ἐπρεπε γὰρ αὐτῷ δὲ ὅν τὰ πάντα, καὶ δὲ ὅτι τὰ
πάντα, πολλὰς υἱοσύνης δόξαν ἀγαγόντα, καὶ ἀρχὴν
τῆς σωτηρίας αὐτῷ διὰ τῶν πνευμάτων τελειώσαι.

11 Ὅτι γὰρ ἀγιάζων καὶ οἱ ἀγιαζόμενοι, καὶ ἡμεῖς
πάντες· διὸ καὶ αὐτίδῃ ἐκ ἐπαιχύνεται ἀδελφῶν αὐτοῦ
καλῶν.

12 Λέγων· Ἀπαγγελεῖ τὸ ὄνομα σου τοῖς ἀδελφοῖς
μου, ὅτι μέσθ' ἐκκλησίας ὑμνήσω σε.

13 Καὶ πάλιν· Ἐγὼ ἔσομαι πεποιθὼς ἐν αὐτῷ.
Καὶ πάλιν· Ἰδὼ ἐγὼ καὶ τὰ παῖδια ἅμοι ἐδωκεν
Θεός.

14 Ἐπὶ δὲ τὰ παῖδια κεινομένης σαρκὸς καὶ αἱμα-
τος, καὶ αὐτὸς πληρώσας μετέχε τῷ αὐτῷ, ἵνα ἵσταται

ἢ θανάτῳ κατακτενῆσθαι ἢ τὸ κρεῖττον ἔχοντα ἢ θάρσυναι,
τετέστι ἢ διαβῆσαι.

15 Καὶ ἀπαλλάξῃ τότε ὅσοι φόβῳ θανάτου διέπεσαν
τὸν ἢ ζῆν ἄνοχοι ἢ σὺν δουλείᾳ.

16 Οὐ γὰρ θῆκε ἀγγέλων ὑπὸ λαμβάνεται, ἀλλὰ σπέρ-
ματος Ἀβραάμ ὑπὸ λαμβάνεται.

17 Ὅθεν ὡφείλε κατὰ πάντα τοῖς ἀδελφοῖς ὁμοιω-
θῆναι, ἵνα ἐλεήμων γένηται καὶ πιστὸς ἀρχι-
ερεὺς τὰ πρὸς τὸν Θεόν, εἰς τὸ ἰλασθῆναι τὰς
ἁμαρτίας ἢ λαῶν.

18 Ἐν ᾧ γὰρ πέπονθεν αὐτὸς πειρασθεὶς, δύναται
τοῖς πειρζομένοις βοηθῆσαι.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Ο** "Θεὲν, ἀδελφοὶ ἅγιοι, πλήτεως ἐκκαθαρίσθητε
τοχοι, κατανοήσατε ἢ ἀπέσπασαν Ἐ ἀρχιερεῖς
ἢ ὁμοιοῦσαι ἡμῶν Χριστὸν Ἰησοῦν.

2 Πιστὸν ὄντα τῷ ποιήσασθαι αὐτὸν, ὡς Ἐ Μωσῆς ἐν
ἔλῳ τῷ οἴκῳ οὐτῷ.

3 Πλείονες γὰρ δόξης ἥτος ὡς Ἐ Μωσῆς ἡξίεται,
καθ' ὅσον πλείονα τιμῇ ἔχει ἢ οἶκον ὁ κατασκευάσας
αὐτόν.

4 Πᾶς γὰρ οἶκος κατασκευάζεται ἀπὸ πηλός. ὁ δὲ ἐν τοῖς
πάντα κατασκευάσας, Θεός.

5 Καὶ Μωσῆς μὲν πιστὸς ἐν ἔλῳ τῷ οἴκῳ οὐτῷ, εἰς
θεράπειαν, εἰς μαρτύριον τῷ ἀκκληθισομένῳ.

6 Χριστὸς δ', ὡς Τίτος ὅτι ἢ οἶκον οὐτῷ. ἢ οἱ πᾶς
ἐτμεν ἡμῖς, ἐὰν περ τὴν παρ' ὁμοίαν Ἐ τὸ καὶ ἡμεῖς
ἢ ἐλπίδας μέλει τελος βεβαίῳ κατὰ χροίον.

7 Διὸ, καθὼς λέγει τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον· σήμε-
ρον, ἐὰν ἢ φωνῇ οὐτῷ ἀκούετε,

8 Μὴ σκληρύνετε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὡς ἐν τῷ πο-
ρριπρασμῷ, κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ πειρασμοῦ ἐν τῇ
ἐρήμῳ.

9 Οὐ ἐπείρασάν με οἱ πατέρες ὑμῶν, ἐδοκίμασάν με,
Ἐ ἔδον τὰ ἔργα μου τεωραύοντα ἔτη.

10 Διὸ προσηύδα τῇ ὀψέσῃ ὁκνήν, Ἐ εἶπον· Ἀεὶ
πλάτνυνται τῇ καρδίᾳ· αὐτοὶ δ' ἐκ ἐγγιστάτων ὁδοῦ μου.

11 Ὡς ὡμώσω ἐν τῇ ἐργῇ μου. Εἰ ἀπειθεύονται εἰς
τὴν κατὰ πειρασμὸν μου.

12 Βλέπετε, ἀδελφοὶ, μὴ ποτε ἔται ἐν πειρῇ ὑμῶν
καρδία πορρή ἀπιστίας, ἐν τῷ ἀποσῆναι ἀπὸ Θεοῦ
ζήοντος.

13 Ἀλλὰ παρακαλεῖτε ἑαυτὰς καθ' ἑκάστην ἡμέραν,
ὅτι οὐ τὸ σήμερον καλεῖται· ἵνα μὴ σκληρυνθῇ πε-
ρ ὑμῶν ἀπάτη ἢ ἁμαρτίας.

14 Μειστοὶ γὰρ γενόμενοι ἢ Χριστῷ, ἐὰν περ
τῷ

ὡς ἀρχὴ τῆς ὑποστάσεως μέχρι τέλους βεβαίη καὶ ταπεινὴ.

15 Ἐν τῷ λέγεσθαι· Σήμερον εἰδὶ τὸ φωνῆς αὐτοῦ ἐκείσε, μὴ σκληρύνετε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὥς ἐν τῷ παραπικρασμῷ.

16 Τινὲς γὰρ ἀκούσαντες παρετίκλειον, ἀλλ' οἱ πρῶτοι οὐ διελάσαντες ἤξε Αἰγύπτῃ διὰ Μωσέως.

17 Τίσι δὲ προσώχθισε τετραράκοντα ἔτη; Οὐχὶ τοῖς ἀμαρτήσασιν, ὧν τὰ κῶλα ἐπίσεν ἐν τῇ ἐρήμῳ;

18 Τίσι δὲ ὥμοσε μὴ εἰσελεύσεσθαι εἰς τὴν καταπαύσιν αὐτῶν, εἰ μὴ τοῖς ἀπειθήσασιν;

19 Καὶ βλέπομεν ὅτι ἔκ τῆς ἐδουλόθησαν εἰσελθόν διέκτισάν.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Φ** Οὐκ ἐδουλόθη ἢ μὴ ποτε καταλειπομένη ἐπὶ παραγγελίας εἰσελθόν εἰς τὴν καταπαύσιν αὐτῆς, δοκῇ περὶ ἧς ἡμεῖς ὑπερηκύναι.

2 Καὶ γὰρ ἐσθλὴν ἀναγγελισμένοι, καθάπερ κἀννοοῖ· ἀλλ' ἢ ἐφίλασεν ὁ λόγος τὴν ἀκοῆς ἐκείνης, μὴ συγκεκραμένοι τῇ πίστει τοῖς ἀκούσασιν.

3 Εἰσερχόμεθα γὰρ εἰς τὴν καταπαύσιν οἱ πιστεύσαντες, καθὼς ἔρηκεν· Ὡς ὥμοσε ἐν τῇ ὀργῇ μου, ἢ εἰσελεύσονται εἰς τὴν καταπαύσιν μου· καὶ τοὶ τῶν ἔργων ἀπὸ καταβολῆς κόσμου ᾤκησάντων.

4 Ἐρῆκε γὰρ περὶ τῆς ἐβδόμης ἡμέρας· Καὶ κατέπαυσεν ὁ Θεὸς ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐβδόμῃ ἀπὸ πάντων τῶν ἔργων αὐτοῦ.

5 Καὶ ἐν τέττῳ πάλιν· Εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν καταπαύσιν μου.

6 Ἐπεὶ ἢ ἀπολείπεται πινὰς εἰσελθόν εἰς αὐτὴν, καὶ οἱ πρότερον ἀναγγελισθέντες οὐκ εἰσῆλθον εἰς αὐτήν.

7 Πάλιν πινὰ ὁρίζει ἡμέραν, σήμερον, ἐν ᾗ εἰδὲ λέγων, μετὰ ποσῶν χρόνον· (καθὼς ἔρεται) Σήμερον εἰδὶ τὸ φωνῆς αὐτοῦ ἀκούετε, μὴ σκληρύνετε τὰς καρδίας ὑμῶν.

8 Εἰ γὰρ αὐτὸς Ἰησοῦς κατέπαυσεν, ἢ δὲ περὶ αὐτοῦ ἐλάλει μὴ ταῦτα ἡμέρας.

9 Ἀρὰ ἀπολείπεται συμβρασμὸς περὶ λαοῦ τοῦ Θεοῦ.

10 Οὐ γὰρ εἰσελθόν εἰς τὴν καταπαύσιν αὐτῆς, καὶ οἱ πρῶτοι κατέπαυσεν ἀπὸ τῶν ἔργων αὐτοῦ, ὡς ἀπὸ τῶν ἰδίων ὁ Θεός.

11 Σπένδουσιν ἢ εἰσελθόν εἰς ὁρατὴν τὴν καταπαύσιν· ἴσα μὲν ἐν τῷ αἰνῶτι τῶν ὑποδείγματι πίσει τὴν ἀπειθείαν.

12 Ζῶν γὰρ ὁ λόγος τοῦ Θεοῦ, ὁ ἐνεργῆς, ὁ ποιητὴς ὡς ἄνω πάντων μέχρι τῆς δόξης, καὶ δεξιότητος ἄλλοις μερισμῷ ψυχῆς τε ὁ πλούσιος, ἀριστερῇ τε καὶ

Ε μιλῶν, ὃ κρείττος ἐνθυμήσῃται ὃ ἐννοῶν κερδέας.
13 Καὶ ἔκ ἐς κτίσις ὁφθαλμοὶ ἐνώπιον αὐτοῦ· πάντα
ἡ γυνὴ ὃ τετραχελισμένα τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ πρὸς
ἐν ἡμῖν ὁ λόγος.

14 ἔχοντες ὧν ἀρχιερεῖς μέγα, διεκλυθότες πρὸς
ἐκδοκῆς, ἰσθῶν τὸν τίον τοῦ Θεοῦ, κρατάρω τὸ ὁμοιω-
μας.

15 Οὐ γὰρ ἔχοντες ἀρχιερεῖς μὴ δυνάμενον συμπαθεῖ-
σαι ταῖς ἀσθενείαις ἡμῶν, πεπειρασμένον ἢ κατὰ πάντα
κατ' ὁμοιότητα, χάρις ἀποσιπῶ.

16 Προτερχωμένη καὶ κατὰ πάρεσιν τῶν θρόνων τὴν
χάριτος, ἵνα λάβωμεν ἑλεον, ὃ χάριν εὐρωμεν εἰς εὐ-
καιρον ἐκδοκῆς.

Κεφ. εἰς 5.

1 **Π**ᾶς γὰρ ἀρχιερεὺς ἵε ἀνθρώπων λαμβάνου-
μενος, ὑπὲρ ἀνθρώπων καθίσταται τῷ
πρὸς τὸν Θεόν, ἵνα προσφέρῃ δαρά τε ὃ θυσιῶν ὑπὲρ
ἁμαρτιῶν.

2 Μιτριωπαθεῖν δυνάμενος τοῖς ἀγνοῶσι ὃ πλανομέ-
νους· ἐπεὶ καὶ αὐτὸς περικείται ἀσθενείᾳ.

3 Καὶ διὰ ταύτων ὀφείλει, καθὼς παρὰ τὸν λαόν, ἡμεῖς
ὃ παρὰ τὸν Θεόν προσφέρειν ὑπὲρ ἁμαρτιῶν.

4 Καὶ ἡμεῖς ἑαυτοὺς πε λαμβάνει τῶν πικρῶν, ἀλλὰ ὃ
καλῶμενος ὑπὸ τοῦ Θεοῦ, καθάπερ ὃ ὁ ἁγίων.

5 Οὕτω ὃ ὁ Χρῆτος ἡμεῖς ἑαυτοὺς ἐδάξατε γεννηθῆναι
ἀρχιερεῖς, ἀλλ' ὃ καλῶμενος πρὸς αὐτοὺς τίος μὴ καὶ σὺ,
ἵνα σήμερον γεγενῆκαί σε.

6 Καθὼς ὃ ἐν ἑτέρῳ λέγει· Σὺ ἱερεὺς εἰς τὸ αἰῶνα
κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.

7 Ὅς ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς σαρκὸς αὐτοῦ, δεήσει τε καὶ
ἰκετηρίας πρὸς τὸν δυνάστην σώζειν αὐτὸν ἐκ θανάτου,
καὶ κραυγῆς ἰσχυρᾶς ὃ δακρύων προσενέγκας, ὃ ἰσχυ-
κῶς ἀπὸ τῆς οὐλῆς.

8 Καθὼς ὧν τίος, ἐμψθεν, ἀφ' ὧν ἔπαυσε, τῶν
ὀπκιῶν.

9 Καὶ τελειωθείς ἐγένετο πῶς ὑπακούσιν αὐτῷ πα-
σι αἰσῶσι σωτηρίας αἰωνίης.

10 Προταγορεύθηκε ὑπὸ τοῦ Θεοῦ ἀρχιερεὺς κατὰ τὴν τά-
ξιν Μελχισεδέκ.

11 Περὶ ὃ πολὺς ἡμῖν ὁ λόγος ὃ δυτερμωδότης λέ-
γει· ἐπεὶ τοῖσι γεγονόσι ταῖς ἀποαῖς.

12 Καὶ γὰρ ὁφείλοντες εἶναι διδάσκαλοι τοῖς χρο-
νῶν, πάλιν καὶ ἡμεῖς ἔχουμε τὸ διδάσκειν ὑμᾶς, ὅτι τὰ
ποιεῖται ὃ ἀρχὴ τῶν λογίων τοῦ Θεοῦ· ὃ γεγονόσι
καὶ ἔχουμε τὸν ὁλοκαύστου, ὃ ὃ σερμῶς τροφῆς.

13 Πᾶς γὰρ ὃς μετέχων γάλακτος, ἀπείρος λόγῳ δι-
καισώδης· (νηπίος γὰρ ἐστίν.)

14 Τελούν δέ εἰσιν ἡ σειρά τροφῆς, τῷ δὲ αὐτῷ
εἰσιν τὰ αἰσθητὰ γεγενημένα ἐχόντων πρὸς δι-
κρίσιν καλῶς τε καὶ κακῶς.

Κεφ. 5. 6.

1 **Δ**ιὸ ἀφέντες τὸ ἄρχῃς καὶ Κεῖν λόγον, ἐπὶ
τῇ τελειότητι φερώμεθα, μὴ πάλιν θανά-
του καταβαλλόμενοι μετανοίας ἀπὸ τεκνῶν ἔργων, ὥ-
στεως ὅπῃ Θεόν,

2 Βαπτισμῶν διδασκῆς, ὅπιθέσιώς τε χαρῶν, ἀναστά-
σεως τε τεκνῶν, ὥστε κλήματος αἰώνιον.

3 Καὶ τὸτο ποιήσομεν, ἐάν περ ὑπηρετῇ ὁ Θεός.

4 Ἀδύνατον γὰρ τὸς ἀπ᾽ ὅλης φοβούμενους, γούσταμεν
τὴν ἐν δυνάμει ἐπαγγελίᾳ, ὥστε μετόχους γυναικῶν Πλά-
κτος Ἀγίου,

5 Καὶ καλὸν γούσταμένης Θεοῦ ῥῆμα, δυνάμεναι τὴν
μελλόντος αἰῶνος,

6 Καὶ παρκατέστην, πάλιν ἀνακαταστήσιν εἰς μετα-
νοίαν, ἀνασταυρώσας ἑαυτοὺς τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ ὥστε παρκα-
τεστηνόμενοι.

7 Γὰρ ὅτι ἡ πίστις ἐπὶ αὐτῇ πολλάκις ἐρχόμενα
ὑμῶν. ὥστε τίκτουσιν βοτάνῃς ἐν τῷ ὅσῳ δὲ ὡς ὁ
γεωργεῖται, μεταλαμβάνει ὡς ἀποδοξίας ἀπὸ τοῦ Θεοῦ.

8 Ἐκφέρουσι τὴν ἀκρίβειαν, ὥστε τριβύλης, ἀδόκιμος ὥστε
κατάρτις ἐγγυῖς, ὥστε τὸ τέλος εἰς κωμῶν.

9 Πειρώμεθα τὴν ἀκρίβειαν ὑμῶν, ἀγαπήτωι, τὰ κρείττε-
ρα ὥστε ἐρχόμενα σωτηρίας, εἰ ὥστε ἡλικίαν.

10 Οὐ γὰρ ἀδικος ὁ Θεός, ὥστε ἀδικήσας καὶ ἔργα ὑ-
μῶν, ὥστε τὸ κόπον καὶ ἀγάπης ὥστε ἐνεδικαίωσθε εἰς τὸ ὅσῳ
μα αὐτῇ, διακονήσατε τοῖς ἀγίοις ὥστε διακονήσετε.

11 Ἐπιθυμῶν δὲ ἑκάστον ὑμῶν τῷ αὐτῷ ἐνδικαί-
ωσθαι σπουδῇ πρὸς τῷ πληροφορεῖν καὶ ἐλπίδος ἀχρὶ
τέλους.

12 ἵνα μὴ γὰρ οὐ γένησθε, μιμηταὶ τῶν δὲ αὐτῶν
πίστεως καὶ μακροθυμίας κληρονομημάτων τὰς ἐπαγγελί-
ας.

13 Τὸ γὰρ Ἀβραὰμ ἐπαγγελία ὁ Θεός, ἐπὶ καὶ
ἀδελφὸς εἶχε μείζονος ὁμοίας, ὥστε καὶ ἐαυτῇ,

14 Λέγων· Ἡ μὲν ὁλοκλήρῃ ὁλοκλήρωσέ σε, ὥστε πληθύν-
των πληθύνῃ σε.

15 Καὶ ὥστε μακροθυμήσας ἐπέτυχεν καὶ ἐπαγγελίας.

16 Ἀνδραποὶ μὲν γὰρ καὶ τῶν μείζονος ὁμοιώντι, ὥστε πᾶ-
σι αὐτοῖς ἀντιλογίας πέρας εἰς βεβαίωσιν ὁ ὅρκος.

17 Ἐν τῇ ἀποστολικῇ βιβλίᾳ ὁ Θεός ὑπιδέξαι
τοῖς κληρονομοῖς καὶ ἐπαγγελίας τὸ ἀμετάθετον καὶ βου-
λῆς αὐτῆς, ἐμεσίτασεν ὅρκον.

18 ἵνα διὰ δύο πραγμάτων ἀμεταθέτων, ἂν οἱ ἐ-
δύνατο

ἔκτατον ψάλλεται Θεόν, ἰχθυὶν περὶ καλῶς ἔχοντες
καταφυγόντες κρητῆσαι τὴν προκειμένην ἐλπίδα.
19 Ἡ δὲ ὡς ἀγκυρὰ ἔχουεν τὴν ψυχῆς ἀσφαλῆ τὴν ἐ-
λπίδα, καὶ ὑπερχομένῳ εἰς τὰ ἐσώτερα τὴν κατα-
φυγῆσαι.
20 Ὅτι πρὸς τοὺς ὑπὲρ ἡμῶν ἀπέλθεν Γεντῆς, κα-
τὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ, ἀρχιερεὺς ὑμῶντος, εἰς
τὸ αἰῶνα.

Κιφ. ζ. 7.

1 Ὅτι γὰρ ὁ Μελχισεδέκ, βασιλεὺς Σαλὴμ,
ἱερεὺς τῆς Θεῆς ὑψίστης, ἔσυνδυάσθη
Ἀβραάμ ὑποσφραγίσας ἀπὸ τῆς κοπῆς τῆς βασιλείας, ἔ-
δωκεν αὐτὸν.

2 Ὡς δὲ δεκάτῳ ἀπὸ πάντων ἐμέρισεν Ἀβραάμ·
πρῶτον μὲν ἐριμολύβητος βασιλεὺς δικαιοσύνης, ἔτα-
τα ἔκ βασιλεὺς Σαλὴμ· ὁ δὲ βασιλεὺς ἱερεὺς.

3 Ἀπῆλθεν, ἀμῆλτος, ἀνρεκαλόγητος· μήτε ἀρχὴν
ἡμερῶν, μήτε τέλος ἔχων· ἀφομοιωμένος δὲ τῇ
Τίμῃ τῆς Θεῆς, μετεῖς ἱερεὺς εἰς τὸ διαιεῖν.

4 Θωρεῖτε δὲ πληλὺς ὅτις, ἡ καὶ δεκάτῳ
Ἀβραάμ ἔδωκεν ὅκ τῷ ἀκροδινίῳ ὁ Πατριάρ-
χος.

5 Καὶ οἱ μὲν ὅκ τῷ υἱῷ Λωὶ τῷ ἱερατικῷ λαμ-
βάντες, ἐντολὰς ἔχουσιν ἀποδοκῆσαι τὴν καὶ τῇ
νόμον, ταῖς δὲ ἀδελφῶς αὐτῶν, καὶ πρὸς ὅκ τῷ
δότες ὅκ τῷ ὅκ τῷ Ἀβραάμ.

6 Ὅς δὲ μὴ ἀνρεκαλόγητος ἔσται αὐτῷ, δεδικάται-
κε τὸν Ἀβραάμ, ἔστιν ἔχοντα τὰς ἐπαγγελίας ἀ-
λύγῃ.

7 Χωρεῖς δὲ πάσης ἀντιλογίας, τὴν ἔλαττοι ἀπὸ τῆς
κρίττονος ἀλογεῖται.

8 Καὶ οἱ μὲν δεκάτας ἀποδίδεσθαι ἀνθρώποις
λαμβάνουσιν· ὅκ δὲ, μαρτυρούμενος ὅτι τῇ.

9 Καὶ (ὡς ἔπος εἰπῆν) διὰ Ἀβραάμ ἔστιν Λωὶ ὁ δε-
κάτας λαμβάνων δεδικάται.

10 Ἐπὶ γὰρ ἐν τῇ ὁσφύϊ τῆς πατρὸς ἡμῶν, ὅτε συνώτη-
σιν αὐτὰς ὁ Μελχισεδέκ.

11 Εἰ μὲν ἢ τελείως διὰ τὴν Λωϊτικῆς ἱερωσύνης
ἡμῶν (ὁ καὶ γὰρ ἐπὶ αὐτῇ νενομοθέτητο) πρὸς ἐπιχρῆσιν,
καὶ τῷ τάξιν Μελχισεδέκ ἕτερον ἀνίστασθαι ἱερεῖα, ἔ-
στιν κατὰ τὴν τάξιν Ἀβραάμ λέγεσθαι.

12 Μεταπιθεμένης γὰρ τῆς ἱερωσύνης, ἔστιν ἀνάγκη ἔ-
στιν μετὰ θείας γίνεσθαι.

13 Ἐφ' ὅν γὰρ λέγεται ταῦτα, Φυλῆς ἑτέρας μετέ-
χρηται· ἔστι δὲ καὶ προσέχρηται τῷ θυσιαστηρίῳ.

14 Πρέδηνον γὰρ ὅτι ἔστιν ἱερεὺς ἀνατέταλκεν ὁ Κύριος
ἡμῶν· εἰς τὸ φυλῶν δὲ ἐν αὐτῇ ἱερωσύνης Μωϋσῆς ἐλάλησεν.

15 Καὶ

- 15 Καὶ πῶς ἄλλοι ἐπὶ κατὰ δὴλόν εἰναι, καὶ κατὰ τὴν
 ὁμοιότητα Μελχισεδέκ ἀνίσταται ἱεροῦς ἕτερος,
 16 Ὁς καὶ κατὰ νόμον ἐντολῆς σαρκικῆς γέγονεν, ἀλλὰ
 κατὰ δύναμιν ζωῆς ἀκατολῆτη.
 17 Μαρτυρεῖ γὰρ ὁ πρὸς σὺ ἱεροῦς εἰς τὴν αἰῶνα κατὰ
 τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.
 18 Ἀθέτως μὲν γὰρ γίνεται προαγωγῆς ἐντολῆς,
 διὰ τὰ αὐτῆς ἀσθενεῖς καὶ ἀκαταλῆτοι.
 19 Οὐδὲν γὰρ ἐτελείωσεν ὁ νόμος, ἐπεισαγωγῆς
 κρείττονος ἐλπίδος, δι' ἧς ἐγγιζομένη πρὸς Θεοῦ.
 20 Καὶ κατὰ ὅσον καὶ χωρὶς ὀρκωμοσίας.
 21 (Οἱ μὲν γὰρ, χωρὶς ὀρκωμοσίας εἰσὶν ἱερεῖς γι-
 νοτάτες ὁ δὲ, κατὰ ὀρκωμοσίας, κατὰ τὴν λέγοντος τοῦ
 αὐτοῦ Ὁ νόμος Κυρίου, καὶ κατὰ μετεμελεῖσθαι. Ὁ
 ἱεροῦς εἰς τὴν αἰῶνα κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ.)
 22 Κατὰ τοῦτον κρείττονος διαθήκης γέγονεν ἡ
 γὰρ ἡσυχία.
 23 Καὶ οἱ μὲν, πλείονες εἰσὶν γεγονότες ἱερεῖς, διὰ
 τὸ θανάτου κωλύεσθαι πρὸς αὐτὸν.
 24 Ὁ δὲ, διὰ τὸ μένειν αὐτὸν εἰς τὴν αἰῶνα, ἀπαρ-
 ῥηκτον ἔχει τὴν ἱερωσύνην.
 25 Ὁ δὲ, καὶ σώζειν εἰς τὸ σιδηρεῖς δυνατὰ τῶς προ-
 ερχομένων δι' αὐτὸν πρὸς Θεοῦ, πλείονος ζῶν εἰς τὸ
 τυχάνων κατὰ τὸν αὐτόν.
 26 Τοιούτος γὰρ ἡμῖν ἐπρίπεν ἀρχιερεῖς, ὅστις, ἀπαρ-
 ρηκτος, ἀμείωτος, κεχωρισμένος ἀπὸ τῶν ἀμαρτωλῶν
 καὶ ὑψηλότερος τῶν ἡμετέρων ἡρώων.
 27 Ὁς καὶ ἔχει κατὰ ἡμετέραν ἀνάγκην, ὡς πρὸς αὐτὸν
 ἀρχιερεῖς, πρότερον κατὰ τὴν ἰδίαν ἀμαρτίαν θυσίας
 ἀναφέρονται, ἐπειτα τῶν κατὰ τὴν ἀνάγκην τῶν
 παρ' αὐτοῦ ἀνεγκλίας.
 28 Ὁ νόμος γὰρ ἀνθρώπου κατὰ ἰσότητα ἀρχιερεῖς, ἔχον-
 τας ἀσθενείαν ὁ λόγος δὲ τὴν ὀρκωμοσίας καὶ κατὰ
 τὸν νόμον, τίς εἰς τὴν αἰῶνα τετελειωμένον.

Κεφ. δ. 8.

- 1 **Κ** Εφάκιον ὅτι κατὰ τὴν λεγόμενα, τοῦτον
 ἔχομεν ἀρχιερεῖς, ὅς ἐκείνους ἐν δεξιᾷ
 Θεοῦ καὶ μεγαλοσύνης ἐκ τῶν ἀδελφῶν.
 2 Τὸν ἀγίον λειτουργῶν, καὶ τὸ σιδηρῶς καὶ ἀληθινῶς
 ὡς ἐπὶ τὸν Κύριον, καὶ ὡς ἀνθρώπου.
 3 Πᾶς γὰρ ἀρχιερεὺς εἰς τὸ προσφέρειν δαδὰ τῶν
 θυσίας κατὰ ἰσότητα ὅθεν ἀνάγκη ἔχειν καὶ τὴν
 ἐπὶ προσηγορίαν.
 4 Εἰ μὲν γὰρ ὡς κατὰ τὴν γῆν, καὶ ὡς ἡμετέροις ἱεροῦς, ὅντιν
 τῶν ἱερέων τῶν προσφερόντων κατὰ τὸν νόμον τὰ δαδὰ.
 Οἱ πρὸς ὑπαδεύματα καὶ σκία λατρεύουσι τῶν ἱερέων
 βαλίων.

ἰόν, καθὼς κεχορηγήσαμεν Μωσῆς, μέλλεν ὑπαί-
κνῃ σκηνῇ. Ὅρα γὰρ, φησὶ, ποιήσεις πάντα κατ'
τύπον τὸ δειχθέν σοι ἐν τῷ ὄρει.

Νυνὶ δὲ διὰ φανερώσεως τέτολχε λειτουργίας, ἵνα ἔ-
κτιστον ᾖς διὰ θείας μεσίτης, ἥτις ὑπὲρ κρείττους
καυχῆται νενομοθετήται.

Εἰ γὰρ ἡ πρώτη οὐκ ἦν ὡς ἡμεμῶν, οὐκ αὖ δούτε-
ρίζετο τόπος.

Μεμφομένης γὰρ αὐτοῖς λέγει. Ἰδὲ, ἡμέραι ἔρχον-
ται, λέγει Κύριος, ἃ συντελεσθῶσι ὑπὲρ τὸ εἶκον Ἰσραὴλ,
ὑπὲρ τὸ οἶκον Ἰνδῶ διὰ θείῃς κακίᾳς.

Οὐ κατ' αὐτὴν διαθήκην ὡς ἐποίησα τοῖς πατέρας
αὐτῶν, ἐν ἡμέραις ὑπὸ λαβόμενῃ μὴ τὴν χειρὸς αὐτῶν, ἵνα
ᾖ αὐτοὶ ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὅτι αὐτοὶ ἦν ἐνεμενῶν
τῇ διαθήκῃ μὴ, καὶ ἡμέλησα αὐτῶν, λέγει
Κύριος.

Ὅτι οὕτως ἡ διὰ θείῃς ὡς διὰ θείῃς τοῖς οἴκῳ
Ἰσραὴλ μὴ τῆς ἡμέρας οὐκ ἔστι, λέγει Κύριος, διὸ καὶ
ἔτι μὴ εἰς τὴν δικαιοσύνην αὐτῶν, καὶ ὑπὲρ καρδίας αὐ-
τῶν ἐπιγράψαι αὐτοῖς. Ἐσομαι αὐτοῖς εἰς Θεόν, ἃ
αὐτοὶ ἔσονται μοι εἰς λαόν.

Καὶ ἡ μὴ διδάξουσιν ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ,
ἕκαστος τὸν ἀδελφόν αὐτοῦ, λέγων. Γινώσκει τὸ Κε-
νόν, ὅτι πάντες εἰδὴσάν με, ἀπὸ μικρῶν αὐτῶν εἰς
μεγάλων αὐτῶν.

Ὅτι ἔτι καὶ ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν, καὶ τῆς ἀ-
νομίας αὐτῶν, ἃ τῶν ἀνομίων αὐτῶν ἢ οὐκ ἀνέστη ἔτι.

Εἰς τὴν λέγει κακίᾳ, τεταλαιώκει τὴν πρώτην,
ὅτι καλαιώμενον ἔχει χάσκον, ἐγγὺς ἀφάρμοτον.

Κεφ. θ'. θ.

Ἐγχε μὲν οὖν καὶ ἡ πρώτη σκηνὴ δικαιοσύνης
λατρείας, τῆς τε ἁγίου κοσμικόν.

Σκηνὴ γὰρ κατεσκευάσθη ἡ πρώτη, ἐν ἣ ἦτε κυ-
ρία ἃ ἡ τράπεζα, καὶ ἡ πρόθεσις τῶν ἁγίων, ἥτις λέ-
γεται ἁγία.

Μετά δὲ τὸ δεύτερον κατατέτακται σκηνὴ ἡ λεγο-
μένη ἁγία ἁγίων.

Χρυσὴν ἔχουσα θυμιατήριον, ἃ τὴν κιβωτὸν τὴν
διὰ θείῃς ἐκτετακταμένην πάντοθεν χρυσίῳ, ἐν ἣ
ἔστι χρυσὴ ἔχουσα τὸ μέννα, καὶ ἡ ῥάβδος Ἀαρὼν ἡ
ἐκτετακταμένη, ἃ αἱ πλάκες τὴν διὰ θείῃς.

Ἐπεὶ δὲ αὐτῆς Χρυσοῦς δοξῆς, κατασκευάζονται
τὸ ἱερόν.

ὅτι αὖ καὶ ἐστὶ νῦν λέγειν κατ' μέτρον.
Τῶν δὲ ὅτι κατεσκευασμένην, εἰς μὲν τὴν πρῶ-
την σκηνὴν διὰ πάντων εἰσίστασι οἱ ἱερεῖς τὰς λειτουργίας
ὑπὸ τῶν ἁγίων.

7 Εἰς

7 Εἰς τὸν δὲ δεύτερον ἄταξ ἦν ἰσχυρὸν μένος ἢ καὶ χειρὶς, ἢ χειρὶς αἵματος, ὃ περιφέρει ὑπὲρ ἑαυτοῦ ἔτι ἢ λαὸν ἀγαπημάτων.

8 Τὸτο δὲ λαὸς ἦν Παύλου ἢ Ἀγίου, μέτω φανερωσθαι τῷ τῷ ἁγίῳ ὁδόν, ἐπὶ τῇ πρώτῃ σαρκὸς ἐκείνης τῆς αἰῶνος.

9 Ἡ περὶ παραβολὴ εἰς τὸν κενόν ἢ ἐνδοκίαν, καὶ ἐν δυνάμει ἢ θυμῷ προσφέρονται, μὴ δυναμένης συνειδήσιν τελειώσαι ἢ λατρεύοντα.

10 Μόνον ὅτι βρώμασι ἢ πόμασι, ἢ διδασκαλίαις βαπτισμοῖς, ἢ δικαιομασίαι σαρκὸς, μέχρη καὶ διορθώσιν ἡθικαίμενα.

11 Χρὶς δὲ παραγλυόμενος ἀρχιερεὺς τῷ μελλόντι τῷ ἀγαθῷ, διὰ τὸ μέγιστος ἢ τελειότερος σκώληξ, χειροποιήτης, ταῖς ἐν, ἢ ταύτης ἢ κτίσις.

12 Οὐδὲ δὲ αἵματος τράχυν ἢ μόχλων, διὰ δὲ ἰδὲν αἵματος ἐσθλὸν ἐφάπαξ εἰς τὰ ἁγία, αὐτῶν αὐτῶν δυνάμενος.

13 Εἰ γὰρ τὸ αἷμα ταύρων ἢ τράχυν, ἢ σποδοὶ ἢ μέλεις ῥυπαρίσματα τῶν κοινομένων, ἀγίαζε τὸν σῶν ἢ σαρκὸς καθαρότητα.

14 Πίσω μᾶλλον τὸ αἷμα ἢ Χρὶς, ὃς διὰ Παύλου αἰώνι ἐσθλὸν προστίθειν ἁμαρτίαν τῷ Θεῷ καθαρῶν τῶν συνειδήσιν ὑμῶν ἀπὸ νεκρῶν ἔργων, τὸ λατρεύει Θεῷ ζῶντι.

15 Καὶ διὰ τὸτο διαθήκη καίνης μεσίτης εἶναι, ὡς θάνατος ῥυπαρῶν, εἰς ἀπολύτρωσιν τῶν ὑπὸ τῇ πρώτῃ διαθήκῃ παραβάσεων, τῶν ἐπαγγελίᾳ λυτῶν εἰς κλημένους ἢ αἰώνιαν υἱοθεσίαν.

16 Ὅτι γὰρ διαθήκη, θάνατον ἀνάγκη φέρειν διαθεμένον.

17 Διαθήκη γὰρ ὑπὸ νεκροῖς βεβαία, ὥστε μὴτι ἔχον ἔτε ἢ ὁ διαθεμένος.

18 Ὅθεν ἢ ἡ πρώτη χειρὶς αἵματος ἐγκαινιστοῦ.

19 Παλαδείσης γὰρ πάσης ἐντολῆς καὶ νόμον ὑπὸ Μωϋσέως πᾶσι τῷ λαῷ λαβὼν τὸ αἷμα τῷ μέχρη ἢ τῶν ὑδάτων ἢ εἰς νεκρίαν ἢ νεκρῶν, ὡς τε τὸ βιβλίον ἢ πάντα ἢ λαὸν ἐρῶντι.

20 Λέγουσι· Τὸτο τὸ αἷμα ἢ διαθήκης, ὃς ἐστὶν λατὸς πρὸς ὑμᾶς ὁ Θεός.

21 Καὶ τῶν σκώλην δὲ ἢ πάντα τὰ σκώλη, ὃ καὶ τῶν αἵματι ὁμοίως ἐρῶντι.

22 Καὶ σχεδὸν ἐν αἵματι πάντα καθαρῶνται καὶ τὰ τῶν νόμων, καὶ χειρὶς αἱματικῆς ὃ γίνονται ἄφιστοι.

23 Ἀνάγκη ἔν τῷ μετ' ὑποδείγματα τῶν ἐν τοῖς κατεργασίαις, ταῖς καθαρῶνται αὐτὰ δὲ τὰ ἐπαγγελίαις κρείττοσι θυσίαις ὡς ταύταις.

24 Οὐ γὰρ εἰς χειροποιήματα ἁγία ἐσθλὸν ὁ Χρὶς ἐκτίσθη τῷ ἀληθινῷ, ἀλλ' εἰς αὐτὸν ἢ ἁγίων τῶν ἐμφανισθῶναι τῷ προσώπῳ ἢ Θεῷ ὑπὲρ ἡμῶν.

25 Οὐδὲ

25 Οὐδ' ἵνα πολλάκις προσφέρῃς ἑαυτῷ, ὡς περ ὁ
ἱερεὺς εἰσέρχεται εἰς τὰ ἁγία κατ' ἐνιαυτὸν ἐν αἵ-
ματι ἄλλοτρίῳ.

26 (Ἐπεὶ ἔδει αὐτῷ πολλάκις παθεῖν ἀπὸ κατὰ θε-
οῦ κόσμου (γυνὴ ἅπασι ἐπὶ συντελείᾳ τοῦ αἵματος,
καὶ ἀθέτησιν ἁμαρτίας, διὰ τὴν θυσίαν αὐτῷ πεφανέ-
νται.

27 Καὶ καθ' ὅσον ἀπόκειται τοῖς ἀνθρώποις ἅπασι
παθεῖν, μὴ δὲ τῷ πρὸς κρίσιν.

28 Οὕτως ὁ Χριστὸς ἅπασι προσενεχθεὶς εἰς τὸ πολ-
λὸν ἀνεγκρεῖν ἁμαρτίας, ὅκ ὁ δεύτερος χωρὶς ἁμαρτίας
ἰδύσεται τοῖς αὐτῷ ἀπεδεχομένοις εἰς σωτηρίαν.

Κεφ. ι. ιο.

1 ΣΚΙΩΝ γὰρ ἔχων ὁ νόμος τοῦ μελλόντων ἀρχαῖον,
ἢ καὶ αὐτῷ τῷ εἰκόνα τοῦ πρᾶγματός, κατ' ἐπι-
ταγὴν θυσίας ὡς προσφέρουσιν εἰς τὸ δικαῖόν,
λέγουσι δύναται τὰς προσερχομένας τελειῶσαι.

2 Ἐπεὶ ἢ καὶ αὐτῷ ἐπαύλητο προσφερέμεναι, διὰ τὸ
ἰδεομένην ἔχειν ἐπὶ συνείδησιν ἁμαρτιῶν τὰς κατεύον-
τας, ἅπασι κεκαθαμένους.

3 Ἀλλ' ἐν αὐταῖς ἀνάμνητις ἁμαρτιῶν κατ' ἐνιαυτὸν.

4 Ἀδύνατον γὰρ αἵματι τῶν ἁγίων καὶ πρᾶγαν ἀφαιρεῖν ἁ-
μαρτίας.

5 Διὸ ἐπερχόμενος εἰς τὸν κόσμον, λέγει· Θυσίαν
προσφέρειν ἢ ἐθέλησας, σῶμα δὲ κατηρτίσω μοι.

6 Ὁλοκαυτώματα ἔπειτα ἁμαρτίας ἢ ὀδοκῆσας.

7 Τότε αἶποι· Ἰδὲ ἤκω (ἐν κεφαλίδι βιβλίου γέ-
γραπται περὶ ἐμοῦ) ποιῆσαι, ὁ Θεὸς, τὸ θελή-
μα σὺ.

8 Ἀνώτερον λέγων· Ὅτι θυσίαν ἔπαιον προσφορὰν καὶ
ἱεροκαυτώματα ἔπειτα ἁμαρτίας ἢ ἐθέλησας, εἰδὲ
ἐθέλησας (αἵτινες καὶ τὸν νόμον προσφέρονται).

9 Τότε αἶρηκεν· Ἰδὲ ἤκω ποιῆσαι, ὁ Θεὸς τὸ
θελήμα σὺ· Ἀναίρει τὸ πρῶτον, ἵνα τὸ δεύτερον
ῥηθῇ.

10 Ἐν ᾧ θελήματι ἡγιασμένοι ἵσμεν διὰ τὴν πρῶ-
τον τὴν σῶματις τοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐφύπαξ.

11 Καὶ πᾶς μὲν ἱερεὺς ἔσχεε καθ' ἡμέραν λειτουργί-
αν, καὶ τὰς αὐτὰς πολλάκις προσφέρειν θυσίας, αἵ-
ματις εἰδὲ πότε δύναται περικεῖν ἁμαρτίας.

12 Αὐτὸς δὲ μίαν ὥστε ἁμαρτιῶν προσενέ-
χας θυσίαν, εἰς τὸ δικαῖόν ἐκάλυψε ἐν δεξιᾷ τῇ
ἐξ ὁρῇ.

13 Τὸ λοιπὸν ὁ ἀδεχόμενος τῆς τεθείσης οἱ ἱχθρῆ
ἐπὶ ἀποστόδιον τοῦ πρᾶγματος αὐτοῦ.

14 Μὴ γὰρ προσφορὰν τελείωσεν εἰς τὸ δικαῖόν
τοῦ ἀγαθού.

- 15 Μαρτυρεῖ δ' ἡμῖν ἡ τὸ Πνεῦμα τὸ Ἅγιον · μὴ γὰρ τὸ περιηράξαι ,
- 16 Αὐτὰ ἢ διαθήκη ἢ διαθήσομαι πρὸς αὐτὴν μὴ τὰς ἡμέρας ἐκείνας , λέγει Κύριος , διδὼς νόμους ὑπὲρ καρδίας αὐτῆς , καὶ ὑπὲρ τῆς διανοίας αὐτῆς ὑπὲρ νοῦ αὐτῆς .
- 17 Καὶ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῆς ἡ τῶν ἐπιθυμιῶν αὐτῆς ἡ μὴ μετανοῶν ἐστίν .
- 18 Οὐκ ἔστι ἀφεσις τούτοις , ἀλλ' ἐπὶ προσφορὰ πρὸς ἁμαρτίας .
- 19 Ἐχόντες οὖν , ἀδελφοί , παρ' ῥησίδι εἰς τὸ ἵσταναι τῶν ἁγίων ἐν τῇ αἵματι Ἰησοῦ ,
- 20 Ἡτ' ἐνεκαίρισιν ἡμῖν ἑδὼν προσφάτον ἡ ζωὴν , διὰ τὴν καταπατήσαντες , τκτέσι τὴν σαρκὸς αὐτῆς .
- 21 Καὶ ἱερέα μέγαν ὑπὲρ τὴν εἰκὸν τὴν Θεοῦ .
- 22 Προτερχωμεθα μὴ ἀληθινῆς καρδίας ἐν πληθεινῇ πίστεως , ἐρ' ἄρρηπται τὰς καρδίας ἀπὸ συνειδήσεως ποιεῖται .
- 23 Καὶ λεηλυμένοι τὸ σῶμα ὕδατι καθαρῷ , κατιζήμεν τὴν ὁμολογίαν τὴν ἐλπίδος ἀκλινῆς · πιστὸς γὰρ ἡ ἐπαγγελία ἡμῶν .
- 24 Καὶ καταρούμεν ἀλλήλους εἰς παραξυσμὸν ἀγαθῶν καὶ καλῶν ἔργων .
- 25 Μὴ ἐγκαταλείποντες τὴν ὑποσυναγωγὴν ἑαυτῶν καθὼς ἔδοξε ποῖν , ἀλλὰ παρακαλῶντες ἑαυτοὺς ὡς πρὸς τὴν κωνσάν , ὡς βλέπετε ἐγγιζομένῃ τῇ ἡμέρᾳ .
- 26 Ἐκκρίνω γὰρ ἁμαρτάρων ἡμῶν μὴ τὸ λαβεῖν τὴν ἐπίγνωσιν τὴν ἀληθείας , καὶ ἐπὶ πρὸς ἁμαρτιῶν ἀπολείπεται θυσιᾶν .
- 27 Φοβερὰ δὲ τις ἐκδοχὴ κρίσει , ἡ πρὸς ζήλοισιν ἡσθίαν μέλλοντας τὰς ὑπενδμήτας .
- 28 Ἀθετήσας τις νόμον Μωσέως , χωρὶς οἰκτιρμῶν ὑπὲρ θνῶν ἢ τρισὶ μαρτυσίαι ἀποθήσκει .
- 29 Πόσω (δοκιματε) κρίνοντες ἀξιοθῆσεται τιμωρὴν ἢ τὴν τῶν Θεῶν καταπατήσαντες , ἡ τὸ αἷμα τὸ διαθήκης κοινὸν ἡφατῶμενος ἐν τῇ ἡγιασθῇ , ἡ τὸ Πνεῦμα τὸ ἅγιον ἐνυβρίσας ;
- 30 Οὐδὲν γὰρ τὸ ἐπὶ πάντα · Ἐμοὶ ἐκδίκησις , ἐγὼ ἀταπεινώσω , λέγει Κύριος . Καὶ πάλιν · Κύριος κρίνει τὸ καλὸν αὐτῆς .
- 31 Φοβερὴν τὸ ἀπειθεῖν εἰς χάριν Θεοῦ ζώοντος .
- 32 Ἀναιμωμένης κεφαλῆς δὲ τὰς πρώτας ἡμέρας , οἱ οἱς φατισθύντες , πολλὰ ἔθλασις ὑπερμέναντες παρὰ κρίτον .
- 33 Τῆτο μὲν , ἐνεδισμοῖς τε καὶ θλίψεσι διακρινόμενοι · τῆτο δὲ , κοινῶν τῶν ὅταν ἀναστρεφόμενοι γινώσκοντες .
- 34 Καὶ γὰρ πῶς διακρίνεται μὴ συνεπαθῆσατε , καὶ τὴν ὑποσυναγωγὴν τῶν ὑπαρχόντων ὑμῶν μὴ χάρις προσέτιν ἡσθῇ , γινώσκοντες ἔχειν ἐν ἑαυτοῖς κρείττονα ὑπὲρ τῶν ἐν ἡρώοις , ἡ μέγιστον .

35 Μὴ ἀποβάλετε ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν, ὅτις ἐ-
στιν μισθοδοσίᾳ μεγάλη.

36 Ὑπομονὴς γὰρ ἔχετε χρειᾶν· ἵνα τὸ θέλημα τοῦ
Θεοῦ ποιήσῃτε, κομίσασθε τὴν ἐπαγγελίαν.

37 Ἐπὶ γὰρ μικρὸν ὅσον ὅσον, ὁ ἐρχόμενος ἔστιν, ἔ-
στιν ἡ γλῶσση.

38 Ὁ δὲ δίκαιος ἐκ πίστεως ζήσεται· ἔτι ἐὰν ὑπο-
σχήται, ἢ ἀδικεῖ ἢ ψυχὴ μὴ ἐν αὐτῷ.

39 Ἡμεῖς δὲ ἐσμὲν ὑποσπῶντες εἰς ἀπώλειαν, ἀλ-
λὰ πιστῶς εἰς σωτηρίαν ψυχῆς.

Κεφ. ια. ιι.

1 Ἐστὶν ὁ πῖσις, ἐλπίζομένων ὑπόστας, πραγ-
μάτων ἐλεγχος ἢ βλεπομένων.

2 Ἐν ταύτῃ γὰρ ἐμαρτυρήθησαν οἱ πρεσβύτεροι.

3 Πίστις γὰρ κατηρτίσθη τῆς αἰδοῦς ῥήματι
Θεοῦ, εἰς τὸ μὴ ἐκ φαινομένων τὰ βλεπομένα γινώ-
σκει.

4 Πίστις πλείονα θυσιῶν Ἀβελ πλεονέκτησεν· καὶ ἐν προσέ-
τῃ τῷ Θεῷ, δι' ἧς ἐμαρτυρήθη αὐτῷ δίκαιος,
καρτερῶντες ὑπὲρ τοῖς δώροις αὐτοῦ τοῦ Θεοῦ, ἔτι αὐτῷ
αὐτοθνήσκον ἐπὶ λαλήσει.

5 Πίστις Ἐνώχ μετετέθη τὸ μὴ ἰδεῖν θάνατον· ἔ-
τι ὁρίσκειτο, διότι μετέθηκεν αὐτῷ ὁ Θεός· πρὸ τοῦ
μεταθέσθαι αὐτὸν μεμαρτύρηται ὡς ἡρεσχημένοι τῷ
Θεῷ.

6 Χωρὶς δὲ πίστεως ἀδύνατον ὀμνέσθαι· πειθεῖσθαι
δὲ τῷ προσερχομένῳ τῷ Θεῷ, ὅτι ἐστὶν, ἔτι τοῖς
ἐκζητήσιν αὐτῷ μισθοδοτῆς γίνεται.

7 Πίστις χρηματισθῆναι Νόε πλεονέκτησεν· ἵνα μὴ ἐπὶ βλα-
στηρίῳ, ἀλλὰ ἐν κατεσκευασμένῳ κιβωτῇ εἰς σωτηρίαν
ἐλθῇ αὐτῷ· δι' ἧς κατέβηκε τὸ κόσμον· ἔτι καὶ
ἐπὶ τῇ δικαιοσύνῃ ἐγένετο κληρονομή.

8 Πίστις καλύμειν Ἀβραάμ ὑπέσχετο· ἵνα ἐλθῇ εἰς
τὸν οὐρανὸν ὃν ἡμελλε λαμβάνειν εἰς κληρονομίαν, καὶ
ἐλθε, μὴ ὁπσάμιτος τῇ ἔρχεται.

9 Πίστις παράσχεν εἰς τὸ γὰρ τὴν ἐπαγγελίαν ὡς ἀλ-
ληλοῖαν, ἐν σκηνῇ κατοικήσας μετ' Ἰσαὰκ· ἔτι Ἰακώβ
ἐπὶ τῇ κληρονομίᾳ τὴν ἐπαγγελίαν τὴν αὐτῇ.

10 Ἐξιδέχεται γὰρ τὸ τῆς θεμελίας ἔχοντα πέδιλον,
καὶ τὸν ἵματιον· ἔτι ὁ Θεός.

11 Πίστις ἔτι αὐτῇ Σάρ' ῥα δύναμις εἰς καταβολὴν
πείραστος ἐλάβε, ἔτι παρὰ καιρὸν ἡλικίας ἔτι κτε-
νὴ πιστὸν ἡγήσατο τὴν ἐπαγγελίαν.

12 Διὸ ἔτι ἀφ' ἐνὸς ἐλπίσθησαν, ἔτι ταῦτα γενεα-
μεν, καθὼς τὰ ἄστρα τὴν ἡμέραν τὴν πληθύνει, καὶ ὡς
ἡμεῖς ἢ παρὰ τὸ χεῖλος τὴν θαλάσσης ἢ ἀνὰ ῥέματι.

13 Κατὰ τίνες ἀπεθάνουσιν ὅτι πάντες, μὴ λαβοῦ-
σαι τὰς ἐπαγγελίας, ἀλλὰ παρ' ὧθεν αὐταὶ ἰδούσαι
ἔπεισαντες, καὶ ἀπασάμενοι, ἔομοι λογισάμε-
νοι ὅτι ξένοι ἔσονται ἐκ παρρησίας ἵσταται ὑπὲρ τοῦ γῆς.

14 Οἱ γὰρ τοιαῦτα λεγόντες, ἐμφανίζουσιν ὅτι πα-
τρίδα ἐπιζητοῦσι.

15 Καὶ εἰ μὲν ὁκλήτης ἐμνημόνευον ἀφ' ἧς ἐξῆλθεν
ἡμεῖς ἀπὸ κυρίου ἀνακάμψαι.

16 Νυνὶ δὲ κρείττους ἐρέουσιν, ταῖς ἐν, ἰσχυ-
ρίᾳ, διὸ καὶ ἐπαινοῦνται αὐτῆς ὁ Θεός, Θεὸς ἐπικα-
λεῖσθαι αὐτῶν· ἡτοίμασε γὰρ αὐτοῖς πόλιν.

17 Πίστις προσελήλυθεν Ἀβραάμ καὶ Ἰσαὰκ περι-
μέμενος, καὶ τὸ μονοχῶν προτέφερον ὁ τὰς ἐπαγγελίας
ἀναδεξάμενος.

18 Ποῦς δὲν ἐλαλήθη· ὅτι ἐν Ἰσαὰκ κληθήσεται
οἱ σπέρμα.

19 Λογισάμενος ὅτι καὶ ἐκ νεκρῶν ἐγείρειν δυνατόν· ὁ
Θεός· ὁ δὲ ἐν καὶ ἐν παραβολῇ σκοπίσασθαι.

20 Πίστις καὶ μελλόντων ἀλόγησεν Ἰσαὰκ καὶ Ἰα-
κώβ ἐν τῇ ψυχῇ.

21 Πίστις Ἰακώβ ἀποθνήσκων ἔκτισεν τῷ υἱῷ Ἰω-
σὴφ ἀλόγησε· καὶ προεικονίσθη ἐπὶ τὸ ἄκρον τῆς ἐλπί-
δος αὐτοῦ.

22 Πίστις Ἰωσὴφ τελευτῶν καὶ τῷ υἱῷ Ἰσραὴλ ἐμνημόνευσε, καὶ κατὰ τῷ ὅτι ἐάν σπέρμα
αὐτοῦ.

23 Πίστις Μωϋσῆς ὡς ἐκείνη ἐκούρη τρέμειναι ὑπὸ τοῦ
πατρὸς αὐτοῦ, διότι εἶδεν ὅτι ἐκ τῶν παλίων· καὶ κα-
τέβη ἐκ τῆς διατάξεως τῆς βασιλείας.

24 Πίστις Μωϋσῆς μέγας ἡρώμενος ἠρνήσατο λέγειν
αὐτῷ θυγατὸς Φαραῶ.

25 Μᾶλλον ἐλθέμενος συγκαταβῆκεν τοῖς λαοῖς καὶ οἰσ-
τὸν πρόκαιρον ἔχον ἁμαρτίας ἀπολαύσας.

26 Μείζονα πλητὸν ἡγησάμενος τῷ ἐν Αἴγυπτῳ θη-
ρωτῶν καὶ ἐνεδίδισμένον καὶ Χρυσῷ· ἀπέβλεπε γὰρ εἰς
μισθαποδοσίαν.

27 Πίστις κατέλιπεν Αἴγυπτον, μὴ φοβηθεὶς καὶ θη-
μὸν καὶ βασιλείαν· τὸν γὰρ ἀόρατον ὡς ὁρῶν ἐκαρτί-
στα.

28 Πίστις πεποιήκει τὸ πόνον καὶ τὸ πόνον καὶ τὸ πόνον
μυῖας, ἵνα μὴ ὁ ὁλοθρόνως τὰ πρωτότοκα, θύῃ
αὐτῶν.

29 Πίστις Δαβὶδ καὶ ἰουδαίου θάλασσαν ὡς διὰ τῆς
ῥῆς· ἧς πᾶσιν λαβόντες οἱ Αἰγυπτῆται κατεπαύ-
σαν.

30 Πίστις τὰ τέκνα Ἰερριχὶ ἔπεισε, κυκλωθέντα ἐν
τοῖς ὕδασι ἡμέρας.

31 Πίστις Ραββὶ καὶ πόρνη καὶ συνεπίκεται πῶς ὡς
θῆσται, διέκρινε τὴν κατὰ σέξου μετ' ἀλλήλων.

32 Καὶ τί ἐτι λέγω; Ἐπιλήψαι γάρ με διεγέρθη
ὁ χρίστος καὶ Ἰακώβ, Βαράκ τε καὶ Σαμψὼν, καὶ
Ἰησοῦς.

Τεφθαίε, Δαβίδ τε & Σαμὴλ, & τῶν Προφητῶν.

33 Οἱ δὲ πῖσις κατηγωνίσαντο βασιλείας, ἐξ-
γαλάντο δικαιοσύνην, ἐπέτυχον ἐπαγγελίων, ἔφραξαν
τόματα λευκῶν.

34 Ἐσβεσάν δύναντο πυρὸς, ἔφυγον τόματα μαχαί-
ρας, ἐρεδυναμώθησαν ἀποάσθενείας, ἐγήνηθησαν ἰσχυ-
ροὶ ἐν πολέμῳ, παρεμβολὰς ἐκλίαν ἀλλοτρίων.

35 Ἐλαβον γυναῖκες ὡς ἀναστάσεις τῆς νεκρῆς αὐτῶν·
ἄλλοι δὲ ἐτυμπαμίσθησαν, ὃ προσδεχόμενοι τῷ ἀπο-
κρίσειν, ἵνα κρείττονος ἀναστάσεως τύχησιν.

36 Ἄλλοι δὲ ἐμπαιγμάτων & μασιγῶν πῶραν ἔλαβον,
ἐπὶ δὲ δεσμῶν & φυλακῆς.

37 Ἐλιθάσθησαν, ἐπρίσθησαν, ἐπαράσθησαν,
ἐν φόρῳ μαχαίρας ἀπεθάρον· περιέλαστον ἐν μεγα-
ταῖς, ἐν αἰγείοις δέρμασιν, ὑπερήμωτοι, θλιβόμενοι,
κακῆς εἰδυιοί.

38 (Ὡς ὁ κόσμος ὁ ἀξίος ὁ κόσμος) ἐν ἐρεμίοις πλανα-
σάμενοι & ὄρεσι & σπηλαίοις & ταῖς στείλαις τῆς γῆς.

39 Καὶ ἔτοι πάντες μαρτυρηθέντες διὰ τῆς πίσεως,
ὡς ὁκαμίσαντο τῷ ἐπαγγελίῳ.

40 Τῷ Θεῷ πρὸς ἡμῶν κρείττονος π. προσελθόμενοι,
ἵνα μὴ χωρὶς ὁμῶν τελειωθῶσι.

Κεφ. ιβ'. ια.

1 ΤΟΥΤΩΝ ἡμεῖς, πατήτων ἔχοντες παρακλή-
σιν ἡμῶν νεφός μαρτυρῶν, ὅρκον ἀποθεμῶν
πάντα, & τῷ ἀποθέσαντο ἀμοιβῇ, δι' ὑπομενῆς
ἐρεχόμενοι τῷ προκείμενῳ ἡμῶν ἀλάν.

2 Ἀπορῶνται εἰς τὴν πίσειν ἀρχηγὸν & τελειω-
τῶν, ὅς ἀντὶ τῆς προκειμένης αὐτῷ χάριτος, ὑπερ-
μενῶν, αἰσχυρῆς καταφρονήσας, ἐν δεξιᾷ τε τῆς
ἀρετῆς & Θεῷ ὁκαμίσαν.

3 Ἀντιλογισάσθε ὅτι τῷ τοιαύτῳ ὑπομενῶντος ὁ-
κῶ τῷ ἀμαρτωλῶν εἰς αὐτὸν ἀντιλογίῳ, ἵνα μὴ κά-
μῃτε, ταῖς ψυχαῖς ὁμῶν ὁκαμίσαν.

4 Οὐταί μέλει αἵματος ἀντικατέστητε, πρὸς τῷ ἀ-
μαρτίῳ ἀνταγωνισόμενοι.

5 Καὶ ἐκλήθηθε τῷ παρακλήσεως, ἥτις ὑμῶν ὡς
αἱ εἰς διακρίνεται· γὰρ μὴ, μὴ ὀλιγωρεῖ παιδείας Κυ-
ρίου, μηδὲ ὁκαμίσαν ὑπ' αὐτῷ ἐλεγχόμενος.

6 Ὅν ὅτι ἀγαπᾷ Κύριος, παιδεύει· μασιγῶν δὲ
πάντα υἱὸν ὃν ἀποκατελείπει.

7 Εἰ παιδείας ἀποκατελείπει, ὡς υἱὸς ὁμῶν προσφέ-
ρεται ὁ Θεός· τίς γὰρ ἴσιν υἱὸς ὃν ὁ παιδεύει πα-
τήρ;

8 Εἰ δὲ χωρὶς ἐστὶ παιδείας, ὡς μέτοχοι γυνέσας
πάντες, ἄρα νόθοι εἰσὶν & ὡς υἱοί.

9 Εἰ δὲ τὸς τ' σκεπτεσθὲν ἡμῶν πατέρας εἶχόμεν πα-
 λαιοτάς, καὶ ἐντροπόμεθα· ἢ πολλὰ μᾶλλον ὑποταγ-
 σόμεθα τῷ Πατρὶ τῶν πνευμάτων, & ζήσομεν;

10 Οἱ μὲν γὰρ πρὸς ὀλίγους ἡμεῖς, καὶ τὸ δοκῶ-
 ῦστας, ἐπαίδων· ὁ δὲ ὑπὲρ τὸ συμφέρον, εἰς τὸ μὴ
 ταλαβεῖν τ' ἀγρίεσθαι αὐτῶν.

11 Πᾶσα δὲ παιδεία πρὸς μὲν τὸ παρὸν ἢ δοκῶ-
 χρεῖς εἶναι, ἀλλὰ λυσιπῶς· ὕστερον δὲ καρπὸν εἶναι
 καὶ τοῖς δι' αὐτῆς γεγυμνασμένοις ἀποδίδωσι δικαιο-
 συνας.

12 Διὸ τὰς παρημένας χεῖρας, & τὰ ἀδυνατούμενα
 γένητα ἀπορρίψατε.

13 Καὶ τροχίαν ἐρῶς ποιήσατε τοῖς ποσὶν ὑμῶν,
 ἵνα μὴ τὸ χολὸν ὀκτραπῇ, ἰαθῇ δὲ μᾶλλον.

14 Εἰρήνην διώκετε μὲν πάντων, & τὴν ἀγίαν, ἥ
 χάρις ἡδεῖς ὁφείλει τῷ Κυρίῳ.

15 Ἐπιποσπῶντες μὴ τις ὑστερῶν ἀπὸ τῆς χάριτος τοῦ
 Θεοῦ, μήτις ῥίζα πικρίας ἀνω φύστα ἐνοχλῇ, & διὰ
 ταύτης μὴδιδῶσι πολλοί.

16 Μήτις πένθος, ἢ βεβηλος, ὡς Ἡσαΐ, ὅς ἀπὸ
 βρώσεως μιᾶς ἀπέδοτο τὰ πρωτοτόκια αὐτοῦ.

17 Ἰστε γὰρ ὅτι & μετέπειτα θείων κληρονομήσαι τῶν
 ἀλογίστων, ἀποδοκιμασθῇ· μετανοίας γὰρ τόπον ἔχου-
 ρε, καίπερ μὲν δακρύων ἐκζητήσας αὐτῶν.

18 Οὐ γὰρ προσεληλύθατε ψηλαφώμενοι ὅρει, & κ-
 κωμένῳ πυρὶ, & γνέφῳ, & σκότῳ, & θυέλλῃ.

19 Καὶ σαλπινγος ἤχη, & φωνῇ ρημάτων, ἡς οἱ
 ἀκυσάμενοι παρηγοῦντο μὴ προσεθῆναι αὐτοῖς λογί-
 σται.

20 (Οὐκ ἔφερον γὰρ τὸ δισσελλόμενον. Καὶ θύον
 θύγῃ τῷ ὄρει, λιθοβοληθήσεται, βελίδι καταπίε-
 θήσεται.)

21 Καὶ ἔτι φοβερόν ἦν τὸ φάσμαζόμενον, Μωσῆς ἰ-
 σεν· Ἐκφοβός εἰμι & ἐντρομος.)

22 Ἀλλὰ προσεληλύθατε Σιών ὄρει, & πόλει Θεοῦ
 ζώντος, Ἰερουσαλὴμ ἐπυργίῳ, & μυριάσιν ἀγγέλων.

23 Πάσης οὖν & ἐκκλησίας πρωτοτόκων ἐν ἡρώδῃ καὶ
 πορνεύματι, & κρατὶ Θεοῦ πάντων, & πύργῳ
 δικαίων τετελειωμένῳ.

24 Καὶ διαθήκη νέας μεσίτη Ἰησοῦ, & αἵματι ἰλα-
 ρισμῶ, κρείττονα λαλοῦντι ὡς τὸ Α' βιβλ.

25 Βλέπτε μὴ ὀργισθῆσθε τὴν ἀλήθειαν, εἰ δὲ
 ὀκνηνοὶ ἢ ἐφυγοί, τὸ ὅτι τὸ γὰρ ὀργισθῆσθαι καὶ
 ματιζόντα, πολλὰ μᾶλλον ἡμεῖς οἱ τὸ ἀπ' ἡρώδῃ
 πορνεύμενοι.

26 Οὐ δὲ φωνὴ τῇ γῇ ἐνάλαιε τότε, τῇ δὲ
 ἐγγυλάτῳ, λίθων· Ἐτι ἄτιξ ἐγὼ πείω ἢ μοῖρα
 τῇ γῇ, ἀλλὰ & τὸ ἡρώδῃ.

27 Τὸ δὲ, ἐτι ἄτιξ, ὅλοις τῶν σκελετομένων τῶν
 μεταθίσει, εἰς πεποισμένων, ἵνα μείνῃ τὰ μὴ
 λυόμενα.

28 Διὸ βασιλεῖαυ ἀπ' αὐτοῦ τῶν πνευματικῶν, ἔχουσιν χάριν, δι' ἧς λατρεύομεν εὐαρέσως τῷ Θεῷ, καὶ ὅς ἐστι εὐλαβεῖς.

29 Καὶ γὰρ ὁ Θεὸς ἡμῶν πῦρ κατακαλίσκοι.

Κεφ. ιγ'. 13.

- 1 **Η** φιλοκαρδία μενέτω.
- 2 Τῆς φιλοξενίας μὴ ἐπιλαθῆναι· διὰ ταύτης ἐλάθον τιτὲς ἐνίστασθαι ἀγγέλους.
- 3 Μιμνήσκεσθε τῶν δεσμιῶν, ὡς συνδεδεμένοι. τῶν πνευματικῶν, ὡς καὶ αὐτοὶ ὄντες ἐν σώματι.
- 4 Τιμιὸς ὁ γάμος ἐν πᾶσι, ὃ καὶ ἡ κοίτη ἀκρίβυτος· ὁμοίως δὲ ὁ μοιχὸς κτενεῖ ὁ Θεός.
- 5 Ἀφιλάργυρος ὁ τρόπος· ἀρκέμενοι τοῖς παρῶσιν· αὐτὸς γὰρ εἶρηκεν· οὐ μὴ σε ἀνῶ, ὅδ' ἢ μὴ σε εὐκαταλίπω.
- 6 Ὡς ἐθαυρόντας ἡμᾶς λέγειν· Κύριος ἐμοὶ βοήθει, καὶ ἡ φεβηθήσομαι τί ποιήσει μοι ἄνθρωπος.
- 7 Μιμνεσθε τῶν ἡγμένων ὁμῶν, οἵτινες ἐλάλουν ὑμῖν τὸ λόγον τοῦ Θεοῦ· ὡς ἀναθελόντες τῷ ἐκκλησίᾳ τὴν ἀναστροφὴν, μιμεῖσθε τῷ πνεύματι.
- 8 Ἰσθὲς Χριστὸς χθὲς καὶ σήμερον ὁ αὐτός, καὶ εἰς τὸ αἰῶνα.
- 9 Διδαχαῖς ποικίλαις καὶ ξένοις μὴ παρὰφύγεσθε, καὶ γὰρ χάριτι βεβαιῶσθαι τῷ καρδίᾳ, καὶ βρώμασιν, καὶ οἷον καὶ ὡφελήσασθαι οἱ πατριάρχαι.
- 10 Ἐχομεν θυσιᾶς ἁγίας, καὶ ἡ εὐφροσύνη ἐκ ἔχουσιν ἡσυχίαν οἱ τῇ σκηνῇ λατρεύοντες.
- 11 Ὡς γὰρ ἀσφείρται ζῶον τὸ αἷμα πρὸς ἀμάρτιαν καὶ τὰ ἅγια διὰ τὴν ἀσχερίαν, τῶν τῶν σώματα κατακαίεται ἔξω τὴν παρεμβολῆς.
- 12 Διὸ ἐκ τῆς ἰσχύος, ἵνα ἀγιάσῃ διὰ τὴν ἰδίαν αἵματος ἁγίου, ἔξω τὴν πόλιν ἵσταται.
- 13 Τοίτοις ἐκτερωσάμεθα πρὸς αὐτὸν ἔξω τὴν παρεμβολῆς, καὶ ὁνειδιστῶν αὐτὰ φερόντες.
- 14 Οὐ γὰρ ἔχομεν ὥδε μέντωρ πόλιν, ἀλλὰ τὸ μέλλον ἐπιζητούμεν.
- 15 Δι' οὗτο ὃν ἀντιφύγομεν θυσιᾶν αἰνέσας διαπαύσασθαι τῷ Θεῷ, τῶν τῶν χαλῶν ὁμολογούντων τῷ σώματι αὐτῷ.
- 16 Τῆς δὲ ἀπορίας καὶ κοινωνίας μὴ ἐπιλαθῆναι· καὶ γὰρ θυσιᾶς ἀντιφύγει ὁ Θεός.
- 17 Πείθεσθε πρὸς ἡγμένους ὑμῶν, καὶ ὑπακούετε· αὐτοὶ γὰρ ἀργυρῶσιν ὑμῶν τῶν ψυχῶν ὑμῶν, ὡς λόγον ἀντιφύγοντες· ἵνα μὴ χάρις τῶν ποιῶν, καὶ μὴ τῶν ἀντιφύγοντες· ἀλλοιῶν γὰρ ὑμῖν τῶν.
- 18 Προσέχουσθε πρὸς ἡμᾶς· πεποιθῆσθαι γὰρ ὅτι καὶ τὸν αὐτὸν ἔχομεν, ἐν πᾶσι καλῶς θέλοντες ἀναμνησθῆναι.

19 Περιβοτέρας ὅ ὡφελὲς τὸ ποιῆσαι, ἵνα
χίον ἀποκατασταθῇ ὑμῖν.

20 Ὁ ὅ Θεὸς τῆ εἰρήνης, ὁ ἀναγαγὼν ὅν νεκρὸν
ποιμένα τῶν προβάτων τῷ μέγαρ ἐν αἵματι διαδ
αίωγίνῃ, τῷ Κυρίῳ ἡμῶν Ἰησοῦν,

21 Καταρτίσαι ὑμᾶς ἐν παντὶ ἔργῳ ἀγαθῷ, ἵνα
ποιῆσαι τὸ θελημα αὐτοῦ· ποιεῖτε ἐν ὑμῖν τὸ αὐτὸ
ἐνώπιον αὐτοῦ, διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ. ὃ ἡ δόξα εἰς τὸν
ναὶ τῶν αἰώνων. Ἀμήν.

22 Παρακαλῶ ὅ ὑμᾶς, ἀδελφοί, ἀνέχεσθε τὸν
λογον τῆς ὡφελήσεως· καὶ γὰρ διὰ τῶν βραχείων ἐπέ
στεν.

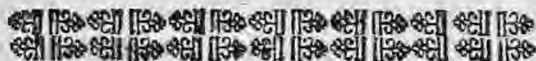
23 Γινώσκετε τὸ ἀδελφὴν Τιμόθεον ἀπολελυμένον
μεθ' ἡμῶν (ἐλὼν τάχιον ἔρχεται) ὁφθαλμοὶ ὑμῶν.

24 Ἀσπάσασθε πάντας τὸς ἡγουμένους ὑμῶν ὡς
ταὶς ταῖς ἀγίαις. Ἀσπάζονται ὑμᾶς οἱ ἀπὸ τῆς Ἰταλίας.

25 Ἡ χεὶρ μου πάλιν ὑμῶν. Ἀμήν.

Πρὸς Εὐβραίους ἐγράφη ἀπὸ τῆς Ἰταλίας διὰ
τιμοθέου.





Ι Α Κ Ω Β Ο Υ

Τῷ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΚΑΘΟΛΙΚῃ,

ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

Κεφ. α. ι.

1 **Ι** Αγαπῶς Θεῷ ἔ Κυρίῳ Ἰησοῦ Χριστῷ δούλῳ,
 ἔ ταις δώδεκα φυλαῖς ταῖς ἐν Ἀφροσπορίᾳ,
 χαίρειν.

2 Πᾶσιν χαρὰν ἡγάσασθε, ἀδελφοί μου, ἐτὶ πε-
 ρασμοῖς πασιπύεσθε ποικίλοις.

3 Γινώσκοντες ὅτι τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῇ πίστει κα-
 τεργάζεται ὑπομονή.

4 Ἡ δὲ ὑπομονὴ ἔργον τέλειον ἔχει, ἵνα ᾖτε τέ-
 λειοι ἔ ὁλόκληροι, ἐν μηδενὶ λεπιδύμῳ.

5 Εἰ δέ τις ὑμῶν λείπεται σοφίας, αἰτείτω παρὰ
 τῷ διδόντι Θεῷ πασὶν ἀπλῶς, ἔ μὴ οὐκιδίζοντος, ἔ
 οὐδῆται αὐτῷ.

6 Αἰτείτω δὲ ἐν πίστι, μηδὲν διακρινόμενος· ὁ γὰρ
 ἀφαιρῶν ὡς εἶπε κλύωνι θαλάσσης ἀνεμίζομένῳ ἔ
 ῥιζιζομένῳ.

7 Μὴ γὰρ οἶέσθω ὁ ἀνθρώπος ὁκαῖνος ὅτι λήψεται τι
 παρὰ τοῦ Κυρίου.

8 Ἀνὴρ δὲ ψυχῆς, ἀκατάστατος ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς
 αὐτῇ.

9 Καυχᾶσθω ὁ ἀδελφός ὁ ταπεινός ἐν τῷ ὕψει
 αὐτοῦ.

10 Ὁ δὲ πλῆσιος, ἐν τῇ ταπεινώσει αὐτοῦ, ὅτι ὡς ἀν-
 θρῶς χάσθω παρελθύσεται.

11 Ἀτέλει γὰρ ὁ ἥλιος σὺν τῷ καύτῳ, ἔ ἡρόαμε
 τὸ χόρτον, ἔ τὸ ἀνθρῶς αὐτοῦ ἡέπετε, ἔ ἡ ὥπρεση
 τῷ πρωτῷ αὐτοῦ ἀπώλετο· ἔτω ἔ ὁ πλῆσιος ἐν ταῖς
 περὶ αὐτοῦ μαρτυρήσεται.

12 Μακάριος ἄνθρωπος, ὅς ὑπομένει πειρασμόν· ὅτι δο-
 κίμος ἡκούσιμος λήφεται τῷ σέφῳ τῇ ζωῇ, ὅν ἐπὶ γυ-
 γήκατο ὁ Κύριος τοῖς ἀγαπῶσιν αὐτόν.

13 Μηδὲς παραζήμιος λεγέτω· ὅτι ἀπὸ τοῦ Θεοῦ πε-
 ράζομαι· ὁ γὰρ Θεὸς ἀπειραστός ἐστὶ κακῶν, περὶ ἧς
 ὁ αὐτὸς ἔδενε.

14 Ἐκαστος δὲ περιστάται, ὥστε τὸ ἴδιόν ἐπιθυμῇ
ἡλεεινότερος ἢ δεικνύμενος.

15 Εἴτα ἡ ὑποθυμία συλλαβῶσα τήκτει ἁμαρτίαν
ἢ δὲ ἁμαρτία ἀποτελεσθεῖσθαι ἀποκύει θάνατον.

16 Μὴ πλυνᾶσθε, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί.

17 Πᾶσα δέ σοι ἀγάπη, ἡ πᾶν δόγμα τέλειον ἂν
εἴη ἐστὶ, καταβαίνειν ἀπὸ τοῦ Πατρὸς τοῦ φωτός, καὶ
ἡ ἐκ ἐνὶ ὡφελείᾳ, ἡ τροπῆς ἀποσκίισμα.

18 Βηλεῖς ἀπεκυήτεν ἡμεῖς λόγῳ ἀληθείας, ἵνα
ἔσται ἡμεῖς ἀπαρχὴν τινα τοῦ αὐτοῦ κτισμάτων.

19 Ὡς, ἀδελφοί μου ἀγαπητοί, ἔστω πᾶς ἀνέστη
ταχύς εἰς τὸ αἰεῖσαι, βραδύς εἰς τὸ λαλῆσαι, βραδύς
εἰς ἔργον.

20 Ὁργὴ γὰρ ἀνδρός, δικαιοσύνη Θεοῦ ἢ κατεργάζεται.

21 Διὰ ἀποθέμενοι πᾶσαν ῥυπαρίαν ἡ περιωμή
κακίας, ὥστε προσηύχῃ δέξασθε τὸ ἐμφυτεῖν λόγον,
δυναμένους σῶσαι τὰς ψυχὰς ὑμῶν.

22 Γίνεσθε δὲ ποιηταὶ λόγου, ἡ μὴ μόνον ἀκραταὶ
παραλογιζόμενοι ἑαυτῶν.

23 Ὅτι εἴπε ἀκρατὴς λόγος ἐστὶ ἡ ποιητής, ὅτι
εἰκεν ἀνδρὶ κατὰρκεῖν τὸ προσωπεῖον τὸ γκρίστιον αὐτοῦ
ὥς ἰσότρον.

24 Καταγέσθαι γὰρ ἑαυτῶν, ἡ ἀπειλήλυσθαι, ἡ δὲ
ἐπιλάθετο ἑαυτοῦ ὡς.

25 Ὁ δὲ ὡφελύψας εἰς νόμον τέλειον τὸ ἐλθεῖν
εἰς, ἡ παραμείνας, ὅπως ἢ ἀκρατὴς ὑπολησμονῇ
γνώμης, ἀλλὰ ποιητὴς ἔργου, ὅπως ἡ καὶ εἰς τὸ
πειθήσει αὐτῷ ἔσται.

26 Εἴπε δεκά θρησκός ὦναι ἐν ὑμῖν, μὴ χαλκῶ
γυγῶν γλαδῶν καὶ, ἀλλὰ ἀπατῶν καρδίαν, καὶ
ματαιὸς ἡ θρησκεία.

27 Θρησκεία καθαρά καὶ αἰμίλματος παρὰ πᾶσι Θεοῖς
καὶ Πατρί, αὐτὴ ἐστὶν, ὅπως ἡ πεισθεῖσθαι ὁφθαλμοῖς
ἡ χάρις ἐν τῇ θλίψει αὐτῶν, ἀσπίλον ἑαυτῶν τῶν
ἀπὸ τοῦ κόσμου.

Κεφ. β. 2.

1 **Α**γαπῶί μου, μὴ ἐν περιστολήν ἔχῃ
τῶν πῶς τὸ Κρεῖν ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ
δόξης.

2 Ἐὰν γὰρ εἰσέλθῃ εἰς τὸν συναγωγὴν ὑμῶν ἡνὶ
χρυσόδακτύλιος ἐν ἰσθμῷ λαμπρῷ, εἰσέλθῃ ὅτι ἡ
χρὺς ἐν ῥυπαρῇ ἰσθμῷ.

3 Καὶ ὑποβλέψῃς ἐπὶ τὸ φορεῖν τὸν ἰσθμὸν τῶν
λαμπρῶν, ἡ εἴπητι αὐτῶν. Σὺ καὶ ὁ ἄλλος ὡς καλῶς ἡ
πτωχὸς εἴπητι. Σὺ γὰρ ἐκεί, ἡ καὶ ὁ ἄλλος ὡς καλῶς
ὡς ἐκείνους μου.

Καὶ

4 Καὶ ἡ διακρίσητε ἐν ἑαυτοῖς, ἵνα γίνεσθε κρείττοι
λογισμοὺς ποιηταί;

Ὁ Ἀκόσμητος ἀδελφοί μου ἀγαπᾶτοί, ὃς ὁ Θεὸς ἤξε-
λεῖτο τῆς πτωχῆς τῆς κόρης τῆς, πλάσσει ἐν τῇ αἰ-
σῶ κληρονομίᾳ τῆς βασιλείας ὅς ἐπαγγέλλετο τοῖς ἀγα-
ποῦν αὐτόν.

ὁ ὕμνος δὲ ἡτοιμάσθη τὸν πταχόν· ἐχ' οἱ πάντες
καταδυνασθέντες ὑμῶν, ὧς αὐτοὶ ἔλαβον ὑμῶν καὶ χρι-
στὸν;

7 Οὐκ αὐτοὶ ἐλασφημῶσι τὸ καλὸν ὄνομα τὸ ὑπεκλη-
θὲν ἐφ' ὑμῶν;

8 Εἰ μὲντοι νόμον τιλαῖτε βασιλικόν, καὶ τὴν γὰρ
 φωνήν· Ἀγκαψάμεν τὸν πληθύνον σε ὡς σπαιτὸν, καλῶς
 ποιᾶτε·

9 Εἰ ὁ πρωταρχηγὸς, ἀμφοτέρω ἐργάζεσθε, ἐ-
λγχομένοι ὑπὸ τοῦ νόμου ὡς παρὰ δόγμα.

10 Οἷς δὲ ὅλον τὸ νόμον τηρήσει, πείσει δὲ ἐν ἐνίᾳ
γίγνεται πάντων ἐνός.

11 Οὐ γὰρ εἰπὼν· Μὴ μοιχούσῃ, εἴ τι ἐμὲ φονεύ-
σκει· εἰ δὲ μοιχούσῃ, φονεύεται ὁ, διγύσας παρὰ
ἐκείνης νόμον.

12 Οὕτω λαλήτε ἑ ἄλλω ποιῆτε, ὡς 248 νόμοι ἐλο-
υσθέντες μέλλοντες κρατεσθαι.

13 Ἡ γὰρ κρίσις ἀνέλκει πρὸς τὴν κρίσιν τοῦ κόσμου· καὶ ἡ κρίσις τοῦ κόσμου ἐλπίσται ἐπὶ τῇ κρίσει τοῦ κόσμου.

14 Τί τὸ ὄφελος, ἀδελφοί μου, εἰδὼ πῶς λίγη πε-
ρίχην, ἔργα ὅ μὴ ἔχη; μὴ δύναται ἡ πίστις σώσαι
αὐτοῦ;

15 Εἰς ἂν δὲ ἀδελφός ἢ ἀδελφή γυμνοὶ ᾖ ἀρχαῖσι,
καὶ λιπυμένοι ᾖσι τὸ ἐφ' ἡμέρᾳ τροφή·

16 Εἴπη δὲ πρὸς αὐτοῖς· ὅτι υἱὸν ὑμῶν ἔστασιν ἐν κρήνῃ,
δερμαίνουσθαι ἐν χορδαίσι· μὴ δοῦτε δὲ αὐτοῖς τὰ
ἐπιγαστέρα καὶ σπλάγχνα, πρὸ τοῦ οφθαλμοῦ;

17 Οὕτω ἐν ἡ πείρῃ, ἵνα μὴ ἔργον ἔχη, νεκρὸν ὡς
καὶ ἐν αὐτῇ.

18 Ἀλλ' ἰδοὺ τίς· Σὺ πίσις ἔχεις, καὶ γὰρ ἔργα ἔχει·
 δέξου μοι τὰς πίσις σου ὅτι τῷ ἔργῳ σου, καὶ γὰρ δέξου
 σου ὅτι τῷ ἔργῳ μου τὰς πίσις μου.

19 Σὺ πιστεύεις ὅτι ὁ Θεὸς ἐστὶ καλὸς ποιῆς
καὶ τὰ θαύματα πιστεύεις, ὅτι φέρωνται;

20 Θέλω εἰ γινῶναι, ὡς ἄνθρωπε κατὰ, ἕτι ἡ πίστις
χρεῖται τῆς ἐργασίας σου ἐν τῇ;

21 Ἀντίστοιχὸς Πατὴρ ἡμῶν ἐκ τῆς ἐργασίας ἐκτελεσθε-
ντος Ἰωάννης ὁ υἱὸν αὐτοῦ ἐπὶ τὸ συστησέσθαι;

22 βλέπεις ὅτι ὁ πῖσις συνέργει τοῖς ἔργοις αὐτοῦ;
 εἰ οὐκ ἦν ἔργον ἢ πῖσις ἐτελευτήθη;

23 Καὶ ἐπλήρωθη ἡ γραφή ἡ λέγουσα· Ἐπίστατε ὁ
 24 Δουλὸς τοῦ Θεοῦ, καὶ ἐπαγγέσθῃ αὐτῷ εἰς δικαιοσύνην,
 25 φίλος Θεοῦ ἀκλήθης.

24 Οὐραγε τοῖσι θεοῖς ἔδωκεν ἀκαθάρτου ἀνθρώπου
ἐκ σοῦ πίστις μόνη.

25 Ομοίως ἔχει ῥαὰβ ἡ πόσις οὐκ ἔχει ἔργον ἐν
καὶνῶν, ἀποδείξαμένη τῆς ἀγγέλης, ἡ εἰρήνη
ἐκβαλῶσα;

26 Ὅσους γὰρ τὸ σῶμα χωρὶς πνεύματος περὶν ἐστὶ
ἡτοῦ ἡ δὲ πείσις χωρὶς τοῦ ἔργου περὶν ἐστὶ.

Κεφ. γ'. 3.

3 ΜΗ' τέκλοι διδασκαλοὶ γίνισθε, ἀδελφοί μου,
εἰδότες ὅτι μᾶλλον κέρως λαφύμεθα.

4 Ἰσοῦλά γὰρ σπείρομεν ἄνθρωποι· ἅπας ἐν λόγῳ
πταίει, ἅπας τέλειος ἀπὸ τοῦ, δυνατὸς χαλινάγου ἡσίου
ἐλθὼν τὸ σῶμα.

5 Ἰδὲ γὰρ ἵππων τῆς χαλινῆς εἰς τὰ σώματα βα-
λόμενοι ποὺς τὸ πέθεσθαι αὐτοὺς ἡμῖν, ἡ δὲ ἔλθον τὸ σῶμα
αὐτῶν μεταγόμεν.

6 Ἰδὲ, ἡ τὰ πλοῖα τηλικαῦτα ἔντα, ἡ ἀπὸ σκηνῶν
ἐν ἀνέμων ἐλαφύμενα, μεταγίγνεται ἀπὸ ἰσχυρῆς
δαλίας, ὅπου ὡς ἡ ἐοικὴς τῇ ἀδύνατον βύληται.

7 Οὕτως ἡ γλώσσα μικρὸν μέρος ἐστὶ, ἡ μὲν
λαυγᾶ. ἰδὲ, ὁλίγον πῦρ ἡλικῶς ὕλην ἀνάπτει.

8 Καὶ ἡ γλώσσα πῦρ, ἡ κόσμος τῇ ἀδικίᾳ· ἡτοῦ
γλώσσα καθίσταται ἐν τοῖς μέλεσιν ἡμῶν, ἡ σπιλὴ
ἐλθὼν τὸ σῶμα, ἡ φλογίζουσα τὸν τροχὸν τῇ γένεσιν
ἡ φλογιζομένη ἀπὸ τῇ γενέτης.

9 Πᾶσα γὰρ φύσις θνητῶν τε ἡ περὶν, ἡ περὶν
καὶ ἐν γλῶσσῃ δαμνέται καὶ διδάσκαται τῇ φύσει
ἐνθροπῶν.

10 Τῶν δὲ γλωσσῶν ἡδὲς δύναται ἀνθρώπων δαμνέσαι
ἀκατάχρητον κακόν· μετὰ ἡ δὲ θάλαττα ὅρη.

11 Ἐν αὐτῇ ἀλογῶμεν τὸ Θεὸν ἡ Πατέρα, ἡ
αὐτῇ καταρωμεθα τὸν ἀνθρώπου τὸν καθ' ὁμοίαν
Θεὸν γεγονότας.

12 Ἐκ τῇ αὐτῇ σώματος ἡ ἐρχεται ἀλογία ἡ κατὰ
ῥα. Οὐ γὰρ, ἀδελφοί μου, ταῦτα ἡτοὶ γίνισθαι.

13 Μῆτι ἡ πηγὴ ὅκ τῇ αὐτῇ ὅπως βρύει τὸ γλυκὺ
ἡ τὸ πικρὸν;

14 Μὴ δύναται, ἀδελφοί μου, σκῆ ἡλίας ποιῆσαι
ἡ ἀμπιλοὺς σῦκα; Οὕτως ἀδελφία πηγὴ ἀλυκὸν ἡ γλυκὺ
καὶ ποιῆσαι ὕδωρ.

15 Τίς σοφὸς καὶ ἡτοῦ ἡμῶν ἐν ὕμῖν ἡ δαμάσκει
ὅκ τῆς καλῆς ἀνατροφῆς τὰ ἔργα αὐτῇ ἐν προ-
την σοφίας.

16 Εἰ δὲ ἔστω πικρὸν ἔχετε ἡ ἐλπίδα ἐν τῇ κα-
θάρσει ἡμῶν, μὴ κατακαυχᾶσθε καὶ ψεύδεσθε ἡ τῇ
ἀληθείᾳ.

17 Οὐκ ἐστὶν αὐτῇ ἡ σοφία ἀνθρώπων κατεργασμένη
ἀλλ' ἐπίγειος, ψυχικὴ, δαιμονιῶδης.

18 Ὅτε γὰρ ἔστω ἡ ἐλπίδα, ὅση ἀκαταστασία
καὶ φάσμα πρῶμα.

17 Ἡ δὲ ἀποδοὺν σοφία πρώτου μὲν ἀνὰ καρπὸν ἐκείνην
εἰδωλὸν ἢ, ὁππείχης, ὡς περὶ θῆς, μετ' ἡ ἐλέως & καρπὸν
ἀγαθόν, ἀδιάκριτος, & ἀνυπόκριτος.

18 Καρπὸς δὲ δικαιοσύνης ἐν εἰρήνῃ σπείρεται τοῖς
ποιῶσιν εἰρήνην.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Π**Ο'θεν τέλειμοι & μάχαι ἐν ὁμίῃ; Οὐκ ἐν
τεύθειν, ὅτι τῷ ἡδονῶν ὁμῶς τῷ στρατεύμε-
νῶν ἐν τοῖς μίλησιν ὁμῶς;

2 Ἐπιθυμεῖτε, & ἢ ἐχρεῖ, φοβεῖτε & ζηλῶτε, &
ἢ εὐνοῖσθε ὑπὸ τυχῶν· μάχισθε & πολεμεῖτε, ἢ ἔχα-
τι δὲ, **Σὺ** τὸ μὴ αἰτῶσθαι ὑμᾶς.

3 Αἰτᾶτε, & ἢ λαμβάνετε, διότι κακῶς αἰτῶσθε,
ἵνα ἐν ταῖς ἡδοναῖς ὑμῶν δαπανήσῃτε.

4 Μοιχοὶ & μοιχαλίδες, ἢ οἶδατε ὅτι ἡ φιλία τῆ
κρίσεως, ἔχθρα τῆ Θεῷ εἰσιν; ὅς ἂν ἔν βλακῇ ἢ φίλος
ᾖται τῆ κρίσεως, ἔχθρος τῆ Θεῷ καθίσταται.

5 Ἡ δὲ δοκᾷτε ὅτι κενῶς ἡ γραφή λέγει· Πρὸς φθόρον
ὑποποθεῖ τὸ πνεῦμα ὃ κατώκησεν ἐν ἡμῖν;

6 Μείζονα δὲ δίδωσι χάριν, διὸ λέγει· Ὁ Θεὸς ὑπε-
ρβανοῖς ἀντιτάσσεται, ταπεινοῖς δὲ δίδωσι χάριν.

7 Ἐποτάγητε ἐν τῷ Θεῷ, ἀντίστητε τῷ **Σὺ** βόλῃ,
& φέρεται ἀφ' ὑμῶν.

8 Ἐγγίσατε τῷ Θεῷ, & ἐγγίει ὁμίῃ· καθαρίσατε
χίμας ἀμαρτωλοῖ, & ἀγγίσατε καρδίας διψυχοί.

9 Ταλαπωρήσατε & πενθήσατε & κλαύσατε, ὃ γέ-
λος ὑμῶν εἰς πένθος μεταστρεφθήτω, & ἡ χαρὰ εἰς κα-
τήφειν.

10 Ταπεινώθητε ἐνώπιον τῆ Κυρίου, & ὑψώσει ὑμᾶς.

11 Μὴ καταλαλέετε ἀλλήλους, ἀδελφοί· ὃ καταλα-
λῶν ἀδελφῷ, & κρίων τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καταλαλεῖ νό-
μον, & κρίνει νόμον· εἰ δὲ νόμον κρίνεις, ἢ εἰ ποιῆσθης
νόμον, ἢ ἀλλὰ κρίτης.

12 Εἰς εἰσιν ὁ νομοθέτης ὃ δυνάμειος σῶσαι & ἀπο-
λίσαι· σὺ τίς εἶ, ὃς κρίνεις τὸ ἕτερον;

13 Ἄγε νῦν οἱ λέγοντες· Σήμερον ἡ αἰεὶς πορνοσύ-
νη εἰς τῷδε τῷ πόλιν, & ποιήτεσθαι ἐκεῖ ἐνισαυτὶς
ἵνα, & ἐμπορνοσύμεθα, & κερδήσομεν.

14 Οἵ τινες ἢ ἐπίσασθε τὸ τὸ αἰεὶς· ποῖα τὸ ὃ
ζωὴ ἡμῶν; ἀτρίς γάρ εἰσι ἡ πρὸς σέλιγον φαινόμενα,
ἐπειτα δὲ ἀφαιρίζομεν.

15 Ἀντὶ τῆ λέγειν ὁμῶς· Ἐὰν ὁ Κύριος θελήσῃ, &
ἐλθώμεν, & ποιήσομεν τῷτο ὃ ὁκεῖτο.

16 Νῦν δὲ καυχᾶσθε ἐν ταῖς ἀλαζονείαις ὑμῶν. Πᾶ-
σα καυχῆσι τιμωτῇ, ποιεῖται εἰσιν.

17 Εἰδότες ὅτι καλοὶ ποιῶν καὶ μὴ πωροῦντες, ἁμαρτίαν οὐκ ἔσται.

Κεφ. ε. 5.

1 Ἄγε οὖν οἱ πλησίοι, κλαύετε ὀλοφύροντες ἐπὶ τῇ τῆς ταλαιπωρίας ὑμῶν ταύτῃ ἐπερλήμεναι.

2 Ὁ πλῆθος ὑμῶν σέσητε, καὶ τὰ ἱκετὰ ἡμῶν σητοβράτα γέγονεν.

3 Ὁ χυσοὺς ὑμῶν ὡς ὁ ἀγυρὸς κατῶται, ὃ δ' ἰὸς αὐτοῦ εἰς μαρτύριον ὑμῶν ἔσται, ὃ φαγεται τὰς σαρκαὶς ὑμῶν ὡς πῦρ· ἐδοκίμασατε ἐν ἐσχάταις ἡμέραις.

4 Ἰδὲ, ὁ μισθὸς τῆς ἐργασίης τῆς ἀμηνόαντων τὰς χώρας ὑμῶν, ὁ ἀπιστηρήμενος ἀφ' ὑμῶν, κραίει, καὶ αἱ κοαὶ τῆς θερύσαντων εἰς τὰ ὕδα Κερεὶν Σαβαῶθ εἰσιληλύθασιν.

5 Ἐτρυφήσατε ὑπὲρ τῆς γῆς, καὶ ἐσπαταλήσατε· ἐδρίψατε τὰς καρδίας ὑμῶν ὡς ἐν ἡμέρᾳ σφαγῆς.

6 Κατιδικάσατε, ἐφονεύσατε τὸ δίκαιον, ἔκ αὐτοῦ τρώεται ὑμῶν.

7 Μακροθυμήσατε ἦν, ἀδελφοί, ὡς καὶ παροῦσαι τὸ Κερεὶν. Ἰδὲ, ὁ γενορῶς οὐδέχεται τὸ τίμιον κατὰ τῆς γῆς, μακροθυμῶν ἐπ' αὐτῷ, ὅς ἂν λάβῃ ὑετὴν πρῶτον καὶ ὀψιμον.

8 Μακροθυμήσατε καὶ ὑμεῖς, σκεῖσατε τὰς καρδίας ὑμῶν, ὅτι καὶ παροῦσαι τὸ Κερεὶν ἤγγικε.

9 Μὴ σενάζετε κατ' ἀλλήλων, ἀδελφοί, ἵνα μὴ κατακριθῆτε· ἰδὲ, κρείττης πρό τῆς θυμῶν ἔστηκεν.

10 Ὡς τὸ ἐδωκεν λαβεῖτε τὸ κακοπαθείας, ἀδελφοί μου, καὶ τὸ μακροθυμίας, τὸς προφῆτας αἱ ἐλάλησαν τὸ ὄνομα Κερεὶν.

11 Ἰδὲ, μακροθύμεν τὸς ἀπομένοντας· τὴν ἡμετέραν ἰαβὴν ἤκατα, καὶ τὸ τέλος Κερεὶν εἶδετε, ὅτι πληνίστα γινώσκοντες ὅτι ὁ Κόσμος ἐκτίρμας.

12 Πρό πάντων δὲ, ἀδελφοί μου, μὴ ἀμύνετε μήτε τὸ ὄνειδος, μήτε τὴν γλῶσσαν, μήτε αἴτιον τινὰ ὄνειδος· ἦτο ὃ ὑμῶν τὸ καὶ, καὶ, καὶ τὸ ὅτι, ὅτι ἵνα μὴ εἰς ὑμῶν ποίησιν πέστητε.

13 Κακοπαθεῖς ἐν ὑμῶν; Προσπάχισθω. εὐθυμῶν; Ψαλλέτω.

14 Ἀφθονῶς ἐν ὑμῶν; προσκαλισάσθω τὸς προσκυνοῦντες τὸ ἀκλήσιος, καὶ προσδιδάσκουσιν ἐπ' αὐτοῖς, καὶ ἡμεῖς αὐτοὺς ἐλαίον ἐν τῷ ὀνόματι τῷ Κερεὶν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ Κερεὶν.

15 Καὶ ἡ εὐχὴ ἡ πείρασος σώσει τὸ κάμνοντα, καὶ ἡ γνῶσις αὐτοῦ ὁ Κερεὶν· καὶ ἡ ἀμαρτία ἡ πεποιθὴς, ὡς φερόσιν αὐτῷ.

16 Ἐξομολογείσθω ἀλλήλοις τὰ ὀφειλόμενα, καὶ ἡ εὐχὴ.

ἐνχεσθε ὑπὲρ ἀλλήλων, ὅπως ἐαθῇτε. πολὺ ἰσχύει
δέησις δικαίᾳ ἐνεργημένη.

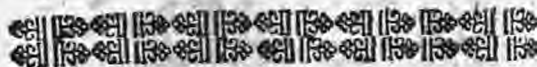
17 Ἡ' ἄλκις ἀνδραπὸς ὡς ὁμοιοπαθὴς ἑμῖν, ἔ
πορευ-
σάμην προσήύξατο ἥ μὴ βρέξαι· ἔ
κιν ἔβρεξεν ὅτι τ'
γῆς ἐνιαυτὸς τρεῖς ἔ
μῶας ἔξ.

18 Καὶ πάλιν προσήύξατο, ἔ
ὁ ἄνθρωπος ὑετὸν ἔδωκε,
ἔ
ἡ γῆ ἐβλάστησε ἥ καρπὸν αὐτῆς.

19 Α' δὲ λόγοι, ἐλπίς ἐν ὑμῖν πλημυθῇ ἀπὸ τ'
ἀλη-
θείας, ἔ
ὑπερέψη τις αὐτὸν,

20 Γινώσκεται ὅτι ὁ ὑπερέψας ἀμαρτανλὸν ἐκ πλα-
γῆς ἰδὲ αὐτῆς, σώσει ψυχῶν ἐκ θανάτου, καὶ καλυψέ
πληθος ἀμαρτιῶν.





Π Ε Τ Ρ Ο Υ

Α' ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

ΚΑΘΟΛΙΚΗ, α.

Κεφ. α'. ι.

Πέτρος Ἀπόστολος Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐκλεκτοῦ τοῖς παρεπιδήμοις Ἀσσυρίας Πόντου, Γαλατίας, Καππαδοκίας, Ἀσίας, Ἐβρυτίας.

Κατὰ πρόγνωσιν Θεοῦ Πατρὸς ἐν ἀγιασμῷ Πνέματος ἁγίου, εἰς ὑπακοὴν ἑορτασμοῦ ἀγαθὸς Ἰησοῦ Χριστοῦ χάρις ὑμῖν ἑ κείνῳ πληθυνθεῖ.

Εὐλογητὸς ὁ Θεὸς ὁ Πατὴρ τοῦ Κυρίου ἡμεῶν Ἰησοῦ, ὁ κατὰ τὸ πολὺ αὐτῷ ἔλεος ἀπαγγέλλων ὑμῖν εἰς ἐλπίδα ζωῆς δι' ἀναστάσεως Ἰησοῦ Χριστοῦ ἐκ νεκρῶν.

Εἰς κληρονομίαν ἁρμόδιον ἑ κείνῳ ἑ ἀμερόλητον, τετηρημένην ἐν νεφελῶν εἰς ἡμᾶς.

Τῆς ἐν δυνάμει Θεοῦ φανερωμένης δι' ὧν ὁ σῶμα ἑτοίμῳ ἀποκαλυφθῆναι ἐν καιρῷ ἑ ἡμῶν.

Ἐν ᾧ ἐγαλλιάσθε, ὀλίγον ἄρτι (εἰ δέον ἐστὶ) καὶ πηδῆντες ἐν ποικίλοις πειρασμοῖς.

Ἵνα τὸ δοκίμιον ὑμῶν τῆς πίστεως πολὺ τιμηθῇ χρυσίῳ ἑ ἀπολλυμένου, δι' ὧν πυρὸς ἑ δοκιμαζομένου, ὁρεθῇ εἰς ἔπαινον ἑ τιμῶν ἑ δοξῶν, ἐν αὐτῷ καλύψῃ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

Ὅν ἂν ἴδωτε ἀγαπᾶτε, εἰς ὃν ἄρτι μὴ δοκίματε πιστεύοντες, ἐγαλλιάσθε χαρᾷ ἀνεκλαλήτῳ ἑ διδοχασμένη.

Κομιζόμενοι τὸ τέλος τῆς πίστεως ὑμῶν, σωτηρίαν ψυχῶν.

Περὶ ἧς σωτηρίας ἡμεῖς ἐζητήσαμεν ἑ ἐπαγγέλλομεν ὑμῖν ὅτι οἱ ὅτι εἰς ὑμᾶς χάριτος προφητῶν.

Ἐρρωτῶντες εἰς πάντα ἡ ποῖον καιρὸν ἐδόξα τὸ εἰς αὐτῶν Πνεῦμα Χριστοῦ, προμαρτυροῦμεν τὰ εἰς Χριστὸν παθήματα, ἑ τὰς μὲν ταῦτα δοξαί.

13 Οὕτως

Βιβλίον Κωνσταντίνου ἑ ἑπιστολῶν ἑ τῶν ἑ

11 Οἷς ἀπεκαλύφθη ὅτι ἐκ τούτων, ἡμεῖν δὲ διὰ
 τῶν αὐτῶν, ὡς τῶν ἀγγέλων ὑμῶν 249 τῶν ἀγγε-
 λισμένων ὑμῶς ἐν Περσέτι Δ' αὖτε ἀποκαλέτι ἀπ'
 Βαβυλῆ, εἰς ἃ ὁπθυμῶσιν ἄγγελοι ἐκκαλύψαι.

13 Διὸ ἀναξοσάμενοι τὰς οὐρὰς τ' ἀλφειοτάς ὑμῶν,
 γήφοντες, τελείως ἐλπίζατε ὅπῃ τ' φερομένην ὑπὸ τ'
 χερσιν ἐν ἀποκαλύψει Ἰησοῦ Χριστοῦ.

14 Ὡς τέκνα πατρὸς, μὴ συγχρηματίζεσθαι τοῖς
πρότερον ἐν τῇ ἀγνοίᾳ ὑμῶν ὑπαδουλίας.

15 Ἀλλὰ καὶ τὰ καλίστιστα ὑμῶν ἀγίου, Ἐκείνου
ἀγίου ἐν πάσῃ ἀνάστροφῇ ἡμετέρῃ.

16 Διότι γεγραπται· Ἄγιοι γένησθε, ὅτι ἐγὼ ἅ-
γιος εἰμι.

17 Καὶ εἰ πάντες ὑποτασσάμεθα * ἀπροσώποληπτως
κρίνεται καὶ τὸ ἑκάστου πρῶτον· ἐν φόβῳ * ὃ παροικίας
δοῦν χρόνον ἀνασφάλετε.

18 Εἰδότες ὅτι ἐν φθαρτοῖς, ἀργυρίᾳ ἢ χρυσίῳ ἐ-
λυσώθητε ἐκ τῆς κατὰ τὴν ὁμολογίαν ἀμαρτωφείας πατροκα-
ρδότης.

19 Ἀλλὰ πρὶν αἰετι ὅς ἀμὲν ἀμώμεθ ἐ ἀσπίλα
Χριστῷ.

20 Πραευνουμένην μὲν πρὸ καταβολῆς κόσμου, φθαρ-
 τήθεντος ὃ ἐπ' ἐχάτων τῶ χρότον δι' ἡμῶν.

21 Τὰς δὲ αὐτὸ πιστεύοντας εἰς Θεὸν ἡ ἐκείνου καὶ ὅτι νεκρῶν, ἡ δὲ οὕτως αὐτὸς δὲ οὕτως, ὡς ἡ πείσῃ ἡ μὲν ἡ ἐλπίθῃ ἡ εἰς Θεόν.

22 Τὰς ψυχὰς ὑμῶν ἡγνικότες ἐν τῇ ὑπακοῇ τῇ
ἀλλοθιᾷ διὰ Πυθιόμαχος, εἰς φιλαδελφίαν ἀντιστρέ-
φον, ἐκ καθαρῆς καρδίας ἀλλήλων ἀγαπήσατε ὡς
τινὸς.

23 Ἀναγινωσκόμενοι ἡμεῖς ἐν σπουδαῖς φθαρτῆς, ἀλλὰ
ἀφθάρτου, διὰ λόγον ζωῆς θεοῦ ὁ μένοντος εἰς τὴν
αἰῶνα.

24 Διότι πᾶσα σὰρξ ὡς χόρτος, ὁ πᾶσα θέξα ἀν-
θρώπου ὡς ἀμβλὺς χόρτος· ὑψαυθίη ὁ χόρτος, καὶ τὸ
ἀμβλὺς αὐτοῦ ἐκείνηται.

15 Τὸ δὲ ῥῆμα. Καεὶν μένει εἰς τὸ αἰῶνα. τῷτο δὲ
ἐστὶ τὸ ῥῆμα τὸ εὐαγγελισθῆναι αἰς ὑμᾶς.

К.Ф. В. Г.

1 **A** Ποθέμενοι ἐν παντί καὶ ἐν πάντοτε
λογ., ἐν ἀποκρίσει καὶ φθόνῳ καὶ πάσῃ κα-
τακαλίᾳ,

2 Ως ἀπεγίνετο βρέφη, τὸ λογικὸν ἄδελον γὰρ ὑποθέσατε, ἵνα ἐν αὐτῷ αἰξηθῇτε.

4. Πρὸς οὐκ προσπερχόμενοι, λίθον ζώντα, κατὰ δι-
 5. ομήναι μὲν ἀπὸ τοῦ ἐκείνου, πρὸς δὲ τοῦ ἐκείνου.

2. 5. 1977/1907
 5. 1977

5 Καὶ οὗτοι ὡς λίθοι ζῶντες οἰκοδομησθε ,
πιδωκτικὸς , ἱερὰ τέλμα ἄγιον , ἀμείνων καὶ π
πικὰς θυσίας , ἀπροσδέκτους τῷ Θεῷ 219
Χρυσῷ .

6 Διὸ ἐκτρέφετε ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν τὴν
Σιὸν λίθον ἀκρογωνιαίον , ὁλεκτῇ , ἐπίστατον
πιστῶν ἐπ' οὐτῷ , ὃ μὴ κατακινῆσθῃ .

7 Ὑμεῖς ἔν ᾧ πρὸς τοὺς πιστούς ἔχετε
λίθον ὃν ἀπεδοκίμασαν οἱ οἰκοδομηῖται , ὅτι
θεοὶ ἐκ νεφελῶν γυνίαι , ἐκ λίθου προσκόμματος
πέτρα σκληρά .

8 Οἱ προσκοπόμενοι τῷ λόγῳ , ἀκτινίζοντες , ἐν
ἐπίγνωσιν .

9 Ὑμεῖς ὅ , γένος ὁλεκτῇ , βασιλεὺς ἱερὰ
ἐξουσία ἄγιον , λαὸς εἰς πνευματικὴν ὥστε τὰς
ὁδοποιήσεις ὅς ἐκ σκοτεινῶν ὑμῶν καλὴ δόξα
δοξαίσεσθαι αὐτῷ Θεῷ .

10 Οἱ τότε ὃ λαός , τῶν ὅ λαὸς Θεῷ ὃ ἐκ
μῶν , τῶν ὅ ἐκτινίζοντες .

11 Ἀγαπήτοι , ἐκδοκίμοι ὡς παροίκετε ἐκ πα
μῶν , ἐπεὶ καὶ τῷ σαρκικῷ ὑποδυνασθῆτε , αἵματα
πῶνται καὶ τῇ ψυχῇ .

12 Τῷ ἀντιπροσώπῳ ὑμῶν ἐκ τοῖς ἐξουσίαις ἐκ
καλῶν ὥστε ἐκ κατακλιθεὶς ὑμῶν ὡς κακοί
ἐκ τῷ καλῶν ἔργων ἐκδοκίμοι , δεξάμενοι
Θεῷ ἐκ ἡμέρας ὑποσχετῆς .

13 Ὑποτάξατε ἔν πάσῃ ἀντιπροσώπῳ κτίσει 220
Κυρίου ὡς βασιλῇ , ὡς ὑπερέχοντι .

14 Εἴτε ἡγεμόνι , ὡς δὲ αὐτῷ πεμπομένοις ἐκ
δικῆς μὴ κακοποιῶν , ἐπαινον ὃ ἀγαθοποιῶν .

15 Ὅτι ὡς ἐστὶ τὸ θελήμα τοῦ Θεοῦ , ἀγαθο
ποιῶν φιλῶν τῷ ἀφρόνι ἀντιπροσώπῳ ἀγνοοῦν .

16 Ὅς ἐκδοκίμοι , ἐκ μὴ ὡς ἐκκαλυμμένα ἐκ
κακίας τῇ ἐκδοκίμῳ , ἀλλ' ὡς ὁλοὶ Θεῷ .

17 Πάντας πνεύματα , τῇ ἀδελφότητι ἀγαπᾶτε
Θεῷ φιλῶντες . τῇ βασιλείᾳ πνεύματι .

18 Οἱ οἰκίται , ὑποτασσάμενοι ἐκ πνεύματι φόβῳ
ἐκδοκίμοι , ἐκ μόνον τοῖς ἀγαθοῖς ἐκ ἐκδοκίμοι
λαὸς ἐκ τοῖς σκωλοῖς .

19 Τῷ τῷ χάριτι , ἐκ 221 συνείδησιν Θεῷ
μὴ πνεύματι πάχων ἀδίκως .

20 Πᾶσι τῷ κλέος , ἐκ ἀμφοτέρων ἐκ κολα
μῶν ὑποδοκίμοι ; ἀλλ' ἐκ ἀγαθοποιῶν ἐκ π
τῇ ὑποδοκίμῳ , τῷ τῷ χάριτι ἐκδοκίμοι Θεῷ .

21 Εἰς τῷ τῷ ἐκδοκίμοι , ὅτι ἐκ Χρυσῷ ἐκ
ἐκδοκίμοι , ὑμῶν ὑποδοκίμων ὑποδοκίμοι , ἐκ
ἐκδοκίμοι τῇ ἐκδοκίμῳ αὐτῷ .

22 Ὅς ἀμφοτέρων ἐκ ἐκδοκίμοι , ἐκδοκίμοι δὲ
τῇ ἐκδοκίμῳ αὐτῷ .

23 Ὅς ἐκδοκίμοι ἐκ ἀντιπροσώπῳ , πάχων ἐκ
πνεύματι . παρὶς ἐκ τῷ κλέος δικαίως .

24 Οὗ τας ἀμαρτίας ἡμῶν ὡς ἄνθρωποι ἐν τῇ
 σὺν ἡμῶν αὐτῷ ὅτι τὸ εὖλογον· ἵνα τὰς ἀμαρτίας ἀπο-
 γράψῃ, τῇ δικαιοσύνῃ ζήσωμεν· ὃ τῷ μῶντι σου
 ἰαθεῖτε.

25 Ἡ τὴν 25 οὖς πρόβατα πλάσας· ἀλλ' ἐπεστρά-
 φαι τὸν ὑπὲρ τῶν ποιμένων καὶ ἐπίσκοπον τῷ ψυχῶν
 ὑμῶν.

Κεφ. γ'. 3.

1 Οὐ μοῖας αἱ γυναῖκες, ὑποτασσάμεναι τοῖς ἰ-
 δίοις ἀνδράσι, ὡς ὁ κύριος ἀπειθεῖ τῇ πα-
 τέρει, καὶ τῇ τῷ γυναικῷ ἀναστροφῇ ὡς ὁ κύριος
 κερατοῦται.

2 Ἐποποσύμεναι τῇ ἐν φόβῳ ἐγγνώμῃ ἀναστροφῇ
 ὑμῶν.

3 Ὡς ἔσω ἢ καὶ ὅς ἐξωθεῖται ἐμπλοκῇ τριχῶν, ὅς τε-
 ρεῖται χρυσίου, ἢ ὑδύτιος ἱματίων κόσμος.

4 Ἀλλ' ὅς κρυπτός τῇ καρδίας ἀνθρώπου, ἐν τῷ ἁφ-
 θέρῳ τῷ πρὸς ὁ ἐστὶν ἐν τῇ πύμῃ, ὅς ἐστὶν ἐν τῇ
 πύμῃ τῷ Θεῷ πολυτελές.

5 Οὕτω γὰρ ποτε καὶ αἱ ἁγία γυναῖκες αἱ ἐλπίζουσαι
 ὑπὲρ τῷ Θεῷ, ἐκείνων ἑαυτὰς, ὑποτασσάμεναι τοῖς
 ἰδίοις ἀνδράσι.

6 Ὡς Σαρρ'α ὑπήκουσε τῷ Ἀβραάμ, κύριον αὐτῇ
 καλῶσα, ὅς ἐγέννησθε τέκνα, ἀγαθοποιεῖσαι, καὶ
 μὴ φοβήμεναι μηδεμίαν πτόχον.

7 Οἱ ἄνδρες ἡμοῖς, συνοικῶντες καὶ γινώσκοντες, ὡς
 ἀφ' ὧν ἐκείνων καὶ τῇ γυναικῇ ἀποτέμεναι πρὸς
 ὡς ὁ συζητητέος καὶ ἡμεῖς ζῶντες, ἐν τῷ μὴ ἐκκο-
 πτεῖται τὰς προσδύχας ὑμῶν.

8 Τὸ 3 τέλος, πᾶντες ὁμίφρονες, συμπαθεῖς, φι-
 λαδίφθοι, ὁσπταγχοί, φιλόφρονες.

9 Μὴ ἀποδιδόντες κακὸν ἀντὶ κακοῦ, ἢ λοιδορίαν
 ἀντὶ λοιδορίας· πᾶν ἡμῖν 3, ὁλογῶντες, εἰδόν-
 τες ὅτι εἰς τὸ ἐκλήθητε, ἵνα ὁλογῶνται κληρονομή-
 σαι.

10 Οὗ 25 θέλων ζῶν ἀγαπᾶν, καὶ ἰδεῖν ἡμέρας ἀ-
 γαθῆς, ποιῶνται τῇ γλώσσῃ αὐτῶν ἀπὸ κακοῦ, ὅς καὶ
 αὐτῇ τῇ μὴ καλῶσαι δόλον.

11 Ἐκκλινάτω ἀπὸ κακοῦ, ὅς ποιῶνται ἀγαθόν·
 ζήτωσαν ἐν φόβῳ, ὅς διώξονται αὐτῶν.

12 Ὅτι οἱ ὀφθαλμοὶ Κυρίου ὅτι δικαίως, ὅς ὅτι
 αὐτῇ εἰς θέσιν αὐτῶν· πρὸς ὧν 3 Κυρίως ὅτι ποιῶ-
 νται κακά.

13 Καὶ πᾶς ὁ κακώσων ὑμῶς, ἰδὼν τῇ ἀγαθῇ μεμ-
 νῆται γίνεσθαι.

14 Ἀλλ' εἰ ὁ πάρεστε καὶ δικαιοσύνη, μακάριος
 τῇ 3 φόβον αὐτῶν μὴ φοβηθῆτε, μηδὲ ταρσάθητε.

15 Κύριον ὃ ἔστι Θεὸν ἀγαπίετε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν. ἵταίμεν δὲ αἱ πρὸς ἀπολογίαν πάντι τῷ συντάτῃ ὑμῶν λόγῳ παρὰ τὸ ἐν ὑμῖν ἐλπίδος, μὴ πρᾶξι-
τατος εἶναι φόβου.

16 Συνειδήσειν ἔχοντες ἀγαθῶ· ἵνα ὅς ὃ καταλα-
λῶσιν ὑμῶν εἰς κακοποιῶν, καταχρησθῶσιν εἰς ἐ-
παρμυζόντες ὑμῶν τῷ ἀγαθῷ ἐν Χριστῷ ἀνταρ-
φῶν.

17 Κρεῖττον γὰρ ἀγαθοποιῶντας, εἰ θέλησιν τὸ θέλη-
μα τοῦ Θεοῦ, παύσων, ἢ κακοποιῶντας.

18 Ὅτι ὁ Χριστὸς ἑαυτὸν παρὰ ἁμαρτιῶν ἔπαθεν, δι-
καίως ὑπὲρ ἀδίκων· ἵνα ἡμᾶς προσαγάγῃ τῷ Θεῷ,
δικαιωθέντες μὲν σαρκὶ, ζωοποιηθεὶς ὁ τῷ Πά-
ντι.

19 Ἐν ᾧ ὁ πῶς ἐν φυλακῇ πνέοντι πορεύεσθαι ἐν-
βοῶν.

20 Ἀπειθήσασι ποτε, ὅτε ἅπασι ἔμελλεν ἡ τοῦ
Θεοῦ μακροθυμία ἐν ἡμέραις Νώε, κατασκαφῆς οἰκίας
πίπτον, εἰς ᾧ ὀλίγοι (τρεῖς οὖν ἄνθρωποι) ψυχῶν δι-
σέσθησαν διὰ ὕδατος.

21 Ὅς ἡμᾶς ἀντίτυπον νῦν σώζει βάπτισμα, (ὃ
σαρκὸς ἀπόθεσις ῥύπον, ἀλλὰ συνειδήσεως ἀγαθῆς
ἐπιμύημα εἰς Θεόν) δι' ἀνταρτίας Ἰησοῦ Χριστοῦ,

22 Ὅς ἐσιν ἐν δεξιᾷ τοῦ Θεοῦ, πορεύεσθαι εἰς ἡμέ-
ραν, ὑποταγέντων ὡς τῷ ἀγγέλῳ καὶ ἑξουσίᾳ καὶ
ἐνταμίῳν.

Κεφ. δ'. 4

1 Χριστὸν ἡμῶν παθόντα ὑπὲρ ἡμῶν σαρκὶ, καὶ ὑ-
μῶν τοῦ αὐτοῦ ἐννοίαν ὀφίσεσθε, ὅτι ὁ πα-
θὼν ἐν σαρκὶ, πέταται ἁμαρτίας,

2 Εἰς τὸ μηκέτι ἀνθρώπων ὑποθυμίαις, ἀλλὰ δι-
κῆματι Θεοῦ τὸν ἐπίλοιπον ἐν σαρκὶ βιώσαι χρί-
νον.

3 Ἀρμετός γὰρ ἡμῶν ὁ παρελθὼς χρόνος τοῦ βί-
ναι τὸ θέλημα τῷ ἑαυτοῦ κατεργάσασθαι, περιουσίαν
ἐν ἀτελείαις, ὑποθυμίαις, οἰνοφλυγίαις, καμοῖς,
πότοις, καὶ ἀδελμίτοις εἰσβολαῖς.

4 Ἐν ᾧ ἐξοιζόνται, μὴ συντριχόντων ὑμῶν εἰς τὸ
ὡς τὸ ἀσώτως ἀμάχουσιν, βλασφημῶντες.

5 Οἱ ἀπεδώσαντι λόγον τῷ ἑαυτοῦ ἔχοντι κῆνον
ζῶντας καὶ νεκροῦς.

6 Εἰς τῆν γὰρ ὁ νεκρὸς ἀνταρτίσθη, ἵνα κηρύ-
σῃ μὲν κατὰ ἀνθρώπου σαρκὶ, ζῶσι δὲ κατὰ Θεοῦ τῷ
πᾶντι.

7 Πάντων δὲ τὸ τέλος ἡ γῆ. σφραγίσθητε εἰς
τὴν ἡμέραν εἰς τὰς προσδοχάς.

2 Πρὸ

8 Πρὸ πάντων δὲ τῶν ἐξ αὐτῆς ἀγάπῃ σπε-
ρῇ ἔχοντες· ἐπὶ δὲ ἀγάπῃ καλύψει πληθὺς ἀγαπῶ-
ντων.

ο φιλόξενος εἶς ἀλλήλους, ἀνὰ γογγυσμῶν.

10 Ἐκαστὸς καθὼς ἔλαβε χάρισμα, αἷς ἑαυτοῦ αὐ-
τὸ ἀφεικόμενος, ὡς καλὸὶ οἰκονόμοι ποικίλης χάρι-
τος Θεοῦ.

11 Εἰς πᾶσι λαοῖς, ὡς λόγια Θεοῦ· καὶ πᾶσι διακονοῦντες
ὡς ἡμεῖς ἰσχυροὶ καὶ χορηγοὶ τοῦ Θεοῦ· ἵνα ἐν πάντι δοξάζηται
ὁ Θεὸς διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ᾧ ἐσὶν ἡ δόξα ἐν τῷ
κράτει εἰς τὰς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.

12 Αὐτοὶ δὲ, μὴ ἐκείνους τῇ ἐν ὁμίᾳ παρουσίᾳ
πρὸς περισσὸν ὅμιον ἠρομένη, ὡς ἐν ὁμίᾳ συμ-
βαίνοντος.

13 Ἀλλὰ καθάτι κοινωνεῖτε τοῖς ᾧ Χριστῷ παθήμασι, χαίρετε, ἵνα ὅ ἐν τῇ ἀποκαλύψει τῆς δόξης αὐτοῦ γάρητε ἀγαλλιώμενοι.

14 Εἰ οὐκ ἰδοῖς θεὸν ἐν ὄνματι Χριστῷ, μακάριος ὅτι τὸ πρῶτον δόξης ἐστὶ τὸ πρῶτον Θεὸν Πνεῦμα ἐφ' ἡμᾶς ἀποκαίεται· καὶ μὲν αὐτὸς βλαστῆται, καὶ δὲ ὑμεῖς δόξαζετε.

15 Μὴ γάρ τις ὑμῶν παχέτω ὡς φονεὺς, ἢ κλέ-
πτης, ἢ κακοποιός, ἢ ὡς ἀλλοτριοεπίτιμος.

16 Εἰ δὲ ὁ Χριστὸς, μὴ ἀπεχέσθω, δοξάζεται
 ὁ Θεὸς ἐν τῷ μένῃ τούτῳ.

17 Ὅτι ὁ καιρὸς ἡ ἀρχὴ τοῦ κρίματος ἀπὸ τοῦ οἴκου
τοῦ Θεοῦ. αἱ δὲ πρώτοι ἀπὸ ἡμῶν, τὸ τέλος τῶν ἀ-
πιστευόντων τῇ τῇ Θεῷ εὐαγγελίῳ·

18 Καὶ ἐὶς ὁ δίκαιος μόλις σώζεται, ὁ ἀσεβὴς καὶ ἁμαρτωλὸς τῇ φθάρῃ.

19 Ὡς τε καὶ οἱ πάχοντες κατὰ τὸ θέλημα τοῦ Θεοῦ, οἱ
πρωκτις καὶ πνευματικῶς τῶν ψυχῶν αὐτῶν ἐν
ἀγαθοποιῇ.

К.Ф. 5. 30

Πρεσβυτέρους τῆς ἐν ὑμῖν καθολικῆς ὁ συνα-
πρεσβύτερος καὶ μάρτυς τῇ τῇ Χρυσῇ πατρι-
στάτει, ὁ ἐκ τῆς μελλήσεως ἀποκαλυπτῶς δόξης κοι-
ταγός.

2 Ποιμάσατε τὸ ἐν ὑμῖν ποιμνίον τῇ Θεῷ, ὑποτασσάμενοι μὴ ἀμαρτυροῦντες, ἀλλ' ἡγουμένους, μηδὲ ἀίχμαρκεῖν, ἀλλὰ προθύμως.

3 Μηδ' ὡς κατακυρβεύοντες τῷ πληρώ, ἀλλὰ τῶ-
ποι γινόμενοι τῷ ποιμαίνῃ.

4 Καὶ φανερώσεντος τοῦ ἀρχιεπίμινος, πορίσασθε τὰ
ἀμαρτάνων τὸ δόξας εἶφαιον.

5 Ομοίως γεώτεροι ὑποτάγῃτε πρεσβυτέροις * ὅτι ὁ Θεὸς ὑμᾶς ἐκτρέφει ἐν λόγῳ, ἵνα ὑμᾶς ὑποτάξῃ ἐν κυρίῳ, ὅτι ὁ Θεὸς ὑμᾶς ἐκτρέφει ἐν λόγῳ, ἵνα ὑμᾶς ὑποτάξῃ ἐν κυρίῳ, ὅτι ὁ Θεὸς ὑμᾶς ἐκτρέφει ἐν λόγῳ, ἵνα ὑμᾶς ὑποτάξῃ ἐν κυρίῳ.

6 Ταπεινώθητε ἅν ὑπὸ τοῦ κυρίου χεῖρα τοῦ Θεοῦ, ἵνα ὑμᾶς ὑψώσῃ ἐν καιρῷ.

7 Πᾶσαν τὴν μεριμνάν ὑμῶν ἐπιβέβηκεν ὁ κύριος, ὅτι ὁ κύριος μέλει περὶ ὑμῶν.

8 Νήψατε, γρηγορήσατε, ὅτι ὁ ἀντίδικος ὑμῶν διάβολος, ὡς λέων ὠρυόμενος περιπατῇ, ζητῶν τίνα καταπίῃ.

9 Ὡς ἀντίστητε τοῖς ποσὶν τῇ πίστει, εἰδότες τὰ αὐτὰ τῶν παθῶν τῶν ἐν κόσμῳ ὑμῶν ἀδελφότητι ἐπιτελεῖσθαι.

10 Ὁ ὅτι ὁ Θεὸς πάσης χάριτος, ὁ καλέσας ὑμᾶς εἰς τὸν αἰῶνιον αὐτῆς δόξαν ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ, ὁλίγον παθόντας, σὺν τούτοις καταρτίσαι ὑμᾶς, σφρίξαι, σθενώσαι, διμελιώσαι.

11 Αὐτῷ ἡ δόξα, ἡ ἐξουσία εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. ἀμήν.

12 Διὰ Σιλβανῆ ὑμῖν ἡ πίστις ἀδελφῶν (ὡς λογιζομαι) ὁ ὅτι ἐλίγων ἔγραψα, παρακαλῶν ἡ ἐπιμαρτυρῶν ταύτῃ ἡ ἀληθὴς χάρις τοῦ Θεοῦ εἰς ὑμᾶς ἐσκήκατε.

13 Ἀσπάζεταιται ὑμᾶς ἡ ἐν Βαβυλῶνι συνεκλεκτή, ἡ Μάρκος ὁ υἱὸς μου.

14 Ἀσπάζεταισθε ἀλλήλους ἐν φιλήματι ἀγάπης. Εἰρήμην ὑμῖν πᾶσι τοῖς ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ. ἀμήν.



Π Ε Τ Ρ Ο Υ

ᾤ Α' ΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΚΑΘΟΛΙΚΗ, β.

Ε Π Ι Σ Τ Ο Λ Η.

Κεφ. α'. 1.

1 **Σ** Ἰμῶν Πέτρος, δῦλος & Α' πόστος Ἰησοῦ Χρ-
στοῦ, τοῖς ἰσότημεν ἡμῖν καχῶσι πῖσιν ἐν
δικαιοσύνῃ τῇ Θεῷ ἡμῶν & σωτῆρος Ἰησοῦ Χρ-
στοῦ.

2 Χάρις ὑμῖν & εἰρήνῃ πληθυνθεῖν ἐν ὑπαγωγῇ τῇ
Θεῷ, & Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν.

3 Ὡς πάντα ἡμῖν τῇ Θεῷ δυνάμει αὐτοῦ τὰ πρὸς
ζωὴν & ἀσέβειαν δειδωρημένης, διὰ τῇ ὑπαγωγῇ τῇ
καλέσας ὑμᾶς διὰ δόξης & ἀρετῆς.

4 Δι' οὗ τα μέγιστα ἡμῖν ἡ τίμια ἐπαγγέματα
δεδορηται, ἵνα διὰ τῶν γενεῶν Θεῷ κοιτωνοί
φύσας, ἀποφυγόντες τὸν κόσμον ἐν ὑποδομίᾳ φθορᾶς.

5 Καὶ οὗτο τῷτο ὅτι ἀποδομῶν τῶν παρ' ἐνεργημάτων
ὑπαχοῦντες ἐν τῇ πίστι ὑμῶν τῇ ἀρετῇ, ἐν δὲ τῇ
ἀρετῇ τῇ γνώσει,

6 Ἐν ὅτ τῇ γνώσει τῇ εὐχαρίᾳ, ἐν ὅτ τῇ εὐχα-
ρίᾳ τῇ ἀπομνήνῃ, ἐν δὲ τῇ ἀπομνήνῃ τῇ ἀσέβειαν,

7 Ἐν ὅτ τῇ ἀσέβειᾳ τῇ φιλαδελφίᾳ, ἐν ὅτ τῇ φι-
λαδελφίᾳ τῇ ἀγάπῃ.

8 Ταῦτα γὰρ ὑμῖν ἀπάρχοντα, καὶ πλεονάζοντα, ἡ
ἀργύς ἐδὲ ἀκαρπὴς καθίστησιν εἰς τῇ Κυρίῳ ὑμῶν
Ἰησοῦ Χρ-στοῦ ἐπίγνωσιν.

9 Ὡς γὰρ μὴ παρέσι ταῦτα, τυφλὸς ἐστὶ μοπαῶν,
λῆθην λαβὼν τῇ καθαρῇ τῇ πάλαι αὐτῇ ἀμαρτιῶν.

10 Διὸ μάλλον, ἀδελφοί, ἀποδομᾶτε βεβαιοῦ
τῇ κλήσει & ἐκλογῇ ποιήσας ταῦτα γὰρ ποιῶντες
ἢ μὴ πταίσῃτε τότε.

11 Οὗτοι γὰρ πλῆσις ὑπαχοῦντες ὑμῖν ἢ εἰσο-
δος εἰς τῇ αἰώνιον βασιλείᾳ τῇ Κυρίῳ ἡμῶν & σωτῆ-
ρος Ἰησοῦ Χρ-στοῦ.

12 Διὸ ἡ ἀμελήσας ὑμᾶς αἰὲ ἀπομνήνῃσιν πρὸς
τῶν, καὶ ἐκδοτας, & ἐκτελεμένους ἐν τῇ παρ-
οῇ ἀληθείᾳ.

13 Δίκαιον δὲ ἔγκλημα, ἐφ' ὅσον αὐτὸς ἐν τούτῳ πεινώμενος, διευκρίνει ἡμῶς ἐν κατανοήσει.

14 Εἰδὼς ὅτι ταχὺ ἐστὶν ἡ ἀπόδοσις τῶν σκηνώματός μου, καὶ οὗτος ὁ Κύριος ἡμεῶν Ἰησοῦς Χριστὸς ἐδήλωσέν μοι.

15 Σπουδαίω ὃ ἐκαστοτεῖ ἔχειν ἡμῶς μὴ τὴν ἐμὴν ἔξοδον, ἀλλὰ τῶν μητέρων ποιεῖν.

16 Οὐ γὰρ σεσοφισμένοις μύθοις ἠσαυκωθήσομαι ἐγνωρίσασθαι ὑμῖν, ἀλλὰ καὶ ἡμεῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ δύναμιν ἐπαρδείξω, ἀλλ' ἐπὶ ὧν ἡμεῖς ἡμεῖς ἐκείνην μεγαλειότητα.

17 Λαβὼν γὰρ ὁ Θεὸς Πατὴρ πᾶν ἐξ ὁμοθυμῆς ἐν ἐκδήσει αὐτῷ ποιῶντος, ἀπὸ τῆς μεγαλειότητος τοῦ Θεοῦ. Οὗτος ἐστὶν ὁ Υἱὸς μου ὁ ἀγαπητός, ἐν ᾧ ἡ γὰρ ἡμεῖς ἐκείνην.

18 Καὶ ταύτην τὴν φωνὴν ἡμῖς ἀκούσαμεν ὅτι ἡμεῖς ἐκδήσει, σὺν αὐτῷ ὅντες ἐν τῇ ὁρῇ τῇ αἰνῇ.

19 Καὶ ἔχομεν βεβαιώτερον τὴν προφητικὴν λέγον, ὅτι καλὸς ποιῶντες προσέχοντες, ὡς λύχῳ φαίνονται ἐν σκότεινῳ τούτῳ, ἕως ἡ ἡμέρας ἀφύπναι, καὶ φωστῆρες ἀνταίχῃ ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν.

20 Τὴν πρῶτον γινώσκοντες, ὅτι πᾶσα προφητεία βεβαιῆς, ἰδίως ὑπακούει ἡ γινέται.

21 Οὐ γὰρ θελήσαμεν ἀνδρῶν λόγον, ἀλλὰ καὶ πᾶσι τῶν, ἀλλ' ἀπὸ Πνεύματος Ἀγίου φημι, οἱ ἅγιοι Θεοῦ ἀνδρῶν.

Κιφ. β. 2.

1 Εἴ γινώσκω ὃ ἐκαστοτεῖ ἐν τῇ λαῷ, ὅτι ἐν ὑμῖν ἔστιται ψευδοδιδάσκαλοι, οἱ ποιεῖν καμνίσαντες αἰρέσεις ἀπολείας, καὶ τὴν ἀγοράσαντων αὐτῶν διαπορῶν ἀνθρώπων, ἐπάγοντες ἐαυτοῖς ταχὺν ἀπώλειαν.

2 Καὶ πολλοὶ ἠσαυκωθήσονται αὐτῶν ταῖς ἀπολείαις, εἰ καὶ ἡ ὁδὸς τῆς ἀληθείας βλασφημηθήσεται.

3 Καὶ ἐν πλεονεξίᾳ πλαστοῖς λόγοις ἡμῶς ἐμπαίσονται, οἷς τὸ κρῖν ἐκπαλαὶ ἐκ ἀργῆς, ἐν ᾧ ἀπώλειαν αὐτῶν ἡμεῖς ἐκείνην.

4 Εἰ γὰρ ὁ Θεὸς ἀγγέλων ἀμαρτησάντων ἐκ ἐφύσεως, ἀλλὰ σερῶν ζώων ταρταρώσας, παρέδωκεν αὐτοῖς κρίσιν τιτηρημένους.

5 Καὶ ἀρχαῖον κόσμον ἐκ ἐφύσεως, ἀλλ' ὅμως Νῦν δικαιοσύνης κρηκὲς ἐφύλαξε, κατακλυσμὸν κόσμου ὑποβῶν ἐπάξας.

6 Καὶ πόλεις Σοδόμων ἐν Γομόρ' ἵς τιφρώσας καταστροφῇ κατέκρινεν, ἀποδείκνυσι μέλλόντων ἀσεβῶν τιδικῶς.

7 Καὶ δίκαιον Δὲ καταπορεύμενον ἀπὸ τῆς τῆς ἀδίκου ἐν ἀσέλγει, ἀμαρτησάντων ἐκείνην.

(Βλ. β.

8 (Βλέμματι γὰρ ἡ ἀκοή ὁ δίκαιος, ἐγκατακείναι ἐν νηπί, ἡμερῶν δὲ ἡμέρας ψυχῇ δίκαιῳ ἀνθρώποις ἐργαίει ἐκαστὸν αὐτῶν.

9 Οὗτοι δὲ κύριος ὡς τεβὰν ἐκ πειρασμῶν ῥύσεται, ἀδίκους δὲ ὡς ἡμερῶν κρείσσει κολλυζομένους τῆσαν.

10 Μαλίστα δὲ τῶν ὁπίσω σαρκὸς ἐν ὑπιδρυμῶν μειωσμένων παρανομήσας, ἐκ κυριότητος καταφρονήσας, πολυμήται, αὐθαδῆς, δόξας ἢ ῥέμους βλασφημῶντες.

11 Ὅτι ἀγγελοὶ ἰσχυροὶ καὶ δυνάμεις μέγιστοι ὄντες, ἢ φέρονται κατ' αὐτῶν ὡς κύριον βλασφημῶν κρείσσει.

12 Οὗτοι δὲ, ὡς ἀλογα ἰδοὺ φυσικὰ, γενησόμενοι εἰς ἀλυσίαν καὶ φθορῶν, ἐν οἷς ἄγιοι βλασφημῶντες, ἐν τῇ φθορᾷ αὐτῶν καταφθαρήσονται.

13 Κομιψόμενοι μισθὸν ἀδικίας, ἡδονῶν ἡγμέραι, ἢ ἐν ἡμέρῃ τρυφῶν, σπῆλοι καὶ μώμοι, ἐν τρυφῶντες ἐν ταῖς ἀπάταις αὐτῶν, συνδιωχόμενοι ὑμῖν.

14 Ὁφθαλμοὶ ἐκχόντες μετὰς μοιχαλίδος, ἐκ ἀκατακρίτων ἀμωρτίας, δελεάζοντες ψυχὰς ἀσθρέκτους, καρδίᾳ γεγυμνασμένῳ πλεονεξίας ἔχοντες, κατὰ τὰς τέκας.

15 Καταλιπόντες τὸν δόξαν ὁδόν, ἐπιδωκῶνται, ἡκαλοκρήσαστες τῇ ὁδῷ τῇ βαλαῶν τῇ βροσῶν, εἰς μισθὸν ἀδικίας ἡγάγησεν.

16 Ἐλέγξει δὲ ἔχει ἰδίᾳ παρομιᾶς, ὡς ἡμερῶν ἡμερῶν, ἐν ἀποφύγοντας τῶν ἐν πλάτῃ ἀπεριφομένους.

17 Οὗτοι εἰσι πηγαὶ ἄνυδροι, νεφέλαι ὡς τοὺς καὶ λαλῶντες ἐλαυνόμενοι, οἷς ὁ ἥλιος καὶ σέλιος εἰς αἰῶνα τεθῆται.

18 Ὑπερόχη γὰρ μεταστροφῆς φθγγόμενοι δελεάζουσιν ἐν ὑπιδρυμῶν σαρκὸς, ἐν ἀπεργίας, τῶν ἐν ταῖς ἀποφύγοντας τῶν ἐν πλάτῃ ἀπεριφομένους.

19 Ἐκδοθέντες αὐτοῖς ἐπαγγελλόμενοι, αὐτοὶ δὲ ἀποφύγοντες τὴν φθορᾶν, ἢ γὰρ τις ἡπταται, τότε ἐκιδέχονται.

20 Εἰ γὰρ ἀποφυγόντες τὰ μίσματα τῇ κόσμῳ ἐν ἡμερῶν τῇ κυρίῳ ἐκ τῶν ἡμερῶν ἡμερῶν, τῶν τοῖς ἡμερῶν ἐμπλακύντες ἡπταται, γέγονεν αὐτοῖς τὰ ἡμερῶν χεῖρον τῷ πρώτῳ.

21 Κόπτων γὰρ ὡς αὐτοῖς καὶ ἐπερωκέναι τὴν ὁδόν τῇ δικαιοσύνης, ἢ ὑπιδρυμῶν ὑπερέχει ἐκ τῇ παρομιᾶς αὐτοῖς ἡγίας ἐν τῇ.

22 Συμβέβηκε δὲ αὐτοῖς τὸ τὴν ἀληθείαν παρομιᾶς, ἢ κύριον ὑπερέχει ὡς τὸ ἴδιον ἡμερῶν, ἢ ὡς ἡμερῶν, εἰς κύριον βορβόρῳ.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Τ**αύτῳ ἤδη ἀγαπητοί, δεύτερον ὑμῶν χά-
 φαι επιστολῶν, ἐν αἷς διεγέρω ὑμῶν ἐν ὑπο-
 μένῃ τῇ εἰσπρατίνῃ διακρίσει.

2 Μνησθῆναι τῇ σπουδαζομένῃ ρημάτων ὑπὸ τῆς ἀ-
 γίας προφητῆς, ἡ τῇ ἀποστόλων ἡμεῶν ἐντολῇ,
 ἡ Κυρίου ἡ σωτήρας.

3 Ταῦτα πρῶτον γινώσκοντες, ὅτι ἐλεύσονται ἐν
 ἡμέραις τῇ ἡμερῶν ἐμπαικταί, καὶ τὰς ἰδίας αὐτῶν
 ἐπιθυμίας πορεύοντες.

4 Καὶ λέγοντες. Πῶς ἐσιν ἡ ἐπαγγελία ἡ ποι-
 σίας αὐτῶν; ἢ οἱ ἡμεῖς οἱ πατέρες ἐκποιμήθημεν, ταῖ-
 τα ἡμεῖς διακρίνομεν ἀπὸ ἀρχῆς κτίσεως.

5 Λαμβάνει γὰρ αὐτῶν τὸ θεόγονον, ὅτι ἡμεῖς
 ἡμεῖς ἐμπαικταί, ἡ γὰρ ἡμεῖς ὕδατος καὶ δι' ὕδατος συν-
 τῶσα, πῶς ἡμεῖς Οἱ λόγῳ.

6 Δι' αὐτὸν οὖν τότε κόσμος ὕδατι κατακλυσθεὶς ἀπο-
 λυτο.

7 Οἱ δὲ νῦν ἡμεῖς καὶ ἡ γὰρ πῶς αὐτῶν λόγῳ τιθε-
 σαι εἰσπρατίνῃ, πῶς τῇ ἡμερῶν κρείσσει
 ἡ ἀποκρίσις τῇ ἀσεβοῦν ἀνδρείων.

8 Ἐν τῇ τῇ μὴ λαμβάνεται ὑμῶν, ἀγαπητοί,
 ἡ μία ἡμέρα παρὰ Κυρίου ὡς χίλια ἔτη, ἡ χίλια
 ἔτη ὡς ἡμέρα μία.

9 Οὐ βραδύνει ὁ Κύριος τῇ ἐπαγγελίας, (ὡς τίτις
 βραδυτῆτα ἡγεῖται) ἀλλὰ μακροθυμῶν ἐν ὑμῶν, μὴ
 βλαπόμενος πῶς ἀπολείπει, ἀλλὰ πάντα εἰς μετα-
 νοίαν χαίρει.

10 Ἡμεῖς δὲ ἡ ἡμέρα Κυρίου ὡς κλέψας ἐν νυκτί,
 ἐν ἡμεῖς οἱ, ἡμεῖς οἱ φοιτῶντες παρελθόντες, σοιχείαι δὲ
 καυσθήσονται λυθήσονται, καὶ γὰρ ἡμεῖς ἐν αὐτῇ ἡμέρᾳ
 κατακαήσεται.

11 Ταῦτα ἡμεῖς πάντων λυμένων, ποταπὸς δὲ
 ὑπάρχειν ὑμῶν ἐν ἀγίαις ἀντιρροίαις καὶ ὡς
 βίαις.

12 Προσδοκῶντες ἡ ἀποδοχῆς τῇ παροῦσιν ἡ
 Οἱ ἡμεῖς, δι' ἡμεῖς οἱ ἡμεῖς οἱ πυρῆται λυθήσονται, ἡ
 σοιχείαι καυσθήσονται τῇ.

13 Καὶ γὰρ δὲ ἡμεῖς καὶ ἡμεῖς καὶ ἡμεῖς καὶ ἡμεῖς
 γὰρ αὐτῇ προσδοκῶμεν, ἐν οἷς δικαιοσύνη κα-
 τοικῇ.

14 Δι' οὖν, ἀγαπητοί, ταῦτα προσδοκῶντες, σπου-
 σάτε ἀσπίλοι καὶ ἀμώμητοι αὐτῇ ὡς ἀρεθῶν ἐν ἡ-
 μέρᾳ.

15 Καὶ τῇ Κυρίᾳ ἡμεῖς μακροθυμῶν, σπουδῆς
 ἡμεῖς καὶ ὁ ἀγαπητός ἡμεῖς ἡμεῖς
 Πᾶν

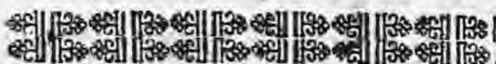
ἡμῶν καὶ τῶν αὐτῶν δοθεῖσαν σοφίαν ἐγράψεν ὑ-

μῖν . 16 Ὡς καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἐπιστολαῖς , λαλῶν ἐν
 ὑμῖν ὡς τῶν , ἐν οἷς ἐστὶ δυσνόητά τινα , ἃ οἱ
 ἀμαθὲς καὶ ἀσηκτοὶ πρεβλησιν , ὡς καὶ τὰς λοιπὰς
 γραφάς , πρὸς τὴν ἰδίαν αὐτῶν ἀπώλειαν .

17 Ὑμεῖς ὦν , ἀγαπητοὶ καὶ προγεννώσκοντες , φυλάσ-
 σεσθε , ἵνα μὴ τῇ τῶν ἀθέσμων πλάτῃ συναπαχθέν-
 τες , ἐκπέσῃτε τῇ ἰδίᾳ τηρογμῇ .

18 Αὐξάνετε δὲ ἐν χάριτι καὶ γνώσει τὴν Κυρίην ἡμῶν
 καὶ πατῆρος Ἰησοῦ Χριστοῦ . οὗτω ἡ δόξα καὶ νῦν καὶ εἰς ἡ-
 μέραν αἰῶνος . Ἀμήν .





ΙΩΑΝΝΟ

τῆς Α' ΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΚΑΘΟΛΙΚΗ, α.

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

Κεφ. α. ι.

1 **Ο** ἥν' ἀπ' ἀρχῆς, ὃ ἀκηκόαμεν, ὃ ἑώρακα-
μεν τοῖς ὀφθαλμοῖς ἡμῶν, ὃ ἔθεντο ἐν
ἡμῖν, ὃ αἱ χεῖρες ἡμῶν ἐψηλάφησαν πρὸς τὴν λέξιν τῆς
ζωῆς.

2 (Καὶ ἡ ζωὴ ἐφάπαρξεν, καὶ ἐώρακαμεν, καὶ μα-
τυροῦμεν, καὶ ἀπαγγελλόμεν ὑμῖν ἥ ζωὴ τῶν αἰ-
ώνων, ἥτις ὦν πρὸς τὸν Πατέρα, καὶ ἐφάπαρξεν
ἐν ἡμῖν.)

3 Ὁ ἐώρακαμεν καὶ ἀκηκόαμεν, ἀπαγγελλόμεν
ὑμῖν, ἵνα καὶ ὑμεῖς κοινωνήσῃτε ἐκαστὸν μετ' ἡμῶν. Καὶ
κοινωνία ὅ ἐστιν ἡμετέρα μετὰ τοῦ Πατρὸς καὶ μετὰ τοῦ Υἱοῦ
αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

4 Καὶ ταῦτα λέγομεν ὑμῖν, ἵνα ἡ χαρὴ ὑμῶν
πεπληρωμένη.

5 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία, ὃν ἀκηκόαμεν ἀπὸ
πατρὸς, καὶ ἀπαγγελλόμεν ὑμῖν, ὅτι ὁ Θεὸς φῶς ἐστὶν
καὶ σκοτία ἐν αὐτῷ οὐκ ἐστὶν οὐδεμία.

6 Ἐὰν εἰπώμεν ὅτι κοινωνοὶ ἔχομεν μετ' αὐτοῦ, καὶ
ἐν τῷ σκότειν περπατοῦμεν, ψαυόμεθα, καὶ οὐ ποιῶ-
μεν τὴν ἀλήθειαν.

7 Ἐὰν δὲ ἐν τῷ φωτὶ περπατοῦμεν, ὥς καὶ αὐτὸς ἐστὶν
ἐν τῷ φωτὶ, κοινωνοὶ ἔχομεν μετ' ἀλλήλων, καὶ τὸ
αἷμα Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ καθαρῶς ἡμᾶς
ἀπὸ πάσης ἀμαρτίας.

8 Ἐὰν εἰπώμεν ὅτι ἀμαρτίαν ἢ ἔχομεν ἐσθιω-
σάντων, καὶ ἡ ἀλήθεια οὐκ ἐστὶν ἐν ἡμῖν.

9 Ἐὰν ὁμολογῶμεν τὰς ἀμαρτίας ἡμῶν, πιστὸς ἐ-
στι καὶ δίκαιος, ἵνα ἀφῇ ἡμῖν τὰς ἀμαρτίας. καὶ
δικαίωσιν ἡμᾶς ἀπὸ πάντων ἡδικίας.

10 Ἐὰν εἰπώμεν ὅτι οὐκ ἠμαρτήκαμεν, δεισύν-
οιμεν αὐτὸν, καὶ ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ οὐκ ἐστὶν ἐν ἡμῖν.

Κεφ.

ΚΙΘ. Β'. 2.

1 **Τ**ΕΚΝΙΑ ΜΗ, ΤΑΥΤΑ ΓΡΑΦΩ ΥΜΙΝ, ἵνα μὴ ἀμαρ-
τητέ· Ἐάν τις ἀμαρτή, παρακλητόν ἔχομεν
πρὸς τὸν Πατέρα, Ἰησοῦν Χριστὸν δικαίον.

2 Καὶ αὐτὸς ἰλασμός ἐστι πρὸς τὴν ἀμαρτιῶν ἡμῶν·
ὃ πρὸς τὴν ἡμετέρων δὲ μόνον, ἀλλὰ ἔτι πρὸς τὴν
κόσμου.

3 Καὶ ἐν τούτῳ γινώσκουμεν ὅτι ἐγνωκάμεν αὐτόν,
ὅτι τὰς ἐντολάς αὐτοῦ τηροῦμεν.

4 Ὁ λέγων, ἐγνώκα αὐτόν, καὶ τὰς ἐντολάς αὐτοῦ καὶ
τηρῶν, ψεύδεται ἐσὶ, ἔτι ἐν τούτῳ ἡ ἀλήθεια οὐκ ἐστίν.

5 Ὁ δ' ὅμολογῇ αὐτῇ τὸν λόγον, ἀληθὺς ἐστὶ τού-
τος ὁ ἀγάπῃ τῇ Θεῷ τετελειώται. ἐν τούτῳ γινώσκουμεν
ὅτι ἐν αὐτῷ ἔσμεν.

6 Ὁ λέγων ἐν αὐτῷ μένειν, ὑψάλει, καὶ οὕτως ἐκλήτος
παραπατάται, ἔτι αὐτὸς ἦτορ πρὸς πατέρα.

7 Ἀδελφοί, οὐκ ἐπιτολῇ χαλκῷ γράφω ὑμῖν, ἀλλ'
ἐπιτολῇ παλαιᾷ, ἣν ἔχετε ἀπ' ἀρχῆς· ἡ ἐπιτολὴ ἡ
πολαιὰ ἐστίν ὁ λόγος ὃν ἠκούσατε ἀπ' ἀρχῆς.

8 Πάλιν ἐπιτολῇ χαλκῷ γράφω ὑμῖν, ὃ ἐστὶν ἀληθὺς
ἐν αὐτῷ, ἔτι ὑμῖν· ὅτι ἡ σκοτία παράγεται, καὶ
τὸ φῶς τὸ ἀληθινὸν ἤδη φαίνει.

9 Ὁ λέγων ἐν τῷ φωτὶ εἶναι, καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ
μισῶν, ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐστὶν ἕως ἄρτι.

10 Ὁ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῷ φωτὶ μέ-
νει, καὶ σκάνδαλον ἐν αὐτῷ οὐκ ἐστίν.

11 Ὁ μισῶν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἐν τῇ σκοτίᾳ ἐ-
στὶ, ἔτι ἐν τῇ σκοτίᾳ παραπατάται, ἔτι οὐκ εἶδε τὴν ὑπέρ-
βην, ὅτι ἡ σκοτία ἐτύφλωσε τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ.

12 Γράφω ὑμῖν, τέκνιά, ὅτι ἀφίενται ὑμῖν αἱ ἀ-
μαρτίαι διὰ τὸ ὄνομα αὐτοῦ.

13 Γράφω ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε τὸν ἀπ' ἀρ-
χῆς· γράφω ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι νουικήκατε τὸν πο-
νηρὸν· γράφω ὑμῖν, παιδία, ὅτι ἐγνώκατε τὸν πατέρα.

14 Ἐγραψα ὑμῖν, πατέρες, ὅτι ἐγνώκατε τὸν ἀπ'
ἀρχῆς· ἐγραψα ὑμῖν, νεανίσκοι, ὅτι ἰσχυροί ἐστε,
καὶ ὁ λόγος τῷ Θεῷ ἐν ὑμῖν μένει, ἔτι νουικήκατε τὸν
πονηρὸν.

15 Μὴ ἀγαπᾶτε τὸν κόσμον, μηδὲ τὰ ἐν τῷ κόσ-
μῳ· τὸν τίς ἀγαπᾷ τὸν κόσμον, οὐκ ἐστὶν ἡ ἀγάπη
τῷ πατρὶ ἐν αὐτῷ.

16 Ὅτι πᾶν τὸ ἐν τῷ κόσμῳ, ἡ ἐπιθυμία τοῦ
σαρκὸς, ἔτι ἡ ἐπιθυμία τῷ ἐφθαλμῷ, ἔτι ἡ ἀλα-
ζονία τῷ βίῳ, οὐκ ἐστὶν ὅτι τῷ πατρὶ, ἀλλ' ὅτι τῷ
κόσμῳ ἐστίν.

17 Καὶ ὁ κόσμος παράγεται, ἔτι ἡ ἐπιθυμία αὐτοῦ·
καὶ ὁ ποιῶν τὸ θέλημα τῷ Θεῷ, μένει εἰς τὸν αἰῶνα.

X

18 Ποι-

18 Παιδεία, ἐσχάτη ὥρα ἐστὶ· Ἐκδοῦς κηρύσσετε ὅτι ὁ ἀντίχριστος ἐρχεται, Ἐ τὸν ἀντίχριστον πολλοὶ γενοῦνται· ὅθεν γινώσκουμεν ὅτι ἐσχάτη ὥρα ἐστὶν.

19 Εξ ἡμῶν ἤλθοσαν, ἀλλ' ἢ κ' ἡσάν ἢ ἡμῶν· ὃς ἡσαν ἢ ἡμῶν, μεμενέκασαν ἡμῶν· ἀλλ' ἢ κ' φανερώσιν ὅτι ἢ κ' αὐτοὶ πάντες ἢ ἡμῶν.

20 Καὶ ὑμεῖς χρίσμα ἔχετε ἀπὸ τοῦ ἁγίου, Ἐ καὶ ταῦτα πάντα.

21 Οὐκ ἔγραψα ὑμῖν ὅτι ἢ κ' οἴδατε τὴν ἀλήθειαν, ἀλλ' ὅτι οἴδατε αὐτῶν, Ἐ ὅτι πᾶν ψεῦδος ἐκ τῆς ἀληθείας ἢ κ' ἔστι.

22 Τίς ἐστὶν ὁ Ἰωάννης, εἰ μὴ ὁ ἀρνημένος ὅτι Ἰησοῦς ἢ κ' ἐστὶν ὁ Χριστός; ὁ τὸς ἐστὶν ὁ ἀντίχριστος, ὁ ἀρνημένος τὸν Πατέρα, Ἐ τὸν Υἱόν.

23 Πᾶς ὁ ἀρνημένος τὸν Υἱόν, ἢ κ' ὁ τὸν Πατέρα ἔχει.

24 Ὑμεῖς ἢ κ' κηρύσσετε ἀπ' ἀρχῆς, ἐν ὑμῖν μένει· ἢ κ' ἐν ὑμῖν μείνῃ ὁ ἀπ' ἀρχῆς κηρύσσετε, Ἐ ὑμεῖς ἐν τῷ Υἱῷ Ἐ ἐν τῷ Πατρὶ μένετε.

25 Καὶ αὐτὴ ἐστὶν ἡ ἐπαγγελία, ἢ κ' αὐτὸς ἐπηγγέλαται ἡμῖν, τὴν ζωὴν τὴν αἰώνιον.

26 Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν πρὸς τὴν πλανώστων ἡμῶν.

27 Καὶ ὑμεῖς τὸ χρίσμα ὃ ἐλάβετε ἀπ' αὐτοῦ, ἐν ὑμῖν μένει, Ἐ ἢ κ' ἔχετε ἵνα τις διδάσκῃ ὑμᾶς· ἀλλ' ἢ κ' τὸ αὐτὸ χρίσμα διδάσκει ὑμᾶς πρὸς πάντων, Ἐ καὶ αὐτὸς ἐστὶ, Ἐ ἢ κ' ἐστὶ ψεῦδος· Ἐ καὶ ὁ ἐδίδαξεν ὑμᾶς, μενεῖτε ἐν αὐτῷ.

28 Καὶ νῦν, τέκνιά, μένετε ἐν αὐτῷ· ἵνα ὅταν φανερώσῃ, ἔχημεν παρρησίαν, Ἐ μὴ αἰσχυρῶμεν αὐτῷ, ἐν τῇ παρρησίᾳ αὐτοῦ.

29 Εἰ ἂν εἰδῆτε ὅτι δίκαιός ἐστι, γινώσχετε ὅτι πᾶς ὁ πειρῶν τὴν δικαιοσύνην, ἢ κ' αὐτὸς γεγέννηται.

Κεφ. γ'. 3.

1 Ἰδοὺ τέκνιά ἀγάπη δέδοκεν ἡμῖν ὁ Πατήρ· ἵνα τέκνα Θεοῦ κληθῶμεν, διὰ τοῦτο ὁ κόσμος γινώσκει ἡμᾶς, ὅτι ἢ κ' ἔγνω αὐτόν.

2 Ἀγαπή, νῦν τέκνα Θεοῦ ἴσμεν, Ἐ ἔπω ἔφατον· ὁ ἴσμεν, οἴδαμεν ὅτι ἐφανερώσῃ, ὁμοίως αὐτῷ ἴσμεν, ὅτι ὁφόμεθα αὐτόν καὶ ὡς ἐστὶ.

3 Καὶ πᾶς ὁ ἔχων τὴν ἐλπίδα ταύτην ἐπ' αὐτῷ ἁγνίσαι ἑαυτόν, καὶ ὡς ἐκείνους ἁγνός ἐστι.

4 Πᾶς ὁ ποιών τὴν ἀμαρτίαν, Ἐ τὴν ἀνομίαν ταύτην· Ἐ ἢ κ' ἀμαρτία ἐστὶν ἡ ἀνομία.

5 Καὶ οἴδατε ὅτι ἐκείνους ἐφανερώσῃ, ἵνα πᾶς ἁμαρτία ἡμῶν ἀρῇ· Ἐ ἀμαρτία ἐν αὐτῷ ἢ κ' ἐστὶ.

6 Πᾶς ὁ ἐν αὐτῷ μενων, ἢ κ' ἀμαρτάνει· πᾶς ὁ ἀμαρτάνων, ἢ κ' ἐφάνηκεν αὐτῷ, ἢ κ' ἐγνωκεν αὐτόν.

7 Τεκνιά, μηδεὶς πλανᾷται ὑμᾶς· ὁ ποιών τὴν δικαιοσύνην, δίκαιός ἐστι, καὶ ὁ ἐκείνους δίκαιός ἐστιν ὁ.

8 Ο' ποιῶν τῷ ἁμαρτίᾳ, ἐκ τῆ διαβολῆς ἐστίν· ὅτι ὁ ἀρχὴ ὁ διάβολος ἁμαρτάνει. ἡς τὸτο ἐφανέρωθη ὁ ἴδιος τῷ Θεῷ, ἵνα λύσῃ τὰ ἔργα τῆ διαβολῆς.

9 Πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ τῆ Θεῆ, ἁμαρτάνῃ ποιεῖ, ὅτι σπέρμα αὐτῆς ἐν αὐτῷ μένει· ὁ δὲ δύναται ἁμαρτάνειν, ὅτι ἐκ τῆ Θεῆ γεγέννηται.

10 Ἐν τῷ φανερά ἐστὶ τὰ τέκνα τῆ Θεῆ, καὶ τὰ τέκνα τῆ διαβολῆς· πᾶς ὁ μὴ ποιῶν δικαιοσύνην, ἢ ἐστὶν ἐκ τῆ Θεῆ, καὶ ὁ μὴ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφόν αὐτῆς.

11 Ὅτι αὐτὴ ἐστὶν ἡ ἀγγελία ἣν ἤκούσατε ἀπὸ πατρὸς, ἵνα ἀγαπῶμεν ἀλλήλους.

12 Οὐ καθὼς Κεῖν ἐκ τῆ ποιεῖν ἡ, ὁ ἐσφάξεν τὸν ἀδελφόν αὐτῆς· ὁ χάρις τίνας ἐσφάξεν αὐτῶν· ὅτι τὰ ἔργα αὐτῆς ποιεῖν ἡ, τὰ δὲ τῆ ἀδελφῆς αὐτῆς, δίκαια.

13 Μὴ θαυμάζετε, ἀδελφοί μου, ἐὰν μισῶ ὑμᾶς ὁ κόσμος.

14 Ἡμεῖς οἶδαμεν ὅτι μεταβεβήκαμεν ἐκ τῆ θαπτήνῃς τῆ ζωῆς, ὅτι ἀγαπῶμεν τὴν ἀδελφὴν. ὁ μὴ ἀγαπῶν τὸν ἀδελφόν, μένει ἐν τῇ θαπτήνῃ.

15 Πᾶς ὁ μισῶν τὸν ἀδελφόν αὐτῆς, ἀνθρωποκτόνος ἐστίν· ὁ οἶδατε ὅτε πᾶς ἀνθρωποκτόνος ἢ ἐχει ζωὴν αἰώνιον ἐν αὐτῷ μένειν.

16 Ἐν τούτῳ ἐγνώκαμεν τῷ ἀγαπῶν, ὅτι ἐκείτος ὁ ἐκ τῆ ψυχῆς αὐτῆς ἔδωκε· ὁ ἡμεῖς οφείλομεν ὑπὲρ τῆ ἀδελφῆς τὰς ψυχὰς τιθέναι.

17 Ὅτι δ' ἂν ἔχη τὸν βίον τῆ κόσμῳ, ὁ θεωρεῖ τὸν ἀδελφόν αὐτῆς· ὁ χρεῖται ἔχοντος, ὁ κληρονομήσει τὴν αὐτῆς ἀπ' αὐτῆς, πῶς ἡ ἀγάπη τῆ Θεῆ μένει ἐν αὐτῷ.

18 Τεκνία μου, μὴ ἀγαπῶμεν λόγον, μηδὲ γλῶσσαν, ἀλλ' ἔργον καὶ ἀληθείαν.

19 Καὶ ἐν τούτῳ γινώσκουμεν ὅτι ἐκ τῆς ἀληθείας ἐσμὲν, ὁ ἐμπροσθεν αὐτῆς κείμεν τὰς καρδίας ἡμῶν.

20 Ὅτι ἐὰν καταγινώσκῃ ἡμῶν ἡ καρδία, ὅτι μὴ ἐστὶν ὁ Θεὸς τῆς καρδίας ἡμῶν, καὶ γινώσκῃ πάντα.

21 Ἀγαπητοί, ἐὰν ἡ καρδία ἡμῶν μὴ καταγινώσκῃ ἡμῶν, παρ' ἑαυτῶν ἔχομεν πρὸς τὸν Θεόν.

22 Καὶ ὁ ἐὼν αὐτῶν, λαμβάνομεν παρ' αὐτῆς, ὅτι τὰς ἐντολὰς αὐτῆς τηροῦμεν, καὶ τὰ ἀρετὰ ἐνοπίον αὐτῆς ποιοῦμεν.

23 Καὶ αὐτὴ ἐστὶν ἡ ἐντολὴ αὐτῆς, ἵνα πιστεύσωμεν τῷ λόγῳ τῆς ὑπὲρ αὐτῆς, ἵνα Χριστῷ, καὶ ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, καθὼς ἔδωκεν ἐντολὴν ἡμῶν.

24 Καὶ ὁ τηρῶν τὰς ἐντολὰς αὐτῆς, ἐν αὐτῷ μένει ὁ Θεός, ἐκ τῆ Πιστεύματος ὁ ἡμῶν ἔδωκεν.

Κεφ. δ'. 4.

1 **Α**γαπητοί, μὴ πᾶντι πνεύματι πιστεύετε, ἀλλὰ δοκιμάζετε τὰ πνεύματα, εἰ ἐκ τοῦ Θεοῦ εἰσιν· ὅτι πολλοὶ ψευδοπροφῆται ἐξεληλυθασιν εἰς τὸν κόσμον.

2 Ἐν τούτῳ γινώσκειτε τὸ πνεῦμα τοῦ Θεοῦ· τὰ πνεύματα ὁ ὁμολογεῖ Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ τοῦ Θεοῦ εἶναι.

3 Καὶ πᾶν πνεῦμα ὃ μὴ ὁμολογεῖ τὸν Ἰησοῦν Χριστὸν ἐν σαρκὶ ἐληλυθότα, ἐκ τοῦ Θεοῦ ἢ ἐστὶ· ἔτι τό ἐστι τὸ τῷ ἁγίῳ εἶναι, ὃ ἀκηκόατε ὅτι ἐρχεται, ἔτι οὐκ ἐν τῷ κόσμῳ εἰσὶν ἤδη.

4 Ὑμεῖς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐστε, τεκνία, ἔνευρήκατε αὐτῶν· ὅτι μαζὶν εἰσὶν ὃ ἐν υἱῷ ἢ ὃ ἐν τῷ κόσμῳ.

5 Αὐτοὶ ἐκ τοῦ κόσμου εἰσὶ, διὰ τὸ ἐκ τοῦ κόσμου λαλῆσαι, ἔο ὁ κόσμος αὐτῶν ἀκούει.

6 Ἡμεῖς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμεν· ὃ γινώσκον τοῦ Θεοῦ, ἀκούει ἡμεῶν· ὅς ἢ ἐστὶν τοῦ Θεοῦ, ἢ ἀκούει ἡμεῶν. ἐκ πάντων γινώσκουμεν τὸ πνεῦμα τῆς ἀληθείας ἔο τὸ πνεῦμα τῆς πλάνης.

7 Ἀγαπητοί, ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, ὅτι ἡ ἀγάπη ἐκ τοῦ Θεοῦ εἶναι· ἔο πᾶς ὃ ἀγαπῶν, ἐκ τοῦ Θεοῦ γινώσκεται, ἔο γινώσκει τὸν Θεόν.

8 Ὅς μὴ ἀγαπῶν, ἢ ἐγνω τὸν Θεόν· ὅτι ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστὶν.

9 Ἐν τούτῳ ἐφανερώθη ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ ἐν υἱῷ· ὅτι τὸν Υἱὸν οὗτον τὸν μονογενῆ ἀπέσταλκεν ὁ Θεὸς εἰς τὸν κόσμον, ἵνα ζήταμεν δι' αὐτόν.

10 Ἐν τούτῳ εἰσὶν ἡ ἀγάπη, ἢ ὅτι ἡμεῖς ἠγάπησαμεν τὸν Θεόν, ἀλλ' ὅτι αὐτὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς, ἔο ἀπέστειλε τὸν Υἱὸν οὗτον ἵνα ἡμεῖς ἀγαπήσωμεν αὐτόν.

11 Ἀγαπητοί, εἰ ἥτως ὁ Θεὸς ἠγάπησεν ἡμᾶς, ἔο ἡμεῖς ἐφείλομεν ἀλλήλους ἀγαπᾶν.

12 Θεὸς καὶ οὐκ οἶσιν ποῖντε τιθένται· ἐὰν ἀγαπῶμεν ἀλλήλους, ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν μένει, ἔο ἡ ἀγάπη αὐτοῦ περὶ τὴν τελειωμένην εἰσὶν ἐν ἡμῖν.

13 Ἐν τούτῳ γινώσκουμεν ὅτι ἐν αὐτῷ μένομεν, ἔο αὐτοὶ ἐν ἡμῖν, ὅτι ἐκ τοῦ Πνεύματος αὐτοῦ ἐλέησεν ἡμῖν.

14 Καὶ ἡμεῖς τιθένται, ἔο μαρτυροῦμεν ὅτι ὁ Πατὴρ ἀπέσταλκε τὸν Υἱὸν Σωτῆρα τοῦ κόσμου.

15 Ὅς ἂν ὁμολογήσῃ ὅτι Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ υἱὸς τοῦ Θεοῦ, ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ μένει, ἔο αὐτοὶ ἐν τῷ Θεῷ.

16 Καὶ ἡμεῖς ἐγαυώκαμεν ἔο πεπιστώκαμεν τῷ ἁγίῳ πνεύμῳ ὅτι ὁ Θεὸς ἐν ἡμῖν· ὁ Θεὸς ἀγάπη ἐστὶν· ὃ μένων ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἐν τῷ Θεῷ μένει, ἔο ὁ Θεὸς ἐν αὐτῷ.

17 Ἐν τούτῳ τιθένται ἡ ἀγάπη μεθ' ἡμῶν, ἵνα

παρ' ὧν ἔχωμεν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς κρίσεως, ὅτι κα-
τὰ τὸν ἐκείνους ἐστὶ, ὅτι ἡμεῖς ἐσμεν ἐν τῷ κόσμῳ τῷ τῷ

18 Φόβος ἢ ἐστὶ ἐν τῇ ἀγάπῃ, ἀλλ' ἡ τελεία ἀγά-
πη ἔφω βάλλει τὸν φόβον· ὅτι ὁ φόβος κελκυσὶν ἔχει.

19 Ὁ φοβούμενος ἢ τετελειώται ἐν τῇ ἀγάπῃ.

20 Ἡμεῖς ἀγαπῶμεν αὐτὸν, ὅτι αὐτὸς πρῶτος ἠγά-
πησεν ἡμᾶς.

21 Ἐὰν τις εἴπῃ· Ὁτι ἀγαπῶ τὸν Θεόν, ὅτι τὸν
ἀδελφόν αὐτοῦ μισῶ, ψεύστης ἐστίν· ὁ γὰρ μὴ ἀγαπῶν
τὸν ἀδελφόν αὐτοῦ ὃν ἑώρακε, τὸν Θεόν ὃν ἔωρα-
κε, πῶς δύναται ἀγαπᾶν;

22 Καὶ ταῦτά ἐστιν αἱ ἐντολαὶ ἃς ἔχομεν ἀπ' αὐτοῦ, ἵνα
ἀγαπῶν τὸν Θεόν, ἀγαπᾷ καὶ τὸν ἀδελφόν αὐτοῦ.

Κεφ. ε'. 5.

1 Πᾶς ὁ πιστεύων ὅτι Ἰησοῦς ἐστὶ ὁ Χριστός, ὃν
τῷ Θεῷ γενένηται· ὁ καὶ τὰς ἀγαπῶν τὸν
γεννηθέντα, ἀγαπᾷ καὶ τὸν γεννηθέντα πατέρα αὐτοῦ.

2 Ἐν τῇ τῇ γενέσει ὅτι ἀγαπῶμεν τὰ τέκνα τοῦ
Θεοῦ, ὅταν τὸν Θεόν ἀγαπῶμεν, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐ-
τοῦ τηρῶμεν.

3 Αὕτη γὰρ ἐστὶν ἡ ἀγάπη τοῦ Θεοῦ, ἵνα τὰς ἐντο-
λὰς αὐτοῦ τηρῶμεν· ὁ καὶ ἐντολὰς αὐτοῦ βαρύνει ἢ
ἀνίστη.

4 Ὁτι πᾶν τὸ γεννηθέντα ὃν τῷ Θεῷ νικᾷ τὸν
κόσμον· καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ νίκη ἡ νικήσασα τὸν κόσ-
μον, ἡ πίστις ἡ ἐν αὐτῇ.

5 Τίς ἐστὶν ὁ νικῶν τὸν κόσμον, εἰ μὴ ὁ πιστεύων ὅτι
Ἰησοῦς ἐστὶν ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ;

6 Ὁ γὰρ ἐστὶν ὁ ἐλθὼν δι' ὕδατος καὶ αἵματος, Ἰη-
σοῦς ὁ Χριστός· ἢ ἐν τῷ ὕδατι μόνον, ἀλλ' ἐν τῷ ὕδα-
τι καὶ αἵματι· ὁ τὸ Πνεῦμα ἐστὶ τὸ μαρτυροῦν, ὅτι
τὸ Πνεῦμα ἐστὶν ἡ ἀλήθεια.

7 Ὅτι τρεῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῷ κόσμῳ, ὁ
Πατήρ, ὁ Λόγος, καὶ τὸ Ἅγιον Πνεῦμα· καὶ οὗτοι οἱ
τρεῖς ἐν εἰσι.

8 Καὶ τοῖς εἰσιν οἱ μαρτυροῦντες ἐν τῇ γῇ, τὸ πνεῦ-
μα, καὶ τὸ ὕδωρ, καὶ τὸ αἷμα· καὶ οἱ τρεῖς τὸ ἐν εἰσι.

9 Εἰ τὸ μαρτυροῦν τῷ ἀνθρώπῳ λαμβάνομεν,
καὶ τὸ μαρτυροῦν τῷ Θεῷ μείζων ἐστίν· ὅτι αὕτη ἐστὶν ἡ
μαρτυρία τοῦ Θεοῦ ἡ μεμαρτύρηκε περὶ τοῦ Υἱοῦ
αὐτοῦ.

10 Ὁ πιστεύων εἰς τὸν Υἱὸν τοῦ Θεοῦ, ἔχει τὴν μαρ-
τυρίαν ἐν ἐαυτῷ· ὁ μὴ πιστεύων τῷ Θεῷ, ψεύδεται τὴν
ἐν αὐτῷ, ὅτι ἡ πεπίστευκεν εἰς τὴν μαρτυρίαν ἡ
μαρτυρία τοῦ Θεοῦ περὶ τοῦ Υἱοῦ αὐτοῦ.

11 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ μαρτυρία, ὅτι ζωὴ αἰώνιος
ἐστὶν

ἔδωκεν ἡμῖν ὁ Θεός· Ἐ αὐτὴ ἡ ζωὴ ἐν τῷ Υἱῷ αὐτοῦ
ἐστίν.

12 Ὁ ἔχων τὸν Υἱόν, ἔχει τὴν ζωὴν· ὁ μὴ ἔχων
τοῦ Υἱοῦ τῷ Θεῷ, τὴν ζωὴν ἢ ἔχει.

13 Ταῦτα ἔγραψα ὑμῖν τοῖς πιστεύουσιν εἰς τὸ ὄνομα
τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ· ἵνα εἰδῇτε ὅτι ζωὴν ἔχετε αἰώνιος,
Ἐ ἵνα πισθῇτε εἰς τὸ ὄνομα τῷ Υἱῷ τῷ Θεῷ.

14 Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ παρ' ἡμῶν ἡ ἐχομένη πρὸς πάν-
των, ὅτε εἰάν τι αἰτώμεθα κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ,
ἀκούει ἡμῶν.

15 Καὶ εἰάν οἶδαμεν ὅτι ἀκούει ἡμῶν, ὁ ἂν αἰτῶ-
μεθα, οἶδαμεν ὅτι ἔχομεν τὰ αἰτήματα ἃ ἠτήκαμεν
παρ' αὐτοῦ.

16 Εἰάν τις ἴδῃ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ ἁμαρτάνοντα ἁ-
μαρτίαν μὴ πρὸς θάνατον, αἰτήσῃ, καὶ δώσῃ αὐτῷ
ζωὴν, τοῖς ἁμαρτάνουσι μὴ πρὸς θάνατον· ἐστὶν ἁμαρ-
τία πρὸς θάνατον· ἢ πᾶσι ἐκείνης λέγει ἵνα ἐρωτήσῃ.

17 Πᾶσα ἀδικία ἁμαρτία ἐστίν· καὶ ἐστὶν ἁμαρτία καὶ
πρὸς θάνατον.

18 Οἶδαμεν ὅτι πᾶς ὁ γεγεννημένος ἐκ τοῦ Θεοῦ,
ἢ ἁμαρτάνει· ἀλλ' ὁ γενηθεὶς ἐκ τοῦ Θεοῦ, τὰ ἡμῶν
τὸν, Ἐ ὁ πονηρὸς ἢ ἔσται αὐτοῦ.

19 Οἶδαμεν ὅτι ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐσμεν, Ἐ ὁ κόσμος
ἅλος ἐν τῷ πονηρῷ κείται.

20 Οἶδαμεν ὅτι ὁ Υἱὸς τοῦ Θεοῦ ἦκε, Ἐ δίδω-
κεν ἡμῖν διάνοιαν ἵνα γινώσκωμεν τὸν ἀληθινόν· καὶ
ἐσμεν ἐν τῷ ἀληθινῷ, ἐν τῷ Υἱῷ αὐτοῦ Ἰησοῦ Χριστῷ·
ὅτι ἐστὶν ὁ ἀληθινὸς Θεός, Ἐ ἡ ζωὴ αἰώνιος.

21 Τεκνία, φυλάξατε ἑαυτοὺς ἀπὸ τῆς εἰδώλου·
Ἀμήν.

Ω Α Ν Ν Ο Υ

ΤΣ Α Π Ο Σ Τ Ο Λ Ο Υ

Ε Π Ι Σ Τ Ο Λ Η

Κ Α Θ Ο Λ Ι Κ Η , β'.

Ο Πρεσβύτερος ἐκλεκτῇ κυρίᾳ, ἔ ποίς τέκνοις αὐτῆς, ἧς ἐγὼ ἀγαπῶ ἐν ἀληθείᾳ, ἔ καὶ ὁ μένος, ἀλλὰ ἔ πάντες οἱ ἐγνωκότες τὴν ἀλήθειαν.

Διὰ τὴν ἀλήθειαν τὴν μένουσαν ἐν ἡμῖν, ἔ μεθ' ἡμῶν ἔται εἰς τὸν αἰῶνα.

ἔ ἔσται μεθ' ὑμῶν χάρις, ἔλεος, εὐλογία παρὰ Θεοῦ πατρὸς, ἔ πατρὸς Κυρίου Ἰησοῦ Χριστοῦ τῷ Υἱῷ τῷ Πατρὶ, ἐν ἀληθείᾳ ἔ ἀγάπῃ.

ἔ ἔχαρην λίαν ὅτι εὗρηκα ὅτι τῶν τέκνων σου σιωποῦντας ἐν ἀληθείᾳ, καθὼς ἐντολὴν ἐλάβομεν παρὰ τοῦ Πατρὸς.

ἔ Καὶ νῦν ἐρωτῶ σε, κυρία, οὐχ ὡς ἐντολὴν γράψω σοι καινὴν, ἀλλὰ ἣν εἶχομεν ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα ἀγαπῶμεν ἀλλήλους.

ἔ Καὶ αὕτη ἐστὶν ἡ ἀγάπη, ἵνα περιπατῶμεν κατὰ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ. αὕτη ἐστὶν ἡ ἐντολή, καθὼς ἤκουσατε ἀπ' ἀρχῆς, ἵνα ἐν αὐτῇ περιπατήτε.

ἔ Ὅτι πολλοὶ πλάνοι εἰσῆλθον εἰς τὸν κόσμον, οἱ μὴ ὁμολογοῦντες Ἰησοῦς Χριστὸν ἐρχόμενον ἐν σαρκί· οὗτός ἐστιν ὁ πλάνος ἔ ὁ ἀντιχριστός.

ἔ Βλέπετε ἑαυτοὺς, ἵνα μὴ ἀπολέσωμεν τὸ ἀργυράμεθα, ἀλλὰ μισθὸν πλήρη ἀπολάβωμεν.

ἔ Πᾶς ὁ παραβαίνων, ἔ μὴ μένων ἐν τῇ διδαχῇ τοῦ Χριστοῦ, Θεὸν οὐκ ἔχει· ὁ μένων ἐν τῇ διδαχῇ τοῦ Χριστοῦ, οὗτος ἔ τὸν Πατέρα ἔ τὸν Υἱόν ἔχει.

ἔ Εἴτις ἐρχεται πρὸς ὑμᾶς, ἔ ταύτην τὴν διδαχὴν οὐ φέρει, μὴ λαμβάνετε αὐτὸν εἰς οἶκόν, ἔ χαίρειν κῦρῳ μὴ λέγετε.

X 4

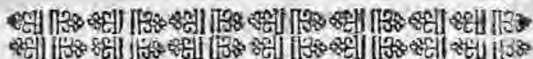
II O'

11 Ο' γδ λέγων αὐτῷ χαίρειν, κοινωνεῖ το
αὐτῷ τοῖς πονηροῖς.

12 Πολλὰ ἔχων ὑμῖν γράφειν, οὐκ ἐβλή-
χάρην ὁ μέλαρος· ἀλλὰ ἐλπίζω εἰσεῖν πρὸς
σῶμα πρὸς σῶμα λαλῆσαι, ἵνα ἡ χαρὰ ἡμ-
πληρωμένη.

13 Ἀσπάζεται σε τὰ τέκνα τῆς ἀδελφῆς
ἐκκεκτῆς. Ἀμή.





ΙΩΑΝΝΟΥ

τῷ ΑΠΟΣΤΟΛΟΥ

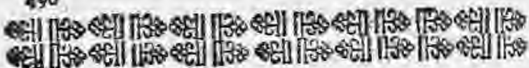
ΕΠΙΣΤΟΛΗ.

ΚΑΘΟΛΙΚΗ, γ'.

- 1 **Ο** Προσβύτερος Γάλλῳ τῷ ἀγαπητῷ, ὃν ἐγὼ ἀγαπᾶς ἐν ἀληθείᾳ.
- 2 Ἀγαπητέ, πᾶσι πάντων οὐχομαι σε δοξοῦσθαι ὡς ἰσχυρῶς, καθὼς δοξοῦταί σου ἡ ψυχὴ.
- 3 Ἐχαρὼν γὰρ λίαν ἐρχομένῳν ἀδελφῶν, ὡς μαρτυροῦντων σὲ τῇ ἀληθείᾳ, καθὼς σὺ ἐν ἀληθείᾳ παρῃσταις.
- 4 Μεϊστορὰρ τίταιν ὅκ ἐχω χαρὰν, ἵνα ἀκούω τὰ ἐμὰ τέκνα ἐν ἀληθείᾳ παρῃσταινται.
- 5 Ἀγαπητέ, πιστὸν ποίεις ὃ ἐλὼ ἐργάσθαι εἰς τὸς ἀδελφούς καὶ εἰς τὸς ξένους.
- 6 Οἱ ἐμαστυρήσαντες τῇ ἀγάπῃ ἐν ὁπίσιν ἐκκλησίαις ὡς καλῶς πεποίησες προτέρως ἔχον τῷ Θεῷ.
- 7 Ὑπὲρ γὰρ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ἔβησαν μὴδὲν λαμβάνοντες ἀπὸ τῶν ἐθνῶν.
- 8 Ἡμεῖς ἦν ἐφαιλομεν ἀπολαμβάνειν τὸς ποιήτας, ἵνα συνεργοὶ γινώμεθα τῇ ἀληθείᾳ.
- 9 Ἐχρησάμεθα τῇ ἐκκλησίᾳ· ἀλλ' ὁ φιλοπρωτεύων αὐτῶν Διοβφῆς ἦν ὑποδέχεται ἡμᾶς.
- 10 Διὰ τῆτο, ἐλὼ ἔλθω, ἵστανθῶσι αὐτῷ τὰ ἔργα ὡς τοιαῖ, λόγοις πολλοῖς φλυαρῶν ἡμᾶς· ὡς μὴ ἀρκύμενος ὑπὲρ τούτοις, ὥστε αὐτὸς ὑποδέχεται τὴν ἀδελφὴν, ὡς τῆς βιολομένης κολῦν, ὡς ὅκ τῆς ἐκκλησίας ἐκβάλλει.
- 11 Ἀγαπητέ, μὴ μιμνῇ τὸ κοκόν, ἀλλὰ τὸ ἀγαθόν. ὃ ἀγαθοποιῶν, ὡς τῷ Θεῷ ἐστὶν ὃ ὃ κακοποιῶν, ὡς εἴρακε τὸν Θεόν.
- 12 Δημιούργη μεμαρτύρηται ὑπὸ πάντων, καὶ ὑπὸ αὐτῆς τῆς ἀληθείας· ὡς ἡμεῖς ὃ μαρτυροῦμεν, ὡς αἶδατε ὅπ ὃ μαρτυρία ἡμῶν ἀληθὴς ἐστὶ.
- 13 Πολλὰ ἔχον χάριν, ἀλλ' ὃ θέλω λίαν μέλυνος καὶ καλὰ μοι γράψαι.
- 14 Ἐλπίζω ὃ οὐδεὶς ἐδῶνσε, καὶ σὺ μοι πρὸς σέως λαλῆσαι.
- 15 Εἰσάκουσθαι. Ἀσπάζονται σε οἱ φίλοι. Ἀσπάζομαι τὸς φίλους καὶ ὀνομα.

X 2

ΓΟΥ-



Ι Ο Υ Δ Α

Α' ΠΟΣΤΟΛΟΥ

ΕΠΙΣΤΟΛΗ

Κ Α Θ Ο Λ Ι Κ Η , κ.

1 **Ι**ούδας Ἰησοῦ Χριστοῦ δούλος, ἀδελφός ὅς Ἰακώβου τοῖς ἐν Θεῷ Πατρὶ ἡγιασμένοις, καὶ Ἰησοῦ Χριστοῦ πατρικείοις κλητοῖς.

2 Ἐλεος ὑμῖν ὡς ἐκλήθητε ἀγάπῃ πληθυνθῆναι.

3 Ἀγαπητοί, πᾶσιν σπουδῶ ποιούμενος χάριν ὑμῖν παρὰ τῆς κοινῆς σωτηρίας, ἀνάγκῃ ἔχον γράψαι ὑμῖν, παρακαλῶν ἐπαγωνίζεσθαι τῇ ἀπαξ παραδοθείσῃ τοῖς ἁγίοις πίστι.

4 Παρισέδυσαν γὰρ τινες ἄνθρωποι οἱ πάλαι προσηλυτισμένοι εἰς τὴν τὸ κρέμα, ὡσαύτως, τῷ τῇ Θεῷ ἡμῶν χάριν μεταπθέντες εἰς ἀσελγείαν, ὡς τὸν μέγαν δασπότῃ Θεῷ ὡς Κύριον ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστὸν ἀννήμενοι.

5 Ὑπομνήσαι ὅς ὑμᾶς βύλομαι, εἰδότες ὑμᾶς ἀπὸ τῆς πίστεως, ὅτι ὁ Κύριος λαὸς ἐκ γῆς Αἰγύπτου σώσας, τὸ δεύτερον τὸς μὴ πισεύσαντας ἀπόλεσεν.

6 Ἀγγέλους τε τῆς μὴ τηρήσαντας τῷ ἑαυτῶν ἀρετῇ, ἀλλὰ ἀπολειπόντας τὸ ἴδιον οἰκητήριον, εἰς κείνην μεγάλην ἡμέραν, δεσμοῖς ἀϊδίοις ὑπὸ ζώοντι τῷ τῇ.

7 Ὡς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ αἱ παρὰ αὐτὰς πόλεις πλεονέκτοις τῇτοις τρόποις ἐκπορνείσαντες, καὶ ἀπειθήσαντες ἐπὶ τῷ σαρκὸς ἑτέρας, προκείνται δαίμονι, τοῖς αἰῶνι δίκῃ ὑπέχοντες.

8 Ὁμοίως μέντοι ὡς ἐπὶ ἐνυπνιαζόμενοι, σάρκα μὴ κινῶνται, κυριότητα ὅς ἀδεήσι, δοξας ὅς βλασφημῶν.

9 Ὁ δὲ Μιχαὴλ ὁ ἀρχάγγελος ὅτε τὸ διαβόλην ἀντιπρὸς ἐκείνους διελέγετο παρὰ τῷ Μωσέως σώματι, καὶ ἀτόληντε κρίσιν ἐπερυκνῆν βλασφημίας· ἀλλ' αὐτὸς ἔειπεν· Ἐπιτίμησαι σοὶ Κύριος.

10 Οὗτοι δὲ ὅσα μὲν ἢ οἱ δαίμονες βλασφημῶσιν, ὅσα ὡς φυσικῶς, ὡς τὰ ἄλογα, ζῶα, ἐπίσανται, ἐν τῇ τῇ φθάνονται.

11 Οὐαὶ οὖν τοῖς· ὅτι τῇ δόξῃ τῇ Καίῃ ἐπεσφύλαται, καὶ τῇ πλάνῃ τῇ Βαλκῇ μισθῷ διεχούσῃ, καὶ τῇ ἀντιλογίᾳ τῇ Κορὶ ἀπώλετο.

12 Οὐ.

- 12 Οὗτοί εἰσιν ἐν ταῖς ἀγάπαις ὑμῶν σπυλαὶς, ὡς ὁδὸν ἔχοντες, ἀφοβῶς ἐαυτῶν ποιμαίνοντες· νεφέλαι ὑδροὶ, ὑπὸ ἀνέμων πνευνομένης, δένδρα φθινοπωρινά, ἀκάρπια, οἷς ἀποθαύοντα, ἐκρίζωθεντα.
- 13 Κύματα ἀγροῦ θαλάσσης, ἐπαφρίζοντα τὰς ἐαυτοῦ αἰχύνας· ἄστερες πλανήται, οἷς ὁ ζέφρος τῆ σκοτίας τὸν αἰῶνα τετήρηται.
- 14 Προεφῆτῶς ὁ ὅτι τῷ ἔβδωμος ἀπὸ Α' δ' αὖτε ἰσχυρῶς, λέγων· Ἰδοὺ, ἔλθε Κύριος ἐν μυριάσιν αἰμάτων αὐτοῦ.
- 15 Ποιῇται κρίσιν κατὰ πάντων, ὅτι ὁ δειλὸς καὶ ὁ ἀσεβὴς τῆς ἀσεβείας αὐτοῦ πᾶσι πάντων τῶν ἐργῶν ἐπιβλέψας τῶν οὐκ ἐβέλθον, ὅτι πᾶσι πάντων τῶν σκληρῶν οὐκ ἀλλήλων κατ' αὐτὰ ἀμαρτωλοὶ ἀσεβεῖς.
- 16 Οὗτοί εἰσι γογγυσμοὶ, μεμψιμοῖροι, κατὰ τὰς ἐπιθυμίας αὐτῶν πορεύομενοι· ὅτι τὸ νόμισμα αὐτῶν καλὸν πέροισμα, θαυμάζοντες πρόσσωπα, ὡφελίαν χάριν.
- 17 Ὑμεῖς ὁ ἀγαπητοὶ μνηστῆρες τῶν ῥημάτων τῶν προφητῶν ὑπὸ τῶν ἀποστόλων τῆ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ.
- 18 Ὅτι ἔλεγον ὑμῖν, ὅτι ἐν ἑκάστῳ χρόνῳ ἔσονται ματαίνονται, κατὰ τὰς ἐαυτῶν ἐπιθυμίας πορεύομενοι ὡς ἀσεβεῖς.
- 19 Οὗτοί εἰσιν οἱ ἀποδορίζοντες ἐαυτοὺς, ψυχικοὶ, πνεύμα μὴ ἔχοντες.
- 20 Ὑμεῖς ὁ ἀγαπητοὶ, τῇ ἀγιωτάτῃ ὑμῶν πίστει ἐκδοκῶντες ἐαυτοὺς, ἐν Πνεύματι ἀγίῳ προσδοκῶμενοι.
- 21 Ἐαυτοὺς ἐν ἀγάπῃ Θεῷ τηρήσατε, προσδεχόμενοι τὸ ἔλεος τῆ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ εἰς ζωὴν αἰώνιον.
- 22 Καὶ ὅς μὲν ἔλεγετε ἀφαιρέτες.
- 23 Οὐδὲ ἐν φόβῳ σώζεστε, ὅτι τῷ πυρὶ ἀσπάζοντες, μισῶντες καὶ τὸν ἀπὸ τῆς σαρκὸς ἐσπελωμένον χιτῶνα.
- 24 Τῷ ὅτι δυναμένῳ φυλάξαι ὑμᾶς ἀπαιτίαις, καὶ εἶναι κατενώπιον τῆς δόξης αὐτοῦ ἀμώμους ἐν ἀγαλλίασει.
- 25 Μόνῳ σοφῷ Θεῷ Σωτῆρι ἡμῶν δόξα καὶ μεγαλοσύνη, κράτος καὶ ὑπερτασία, ὅτι νῦν καὶ εἰς πάντας τοὺς αἰῶνας. Ἀμήν.

ΑΠΟΚΑΛΥΨΙΣ ΙΩΑΝΝΟΥ ΤΟΥ ΘΕΟΛΟΓΟΥ.

Κεφ. α'. β

1 **Α** Πεκάλυψις Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἣν ἔδωκεν αὐτῷ ὁ Θεός, δείξαι τοῖς δούλοις αὐτοῦ αὐτὴν γεέσθαι ταῦτα. Ἐσήμηνεν ἀποστείλας ὁ ἄγγελος αὐτῷ τῷ δούλῳ αὐτοῦ Ἰωάννῃ.

2 Ὅς ἐμνηστεύησεν τὸν λόγον τῷ Θεῷ, ἔτι τῇ μητρὶ εἰς Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὅσα τε εἶδε.

3 Μακάριος ὁ ἀναγινώσκων, ἔτι οἱ ἀκούοντες τῶν λόγων τῆς προφητείας, καὶ τηροῦντες τὰ ἐν αὐτῇ γεγραμμένα. ὁ ὃς καὶ ἐγγύς.

4 Ἰωάννης ταῖς ἐπτα ἐκκλησίαις ταῖς ἐν τῇ Ἀσίᾳ· χάρις ὑμῖν ἔσται ἀπὸ τοῦ ὄντος καὶ ὁ ὢν καὶ ὁ ἐρχόμενος· καὶ ἀπὸ τοῦ ἐπτα Πνευμάτων ἃ εἰσιν ἐνώπιον τοῦ θρόνου αὐτοῦ.

5 Καὶ ἀπὸ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ὁ μάρτυς ὁ πιστός, ὁ πρωτότοκος ἐκ τῶν νεκρῶν, ὁ ὢν ἄρχων τοῦ βασιλείου τῆς γῆς· τῷ ἀγαπήσартι ἡμᾶς, ἔσται ἡμῶν ἀπὸ τοῦ ἀμνηστῶν ἡμῶν ἐν τῷ αἵματι αὐτοῦ.

6 Καὶ εἰποῖσιν ἡμῶς βασιλεῖς ἔσταις τῷ Θεῷ καὶ Πατρὶ αὐτοῦ· μὴ τὸ ἡ δόξα καὶ τὸ κράτος εἰς τὴν αἰῶνα τοῦ αἵματος. ἀμήν.

7 Ἰδὲ, ἔρχεται μετὰ τοῦ νεφέλων, καὶ ὄψεται αὐτὸν πᾶς ὀφθαλμός, καὶ οἴσιν αὐτὸν ἑξικέντησάν· καὶ κρύβεται ἐπ' αὐτὸν πᾶσι αἱ φύλαί τῆς γῆς. καὶ αἶμα.

8 Ἐγὼ εἰμι τὸ α καὶ τὸ ω, ἀρχὴ καὶ τέλος, ὁ ὢν καὶ ὁ ὢν καὶ ὁ ἐρχόμενος, ὁ πᾶς κρᾶτος.

9 Ἐγὼ Ἰωάννης ὁ καὶ ἀδελφὸς ὑμῶν, καὶ συγκατα τὰς ἐν τῷ θλίψιν καὶ ἐν τῇ βασίλειᾳ καὶ ὑπομονῇ Ἰησοῦ Χριστοῦ, ἐγγύς ἐστι τῇ νύκτι τῇ καλεσμένη Παύῳ, ὁ ἄγγελος τὸν λόγον τῷ Θεῷ καὶ ὁ ἄγγελος πᾶσι μαρτυρεῖ Ἰησοῦ Χριστοῦ.

10 Ἐγὼ

10 Εὐχόμενος ἐν Πνύμφῃ ἐν τῇ κυριακῇ ἡμέ-
ρῃ· καὶ ἤκουσα ὑπὸ μου φωνὴν μεγάλην ὡς σάλ-
πιγγος·

11 Λεγοῦσθε· Εἰγὼ εἰμι τὸ Α' ἔτι τὸ Ω, ὁ
πρῶτος ἔτι ὁ ἔσχατος· καὶ· Ὁ βλέπει γραφὰς
ἐς βιβλίον, ἔτι περιψόνταις ὁκκλησίαις ταῖς ἐν
ἔσση, ἐς Ἐφεσον, ἔτι ἐς Σμύρναν, ἔτι ἐς Πέργα-
μον, ἔτι ἐς Θυατείραν, ἔτι ἐς Σάρδεας, καὶ ἐς Φιλαδέλ-
φειαν, ἔτι ἐς Λαοδικεάν.

12 Καὶ ἐπέστρεψα βλέπειν τὴν φωνὴν ἥτις ἐλά-
λῃ μετ' ἐμοῦ· ἔτι ὑπερέφαιεν ἔσχατος λυχνίας
χρυσᾶς·

13 Καὶ ἐν μέσῳ τῶν ἑπτὰ λυχνιῶν ἄνοιον ἴδω ἀν-
θίστα, ἐκδεδωμένον πόδῃ, ἔτι περιζωσμένον πρὸς
ταῖς μεσοῖς ζώνῃς χρυσῇ·

14 Ἡ δὲ κεφαλὴ αὐτοῦ καὶ αἱ τρίχες λευκαὶ ὡς ἁ-
λὸν λευκόν, ὡς χιτὼν· ἔτι οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ὡς
φλόξ πυρός·

15 Καὶ οἱ πόδες αὐτοῦ ὅμοιοι χαλκικλιβάνῳ, ὡς
ἐν καμίνῳ περυσωμένοι· καὶ ἡ φωνὴ αὐτοῦ ὡς φωνὴ
ὕδατος πολλοῦ·

16 Καὶ ἔχων ἐν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ χερὶ ἄσπερος
ἑπτὰ· ἔτι ὅταν ἔσθῃ αὐτὸν ὁμοφαῖα δίεσσι· ἔ-
τι ἔτι ὁκκλησίαις· ἔτι ὅταν αὐτὸν ὡς ὁ ἔτι φαίεν
ἐν τῇ δυνάμει αὐτοῦ·

17 Καὶ ὅτε ἔδον αὐτόν, ἔπεσα πρὸς τῆς πόδας
αὐτοῦ ὡς νεκρός· ἔτι ἐπέθηκε τὴν δεξιάν αὐτοῦ ἐπὶ
ἐμὴν κεφαλὴν· καὶ ἔπεσε μοι· Μὴ φοβῆ· ἐγὼ εἰμι ὁ πρῶ-
τος ἔτι ὁ ἔσχατος·

18 Καὶ ἔτι ζῶν, ἔτι ἐκνόμενος νεκρός, ἔτι ἔτι εἰμι
ἐς τῆς αἰώνων αἰώνων· ἀμήν· ἔτι ἔχω τὰς πληγὰς
τῶν ἁδῶν ἔτι τῶν θανάτων·

19 Γράψον ἂν εἶδες, ἔτι ἂν εἴσι, ἔτι ἂν μέλλῃ γίνει-
σθαι μετὰ πάντα·

20 Τὸ μυστήριον τῶν ἑπτὰ ἄσπερων ὡς εἶδες
ὑπὸ τῆς δεξιᾶς μου, ἔτι τὰς ἑπτὰ λυχνίας τὰς
χρυσᾶς· οἱ ἑπτὰ ἄσπεροι, ἄγγελοι τῶν ἑπτὰ ὁκκλη-
σιῶν εἰσι· ἔτι αἱ ἑπτὰ λυχνίαι ὡς εἶδες, ἑπτὰ ὁκκλη-
σίαι εἰσι·

Κεφ. Α'. 1.

1 ΤΩ ἀγγέλῳ τῇ Εἰσεσίῃ ἐκκλησίας γράψον· Τάδε λέγει ὁ κρατῶν τοὺς ἑπτὰ ἀστέρας ἐν τῇ δεξιᾷ αὐτοῦ, ὁ περιπατῶν ἐν μέσῳ τῶν ἑπτὰ λυχνίων τῶν χρυσῶν.

2 Οἶδα τὰ ἔργα σου, καὶ τὸν κόπον σου, καὶ τὴν ὑπομονὴν σου, καὶ ὅτι ἡ δύνη βασάσαι κακούς· ἔπειράσω τὸς φάσκοντας εἶναι ἀποστόλους, ἔκ εἰσὶν ἔθνη αὐτῶν ψεύδεις·

3 Καὶ ἐβάστασας, ἔκ ὑπομονῆς ἔχεις, καὶ διὰ τὸ ὄνομα μου κεκοπίπκας, καὶ ἡ κέκμηκας·

4 Ἀλλ' ἔχω κατ' σὺν, ὅτι τὴν ἀγάπην σου τῷ πατρὶ καὶ τῷ ἀφῆκας·

5 Μνημόνευε ὅν πίδει ἐκπέπτοκας, ἔκ μετανόησιν καὶ τὰ πρῶτα ἔργα ποιήσων· εἰ δὲ μὴ, ἐρχομαι πρὸς ταχὺ, ἔκ κινήσω τὴν λυχνίαν σου ἐκ τῆς τοπῆς αὐτῆς, καὶ ἐλθὼ μὴ μετάνοήσῃς·

6 Ἀλλὰ τὰ τοῦ ἔχεις, ὅτι μισαῖς τὰ ἔργα τῶν Νικολαϊτῶν, ἃ καὶ ἐγὼ μισῶ·

7 Ὁ ἔχων ἤς, ἀκυσάτω τὴν τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς ἐκκλησίαις· Τὸ νικῶν δώσω αὐτῷ φραγὸν ἐκ τῆς ζῶης, ὁ ἐστὶν ἐν μέσῳ τῆς παραδείσου τῆς Θεοῦ·

8 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῇ ἐκκλησίᾳ Σμυρναίων γράψον· Τάδε λέγει ὁ πρῶτος ἔκ ἔχων, ὅς ἐγενήτο νεκρὸς ἔζησεν·

9 Οἶδα σὺν τὰ ἔργα σου ἔκ τῆς θλίψεως ἔκ τῆς πτωχείας, (πλήτῃς ἔκ) καὶ τῆς βλασφημίας τῶν λεγοντῶν Ἰουδαίους εἶναι ἐαυτὸς, καὶ ἔκ εἰσὶν, ἀλλὰ σὺν γρηγορή τῆς ταπείνωσιν·

10 Μηδὲν φοβῆσθαι μέλλεις πάχυν· ἰδοὺ, μέλλω βαλεῖν ἡμέραν ὅς διάβολος εἰς φυλακὴν, ἵνα πηραστῇ· ἔξετε θλίψιν ἡμερῶν δέκα· γίνε πρὸς ἀγὼν θανάτου, καὶ δώσω σοι τὴν στέφανον τῆς ζῶης·

11 Ὁ ἔχων ἤς, ἀκυσάτω τὴν τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς ἐκκλησίαις· Ὁ νικῶν ἡ μὴ ἀδικηθῇ ἐκ τῆς θανάτου τῆς δόξης·

12 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῇ ἐν Περγῶν ἐκκλησίᾳ γράψον· Τάδε λέγει ὁ ἔχων τὴν ῥομφαίαν τὴν δίδουσαν ἔκ ἐξέρχου·

13 Οἶδα τὰ ἔργα σου, καὶ πᾶν κατωικῆς, ὅτι ἡ θρόνος τῆς σατανᾶς, καὶ κρατῶς τὸ ὄνομα μου, ἔκ κινήσω τὴν πίσιν μου, ἔκ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐν αἷς ἀντίπας ὁ μύστος μου ὁ πρὸς, ὅς ἀπεκτάρθῃ παρ' ὑμῶν ὅτι κατωικῆς ὁ σατανᾶς·

14 Ἀλλ' ἔχω κατὰ σὺν ὁλίγα, ὅτι ἔχεις ὁκνητήντας τὴν διδασχὴν Βαλαάμ, ὅς ἐδίδασκεν ἐν τῷ Βαλαάμ βαλεῖν

ἐκλήμην σκαδύδαλον ἐνώπιον τῷ Γίῳ Ἰσραὴλ, φαγῶν
εἰδωλόθυτα, ἔ πορνεύσαι.

15 Οὕτως ἔχας ἔ σὺ κρατῶντας τὴν διδαχὴν τῷ
Νικολαίτῳ, ὁ μισός.

16 Μετανοήσον· εἰ ὃ μὴ, ἐρχομαὶ σοὶ ταχύ,
καὶ πολεμήσω μετ' αὐτῷ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ τῆς ἐμάτος
μου.

17 Ὁ ἔχων ὅς, ἀκυσάτω ἡ τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς
ἐκκλησίαις· Τὴν νικῶντι δώσω αὐτῷ φαγεῖν ἀπὸ τοῦ μέ-
νου καὶ κεκρυμμένου, ἔ δώσω αὐτῷ ψῆφον λευκὴν, ἔ ἐ-
πὶ τῷ ψῆφον ὄνομα καλὸν γεγραμμένον, ἔ υἱαὶς ἐ-
γνω εἰ μὴ ἔ λαμβάνουσιν.

18 Καὶ τὴν ἀγγελίαν, ἣ ἐν Θουατείροις ἐκκλησίαις γρά-
ψον· Ταῦτε λέγει ὁ Γίος τοῦ Θεοῦ, ὁ ἔχων τὰς ἐφθαλ-
μὰς αὐτοῦ ὡς φλόγα πυρός, ἔ οἱ πόδες αὐτοῦ ὅμοιοι
χαλκοκίβδηροι.

19 Οἶδά σε τὰ ἔργα, ἔ τὴν ἀγάπην, ἔ τὴν δια-
κονίαν, ἔ τὴν πίσιν, ἔ τὴν ὑπομονὴν σε, ἔ τὰ ἔργα
σε, ἔ τὰ ἔχματα πλείονα τῷ πρώτῳ.

20 Ἀλλ' ἐγὼ κατὰ σὴ ὁλίγια, ὅτι ἐγὼ τὴν γυναῖκα
Ἰζαβὴλ, τὴν λέγουσαν ἐαυτῇ προφῆτιν, διδάσκων
καὶ πλῆρᾶσθαι ἐμὴς δόξης, πορνεύσαι, ἔ εἰδωλόθυ-
τα φαγῶν.

21 Καὶ ἔδωκα αὐτῇ χρόνον ἕνα μετανοήσῃ ὅτι ἔ πορ-
νεύσας αὐτῆς, καὶ ἔ μετανοήσεν.

22 Ἰδὼν, ἐγὼ βάλλω αὐτῇ εἰς κλίνην, ἔ τῆς μοι-
χούσας μετ' αὐτῆς εἰς θλίψιν μεγάλην, ἐὰν μὴ με-
τανοήσωσιν ἐκ τῶν ἔργων αὐτῶν.

23 Καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς ἀποκτενέει ἐν θανάτῳ, καὶ
γνωρίζονται πᾶσαι αἱ ἐκκλησίαι ὅτι ἐγὼ εἰμι ἐρχόμενος
ταχύ, ἔ καρδίας· ἔ δώσω ὑμῖν ὅσα ἔθετε κατὰ τὰ ἔργα
ὑμῶν.

24 Ὑμῖν ὃ λέγω, ἔ λοιποῖς πᾶσι ἐν Θουατείροις,
ὅσοι ἔκ ἔχουσι τὴν διδαχὴν ταύτην, ἔ οἱ πνεῖς καὶ
ἐγνωσάν τὰ βᾶθρα τῆς σατανᾶς, ὡς λέγουσιν· ἔ βαλεῖ
ἐφ' ὑμῶς ἄλυσ βάραι.

25 Πλὴν ὁ ἔχετε, κρατήσατε ἄλλως ἢ ἃ ἔξετε.

26 Καὶ ὁ νικῶν, καὶ ὁ τηρῶν ἄχρι τέλους τὰ ἔργα μου,
δώσω αὐτῷ θρόνον ὅτι τῷ ἐθνήσιν.

27 Καὶ ποιμανεῖ αὐτῆς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ, ὡς τὰ
σκεῦη τὰ κεραμικὰ συντρίβεται, ὡς καὶ γὰρ ἔλεξα πα-
ρὰ τοῦ Πατρὸς μου.

28 Καὶ δώσω αὐτῷ τὴν ἀστέρα καὶ ποιῶν.

29 Ὁ ἔχων ὅς, ἀκυσάτω ἡ τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς
ἐκκλησίαις.

Κεφ. γ'. 3.

1 **Κ** Αἱ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐν Σάρδεσιν ἐκκλη-
σίας γράψον· Ταῦτε λέγει ὁ ἔχων
τὰ ἑπτὰ πνεύματα τοῦ Θεοῦ, καὶ τοὺς ἑπτὰ ἀγγέ-
λους· Οἶδά σου τὰ ἔργα, ἐπὶ τὸ ὄνομα ἔχεις ὅτι ζῆς,
καὶ πενὶς εἶ.

2 Γίνε γρηγορὸν, καὶ κλείσον τὰ λοιπὰ ἃ μέλει
ἀποθάνειν· ὃ γὰρ εὗρηκά σου τὰ ἔργα πεπληρωμένα
ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

3 Μνημόσυνε οὗτον πᾶς εἰληφας καὶ ἤκουσας, καὶ
τέρει, καὶ μετάρσῃσον· Εἴδω γὰρ μὴ γρηγορήσῃς,
ἥξω ὅππῃ σε ὡς κλέπτης, καὶ ὃ μὴ γνώς ποῖόν κἀν
ἔξω ὅππῃ σε.

4 ἔχεις ὀλίγα ἐνόματα καὶ ἐν Σάρδεσιν, ἃ ἔκλειψαν
αὐτὰ τὰ ἱμάτια αὐτῶν, καὶ περιπατήσωσι μετ' ἐμοῦ ἐν
λευκοῖς· ὅππῃ ἀξιοί εἰσιν.

5 Ὁ νικῶν, ἔσται περιβεβλημένος ἐν ἱματίῳ λευ-
κοῖς· καὶ οὐ μὴ ὑβηλεύσῃ τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐν
τῇ βίβλῃ τῆς ζωῆς, καὶ ὑπομονογήσεται τὸ ὄνο-
μα αὐτοῦ ἐνώπιον τοῦ Πατρὸς μου, καὶ ἐνώπιον τοῦ ἁγ-
γέλου αὐτοῦ.

6 Ὁ ἔχων οὗτο, ἀκουσάτω τί τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς
ἐκκλησίαις.

7 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τῆς ἐν Φιλαδελφείᾳ ἐκκλησίας
γράψον· Ταῦτε λέγει ὁ ἅγιος, ὁ ἀληθινός, ὁ ἔχων
τὴν κλεῖδα τοῦ Δαβὶδ· ὁ ἀνοίγων, καὶ ὁ κλείων· ὁ
κλείων, καὶ ὁ κλείει ἀνοίγει.

8 Οἶδά σου τὰ ἔργα· ἰδὼ δέδωκα ἐνώπιόν σου θύραν
ἀνεῳγμένην, καὶ ὁ κλείων δύναται κλείσαι αὐτήν· ὅππῃ
πρὶν ἔχεις δύναμιν, καὶ ἐτήρησας μὴ τὸ λόγον, καὶ ἡ
ἀρνήσῃ τὸ ὄνομα μου.

9 Ἰδὼ, δίδωμι ἐκ τῆς συναγωγῆς τοῦ σπλῆ-
νός σου τοῖς πενήτεσιν ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἶναι, καὶ ἐκ εἰσέ-
λθοντες ψάλλοντες· ἰδὼ, ποιήσω αὐτοῖς ἵνα ἤξωσι καὶ
προσκυνήσωσιν ἐνώπιον τῶν ποδῶν σου, καὶ γνώσιν ὅπ-
πῃ ἡγάγατά σε.

10 Ὁ πᾶς ἐτήρηται τὸ λόγον τῆς προμηνῆς μου, καὶ ὁ
σε τήρησεν ἐν τῇ ὥρᾳ τοῦ πειρασμοῦ καὶ μελλήτης ἐν τῇ
συνῇ ἐπὶ τῇ οἰκονομείᾳ ὅλης, πενήταί σου καὶ κατωκί-
νῃς ὅππῃ τῇ ζωῇ.

11 Ἰδὼ, ἔρχομαι ταχύ· κράτει ὃ ἔχεις, ἵνα μὴ
δύῃς ἀπὸ τοῦ πειρασμοῦ σου.

12 Ὁ νικῶν, ποιήσω αὐτὸν σύλον ἐν τῇ πόλει
τοῦ Θεοῦ μου, καὶ ἔξω οὐ μὴ ὑβηλεύσῃ ἐπὶ τῇ
γῇ· ἰδὼ αὐτὸν τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ μου, καὶ τὸ ἵνα
μὴ τῆς πόλεως τοῦ Θεοῦ μου τῆς κατὰ τὴν ἱερουσαλὴμ
καὶ κα-

ἢ καταβαίνειν ἐκ τῆς ἑρᾶς ἀπὸ τοῦ Θεοῦ μου, ἔ το ὅτο-
μα μου τὸ καινόν.

13 Ὁ ἔχων ὅς, ἀκυσάτω πὶ τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς
ἐκκλησίαις.

14 Καὶ τῷ ἀγγέλῳ τοῦ ἐκκλησίας Λαοδικέων γρα-
ψόν· Ταῦδε λέγει ὁ Ἀμὲν, ὁ μάρτυς ὁ πιστός ἡ ἀλη-
θινός, ἡ ἀρχὴ τοῦ πίστεως τοῦ Θεοῦ.

15 Οἶδά σε τὰ ἔργα, ὅτι ἔτε ψυχρός εἶ, ἔτε ζε-
στός ὀφείλον ψυχρὸς εἶναι ἢ ζεστός.

16 Οὕτως, ὅτι χλιαρὸς εἶ, ἔ ἔτε ψυχρός, ἔτε ζε-
στός, μέλω σε ἐκμεσαι ἐκ τῆς σάρκατός μου.

17 Ὅτι λέγεις· Ὅτι πτωχὸς εἰμι, ἔ πεπλή-
τῃκα, ἔ ἡδενός χρειάρι ἔχω. Καὶ οὐκ οἶδας ὅτι
οὐ εἶ ὁ ταλαίπωρος, ἔ ἐλεηνός, ἔ πτωχός, ἔ τυ-
φλός, ἔ γυμνός.

18 Συμβάλλω σοι ἀγνάσσει παρ' ἐμοῦ χρυσίον
πεπυρωμένον ἐκ πυρός, ἵνα πλυθῇς. ἔ ἱμάτιον
λευκόν, ἵνα περιβάλλῃ, ἔ μὴ φανερωθῇ ἡ αἰσχυνὴ ἡ
γυμνότητός σε· ἔ κολλῶσαν ἔχρισαν τῆς ὀφθαλμῶς
σε, ἵνα βλέπῃς.

19 Ἐγὼ ὅσος ἐὰν φίλος, ἐλέγχω ἔ παιδάω· ζή-
λωσον ἢ ἔ μετάρησον.

20 Ἰδὲ, ἔστηκα ὑπὶ τῷ θύρῳ, ἔ κρόν· ἐὰν τις
ἀκούσῃ τῆς φωνῆς μου, ἔ ἀνοίξῃ τῷ θύρῳ, εἰσε-
λεύσεται πρὸς ἐμὲ, ἔ δεκνῆσω μετ' αὐτοῦ, ἔ αὐτὸς
μετ' ἐμῆ.

21 Ὁ νικῶν, δώσω αὐτῷ καθίσαι μετ' ἐμῆ ἐν τῷ
θρόνῳ μου, ὡς καὶ ἔνικησα, ἔ ἐκάθισα μετ' τοῦ Πα-
τρός μου ἐν τῷ θρόνῳ νῦν.

22 Ὁ ἔχων ὅς, ἀκυσάτω τί τὸ Πνεῦμα λέγει ταῖς
ἐκκλησίαις.

Κεφ. δ. α.

1 **Μ**ΕΤὰ ταῦτα εἶδον, ἔ ἰδοῦ, θύρα ὡ-
νευμένη ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἡ φωνὴ
ἡ πρώτη ἣν ἤκουσα ὡς σάλπιγγος λαλοῦσης μετ'
ἐμοῦ, λέγουσα· Ἀνάβα ὧδε, ἔ δεῖξω σοι ἃ δεῖ γνέ-
σθαι μετ' αὐτῶν.

2 Καὶ ἰδοὺς ἐχούμην ἐν πνεύματι· καὶ ἰδοῦ,
ἔκκειτο ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ὑπὶ τοῦ θρόνου
καθήμενος.

3 Καὶ ὁ καθήμενος ἦν ὅμοιος δράκτι λίθω ἰάσπι-
δι ἔ σαρδίῳ· ἔ ἔρις κυκλόθεν τοῦ θρόνου ὁμοίαι δρά-
κτι σφραγίδι.

4 Καὶ κυκλόθεν τοῦ θρόνου θρόνοι ἑκκοσι ἔ
τέσσαρες· ἔ ἐπὶ τῶν θρόνων εἶδον τῆς ἑκκοσι ἔ τέσσα-
ρας πρεσβυτέρους καθήμενους, περιβεβλημένους ἐν ἱματίοις
λευκοῖς.

λοκοῖς * ἔχον ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν σιφάνη
χυσῶς.

5 Καὶ ὅτι τὸ θρόνον περιόνται ἀσφαῖται ἔβου-
ται ἔφωναί * ἔπειτα λαμπάδες πυρὸς καὶ ὀμῶν
ἐνώπιον τοῦ θρόνου, αἱ εἰσι τὰ ἑπτὰ πνεύματα τοῦ
Θεοῦ.

6 Καὶ ἐνώπιον τοῦ θρόνου θάλασσα ὑαλίνη,
ὁμοία κρυστάλλῳ * καὶ ἐν μέσῳ τοῦ θρόνου ἡ κύβητς τοῦ
θρόνου τέσσαρα ζῶα γέμοντα ὀφθαλμῶν ἐμπροσθεν ἔ-
πισσθεν.

7 Καὶ τὰ ζῶα τὰ πρῶτον ὁμοίον ἔχοντι, ἔ τὸ δὲυ-
τερον ζῶον ὁμοίον μόσχῳ, καὶ τὸ τρίτον ζῶον ἔχον τὸ
προσωπὸν ὡς ἀνθρώπου, ἔ τὸ τέταρτον ζῶον ὁμοίον αἰ-
γῇ πεταμένῳ.

8 Καὶ τέσσαρα ζῶα, ἐν καθ' ἑαυτὸ, ἔχει ἀπὸ
πτέρυγας ἕξ κυκλόθεν, καὶ ἔσθωθεν γέμοντα ὀφθαλ-
μῶν * ἔ ἀνάπαισιν ἢ καὶ ἔχουσιν ἡμέρας ἔ νυκτός, λί-
γητα· Ἀγγιῶ ἀγγιῶ ἀγγιῶ Κύριε ὁ Θεὸς ὁ πάν-
τοκράτωρ, ὁ ὢν ἔ ὁ ἐν ἔ ὁ ἐρχόμενος.

9 Καὶ ὅταν δώσῃ τὰ ζῶα δέξασθαι ἔ πρὸς καὶ ὀψι-
θεν τὸ καθήμενον ἐπὶ τοῦ θρόνου, τὸ ζῶον ἢ τὸ
αἰῶνα τῶν αἰώνων.

10 Περὶ πάντας οἱ αἰῶνες ἔ τέσσαρες πρεσβύτεροι ἐνώ-
πιον τοῦ καθήμενου ἐπὶ τοῦ θρόνου, ἔ προσκυνοῦσιν τὸ
ζῶον ὡς τὸς αἰῶνας τῶν αἰώνων, ἔ βαλῶσι τὰς σιφά-
νας αὐτῶν ἐνώπιον τοῦ θρόνου, λέγοντες·

11 Ἀξιῶ ἡ Κύριε λαβεῖν τὴν δέξασθαι ἔ τὴν τιμὴν
ἔ τὴν δυνάμιν· ὅτι σὺ ἔκτισας τὰ πάντα, ἔ διὰ τὸ
δέλημά σε εἰσί, ἔ ὀκτίσθησάν.

Κεφ. ε'. 5.

1 **Κ** Αἱ εἶδον ἐπὶ τῶν δεξιῶν τοῦ καθήμενου ἐπὶ
τοῦ θρόνου βιβλίον γεγραμμένον ἔσθωθεν ἔ
ἐπισσθεν, κατεσφραγισμένοι σφραγίσιν ἑσπτά·

2 Καὶ εἶδον ἄγγελον ἰσχυρὸν κηρύσσοντα φωνῇ μεγάλῃ·
Τίς ἐστὶν ἄξιῶ ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, ἔ λῦσαι τὰς
σφραγίδας αὐτοῦ;

3 Καὶ ἡδεῖς ἡδύνατο ἐν τῷ ἔργῳ, ἡδὲ ἐπὶ τῇ γῇ
ἡδὲ ἀποκάτω τῆς γῆς, ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, ἡδὲ βλε-
πεῖν αὐτό.

4 Καὶ ἐγὼ ἔκλαιον πολλά, ἔπι ἡδεῖς ἄξιῶ ὡς
θῆ ἀνοῖξαι καὶ ἀναγνῶναι τὸ βιβλίον, ἔτε βλεψάμενος
αὐτό.

5 Καὶ εἶς ἐκ τῶν πρεσβυτέρων λέγει μοι· Μὴ
κλαῖε· ἰδοὺ, ἐτίκησεν ὁ ἄγιος ὁ ὢν ἐκ τῆς φυλῆς τοῦ
δα, ἡ ρίζα Δαβὶδ, ἀνοῖξαι τὸ βιβλίον, ἔ λῦσαι τὰς
ἑπτὰ σφραγίδας αὐτοῦ.

6 Καὶ

6 Καὶ εἶδον, καὶ ἰδὼν ἐν μέσῳ τῷ θρόνου ἔ
τῳ τεσσάρων ζώων, καὶ ἐν μέσῳ τῷ πρεσβυ-
τέρων, ἀρνίον ἐστῆκεν ὡς ἐσφαγμένον, ἔχον κε-
ρατὰ ἑπτὰ, καὶ ὀφθαλμοὺς ἑπτὰ· οἱ ἡσὶ τὰ
ἑπτὰ τῷ Θεῷ πνεύματα τὰ ἀπεσταλμένα εἰς τὰς
τῶν γῶν.

7 Καὶ ἦλθε ἔκλεψε τὸ βιβλίον ἐκ τοῦ δεξιῆς τοῦ κα-
θημένου ὑπὲρ τοῦ θρόνου.

8 Καὶ ὅτε ἔλαβε τὸ βιβλίον, τὰ τέσσαρα ζῶα
καὶ οἱ ἑκοσιτέσσαρες πρεσβύτεροι ἔπεσαν ἐνώπιον
τοῦ ἀρνίου, ἔχοντες ἑκάστος κισθάρια καὶ φιάλας
χρυσοῦς, γεμισσας θυριαμάτων, αἱ εἰσιν αἱ πρεσβυ-
καὶ τῷ ἁγίῳ.

9 Καὶ ᾄδουσιν ᾠδὴν καινὴν, λέγοντες· Ἀξίον
ἔλαβεν τὸ βιβλίον, καὶ ἀναῖξαι τὰς σφραγίδας
αὐτοῦ, ὅτι ἐσφαγῆς, καὶ ἠγόρασας τὴν Θεῷ ἡμᾶς
ἐν τῷ αἵματι σου, ὅτι πάσης φυλῆς ἔ
γλώσσης ἔ
λαβὲν ἔ
δυνες.

10 Καὶ ἐποίησας ἡμᾶς τῷ Θεῷ ἡμῶν βασιλεῖς ἔ
ιερεῖς ἔ
βασιλεύομεν ὑπὲρ τοῦ γῆς.

11 Καὶ εἶδον, καὶ ἤκουσα φωνὴν ἀγγέλων πολ-
λῶν κυκλῶν τῷ θρόνῳ καὶ τῷ ζώῳ καὶ τῷ πρεσβυ-
τέρων ἔ
ἦν ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν μυριάδες μυριάδων, ἔ
χιλιάδες χιλιάδων,

12 Λέγοντες φωνῇ μεγάλῃ· Ἀξίον ἐστὶ τὸ
ἀρνίον τὸ ἐσφαγμένον λαβεῖν τὴν δύναμιν καὶ
πλῆτον καὶ σοφίαν καὶ ἰσχύον καὶ πᾶν ἔ
δύον ἔ
δύον.

13 Καὶ πᾶν κτίσμα ὃ ἐστὶν ἐν τῷ οὐρανῷ
καὶ ἐν τῇ γῇ, καὶ ὑποκάτω τῆς γῆς,
καὶ ὑπὲρ τῆς θαλάσσης αἱ εἰσὶ, καὶ τὰ ἐν αὐ-
ταῖς πάντα, ἤκουσα λέγοντας· Τῷ καθήμενῳ
ὑπὲρ τοῦ θρόνου, καὶ ὑπὲρ ἀρνίον ἡ δόξα ἔ
ἡ τιμὴ καὶ ἡ δόξα ἔ
τὸ κράτος εἰς τοὺς αἰῶ-
νες τῷ αἰῶνι.

14 Καὶ τὰ τέσσαρα ζῶα ἔλεγον· Ἀμὲν·
καὶ οἱ ἑκοσιτέσσαρες πρεσβύτεροι ἔπεσαν, καὶ
προσκύνησαν ζῶντι εἰς τοὺς αἰῶνας τῷ αἰ-
ῶνι.

Κεφ. 5'. 6.

1 **Κ**ΑΙ ΕΙΔΟΝ ὅτε ἠνοιξε τὸ ἀρνίον μέσω
ἐκ τῶν σφραγίδων, ἔῃκουσα ἑνὸς ἐκ
τῶν πρεσβυτέρων ζῶν λέγοντων, ὡς φωνῆς βροντῆς·
Ἔρχη ἔβλεπε.

2 Καὶ εἶδον, ἔἰδον ἴππων λευκοὺς· ἔἰδον καθήμενον
ἐπ' αὐτοῦ, ἔχον τόξον· ἔἰδον αὐτὸν περιβεβλημένον,
ἔἰδον ἑλθέμενον, ἔἰδον νικῆσαι.

3 Καὶ ὅτε ἠνοιξε τὴν ὀκτῆραν σφραγίδα, ἤκουσα
τῶν ὀκτῶν ζῶν λέγοντων· Ἔρχη ἔβλεπε.

4 Καὶ ἔἰδον ἄλλον ἴππον πυρρόν· ἔἰδον κα-
θήμενον ἐπ' αὐτοῦ ἔἰδον αὐτὸν λαβεῖν τὴν εἰρήνην ἀπὸ
τῆς γῆς, ἔἰδον αἰνέσαι σφάξωσι· ἔἰδον αὐτὸν με-
τὰ χαίρει μεγάλη.

5 Καὶ ὅτε ἠνοιξε τὴν τρίτην σφραγίδα, ἤκουσα τῶν
τρίτων ζῶν λέγοντων· Ἔρχη ἔβλεπε. Καὶ εἶδον, ἔ-
ἰδον ἴππον μέλαν, ἔἰδον καθήμενον ἐπ' αὐτοῦ, ἔἰδον
ζυγὸν ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ.

6 Καὶ ἤκουσα φωνῶν ἐν μέσῳ τῶν πρεσβυτέρων
ζῶν λέγουσάν· Χαίρει σίτα δυνεῖν, ἔἰδον τρεῖς χι-
νικίς κροῖστος δυνεῖν· ἔἰδον τὸ ἔλαιον ἔἰδον οἶνον μὴ
ἀδικήσας.

7 Καὶ ὅτε ἠνοιξε τὴν σφραγίδα τὴν τέταρ-
την, ἤκουσα φωνῶν τῶν τετάρτων ζῶν λέγουσάν· Ἔρχη
ἔβλεπε.

8 Καὶ εἶδον, καὶ εἶδον ἴππον χλωρὸν, ἔἰδον
καθήμενον ἐπ' αὐτοῦ ὄνομα αὐτοῦ ὁ Θάνατος·
ἔἰδον ἄδης ἀκολουθεῖ μετ' αὐτοῦ· καὶ εἶδον αὐ-
τοῖς ἔἰδον ἀποκτείναντες ἐπὶ τὸ τέταρτον τῆς γῆς, ἔἰδον
ῥομφαία ἔἰδον λιμὸν ἔἰδον θάνατον, ἔἰδον τὸν
θάνατον τῆς γῆς.

9 Καὶ ὅτε ἠνοιξε τὴν πέμπτην σφραγίδα, εἶδον
ἀποκἀτω τοῦ θυσιαστηρίου τὰς ψυχὰς τῶν ἐσφαγ-
μένων διὰ τὸν λόγον τοῦ Θεοῦ, ἔἰδον τὴν μαρ-
τυρίαν ἣν ἔχον.

10 Καὶ ἔκραζον φωνῇ μεγάλῃ, λέγοντες· Ἐὰν
πίτε ὁ Δεσπότης ὁ ἅγιος· ἔἰδον ἀληθινὸς οὐ κρίναι
ἔἰδον ἐκδικεῖς τὸ αἷμα ἡμῶν ἀπὸ τῶν κατωκυρύντων ἐπὶ
τῆς γῆς.

11 Καὶ εἶδον αὐτοὺς ἐκείνοις τοιαῦτα λευκαῖς, ἔἰ-
δον αὐτοὺς ἵνα ἀναπαύσωνται ἐν χρόνον μι-
κρόν, ἵνα οὐ πληρώσονται ἔἰδον οἱ σύνδουλοι αὐτῶν
ἔἰδον οἱ ἀδελφοὶ αὐτῶν, οἱ μέλλοντες ἀποκτείνεσθαι
ὡς ἔἰδον αὐτοὺς.

12 Καὶ εἶδον ὅτε ἠνοιξε τὴν σφραγίδα τὴν
ἕκτην, ἔἰδον σεισμὸς μέγας ἐγένετο, ἔἰδον
ἔἰδον

ἐγένετο μέλας ὡς σάκκῳ τρίχινῳ, ἔ ἡ σελήνη
ἐγένετο ὡς αἷμα.

13 Καὶ οἱ ἀσέρες ἦ κρᾶμῷ ἔπεσαν εἰς τὴν γῆν ὡς
συκὴ βαλλεῖ τῆς ὀλύνθους αὐτῇ, ὑπὸ μεγάλῳ ὀρέμῳ
σηομένη.

14 Καὶ κρᾶμὸς ἀπεχορείσθη ὡς βιβλίον ἐλίσσῃ-
νον, ἔ παρ' οὐρῶν ἔ ἰῆσθ' ὅκ τῷ τόπων αὐτῶν
ἐκινήσονται.

15 Καὶ οἱ βασιλεῖς τῆ γῆς, ἔ οἱ μεγιστάνες, ἔ οἱ
πλείστοι, ἔ οἱ χιλιάρχοι, ἔ οἱ δυνατοί, ἔ πᾶς ὄν-
τις ἔ πᾶς ἐλθούσῃ ἐκρυψάτω ἐν τῷ ἑωτὲς εἰς τὰ σπήλαια
ἔ εἰς τὰς πέτρας τῷ ὄρει.

16 Καὶ λέγουσι τοῖς ὄρεσι ἔ ταῖς πέτραις· Πέ-
σετε ἐφ' ἡμῶς, ἔ κρύψατε ἡμῶς ἀπὸ προσώπου
ἡ καθήμενου ὑπὲρ τοῦ θρόνου, ἔ ἀπὸ τῆς ὀργῆς
ἡ ἀρνίᾳ.

17 Ὅτι ἦλθεν ἡ ἡμέρα ἡ μεγάλη τῆ ὀργῆς αὐτῆς.
ἔ τίς δύναται σταθῆναι;

Κεφ. ζ'. 7.

1 **Κ** Αὶ μετὰ ταῦτα εἶδον τέσσαρας ἄγγέλους
ἐστῶτας ὑπὲρ τὰς τέσσαρας γωνίας τῆς
γῆς, κρατῶντας τῆς τέσσαρας ἀνέμων τῆς γῆς, ἵνα μὴ
πνίῃ ἄνθρωποι ὑπὲρ τῆ γῆς, μήτε ὑπὲρ τῆ θαλάσσης,
μήτε ὑπὲρ πᾶν δένδρον.

2 Καὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον ἀρᾶντα ἀπὸ ἀ-
γατοῦ ἡλίου, ἔχοντα σφραγίδα Θεοῦ ζώντῃ.
ἔ ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ, τοῖς τέσσαρσιν ἀγγέλοις,
εἰς ἐδοῦθα αὐτοῖς ἀδικῆσαι τὴν γῆν ἔ τὴν θα-
λάσσαν.

3 Λέγουσιν· Μὴ ἀδικήσῃτε τὴν γῆν, μήτε τὴν θα-
λάσσαν, μήτε τὰ δένδρα, ἄλλως δ' σφραγισομεν τὰς
θάλας ἡ Θεὸς ἡμῶν ὑπὲρ τῶν μετόπισιν αὐτῶν.

4 Καὶ ἤκουσα τὸν ὄρισμόν τῶν ἐσφραγισμέ-
των· οὐδ'· χιλιάδες ἐσφραγισμένοι ὅκ πάσης φυλῆς
ὑπὲρ Ἰσραὴλ.

5 Ἐκ φυλῆς Ἰούδα, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι·
ἐκ φυλῆς Ρ'αββὴν, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι· ἐκ
φυλῆς Ἰσάδ, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι.

6 Ἐκ φυλῆς Ἀσέρ, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμέ-
νοι· ἐκ φυλῆς Νεφθαλίμ, 1 β'. χιλιάδες ἐσφρα-
γισμένοι· ἐκ φυλῆς Μάμασση, 1 β'. χιλιάδες ἐσ-
φραγισμένοι.

7 Ἐκ φυλῆς Σιμεὼν, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμέ-
νοι· ἐκ φυλῆς Λούι, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι· ἐκ
φυλῆς Λαβιάδ, 1 β'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι.

8 Ἐκ

8 Ἐκ φυλῆς Ζαβουλὼν, ἰβ'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι· ἔκ φυλῆς Γωσήφ, ἰβ'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι· ἔκ φυλῆς Βενιαμὴν, ἰβ'. χιλιάδες ἐσφραγισμένοι.

9 Μετὰ ταῦτα ἴδον, καὶ ἰδοὺ ὄχλῳ πολλῷ, ὃν ἀριθμῆσαι οὐκ ἔστιν ἡδύνατο, ἔκ παντός ἔθνους ἔ φυλῶν ἔ λαῶν ἔ γλωσσῶν, ἑστῶτες ἐνώπιον τοῦ θρόνου ἔ ἐνώπιον τοῦ ἁγίου, περιβεβλημένοι στολὰς λευκάς· ἔ φοῖνικες ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν.

10 Καὶ κρίζοντες φωνῇ μεγάλῃ, λέγοντες· Ἡ σωτηρία τοῦ Θεοῦ ἡμῶν τῷ καθήμενῳ ὑπὲρ τοῦ θρόνου, ἔ τῷ ἁγίῳ.

11 Καὶ πάντες οἱ ἄγγελοι ἐσκέσαν κύκλῳ τοῦ θρόνου ἔ τῷ πρεσβυτέρῳ ἔ τῷ τοιοῦτον ζῶν, ἔ ἔπεσον ἐνώπιον τοῦ θρόνου ὑπὲρ πρόσωπον αὐτοῦ, ἔ προσεκύνησαν τῷ Θεῷ,

12 Λέγοντες· Ἀμήν· ἡ δόξα ἔ ἡ δόξα ἔ ἡ σοφία ἔ ἡ δόξα ἔ ἡ δύναμις ἔ ἡ ἐξουσία ἔ ἡ τιμὴ ἔ ἡ δόξα ἔ ἡ δόξα τῷ Θεῷ ἡμῶν εἰς τὰς αἰῶνας τοῦ αἰῶνος. Ἀμήν.

13 Καὶ ἀπεκρίθη εἰς ἃς τῷ πρεσβυτέρῳ, λέγων μοι· Οὗτοι οἱ περιβεβλημένοι τὰς στολὰς τὰς λευκάς, τίνες εἰσὶν, ἔ ποθεν ἦλθον;

14 Καὶ εἶρηκα αὐτῷ· Κύριε, σὺ οἶδας. Καὶ ἔπε μοι· Οὐκ εἰσὶν οἱ ἐρχόμενοι ἐκ τοῦ θλίψεως τοῦ μεγάλου· ἔ ἐπλάτυναν τὰς στολὰς αὐτῶν, καὶ ἐλούσαναι στολὰς αὐτῶν ἐν τῷ αἵματι τοῦ ἁγίου.

15 Διὰ τοῦτό εἰσιν ἐνώπιον τοῦ θρόνου τοῦ Θεοῦ, ἔ λατρεύουσιν αὐτῷ ἡμέρας ἔ νυκτός ἐν τῷ βιβλίῳ αὐτοῦ· ἔ ὁ καθήμενος ὑπὲρ τοῦ θρόνου, σκηνώσκει ἐπ' αὐτῆς.

16 Οὐ πεινάσκειν ἔστι, οὐδὲ διψήσουσιν ἔστι, οὐδὲ μὴ πῆσῃ ἐπ' αὐτῆς ὁ ὄλιθος, οὐδὲ πᾶν κῶμα.

17 Ὅτι τὸ ἅγιον τὸ ἀνά μέσον τοῦ θρόνου ποιᾷται αὐτῆς· ἔ ὁδηγῆται αὐτῆς ἐπὶ ζωῆς τοῦ βιβλίου· ἔ ἔσχαλψεν ὁ Θεὸς πᾶν δάκρυον ἀπὸ τοῦ ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ.

Κεφ. γ'. Β.

1 **Κ** Αὐτὸς ὅτε ἤνοιξε τὴν σφραγίδα τὴν ἑβδόμην, ἐγένετο σιγὴ ἐν τῷ βιβλίῳ ὡς ἡμίωρον.

2 Καὶ εἶδον τὴν ἑπτὰ ἀγγέλους, οἳ ἐνώπιον τῆς Θεῆς ἕστηκον. Ἐδόθησαν αὐτοῖς ἑπτὰ σάλπιγγες.

3 Καὶ ἅλθον ἀγγέλους ἦλθεν, καὶ ἐσάβη ὑπὲρ τοῦ θυσιαστηρίου, ἔχον λιβανωτὸν χρυσοῦν. Ἐβάλεν αὐτὸς θυμιάματα πολλὰ, ἵνα δώσῃ ταῖς προσόχαις τῇ πόλει παντὶ, ὑπὲρ τοῦ θυσιαστηρίου τὸ χρυσοῦν τὸ ἐνώπιον τοῦ θρόνου.

4 Καὶ ἀνέβη ὁ καπνὸς τῶν θυμιαμάτων ταῖς προσόχαις τῇ πόλει, ἐκ χειρὸς τοῦ ἀγγέλου, ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ.

5 Καὶ εἰλκεν ὁ ἀγγέλους τὸν λιβανωτὸν, καὶ ἔγειρεν αὐτὸν ἐπὶ τὸ πῦρ τοῦ θυσιαστηρίου, Ἐβάλεν εἰς τὴν γῆν. Ἐγένοντο φωναὶ καὶ βρονταὶ καὶ σεισμοί.

6 Καὶ οἱ ἑπτὰ ἀγγελοι ἔχοντες τὰς ἑπτὰ σάλπιγγας, ἠψύμασαν ἐαυτοὺς ἵνα σαλπίσωσι.

7 Καὶ ὁ πρῶτος ἀγγέλους ἐσάλπισε, καὶ ἐγένετο χάλαζα καὶ πῦρ μεμιγμένα αἵματι, καὶ ἐβλήθη εἰς τὴν γῆν. καὶ τὸ τρίτον τῶν δένδρων κατεκίχθη, καὶ πᾶς ἄνθρωπος ὁ χλωὸς κατεκίχθη.

8 Καὶ ὁ δεύτερος ἀγγέλους ἐσάλπισε, καὶ ὡς ὅρα μὲν πρὸς καίμενον ἐβλήθη εἰς τὴν θάλασσαν. καὶ ἐγένετο τὸ τρίτον τῆς θαλάσσης, αἷμα.

9 Καὶ ἀπέθανε τὸ τρίτον τῶν κτισμάτων τῶν ἐν τῇ θαλάσῃ, τὰ ἔχοντα ψυχὰς. καὶ τὸ τρίτον τῶν πλοίων διεφθάρη.

10 Καὶ ὁ τρίτος ἀγγέλους ἐσάλπισε, καὶ ἔτεσεν ἐκ τοῦ ἱερὸς ἀσὴρ μὲν καίμενον ὡς λαμπάς, καὶ ἔτεσεν ὑπὲρ τὸ τρίτον τῶν ποταμῶν, καὶ ὑπὲρ τὰς πηγὰς ὕδατων.

11 Καὶ τὸ ὄνομα τοῦ ἀσέρος λέγεται Ἀψινθος. καὶ γίνεται τὸ τρίτον τῶν ὑδάτων εἰς ἄψινθον, καὶ πολλοὶ ἄνθρωποι ἀπέθανον ἐκ τῶν ὑδάτων, ὅτι ὕπικράνθησαν.

12 Καὶ ὁ τέταρτος ἀγγέλους ἐσάλπισε, καὶ ἐπλήθυνε τὸ τρίτον τοῦ ἡλίου, καὶ τὸ τρίτον τῆς σελήνης, καὶ τὸ τρίτον τῶν ἀστέρων ἵνα σκοτισθῇ τὸ τρίτον αὐτῶν, καὶ ἡ ἡμέρα μὴ φαίῃ τὸ τρίτον αὐτῶν καὶ ἡ νύξ ὁμοίως.

13 Καὶ

13 Καὶ εἶδον, καὶ ἤκουσα ἑνὸς ἀγγέλου πετομένου
μεσσηρόματι, λέγοντος φωνῇ μεγάλῃ· Οὐαὶ ἡμῖν
τοῖς κατοικοῦσιν ὑπὲρ τῆς γῆς, ὅτι τῷ λοιπῷ τῆς
τῆς σάλπιγγος τῷ τριῶν ἀγγέλων τῷ μελλο-
μενῶν.

Κεφ. 9. 9.

1 **Κ**Αὶ ὁ πέμπτος ἀγγέλιος ἐτάλπει, καὶ
εἶδον ἀέρα ὅτι τῷ οὐρανῷ πεπτωκότι
πῶς γὰρ, καὶ ἐδόθη αὐτῷ ἡ κλέϊς τῶ φρέατος
αἰθύστη.

2 Καὶ ἤνοιξε τὸ φρέατος τῆς αἰθύστη· ὅτι ἀνέβη
πῶς ὅτι φρέατος ὡς καπνὸς καμίνου μεγάλη
καὶ ἐκπορεύθη ὁ ἥλιος καὶ ὁ αἶθρ ὅτι καπνοῦ τῷ φ-
ρεατος.

3 Καὶ ὅτι καπνοῦ ἤλθεν ἀκρίδες εἰς τὴν γῆν,
εἶδον αὐταῖς ὅτι ἔχουσιν ὅτι ἔχουσιν οἱ σκεπ-
τῶς γῆς.

4 Καὶ ἐρρέθη αὐταῖς ἵνα μὴ ἀδικήσωσι τὴν γῆν
τῶς γῆς, οὐδὲ πᾶν χλωρὸν, οὐδὲ πᾶν δένδρον, καὶ
τῶς ἀνθρώπου μόνον, οἵτινες οὐ ἔχουσιν τὴν σφραγῆ-
ν τοῦ Θεοῦ ἐπὶ τῶ μετώπῳ αὐτῶ.

5 Καὶ ἐδόθη αὐταῖς ἵνα μὴ ἀποκτείνωσιν αὐτούς
ἀλλ' ἵνα βασανισθῶσι μῆνας πέντε· ὅτι ὁ βασιλεὺς
μὲν αὐτῶ ὡς βασιλισμὸς σκορπίου, ὅταν πᾶσι
δράκον.

6 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ζητήσωσιν οἱ
δράκον τὸν θάνατον, καὶ οὐκ ἐνδύσονται αὐτόν· καὶ
πιδυμήσονται ἀποθνήσκειν, καὶ φθίβεται ὁ θάνατος
αὐτῶ.

7 Καὶ τὰ ὀρειώματα τῶ ἀκρίδων ὅμοια ἵπτοι
ἡτοιμασμένοι εἰς πόλεμον· καὶ ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶ
ὡς τέφνοι ὅμοιοι χρυσῷ, καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶ
πρόσωπα ἀνθρώπων.

8 Καὶ ἔχουσιν τρίχας ὡς τρίχας γυναικῶ, καὶ οἱ ὀδόν-
τες αὐτῶ ὡς λεόντων ἥσαν.

9 Καὶ ἔχουσιν θώρακας ὡς θώρακας σιδήρεως· καὶ
συνῆ τῶ πτερύγων αὐτῶ ὡς φωνὴ ἁρμάτων ἵππων
πολλῶν τεχνούντων εἰς πόλεμον.

10 Καὶ ἐρρῶσιν οἵτινες ὅμοιοι σκορπίοις, καὶ κέντη-
σιν τοὺς οὐρᾶς αὐτῶ· καὶ ἡ θάνατος αὐτῶ ἀδικησάντων
ἀνθρώπου μῆνας πέντε.

11 Καὶ ἐρρῶσιν ἐφ' αὐτῶ βασιλεὺς τὸν ἀν-
θρώπου τῶς αἰθύστη· ὅτι αὐτῶ ἔβαλεν ὁ
βασιλεὺς, καὶ ἐν τῇ ἐλλήνικῇ ὀνομαζέται ὁ βασιλεὺς
αὐτῶ.

12 Β'

τα Η' καὶ ἡ' μέρα ἀνῆλθεν, ἰδοὺ ἔρχονται ἐπ' αὐτοὺς
καὶ μὲν ταῦτα.

13 Καὶ ὁ ἐκτὸς ἐγγυλῶ ἐσάλπισε, ἔφησεν φωνῇ μεγάλῃ ὅτι τῷ πρῶτῳ κερῶν τῷ θυσιῶν τῷ χρυσῷ τῷ ἐνώπιον τῷ θεῷ.

14. Λένεσθαι τῷ ἔκτῳ ἀγγέλῳ, ὃς ἔχει τὴν σάλπιγγα· Δύσας τὰς τέσσαρας ἀγγέλους τῆς δεδομένης ὕψος τῷ ποταμῷ τῷ μεγάλῳ Εὐφράτῃ.

15 Καὶ ἐλυθὼν οἱ τέσσαρες ἄγγελοι οἱ ἡτοιμασ-
μένοι εἰς τὸ ὕδωρ καὶ μίᾳ ἐνσταύον, ἵνα ἀποκτείνω-
σι τὸ τρίτον τοῦ ἀνθρώπων.

16 Καὶ ὁ ἀρχιερεὺς ἐρατοδρατεῖν τὴν ἱππικὴν, δύο μυριάδες μυριάδων· ἔκαστα τὸν ἀρχιερεὺς οὐκ ἔμελλεν.

17 Καὶ ἔτως εἶδον τῆς ἰσχύος ἐν τῇ δράσει, ἃ τῶν
καθημένων ἐπ' αὐτῶν ἔχοντας θωρακὸς πυρίνους καὶ ἰσχυ-
ρυνθῆναι ἔδεικαται. ἃ καὶ κεφαλὰς τῶν ἰσχυρῶν ὡς κε-
φαλὰ λεόντων, ἃ ἐκ τῶν σωματῶν αὐτῶν ἐκπορεύεται
πῦρ καὶ καπνὸς ἃ εἶδον.

18 ὁ γὰρ τῶν τριῶν τέτων ἀνεκτάμηνον τὸ τρίτον
τῶν ἀνθρώπων, οὐκ ἔστι πρὸς τὸ ὅτι ἀνέκτανται ἐν οὐκ
δύνανται ἀποδοῦναι οὐκ τῶν ἐσόντων αὐτῶν.

19 Αἱ γὰρ ἡκολούθησαν αὐτῷ ἐν τῷ τόκῳ· καὶ αὐτῷ ἵσταν· αἱ
 γὰρ ἔχουσιν αὐτῷ ὅμοιαι ὄφρα, ἔχουσιν κεφαλῆς· ἐν
 αὐταῖς ποικίλονται.

20 Καὶ οἱ λοιποὶ τῷ ἀνδρώπῳ οὕτως ἀπεκρίναντο·
ὅτι ἐν ταῖς πληγαῖς ταύταις, ὅτε μετενόησάν σου τῷ
ἔργῳ τῷ χειρὶν αὐτῶν, ἵνα μὴ προσκυνήσωσι τὰ δαι-
μόνια, ἃ εἰδὼς τὰ χυσοῦς καὶ τὰ ἀργυροῦ καὶ τὰ χαλκοῦ
καὶ τὰ λίθου καὶ τὰ ξυλίνου, ἃ ὅτε βλέπειν δύναται,
καὶ ἀκούει, ὅτε ποιεῖται.

21 Καὶ ἡ μετανοοῦσα ἐκ τῆς φύσεως αὐτῆς, ὥστε ἐκ
τῆς φαρμακείας αὐτῆς, ὥστε ἐκ τῆς πορνείας αὐτῆς, ὥστε
ἐκ τῆς κλεμμάτων αὐτῶν.

К.Ф. 1. 10.

1 **Κ** αὐτὸν ἄλλον ἀγγελον ἰσχυρὸν καταβαίνοντα
 ὃς τὸ ἔραυκ, περιβεβλημενον νεφέλῃ· ἔτι
 ἔτι τὸ κεφάλαιον· ἔτι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς ἡλιος, ἔτι
 πόδες αὐτοῦ ὡς στυλοὶ πυρός.

2 Καὶ εἶχεν ἐν τῇ χειρὶ αὐτῇ βιβλακίδα ἀνεφωμέ-
τον· Ἐξέσκε τὸ πόδα αὐτῇ τὸ δεξιὸν ὅτι· τῷ θαλάσ-
σῳ, τὸ ὑδωρ ἔπι τῷ γλῶττι.

3 Καὶ ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ ὥσπερ λέειν μυκᾶται· ὅτι ἔκραξεν, ἐλάλησάν αὐ ἐνώτα βρονταὶ ταῖς εὐαγγελιστάς·

4 Καὶ ὅτε ἐλάλησεν αἱ ἱστὰ βροταὶ τὰς φωνὰς εὐ-
 ᾶν, ἡμελλόν γεῖψαν· ἔρχετο φωνὴ ἐκ τῆς ἐλπίδος
 τοῦ μοῦ. Σφραγίστην αὐτὴ ἐλάλησεν αἱ ἱστὰ βροταὶ,
 ἔκ τῆς τοῦτα γεῖψαν.

5 Καὶ ὁ ἄγγελος, ὃν ἔδον ἐστὶ ἐπὶ τῇ θαλάσσῃ
6 ὑπὲρ τῆς γῆς, ἤρε τὴν χεῖρα αὐτῆς εἰς τὸ ἕρπαιον,

6 Καὶ ὁμολοσεν ἐν τῷ λαῷ αὐτοῖς ἐς τὰς αἰῶνας τῇ αὐτοῦ
 χάριτι, ὅς ἐκτίσεν ἡμᾶς ἐν ταῖς ἐν αὐτῷ, καὶ τῇ γλῶσ
 σῃ ἐν αὐτῇ, ἐν τῇ θαλάσσῃ ἐν ταῖς ἐν αὐτῇ, ὅτι
 ἡμεῖς ἦν ἡμεῖς ἔτι.

7 Ἀλλὰ ἐν ταῖς ἡμέραις τῆς Φωφῆς π' εἰβδόμεν ἀγγί-
λῃ, ὅτ' αὖ μέλλῃ σαλπίζειν, καὶ τελευτῇ τὸ μυσεύειν
π' οἶν, ὡς ἀγγαγέλιζε τοῖς ἑαυτῶν δόλοισι τοῖς πρὶν
Φύταις.

8 Καὶ ἡ Φωνὴ αὐτῆς ἤκουσα ὅτι ἦν ἡ ἀνάβη, πάλιν ἀλλήτω
μετ' ἐμῇ, ἔλεγεν· ἴστωγε, λάβε τὰ βιβλαρίδια
τὸ ἀνεργυμένον ἐν τῇ χειρὶ ἀγγέλου ᾧ ἕστατο ὅτι τὸ
θαλάσσης· ἔστω τὸ γῆς.

9 Καὶ ἀπῆλθον πρὸς τὸ ἄγγελον, λέγων αὐτῷ· Δός μοι τὸ βιβλαρίδιον. Καὶ λέγει μοι· Δάβε καὶ κατὰ φύγε αὐτό· Ἐκικρῆναι σὲ τῶν κελιάδων, ἀλλὰ ἐν τῇ γῇ μετὶ σὲ ἔσται γλυκὺ ὡς μέλι.

10 Καὶ ἔλαβον τὸ βιβλαρίδιον ἐκ τῆ χειρὸς τοῦ ἀγγέ-
λου, ἔκτεψαυον αὐτὸ· ἔω ὦ ἐν τῷ στόματί μου ὡς
μέλι, γλυκύ· ἔστε ἔφαγον αὐτὸ, ἐπικράμθη ἡ κοί-
τις μου.

11 Καὶ λέγει μοι· Δὲ σε πάλιν προφητεῦσαι (2)
λαοῖς ἔἴστε· ἔ γλώσσαις ἔ βασιλεῦσι πολλοῖς.

Ксф. и о. 21.

Κ Αὐτὸς ὁ θεὸς μοι καλῶς ᾔδει, ὅμοι ῥ' αὖθις. Ἐ
ἀγγέλοις ἐπέειπε, λέγον· Ἐγείρωμαι, Ἐμὴ
τῆσιν ᾗ πάντες θεοὶ, Ἐ τὸ θεοκρατέον, Ἐ τῆς πρὸς
κυνήντας ἐν ὧπῳ.

2 Καὶ τὴν σὺνάν τὴν ἔξοθεν ᾤνῃ ἔκβαλε ἔξω, ὅτι
μὴ αὐτὴν μετρήσῃς, ὅτι ἐδόθη τοῖς ἐθνεσιν· ὅτι
πολλοὶ τὴν ἀγίαν πόλιν ἔσονται μὴνας τεσσαράκοντα.

3 Καὶ δώσει τοῖς δυοῖν μαρτυσί μιν, ὅτι προφητεύουσιν
ἐν ᾧ χιλίας ὀφθουσίν, ἐξήκοντα, καθάπερ λέγει ἡ γραφή
ἐν ᾧ λέγει·

4 Οὐπὶ ἐστὶν αἱ δύο ἐλπίαι, ἡ δύο λυχνία αἱ ἐν
πύργῳ. Θεὸς γὰρ ἔσθ' ὁ Θεός.

5 Καὶ ἐπεὶ αὐτὸς θέλη ἀδικῆσαι, πῦρ ὀκτοῦνεται
ἐκ τοῦ σώματος αὐτοῦ, ὃ κατεσθίει τὰς ἐχθρὰς αὐ-
τοῦ· ὃ καὶ τις αὐτὸς θέλη ἀδικῆσαι, ὕψω δὲ αὐτὸν
ἀποκτενεῖται.

6 Οὗτοι ἔχουσιν ἑξήσιν κληῖσαι ἡ ἑκὼν, ἵνα μὴ
βρέχῃ υἱὸς τοῦ οὐρανοῦ αὐτοὺς ἡμέρας αὐτῶν ἡ προφητείας. ὁ υἱὸς
τοῦ οὐρανοῦ ἐπὶ τῶν υδάτων, στέφει αὐτάς αὐτῶν
καταβαίνει τὸ γλῶσσο πάση πληγῇ, ὅσας ἐὰν θέλησιν
καταβαίνει τὸ γλῶσσο πάση πληγῇ, ὅσας ἐὰν θέλησιν

7 Καὶ ὅταν τελέσῃ τὴν μωρτυσίαν αὐτῆς, τὴν

θρείον τὸ ἀναβαῖνον ἐκ τῆς ἀβύσσου ποιήσει πόλεμον μετ' αὐτῶν, ἡ νικῆται αὐτῆς, ἡ ἀποκτενῆ αὐτῆς.

8 Καὶ τὰ πτώματα αὐτῶν ἐπὶ τῇ πλατείᾳ πόλεως ἡ μεγάλης, ἥπερ καλεῖται πνευματικῶς Σόδομα ἡ Ἀγγυπτῶς, ὅπου ἡ Κύριος ἡυλῆς ἐκταρῶν.

9 Καὶ βλέψουσιν ἐκ τῶν λιθῶν ἡ φυλῶν ἡ γλωσσῶν ἡ ἐθνῶν τὰ πτώματα αὐτῶν ἡμέρας τρεῖς ἡ ἡμῶν, ἡ τὰ πτώματα αὐτῶν ἡ ἀφῆσιν ταφῆσαι εἰς μνήματα.

10 Καὶ οἱ κατοικοῦντες ὑπὲρ τῆς γῆς χαρῶσιν ἐπὶ αὐτοῖς, ἡ εὐφρανθήσονται ἡ δοῦναι πένθησιν ἀλλήλοις, ἡ ἡτοι οἱ δύο προφῆται ἐβαπτίσαν τὴν κατοικῆντας ὑπὲρ τῆς γῆς.

11 Καὶ μετὰ τὰς τρεῖς ἡμέρας ἡ ἡμῶν, πνεῦμα ζωῆς ἐκ τοῦ Θεοῦ ἐκταρῶν ἐπὶ αὐτῆς ἡ ἐκταρῶν ὑπὲρ τῆς πόλεως αὐτῆς, ἡ φάβη μέγας ἐπισεν ὑπὲρ τῆς θειοφάνειας αὐτῆς.

12 Καὶ ἡκύναν φωνῶν μεγάλην ἐκ τοῦ ἡρώδ, λέγοντες αὐτοῖς ἡ ἀνάβητε ὦδε. Καὶ ἀνέβησαν εἰς τὸν οὐρανὸν ἐκ τῆς νιφάλης. ἡ ἐκταρῶν αὐτῆς οἱ ἐκταρῶν αὐτῆς.

13 Καὶ ἐν ὁκνή τῇ ὥρῃ ἐγένετο σεισμός μέγας, ἡ τὸ δίκτυον τῆς πόλεως ἐπέσε, ἡ σπικτάνθησαν ἐκ τοῦ σεισμοῦ ὀνόματα ἀνθρώπων χιλιάδες ἑπτὰ. ἡ οἱ λοιποὶ ἡμφαβοὶ ἐγένοντο, ἡ ἔδωκαν δοῦναι τοῖς Θεοῖς τῶν ἡρώδ.

14 ἡ καὶ ἡ δούτεια ἀνῆλθεν, ἡ δὲ ἡ καὶ ἡ τρίτη ἡρχεται τῆς γῆς.

15 Καὶ ὁ ἡβδομῶς ἀγγελῶς ἐσάλπισε, ἡ ἐχέοντο φωναὶ μεγάλας ἐκ τοῦ ἡρώδ, λέγοντες ἡ ἐχέοντο βασιλεῖα τῆς κόσμου, τῆς Κυρίου ἡυλῆς, ἡ τῆς Χριστοῦ αὐτοῦ ἡ βασιλεύσει εἰς τὴν αἰῶνα τῶν αἰώνων.

16 Καὶ οἱ εἰκοσι ἡ τέσσαρες πρεσβύτεροι οἱ ἐνῶντες τῷ Θεῷ καθήμενοι ὑπὲρ τῆς θρόνου αὐτῆς, ἡ πεσόντες ὑπὲρ τὰ πρόσωπα αὐτῆς, ἡ προσεκύνησαν τῷ Θεῷ.

17 Λέγοντες ἡ Εὐχαριστοῦμέν σοι, Κύριε ὁ Θεὸς ὁ πάντακράτωρ, ὁ ὢν, ὁ ὢν, ὁ ὢν, ὁ ἐρχόμενος, ὅτι ἐλῆλθες τῆς δυνάμει σου τῶν μεγάλων, ἡ ἐβαπτίσθης.

18 Καὶ τὰ ἔθνη ὠργίσθησαν, ἡ ἡλθεν ἡ ὀργὴ σου ἡ ὁ καιρὸς τῶν νεκρῶν, κριθῶναι, ἡ δοῦναι τῆς μισθῶν τοῖς δούλοις σου τοῖς προφῆταις, ἡ τοῖς ἁγίοις ἡ τοῖς φοβουμένοις τὸ ἐνομή σου, τοῖς μικροῖς ἡ τοῖς μεγάλους ἡ διαφθάραι τὴν διαφθορῶντας τῶν γῆς.

19 Καὶ ἡυλῆς ὁ ναὸς τοῦ Θεοῦ ἐκταρῶν ὑπὲρ τῆς γῆς, ἡ ἐκταρῶν ἡ κιβωτός τῆς διαθήκης αὐτῆς ἐκταρῶν ὑπὲρ τῆς γῆς αὐτοῦ ἡ ἐκταρῶν αὐτῆς ἡ φωναὶ ἡ βρονταὶ ἡ σεισμοὶ ἡ χαλῶναι μεγάλη.

Κεφ. 12. 12.

1 **Κ**ΑΙ σημειον μέγα ὤφθη ἐν τῷ ὕδατι· γὰρ ἐβλεπόμενον ἦ ἄλιος, ὃ ἡ σελήνη κατέκτανεν τῷ ποδὶ αὐτῆς, ὃ ὑπὲρ τῆ κεφαλῆς αὐτῆς ἔκειτο· αἵματι δέδιεναι.

2 Καὶ ἐν γαστρὶ ἔχουσα, θράξιν ὠδίνουσα, ὃ βασανισμένη τεκεῖν.

3 Καὶ ὤφθη ἄλλο σημεῖον ἐν τῷ ὕδατι, ὃ ἰὼν δράκων μέγας πυρρὸς, ἔχων κεφαλὰς ἑπτὰ ὃ κέρατα δέκα· καὶ ἔδει τὰς κεφαλὰς αὐτοῦ διδόμεναι ὅσπτα.

4 Καὶ ἡ ἡρὰ αὐτοῦ σήμερὸν τὸ τρίτον τῷ αἵματι ὤφθη, ὃ ἐβαλεν αὐτὴ ἐν τῷ γλῶ· καὶ ὁ δράκων ἐστὶν ἐνὶ ὕδατι τῇ γυναίκεσσι τῇ μελλούσῃ τεκεῖν, ἵνα ὀτρύνῃ τὴν τέκνη, τὸ τέκνον αὐτῆς καταφάγῃ.

5 Καὶ ἔτικει υἱὸν ἄρρενα, ὃς μέλλει ποιμαίνειν πάντα τὰ εἶδη ἐν τῇ ῥάβδῳ σιδηρᾷ· ὃ ἤρπασεν τὸ τέκνον αὐτῆς πρὸς τὸ Θεόν ὃ τὸ θρόνον αὐτοῦ.

6 Καὶ ἡ γυνὴ ἔφυγεν ἐν τῷ ἔρημῳ, ὅπου ἔχει τὸν σκεπασμένον ἀπὸ τοῦ Θεοῦ, ἵνα ὅσα τρέφουσιν αὐτὴν ἡμέρας χιλίας διακοσίας ἐξήκοντα.

7 Καὶ ἐγένετο πόλεμος ἐν τῷ ὕδατι· ὁ Μιχαὴλ ὃ οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ ἐπολέμησαν κατὰ τὸν δράκοντα, ὃ ὁ δράκων ἐπολέμησε, ὃ οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ.

8 Καὶ ἡν ἔχουσιν, ὅτε τοῦτο εὐρέθη αὐτῷ ἐπὶ τῷ οὐρανῷ.

9 Καὶ ἐβλήθη ὁ δράκων ὁ μέγας, ὃ ὄφιν ἑαρχαῖον, ὃ καλεῖται διάβολος, καὶ ὁ σατανᾶς, ὃ πλανῇ τὸν οἰκημένον ὅλκον, ἐβλήθη ἐν τῷ γλῶ· ὃ οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ μετὰ αὐτῇ ἐβλήθησαν.

10 Καὶ ἤκουσα φωνὴν μεγάλαν λέγουσαν ἐν τοῖς οὐρανοῖς· Ἄρρη ἐγένετο ἡ σωτηρία καὶ ἡ δύναμις καὶ ἡ βασιτεία τοῦ Θεοῦ ἡμῶν, καὶ ἡ ἰκυσίς τοῦ Χριστοῦ αὐτοῦ· ὅτι κατεβλήθη ὁ κατηγοροῦν τῶν ἀδελφῶν ἡμῶν, ὃ κατηγοροῦν αὐτῶν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἡμῶν ἡμέρας ὃ νυκτός.

11 Καὶ αὐτοὶ ἐνίκησαν αὐτὸν διὰ τὸ αἷμα τοῦ αἰγίου, ὃ διὰ τὸν λόγον τὸν μωρτωθείας αὐτοῦ· ὃ ἡν ἔχαπσαν τῶν ψυχῶν αὐτῶν ἄχρι θανάτου.

12 Διὰ τῆτο ἀφραίνεσθε οἱ ἄνθρωποι ὃ οἱ ἐν αὐτοῖς σκλῶντες· οὐαὶ τοῖς κατοικοῦσι τῷ γλῶ ὃ τῷ θαλάσσῃ, ὅτι κατέβη ὁ διάβολος πρὸς ὑμᾶς ἔχων θυμὸν μέγαν, ὅπως ὅτι ὀλίγον καιρὸν ἔχει.

13 Καὶ ὅτε ἴδεν ὁ δράκων ὅτι ἐβλήθη ἐν τῷ γλῶ, ἐδίωξε τῶν γυναικῶν ὅπως ἔτεκε τὸ ἄρρενα.

14 Καὶ ἐδόθησαν τῇ γυναικὶ δύο πτέρυγες τῇ αἰψῇ.

ἦ μεγάλην, ἵνα πέταται εἰς τὴν ἔρημον εἰς τὸν τόπον αὐτὸν, ὅπου τρέφεται ἐκείναι καὶ καλῶς, ὅμοιω καὶ, ἀπὸ πρῶτον ἦ ὄφιος.

15 Καὶ ἔβαλεν ὁ ὄφιος ὀπίσω τῆς γυναίκης ἐκ τῆς σωματικῆς αὐτοῦ ὕδαρ ὡς ποταμόν· ἵνα ταυτὶν ποταμοφόρητον ποιῇ.

16 Καὶ ἐβλήθησεν ἡ γῆ τῇ γυναικί, ὅτι ἔβριξεν ἡ γῆ τὸ σῶμα αὐτῆς, ὅτι κατέπεσε τὸ ποταμόν, ὃν ἔβαλεν ὁ δράκων ἐκ τῆς σωματικῆς αὐτῆς.

17 Καὶ ἀνέστη ὁ δράκων ὑπὲρ τῆς γυναικί, ὅτι ἀπῆλθε ποιῆσαι πόλεμον μετὰ τῷ λαίπῳ τῷ σπέρματι αὐτῆς, τὸν τερνύοντα τὰς ἐκπλῆξας τῷ Θεῷ, καὶ ἐχούτων τὴν μαρτυρίαν τῷ Ἰησοῦ Χριστῷ.

18 Καὶ ἐτάθην ὑπὲρ τὴν ἔρημον τὴν θαλάσσης.

Κεφ. ιγ'. 13.

1 **Κ**Αὶ εἶδον ἐκ τῆς θαλάσσης θηρίον ἀναβαῖνον, ἔχον κεφαλὰς ἑπτὰ καὶ κέρατα δέκα, καὶ ὑπὲρ τῶν κερῶν αὐτοῦ δέκα δώδεκάματα, ὅτι τὰς κεφαλὰς αὐτοῦ ὄνομα βλασφημίας.

2 Καὶ τὸ θηρίον εἶδον ὡς ὅμοιον παρδάλι, ὅτι εἶ πόδες αὐτοῦ ὡς ἄρκου, ὅτι τὸ σῶμα αὐτοῦ ὡς σῶμα λίοντος, ὅτι ἔδωκεν αὐτῷ ὁ δράκων τὴν δύναμιν αὐτῆς, ὅτι τὸ θρόνον αὐτοῦ, καὶ ἐξουσίαν μεγάλην.

3 Καὶ εἶδον μίαν τῶν κεφαλῶν αὐτοῦ ὡς ἐσφαγμένην εἰς θάλασσαν· ὅτι ἡ πληγὴ τῆς θανάτου αὐτοῦ ἐθεραπεύθη, ὅτι ἐθαύμασεν ὅλη ἡ γῆ ὀπίσω τῆς θηρίας.

4 Καὶ προσεκύνησαν τῷ δράκοντι ὅτι ἔδωκεν ἐξουσίαν τῷ θηρίῳ, καὶ προσεκύνησαν τὸ θηρίον, λεγοντες· Τίς ὅμοιος τῷ θηρίῳ; τίς δύναται πολεμῆσαι μετ' αὐτοῦ;

5 Καὶ εἶδον αὐτῷ σῶμα λαλῶν μεγάλην καὶ βλασφημίας, ὅτι εἶδον αὐτῷ ἐξουσίαν πόλεμον ποιῆσαι μετὰ τοσαύτοις δύσιν.

6 Καὶ ἤνοιξε τὸ σῶμα αὐτῆς εἰς βλασφημίαν πρὸς τὸν Θεόν, βλασφημῆσαι τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ὅτι τὴν σκηνὴν αὐτοῦ, ὅτι τὰς ἐν τῇ ἔρημῳ σκηνῶνται.

7 Καὶ εἶδον αὐτῷ πόλεμον ποιῆσαι μετὰ τῶν ἁγίων, καὶ νικῆσαι αὐτῆς· ὅτι εἶδον αὐτῷ ἐξουσίαν ὑπὲρ πᾶσαν φύλιν καὶ γένος καὶ ἔθνος.

8 Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ πάντες οἱ κατοικοῦντες ὑπὲρ τῆς γῆς, ὅτι ἡ γέγραπται τὰ ὀνόματα ἐν τῇ βίβλῳ τῆς ζωῆς τῶν ἁγίων ἐσφαγμένων ἀπὸ καταβολῆς κόσμου.

9 Εἴπες ἔχοντες, ἀκούσατω.

10 Εἴπες ἀίχμαλωσίαν συλλάβει, καὶ αἰχμαλωσίαν ὡπάγει· αἴ τις ἐν μαχηρίᾳ ἀποκτείνεται, δεινὸν αὐτὸν ἐν μαχηρίᾳ ἀποκτανθῆναι. ὡς εἶπεν ὁ ἁποστόλος· οἱ περὶ τῶν ἁγίων.

11 Καὶ εἶδον ἄλλο θηρίον ἀναβαίνειν ἐκ τῆ γῆς, ὃ
ἔχε κέρατα ὅς ὁμοιόν ἀρνίῳ· ἔειπεν ὡς δράκον.

12 Καὶ τὴν ἑξοσίαν τῇ πρώτῃ θηρίῳ πᾶσαν πω-
λείπειν αὐτοῦ, ἔποιε τὴν γῆν ἔτους κατοικοῦντες
ἐν αὐτῇ, ἵνα προσκυνήσωσι τὸ θηρίον τὸ πρῶτον, τὸ
ἐδερεύον τὴν πόλιν καὶ τὸν λαόν αὐτοῦ.

13 Καὶ ποιεῖ σημεῖα μεγάλα, ἵνα ἔσται πῦρ τοῦ κα-
ταβαίνειν ἐκ τοῦ θύρανος εἰς τὴν γῆν, ἐνώπιον τοῦ
ἀνθρώπου.

14 Καὶ πλεονάζουσιν οἱ κατοικοῦντες ἐπὶ τῆ γῆς, διὰ τὰ
σημεῖα ἃ ἐδοθή αὐτῷ ποιῆσαι ἐνώπιον τοῦ θηρίου.
Λέγουσιν οἱ κατοικοῦντες ἐπὶ τῆ γῆς, ποιῆσαι εἰκόνα τοῦ
θηρίου ὃ ἔχει τὴν πληγὴν τὴν μολιμένην, καὶ ἔλασε.

15 Καὶ εἶδεν αὐτῷ δοῦναι πνεῦμα τῇ εἰκόνι τοῦ
θηρίου, ἵνα ἔσται ἀληθὴς ἡ εἰκὼν τοῦ θηρίου, ἔποι-
ησεν, ὅσοι οὐκ ἔμελλαν προσκυνήσωσι τὴν εἰκόνα τοῦ θηρίου,
ἵνα ἀποκτανθῶσι.

16 Καὶ ποιεῖ πάντας, τῆς μικρῆς ἔτι τῆς μεγάλης,
ἔτους πλεονάζουσιν οἱ κατοικοῦντες, ἔτους πλεονάζουσιν
ἔτους πλεονάζουσιν, ἵνα δώσῃ αὐτοῖς χάραγμα ἐπὶ τῆς
ἁγίας αὐτῶν καὶ ἐπὶ τῶν χειρῶν αὐτῶν.

17 Καὶ ἵνα μή τις δύνηται ἀγοράσαι ἢ πωλῆσαι, ἢ
μὴ ὅ ἔχει τὸ χάραγμα, ἢ τὸ ὄνομα τοῦ θηρίου, ἢ τὸ
ἄλφειον τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ.

18 Ὡς δὲ ἡ σοφία εἰς τὸν ὅτι ἔχει τὴν γῆν, ψηφισάτω
τὸ ἄλφειον τοῦ θηρίου· ἄλφειος γὰρ ὁ ἀνθρώπος εἰς τὸν
ὅτι ἄλφειος αὐτοῦ ἔστι.

Κεφ. ιδ. ια.

1 **Κ** αὶ ἔσται, ἔσται ἀρνίον ἑξοκὸς ἐπὶ τὸ ἐπὶ
Σιών, ἔσται μετ' αὐτῶν ἑκατὸν τετρακισχίλιαι
παρὰ χιλιάδας, ἔσται τὸ ὄνομα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ
γεγραμμένον ἐπὶ τῶν χειρῶν αὐτῶν.

2 Καὶ ἔσται φωνὴ ἐκ τοῦ θύρανος ὡς φωνὴ ὑδά-
των πολλῶν, ἔσται φωνὴ βροντῆς μεγάλης· ἔσται φωνὴ
ἔσται κισσοφόρων κισσοφόρων ἐν ταῖς κισσοφόροις
αὐτοῦ.

3 Καὶ ἔσται ὡς ὡδὴν καὶ ὡδὴν ἐνώπιον τοῦ θηρίου
ἔσται ἐνώπιον τῶν τετρακισχίλιων, ἔσται πρὸς τοὺς
καὶ οὐδὲν ἔδωκεν μὴδὲν τὴν ὡδὴν αὐτῶν αὐτῶν
τὸν τετρακισχίλιον τετρακισχίλιον χιλιάδας, οἱ ἡγορασμένοι
ἐπὶ τῆ γῆς.

4 Οὗτοι εἰσιν οἱ μὴ γυναῖκες οὐκ ἐμολύνθησαν
καρδίῃσι γὰρ εἰσιν· οὗτοι εἰσιν οἱ ἀκαθάρτοι οἱ
ἀρνίῳ ὅτι οὐκ ἔλασε· οὗτοι ἡγοράσθησαν ἀπὸ τοῦ
ἀνθρώπου, ἀπὸ τοῦ Θεοῦ ἔσται ἀρνίῳ.

5 Καὶ

5 Καὶ ἐπὶ τῇ σόμῃ αὐτῶν οὐχ οὐδέτις δόλῳ· ἡ
 μοῖραι γὰρ εἰσιν ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ καὶ τοῦ Θεοῦ.

6 Καὶ εἶδον ἄλλον ἄγγελον πετώμενον ἐν μεσση-
 νώματι, ἔχοντα βύαγγιον αἰώνιον, ἀναγγελλόμενος τὰς
 κερτακύντας ὑπὲρ τῆς γῆς, καὶ πάλιν εἶδον· ὁ φωνῶν
 ὁ γὰρ ὁ λαός.

7 Λέγοντα ἐν φωνῇ μεγάλῃ· φοβήθητε τὸ Θεόν, ὅτι
 ὅτε κινήσῃ, ὅπῃ ἔλθῃ ἡ ὥρα τῆς κρίσεως αὐτοῦ·
 ὁ προσκυνησάτω τῷ ποιήσαντι τὸ ἔργον ὁ τῷ γὰρ ὁ
 δόλῳ ὁ πῦρ ὁ δόλῳ.

8 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἠκολούθησε, λέγων·
 Ἐπεσεν ἔπεσε Βαβυλὼν ἡ πόλις ἡ μεγάλη, ὅτι
 ὅτι τὸ εἶναι τῇ θυμῷ τῇ πορνείας αὐτῆς πεπότηκε
 πάντα ἔργα.

9 Καὶ τρίτος ἄγγελος ἠκολούθησεν αὐτοῖς, λέγων
 ἐν φωνῇ μεγάλῃ· Εἴ τις τὸ θεῖον προσκυνᾷ καὶ τῷ
 εἰκόνα αὐτοῦ, ὁ λαμβάνει χάραγμα ὑπὲρ τοῦ μετώπου
 αὐτοῦ, ἡ ὑπὲρ τῆς χειρὸς αὐτοῦ,

10 Καὶ αὐτὸς πύεται ὅτι τῇ οἷα τῇ θυμῷ τῇ Θεῷ,
 τῇ κεκρυμμένῃ ἀκράτῃ ἐν τῇ ποτηρίῃ τῇ οὐχ ὁ
 τῷ· ὁ βασανισθήσεται ἐν πυρὶ ὁ θεῖος ἐνώπιον τῷ ἁ-
 γίῳ ἀγγέλῳ ὁ ἐνώπιον τοῦ ἀγίου.

11 Καὶ ὁ κενὸς τοῦ βασανισμοῦ αὐτοῦ ἀναβαίνει
 εἰς αἰῶνα αἰῶνα· καὶ οὐκ ἔχουσιν ἀνάπαυσιν ἡμέ-
 ραι ὁ τῷ οἱ προσκυνοῦντες τὸ θεῖον ὁ τῷ εἰκό-
 νῃ αὐτοῦ, ὁ εἰ τις λαμβάνει τὸ χάραγμα τοῦ ὀνόμα-
 τος αὐτοῦ.

12 Ὁ δὲ ἄσπασμος τῶν ἁγίων ἐστίν· ὁ δὲ οἱ τηροῦντες
 τὰς ἐντολὰς τοῦ Θεοῦ, ὁ τῷ πῶς ἰησοῦ.

13 Καὶ ἤκουσα φωνῆς ὅτι τοῦ οὐρανοῦ, λεγούσης
 μοι, γράψον· Μακάριοι οἱ νεκροὶ οἱ ἐν Κυρίῳ ἀποθνή-
 σκοντες ἀπὸ νῦν· καὶ λέγει τὸ πνεῦμα, ἵνα ἀνα-
 παύσονται ὅτι τῶν κήπων αὐτῶν· τὰ ἔργα αὐτῶν
 ἀκούει μετὰ αὐτοῦ.

14 Καὶ εἶδον, ὁ ἰδοὺ νεφέλη λευκή, ὁ ἐπὶ τῇ
 νεφελῇ καθήμενος ὁμοῖος υἱὸς ἀνθρώπου, ἔχων ὑπὲρ
 τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ στέφανον χρυσοῦν, ὁ ἐν τῇ χειρὶ
 αὐτοῦ δρέπανον ὄξύ.

15 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἦλθεν ἐκ τοῦ ναοῦ, κλά-
 ζων ὁ μεγάλη φωνῇ τῷ καθήμενῳ ὑπὲρ τῆς νεφέ-
 λης· Πέμψον τὸ δρέπανόν σου, ὁ θείον· ὅπῃ ἔλ-
 θῃ σὺ ἡ ὥρα τῆς θείας· ὅπῃ θείῃ ὁ θείος
 τῶν γῆς.

16 Καὶ ἔβαλεν ὁ καθήμενος ὑπὲρ τῆς νεφέλης τὸ
 δρέπανον αὐτοῦ ὑπὲρ τῆς γῆς· ὁ θείος ὁ γὰρ.

17 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἦλθεν ὅτι τῇ τῇ τῇ
 τῇ ὁ δὲ, ἔχων ὁ αὐτοῦ δρέπανον ὄξύ.

18 Καὶ ἄλλος ἄγγελος ἦλθεν ὅτι τῇ τῇ τῇ
 ἔχων ὁ δὲ ὑπὲρ τῆς γῆς· ὁ θείος ὁ κενὸς με-
 τὰ τῇ ὁ δὲ τὸ δρέπανον τὸ ὄξύ, λέγων· Πέμψον
 τὸ δρέπανόν σου, ὁ θείος· ὅπῃ ἔλθῃ σὺ ἡ ὥρα τῆς
 θείας· ὅπῃ θείῃ ὁ θείος τῶν γῆς.

ση τὸ δρεπάρων τὸ ὄψι, ἔ τρυήσων τὰς βοτρυας τὴν κρυσταλλὴν τὴν γῆς, ὅπ' ἔκκενται αἱ σφυραὶ αὐτῆς.

19 Καὶ ἔβαλεν ὁ ἄγγελος τὸ δρεπάρων αὐτὸ εἰς τὴν γῆν, ἔ ἐτρυήσεν τὴν ἀμπειλὸν τὴν γῆς, καὶ ἔβαλεν εἰς τὴν λῶν τὸ θυμὸν τοῦ Θεοῦ τὴν μεγάλην.

20 Καὶ ἐπαυτοῦθη ἡ λῶν ἐξω τὴν πόλει, ἔ ἔκκενται αἶμα ὅπ' ἡ λῶν ἄχει τῷ χαλιδῶν τῷ ἵπτῶν, αὐτὸν σάδιων χιλίων ἑκατοσίων.

Κεφ. 1 ε. 15.

1 **Κ** αὶ εἶδον ἄλλο σημεῖον ἐν τῷ ἥραμῳ μέγα καὶ θαυμαστόν, ἄγγελος ἑπτὰ, ἔχοντας πλῆγας ἑπτὰ τὰς ἐχάτας, ὅπ' ἐν αὐταῖς ἐτελεσθη ὁ θυμὸς τοῦ Θεοῦ.

2 Καὶ εἶδον οἱς θάλασσαν ὑψηλὴν μεμειγμένῃ πυρὶ ἔ τῆς νικῶντας ὅπ' ἔ τρυήσεν ἔ ὅπ' ἔ κκενται αὐτὴ, ἔ ἐκ τῆς χαλιδῆς οὐτῆς, ἐκ τῆς ἀριθμῆς τῆς ὀνόματῶ αὐτῆς, ἐσθίας ὅπ' τὴν θάλασσαν τὴν ὑαλίνην, ἔχοντας κίθαρὰς τῆς Θεοῦ.

3 Καὶ ἔδθη τὴν ὠδὴν Μωσέως δὴλῃ τῆς Θεοῦ, ἔ τὴν ὠδὴν τῆς ἀρνῆς, λεγόντες· Μεγάλη καὶ θαυμασὰ τὰ ἔργα σου, Κύριε ὁ Θεὸς ὁ πᾶντοκράτωρ· δι-καιοὶ ἔ ἀληθινοὶ καὶ ὁδοὶ σου, ὁ βασιλεὺς τῶν ἁγίων.

4 Τίς ἢ μὴ φοβηθῇ σε, Κύριε, ἔ δοξάσῃ τὸ ἔργον σου; ὅπ' μόνος ὄσιος· ὅπ' πᾶντα τὰ ἔθνη ἔξουσιν ἔ προσκυνήσουσιν ὀνομάζόν σε· ὅπ' τὰ δικαιώματα σου ἐφάμερωθῃσαν.

5 Καὶ μὲν ταῦτα εἶδον, ἔ ἰδὼν ἡ πόλις ὁ παὶς τὴν σκλῆρῆς τὴν μαρτυρίαν ἐν τῷ ἥραμῳ.

6 Καὶ ἔκκενται οἱ ἑπτὰ ἄγγελοι ἔχοντες τὰς ἑπτὰ πλῆγας, ἐκ τῆς νικῆς, ἐνδεδυμένοι λίνον λευκὸν καὶ λαμπρὸν, καὶ περιβεβλημένοι ποδὶ τὰ σῆδη ζωντὴν χρυσοῦς.

7 Καὶ ἐν ἐκ τῶν τεσσάρων ζώων ἔδωκε πρὸς ἑπτὰ ἄγγελοις ἑπτὰ φιάλας χρυσοῦς, γεμούσας τοῦ θυμοῦ τοῦ Θεοῦ τοῦ ζῶντος εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων.

8 Καὶ ἐγεμίσθη ὁ ναὸς καπνοῦ ἐκ τῆς δόξης τοῦ Θεοῦ, ἔ ἐκ τῆς δυνάμεως αὐτοῦ· ἔ ἡδὲς ἡδύνατο εἰπεῖν· θάψαι εἰς τὸν ναόν, ἄλλα τελεσθῶσιν αἱ ἑπτὰ πλῆγαι τῶν ἑπτὰ ἄγγελων.

Κεφ. 15. 16.

1 **Κ**Αὶ ἤκουσα φωνῆς μεγάλης ἐκ τῆς ναῦ, λέ-
γουσῆς τοῖς ἑπτά ἄγγελοις· Ἵστασθε τὴν
ἐκχεῖτε τὰς φιάλας τῇ Θεῷ ἐν τῷ γλῶ.

2 Καὶ ἀπῆλθεν ὁ πρῶτος, καὶ ἔσχεν τὴν
φιάλην αὐτοῦ ἐπὶ τῷ γλῶ, καὶ ἐγένετο ἔλ-
κός κακὸν καὶ πονηρὸν εἰς τοὺς ἀνθρώπους τοὺς
ἔχοντας τὸ χάραγμα τοῦ θηρίου, καὶ τὸς τῆς ἐ-
κκλῆς αὐτῆς προσκυνῶντας.

3 Καὶ ὁ δεύτερος ἄγγελος ἔσχεν τὴν φιά-
λην αὐτοῦ τὴν θάλασσαν, καὶ ἐγένετο αἷμα ὡς
νεκροῦ· καὶ πᾶσα ψυχὴ ζῶσα ἀπέθανεν ἐν τῇ
θάλασσῃ.

4 Καὶ ὁ τρίτος ἄγγελος ἔσχεν τὴν φιάλην αὐ-
τοῦ εἰς τὰς ποταμὺς καὶ εἰς τὰς πηγὰς τῶν ὑδάτων· καὶ
ἐγένετο αἷμα.

5 Καὶ ἤκουσα τοῦ ἄγγελου τῶν ὑδάτων λέγοντος·
Δίκαιος, Κύριε, εἰς ὅσον, καὶ ὅσον, καὶ ὅσον, καὶ ὅσον,
ὅτι ταῦτα ἐκείναι.

6 Ὅτι αἷμα ἁγίων καὶ προφητῶν ἔσχεν, καὶ αἷμα
ἐκ τῶν ἁγίων καὶ ἐκ τῶν προφητῶν.

7 Καὶ ἤκουσα ἄλλη ἐκ τῆς συναγωγῆς λέγοντος·
Ναὶ Κύριε ὁ Θεὸς ὁ πᾶντοκράτωρ, ἀληθινὰ καὶ δί-
καμα αἱ κρίσεις σου.

8 Καὶ ὁ τέταρτος ἄγγελος ἔσχεν τὴν φιάλην
αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ἥλιον· καὶ ἐδόθη αὐτῷ καυματίσαι τοὺς
ἀνθρώπους ἐν πυρὶ.

9 Καὶ ἐκαυματίσθησαν οἱ ἄνθρωποι καὶ μέγα
καὶ ἐλασφημήσαν τὸ ὄνομα τοῦ Θεοῦ τοῦ ἔχοντος
τὴν ἁγίαν ἐλπίδα τῶν πηγῶν τῆς ζωῆς· καὶ ὁ μετενόησαν δὲ-
σιν αὐτῶν δάξαν.

10 Καὶ ὁ πέμπτος ἄγγελος ἔσχεν τὴν φιάλην
αὐτοῦ ἐπὶ τὸν θρόνον τοῦ θηρίου· καὶ ἐγένετο ἡ βασι-
λεία αὐτοῦ ἐσθλαμένη· καὶ ἐμαρτύρησαν τὰς γλῶσσας
αὐτῶν ἐκ τῆς πόλεως.

11 Καὶ ἐβλαστήθησαν τὸ θεῖον τὸ ἡρανοῦ ἐκ τῶν πό-
λεων αὐτῶν καὶ ἐκ τῶν ἐλκῶν αὐτῶν· καὶ ὁ μετενόησαν
ἐκ τῶν ἔργων αὐτῶν.

12 Καὶ ὁ ἕκτος ἄγγελος ἔσχεν τὴν φιάλην αὐτοῦ
ἐπὶ τὸν ποταμὸν τὸν μέγαν τὸν Εὐφράτην· καὶ ἐκράνθη
τὸ ὕδωρ αὐτοῦ, ἵνα ἐτοιμασθῇ ἡ ὁδὸς τῶν βασιλέων
ἐκ τῶν ἀνατολῶν ἡλίου.

13 Καὶ ἔδον ἐκ τῶν τόπων τῶν ἑρμῶν καὶ ἐκ τῶν
τόπων τῶν θηρίων καὶ ἐκ τῶν τόπων τῶν ὑδροποφίτων
πνύματα τρία ἀκάθαρτα ὅμοια βατράχοις.

Υ 5

14 Εἰς 1

Ἰωάννης Κεφ. 15. 16. Εἰς 14

14 Εἰσὶ γὰρ πνύματα δαιμόνιον ποιοῦντα σημεῖα, ἃ ἐκπορεύεται ἐπὶ τοὺς βασιλεῖς τῆ γῆς· ἡ τῆς οἰκημένης ὅλης, συναγαγεῖν αὐτοὺς εἰς πῦλμον τῆ ἡμέρας ἐκείνης τῆ μεγάλης τῆ Θεῆ τῆς τοκράτορος.

15 Ἰδοὺ, ἔρχομαι ὡς κλέπτης. Μακάρι οὖν ὁ γρηγορῶν, καὶ τηρῶν τὰ ὑμῖν αὐτῶν, ἵνα μὴ γυμνὸς παρῇ τῇ, ἡ βλέπων τὴν ἀρχμοσύνην αὐτῆς.

16 Καὶ συναγαγὼν αὐτοὺς εἰς τὸ τόπον τῆ καλοῦνται Ἑβραῖσι Αἰμαμαγεδδών.

17 Καὶ ὁ ἑβδόμος ἄγγελος ἔρχεται τὴν φιάλην αὐτῆς εἰς τὴν θάλασσαν, ἡ ἔρχεται φωνὴ μεγάλη ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, ἀπὸ τοῦ θρόνου, λέγουσα· Γέγονε.

18 Καὶ ἔγένοντο φωναὶ ἡ βρονταὶ ἡ ἀστραπαὶ· ἡ σεισμὸς ἐγένετο μέγας, οἷον οὐκ ἐγένετο οὐδὲν οἱ ἄνθρωποι ἐγένοντο ἐπὶ τῆ γῆς, τηλικούτου σεισμὸς οὕτω μέγας.

19 Καὶ ἐγένετο ἡ πόλις ἡ μεγάλη εἰς τρία μέρη, ἡ αἱ πόλεις τῶν ἐθνῶν ἔπεσον· ἡ Βαβυλὼν ἡ μεγάλη ἐμνήσθη ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, δυνάμις αὐτῆς τὸ ποτήριον τῆς οἶνης τοῦ θυμοῦ τῆς οργῆς αὐτῆς.

20 Καὶ πᾶσα γῆς ἐφυγε, καὶ ὅλη οὐχ ἀνέβηται.

21 Καὶ χάλαζα μεγάλη οἷς ταλαντικά καταβύθη ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους· ἡ βλασφημίαται οἱ ἄνθρωποι τῆ θεοῦ ἐκ τῆ πληγῆς τῆ χαλᾶζης· ὅτι μεγάλη ἐστὶν ἡ πληγὴ αὐτῆς σφοδρά.

Κεφ. 17. 17.

1 **Κ**Αὶ ἦλθεν εἰς ἐκ τῶν ἑπτὰ ἀγγέλων τῶν ἐκ τῶν χόντων τὰς ἑπτὰ φιάλας, ἡ ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ, λέγων μοι· Δώρο, δείξω σοι τὸ κρῖμα τῆς πόλεως τῆς μεγάλης, ἡ καθεμένης ἐπὶ τῶν ὑδάτων πολλῶν.

2 Μετ' ἧς ἐπόρευόσαν οἱ βασιλεῖς τῆ γῆς, ἡ ἐμνησθήσαν ἐκ τοῦ οἶνου τῆς πορνείας αὐτῆς οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν.

3 Καὶ ἀπώλετό με εἰς ἔρημον ἐν πνύματι· ἡ ἡδονὴν γυναικῶν καθεμένων ἐπὶ θηρίον κόκκινον, γέμον ἀνεμύτων βλασφημίας, ἔχον κεφαλὰς ἑπτὰ ἡ κεράτα δέκα.

4 Καὶ ἡ γυνὴ, ἡ παβεβλημένη πορφύρῃ καὶ κίτρινῃ, καὶ κεχρυσωμένη χρυσῷ καὶ λίθῳ τιμίῳ ἡ κεκοσμημένη, ἔχουσα χρυσὸν ποτήριον ἐν τῇ χειρὶ αὐτῆς, γέμον βδελυγμάτων ἡ ἀκαθάρτητος πορνείας αὐτῆς.

5 Καὶ

5 Καὶ ὅπ' τὸ μέγατον οὐτῆς ὄνομα γεγραμμένον·
Μυσήριον· Βαβυλῶν ἢ μεγάλη ἢ μήτηρ τῆς πόλεως,
τῆς βδελυγμάτων τῆς γῆς.

6 Καὶ εἶδον τὴν γυναῖκα μεθύσασαν ἐν τῷ αἵματι
τῆς ἀγίας, καὶ ἐν τῷ αἵματι τῆς μαρτυρῶν Ἰησοῦ· ἔ-
βραίμασα, ἰδὼν αὐτήν, θαῦμα μέγα.

7 Καὶ εἶπε μοι ὁ ἄγγελος· Διὰ τί ἐβραίμασαι;
ἐγώ σοι εἶρ' τὸ μυσήριον τῆς γυναίκος· ἔ τ' ἑλεῖν τὴν
Βασιλίσσαν αὐτῶν, τὴν ἔχουσαν τὰς ἐπτά κιφαλαὶς καὶ
τὰ ὀκτὼ κέρατα.

8 Θηρίον ὃ εἶδες, ὡ, καὶ ἔκ ἐστὶ καὶ μέλλει ἀναβραί-
ναι ἐν τῇ ἀβύσσῳ, ἔ εἰς ἀπόλειπ' ὑπάγειν· καὶ
θαυμάσονται οἱ κατοικοῦντες ὅπ' τῆς γῆς, (ὡς καὶ γε-
γραπταὶ τὰ ὀνόματα ὅπ' τὸ βιβλίον τῆς ζωῆς ἀπὸ κα-
ταβολῆς κόσμου) βλέποντες τὸ θηρίον ὅτι ἦν, ἔ ἐκ
ἐστὶ, καὶ ἔτι ἐστὶν.

9 Ὡς δὲ ὁ νῆς ὃ ἔχων σοφίαν. Αἱ ἐπτά κιφαλαί,
ὅρα εἰσὶν ἐπτά, ὅσην ἡ γυνὴ κάθηται ἐπ' αὐτῆς.

10 Καὶ Βασιλεῖς ἑπτὰ εἰσιν· οἱ πέπτε ἐπέστην, ἔ ὃ
ἔς ἐστιν, ὃ ἄλλος ἥπω ἤλθε· ἔ ἑτάμ' εἰλθε, ὀλίγον
αὐτὸν δεῖ μέναι.

11 Καὶ τὸ θηρίον ὃ ἦν, καὶ ἔκ ἐστὶ, καὶ αὐτὸς ὄγ-
δος ἐστὶ, ἔ ἐν τῶν ἐπτά ἐστὶ, ἔ εἰς ἀπόλειπ' ὑπάγει.

12 Καὶ τὰ ὀκτὼ κέρατα ἃ εἶδες, ὀκτὼ βασιλεῖς
εἰσιν, οἵτινες βασιλεύουσιν ἔ τω εἰσθῆν, ἀλλ' ἰσχυ-
ροὶ ὡς βασιλεῖς μίαν ὥρην λαμβάνουσιν μετὰ τῷ θη-
ρίῳ.

13 Οὗτοι μίαν γνώμην ἔχουσιν, ἔ τὴν δύναμιν καὶ
τὴν ἰσχυρίαν ἐαυτῶν τῷ θηρίῳ παραδίδωσιν.

14 Οὗτοι μετὰ τῷ ἀρχὴν πολεμήσουσι, καὶ τὸ ἀρ-
γύον νικήσουσιν αὐτούς, ὅτι Κύριος κυρίων ἐστὶ, καὶ βασι-
λεὺς βασιλέων· καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ, κλητοὶ ἔ ὀκλειτοὶ
ἔ πιστοί.

15 Καὶ λέγει μοι, τὰ ὕδατα ἃ εἶδες, ἢ ἡ πορ-
τὴν κάθηται, λαοὶ ἔ ὄχλοι εἰσὶ, ἔ ἔθνη καὶ γλώσ-
σαι.

16 Καὶ τὰ ὀκτὼ κέρατα ἃ εἶδες ὅπ' τὸ θηρίον, ἔτοι-
μίσουσιν τὴν πόρτην, ἔ ἡρημαίνουσιν ποιήσασιν αὐτήν
ἔ γιμνῶν, ἔ τὰς σάρκας αὐτῆς φάγονται, καὶ αὐτὴν
κατακαύσουσιν ἐν πυρὶ.

17 Ὁ δὲ Θεὸς ἔδωκεν εἰς τὰς καρδίας αὐτῶν ποιῆ-
σαι τὴν γνώμην αὐτῶν, ἔ ποιῆσαι μίαν γνώμην, καὶ
δοῦναι τὴν βασιλείαν αὐτῶν τῷ θηρίῳ, ἄχρι τελεσθῆναι
τὰ ῥήματα τῷ Θεῷ.

18 Καὶ ἡ γυνὴ ἣν εἶδες, ἔστιν ἡ πόλις ἢ μεγάλη ἢ
ἔχουσα βασιλείαν ὅπ' τῶν βασιλέων τῆς γῆς.

Κεφ. ιζ. 18.

1 **Κ**ΑΙ μετὰ ταῦτα εἶδον ἄγγελον καταβαίνοντα ἐκ τῆς κοίτης, ἔχοντα βιβλίον μεγάλην· ὃ ἡ γῆ ἐφωτίσθη ἐκ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ.

2 Καὶ ἔκραξεν ἐκ ἰχυρί, φωνῇ μεγάλῃ λέγων· Ἐπεσεν ἔπεσε Βαβυλὼν ἡ μεγάλη, ὃ ἐγένετο κατοικητήριον δαυμόνων, καὶ φυλακὴ πάντος πνεύματος ἀκαθάρτου, ὃ φυλακὴ πάντος ὄρνεν ἀκαθάρτου, ὃ μεμισημένου.

3 Ὅτι ἐκ τῆς οἴνου τῆς θυμῆς τῆς πόρνικος αὐτῆς τοῦ ποιεῖ πᾶντα τὰ ἔθνη· ὃ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς οὐτὶς αὐτῆς ἐπόρουσαν, ὃ οἱ ἔμποροι τῆς γῆς ἐκ τῆς εὐταμίαι· τῆς εἰρήνης αὐτῆς ἐπλήτησαν.

4 Καὶ ἤκουσα ἄλλου φωνῆ ἐκ τῆς ἡρώς, λέγονσαν· Ἐξέλθετε ἐξ αὐτῆς ὁ λαὸς μου, ἵνα μὴ συγκοινωνήτε τοῖς ἁμαρτίαις αὐτῆς, καὶ ἵνα μὴ λαβήτε ἐκ τῶν πληγῶν αὐτῆς.

5 Ὅτι ἠκολούθησαν αὐτῆς καὶ ἁμαρτίαι ἄλλοι τῆς ἡρώς, καὶ ἐμνημόνευσεν ὁ Θεὸς τὰ ἀδικήματα αὐτῆς.

6 Ἀπόδοτε αὐτῇ ὡς ὃ αὐτὴ ἀπέδωκεν ὑμῖν, ὃ διπλώσατε αὐτῇ διπλᾶ κατὰ τὰ ἔργα αὐτῆς· ἐν τῷ ποτηρίῳ ᾧ ἐκέρασε, κεράσατε αὐτῇ διπλοῦν.

7 Ὅσα ἐδόξασεν ἑαυτῇ καὶ ἐστρώσασε, ποσὸν πρὸς αὐτῇ βασινισμὸν καὶ πένθος· ὅτι ἐν τῇ κοίτῃ αὐτῆς λέγει· Καθήμεν βασιλεύοντες, ὃ χρεὼς οὐκ ἔμιν· ὃ πένθος οὐκ ἴδω.

8 Διὰ τοῦτο ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ ἔξουσιν αἱ πληγαὶ αὐτῆς, θάνατος ὃ πένθος ὃ λιμός· καὶ ἐν πυρὶ κατακαυθήσεται, ὅτι ἰχυρὸς Κύριος ὁ Θεὸς ὁ κρίνων αὐτὴν.

9 Καὶ κλαύσονται αὐτὴν καὶ κήψονται ἐπ' αὐτὴν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, οἱ μετ' αὐτῆς πορεύσαντες ὃ ἐστρώσαντες, ὅταν βλέπωσι τὸν καπνὸν τῆς πυρώσεως αὐτῆς.

10 Ἀπὸ μακρόθεν ἐστηκότες, λέγοντες· Οὐαί, οὐαί ἡ πόλις ἡ μεγάλη Βαβυλὼν, ἡ πόλις ἡ ἰχυρὰ, ὅτι ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ ἦλθεν ἡ κρίσις σου.

11 Καὶ οἱ ἔμποροι τῆς γῆς κλαίουσιν καὶ πένθουσιν ἐπ' αὐτῇ, ὅτι τὸν γόμον αὐτῶν οὐδεὶς ἀγοράζει ἐνέπ·

12 Γόμον χρυσοῦ καὶ ἀργύρου καὶ λίθου πρίου, καὶ μαργαρίτου, καὶ βύσσου, καὶ πορφύρας, καὶ σκευῶν, καὶ παντίου, καὶ πᾶν ξύλον θυμῶν, καὶ τῶν σκευῶν ἐλεφάντι-
νου.

τον, & πᾶς σκευὸς ἐκ ξύλου τιμιωτάτου, & χαλκοῦ
& σιδήρου, & μαρμαίρου.

13 Καὶ κινάμωμον, & θυμιάματα, & μύρον, & λίβανον, & οἶνον, & ἐλαιον, & σεμίδαλιν, & σῖτον, & κτήνη, & πρόβατα, & ἵππον, & ρέεδον, & σωμάτων, & ψυχὰς ἀνθρώπων.

14 Καὶ ἡ ὁπώρα τῆς ἐπιθυμίας τῆς ψυχῆς σε ἀπῆλθεν ἀπὸ σὲ, & πάντα τὰ λιπαρὰ & τὰ λαμπρὰ ἀπῆλθεν ἀπὸ σὲ, & ἐκέπῃ ἢ μὴ ὀρήσῃς αὐτά.

15 Οἱ ἔμποροι τούτων οἱ πλητῆσάμην ἀπὸ αὐτῆς, ἀπὸ μακρόθεν ἐκρίνοντο, διὰ τὸν φόβον τῆ βασιλείας αὐτῆς, κλαίοντες & πενθῶντες.

16 Καὶ λέγοντες· Οὐαὶ, οὐαὶ, ἡ πόλις ἡ μεγάλη, ἡ παβεβλημένη βύσσινον & πορφύρεν & κόκκινον, & κεχρυσωμένη ἐν χρυσῷ & λίθῳ τιμίῳ & μαργαρίταις· ὅτι μὴ ὥρα ἡρῆμώθῃ ὁ πᾶς πλοῦτος.

17 Καὶ πᾶς κυβερνήτης, & πᾶς ὑπὶ τῷ πλοίῳ ὁ ὅμιλος, & πάντες, & ὅσοι τῷ θαλάσῳ ἐργάζονται, ἀπὸ μακρόθεν ἐκρίναντο.

18 Καὶ ἔκραζον, ὁρῶντες τὸν καπνὸν τῆς πυρώσεως αὐτῆς, λέγοντες· Τίς ὁμοία τῇ πόλει τῇ μεγάλῃ;

19 Καὶ ἔβαλον χροὺν ὑπὸ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, & ἔκραζον κλαίοντες & πενθῶντες, λέγοντες· Οὐαὶ, οὐαὶ, ἡ πόλις ἡ μεγάλη, ἐν ἣ ἐπλήθυνον πάντες οἱ ἔχοντες πλοῖα ἐν τῇ θαλάσῳ· ὅτι ἡ πριότης αὐτῆς, ὅτι μὴ ὥρα ἡρῆμώθῃ.

20 Εὐφραίνῃ ἐν νῶτῳ ἡρανὲ, & οἱ ἄγιοι Ἀπόστολοι & οἱ Προφῆται, ὅτι ἐκρίνεν ὁ Θεὸς τὸ κέλερ ὁ μὲν αὐτῆς.

21 Καὶ ἦσαν ἡς Ἀγγελοὶ ἰσχυροὶ λίθον ὡς μύλον μέγαν, & ἔβαλεν εἰς τὴν θαλάσσαν, λέγων· Οὕτως ὁρμήματι βληθήσεται Βαβυλὼν ἡ μεγάλη πόλις, & ἢ μὴ ὀρεθῇ ἔτι.

22 Καὶ φωνὴ κριθαρῶν & μυτικῶν & σὺλτῶν, & σαλπιστῶν, ἢ μὴ ἀκυσθῇ ἐν σοὶ ἔτι· & πᾶς τεχνίτης πάσης τέχνης ἢ μὴ ὀρεθῇ ἐν σοὶ ἔτι· & φωνὴ μύλων ἢ μὴ ἀκυσθῇ ἐν σοὶ ἔτι.

23 Καὶ φωνὴ λύχνων ἢ μὴ φανῇ ἐν σοὶ ἔτι· & φωνὴ τυμπάνων & τυμπάνων ἢ μὴ ἀκυσθῇ ἐν σοὶ ἔτι· ὅτι οἱ ἔμποροι σου ἦσαν οἱ μεγιστᾶνες τῆς γῆς, ὅτι ἐν τῇ φαρμακείᾳ σε ἐπλήρην ἦσαν πάντα τὰ ἔθνη.

24 Καὶ ἐν αὐτῇ αἰμῇ Προφητῶν & ἁγίων ὤρεθον, & σάρτες τῶν ἐσφαγμένων ὑπὸ τῆς γῆς.

Κεφ. 19. 19.

1 **Κ** Αὐτὰ μετὰ ταῦτα ἤκουσεν ὡς φωνὴν ὅχλου πολλοῦ
μεγάλου ἐν τῷ θρόνῳ, λέγοντες· Ἀλληλούια·
ὁ σωτήρ, ἡ δόξα, ἡ τιμὴ, ἡ δύναμις Κυ-
εῖν τῷ Θεῷ ἡμῶν.

2 Ὅτι ἀληθινοὶ ἔσονται καὶ κοίσεις αὐτῷ· ἐπὶ
ἐκείνῃ τῇ πόλει τῇ μεγάλῃ, ἥπερ ἐφθάρη τῇ
γῇ ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς, ἡ ἡγερέσθη τὸ κῆμα τῶν
ὄντων αὐτῇ ἐκ τῆς χειρὸς αὐτῆς.

3 Καὶ δεύτερον ἔρηκται Ἀλληλούια. Καὶ ὁ κατὰ
αὐτῆς ἀνελθὼν εἰς τὰς κλίνας τῶν αἰώνων.

4 Καὶ ἔτεσον οἱ πρεσβύτεροι οἱ ἕκαστος ἑνὶ τῷ
καθήμενῳ ὑπὸ τῷ θρόνῳ, λέγοντες· Ἀμήν· Ἀλη-
λῖα.

5 Καὶ φωνὴ ἐκ τῷ θρόνου ἤρξατο, λέγουσα· Αἰνε-
τε τὸν Θεὸν ἡμῶν πάντες οἱ ὄντες αὐτῷ, καὶ οἱ φερό-
μενοι αὐτόν, καὶ οἱ μικροὶ καὶ οἱ μεγάλοι.

6 Καὶ ἤκουσεν ὡς φωνὴν ὅχλου πολλοῦ, ἡ ὡς φωνὴν
ὄντων πολλῶν, ἡ ὡς φωνὴν βροντῶν ἰσχυρῶν, λεγόν-
των· Ἀλληλούια· ὅτι ἐβασίλευσε Κύριος ὁ Θεὸς ὁ
παντοκράτωρ.

7 Χαίρομεν, ἡ ἀγαλλιάμεθα, ἡ δοῦμεν τὴν δόξαν
αὐτῷ· ὅτι ἦλθεν ὁ γάμος τῷ ἀρνίῳ, καὶ ἡ γυνὴ αὐτῆς
ἡτοίμασεν ἑαυτῇ.

8 Καὶ ἐδόθη αὐτῇ ἵνα παρβύληται βύστινον καθά-
ρον καὶ λεπτόν· τὸ γὰρ βύστινον, τὰ δικαιώματα αἱ
τῶν ἁγίων.

9 Καὶ λέγει μοι· Γράψον· Μακάριοι οἱ εἰς τὸ δεῖπνον
τῇ γάμῃ τῇ ἀρνίῳ κεκλημένοι. Καὶ λέγει μοι· Οὐτοὶ
οἱ λόγοι ἀληθινοὶ εἰσι τῷ Θεῷ.

10 Καὶ ἔτεσον ἐμπροσθεν τῶν ποδῶν αὐτῷ προσκυ-
νῆσαι αὐτῷ· ἡ λέγει μοι· Ὅρα μὴ· σύνδουλός σε
εἰμι καὶ τῶν ἀδελφῶν σου τῶν ἐχόντων τὴν μαρτυρίαν
τῇ ἱστοίᾳ, τῷ Θεῷ προσκύνησαν· ἡ γὰρ μαρτυρία τῆς
σε ἐστὶ τὸ πνεῦμα τῆς προφητείας.

11 Καὶ εἶδον τὸν θρόνον ἀνεγυμένον, καὶ ἰδὼν ἴνα
πρὸς λευκός, ἡ ὁ καθήμενος ἐπ' αὐτόν καλλύμενος
παισὶ καὶ ἀληθινῶς, ἡ ἐν δικαιοσύνῃ κρίνει καὶ πε-
λεμεῖ.

12 Οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτῷ ὡς φλόξ πυρός, ἡ ὡς
πῦρ κεφαλῇ αὐτῇ· ἡ ὡς ὄντων πολλὰ· ἡ ὡς ὄντων
γεγονομένων ὁ ὅστις ὅστις εἰ μὴ αὐτός.

13 Καὶ παρβύληται ἱμάτιον βεβαμμένον αἵ-
ματι, καὶ καλεῖται τὸ ὄνομα αὐτῷ, ὁ λόγος τοῦ
Θεοῦ.

14 Καὶ

14 Καὶ τὰ στρατόματα τὰ ἐν τῷ ἡρατὶ ἠκούσθη
κῆρυξ ἐφ' ἰσχυροῖς λόφοις, ἐνδεδυμένοι βύσσινος λε-
γόντες καθαρόν.

15 Καὶ ἐκ τῆς σάρκατος αὐτῇ ἐκπορεύεται ῥομφαία
ὀξεύς, ἵνα ἐν αὐτῇ πατάσῃ τὰ ἔθνη, ὥστε ποι-
μνὴ αὐτῆς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ, ὥστε πατεῖ τὸν λη-
γόν τῆς εἰνῆς τῆς θυμῆς, ὥστε ἐργῆς τῆς Θεῆς παντοκρά-
τορος.

16 Καὶ ἔχῃ ἐπὶ τὸ ἰμάσιον, ὥστε ἐπὶ τὸν μηρὸν αὐτῆς
τὸ ὄνομα γεγραμμένον· Βασιλεὺς βασιλεύς, ὥστε Κυρίως
κυρίως.

17 Καὶ εἶδον ἕνα Ἄγγελον ἑστῶτα ἐν τῷ ἡλίῳ, ὥστε
ἔκραξε φωνῇ μεγάλῃ, λέγων πᾶσι τοῖς ἀκούουσιν τοῖς
πεποιμένοις ἐν μεσσηνίᾳ· Δότε καὶ συναχέσθε εἰς
τὸ δεῖπνον τῆς μεγάλης Θεῆς.

18 Ἴνα φαγῇτε σάρκας βασιλέων, ὥστε σάρκας χιλιάρ-
χων, ὥστε σάρκας ἰχυρῶν, ὥστε σάρκας ἵππων, ὥστε τῶν
καθημένων ἐπ' αὐτῶν, καὶ σάρκας πάντων ἐκδοθέντων
ἐν δολοῖς, ὥστε μικρῶν, ὥστε μεγάλων.

19 Καὶ εἶδον τὸ θείον, ὥστε τὰς βασιλεῖς τῆς γῆς,
ὥστε τὰ στρατόματα αὐτῶν συναχθέντα ποιεῖσαι πόλεμον
μετὰ τῇ καθημένῃ ἐπὶ τῇ ἵππῃ, καὶ μετὰ τῇ στρατού-
ματι αὐτῇ.

20 Καὶ ὑπάσθη τὸ θείον, ὥστε μετὰ τήνδε τὴν ὁδο-
δοτροφίης ὁ ποιήσας τὰ σημεῖα ἐνώπιον αὐτῆς, ἐν
οἷς ἐπλάσθησε τὴν λαβόντος τὸ ῥάβδον τῆς Θεῆς,
ὥστε τὰς ποταμότητας τῆς εἰκόνι αὐτῇ· ζῶντες ἐβλήθη-
σαν οἱ δύο εἰς τὸν λίμνην τῆς πυρὸς τῇ κοινομένῃ
ἐν τῇ Θεῇ.

21 Καὶ οἱ λοιποὶ ἀπεκτάνθησαν ἐν τῇ ῥομφαίᾳ τῇ
καθημένῃ ἐπὶ τῇ ἵππῃ, τῇ ἐκπορευομένῃ ἐκ τῆς σάρ-
κατος αὐτῆς· ὥστε πάντα τὰ ὄντα ἐχορτάσθησαν ἐκ
τῆς σαρκῶν αὐτῆς.

Κεφ. κ'. 20.

1 **Κ**Αὶ εἶδον ἄγγελον καταβαίνοντα ἐκ τῆς ἡράνης,
ἔχοντα τὸν κλεῖδα τῆς ἀβύσσου, καὶ αἴλυσεν
μεγάλῃ ἐπὶ τῇ χεὶρᾷ αὐτῆς.

2 Καὶ ἐκράτησε τὸν δράκοντα, τὸν ἔφιν τὸν ἀρ-
χαῖον, ὃς ἐστὶ Διάβολος, ὥστε σατανᾶς· ὥστε ἔδωκεν αὐτῷ
λίλιον ἔτη.

3 Καὶ ἔβαλεν αὐτὸν εἰς τὸν ἄβυσσον, καὶ ἐκλειψεν
αὐτὸν, ὥστε ἐσφραγίσεν ἐπάνω αὐτῇ, ἵνα μὴ πληρώσῃ
τὰ ἔθνη ἐπὶ, ἀλλὰ τελειώσῃ τὰ χίλια ἔτη· ὥστε μετὰ
ταῦτα δὲ αὐτὸν λυθῶσι μικρὸν χρόνον.

4 Καὶ εἶδον Θρόνον, καὶ καθίσαντος ἐπ' αὐτοῦ, ὥστε ἐκ-
μα ἐδέθη αὐτοῖς· καὶ τὰς ψυχὰς τῶν πεπληκισμένων
Διὰ

219 τῷ μαρτυρίῳ Ἰησοῦ, ἔτι τὸν λόγον τῷ Θεῷ
 ἔειπεν ἡ προσκυνησάσαί τῷ Θεῷ, ὅτε τῇ ἐκόν
 αὐτῷ· ἔκ ἑλάβεν τὸ χάραγμα ὑπὲρ τὸ μέτωπον αὐ
 τῶν, ἔτι τῷ χεῖρι αὐτῷ· ἔτι ἑστῶν, ἔτι ἐβασί
 λευσαν μετὰ τῷ Χριστῷ τὰ χίλια ἔτη.

5 Οἱ ὅ λοιποὶ τῶν νεκρῶν ἔκ ἀνέστησαν ἕως τελευτῆς
 τὰ χίλια ἔτη. Αὕτη ἡ ἀνάστασις ἡ πρώτη.

6 Μακάριος ὁ ἄγιος ὁ ἔχων μέρος ἐν τῇ ἀνάστασι
 τῇ πρώτῃ ὑπὲρ τῶν ὁ θάνατος ὁ δεύτερος ἔκ
 ἔκλειψεν, ἀλλ' ἔσονται ἱερεῖς τῷ Θεῷ ἔτι τῷ Χριστῷ
 ἔτι βασιλεύσουσι μετὰ αὐτῷ χίλια ἔτη.

7 Καὶ ὅταν τελευτήσῃ τὰ χίλια ἔτη, λυθήσεται
 Σατανᾶς ἐκ τῆς φυλακῆς αὐτοῦ.

8 Καὶ κληθήσεται πληρῆσαι τὰ ἔθνη τὰ ἐν τῷ
 τέσσαρσι γωνίαις τῆς γῆς, τὸν Γῶγ ἔτι τὸν Μαγῶγ
 συναγαγεῖν αὐτὸς ἐς πόλεμον, ὃν ὁ ἀριθμὸς οὐκ
 ἄμμος τῆς θαλάσσης.

9 Καὶ ἀνέβησεν ὑπὲρ τὸ πλάτος τῆς γῆς, ἔτι ἐκ
 κλωσάν τῷ περιβολῶν τῷ ἁγίῳ, ἔτι τῷ ἰουδαίῳ
 ἡγαπημένῳ· ἔτι κατέβη εὐρὺ ἀπὸ τοῦ Θεοῦ ἐκ τῆς
 γῆς, ἔτι κατέφυγεν αὐτὸς.

10 Καὶ ὁ διάβολος ὁ πλανῶν αὐτὸς ἐβλήθη εἰς τὴν
 λίμνην τοῦ πυρός ἔτι θάλασσαν, ὅτι τὸ θεῖον ἔτι ὁ
 δοκροφῆτης· ἔτι βασιλεύσουσιν ἡμέρας ἔτι νυκτὸς
 τῆς αἰῶνος τῷ αἰῶνι.

11 Καὶ εἶδον θρόνον λευκὸν μέγαν, ἔτι τὸν καθήμε
 νον ἐπ' αὐτῷ, ἔτι ἀπὸ προσώπου ἐφυγεν ἡ γῆ ἔτι ὁ κύρ
 νος· ἔτι τόπος οὐκ ὤφθη αὐτοῖς.

12 Καὶ εἶδον τοὺς νεκροὺς, μικροὺς ἔτι μεγάλους, ἔτι
 τῆς ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ, ἔτι βιβλία ἡνεῶνθησαν· ἔτι
 βλίσεν ἄλλο ἡνεῶνθη, ὃ ἐστὶ τῆ ζωῆς· ἔτι ἐκρίθησαν
 νεκροὶ ἐκ τῶν γεγραμμένων ἐν ταῖς βιβλίαις, κατὰ τὰ
 ἔργα αὐτῶν.

13 Καὶ ἔδωκεν ἡ θάλασσα τοὺς ἐν αὐτῇ νεκρούς, ἔτι
 ὁ θάνατος ἔτι ὁ ἄδης ἔδωκαν τοὺς ἐν αὐτοῖς νεκρούς
 ἔτι ἐκρίθησαν ἕκαστος κατὰ τὰ ἔργα αὐτῶν.

14 Καὶ ὁ θάνατος ἔτι ὁ ἄδης ἐβλήθησαν εἰς τὴν λί
 μνην τοῦ πυρός· οὗτοι εἰσιν ὁ δεύτερος θάνατος.

15 Καὶ ἔτι οὐκ ὤφθη ἐν τῇ βίβλῳ τῆς ζωῆς γε
 γραμμένοις, ἐβλήθη εἰς τὴν λίμνην τοῦ πυρός.

Κεφ. κ. α. 21.

1 **Κ** Αὶ εἶδον οὐρανὸν καινὸν ἔτι γῆν καινὴν· ἔτι
 πρῶτος οὐρανόος ἔτι ἡ πρώτη γῆ παρῆλθεν, ἔτι
 θάλασσα οὐκ ἔστιν ἔτι.

2 Καὶ ἰδοὺ Ἰωάννης εἶδεν τὴν πόλιν τὴν ἁγίαν ἔτι
 μεταλήμ καινὴν, καταβαίνουσαν ἀπὸ τοῦ Θεοῦ ἐκ τῆς
 οὐρανόος.

ἄρῃ, ἡτοιμασμένῳ ὡς νύμφῳ κικροσμημένῳ τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς.

3 Καὶ ἄκουσά φωνῆς μεγάλης ἐκ τῆς εὐκαῖν, λεγούσης· Ἰδοὺ ἡ σκῆπη τῆς Θεοῦ μετὰ τῆς δαδρωτῶν, ἐσκηνώσει μετ' αὐτῆς, καὶ αὐτοὶ λαοὶ αὐτῆς ἔσονται, καὶ αὐτὸς ὁ Θεὸς ἔσται μετ' αὐτῶν, Θεὸς αὐτῶν.

4 Καὶ ἤραλάνη ὁ Θεὸς πᾶν δακρυεὺν ἀπὸ τῆς ἐφ' ὀφθαλμῶν αὐτῆς, καὶ ὁ θάνατος ἐκ ἔσται ἐπ' αὐτῆς, ὅτε κτανῇ, ὅτε πόθος ἐκ ἔσται ἐπ' αὐτῆς, ὅτι τα πρῶτα ἀπῆλθεν.

5 Καὶ εἶπεν ὁ καθήμενος ὑπὲρ τῆς θύρας. Ἰδοὺ, καιρὰ πάντα παῖδ'. Καὶ λέγει μοι· Γράψον· ὅτι εἶποι οἱ ἀγγελοὶ ἀληθινοὶ καὶ πιστοὶ ἐγώ.

6 Καὶ εἶπέν μοι· Γέγονε· ἐγὼ εἰμι τὸ Α καὶ τὸ Ω, ἡ ἀρχὴ καὶ τὸ τέλος. ἐγὼ τὸ εὐφωτιστὴν δώσω ἐκ τῆς πληγῆς τῆς ὕδατος τῆς ζωῆς δωρεάν.

7 Ὁ νικῶν κληρονομήσει πάντα, καὶ ἔσομαι αὐτῷ Θεός, καὶ αὐτὸς ἔσται μοι ὁ Υἱός.

8 Διολοῖς δὲ καὶ ἀπέσοις καὶ ἐβδελυγμένοις καὶ φονεῦσι καὶ πόρνοις καὶ φαρμακεῦσι καὶ εἰδωλολάτραις, καὶ πᾶσι τοῖς ψαυδέσι, τὸ μέρος αὐτῶν ἐκ τῆς λίμνης τῆς καινῆς πυρὸς καὶ θάου, ὃ ἐστὶ δεύτερος, θάνατος.

9 Καὶ ἦλθεν πρὸς με εἰς τῶν ἑπτὰ ἀγγέλων τῶν ἔχόντων τὰς ἑπτὰ φιάλας τὰς γεμάσας τῶν ἑπτὰ πληγῶν τῶν ἔχόντων· καὶ ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ, λέγων· Δεῦρο, δείξω σοι τὴν νύμφῳ τῇ ἁγίῃ τῇ νύμφῳ.

10 Καὶ ἀπῆλθον με ἐν πνέματι ἐπ' ὄρος μέγα καὶ ὕψιστον, καὶ ἔδειξέν μοι τὴν πόλιν τὴν μεγάλην, τὴν ἁγίαν Ἱερουσαλὴμ, καταβαινυσάν ἐκ τῆς ἁρῆς ἀπὸ τῆς Θεοῦ.

11 Εἵχοντο τὴν πόλιν τὴν Θεοῦ· καὶ ὁ φῶς ἐκ αὐτῆς ὅμοιος λίθῳ τιμιωτάτῳ, ὡς λίθῳ ἰάσασιν· κρυσταλλίζοντι.

12 Εἵχοντο τε τῆχος μέγα καὶ ὕψιστον, εἵχοντο πυλῶνας δώδεκα, καὶ ὑπὲρ τοῖς πυλῶσιν Ἀγγέλους δώδεκα φυλάς τῶν Υἱῶν Ἰσραὴλ.

13 Ἀπὸ Ἀμαπολῆς, πυλῶνες τρεῖς· ἀπὸ Βορρῆα, πυλῶνες τρεῖς· ἀπὸ νότου, πυλῶνες τρεῖς· ἀπὸ δυσμῶν, πυλῶνες τρεῖς.

14 Καὶ τὸ τῆχος τῆς πόλεως ἔχον θιμελίης δώδεκα, καὶ ἐν αὐτοῖς ἐνόματα τῶν δώδεκα ἀποστόλων τῆς ἁγίας.

15 Καὶ ὁ λαὸς μετ' ἐμοῦ, εἵχε κάλαμον χρυσοῦν, ὥστε μετρήσῃ τὴν πόλιν καὶ τὰς πυλῶνας αὐτῆς καὶ τὸ τῆχος αὐτῆς.

16 Καὶ ἡ πέλις πετράγιος καῖται, καὶ τὸ μέτρος αὐτῆς τοσούτων ἐστὶν ὅσον καὶ τὸ πλάτος· καὶ ἐμέτρον

σε τὴν πόλιν τῇ καλῶν ὅτι τὰς δώδεκα χιλιά-
δων· τὸ μήκος ἔστω πλάτος ἔστω ὕψος αὐτῆς ἴσῃ
ἔστω.

17 Καὶ ἐμέτρητε τὸ τεῖχος αὐτῆς ἑκατὸν τετρα-
κοντατεσσαρῶν πηχῶν, μετρον ἀνθρώπου, ὃ ἐστὶν ἐν-
γέλιον.

18 Καὶ ἡ πόλις ἑνδομήκισι τῷ τείχους αὐτῆς, ἰσ-
σωπὶς· ἡ πόλις χρυσοῦ καθαρόν, ὁμοία, ὕψος κα-
θαρόν.

19 Καὶ οἱ θεμέλιοι τῷ τείχους τῆς πόλεως πεντήκον-
τα ἑκατὸν ἐκατομμύριοι· ὁ θεμέλιος ὁ πρῶτος, ἰσ-
σωπὶς· ὁ δεύτερος, σάπφειρος· ὁ τρίτος, χαλκήδων· ὁ
τέταρτος, σμαράγδος.

20 Ὁ πέμπτος, σαρδόνις· ὁ ἕκτος, σάρδιος· ὁ
ἑβδομῶς, χρυσολίθος· ὁ ὄγδοος, βήρυλλος· ὁ ἑνα-
τος, πεπάζιον· ὁ δέκατος, χρυσόπρασος· ὁ ἑνδεκά-
τος, ὑάκινθος· ὁ δωδέκατος, ἀμέθυσος.

21 Καὶ οἱ δώδεκα πυλώνες, δώδεκα μαρμαρίζονται,
αἰνὰ εἰς ἕκαστον τῶν πυλῶνων ἡ πόλις ἑνὸς μαρμαρίζεται·
ἡ πλάτεια τῆς πόλεως, χρυσοῦ καθαρόν, ὡς ὕψος
διὰ τῆς πόλεως.

22 Καὶ ναὸς ἔστι ἐν αὐτῇ· ὁ γὰρ Κύριος
ὁ Θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ναὸς αὐτῆς ἔστι, ἔστω ἀν-
τίον.

23 Καὶ ἡ πόλις ἡ χρύσεια ἔχει τῇ ἡλίῳ ὑπὸ τῆς
σηκλῆς, ἵνα φαίνωσιν ἐν αὐτῇ· ἡ γὰρ δόξα τῇ Οἰῇ
ἐφαύσις αὐτῇ, ἔστω ὁ λύχνος αὐτῆς τὸ ἀρνίον.

24 Καὶ τὰ ἔθνη τῶν σωζομένων ἐν τῇ φωτὶ αὐτῆς
ἐκπατρίστου· ἡ βασιλεία τῆς γῆς φέρουσι τὴν δόξαν
ἔστω τὴν τιμὴν αὐτῇ εἰς αὐτῇ.

25 Καὶ οἱ πυλώνες αὐτῆς ὅτι μὴ κλεισθῶσιν ἡμέρας
οὐδὲ γὰρ ἔστι ἐκεῖ.

26 Καὶ οἱ οὐρανοὶ τὴν δόξαν ἔστω τὴν τιμὴν τῇ ἰδιῇ
εἰς αὐτῇ.

27 Καὶ ἡ πόλις μὴ εἰσέλθῃ εἰς αὐτῇ πᾶν κοινόν, καὶ
ποιῶν βδέλυγμα, καὶ ψεύδος· εἰ μὴ οἱ γεγραμμένοι ἐν
τῇ βιβλίῳ τῆς ζωῆς τῇ ἀρνίῳ.

Κεφ. κβ'. 22.

1 **Κ** Αὶ ἔδωκέ μοι καθαρόν ποταμὸν ὕδατος ζωῆς,
λαμπρόν ὡς κρύσταλλον, ἑκπορεύομενον ἐκ
τῆς πόλεως τῇ Οἰῇ, ἔστω τῇ ἀρνίῳ.

2 Ἐν μέσῳ τῆς πλατείας αὐτῆς, ἔστω τῇ ποταμῷ,
ἐντεῦθεν ἔστω ἐντεῦθεν, ἕλκον ζωῆς, ποιῶν καρπὸν
δύο, κατὰ μῆκος ἕκαστον ἀποδίδῃ τὸν καρ-
πὸν αὐτῇ· ἔστω τὰ φύλλα τῇ ἕλκῃ εἰς θεραπεῖαν τῇ
ἰδιῇ.

3 Καὶ

3 Καὶ πᾶν καταβάδιμε ἡκ ἔσαι ἐτι· Ἐ ὁ δρῶν
τῷ Θεῷ κ' τῷ ἀγγέλῳ αὐτοῦ ἔστα· Ἐ οἱ δῆλοι αὐτῷ
ἀντρώπων αὐτῷ.

4 Καὶ ὄψοντα τὸ πρῶτον αὐτῷ, κ' τὸ ὄνομα αὐ-
τοῦ ὑπὲρ τῷ μεταίπων αὐτοῦ.

5 Καὶ οὕκ ἡκ ἔσαι ἐκῆ, Ἐ χεῖρ ἡκ ἔχαστ' ἰχθυῶ
Ἐ φανὸς ἡλίου, ὅτι Κύριος ὁ Θεὸς φωτίζει αὐτῶ, Ἐ
βασιλεύουσιν εἰς τὰς αἰῶνας τῷ αἰῶνι.

6 Καὶ ἔπε μοι· Οὕτω οἱ λόγοι πιστοὶ Ἐ ἀληθι-
νοί· Ἐ Κύριος ὁ Θεὸς τῷ ἀγγέλῳ προφητῷ ἀπέειπε
τὸν ἀγγέλον αὐτῷ δεῖξαι τοὺς δόλους αὐτῷ ἃ δὲ γε-
γέσθαι ἐν τῇ γῇ.

7 Ἰδὼ, ἔρχομαι ταχύ· μακάριος ὁ τηρῶν τὰς λόγους
τῆς προφητείας τῆς βιβλίου τῆς.

8 Καὶ ἐγὼ Ἰωάννης ὁ βλέπων ταῦτα κ' ἀκῶν· Ἐ
ὅτε ἤκουσα καὶ ἔβλεψα, ἔπεσον προσκυτῆσαι ἑμ-
προσθεν τῷ ποδὶ τῷ ἀγγέλῳ τῷ δεκνύοντός με
ταῦτα.

9 Καὶ λέγει μοι· Ὁρα μὴ· σύνδεσθός σε γὰρ εἰ-
μι, κ' τῷ ἀδελφῷ σε τῷ προφητῷ, Ἐ τῷ τη-
ρητῶν τὰς λόγους τῆς βιβλίου τῆς· Ἐ τῷ Θεῷ προσ-
κύνησον.

10 Καὶ λέγει μοι· Μὴ σφραγίσῃς τὰς λόγους
τῆς προφητείας τῆς βιβλίου τῆς· ὅτι ὁ καιρὸς ἐγγύς
ἐστίν.

11 Ὁ ἀδικῶν, ἀδικησάτω ἐτι· Ἐ ὁ ῥυπαρὸς, ῥυπα-
σάτω ἐπ'· Ἐ ὁ δίκαιος, δικαιοδότητω ἐπ'· καὶ ὁ ἅγιος,
ἀγιασθήτω ἐπ'.

12 Καὶ ἰδὼ, ἔρχομαι ταχύ· κ' ὁ ριπιδός με μετ'
ἐμῷ, ἀποδοῦναι ἑκάστῳ ὡς τὸ ἔργον αὐτοῦ ἔσται.

13 Ἐγὼ αἶμι τὸ Α Ἐ το Ω, ἀρχὴ Ἐ τέλος, ὁ πρῶτος
κ' ὁ ἔσχατος.

14 Μακάριοι οἱ ποιοῦντες τὰς ἐντολὰς αὐτῷ, ἵνα
ἔσαι ἡ ἐξουσία αὐτοῦ ὑπὲρ τὸ ξύλον τῆς ζωῆς, Ἐ πῶς
πυλᾶσιν εἰσέλθωσιν εἰς τὴν πόλιν.

15 Ἐξω ἔσιν οἱ κύνες κ' οἱ φαρμακοὶ κ' οἱ πόρνοι Ἐ
οἱ φονεῖς Ἐ οἱ εἰδωλολάτραι, Ἐ πᾶς ὁ φιλῶν Ἐ ποιῶν
ψεῦδος.

16 Ἐγὼ Ἰησοῦς ἔπεμψα τὸν Ἀγγέλον μου μαρτυ-
ρῆσαι ὑμῖν ταῦτα ὑπὲρ ταῖς ἐκκλησίαις. ἐγὼ εἰμι
ἡ ῥίζα Ἐ τὸ γένος τῆς Δαβὶδ, ὁ ἀστὴρ ὁ λαμπρὸς Ἐ
ὁ ὀρθρινός.

17 Καὶ τὸ Πνεῦμα Ἐ ἡ νύμφη λέγουσιν· Ἐλθέ·
καὶ ὁ ἀκούων ἀκούτω· Ἐλθέ· καὶ ὁ διψῶν ἐλ-
θέτω, καὶ ὁ θέλων λαμβανέτω τὸ ὕδωρ ζωῆς δω-
ρεῶν.

18 Συμμεμνησθῆμαι ὅς πᾶσι ἀκούσῃ τῆς λόγου τῆς
προφητείας τῆς βιβλίου τῆς· εἰ τις ὁππότε πρὸς ταῦ-
τα, ὑπαθήσεται ὁ Θεὸς ἔσθ' αὐτὸν τὰς πληγὰς τὰς γε-
νησμένας ἐν βιβλίῳ τῆς.

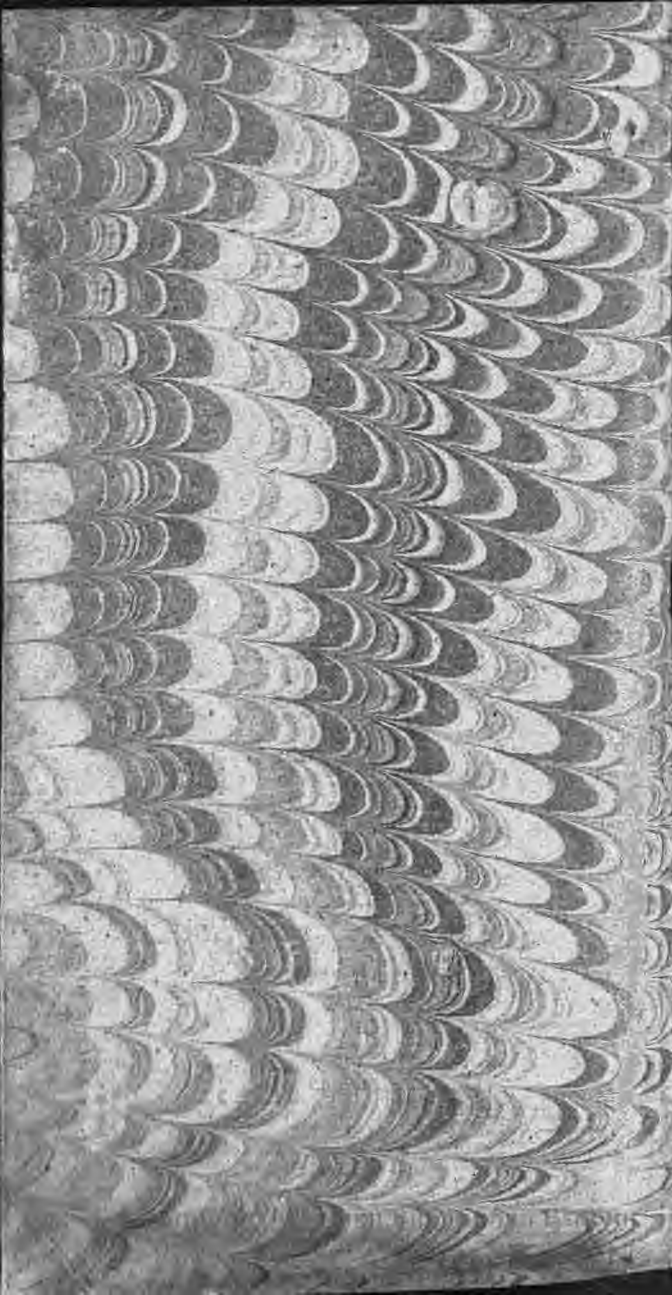
19 Καὶ εἰάν τις ἀφαιρῇ ἀπὸ τῶν λόγων βίβλη
τῆς Προφητείας ταύτης, ἀφαρήσεται ὁ Θεὸς τὸ μέρος
αὐτοῦ ἀπὸ βίβλη τῆς ζωῆς, ὅρα τῆς πόλεως
τῆς ἁγίας, καὶ τῶν γεγραμμένων ἐν βιβλίῳ τού-
τῳ.

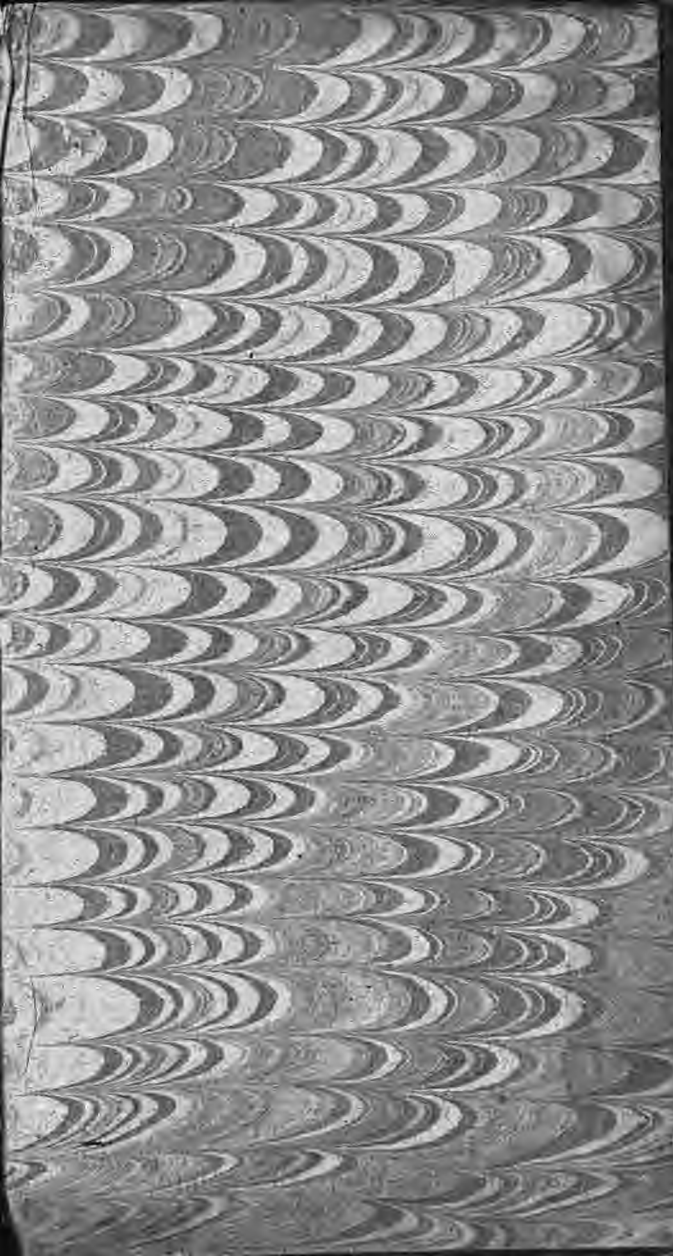
20 Λέγει δὲ μαρτυροῦν ταῦτα· Ναὶ ἔρχομαι ταχύ·
Ἀμήν. Ναὶ ἔρχε, Κύριε Ἰησοῦ.

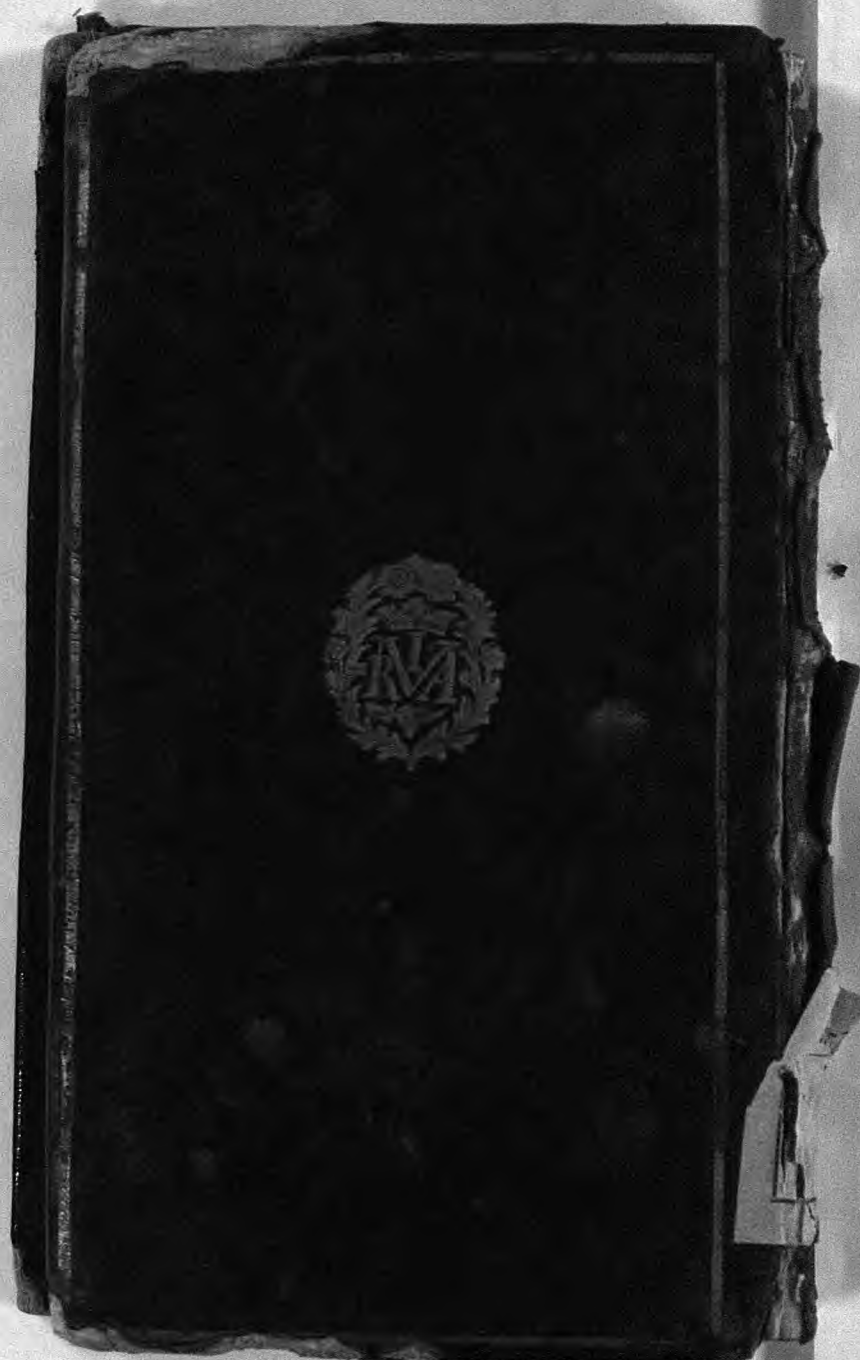
21 Ἡ χάρις τοῦ Κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ Χριστοῦ μετὰ πάν-
των ὑμῶν. Ἀμήν.



Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας







Δημόσια Κεντρική Βιβλιοθήκη Βέροιας